

श्रीजिनाय नम

पं. श्री कल्याणविजयगणिविरचिता स्वोपज्ञ गुजराती भाषा टीका सहित—

श्री कल्याण-कलिका.

(द्वितीय-तृतीय-खण्डात्मक द्वितीयभाग)

★

संपादक मुनिप्रवर श्री भद्रंकरविजयजी महाराज

卐

प्रकाशक व्यवस्थापक - शा. मीठालाल भूरमल, शा. मुनीलाल धानमल
श्री क० वि० शास्त्रसंग्रहसमिति-जालोर-गाखाड (राजस्थान)

वीर स० २४८२ । विक्रम संवत् २०१२ । शकाब्द १८७७ । ई० सन १९५६ ।

प्रथमावृत्ति] मूल्य : रु. १०-०-० [प्रति १०००

प्राप्तिस्थानः शा. कस्तूरचंद थानमल
विठ्ठलवाडी, -मुंबई नं. २
शा. मीठालाल भूरमल
जालोर [राजस्थान]
व्यवस्थापकः क० वि० शास्त्रसंग्रह समिति



: मुद्रक :

पण्डित मफतलाल शंकरचंद गांधी
नयन प्रिन्टींग प्रेस
का-२-६१. डीकवावाडी, अहमदाबाद.
गांधीरोड फरानांडीस पुल पास.

ॐ शुभनामावली ॐ

- १५१ पुन्जरु भी तुनमिया उपाधरका भी रेनमय मुः आहोर, २५ पुस्वरु द्या चंदनमलजी मानमलजी नामतराजनी पुस्-
 मारवाह (गजस्थान) राजजी, मांदमला (मारवाह)
- १०० " नामोर-बागपुराकी धर्मशास्त्री वरफसे पुरा- २५ " डा. रिखचंदजी जुहाराजी-गोल पो० उमेदाशद
 भी जेसंर-नामोर (राजस्थान) (बाया-रुनी) राजस्थान
- १०० " भी प्रमरगर (गरा) भी जेसंग, अमरसर, पो० २५ " डा. सागरमलजी पनाजी मु. अमरसर (सरव)
 बासराहोह-गाया मूनी (राजस्थान) गाया मूनी (राजस्थान)
- १०० " डा. कस्तुरादनी मगानी (डा. कस्तुराचंद यान- २५ " डा. गुलाबचंदजी मोहनलालजी लुंरुड आहोर,
 मन्-रिहमराडी-धुवर-२ बाले) जामोर दूकान डा. गुलाबचंद मोहनलाल, १०४ नारा-
 डा दीपगमनजी भगवानचंदजी पारममनजी यण मूदली म्नीट मन्नास (१)
- ५० " डा नूमानो, नामोर (मारवाह) २५ " मंडारी तिनोरुचंदनी मुनीलालजी जामतराजनी

१७ पुस्तक बेटापोता माणकजी का, मुः लेटा, दूकान-जावं-
 तराज जसराज भंडारी यादगीरी, तथा मुनीलाल
 बाबुलाल भंडारी-बीजापुर ।
 १५ भंडारी गणेशमलजी धूडाजी मुः लेटा, अपनी स्व-
 र्गीयमाता पनादेवी के स्मरणार्थ
 भंडारी तेजराज नथमल-यादगीरी, मारवाड में
 मुः लेटा-जालोर ।
 १० शा. धनाजी वदाजी-आहोर (फर्म) सा. धनाजी
 वदाजी थाणा ।
 १० शा. गेनाजी वरदीचंदजी बाल्दिया, मुः तखत-
 गढ-मारवाड
 १० शा. वस्तीमलजी चमनाजी-जालोर (मारवाड)
 दूकान-दस्पेट.

१० पुस्तक मुंहता हुकमीचंदजी पनाजी मुः गोधन, (मारवाड)
 अपनी स्वर्गीय धर्मपत्नी फफीवाइके स्मरणार्थ ।
 १० भंडारी लुंवचंदजी दलाजी-गोधन (मारवाड)
 १० भंडारी राजमलजी दानाजी-गोधन (मारवाड)
 हस्ते भंडारी मानमलजी,
 १० शा. जसरूपजी सुरताजी मुः चालीसगांव, मार-
 वाडमें मुः गोल, पो० उमेदाबाद (राजस्थान)
 १० शा. पुनमचंदजी खुनायजीकी धर्मपत्नी बाई कुदनी-
 की तरफसे हस्ते शा. मूलचंदजी लुंमाजी, जालोर
 (मारवाड)
 १० शा. रायचंदजी भेयराजजी मुः जालोर
 (राजस्थान) दूकान-माधवपुरा-अहमदाबाद.

कल्याण कलिकानी

प्रस्तावना

नामप्रदान.

लगभग २५ वर्षाधी शिल्प, ज्योतिष अने प्रतिष्ठाविधितु मार्गदर्शक पुस्तक लखवानी मित्रो तथा भाविकोनी प्रेरणा हती, पण अन्यान्य कार्योनि लीधे ए विषयोमा बहु लक्ष जतु न हतु. चालु कार्योनी भार ओछी थता थोडा वर्षो उपर ध्यान तेचीने थोडु थोडु लखवा माड्यु. ज्योतिष तथा शिल्पना केदल्यक प्रकारणो हिन्दीमा लख्या पण खरा, परन्तु ए वने विषयो एदला विस्तृत अने माहित्यसपन्न छे के तेमा शु लेतु अने शु छोड्यु ए एरु समस्या थइ पडी, शारीरिक मकृति प्राय अस्वस्थ, आरुोमा मोठीयानी शरुआत जने अन्यान्य प्रवृत्तिओना कारणे अवकाशानी अल्पता, वली निजस्वभावनी विस्ताररुचिता इत्यादि गतोनो विचार करता शिल्प अने ज्योतिषना स्वतन्त्र ग्रन्थोना निर्माणनी भावना कुठित थइ गइ, छता ए विषयोमा अत्यावश्यक विषयो उपर मुद्दासर लखवानी निर्णय अफर रह्यो. ए विषयमा टाचणो करवानुं चालु कर्युं अने प्रथम शिल्पना केदल्यक आशयकीय प्रकारणो लखी नाख्या अने शिल्पसहिताओमा ज्योतिषनो विषय पण अवश्य होय ज छे एदले शिल्पना न अनुसधान रूपे धारणागति अने मुहूर्तलक्षण नामना वे परिच्छेदो लखीने तेनी साये जोडी दीया. हवे मुद्दा विषयक एरु ज एतो परिच्छेद रह्यो हतो के जेनो उपयोग विधिविधानोमा थतो होवा छता विधिरूपे तेनुं विधिसुडमा स्थान न हतु, तेथी मुद्दा परिच्छेदने ज्योतिषना अतमा आपीने एम्दर १७ परिच्छेदोनो प्रथम भाग पूरो कर्यो, पण आ सदर्थेनुं नाम

शुं आपतुं एतो कोइ मार्ग जडयो नहि. शिल्प विपयक नाम करण करवामां आवे तो ज्योतिपनो विपय अलक्षित रही जे विस्तारमां शिल्पनी अपेक्षाए कंइक ज उतरतो छे, बने विपयने स्पर्शतुं नाम आपवामां पण कंइक ग्राम्यता जेवुं लाणुं जाय एटले आ ग्रन्थने निर्नामिक ज राखीने विधिविपयक ग्रन्थने पूर्ण करवानो निर्णय कर्यो अने ए भाग पण बनते प्रयासे पूरो करी दीधो.

त्रीजो भाग बीजा भागना एक परिच्छेद जेवो ज छे पण अधिक विस्तृत भिन्न भिन्न विपयात्मक होवाथी पांच परिच्छेदमां वहेची एनो एक स्तंत्र खंड बनाव्यो छे.

बीजा बीजा खंडनी योजना अने काचो खरडो तैयार थइ गया पछो पाछी एना नामनी विचारणा उभी थइ, बीजा भागना नामने ओगे तो बहु विचारवानुं न हतुं, प्रतिष्ठाकल्प अथवा एते मलतुं बीजुं कोइ नाम आपवाथी समस्या पती जाय तैम हतुं पण खास मुंजवण प्रथम खंडने अंगे हती, अमारि आ पहिलो भाग स्तंत्र ग्रन्थरूपे नहि पण कोइ ग्रन्थना एक विभाग रूपे गोठवतो हतो, जो विधिखंडनी प्रधानता गणी तेने अनुसरतुं कोइ नाम आपीये तो प्रथम खंड तहन ज अनिर्दिष्ट रही जाय तैम हतुं एटले अमुक विपय सूचक नामने पडतुं सूकी फलसूचक नामनी तरफ लक्ष्य दोरुं अने तरत ज “ कल्याण कलिका ” नाम उपस्थित थयुं अने एज नाम करण नियत थयुं.

साइजने अंगे-आखो ग्रन्थ एकलो छपाववानो निश्चय हतो पण साइजनी वावतमां विचार करतां जणाशुं के कोइ पण एक साइजमां छपावतां बधाने अनुकूल नहि पडे, बुक साइजमां होय तो विधि करावनारने अगवडता जनक थाय अने पोथी

साईजमां होय तो गिल्प तथा ज्योतिषना अभ्यासीओने अनुकूल पडे नहि, ए कारणे प्रथम खड बुक अने बीजो, त्रीजो खंड मेगा पोथी रूपे छपाववानु निश्चित करांयुं

मुद्रण कामनी व्यवस्था— मुद्रण कार्य जल्दी थडने पुस्तक वहेलु बहार पडे एवी अमारी इच्छा होय ए तो स्वाभाविक गणाय, पण द्रव्य सहायकोनी उतापल अमारा करताये अधिक हती, पण आटलु टल्दार पुस्तक भावनगर के अमदावाद प्रेममा छपाय अने असे मारवाडमा मुफ. मगावीने सुधारीये, तो पुस्तक क्यारे छपाइने बहार पडे ? लेखक अने आर्थिक सहायको केटली धीरज राखे ? अने प्रकृता प्रसवाला अने मुफरीडर पडितने भरांसे पण काम, केम छोडाय ? भावनगर वा अमदावादमा एवा कोइ विद्वान् साधुनु चोमासु होय के जे आ काम करवामां योग्य अने करवानी भावनारालां होय तो पुस्तक अमदावाद छपावतु ए विचारणा चालवी हती, एटलामा तपस्वी पं० श्रीकान्तिविजयजी गणिनी पत्र मख्यो, तेमणे जणावुं के “ अम्हारं चोमासु बीजे नकी थड गंयुं हतु पण शारीरिक कारणे डाक्टरनी संलाहथी अमदावाद आव्या छीये.” अमने प्रसन्नता थड अने पूछंयुं के “ जो शारीरिक थडचण न होय अने कलिकांतुं मुद्रण कार्य संभाली सकाय तेम होय तो ए कार्य हु तमने सोंपवा इच्छुं छु ” अमारा आ पत्रनी उतर पं० कान्तिविजयजीए स्वीकृतिना रूपमा आव्यो एटले प्रथम रडना, केटलाक परिच्छेदो तेमने मोकली आव्या अने आर्थिक सहायकोने सूचना पहोचता खर्च माटे रुम. पण अमदावाद श्रीविद्याशालानी पेढीमा पढोंची गड. कार्य चाळु ययु. अने गत वर्षनी कार्तिक उतरता १० फर्मां छपाया, पण एटलामा पं० श्रीकान्तिविजयजीने विहार करवानो प्रसंग आव्यो एटले अमारी सूचना प्रमाणे सपादननु कार्य तपस्वीप्रवर मुनि श्रीभद्रकरविजयनीने नोंपायुं अने ते पछी आनुं वयु ज

संपादकीय कार्य उक्त मुनिराजे ज कर्तुं छे. आ वंने विद्वान् मुनिचरोए कलिका प्रति श्रद्धा अने सेवाभाव वताव्यो छे तेथी अमने पूर्ण संतोष छे.

अग्रसहायको—

‘कलिका’तुं कार्य हजी पूरं नहतुं थयुं ते पहेलांथी लोको एना मुद्रणमां सहायक थवा माटे अमुक नकलोनी लागत किम्मत आपी ग्राहक रूपे पोतानां नामो लखाववा मांगता हता, परन्तु ए काम ग्रन्थतुं मेटर पूरं थया पहेलां थइ शके तेम न हतुं. ज्यारे वंने भागोनी प्रेसकोपी थवा मांडी, प्रेसथी मुद्रण विषयमां पूछपरछ करी लीथी, ते पछी अनुमानथी जणांतुं के प्रथम तथा द्वितीय भागनी पांच पांचसो कोपीओ कढानतां अत्रुक्रमे एक पुस्तकनी रु० ५) तथा रु० १०) नी लागत किम्मत आवशे, प्रथम भागनो पूरो खर्च श्रीगोदण (मारवाड)ना जैन संघे आपवानी इच्छा व्यक्त करेल होवाथी आ भागमां बीजा कोइनी सहायता स्वीकारी नथी, ज्यारे बीजा भाग माटे दशथी ओछी नकलोनी सहायता स्वीकारवामां आवी नथी, मात्र पांच पांचसो कोपीथी लोक मांगणीने पहोंचाशे नहि एम जणातां प्रकाशक समितिए वधरानी पांच पांचसो नकलो कढावी छे, जे अधिकारिआने लागत किम्मते ज अपाशे एनो निर्धार करेल छे. जेटली नकलोनी किम्मत संघो तथा सद्-गृहस्थो तरफथी मञ्जेली छे तेटली नकलो एना अधिकारिओने विना मूल्ये आपनानो निर्णय थयो छे पण अधिकारी-अनधिकारीनो निर्णय ए माटे निश्चुक्त थयेल समिति द्वारा थशे अने ए निर्णय प्रकाशक रामिति उपर जतां पुस्तको मार्गवर्च लेइने तेमने मोकलाशे.

पुस्तकना संपादनमां उपयुक्त विद्वान् मुनिचरोए यथाशक्य परिश्रम कार्यों छे, जतां शरतचूक, दृष्टिदोष के प्रेसकर्मचारिओनी वेदरकारीथी जे कोइ अशुद्धिओ रही जवा पामी छे तेतुं शुद्धिपत्रक आपेल छे, जे जोइने नाचकगण रहेल अशुद्धिओने सुधारी लेशे.

२-चीजा खंडनो उपोद्घात

प्रतिष्ठाकल्पो अने विधिविधानो उपर दृष्टिपात—

‘प्रतिष्ठाकल्प’ ए विधिशास्त्रनो एरु महत्त्वपूर्ण विभाग छे. ‘त्रतविधि’ ‘तपविधि’ के ‘मन्त्रविधि’ आदि ‘विधि’ओ प्रायः व्यक्ति विशेषनी साथे संबद्ध होय छे, ज्यारे ‘प्रतिष्ठविधि’नो संबन्ध यणे भागे सघ साथे होय छे, भले प्रतिष्ठाकारक व्यक्ति विशेष होय छता प्रतिष्ठा यस्तु ज एनी छे के एनो प्रमाा सय, गाम अने कदाचिद् देश उपर पण पडी जाय छे, आथी ‘प्रतिष्ठाशास्त्र’ केरु महत्त्वपूर्ण छे ए समजावतानी भाग्ये ज आवश्यकता होइ शके

प्रतिष्ठानो शब्दार्थ—

जे यस्तुना निरूपणमा आटला वरा ग्रन्थो रचाया छे, अने जेना विधानमा हजारो अने लाखो रुपिया जैन सय खर्च करे छे ते ‘प्रतिष्ठा’नो अर्थ आपणे समजी लेनो जोइये

‘निर्वाणकलिका’ नामक प्रतिष्ठायद्धतिना कर्ता आचार्य श्रीपादद्विप्रसूरिजी निर्वाणकलिकामा प्रतिष्ठा शब्दनो अर्थ नीचे प्रमाणे लखे छे—

“तत्र स्थाप्यस्य जिनप्रिम्बादेर्भद्रपीठादौ विधिना न्यसन प्रतिष्ठा ।”

अर्थात् ‘स्थापनीय जिनप्रतिमा आदिनु योग्य आमने विधिपूर्वक स्थापन करु ते ‘प्रतिष्ठा’ न्ने

आचार दिनकरना कर्ता श्रीवर्धमानमूरि प्रतिष्ठातुं लक्षण सुदा प्रकारे आपे छे, जे नीचे प्रमाणे छे—

“ प्रतिष्ठा नाम देहिनां वस्तुनश्च प्राधान्य-सान्य(ता) हेतुकं कर्म ।”

अर्थात् ‘शरीरधारी तथा अन्य वस्तुने प्रधानता तथा मान्यता आपन्नाना हेतुथी करता अनुष्ठानतुं नाम ‘प्रतिष्ठा’ छे, अमे पोते प्रतिष्ठातुं लक्षण नीचे प्रमाणे बांधीये छीये :-

“ सजीवे निर्जीवे वा विशिष्टवस्तुनि अनुष्ठानविशेषेण कर्त्तव्यादानं प्रतिष्ठा ”

अर्थात् ‘सजीव के निर्जीव एवा पदार्थ विशेषमां योग्य क्रियाचुष्ठान द्वारा ‘प्रमान’ उत्पन्न करवो ते ‘प्रतिष्ठा’ छे, गमे ते लक्षण योग्य होय छतां वर्तमान समयमां ‘निर्वाणकलिका’ना लक्षणवाली प्रतिष्ठाने ज लोको ‘प्रतिष्ठा’ तरीके आलेवे छे अने दिनकरकारना लक्षणवाली प्रतिष्ठानो अजे सर्वसाधारण ‘अंजनशलाका’ ए नामथी व्यवहार करे छे.

२ प्राचीन अने अर्वाचीन प्रतिष्ठाओनी तुलना—

कोइ पण विधिविधान प्राथमिक अवस्थामां जेटहुं सीधुं अने सरल होय छे तेठहुं ज ते कांथा काले जटिल अने दुर्योग बनी जाय छे, आ एक स्वाभाविक नियम छे. प्रतिष्ठाकल्पो अने प्रतिष्ठाविधिओ पण आ अजल नियमथी बनी सकी नथी, प्रतिष्ठाकल्पोनी उत्पत्तिनो इतिहास आपना माटेहुं आ योग्य स्थल नथी, अदियां प्रतिष्ठाकल्पो अने प्रतिष्ठाविधिओमां यथेल क्रमिक परिवर्तनो ज हुंको परिचय कराथीने वाचकगणहुं-हास करीने ए विषयमां रस लेता ‘प्रतिष्ठाविधिकार’ गणहुं लक्ष्य खंचवा मांगीये छीये.

ચીની રુઢ પ્રવૃત્તિઓને અગે વને છે તેમ એ વિષયમા પણ વિધિકારો પોતે પોતાની પરમ્પરાગત રુઢિઓને વળગી રહી સ્થરી સ્તુસ્થિતિને નહી સ્વીકારે એ અમે સારી રીતે જાણીયે છીયે, છતા પણ સમજાયેછુ સત્ય સર્વને સમજાવતુ એ અમારં કૃતવ્ય માનીયે છીયે.

પ્રાચીન પ્રતિષ્ઠાઓ ઘણી જ સાદી સુગમ અને અલ્પવ્યય સાધ્ય હતી, ધાજના લેવડી લાવી સામગ્રી-મુચિઓ પૂર્વે ન્હોતી વનતી, આ વસ્તુને સમજાવવા માટે અમો પ્રાચીન અને અપેક્ષાકૃત અર્વાચીન પ્રતિષ્ઠાસ્વરૂપોમા લલેલ સામગ્રીઓમા કાલક્રમે કેવી રીતે વૃદ્ધિ થઇ અને સામગ્રીસમાર ઝાજની મ્થિતિએ પહેલ્યો તે વિષયમા કેટલાક ઉદાહરણો આપીયુ.

વિધિમા ઝમેરાયેલી વસ્તુઓ :

(૧) પાટલાઓ—

નિર્નાળકુલિકાના રચના સમયમા આપણી પ્રતિષ્ઠામા માત્ર ‘નન્દાવર્ત’ પૂજન માટે એક જ પાટલો આવશ્યક ગણાતો હતો, દિક્પાલોનો આલેસ પચવર્ણના ચૂર્ણથી વેદિકા ઉપર કરવામા આવતો હતો

શ્રીચન્દ્રમુરિની પ્રતિષ્ઠાપદ્ધતિમા દિક્પાલોને માટે પણ એક પાટલો હુદો અસ્તિત્વમા આવ્યો, તે પછી ગુણસ્તમૂરિ સુધીના પ્રતિષ્ઠાસ્વરૂપોમા નન્દાવર્ત અને દિક્પાલોની પૂજા માટે વે પાટલાઓ જ પ્રતિષ્ઠાના ઉપકરણોમા ગણાતા હતા.

શ્રીશિશ્વરજ શિષ્યના પ્રતિષ્ઠાસ્વરૂપમા ઉપર્યુક્ત વે પાટલાઓ ઉપરાન્ત ત્રીજા ગ્રહના પાટલાએ દેસાવ દીધો છે, એ પહેલા કોઇ આચાર્ય નદાર્પના ડેલ્લા યલ્યમા પૂજન કરાવતા અને કોઇ કોઇ પ્રથમ વલ્યમા જ જિનવિનના ચરણો પાસે ગ્રહોનું

पूजन कारावी लेता. पाटलांनुं जुदुं अस्तित्व कोइ मानतुं न हतुं. आ रीते सोलमा सैकाना प्रारंभथी ग्रहोनी पाटलो अस्तित्व-
मां आत्रतां ३ पाटलावो प्रतिष्ठाविधिमां दाखल था.

सं० १८४८ नी पहेलांना अमारा जोएला विधिग्रन्थोमां अष्टमंगलना पाटलांनी आवश्यकता मनती न हती, यत्रपि
आचार दिनकरमां अष्टमंगलनी पाटलीनो उल्लेख जरूर मले छे, छतां ते वखते अष्टमंगल माटे पाटलांनी आवश्यकता न
होती गणाती, पाटली विना पण शुद्धभूमि उवर्ग अष्टमंगलोनुं अक्षतो वड आलेखन करणतुं हतुं.

सं० १८८७ मां अथवा ए पञ्चीना समयमां लखावेल शान्तिस्तात्रनी विधियोमां पहेल वहेलो अष्टमंगलनो पाटलो उप-
करणरूपे दृष्टिगोचर थाय छे. अमारी पासेनी सं० १६३९ तथा १६८७ मां लखावेली अटोचरी स्नात्रनी विधिवो छे, तेमां
अष्टमंगलना पाटलांनुं नाम निशान नथी, आथी सिद्ध थाय छे के अष्टमंगलनो पाटलो सं० १६८७ पञ्ची अने १८८७ पहेलां
कोइ काले विधिमां प्रविष्ट थयो छे, एनी प्राचीनता वसो त्रणसो वर्षथी वधारे नथी.

(२) वस्त्रो—

पाटला वध्या एटले तत्संबन्धी पूजन सामग्री वधे ए स्वाभाविक छे, जे वखते मात्र एक ज नंदानर्तनो पाटलो हतो ते
वखते तेने हांकवाने एक ज आणुं सफेद वस्त्र आवश्यक गणातुं हतुं, अने ते उपरान्त विधनी अधिवासना तथा प्रतिष्ठाणा
अवसरे आखां वे वस्त्रो अने मातृशाटिका एटली ते वखते वस्त्रसामग्री हती.

दिकूपालोनी स्थापना माटे स्वतंत्र पाटलो उपयोगमां लेवावा मांडयो ते समयमां पाटला उपर दिशापालोनी स्थापना

पूजन विधि छपायेल अने आज्ञे घणा विधिकारो ए ज प्रमाणे पूजन करावे छे, 'पहेला जेओ प्रतिष्ठा कल्पन अनुसार उक्त पूजन करावता हता तेओ पण हवे आ विस्तृत सर्दर्भने अनुसारिने पूजन करावे छे पण ए विधान ते बखते ममजदारानी दृष्टिमा केदलु वधु अनुचित अने खटकनार लगे छे ? जे वस्तुनु रुपियामा एक आनीभर पण महत्त्व न हतु तेने आने वधारीने रुपियाभर वनामी देवामां आव्यु छे, अने खूबी ए छे के ए वधु करवामा विधिकारो पोतानी मिद्विचा माने छे, ते बखते तेमने एदलो पण विचार आगतो नथी के तेओ ए काम प्रतिष्ठा अथवा महापूजाना एरु साधारण अण रूपे करी रखा छे, नहि के मूल वस्तुने पण टपी जाय एवु कोइ स्तत्र अनुष्ठान के जेनी पाछल ३।४ कलाक जेटलो समय त्यागनो योग्य गणी शक्य, प्रतिष्ठानु मूल अंग नन्यावर्तनु आलेखन-पूजन छे, ए नार्थ प्रतिष्ठाचार्यनु ने, पण आज्ञे प्रतिष्ठाचार्य ते तो जाणे एनी सार्थ

१-जेमणे आ विस्तृत पूजन लख्यु छे तेमनो आशय ए न हतो के स्तत्र के प्रतिष्ठाभा प्रह पूजन आ प्रमाणे जे थाय, लेखके जे प्रथम सश्विस पूजन लख्यु छे तेज प्रतिष्ठा-पूजा प्रसंगे करगनु छे, आ विस्तृत पूजन दाा माटे लख्यु छे एवु कारण लेखके स्पष्ट कही दीयु छे, 'इति प्रह-विकृपाल सक्षेप पूजन विधि" तथा ह्यर प्रतिकूल प्रहतर प्रसव करवा प्रसंगे विस्तार पूजन लिखिइ छर"

जे व्यक्तिय आ विस्तारे पूजन लख्यु छे ते पोते स्पष्ट जणावे छे के आ पूजन प्रतिकूल प्रहने प्रसव करवा माटे छे नाहि के प्रतिष्ठादि विधानोमा करवा माटे, परन्तु जायुनिक विधिमतरोप 'ह्यर' इत्यादि कारण क्षापक पाठ ज पुस्तकभाषी काटी नाब्यो छे अने आ विस्तृत कारणि न पूजनने सामान्य वनाधी दीयु छे दिक्पालो प्रतिकूल ज नथी होना छना तेमनु पण

एज प्रकारे पूजन कराव जे ए केवु अज्ञान छे ?

आजना घणाक प्रतिष्ठाशुभोमां उत्क कार्यो करवानी आवडत न होवना कारणे आमांतां केटल्यांक कामो विधिकार गृह-स्थो करीने कार्य चलावे छे, आवां कारणोथी आजना विधिकारो प्रतिष्ठामां पोताने प्रथान कार्यवाहक मानी रे छे, एटहुं ज नहि पण प्रतिष्ठानी सामग्री तरीके शी शी वस्तुओ केटकेटला प्रमाणमां जोइशे, तेनी सूचीओ पण विधिकारो ज लखी आपे अथवा तेमनी सलाहथी लखाय त्यारे ज काम चाले अन्यथा चालता कामे प्रतिष्ठा करानारनेे वजारमां दोडवुं पडे.

आपणे जोइ आव्या डीये के पूर्वकालमां दिक्पालोना पाटला उपर वस्त्राच्छादन न हतुं अने ग्रहोनी तो पाटलो ज न हतो, ए वधुं धीरे अस्तित्वमां आवुं छे, छतां आजे प्रत्येक दिक्पाल अने ग्रहने माटे वर्णासारे रंगवालां वस्त्रो होय तो ज विधिमां काम आवे अने विधि थइ शके छे नहि तो गाहुं अटकी पडे छे. हुं इच्छुं छुं के आबी चालती प्रवृत्तिओनेे ज विधिनुं सर्वस्व मानी वेठेला विधिकारो पूर्वकालीन अने आधुनिक विधिविधानोमां पडी गयेला आकाश अने पाताल जेवडा अंतरनीो विचार करशे तो जरूर तेओ पोतानी दृष्टिने विकसवावी शकशे.

आजथी लगभग ४ दायका उपर ग्रहो दिक्पालोनुं पूजन घणी ज सादी रीते करातुं हतुं, पण श्रीरत्नशेखरस्वरिजीनेे नामे चढेल “ जलयानादि विधि ” पुस्तक छपाइनेे बहार पडया पडी धीरे धीरे तेमां छापेल विधि अदुष्टाननी प्रवृत्ति थवा मांडी, विशेषे करीने विवप्रवेश विधिमां ग्रह-दिक्पालोनुं पूजन ए ग्रन्थना आधारे थवा मांडयुं एमां आपेल क्रम प्रमाणे शांतिस्नात्र के अष्टोत्तरीमां ‘ वरकण्यसंखविद्युम ’ आ गाथाने प्रथम राखवानी केटलाक विधिकारोए प्रवृत्ति पाडी, विस्तृतपणे ग्रह-दिक्पालोनुं पूजन करवानुं पण चालु करुं, पाछलथी बहार पाडेल “ विवप्रवेशविधि ” नामना पुस्तकमां पण ए ज विस्तृत

२८-प्र० अंजनशलाका कोण करावी धके ? ए संवन्धमां आचारदिनकर सिवाय वीजा कोइ ग्रन्थमां लेख छे के ?

उ० घणा खरा प्रतिष्ठाकल्पोमां लखे छे के आचार्यनो प्रतिष्ठासंभ्र खरिसंभ्र छे अने सामान्य साधु माटे 'वीरे वीरे' इत्यादि वर्धमान विद्या, जो सामान्य साधुने अंजन प्रतिष्ठानो अधिकार न होत तो तेने आश्रित प्रतिष्ठासंभ्र न लखत.

२९-प्र० जिनमंदिरमां लोहधातु न वपराय आम केटलाक आचार्यो कहे छे ते बराबर छे ?

उ० देहरासर जे वर्तमान काले प्रायः पत्थरथी वंधाय छे तेनी लगभग हजार वर्षनी स्थिति होय छे, आवा चिर स्थायी कार्यामां लोहना पाटडा, पाउ बगेरे न नाखवानुं कहेवाय ते यौक्तिक छे, पत्थरनी अपेक्षाए लोहना पाटडानी स्थिति अत्यल्प होय छे, बली लोहना पाउ कालान्तरे काटथी फूलाइ जइने पाटडा अथवा दासाभोना छेडा फाटी नाखे छे तेथी ना पडाय छे, बाकी लोहने नीच धातु समजी ना पडाली नथी, पूर्वकालमां तो लोहनी पंचरत्नमां गणना थती हती अने कृष्ण लोहनी मुद्रिकानो प्रतिष्ठामां उपयोग थतो हतो.

३०-प्र० केटलाक विधिकारो विधिमां न होय तो य अमुक शांत्रिक शब्दो वधारीने बोले छे ए योग्य छे ?

उ० विधिगत मंत्रोमां जे जे शब्दो परापूर्वथी बोलाता होय ते ज बोलावा जोइये पोताना तरफथी कंइ पण नवुं उभेरवुं जोइये नहि, जो आम दरेक विधिकार थोडुं थोडुं वधारतो जाय तो विधिमां अत्रयस्था बथी जाय माटे कोइये पण पोतानी कल्पनाथी विधिमां न्यूनधिक्य करवुं नहि.

उ० अधिवासनानो अर्थ ' मंत्रवु ' ए थाव छे, कसर पुष्पादि द्रव्योने मंत्रमंडे मन्त्रीने तैपार करजा ते अधिवासना, तेथ-
ज प्रतिपा निगेरेने तेना मन्त्रमंडे मन्त्रवु ते अधिवासना कहेगाय छे अने मंत्रेत्ती वस्तु ' अधिवासित ' कहेगाय छे.
२- प्र० आमननो अर्थ शो ? कोइ आसन एटले बेसवु एगो अर्थ करे छे ज्यारे कोइ आसनने बेसगानु स्थान कहे छे आ बेसा
खरो अर्थ रूपो ?

उ० आमननो अर्थ बेसगानु ' स्थान ' एज खरो छे, जित्तपमा डंगलाने जे बेसगानु स्थान होय तेने माटे ' आमन ' शब्द
नो प्रयोग थाव छे, प्रतिष्ठा देवी होय के उभी पण एने देमाडगानु अथवा उभी स्थापवानुं जे स्थान होय छे ते
आसन-निर्वाहसन आदि नामोधी ओलखाय छे. ' आमन ' नो ' बेसवु ' ए अर्थ करवामा आवे तो ' उभी ' प्रति-
माने माटे नाथो आवे छे कारण के उभो प्रतिपा माटे कंद वीजु निधान नयी

३- प्र० अर्वाचीन प्रतिष्ठा-पूजा निधिओषा ' सेनतरा ' नाम पुण्याने माटे ठेरु ठेकाने आवे छे तो सेनतरां पुष्यो देरा थला
हयो ? आज्ञे सेनतरा पुष्यो होय छे खरा ?

उ० आज्ञकालना गुलानना पुष्यो एज विधिज्ञासेना सेवतरा ' के, ' गुन्याय ' नाम उर्दुभाषासुं छे एनो सस्कृतमा अर्थ
' इतीय पुष्य ' थाय छे, ' सेनतरा ' ए ' शतपत्र ' शब्दनी अयभ्रंज छे, सस्कृत शब्दकोशीर्षा ' जलकमलने '
' सहस्रपत्र ' अने स्वलरमलने ' शतपत्र ' नामधी उल्लेखयो छे (सहस्रपत्र कपाल, शतपत्र कुशेशयम् ।) ' कण्टका
पत्रनाले ' इत्यादि वाक्योमा कमलने राट्टा नगाने छे ते आ, शतपत्र-गुलानने आसरीने ज समजवाना छे, जल-
कमलने अने नदि.

कालना विधान करनारा स्नात्रकारो पैकीना केटलाको प्रतिष्ठा प्रसंगे अमृत क्षरायवानो चमत्कार देवाडीने वाह वाह करावे छे पण तेवा विधिकारो अने तेवी प्रवृत्तिमां लाभ मानता प्रतिष्ठाचार्योए आवी प्रवृत्तिओ वंध करवी—कराववी जोइये. विधिकार डाभनी पींछीथी पाणी छटि अने स्थापना पछी ते जोइने लोको अमृत क्षर्यांतुं कहे एनो मौनपणे स्वीकार करवो एमां कंइ ज लाभ नथी लोको तमारा छटिला मंत्रित जलनां विंदुओ जोइने अमृत क्षर्यांतुं कहे तो तमारे खरी वस्तुस्थिति प्रकट करवी जोइये. प्रतिष्ठा प्रसंगे आवी सरलता अने निखालसता राखवी एज क्रियाकारकनो मुख्य गुण छे.

८—विधिकारोनी शंका अने समाधान—आधुनिक विधिकारोमां परिभाषाओ, विधिविधानो, प्रतिष्ठाचार्यो, स्नात्रकारो अने सामग्रीविषयक भिन्न भिन्न शंकाओ चाली रही छे, छतां नथी एक वीजाने कोइ प्छतुं अने नथी वीजाने प्छवाथी सीधो उत्तर मलतो, जेओ साथे विधानता कामे जाय छे ते पैकीनी कोइ पण व्यक्ति भले एक वीजाने मन खोलीने ए संवन्धमां वात करे, वाकी भिन्न मंडलीमां जनार कोइ विधिकार पोते-विशेष जाणकार वीजा विधिकारने पूछीने कंइ नहुं मेळवी शकतो नथी एम अमने जणायुं छे, जाणे के विधिकारोना जुदा जुदा संप्रदायो वंधाइ गया छे. दरेक मंडलीना अनुयायी विधिकारो पोताना क्रियाविधानोने श्रेष्ठ गणे छे अने वीजाना विधानने उदासीन भावे जुए छे, ज्यारे केटलाको तो एक वीजाना विधानोनी टीकाओ सूधां करी वेसे छे, आ परिस्थितिने सुधारवी घटे छे.

शंकाविषयक प्रश्नोत्तरो—

१— प्र० विधिमां जे अधिवासना विधि आवे छे एनो प्रो अर्थ थाय छे ?

४—प्रतिष्ठा यथा पृथी तरत ज एटले तेज दिवसे कोइ कारणे गाममा अकस्मात् लडाइ क्षणदो के माराभारी जेना क्लेशकारी दुर्निमित्तो वनी जाय तो ते प्रतिष्ठा अत्रश्य अवनतिभारिणि वने छे, माटे प्रतिष्ठा करावनार सयं के व्यक्तिए आवा दुर्निमित्तो न वने एनी तकेदारी राखनी जोइये.

५—“श्रयासि बहु विद्वानि” ए कथनानुसार प्रतिष्ठा जेना कल्पयाणकारी कामोमां विद्वानालनाराओ पण होय छे, मद्दपमा फोसफरस नाखीने अथवा वीजी रीते मद्दप आदिमा आग लगाडीने रगमां भग फरनाराओ होय छे, माटे प्रतिष्ठा-चार्यादि अधिकारी वर्ये आनी घटनाओ वनया न पामे एवो वदोवस्त अत्रश्य राएयो जोइये

प्रतिष्ठाचार्य अने स्नात्रकारोनो मुख्य गुण—

आजे घणाक स्नानकारोमा अने केन्द्रलाफ प्रतिष्ठाचार्योमा पण प्रतिष्ठाने अगे कइक चमत्कार देखाटीने ‘प्रतिष्ठा सारी यह’ एवी लोकाना मन उपर छाप पाडगानी दृत्तिओ होय छे, श्रीपूज्यो तथा यतियोनी अद्यक्षतामा भवी प्रतिष्ठाभोमां-या न्तिस्नात्रोमा बलि क्षेपना प्रसंगे आखु नालिएर आकाशमा उछालीने तेहुं खाली खोखु नीचे पडतु देखाटी हाकेने आधर्य चकित फस्वार्थी-लोको मानता ‘जो नालिएरमानो गोलो देवाओए लेइ लीयो अने काचलानु खोखु नीचे नाखी दीधु’ सरी वात तो ए हवी के बलीक्षेप करनार यतियो अने भोजनो खानगीमा चोटी सठिव नालिएर फोडीने तेमांपी गोलो पाटी लेता अने काचलां ठीक करी उपर गेनाखत्र वीटी नालिएर बलिनाफला उपर मूरता अने बलिक्षेप करता नालिएर पण उछान्ता अने नीचे पडता खोखु जोइ लोको चमत्कार मानता, पण वर्तमान समयमा आ मर्राखु पारसड तो यप पटी गयु छे, आज

१—निमित्त जोवानो मुख्य प्रकार ए छे-पतिष्ठानुं सुहृत् जोवरानवुं होय तयारे स्थानिक ज्योतिषी श्रद्धापात्र होय तो तेने घरे जइने अने गामघां तेयो ज्योतिषी न होय तो बहारगाम कोइ जोषी अथवा श्रद्धापात्र आचार्य साधु वगैरे जाण-कार होय तेनी पासे सुहृत् जोवरानवा जवुं. गामथी प्रयाण करती वेलाए शकुनो जोवां, जो अपार्थित शुभ शकुनो थइ जाय तो समजवुं के प्रतिष्ठा थारेला सभयसां थइ जसो.

२—पण आ शकुनो भविष्यनी उन्नति अवनतिने निश्चितपणे जणावी शकतां नथी, आने माटे सुहृत् जोनारे तात्कालिक लय हुंडली काहीने जोवी, जो हुंडलीमां लय, धन, पुत्र, स्त्री, लाभस्थानो नगडयां न होय अने आठमा स्थानमां कोइ पण वर्जित ग्रह न होय तो जोषीए सुहृत् आपवुं, जो तात्कालिक पश्यां लगनी व्यवस्था खराव होय तो कही देवुं के 'कोइ बीजा पसंगे पूछवा आवजो', जो पूछमार ज्योतिषीनी सलाह मानीने ते टांणे प्रतिष्ठा वंध राखथे तो तेयो पतिष्ठाने दीपनुं निमित्त बनतां बचावथे अने अभुयसो उदय मटी गया पछी शुभ निमित्त लब्ध लग्नामां प्रतिष्ठा करावीने अभ्युदयना भागी थसो.

३—पतिष्ठाचार्यनुं आत्मबल-जैम शुभाशुभ निमित्तो अभ्युदयानभ्युदयने सूचवे छे तैय पतिष्ठाचार्यनुं आत्मबल पण एयां सहकार आपे छे, जेना आचरणो शुद्ध होय, जेनुं मन दृढ संकल्प होय अने जेनो आत्मा शुभ परिणामी होय तेना प्रतिष्ठा-चार्यना हाथे थयेली पतिष्ठा प्रायः शुभ परिणाम लावे छे, एथी विपरीत जे पतिष्ठाचार्य आत्म विशुद्धिहीन होय, भग्नहरथी होय, रोगादिकारणो बडे शारीरिक अने विरोध करीने मानसिक शक्तिओ खोइ बेटेल होय तेवाना हाथे थयेल पतिष्ठा परिणामे अभ्युदयजनक निवडती नथी.

त्यारे सर्वोत्कृष्ट उत्सव सर्वोत्कृष्ट आनर्पण अने सर्वाधिक सद्य समवाय एकत्र थतो हतो आ विषयमा बहुश्रुत आचार्य श्रीहरिभद्रहरि
कहे हे—

“निष्पन्नस्यैव खलु, जिनविषयोदिता प्रतिष्ठाशु । दशादिवसाभ्यान्तरतः, सा च त्रिविधा समासेन

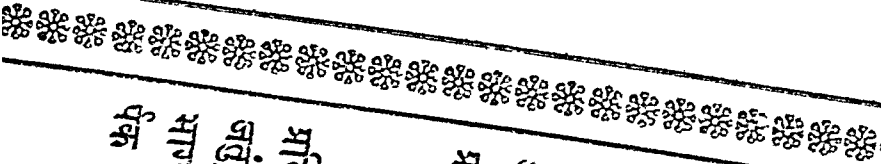
व्यक्त्याख्या खल्वेका, क्षेत्राख्या चापरा महाख्या च । यस्तीर्थकुब्जदा किल, तस्य तदाच्येति समयविदः ॥

ऋषभाख्यानां तु तथा, सर्वेषामेव मध्यमा ज्ञेया । ससत्यधिकशतस्य तु, चरमेह महाप्रतिष्ठेति ॥ ”

आ पत्रोक्तो भावार्थ प्रथमना विवेचनमां म्हवाड गयो हे. आ त्रणेय प्रकारनी प्रतिष्ठाओ अनुक्रमे १ व्यक्तिक प्रतिष्ठा
२ क्षेत्रप्रतिष्ठा अने ३ महाप्रतिष्ठा आ नामोर्थी ओलखाती हती, व्यक्तिक प्रतिष्ठा १ कनिष्ठा २ क्षेत्र प्रतिष्ठा मध्यमा अने ३
महाप्रतिष्ठा उत्कृष्टा म्हवाती हती, आ कनिष्ठादि सहाओ विधिआश्रित नाहं पण प्रतिमाओनी सख्याने अनुसारे गणाती हती,
वर्तमान कालीन प्रतिष्ठाओमा प्रतिमाओने लेडेने नाहं पण उत्सवनी, जनसख्यानी तथा उपजनी दृष्टिए प्रतिष्ठाओ कनिष्ठा
उत्कृष्ट मनाय हे जे यथार्थ नथी

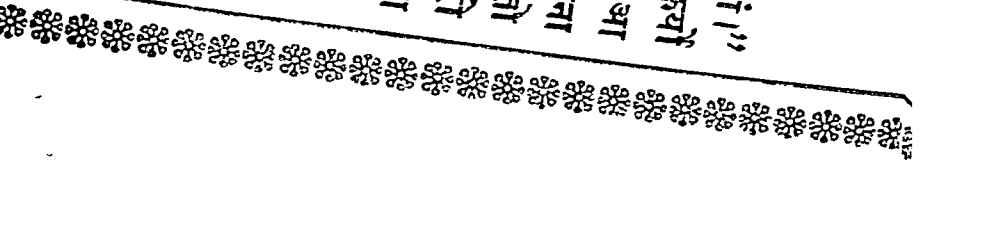
पतिष्ठाओने अने लोककल्पनाओ—

वर्तमान कालीन लोक मानस एवु वनी गयु हे के प्रतिष्ठा थया पडी पतिष्ठाकारक व्यक्तिक अथवा सधनी वा गाभनी
उन्नति के अवनति जणाय तो ए प्रतिष्ठाना फलरूपे ज गणाय हे पण ए मान्यता यथार्थ नथी, खरी चात तो ए हे के प्रतिष्ठा
कार्यना प्रारम्भमा थता शुभाशुभ निमित्तो ध्यानमा राखना अने जो उपराउपरी प्रतिष्ठा कार्यनी पशुचिमा अशुभ निमित्तो
थता होय तो ते अवसरे प्रतिष्ठा वध राखवी जोडये जेथी अशुभ परिणामनी जवाबदारी प्रतिष्ठा उपर आवे नाहं.



वणा फेर है पणि साध्य एकर माटे सर्व सकल है. हम सर्व धर्मकरय मांहि जाणवुं इहां बली विशेष बीज पछव गुरपरपराथी जाणवां ।”
 उपरना उल्लेखथी स्पष्ट थाय है के तत्कालीन प्रचलित अष्टोत्तरीयां करेल विक्रितिने अंगे कांतिसागरे पोतानो बचाव कर्यो
 हे पण पूर्वचार्य कृत स्यार ग्रन्थोमां के जेनो एमणे आधाररूपे निर्देश कर्यो है ते कोइमां पण अष्टोत्तरीतुं बीज नथी एटले
 ग्रन्थोनो नामोल्लेख निरर्थक है अने गणधरोनी सामाचारीयां वागा फेर बत्ताबीने तो श्री कान्तिसागरे सिद्धान्त विषयक पोताना
 अज्ञानतो ज परिचय आप्यो है, बली आ स्थले बीज पछवोतो निर्देश करीने लेखक पोतातुं यतिपणुं सावित कर्युं है, नाहि तो
 आ प्रसंगे ए उल्लेखनी कंइ ज आवश्यकता हती नहि, विवप्रवेश अने अष्टोत्तरी स्नात्रनो विधिओ के जेना आधारे विधिकारो
 आजकाल प्रतिष्ठाओ अने अष्टोत्तरी स्नात्र पूजाओ करावे है ते क्ता समयां केग उदाहरा संकलित थइ है ए वात आजना
 प्रतिष्ठाचार्यो तथा विधिकारो समजे एवा आशयथी अमारे ए अंगे थोडुंक विवेचन करवुं पडवुं है.

७-पूर्वकालीनप्रतिष्ठाओ अने प्रतिष्ठाना फल विवे लोकात्मनस
 पूर्वकालीन प्रतिष्ठाओ वणी सादी अने सुख साध्य हती, जिनभवननुं कार्य समाप्त थया आवतुं एटले शुभ समय जोइ
 प्रतिमा तैयार करावाती अने जिनविं वैयार थतुं के दश दिनसनी अंदर ज तेनी प्रतिष्ठा थइने जिनचैत्य साधिष्ठान थइ
 जतुं, समवाय के गृहस्थ व्यक्ति कोइ एक शासनपति तीर्थकर विशेषनी प्रतिष्ठा करावतो त्यारे आसपासना ७ गामोमां पण
 भाग्ये ज तेनी खबर पहोंचती, पण ते क्षेत्रना उत्सर्पिण्यादि भावी चोवीसे तीर्थकरोनी प्रतिष्ठा थती त्यारे कंइक विशेष आक-
 र्षक थती अने संवसमुदाय एकरन थतो अने ज्यारे भरतादि पंदर क्षेत्रना सर्वतीर्थकरोनी अर्थात् १७० जिननी प्रतिष्ठा थती



अने यतिपौना प्रानलयनो हतो, आ समय दर्मियान प्रतिष्ठाओ, पूजाओ, उद्यापनो अने बीजा जे काइ महत्त्वपूर्ण धार्मिक कार्यो यता तेमा विधिकार तरीकेनी सुल्यता, श्रीपूज्योनी अथवा तेमना आत्ताकानी यतिपौनी रहंती, सामप्रोनी धर्चिओ तेमना दाखे लखाती अने ते सामप्रोनी उपयोग तेमनी इच्छानुसर थलो, घणो खरो औपयोगपौगी सामान तेमना उपायपोमा पद्दोची जतो अने पैसा टक्राने अगे पण घणा गोदाला थता छता तेमने ए विषयमा कोइ पण कइ कही शकतु नहि

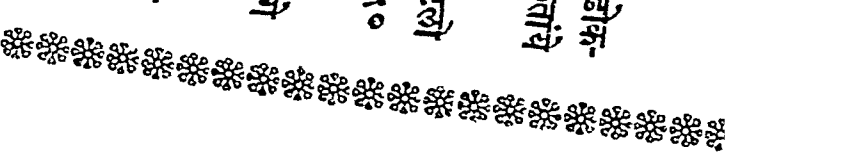
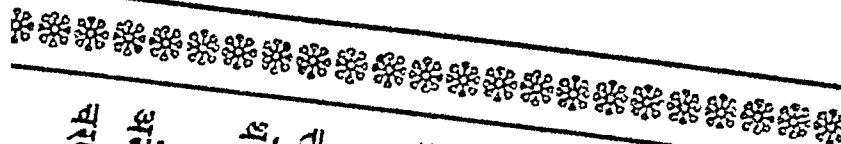
आवा गोलमालना समयमा विधिओमा सामप्रोगत फेरकारो घणा थइ गया, सामाननी यादिओ लखनाराओए वखो, सुगधिपो, मेवाओ, फलो, मिठाइपो अने रोफड द्रव्य गिरयक सलगामा यथेच्छ नथारा कर्पो, सामाननी ते यादिओ पाळ्खयी चिधि पुस्तकोमा दाखल थइ अने ते लिखित पुस्तको उपरयी तेमज ते उपरयी पुस्तक प्रकाशको द्वारा छपायेल पुस्तको उपरयी विधान करावता बिखेल विधिकार गृहस्थोए ते विधिओ तेम ज तेमा लखेल सामप्रो प्रमाणे गिधिविधान कटावनानी प्रष्टि पाडी, बीसमी सदीधी आजे एकनीसमी शाब्दीमा चालता मिथुनगिधिवि-पुस्तकोमा जणायेल सामप्रो मेलजाने यथा विधिकारो प्रतिष्ठाओ अने महाप्रजाओना गिधिविधानो करावे छे, पण आ आधुनिक गिधिविधानो केमा विधिकारने दावे केगी रीते विकृत थइ छे ए वस्तु जो समजी लेगाय तो उक्त पुस्तकोक सामप्रोविषयक पोतानो आपइ अनर्थ छोटै ज एमा दना नयी.

अष्टोचरी स्नाथनी समाप्तिमा श्री काविसागर लखे छे " इति श्री अष्टोत्तरी स्नाथविधिः । अत्र सामाचारी विधिषु कोइ क्रियान्तर घणा छे ते देखी व्यामोह न करगो इहा श्रद्धविधि, प्रतिष्ठाकर, जिरण स्नान, कल्पसामाचारी प्रभुर ग्रन्थावलो-कन करी युक्ति विधि लख्यो छे, कोइ अरिहंत साध्य क्रियान्तर होए ते साध्य शुभ माटे सकल छे. गायत्र नामाचारीमाहि परिण

स्नात्र विधिओमां स्नात्रना अभिषेको थया पही प्रतिमाओ साफ करी पूजिने चैत्यवन्दन कर्या पही स्नात्र भणावी नैवेद्य डोक-
वातुं अने बीजीचार देववन्दन करवानुं विधान दाखल थयुं, ए उपरांत बीजो पण साधारण विधिगत फेरफार थयो, उताये
खर्चनी दृष्टि एआमां बहु परिवर्तन थयुं नथी.
सं० १८८७ पही आज सुधीना १२५ वर्षोमां आ पूजासां कंटलये परिवर्तनी थइ गयां, अष्टमंगलनी पाटलीनी पाटली

थयो, वखोमां यथेच्छ वृद्धि थइ, रूपया नामथी पूर्व मात्र बे चोखंडा रूपीया हता तेने बदले आजै रोकडा रूपैया वधीने १५०
सुधीनी हदे पर्वोच्या प्रति अभिषेके १ रोकडो रूपयो सूकाय तो ज स्नात्र पूजा सारी थइ गणाय.
ग्रह-दिक्पाल-अष्टमंगलना पाटलाओ उपर रूपानाणुं सूकायानुं चाळु थयुं, वा थया लाणुं, अड्डाहि उत्सव स्नात्रने अंगे
अनिवार्य थयो.
अड्डाहि महोत्सव, जलयाना, कुंभ स्थापना, स्मरणपाठ, अखंडदीप धूप आदि ए वधी वस्तुओए छेछां १०० वर्षोमां अष्टो-

तरीनी विधिमां प्रवेशीने आ स्नात्रपूजाने के जे पूर्व सुख साध्य हती ते दुःखसाध्य बनानी दीधी, जे स्नात्रपूजा पूर्व थोडा खर्च
थोडा समयमां भणावी शकती हती ते आजै यणा खर्च यणा असे भणानी शकय तेवी बनी गइ छे.
ए विषयमां प्रश्न थयो स्वाभाविक छे के लगभग २५० वर्षोमां जे परिवर्तन न थयुं ते छेछां १०० वर्षोमां केम थयुं ?
अने ते पण सामग्रीने ज अंगे ?, इतिहासना जाणनाराअं साटे आनो उत्तर आपवो मुक्केल नथी, ओगणीबामा सकातुं अनितम
चरण अने बीसमी शताब्दीनो पूर्वार्ध ए ७५ वर्षनो गालो परिग्रहधारी अने शिथिलाचारनी अन्तिम 'हदे पर्वोचेला श्रीपूजयो



दिशापरत्वे, चन्द्रनी टीलियो, देइने, कराती, हती अने सुगंधी द्रव्योथी-पुष्पोथी पूजन करातु हतु, वस्त्रपूजानी के वस्त्राछादननी, मंड पण चर्चा न हती.

नन्यावर्तनु मंत्र जे. पूरे २४ हाथनु अखड गणातु हतु, तेनुं प्रमाण एरुदम, वधारीने २९१ हाथनु पहेल वहेल्यं श्रीवर्ष मानसूरिलीए जणाव्यु, एमना वृहन्नन्धावर्तमा सर्व मलीने २९१ अधिकारी देव देवी गण होइ प्रत्येक माटे एक एक हस्त वस्त्र गणी लीधु, एटले ए पछी धीरे वस्त्र सामग्रीमा वृद्धि थया माडी, जो के नीजा प्रतिष्ठारूपकारोए एमना उक्त सिद्धान्तने तदूपे तो मान्य न रुयो, छता वस्त्रना सन्धमा ते पछी आचार्योए कइक शरुआत जरूर करी, दिशापालोना पाटला उपर पहेला खान्जानतो रियाज न हतो ते एक वस्त्र बाकनी हिमायत करीने चाहू कर्यो, ग्रहोनी पाटलो अस्तित्वमा आव्यो एटलु ज नहि, ते उपर प्रत्येक ग्रहना वर्ण, प्रमाणेनु वस्त्र चढावमानो प्रचार पण थयो,

✓ ४ वेद्वि (माटीजा-वर्तनोनी वेद्वि)यो के जे माटे पूरे वस्त्रनी वात ज न हती, ते पदरमा सोलमा सैकाथी प्रत्येक १२।१२ हाथ वस्त्रनो अधिकार मेलनी चुकी हती

जलयत्राना कुभो नन्यावर्त अने जिनमतिमा पासे स्थापन कराता, कुभो उपर पूरे जवाराना पात्रो मुक्राता हता पण पाछ- ली जवारापात्रोनु स्थान नालियेर अने रगीन वस्त्रे, ग्रहण कर्यु जे आज पर्यन्त चाल्यु आवे छे

आम धीमे धीमे प्रतिष्ठाविधियोमा वस्त्रसामग्रीए एक महत्त्वनु स्थान प्राप्त करी लीधु छे आजे ग्रहो तथा दिशापालोना पूजन माटे नियत रगना रेशमी रत्नो ज जोइये, एम आजे नियत रगना अनेक वस्त्रो एरीदाइने आवे त्यारे ज प्रतिष्ठा के

शान्तिस्नात्र जेवी धार्मिक क्रियाओ थइ शक्रे छे.

(३) क्रयाणको—

निर्वाणकलिकानी सामग्री-सूचीमां ' क्रयाणक 'नो उल्लेख नथी, पण तेमां उल्लिखित ' अष्टोत्तरशत मातृपुटिका ' जो क्रयाणक पुटिका होय तो नवाई नथी, अने जो एम ज होय तो ए कहेहुं जोइये के पादलिप्तसूत्रिना समय सुधीमां ३६० क्रयाणको नहि पण १०८ क्रयाणको ज महत्त्वनां गणातां हसे अने तेनी ज प्रतिष्ठामां उपयोगिता स्वीकाराई हसे, पछी धीमे धीमे १०८ नुं स्थान ३६० क्रयाणकोए ग्रहण कर्यु हसे अने १०८ ने वदले ३६० क्रयाणकोनी पुडिओ आगल धरावा मांडी हसे. श्रीचन्द्रसूरिजीना समय पर्यन्त प्रत्येक क्रयाणकोनी जुदी जुदी पुडिओ बन्धाती हती. जिनपभना समयमां वथां क्रयाणकोनी एक पुडो बांधवानी प्रवृत्ति चाल् थइ गइ हती छतां जिनप्रससूरि पोते ३६० पुडिओ बांधीने धरवी जोइये ए मतना हता, पण ते पछी बथां क्रयाणको भेगां बांधी एक पुडो करीने प्रतिमानी आगे सूत्रानो सार्थिक प्रचार थइ गयो हतो जे आज पर्यन्त तेज समाणे कराय छे.

(४) मुद्रा अर्थात् रूपैया पैसा—

पूर्वकालीन प्रतिष्ठाओमां अथवा तो स्नात्रोमां रूपैया पैसानो सामग्री रूपे उपयोग न हतो, इनाम के दानमां नाणाने अवकाश हतो, बाकी पूजापामां तो वास, गंध, पुष्प, धूप आदिने ज स्थान मल्युं हतुं, पण धीमे धीमे ए विधानोमां नाणांए पण प्रवेश कर्यो. प्रथम दोकडे (त्रांबाना अडधियाए) विधिमां पोतातुं स्थान जमाव्युं अने एनी पाछल रूपैयो पण अंदर घुस्यो,

प्रथम एकैक पूजाना पाटला उपर एक एक रूपैयो चढ़या लाग्यो. धीरे धीरे पद प्रति रूपानाणु जोइये आवो आग्रह यत्रा माहयो अने रूपैयो नहि तो आठ आना, पावली के छेवटे रूपानी वे आनी तो जोइये ज एम रुहीने विधिकारोए ते मूकाववा माडी. अने शातिस्नात्र होय के अष्टोचरी वृद्धस्नात्र होय एण अभियेक जेटला रूपैया आगल पाट उपर मुकायतो ज पूजा सारी मणानी रुहेनाय, भले ते मूकायेल रूपैयानु गमे ते याय, पूजारी (गोडी) ले, उपदेशक साधु अथवा यति ले के पछी ते भंडारमा जाय, विधिकारोए तो पोतानी रूढि चालू ज राखयो !

(५) मेवो अथवा मूका फलो--

निर्वाणकलिकामा प्रतिष्ठानी सामग्रीमा मेवा अथवा छका फलोनु विधान नथी, नालियेने फल रूपे अने सोपारीने तयोल्ना अग तरीके गणी लेचामा आवे तो तेमां मेवानी कोड पण चीज लीधी दृष्टिगोचर यती नथी. ज्यारे ते पछीना दरेक प्रतिष्ठारूपमां मेवो अथवा मूका फलो प्रतिष्ठाविधिना एरु अग्ररूपे रूढ थइ गया ठे.

(६) नैवेद्य--

नीनी अनेक सामग्रीओनी जेम निर्वाणकलिका पछीना कल्पोमा नैवेद्य सामग्रीनी पण क्रमे करीने यणी ज वृद्धि थइ ठे, नि०कलिकामा पस्वान्न तरीके १--पायस दूधपाक, २ गुडपिड (गोलना पुडला) ३ कसर (खीचडी) ४ दध्योदन (दहिनी करयो) ५ मृदुमारिका (सोहाली-साकली) ६ शाल्योदन (शालना तादला) ७ सिद्धपिण्डक (धीमा तलेली पिडली-मुठिया) आ सात नामो आवे छे अने ए नैवेद्य पण नन्यारवना पाटला आगल मूरुमाना छे, जिन प्रतिमा आगल नैवेद्य

ચઢાવવાનો તેમાં કયાંઈ ઉલ્લેખ નથી, પરંતુ ઇ પછીના પ્રત્યેક પ્રતિષ્ઠાકલ્પમાં ઉક્ત નંધાવર્તના નૈવેદ્ય ઉપરાન્ત પ્રતિમા આગલ મૂકવાના ૨૫ કાકરિયા (લાહવા, જેનું બીજું પ્રાચીન નામ 'મોરિંડા' પણ હતું), શ્વાજાં, ઘેબર, સાટા, ઠોર, મરકી, પેંડા આદિ અનેક પક્વાનો વિધિમાં અનિવાર્ય થઈ પડ્યાં છે. ઇ સિવાય ગ્રહ દ્વિશાપાલોના પૂજનમાં વપરાતાં નૈવેદ્ય તો જુદાં જ, ચૂરમાના લાહવા, તલના લાહવા, અહદના લાહવા, ઉપરાંત મગની, દાલના, ધાળીના, ફુલીના, મોતીયા, ઘેસીદલના લાહવા અને બીજાં કેટલાંયે આવાં પક્વાનો તૈયાર થાય ત્યારે જ ગ્રહો અને દિક્ષપાલોનું પૂજન થઈ શકે. અષ્ટમંગલનો પાટલો જે અક્ષ-તથી માંગલિક ૮ આકારો આલેખવા માટે પ્રારંભમાં હપયોગમાં લેવાતો હતો તે ઉપર પણ આજે અક્ષતો ઉપરાન્ત ફલ, ફૂલ, નાળાં અને વ્રહ્મ ચંદે છે, અને ઇ વધું વિધિકારો ઇવી અદાથી કરાવે છે કે જાણે ઇમ કર્યા સિવાય વિધિ અપૂર્ણ જ રહી જતી હોય!

(૭) અંજન—

પાદલિપ્હરિજીઐ તથા તે પછીના ' આચારવિધિ ' આદિના કર્તાઓ ઇ 'અંજન' તરીકે કેવલ 'મધુદત'નો જ ઉપયોગ કરવા જણાવ્યું છે, પણ તે પછીના પ્રતિષ્ઠાકલ્પકારો ઇ નેત્રોન્મીલન માટે અનેક પદાર્થોનો ઉપયોગ કરવા માંડ્યો, કોઈ ઇ કાલો સરમો, સાકર અને ઘી, કોઈ ઇ રાતો સરમો સાકર અને ઘી, કોઈ ઇ આમાં વરાસ વધાર્યો તો કોઈ ઇ સરમો, સાકર, વરાસ, કસ્તૂરી, મોતી, પ્રવાલાં, સોંઠું અને ચાંદી આદિનો વધારો કરી નેત્રાંજન તૈયાર કરવાનું વિધાન કરીને—

“ રૂપ્યકચોલકસ્થેન, શુદ્ધેન મધુસ પિષા। નયનોન્મીલનં કુર્યાત્, સૂરિઃ સ્વર્ણશલાકયા ॥૧૧”

આ વિધાનમાં આમૂલ-ચૂલ પરિવર્તન કરી નાખ્યું છે !.

(૯) પ્રકીર્ણક—

ઉપર અમોષ લે કેટલાક ઉદાહરણો આપ્યા છે તે વિશેષ મહત્ત્વના છે, ચાકી સાધારણ પરિવર્તનો તો એટલા વધા થયા છે કે જેની ગણના કરવી પણ કઠિન છે. પ્રાચીન પ્રતિષ્ઠાઓમાં શું ને હતુ અને પાંચલથી ત્રિધિમાં શું દાખલ થયું એ જણાવવાને ઉપર કેટલાક ઉદાહરણો આપ્યા ને, એવી વિપરીત પૂર્વે શુ હતું અને અંજે વિધિમાં શું નથી આ વિપયના કેટલાક દાખલા આગેના પ્રકરણમાં જોયાં

વિધાનમાર્થો નિકલી ગયેલી વસ્તુઓ—

જેમ વિધાનમા ઘણી વસ્તુઓ નવી દાખલ થઈ છે, તેમ થોડીક વસ્તુઓં લે પ્રાચીન વિધાનોમાં હતી તે નંબ્ય પ્રતિષ્ઠા-વિધિઓમાથી અદૃશ્ય પણ થઈ છે. એ વિપયના કેટલાક ઉદાહરણો નીચે પ્રમાણે ને:—

- (૧) નિર્માણકલિકામા ચલિની સાથે કદમૂલના ગ્રહણનો વે ગણ ચાર ઉછેલ થયેલ છે.
- (૨) નિર્માણકલિકાની ફલદ્રવીમા 'ગોર' તથા 'દુન્તાક'ની પ્રથમ્ત ફલ તરીકે ગણના થયેલી છે.
- (૩) નિર્માણકલિકામા 'હર્ગામુત્ર' તથા 'લોહમુદ્રિકા'નો ઉપરુણ તરીકે સ્વીકાર થયેલ ને, પરન્તુ એ પછીના કોઈ પણ પ્રતિષ્ઠાસ્વપ્નામાં સામગ્રીમા ઉપર્યુક્ત પદાર્થોની પરિગણના થઈ નથી.
- (૪) નિર્માણકલિકામાં એક સ્થપતિનો અભિષેક માનેલો છે, સ્થપતિ (ચિલ્પી) પ્રથમ એક કલશ વડે પ્રતિમાનો-અભિષેક કરી લેતો તે પછી ત્રીજા ૪ સ્નાનકારો અભિષેક કરતા, આ વિધિનો શ્રીજિનમમમુરિજીએ સ્વીકાર પણ કર્યો છે, ડતા ત્રીજા કોડ પણ કલ્પકારે ૮-વિધિયું સમર્થન કર્યું જણાવુ નથી.

(५) निर्वाणकलिकासां नन्द्यावर्त ७ वृत्तोथी वनवी तेना प्रथम वलयना मध्य योगे अरिहंत, पूर्वे सिद्ध, दक्षिणे आचार्य, पश्चिमे उपाध्याय, उत्तरे सर्व साधुपदलुं अने आग्नेयादि ४ कोणोमां अनुक्रमे ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने मूची विद्यानुं आलेखन अने पूजन करवानुं विधान छे, पण वीजा प्रतिष्ठाकल्पकारोण् प्रथम वलयमां नन्द्यावर्त अने एने फरता आठ दिशा भागोमां अनुक्रमे १ अरिहन्त २ सिद्ध ३ आचार्य ४ उपाध्याय ५ सर्वसाधु ६ दर्शन ७ ज्ञान ८ चारित्र ए आठनुं स्थापन पूजन करवानो आदेश कर्यो छे, शुचि निधाने छोडी दीयी छे.

(६) पूर्वे स्थिर प्रतिष्ठामां प्रतिमा नीचे पंचधातुक स्थापन करातुं हतुं जेमां लोहधातुनो पण समावेश थतो हतो, पण पाछलना प्रतिष्ठाकल्पकारोण् पंचधातुकनुं स्थापन पंचरत्नने आप्थुं के जेमां सोनुं रूपुं त्रांनुं प्रवाल अने मंती होय छे. लोह होतुं नथी.

(७) पूर्वे चौदमा सैका सुधी चर प्रतिष्ठामां नन्द्यावर्त पूजीने ते उपर प्रतिष्ठाप्य जिनमतिमा स्थापन कराती हती, पछीना थोडाक समय सुधी कोइ प्रतिमा स्थापन करता अने कोइ तेनुं चिन्तन मात्र करीने स्थापना मानी लेता हता, धीमे धीमे ते प्रवृत्ति पण बंध पडी. आज काल नन्द्यावर्तना पाटला उपर प्रतिमांनुं स्थापन के चिन्तन कंइ पण थतुं नथी. मात्र ते उपर नन्द्यावर्तनो चित्रित पट मूकीने तेनुं पूजन करी नन्द्यावर्त पूष्युं मानी लेवासं आवे छे.

(८) पूर्वे प्रतिष्ठाचार्य, इन्द्र अथवा मुख्य स्नात्रकार अने खास प्रतिष्ठामां भाग लेनाराओ, प्रतिष्ठाने दिग्से उपवास करता हता, पण ओजे कोइ पण उपवास करतुं होय एतुं जाणवामां नथी.

(९) पूर्वे प्रतिष्ठित विम्बनु करुण त्रीजे पांचमे के सातमे शुभ दिवसे छोडातु हतु अने ते पण विधिपूर्वक ज, बृहत्स्नात्र अथवा अष्टोत्तर शत अभिषेक ते दिवसे करुण-मोचन पहेला करता हता अने छोडता पहेला जिनबलि अने भूतबलिपूर्वक चैत्यदान करी कायोत्सर्ग करता हता, जेमा छेछो कायोत्सर्ग प्रतिष्ठादेवता विसर्जनार्थ करता हतो, ते पछी सौभाग्यमत्र न्यासपूर्वक करुण छोडी सौभाग्यवती स्त्रीना हाथमा अथवा पोताना प्रियजनना हाथमा अपातुं हतु, जरूरी कारणे आ विधान प्रतिष्ठाना दिवसे पण करी लेयातु हतु, पण आज्ञे तो आ विधि तरफ विधिकारो जोता पण नथी ! शक्तिस्नात्र के अष्टोत्तरी-स्नात्र करीने विधिकारो पोताने ठेकाणे पहोचवानी ज तैयारीमां लागे छे, जाणे के करुणमोचनने विधिमा स्थान ज नथी !

३ वर्तमान समयमा उपलब्ध थता प्रतिष्ठाकल्पो—

आज्ञे आपणामा प्रतिष्ठाकल्पो केटला विद्यमान हथे ए निश्चित रूपे कहेतु शक्य नथी, घणाक प्रतिष्ठाकल्पो-सामाचारी ग्रन्थोमा, उपदेशग्रन्थोमा अने कथाग्रन्थोमा ते ते ग्रन्थना एरु प्रकरण तरीके लखायेला उपलब्ध थाय छे, त्यारे केटलाक पोताना नामथी पण स्वतंत्र अस्तित्व धरावे छे, आ यस्तते अमारी सामे ८ प्रतिष्ठाकल्पो रहेला छे, जेमाना ३ सामाचारीना एरु भागरूपे अने ५ स्वतंत्र ग्रन्थरूपे गणी शक्याय. आ यथा कल्पोने अमो कालानुसार नगर आपीने अनुक्रमे परिचय करावीशु

(१) आज्ञे आपणा श्वेताम्बर सप्रदायमा सर्वथी प्राचीन प्रतिष्ठा पद्धति श्रोपादलिप्तहरिजीकृत 'निर्माणकल्पा' छे, यद्यपि आमा उद्धृत माकृत गाथामुद्र पद्धति के जेनो ग्रयकारे 'आगम' कहीने पोतानी पद्धतिमा समावेश कर्यो छे, निर्वाण

कलिका करतां ये घणी जुनी छे, छतां असो एने निर्वाणकलिकाना मूल तरीके ज गणी लइये छीये, कारण के ए प्राकृत-पद्धतिना प्रारंभ के समाप्तिसो एमां उल्लेख नथी, तेमज ए उपरना मंत्रभागनो पण पत्तो नथी.

‘निर्वाण कलिका’ना निर्माण समयने अंगे निश्चितरूपे कहहुं सक्य नथी, छतां ए कहेवामां बांधो पण नथी के ए ग्रन्थनी रचना चैत्यवासनी प्रवृत्ति थया पछीनी छे, एटले विक्रमना पांचमा सैकानी आसपासना समयमां ए पद्धतिनी रचना शइ हशे, एना अंतरंग निरूपणथी पण एज समयनुं अनुमान थइ शके छे.

(२) असारी पासेना प्रतिष्ठाकल्पोमां निर्वाणकलिका पछीनो नंबर श्रीचन्द्रमूरिकृत प्रतिष्ठापद्धतिने फाले जाय छे, आ प्रतिष्ठाविधि सुवोध्या सामाचारीना अंतमां छपायेल छे, प्रक्षिप्त छतां ये आपणी बीजी पद्धतिओ करतां आ मौलिक अने प्राचीन छे, आहुं निर्माण विक्रमना वारमा सैकामां थयुं निश्चितपणे कही सकाय:

(३) आचार्य जिनप्रभमूरिकृत ‘विधिमार्ग प्रया’ नामक ‘सामाचारी’मां आपेल ‘प्रतिष्ठाविधि’ नामक ‘प्रतिष्ठा-पद्धति’ श्रीचन्द्रमूरिनी प्रतिष्ठापद्धतिने अनुसरनारी छे, छतां कोई कोई विपयमां ए जुदी पडे छे, आनी रचना संवत् १३६३ मा वर्षमां थयेली छे.

(४) ए पछीनी पद्धति श्रीवर्धमानमूरिकृत आचारदिनकरान्तर्गत ‘प्रतिष्ठाविधि’ छे, आनी रचना समय विक्रमनो पंद्रमो सैकों छे, आपणी प्रतिष्ठा विधिओमां सोथी अधिक विस्तृत अने चैत्यवासियो अने भंडारकोनो भरपूर असरवाली ए पद्धति छे.

(५) तर्थाशुण्डरत्नसुरि सदभित 'प्रतिष्ठाकल्प' पण पदरमा सैकाना उत्तरार्धनी कृति छे, ए घणी ज शुद्ध अने सरल मंस्कृतमा लखायैली अमारी पासेनो सर्व प्रतिष्ठात्रिधियोमा सारी अने सुगम छे

(६) विशाखराजगिर्यकृत 'प्रतिष्ठाकल्प' के जेनु निर्माण पण पदरमा सैकाना अन्तमा अथवा तो सौलमा सैकाना प्रारंभमा थौंहु छे, ओनो प्राचीन प्रति अमारी पासै छे, ए कल्प पण शुद्ध प्राय छे

(७) कृताना नाम वंगरनो उवा श्रीजिनप्रभसुरिजिन जनुसरनारो जा प्रतिष्ठाकल्प कोड खरतरगच्छीय विद्वानना हाथे पहिमात्रागली लिपिमा लखायेलो छे, रचना के लेखनसंन्यो संवत् मिति घमा नथी छता भाषा अने लिपि उपस्थी ए सोलमा सैकाना अन्त भागमा अथवा सत्तरमा सैकाना प्रारंभमा रनेलो लागे छे

(८) उपायाय सकलचंद्रजी गणिकृत 'प्रतिष्ठाकल्प' के जे अलंकालेना विधिकारोमा अधिक प्रसिद्ध अने प्रचलित छे, पेटलु ज नहि पण आचार दिनकरनी प्रतिष्ठा विनि वाद करता वीजी नथी विधिओ करता ए अधिक निस्तृत छे, आ कल्पनो रचनाकाल सत्तरमा सैकानो मध्यभाग छे, अमारी पासेना ८ प्रतिष्ठाकल्पो पैकी सो गी शुद्ध ५ मो अने अशुद्ध आ आठमो प्रतिष्ठाकल्प छे, १ वी ५ मथीना प्रतिष्ठाकल्पो शुद्ध मस्कृत भाषामा रचायेल छे, ज्यारे ६औं आ ७ण प्रतिष्ठाकल्पो संस्कृत तेम ज प्राचीन लोकाभाषामा लखायेल छे. दरेकनो मत्र भाग संस्कृत अने स्वचित् प्राकृतमा छे, अने हरीरत्न प्राय भाषामा लखेगी छे, कल्प दंडा नी इकीकृत पण स्वचित् संस्कृतमा जणावैली छे

आठगो कल्पनो परिचय 'राव्यां पञ्जी हवे आ ग्रन्थोना आधारभूत ग्रन्थोने अगे विचार करीये.

४-प्रस्तुत प्रतिष्ठाकल्पोन्नो मूलाधार—

उपर्युक्त ८ कल्पों पैकी कयो कल्प कथा मूलग्रन्थ अथवा कल्पग्रन्थने आधारे बन्यो छे अथवा कथा कल्पने अनुसारे छे ए विषे विचार करवो आवश्यक छे.

असारी पासेना कल्पोसां पांच प्रकारनी प्रतिष्ठाविषयक त्रिधि परम्परा तरी आवे छे, नंबर २।३।७ नी त्रिधि एक बीजाना त्रिधिनुं अनुसरण करे छे. नंबर ५।६ आ वे कल्पो घणे भागे एक बीजाने अनुसारे छे, ज्यारे १।४।८ आ त्रण कल्पोनी विधि कोइ पण बीजा प्रतिष्ठा कल्पनी विधिथी संवशे मलती आवती नथी.

नं. १ नो कल्प प्राचीन होइ बीजा कल्पोथी घणी वातोसां जुदो पडे छे, जलयात्रानी विधि तेम ज अभिषेकनी विधि आसां आपी नथी, यद्यपि अभिषेकनी सर्वसामग्री एसां लखी दीधी छे.

आ कल्पसां प्रतिष्ठाना क्रियांगोसां विशेष महत्त्वनी वस्तु 'नन्द्यावर्त'तुं पूजन छे, नन्द्यावर्तना पूजन पछी आसां सीधुं ज प्रतिष्ठा विधान छे, दिक्पालो तेमज ग्रहोतुं पूजन के स्थापन आसां स्वतंत्र रीते आवश्यक गणुं नथी, नन्द्यावर्तसां ज ए वधांनो समावेश करीने प्रतिष्ठाविधिने अल्प व्यय अने अल्प कष्टसाध्य करी दीधी छे.

निर्वाणकालिकानी प्रतिष्ठाविधि केटलेक अंशे दिगम्बरीय प्रतिष्ठापद्धतियोने मलती आवे छे, कदाचित् दिगम्बराचार्योना प्रतिष्ठाकल्पोतुं उद्गम स्थान पण आ प्रतिष्ठापद्धति ज होय तो आश्चर्य जेतुं नथी, दिगम्बरोना अनेक ग्रन्थो श्वेताम्बर संप्रदाय मान्य-मिद्धान्तोना आधारे बन्या छे, ते प्रमाणे आसां पण बननुं विशेष संभवित छे.

आ प्रतिष्ठापद्धतिनो मूलाधार कोइ अतिप्राचीन प्राकृत प्रतिष्ठाकल्प छे, के जेनुं आ पद्धतिना लेखके 'आगम' कहीने बहुमान कर्युं छे अने स्थाने तेनी गायत्रीओना अवतरणो आपीने पोतानी आ पद्धतिने समृद्ध अने प्रामाणिक बनावी छे. न० २ नो प्रतिष्ठाकल्प पण ममवित रीते कोइ प्राचीन प्राकृत प्रतिष्ठाकल्पने ज आधार बन्न्यो छे, छता आमा कोइ पण गायत्रीओ प्रमाण तरीके आपी नथी, बली एमणे मन्त्रभाग पण यणो ज सक्षिप्त रूपे आप्यो छे. एम लागे छे के निर्माणकालिकानो सीधो नहि पण तेना आधार उनेली कोइ प्राचीन पद्धतिनो आधार लइने श्रीचन्द्रमुरिजीए पोतानी आ प्रतिष्ठा पद्धति बनावी ह्यो.

न० ३ नो प्रतिष्ठाकल्प न० २ गला प्रतिष्ठाकल्पने आधार ज न्यो छे, बनेनी प्रतिष्ठा विषयक मान्यता समान छे, मात्र वर्वाचव नजीमो फेरफार छे के जेनुं कारण मात्र समयभिवता अने कर्तृभिवता ज होइ सके.

४ था प्रतिष्ठाकल्पनो आधार शो छे ते एना कर्ता ज नीचिना शब्दोमा गयी दे छे—

“ प्रतिष्ठाविधिरादिष्टः, पूर्व श्रीचन्द्रसुरिभिः । सक्षिप्तं विस्तरेणाय-मागमार्थाद्वितन्यते ॥१॥”

“ प्रतिष्ठाकारयितुर्गृहे प्रथमं शान्तिकं पीष्टिकं कुर्यात् । अतश्च श्रीचन्द्रसुरिप्रणीता प्रतिष्ठायुक्तिर्महाप्रतिष्ठाकल्पोपेक्षया लघुतरंति ज्ञायते । ततः आर्यनन्दिशपक-चन्द्रनन्दि-इन्द्रनन्दि-श्रीवज्रस्वामिप्रोक्तप्रतिष्ठाकल्पदर्शनात् सविस्तरा लिख्यते ”

अर्थ—‘ पूर्व श्रीचन्द्रमुरिजीए संक्षिप्त प्रतिष्ठाविधि कही छे, ज्यारे आ आगमानुसारे सविस्तर रचाय छे.

कारण के प्रतिष्ठाकारक गृहस्थना ग्ररे प्रतिष्ठा करता पहेल्य शान्तिक अने पीष्टिक करबु जोडये, पण श्रीचन्द्रसुरिरचित

प्रतिष्ठापद्धति 'महाप्रतिष्ठाकल्पों'नी अपेक्षाएं बंधनी ज न्हानी छे, तेणी आर्यनन्दिक्षणक, चन्द्रनन्दी इन्द्रनन्दि अने श्रीवज्रस्वामि-
कथित प्रतिष्ठाकल्पो देखीने आ सक्तिर (प्रतिष्ठापद्धति) लखाय' छे।

उपरना वाक्योमां श्रीवर्धमानस्मरिजीए जेमनो नागनिर्देश कथो छे ते आर्यनन्दिक्षणक अने चन्द्रनन्दीनां नामो आपणी
परंपराने मलतो नथी, पूण दिगम्बर भट्टारकोनां नाम होय तेम लागे छे, ' इन्द्रनन्दी ' दिगम्बर तथा श्वेताम्बर-वंने परम्परा-
ओमां थया छे, परन्तु श्वेताम्बर इन्द्रनन्दी श्रीवर्धमानस्मरिजीथी परवर्ती होइ आ प्रतिष्ठाकल्पकार दिगम्बर इन्द्रनन्दी ज
होवानो विशेष संभव छे.

श्रीवज्रस्वामी श्वेताम्बर संघमां एक महान् प्रभाणक गइ गया छे, जतां एमना प्रतिष्ठाकल्प विषे आपणे कइ जाणता
नथी, एम जणाय छे के प्राचीनतम प्राकृत प्रतिष्ठाकल्पनं ज आचारदिनकरकारे श्रीवज्रस्वामिकृत मानी लीधां छे के जेने
श्रीपादलिप्तस्मरिजीए पोतानी प्रतिष्ठापद्धतिमां 'आगम'ना नामथी उल्लेख्यो छे.

गमे तेम होय पण श्रीवर्धमानस्मरिजीनी पासे श्वेताम्बर तथा दिगम्बर वंने संप्रदायोनी निस्तृत प्रतिष्ठापद्धतिओ हती
के जेओहुं तेसणे अबुत्तरण ज नहि, खूब उपजीवन पण कर्तुं छे, आचार-दिनकरमां एमणे आपेली प्रतिष्ठापद्धतिमां-खारा
करीने ' नन्द्यावर्तपूजा ' अने 'महापूजा' ना प्रकरणोमां जे गंभीर अने विद्वत्पुर्ण काव्योनी छटा दृष्टिगोचर थाय छे ते वस्तु
श्रीवर्धमानस्मरिजीनी पोतानी नहि पण तेमना पुरोगामी प्रतिष्ठाकल्पकारोनी छे.

वर्धमानस्मरिए श्वेताम्बर प्रतिष्ठाकल्पो उपरान्त दिगम्बरीय प्रतिष्ठाकल्पोनो पण पोतानी विधिमां उपयोग कथो हतो ए

વાતમા એમણે વાપરેલા 'જૈનત્રિપ્ર' 'હુછુક' આદિ શબ્દો માણી રૂપે ગણી ગયાય, છતાં એ પણ સ્વરૂ છે કે જે વસ્તુ શ્વેતામરીય પ્રતિષ્ઠા રૂપોમા સુદૃઢ જ ન હતી તે વસ્તુ એમણે ડિગમ્બરો પાસેથી લીધો નથી, નન્ધ્યાર્તના પૂજનને શ્રાવીન શ્વેતામરાચાર્યોએ પ્રતિષ્ઠાનુ પ્રધાન અંગ ગણીને તેનું વિસ્તૃત વિધાન કર્યું છે, આથી વર્ધમાનમ્બરિજીએ પણ એના પૂજનનું સવિસ્તર વર્ણન આપ્યું છે. પણ કલ્યાણક ત્રિધિના પ્રસંગો કે જેનું પહેલાના કોઈ પણ શ્વેતામર સમ્પ્રદાયના પ્રતિષ્ઠા કલ્પમા વર્ણન કે વિધાન ન હતું તે એમણે પણ આ ડિગમ્બર સમ્પ્રદાયની પરમ્પરાગત રસ્તુને યોતાની પ્રતિષ્ઠાત્રિધિમા સ્થાન આપ્યું નથી.

નં ૫૧૬ ના પ્રતિષ્ઠાસ્ત્પોનો આધાર ગ્રન્થ તો શ્રોચન્દ્રમૂરિની પ્રતિષ્ઠાપદ્ધતિ જ છે પણ આ કલ્પોમા શ્રીચદ્રમૂરિની પ્રતિષ્ઠા પદ્ધતિનું પરિમાર્ષન થયેલું છે, એ પહેલાની પદ્ધતિઓમા પ્રતિષ્ઠાકારક આચાર્યને મુવર્ણમુદ્રિકા અને મુવર્ણકક્ષણ ગારણ કરવાનું વિધાન છે, પણ આ પ્રતિષ્ઠાસ્ત્પકારોએ એ રસ્તુ ઉડાડી દીધી છે, એ સિવાય વીજી પણ કેટલીક સામ્ય મઠચિંત્રો જે પૂર્વે પ્રતિષ્ઠાચાર્યના હાથે થતી હતી તે એમણે શ્રામકના હાથે કરવાનું વિધાન કર્યું છે. પરિણામ મ્વરૂપ આ કલ્પોમા ગુરુ અને શ્રાવકે કરાના કાર્યો વહેંચાડે ગયા છે. આ તે કલ્પો તપાસનું નીરવધ સામાચારીને અનુરૂપ બનાવી દેવામા આવ્યા છે, છતાં ત્રિધિવિધાનોમા મહસ્તનો ભેદ પાંડો નથી એ જુશી યવા જેવું છે.

નમર ૭ ના પ્રતિષ્ઠાસ્ત્પોનો આધાર ગ્રન્થ શ્રી જિનમ્બરિજીની પ્રતિષ્ઠાપદ્ધતિ છે, એમ ઉતાવે આ સ્ત્પકારે કેટલીક વાતો જુલાલાર્ષક લસી છે કે જે પ્રમાણે એના આધારત્રથમા નથી, એ કલ્પના લેસુકે પણ કેટલીક સામ્ય મઠચિંત્રો પ્રતિષ્ઠાચાર્યને વદલે સ્નાત્રકાર શ્રામકના હાથે કરવાનું વિધાન કર્યું છે, છતાં આમાના કેટલાક ચિંત્રોનો નં ૫૧૬ ના ત્રિધાનોથી ભિન્ન છે.

नंबर ८ नो प्रतिष्ठाकल्प जे उपाध्याय श्री सकलचंद्रजीनी कृति गणाय छे, एनो आधार एना कर्ताए ग्रन्थनी समाप्तिमां नीचे प्रमाणे सूचवयो छे—

“इति श्रीभद्रबाहुस्वामिना विद्याप्रवादापूर्वात् प्रतिष्ठाकल्पोद्धृतः । तन्मध्याजगच्चन्द्रसूरीश्वरेण यत्प्रतिष्ठाकल्पोद्धृतः तत एव प्रतिष्ठाकल्पः सुचिहितवाचक श्री सकलचन्द्रगणिना मङ्कारक श्री हरिभद्रसूरिकृत प्रतिष्ठाकल्प-हेमाचार्यकृतप्रतिष्ठाकल्प-श्यामाचार्यकृतप्रतिष्ठाकल्प-श्री गुणरत्नाकरसूरिकृतप्रतिष्ठाकल्प एभिः प्रतिष्ठाकल्पैः सह संयोजितः संशोधितश्च भ । श्रीत्रिजयदानसूरीश्वराग्रे ।”

उक्त समाप्तिखनो तात्पर्यार्थ ए छे के ‘श्रीभद्रबाहुस्वामीए विद्याप्रवादापूर्वमांथी प्रतिष्ठाकल्प उद्धर्यो, तेमांथी श्रीजगच्चन्द्रसूरीश्वरजीए प्रतिष्ठाकल्पनो उद्धार कर्यो अने तेमांथी आ प्रतिष्ठाकल्प सुचिहित उपाध्याय श्री सकलचन्द्रजी गणिए बनाजीने पूज्य श्रीहरिभद्रसूरि-हेमाचार्य-श्यामाचार्य-गुणरत्नाकरसूरिकृत प्रतिष्ठाकल्पोनी साथे मेलवीने श्रीत्रिजयदानसूरिजीनी सामे सुधार्यो छे.’

प्रस्तुत प्रतिष्ठाकल्प उपाध्याय श्रीसकलचन्द्रजीनी ज कृति छे अथवा तो कोइए एमना नामे चढावी दीयेली कोइ अर्वाचीन कूट कृति छे ए शंका खरेखर समाधान मांगे छे.

उपर आपेल समाप्तिखनी अशुद्धिओ अने प्रशस्तिनो अभाव जोतां ए ग्रन्थ सकलचन्द्रजीनी कृति होवा विषे ज अमने तो शंका छे, छतां प्रचलित प्रणालिकाने अनुसरीने एने श्रीसकलचंद्रजीनी कृति मानी लइये तोये आ वर्तमानरूपमां तो

उपाध्याय श्रासकलचन्द्रजीनी कृति न ज होइ शके. कारण के आसः केटलीक अक्षम्य भूलो नजर पडे छे अने एना केटलाक विषयो अस्तव्यमन थइगयेला जणाय छे, उदाहरणो—

(१) वधा प्रतिष्ठारूपोमा पाचश्रु स्नात्र (अभिषेक) पचगव्यते नवमा नम्बरे मूर्युं छे, अने तेना उपादानोमा पण परिवर्तन करी नाब्युं छे, वधा रूपकारो गायनु जाण, मूत्र, दूध, दहि अने घृत आ पाचने 'पचगव्य' तरीके जणावे छे त्वारे आ रूपमा दूध, दहि, माखण, घृत अने छाश ए पाचनु समुदित नाम 'पचगव्य' आप्यु छे, जे मास्तिक नथी, माखण ने घी तेमज दहि अने छास ए वस्तुओ कइ भिन्न भिन्न नथी पण एरु ज चीजना अवस्थापरक बे भिन्न नामो छे, अने आ रीते खरुं जोता 'पचगव्य'ना नामथी 'त्रिगव्य' ज बने छे अने 'त्रिगव्य'नो ज अभिषेक थाय छे, ज्वारे के प्रत्येक प्रतिष्ठारूपकारे 'पचगव्य' नो अभिषेक करवानु विधान कर्युं छे.

(२) पचगव्यने आगेने माटे राखी आ रूपमा पाचमा स्नात्र तरीके 'सर्दीपधि'नो अभिषेक राख्यो छे अने छट्टो 'मूलिका'ना स्नात्रने सदतर ज ऋढी नाखी तेना स्थाने 'प्रथमाष्टक वर्गनुं स्नात्र गोठबुं छे, उता नयाइ तो ए छे के मूलिकास्नात्र खबते मोलातुं पथ ज आ स्नात्रना पाठरूपे पहेला आप्यु छे अने पछी ननु पत्र आप्यु छे, बीजा, पद्यमा पण 'प्रथमाष्टकवर्ग'मा आगता 'वीरणिमूल'ने स्थाने 'हीरणीमूल' शब्द लखीने खरे ज अर्थनो अनर्थ कर्यो छे !.

(३) आठमो अभिषेक मर्या प्रतिष्ठारूपोमा 'प्रथमाष्टक'नो छे ज्वारे एमा ते 'सर्वोपधि'नो लख्यो छे, अने एना पाठमा बीजा 'अष्टकवर्ग'नो श्लोक कइ लीयो छे जे अप्रासंगिक छे

(४) आ कल्पमां नवमो अभिषेक 'पंचगव्य'नो अने दशमो 'सुगंधोपधि'नो राख्यो छे, पण बीजा सर्वमां नवमो अने दशमो अभिषेक अनुक्रमे 'द्वितीयाष्टकवर्ग' अने 'सर्वोपधि'नो छे. बीजा कल्पो करतां आमां सर्वोपधिनां द्रव्यो पण वणां अने केटलाये जुदी जातनां लीयां छे.

बीजा प्रतिष्ठाकल्पोना 'सर्वोपधि' म्नात्रनो पाठ आमां 'सुगंधोपधि' नामनो एक नवो अभिषेक कल्पीने तेमां आप्यो छे अने एक श्लोक नवो लख्यो छे,

दश पत्नीना आना अभिषेको बीजा कल्पोना अभिषेकोनी साथे मलता थइ जाय छे, छतां एक वै स्वले थोडोक फरक तो छे ज.

(५) बीजा घणा खरा प्रतिष्ठाकल्पोमां अठार अभिषेकने अन्ते शुद्ध जलना १०८ कल्पशोधी अभिषेक करवातुं विधान छे. नं० ५ ना प्रतिष्ठाकल्पोमां दूध, दहि, घी, रोल्डीरस (खांड) अने सर्वोपधितुं म्नात्र अभिषेकने अन्ते करीने पत्नी १०८ जलकलशो वडे अभिषेक करवानो आदेश छे, पण आ कल्पमां तो अभिषेक प्रकरणमां १०८ अभिषेकनो उल्लेख ज नथी अने निर्याणकल्याणकना अन्ते ए १०८ जलकलशो वडे अभिषेक करवातुं विधान कर्तुं छे के ज्यां गनो कोइ प्रसंग ज नथी !

(६) बीजा घणाक प्रतिष्ठाकल्पोमां 'कंकाणमोचनविधि'ना प्रसंगे पण 'अष्टोत्तर शत अभिषेक' करवातुं विधान छे, निर्याण कल्याणक पत्नी आ कंकाणमोचन जेवो प्रसंग उपस्थित करीने ए १०८ अभिषेक त्यां बताव्या होत त्यारे तो सार्धक पण गणी शकत, पण एवो कोइ पण प्रसंग नथी अने अभिषेक लख्या छे. !

(७) बीजा वधा कल्पोनी साथे एनो महत्त्वपूर्ण मतभेद कल्याणकोनी उजवणीनो छे, १ थी ७ सुधीना कोइ पण कल्पमा कल्याणकोनी उजवणी के १० दिवसनो कार्यक्रमनो उल्लेख सुधा नथी, ४ था प्रतिष्ठाकल्पमा नन्दावर्तपूजन अने महापूजा विंगेरे प्रकरण मा अनावश्यक वही शक्याय एटलो बधो विस्तार कर्यो छे, छता ए कल्पमा ए कल्याणकोनी उजवणी के ते संबन्धी मन्त्रो जेवु कइ ज नथी. आना समाप्तिलेखमां सूचव्या प्रमाणे जो आ प्रतिष्ठाकल्प श्रीजगचन्द्ररिजीना प्रतिष्ठाकल्प उपरथी बन्धो होय अने कल्याणकोनी उजवणीनो प्रसंग तेमाथी लीधो होय तो पछी जगचन्द्ररिजीना पृष्ठवर्ती नं० ३।४।५।६।७ ना प्रतिष्ठा-कल्पकारोए पोताना कल्पोमा ए वस्तुनो स्वीकार केम न कर्यो ? सर्वजण नहि तो नं० ५।६ ना कल्पकर्ताओ के जे श्रीजगचन्द्ररिजीनी ज पट्टपरम्पराना आचार्यो हता अने सकलचन्द्रजी करता तेमना निरुद्धवर्ती हता, जगचन्द्ररिजीना प्रतिष्ठा कल्पनी पद्धतिने न अपनावे ए बात मानी शक्याय तेवी नथी, छतां एंवुं कशु यंनुं नथी आथी समजाय छे के आ कल्पमां लखेल कल्याणक विधि-जगचन्द्ररि अथवा बीजा कोइ पण प्रामाणिक श्वेताम्बर सप्रदायना आचार्यकृत प्रतिष्ठा-कल्प उपरथी नहि पण कोइ दिगम्बरमान्य प्रतिष्ठा कल्प उपरथी उतारी लीधी छे, दिगम्बरोनी प्रतिष्ठामा कल्याणकोनी विधिनुं विधान घणा जुना समयथी चाल्युं आवे छे, आथर्य नथी के श्रीसकलचन्द्रजी उपाध्याय पोते अथवा तो एमना परवर्ती कोई नीजा निदाने कल्याणकोना प्रसंगोने श्वेताम्बर सप्रदायने अनुरूप गोठनीने आ आठ नवरना प्रतिष्ठा कल्पनी योजना करी दीधी होय ? अने प्रचार निमित्ते सकलचंद्रजीना नामे ए संदर्भ चढावी दीधो होय ? गमे तेम होय पण आ प्रतिष्ठाकल्पनो मूलाधार जगचन्द्र-रिजीनो कल्प तो नथी ज.

श्यामाचार्य, -हरिभद्रस्वरि-हेमाचार्य-गुणरत्नाकरस्वरिद्धत प्रतिष्ठा कल्पो पण आ कल्पना समर्थक होय ए वात मानी शक्याय तेवी नथी. श्यामाचार्यदिना प्रतिष्ठाकल्पोना अस्तित्व विषे आ कल्पना कथन सिवाय वीछुं कोइ प्रमाण नथी, प्राकृत गाथामय प्राचीन प्रतिष्ठाकल्पने श्यामाचार्यकृत मानी लेखामां आवे तो अमने बांधो नथी पण तेमांय कल्याणकविधिं तु तो नाम निशान पण नथी, 'प्रतिष्ठाविधि पंचाशक' ने जो श्रीहरिभद्रस्वरिनो कल्प मानी लीधो होय तो तेमां पण कल्याणकोहुं विधान नथी, हेमाचार्यनो प्रतिष्ठाकल्प हसणां बयांये मलतो नथी अने पूर्व हतो एसां प्रमाण नथी, गुणरत्नाकर नामे कोइ पण आचार्य आपणा श्वेताम्बरसंप्रदायमां थया होय एहुं अमारा जाणवामां नथी, रत्नाकरस्वरि अने गुणरत्नद्वरिनाप्रक आचार्यो आपणामां जरूर थया छे, अने गुणरत्नस्वरिजीतो तो प्रतिष्ठाकल्प पण विज्ञान छे. पण तेमां कल्याणक विधि के बीजी एवी कोई वस्तु नथी के आ पकृत प्रतिष्ठाकल्पनी समर्थक थइ शके ?

(८) उपरनां कारणो उपरान्त आ कृतिनी नवीनता साधित करनार मुख्य प्रमाण ए छे के आमां प्रौढता गंभीरता के वचनचमकृति नथी, पूर्वोक्त महाविद्वात् आचार्योनी कृतिनो आधार लइने वनावेखी कृति आटली वधी नीरस अने निस्सत्व होय ए मानी शक्याय तेम नथी.

(९) ए सिवाय आ प्रतिष्ठाकल्पमां एह बीजी ध्यान खंचनारी वात ए छे के एना पुरोगामी मंत्र प्रतिष्ठाकल्पकारी ३६० क्रयाणकोनी पुडिओ अथवा सर्वनो एक पुडो वांधीने, अधिवासना करी पछी प्रतिमानी आगल मूकवाहुं विधान करे छे, त्यारे आ कल्पकार अंजनविधान थया पछी प्रतिमाना हायमां क्रयाणकोनो पुडो मूकवाहुं लखे छे, आ वस्तु पण निर्णय मारि

છે, ધાન્યક્ષેપ, ધાન્યસ્નાન આદિ પ્રમગો અધિવાસનાના અવસરે જ આવે છે, અજનવિધાન પછી તો ગંધ, પુષ્પ, ચન્દનાદિથી પૂજા અને લાહવા આદિ વિનિષ્ઠ પદ્ધત્તો મુરુવાનું જ સર્વ કલ્પોમા વિધાન કરાયેલુ છે, પ્રતિષ્ઠા પછી ૩૬૦ ક્રયાણકોનો પુહો પ્રતિમાના હાયમાં આપવાનું મિથાન આ સિવાય વીજા કોઈ કલ્પમાં નથી, એટલે એ નિષ્પય વિચારણીય છે.

(૧૦) આ કલ્પમાં અજન વિધાન પછી નિર્વાણ વલ્યાણકની વિધિ લખી છે અને તે પછીના દેવવન્દનમાં પ્રતિષ્ઠા દેવતા 'વિસર્જનાર્થ' કાયોત્સર્ગ કરના જણાવ્યુ છે જે દેવીતીન મૂલ છે, ઋક્ષમોચન વિધિ તો દૂર સ્ત્રી પળ હઝી મંગલ ગાથા પાઠ ઘોલી અક્ષતાંજલિયે નથી નાલ્લી તે પહેલા પ્રતિષ્ઠા દેવતાનુ વિસર્જન કરવાનો કાઠસ્સમ્મ ! કેવી પ્રત્યક્ષ મૂલ !, વીજા એકે એક પ્રતિષ્ઠાકલ્પકારે ઋક્ષ છોટગ-વિધિ કર્યા પછી નન્ધાવર્ત અંતે પ્રતિષ્ઠા દેવતાને વિસર્જન કરવાનું વિધાન કર્યું છે, માત્ર એક વિશાલરાજ શિષ્યના પ્રતિષ્ઠાકલ્પમાં અજન વિધિ પછીના ચૈત્યવદનમા 'પ્રતિષ્ઠાદેવતાવિસર્જનાર્થ' એવા શબ્દો મૂલથી લખાઈ ગયા છે, જેનુ અનુસરણ આ કલ્પમાં પણ થયુ છે. પણ વિ. શિ કલ્પમા તો આગે જતા આ મૂલનો સ્ફોટ થઈ ગયો છે, તેમા આગલ ડપર આપેલ ઋક્ષ મોચન વિધિમાં પ્રતિષ્ઠા દેવતાનુ વિસર્જન કરવામાં આવ્યુ છે, એથી જ હુલ્લું જણાઈ આવે છે કે પૂર્વે કાયોત્સર્ગ પ્રસંગે જે 'વિસર્જનાર્થ' શબ્દ આવ્યો છે તે પ્રમાદિક છે અને એ પ્રમાદ 'કલ્પકાર' નો નહિ પણ પ્રતિલેખ-કનો જ હોઈ શકે, પ્રતિષ્ઠાકલ્પકારે પોતે ઋક્ષ મોચન પ્રસંગે જ નન્ધાવર્ત અને પ્રતિષ્ઠા દેવતા વિસર્જનાર્થ કાઠસ્સમ્મ કરવાનું લલ્લું છે, પણ આઠમા આધુનિક પ્રતિષ્ઠાકલ્પ લેલ્લકને આ મૂલ પ્રતિલેખકની છે આ ઘાત સમજનામાં ન આવી તેથી તે મૂલ પોતાના પ્રતિષ્ઠાકલ્પમા વિધિરૂપે માની લીધી, એ જ કારણ છે કે એમણે ઋક્ષમોચન વિધિ જ લખી નથી, માત્ર નન્ધાવર્ત

अने प्रतिष्ठा देवतामां विसर्जन मंत्रोद्वारा तेमनुं विसर्जन करी दीधुं छे अने अंते कंकणमोचननो आदेश मात्र कर्यो छे, विधि के मंत्रादि कंइ लखुं नथी, ज्यारे बीजा प्रतिष्ठाकल्पोमां प्रथम विधि पूर्वक कंकणमोचन कर्यो पछी नंदावर्त-प्रतिष्ठा-देवतांनुं विसर्जन करवांनुं विधान छे अने छेवटे अष्टोत्तरशत जलकलशोथी प्रतिमानो अभिषेक करवांनुं विधान पण घणा प्रतिष्ठाकल्पोमां मळे छे.

उपर जणावेल भूल साधारण नथी पण महत्त्वनी छे अने ए जल्दी सुधारवी जोइये.

(११) आ प्रतिष्ठाकल्पमां पंचकल्याणकोनुं विधान उमेरातां केवल विधिना दिवसोमां ज नहिं पण प्रतिष्ठानी सामग्रीमां पण अनेकगणो वधारो थयो छे अने आजनी अंजनशलाका-प्रतिष्ठाओ घणीज खर्चाल थइ गइ छे. दाखलातरीके-बीजा कल्पोनी विधि प्रमाणे अंजनशलाकावाली प्रतिष्ठामां १ काच, १ चांदीनी वाटकी, १ सोनानी शली, १ दीपक, १ चमरनी जोड इत्यादि बहुज परिमित सामग्रीथी काम लेवांनुं विधान छे. त्यारे आ कल्याणक विधिवाला कल्पना विधान प्रमाणे ९ काच, २ चांदीनी वाटकी, १ सोनानी सली, १ दीपक ४ दीवी ४ चमरनी जोडो, १ सोनानी वाटकी, १ सोनानी रकेत्री, १ सोनानो थाल इत्यादि अनेक उपकरणोमां अने उपकरण संख्यामां वृद्धि थइ छे, खर्च वधयो छे अने प्रतिष्ठाना प्रसंगो घटथा छे,

५ प्रतिष्ठाना मुख्यतन्त्रवाहको—

प्रतिष्ठाकल्पकारोए पोतपोताना कल्पोमां प्रतिष्ठाना मुख्य तंत्रवाहकांनुं वर्णन कर्धुं छे, जेमां सर्वथी प्राचीन “निर्वाणक-लिका” नामनी पोतानी प्रतिष्ठाविधि पद्धतिमां श्रीपादल्लिप्ताचार्यजी महाराजे १ शिल्पी, २ इद्र अने ३ आचार्य नामथी

प्रतिष्ठाना मुख्य अधिकारियो त्रण, गणाव्या छे बीजा प्रतिष्ठाकल्पकारोए मात्र ४ स्नात्रकारी अने ४ औषधि वाटनारी स्त्रियोनुं निरुपण कर्युं छे, प्रतिष्ठाचार्य तो छे ज पण शिल्पीने अंगे कइ पण जणाव्युं नथी.

निर्वाणकलिकानुं शिल्पी आदिनु वर्णन नीचे प्रमाणे छे—

(१) शिल्पी—

‘तत्राद्यः सर्वावयवमणीयः क्षान्तिमार्दवाज्वसयशौचसग्नः मद्यमासादिभोगरहितः, कृतज्ञो विनीतः शिल्पी सिद्धान्तवान् विचक्षणः, धृतिमान् विमलरामा शिल्पिना प्रधानो जिता रिषड्वर्गः कृतकर्मानिराकुल इति १।’

अर्थ—‘ते त्रणमा पहलो शिल्पी (छत्रधार-मिस्त्री) सर्वांगसुन्दर, क्षमाशील, नम्र, सरल, सत्यभाषी, शौचसपन्न, मदिरामासादि अभक्ष्य खानपाननो त्यागी, कदरदान, विनयी, शिल्पिनी क्रियाओमा प्रवीण, शिल्पशास्त्रनो ज्ञाता, चतुर, धीरजवान्, निर्मलात्मा, शिल्पी समाजमा अंग्रेसर, मोहादि आन्तर छ शत्रुओने जीतनार, स्थापत्यना कामोमा सिद्धहस्त, अने स्थिरतुद्धिवालो होवो जोइये,

उपरना लखाणमा शिल्पीने अंगे लखायेला “ मद्यमांसादिभोगरहितः ” ए शब्दो प्रतिष्ठित मदिरोना कामोमां मद्यमांस भक्षक शिलावटीने राखनार गृहस्थो अने तेमना सलाहकारक साधुओए लक्षमा राखवा जेवा छे !.

(२) इन्द्र—

इन्द्रनी योग्यता विषे श्रीपादल्लिखसुरिजीए नीचेनु वर्णन आप्युं छे:—

“ इन्द्रोपि विशिष्टजातिकुलान्वितो युवा कान्तशरीरः, कृतज्ञो रूपलावण्यादिगुणाधारः सकलजननयना-
नन्दकारी सर्वलक्षणोपेतो देवतागुरुभक्तः सम्यग्रत्नालंकृतः व्यसना संगपरांसुखः, शीलवान् पञ्चशुब्र-
तादिगुणयुतो गंभीरः सितदुक्कलपरिधानः, कृतचन्दनांगरागो मालतीरचितशेखरः, तारहारविभूषितवक्षस्थ-
लः स्थपतिगुणान्वितश्चेति २ । ”

अर्थ—‘इन्द्र पण उत्तम जाति अने कुलवालो, युवावस्थावालो, मनोहर शरीरधारी, कदरदान, रूपलावण्यादि गुणोन्नी आधार
सर्वलोकप्रिय, सर्वशुभलक्षणसंपन्न, देवगुरुभक्त, धर्मश्रद्धालु, सर्वप्रकारना व्यसनोत्थी युक्त, सदाचारी, पंचशुभ्रतादि गुणधारक
गंभीर प्रकृतिनो, श्वेतवस्त्रधारी, अंगे चंदनादिना विलेपनवालो, मस्तके मालतीना पुष्पोनी रचनावालो, सुवर्णमयकंकणादि वडे
भूषित, हृदयस्थलमां सुन्दरहारे करी शोभित अने स्थापत्यकलानो जाणनार होत्रो जोईये.’

(३) आचार्य—

प्रतिष्ठाकारक आचार्यनी योग्यतानुं श्री पादलिप्तद्विजी नीचेना शब्दोमां वर्णन करे छे—

“ सूरिश्चार्यदेशसमुत्पन्नः, क्षीणप्रायकर्ममलो, ब्रह्मचर्यादिगुणगणालंकृतः, पञ्चविधाचारयुतो राजादीनाम-
द्रोहकारी, श्रुताध्ययनसंपन्नः, तत्त्वज्ञो, भूमि-गृहवास्तुलक्षणानां ज्ञाता, दीक्षाकर्मणि प्रविणो, निपुणः सूत्रपाता-
धिचिज्ञाने, स्रष्टा सर्वतोभद्रादिमण्डलानाम्, असमः प्रभावे, आलस्यवर्जितः, प्रियंवदो, दीनानाथवत्सलः, सरल-
स्वभावो वा सर्वगुणान्वितश्चेति ३ । ”

अर्थ—'अने प्रतिष्ठाचार्ये आर्यदेशमां जन्मन्, हलुकर्मा, ब्रह्मचर्यादि गुणगणे करी शोभित, पंचाचारपालक, राजा-दिकुतो अद्रोही, आगमाभ्यासी, तत्त्वज्ञानी, भूमि तथा गृहवास्तुनां लक्षणो जाणनार, दीक्षाविधिमा हुंशियार, सूत्रपातनादिना ज्ञानमां पारगत, सर्वतोभद्र आदि मडलोनी रचना करनार, अतुलप्रभावी, अप्रमादी, प्रियभापी, दीनदुःखीनी दयाकरनार, सरस्वभावी अने सर्वगुणसंपन्न होवो जोह्ये.'

शिल्पी इन्द्र अने आचार्यनुं वर्णन नि० कलिक्रामा सर्वप्रतिष्ठाकृत्यो करता वधु आपुं छे, जे उपरथी समझाय छे के पाद लिप्तसुरिना मनमां ए 'वस्तु' चोक्रमपणे वेठेली हती के 'प्रतिष्ठा'मा जो कोड पण प्रभाव-उत्पन्न करनार होय तो उक्त शिल्पी आदिनी त्रिपुटी ज छे, ए त्रिपुटी जेदले अशे गुणाधिक हशे तेदले अशे 'प्रतिष्ठित' विग्गमा अधिक प्रभाव-रूला उत्पन्न थशे.

इन्द्रना विशेषणो उपरथी जणाय छे के तेयो 'इन्द्र' हजारोमाथी कोइ एरु खोली कढातो हशे, आजनी जेम खर्च करनारने ते समये इन्द्रपद मलवु दुर्लभ ज हशे.

प्रतिष्ठाचार्यने अगे पादलिप्ताचार्ये करेल वर्णन अने खाम करीने " भूमि-गृहवास्तुलक्षणाना ज्ञाता, निपुण, सूत्रपातादिविज्ञाने, सद्यः सर्वतोभद्रादिमण्डलानाम् ।" आ विशेषणो आपणु विशेष ध्यान खंचनारा छे, अने ते एम जणावे छे के प्रतिष्ठा करनार आचार्य ते सर्व साधारण 'आचार्य' नामधारी व्यक्ति नहि पण उक्त विशेषणविशिष्ट होय ते ज 'प्रतिष्ठाचार्य' थवाने योग्य वने छे, पठी मलेने ते आचार्यपदस्य होय के उपाध्याय अथवा सामान्य साधु होय पण उक्त विशेषणविशिष्ट होय तो ते प्रतिष्ठाचार्ये ज छे, प्रतिष्ठाचार्यमा 'पद' करता योग्यतानु महत्त्व छे, ए ज कारणे केदलाक प्रतिष्ठारूपकारोए आचार्यने 'प्रति

‘पठार्य’ अथवा ‘प्रतिष्ठागुरु’ ए नामथी ज कल्पोमां संबोधा छे.

श्री वर्धमानस्वरिण तो पोताना प्रतिष्ठाकल्पमां ए वातनुं स्पष्टीकरण ज करी दीधुं छे, कहुं छे—

“ आचार्यैः पाठकैश्चैव, साधुभिर्ज्ञानसत्क्रियैः । जैनविप्रैः क्षुल्लकैश्च, प्रतिष्ठा क्रियतेऽर्हतः ॥१॥”

अर्थात् ‘आचार्यो, उपाध्यायो, ज्ञानक्रियावान् साधुओ, जैनब्राह्मणो अने क्षुल्लकोद्वारा आर्हती प्रतिष्ठा कराय छे.’

फन्यासो, गणिओने हाथे प्रतिष्ठित थयेली सँकडो प्राचीन प्रतिमाओ आजे पण उपलब्ध थाय छे, आथी पण निर्विवादपणे सिद्ध थाय छे के ‘आचार्य ज अंजनशलाका प्रतिष्ठा करावी शके’ आवा प्रकारनी मान्यता पूर्वकालमां न हती, आजे पण गीतार्थो तो आबी मान्यता धरावंता नथी अने अगीतार्थो के अंजाण माणसोना कथननुं कंइ पण प्रामाण्य होतुं नथी.

निर्वाणकलिकाना समय सुधी प्रतिष्ठाकार्यमां शिल्पी, इन्द्र अने आचार्यनी ज प्रधानता हती, पण ते पछीना समयमां शिल्पीनुं महत्त्व कंइक घटी गयुं छे, प्रतिष्ठाप्य प्रतिमाना प्रथमाभिषेकनो अधिकार पूर्व शिल्पीनो गणतो हतो ते कालान्तरे उडी गया, पूर्व शिल्पीने प्रथम सत्कारीने पछी प्रतिष्ठा कराती हती ते वस्तु पण बदलीने प्रतिष्ठा पछी शिल्पीनो सत्कार करवानुं राख्युं, अने इन्द्रनो अधिकार तो जाणे कदी हतो ज नहि, एम भूलाइ गयो अने तेना स्थाने ४ स्नात्रकारोन्नियुक्त थया, नं० २ थी ७ मा सुधीना कोइपण प्रतिष्ठाकल्पमां इन्द्रनो उल्लेख नथी, ज्यां त्यां स्नात्रकारी ज दृष्टिगोचर थाय छे, अने तेओ ज प्रतिष्ठा स वैकामोमां आगल पडतो भाग ले छे. छेक ८ नंबरना कल्पमां पाछो इन्द्र हाजर थाय छे, पण आ वखते इन्द्रना हाथमां ते सत्ता रही नथी के जे पूर्व हती, आ वखतनो इन्द्र मर्यादित सत्तावालो अने स्नात्रकारिनो सहकार साधीने काम करनारो कह्यो छे.

આમ પ્રતિષ્ઠાવિધિર્કાર્ય માટે પ્રથમ ૩, મધ્યકાલમા ૫ અને છેલ્લે સત્તરમા સૈકાથી ૬ કાર્યોધિકારિયો નિયુક્ત યતા નજરે પડે છે.

(૪) સ્નાત્રકારો—

નિર્વાણ-કલિકાના નિર્માણ સમયમા સ્નાત્રકારોનું વહુ મહત્ત્વ ન હતુ, તે વલતે પ્રતિષ્ઠાચાર્ય ઘણાં સ્વરાં કાર્યો પોતે જાતે કરી લેતા અને ગૃહસ્થોચિત વિધાનો શ્દ્ર પાસે કરાવી લેતા, જ્યાં એકથી અધિક ગૃહસ્થોની આવશ્યકતા પડતી ત્યારે જ સ્નાત્રકારો યાદ કરાતા હતા, એ જ કારણ છે કે શ્રી પાદલિપ્તશ્દ્રિજીએ ‘શ્દ્ર’નું આટલું વિસ્તૃતર્ણન આપું છે, છતાં સ્નાત્રકારોને અંગે કંઈ જ લખ્યું નથી.

શ્રી ચન્દ્રશ્દ્રિજીએ પોતાની પ્રતિષ્ઠાપદ્ધતિમા સ્નાત્રકારોના લક્ષણો નીચે પ્રમાણે વતાવ્યા છે—

“ સ્નપનકારાશ્ચ સમુદ્રાઃ સકકળા અક્ષતાંગા દક્ષા અક્ષતેન્દ્રિયાઃ કૃતકવચરક્ષા અલ્ખણ્ડિતોજ્જ્વલવેપા ઉપો-
પિતા ધર્મવહુમાનિનઃ કુલજાશ્ચત્વારઃ કરણીયાઃ ।”

અર્થ—‘સ્નપનકારો શુદ્ધિકા કરુણ સહિત, અક્ષતશરીર, પ્રતીણ, અલ્ખણ્ડિય, મત્રક્રમચથીરક્ષિત, અલ્ખણ્ડ અને ઉજ્જ્વલ વેપધારી, ઉપાસી, ધર્મનું ગહુમાન કરનારા, કુલમાન્ એના ૪ કરવા’

આચાર્ય જિનપ્રશ્દ્રિજીએ પ્ણ પોતાની પ્રતિષ્ઠા વિધિમા સ્નાત્રકારોની યોગ્યતાના વિષયમા અક્ષરશઃ ઉપરતુ જ વર્ણન આપ્યું છે એટલે અહીં પુનરુક્તિ કરવાની આવશ્યકતા નથી.

શ્રીત્રધર્માનશ્દ્રિણ પોતાના કલ્પમા સ્નાત્રકારોની યોગ્યતાપ્રિપ્પક વર્ણન નીચેના શ્દ્ધોમા આપું છે—

“चतुर्णां स्नपनकाराणामुभयकुलविशुद्धानामखण्डितांगानां, नीरोगाणां, सौम्यानां, दक्षणाणामधीतस्नपन
विधीनां, कृतोपवासानां प्रगुणीकरणम् ।”

अर्थ—जेमनां वंने कुलो (मातासुं अने पितासुं) शुद्ध होय एवा तथा अखंडित अने नीरोगीशरीरवाला, सौम्यस्वभावी,
विचक्षण, स्नात्रविधिना अभ्यासी अने उपवासी एवा ४ स्नात्रकारो तैयार करावा.

गुणरत्नहरीजी स्नात्रकारोनी योग्यता नीचे प्रमाणे लेखे छे—

“सरत्नमुद्रिकाकंकणसहिता अक्षतांगा अक्षतेन्द्रिया दक्षा अखण्डोल्बण वेषा धर्मवन्त उपोषितास्तद्दिन
ब्रह्मचारिणः कुलीनाः चत्वारोऽधिका वा स्नात्रकाराः कर्तव्याः ।”

गुणरत्नहरीजीना उक्त लक्षणमां एमना पहेलाना कल्पकारोना लेखोथी बहुभिन्नता नथी, मात्र त्रण वातोमां थोडोकर फरक
छे, एमणे ‘मुद्रिका’ने ‘सरत्न’ ए विशेषण लगाड्युं छे, वेपने ‘उज्ज्वल’ने बदले ‘उल्बण’ ए विशेषण जोड्युं छे अने स्नात्रकारोने
‘तद्दिनब्रह्मचारिणः’ एटले ‘ते दिवसे ब्रह्मचर्यं पालनार’ ए विशेषण वधारासुं लगाड्युं छे, बीजो कंडू भेद नथी.

विशालराजशिष्ये पण स्नात्रकारोसुं लक्षण पूर्वोक्त प्रकारे ज बांध्युं छे, मात्र “ गहन्यतोऽपि ८ दिन ब्रह्मचारिणः ” अने
“दयावन्तः” अर्थात् ‘ओछामां ओछुं ८ दिवस सुधी ब्रह्मचर्यं राखनार’ अने ‘दयावान्’ ए वे विशेषणो वधार्थी छे.

नं. ७ वाला प्रतिष्ठा कल्पलेखके स्नात्रकारोना वर्णनमां श्रीचन्द्र अने जिनप्रभस्वरिना शब्दे शब्दनो अनुवाद आप्यो छे.

नं. ८ वाला प्रतिष्ठाकल्पमां एना लेखके स्नात्रकारोनी योग्यताने अंगे कंडू पण लख्युं नथी, श्रीपादलिप्ताचार्यं जेम एक

इन्द्रनी योग्यता वतायी છે, તેમ આમા 'પ્રતિષ્ઠાકારક' શ્રાવરૂની યોગ્યતાનો એક શ્લોકમાં ઉલ્લેખ કર્યો છે, જે નીચે પ્રમાણે છે—
 “વિનીતો બુદ્ધિમાન્ પ્રીતો, ન્યાયોપાત્તઘનો મહાન્ । શીલાદિગુણસંપન્નઃ, શ્રાદ્ધોઽન્ન સમશસ્યતે ॥૨॥
 અર્થાત્ 'વિનયવાન્, બુદ્ધિશાલી, લોકપ્રિય, ન્યાયોપાર્જિત ઘનસંપન્ન, શીલાદિગુણયુક્ત એવો શ્રાવક પ્રતિષ્ઠાધિકારમા પ્રાપ્તનીય છે.’

(૫) ઔપધિ વાટનારી અને પુંલખના કરનારી સ્ત્રિયો—

અભિષેકોની ઔપધિયો વાટવા અને પુલખના કરવા માટે પણ પ્રતિષ્ઠા કલ્પકારોણ વિશેષયોગ્યતાગાલી સ્ત્રિયોનું વિધાન કર્યું છે

નિર્માણકલિકામા આચાર્યં શ્રીપાદલિપ્તશ્ચરિણીં એ વિષયમાં નીચે પ્રમાણે ઉલ્લેખ કર્યો છે—

“તદનુરૂપયૌવનલાવણ્યવત્યો રુચિરોદારવેપા અવિઘવાઃ સુકુમારિકા-ગુહપિણ્ડપિહિતમુલ્લાન્ ચતુરઃ
 કુમ્ભાન્ કોણેષુ સસ્થાપ્ય કાસ્યાપાત્રિચિનિહિતદૂર્વાદિઘ્યક્ષતતર્કુકાદ્યુપકરણસમન્વિતાઃ સુવર્ણાદિદાન
 પુરસ્સરમખ્ડૌ ચતસ્ત્રો વા નાર્યૌ રક્તસૂત્રેણ સ્પૃશેયુઃ ।”

અર્થ—તે પછી રૂપ યૌવન લાવણ્યે કરી યુક્ત સુંદર ગ્રણગાર સજેલી એવી ૮ અથવા ૪ સઘવા સ્ત્રિયો સુદાલી અને ગુહપિંડ જેમના મુલ ઉપર રાખેલ છે એવા ૪ કલશો લુગાઓમા યાપીને ઠાંસીના પાત્રમા ધ્રો, દહિ, અક્ષત, ત્રાકુ આદિ ઉપકરણો લઈને સુવર્ણદાનપૂર્વક રક્તસૂત્રથી મ્પર્શ કરે !

वृणित

पादलिप्तस्त्रिणा उक्त वर्णनथी ए फलित थाय छे के भगवाने पुंखणां करनारी स्त्रीयो कुरुपा, इद्धा, निस्तेज अने वृणित वेप पहेरेली न होवी जोइये, पण प्रभावोत्पादक होवी जोइये.

औपधिवर्तन स्त्रियोना हाथे करावतुं के केम ? ए विषयमां पादलिप्तस्त्रिणीए कंइ पण सूचव्युं नथी.

श्रीचन्द्रस्त्रिणी पोतानी प्रतिष्ठाविधिमां आ स्त्रियोना विषयमां नीचेना शब्दोमां वर्णन करे छे—

“ तत्रैव मङ्गलाचारपूर्वकमविधवाभिश्चतुःप्रभृतिभिः प्रधानोज्ज्वलनेपत्र्याभरणाभिर्विशुद्धशीलाभिः

सकंकणहस्ताभिर्नारीभिः पञ्चरत्न-कषाय-मांगल्यमृत्तिकाऽष्टवर्गसर्वोपध्यादीनां वर्तनं कारणीयं क्रमेण ” ।

अर्थ—‘ ते ज वखते (स्नात्रकारोने तैयार करती वखते) मंगलाचार पूर्वक श्रेष्ठ वस्त्राभरणोथी शोभती शुद्धशीलवन्ती हाथे

कंकण पहेरेली ४ आदि संख्यावाली सोहागण स्त्रियोना हाथे पञ्चरत्न, कषायछाल, मंगलमाटी अष्टवर्ग, सर्वविधि आदि

अनुक्रमे वटाववां ?

जिनप्रभस्त्रिणी पोतानी प्रतिष्ठा विधिमां औपधि वाटनारी स्त्रियोने ओं “ जीमत्पितृमातृ-श्वशुरादिसिः ” अर्थात्—

जेमनां माता पिता साहू ससरो जीवन्त होय ’ ए विशेषण वधायुं छे, वाकी श्रीचन्द्रस्त्रिणीना ज शब्दो उतार्यां छे.

वर्धमानस्त्रिणी पोताना प्रतिष्ठाकल्पमां औपधि वांटनारी स्त्रियोना संवन्धमां नीचेनां विशेषणो वापरे छे—

“ चतसृणां चौपधिवेषणकारिणीनासुभयकुलविशुद्धानां सपुत्रभर्तृकाणां सतीनामखण्डितांगीनां दक्षणाणां शुचीनां सचेतनानां प्रगुणीकरणम् । ”

अर्थ—'नेमना' ने कुलो शुद्ध होय, जेम्ने पति तथा पूत निधमान होय, जेओ पतिव्रता, अखंडित शरीरवाली, चतुर, पतित्र अने सामधान होय एवी ४ स्त्रियो औपधि पीसना माटे तैयार करवी.

गुणरत्नधरिजी औपधिवाटनारी स्त्रियोने अगे आम लखे ठे—

“अथ जीवत् श्वश्रुश्चरुकरमातृपितृपतिकाश्चतस्रः कुलीनाः प्रधानवेद्याभरणाः सुशीलाः पवित्राश्च समाकार्याः सर्वाणि स्नात्रोपधानि वर्तनीयानि तासा च प्रत्येक कर्पट-नालिकेर-सुखभक्षिकार्पणाद्युपचारः कार्यः कुकुम-कुसुम-तांदूलपूर्वकं, ताभिश्च यथाशक्तिदेवाय परिधापनिकादिभक्तिः कार्या ।”

अर्थ—'जेमनां साय् मसरा माता पिता पति जीवित होय एवी ४ कुलवन्ती सुन्दरवेपथूवावाली सुशील अने पवित्र स्त्रियोने बोलावरी, स्नात्रना सर्न औपधी तेमना हाथे वटाग्वा अने ते प्रत्येक जणीनो कापड, नालियेर, सुखही आदिथी सत्कार मसरो. कुकुम, पुष्प, तंगोल आपग, अने तेओए एण शक्ति मुजम देवने पहेरामणी आदि आपीने भक्ति करवी.

विशालराजशिल्ये पोताना रुल्पमा न० ३४ ना कल्प्योना वर्णननो उतारो कर्यो छे.

कल्प नं० ७ मा स्त्रियोने अगे कल्प न० २ नो शब्दार्थ लख्यो छे.

न० ८ ना रल्पमा पुवणना प्रमसोसा स्त्रियोनो उल्लेख आप्या कर्यो छे एण तेमनी योग्यताने अगे कंड एण ललायुं नथी स्नात्रकारो तेमज पुवणारी स्त्रियोने अगे जे योग्यताना वर्णनो कल्पकारोए कर्यो छे तेमा आवता 'अक्षतांग, अक्षतेन्द्रिय, कुलीन, धर्मबहुमानी, उपवासी' आदि विशेषणो आजना प्रतिष्ठातत्रमाहकोए ध्यानमा राखना जेवा छे, ए विशेषणोने अगे

ઘણા પ્રતિષ્ઠાકલ્પકારો 'એકમત' છે.

૬ આધુનિક પ્રતિષ્ઠાવિધાનોના આધારગ્રન્થો—

પ્રતિષ્ઠાઓ પૂર્વે થતી હતી અને વર્તમાન કાલમાં પણ થાય છે, પ્રતિષ્ઠાસંવન્ધી ક્રિયાવિધાનો પૂર્વકાલમાં થતાં હતાં અને આજે એ થાય છે, પણ આ કાર્યો કરવા માટે કોઈ પણ પ્રામાણિક ગ્રન્થનો આધાર તો હોવો જ જોઈએ, પણ આજે કોઈ સ્વાસ ગ્રન્થને જ આધારે ક્રિયા વિધાનો થતાં નથી. જલયાત્રાવિધિનો આધાર એક છે, તો કુંભસ્થાપન વિધિનો આધાર બીજો, ગ્રહ દિક્પાલોનું પૂજન કોઈ ગ્રન્થના આધારે કરાય છે તો પ્રતિષ્ઠાવિધિ કોઈ ત્રીજા જ ગ્રન્થના આધારે કરાય છે. આ ત્રીજી અવ્યવસ્થાનું સ્વરૂં કારણ એક એવા પ્રામાણિક અને સર્વાંગ સંપન્ન એ વિષયના ગ્રન્થનો અમાત્ર ગણી શકાય.

આજકાલની અંજનપ્રતિષ્ઠાઓ, વિંગપ્રવેશવિધિઓ અને અષ્ટોત્તરી શ્રાદિ મહાપૂજાઓના આધાર ગ્રન્થો ૪ છે.

(૧) ઉષાધ્યાય સકલચંદ્રજીનો " પ્રતિષ્ઠાકલ્પ " (૨) શ્રીરત્નશેલરસ્ટરિ વિરચિત ગગતી " જલયાત્રાદિ:વિધિ " (૩) યતિ કાન્તિસાગર સંકલિત " ચિમ્વ પ્રવેશવિધિ " અને (૪) અષ્ટોત્તર સ્નાત્રપૂજા વિધિ—

ઉપર્યુક્ત ત્ર્યાર ગ્રન્થો પૈકીનો એક પણ ગ્રન્થ સર્વાંગપૂર્ણ અને પ્રામાણિક માનીને તે પ્રમાણે વિધિવિધાન કરવાનો નિર્ણય કરાય એવું નથી.

(૧) સકલચંદ્રજી કૃત ' પ્રતિષ્ઠાકલ્પ ' કેટલો ત્રયા અવ્યવસ્થિત છે એ સંવન્ધમાં ઉપર ત્રહુ કહેવાઈ ગયું છે—
(૨) ' જલયાત્રાદિવિધિ ' આ ગ્રન્થના સુદ્રિત પુસ્તક ઉપર રચનાર તરીકે શ્રીરત્નશેલરસ્ટરિજીનું નામ હપાયેલ છે, પરન્તુ

આ ગ્રંથ શ્રીસ્ત્તનેશ્વરસ્થરિરિચિત્ત હોવામા રૂઢ જ પ્રમાણ નથી, એવી વિપરીત આ ગ્રંથને અર્વાચીન સિદ્ધ કરનારા કેટલાક કારણો આ ગ્રંથની અદરથી જ મલી આવે છે. જે નીચે પ્રમાણે છે—

(૧) આ ગ્રંથોક્ત 'જલયાનાવિધિમા "ક્ષીરોદત્રે સ્વયમ્બુથા" ઇત્યાદિ શ્લોકો દ્વિગોચર થાય છે જે શ્રીસ્ત્તનેશ્વરસ્થરિના સમયમા તો શુ પળ સં ૧૬૮૦ સુધીમા લલાયેલ કોઈ 'જડયાત્રાવિધિ' મા નથી

(૨) આ ગ્રંથમાની કુમસ્થાપન વિધિ અને વિવપ્રવેશવિધિઓ અઢારમા સૈકા પહેલાની નથી.

(૩) યક્ષકર્દમથી ગ્રહો દિરૂપાલો અને અષ્ટમગલોના પાટલાઓનું આલેખનવિધાન આમા સ્વચ્ચું છે તે શ્રીસ્ત્તનેશ્વરસ્થરિના સમય પહેલાનુ નથી.

(૪) ગ્રહાદિના પાટલાઓ ઉસાત ૩૦ ન્દાના પાટયા તૈયાર કરાનુ વિધાન રૂઢું છે તે અઢારમા સૈકા પહેલાની કોઈ પળ અટોત્તરી સ્નાત્ર વિધિમા જોવામા આવતુ નથી

(૫) જલયાનામા જલ રાઢતી વલતે અકુશ, મત્સ્ય, કચ્છપ મુઢાઓ દેસાઢવાનુ આનું વિધાન સ્ત્તનેશ્વરસ્થરિની પહેલાનું નથી.

(૬) ધૂપ તરીકે આમા અગરવત્તીનો ઉલ્લેખ મલે છે જે આ વિધિગ્રંથની અર્વાચીનતા સાવિત કરે છે.

(૭) મઢપ પૂજનમા 'ઘટાકરણ'ના પાટથી સુલ્લહી મત્રીને વહેંચવાનુ વિધાન પળ આ ગ્રંથની અર્વાચીનતા પ્રમાણિત કરે છે

(૮) "પરમેષ્ઠિનમસ્કાર" ઇત્યાદિ સ્તોત્રવંઢે 'સકલીકરણ'ના વિધાનથી પળ એ ગ્રંથ નવીન સિદ્ધ થાય છે, કારણ

के रत्नशेखरसूरिनो समय पंदरसा सैकानो उत्तरार्ध तथा सोलसा सैकानो प्रथम चरण छे ज्यारे आ स्तोत्रनु निर्माण सत्तरमा सैकामां थयेछे छे.

(२) आमां थयेलो “श्राद्धविधि” नो नामोल्लेख पण ए ग्रन्थना श्रीरत्नशेखरसूरिकृत नथी ए मान्यतानो ज पुष्टि करे छे, केमके श्राद्धविधि रत्नशेखरसूरिनी ज कृति छे जो प्रकृत पुस्तक पण श्राद्धविधिकारनी ज कृति होय तो तेमां प्रमाण रूपे उल्लेख थाय नहि, आ ग्रन्थमांनु जलयात्राविधि, ग्रह-दिक्पालपूजनविधि, विंबप्रवेशविधि, आदि विधिओ “विंबप्रवेशविधि” संदर्भने ज उतारो छे एटले विंबप्रवेशविधिथी पण अर्वाचीन संग्रह छे.

(३) “विम्बप्रवेशविधि” आ ग्रन्थ सं० १८१४ नी सालमां पूर्णिमा पक्षना श्री पूज्य श्रीपुण्यसागरसूरिना आज्ञावर्ति पंन्यास यतिश्री सुज्ञानसागरना शिष्य यति श्रीक्रान्तिसागरे लखेलो छे अने हमां थोडाक वर्षो उपर अमदावादाना एक मास्तरे छपावल पण छे. नाम प्रमाणे आमां मुख्य वस्तु देहरामां प्रतिमा स्थापन विधि छे, अने जलयात्रा, कुंभ स्थापन आदिनी विधिओ मूलविधि विधिनां ज अंगभूत प्रकरणो छे, आमांनु अभिषेक प्रकरण, आचार दिनकरमांथी उमेर्युं छे, जे अनावश्यक छे.

आ ग्रन्थना संदर्भक यति कांतिसागर सारा विद्वान् के ए त्रिययना अनुभवी होय एम आ ग्रन्थ उपरथी जणातुं नथी. मंगलाचरण तथा प्रशस्तिना श्लोकोमां छन्दोभंग अने व्याकरण संबन्धी अशुद्धिओ जोतां एमनामां संस्कृत ज्ञाननी खामी जणाइ आवे छे अने प्रतिष्ठाविधिने त्रिये पण एमनुं जाणपणुं तदन कांतुं ज हतुं एम एमना आ संदर्भ उपरथी जणाइ आवे छे, विम्बप्रवेश विधिमां एमणे जे अनावश्यक उमेरो कर्यो छे तेमां केटलुक तो केवल यतिपणाना आडंबरनुं ज प्रदर्शन कर्युं

छे. अमारी पासे १५मा सैकाथी माडीने १८मा सैका सुधीमा लखायेली ७ माचीन विचप्रवेश विधिओ छे पण ते पैकीनी कोइ विधिमा १६ अने ४ पात्रो मूरुवानो के प्रतिष्ठाने पहेले दिउसे अगामीमा जइ धूप उसेववानु के नोकारवाली गणवानुं काइ मुचन मात्र पण नथी परन्तु प्रस्तुत विधिमा ए मधो आडवर एना लखनारे वमार्यो एटले आडवरभियविधिकारोए आ सदरने यथावी लीधो. वधा प्रतिष्ठाचार्यो अने स्नात्रकारो आ विधान उपर राची गया एटले माचीन समयना ए विपयना सक्षित अने मौलिक विधानो नानभडारोमा ज पडी रखा तेमना विधानो व्यवहारमाथी उठी गया, जेम उ० सकलचद्रना प्रतिष्ठान्तये लोकमनोरजनद्वारा पोतानो प्रचार वधार्यो अने सारा सारा प्रतिष्ठान्तयोने प्रचारमाथी मातल कर्या अने पोतानो अड्डो जमाव्यो तेज रीते कान्तिसागरना यतिशाही आडवरे बीजी विन प्रवेगविधिओने पाछल धकेली पोतानो पगदडो जमावी लीधो आजना वधा प्रतिष्ठाचार्यो अने विधिकारो ए विधिने ज ओलसे एटले माचीन विचप्रवेशविधिओनी रुइ पण उपयोग थरो नहिं एम ज्ञाणी अमोए पण आ विन्तृत विनप्रवेशविधिनु अनुसरण र्हुं छे, कलिकामां जे न्हानी ३ विन प्रवेश विधिओ आपी छे ते घणी जुनी छे. ए प्रमाणे विन प्रवेशविधि करावाय तो घणा ज ओठा खेचें राम थइ शकें तेम छे

विचप्रवेश विधिमां एक बीजी भूल—

प्रचलितविनप्रवेशविधि छथाया पछी थोडाक समयमा अमारी पासे आबेल, अमोए तेना प्ररुणोना शीर्षको जोया तो एक शीर्षक “नवीनप्रासादे नवीनप्रतिमास्थापन” एतुं जोयु, अमारा माटे ए रम्तु नवी हती, तस्त ते प्ररुण वाच्युं तो आश्रय नाथे दुःख थयु के धा लेखरुनी एक अज्ञान जनित भूल हती, मास्तवमा या प्ररुण नव्यप्रासादना निर्माणमा करातु ‘कर्मस्थापन’ प्ररु-

रण हट्टे, गुणरत्नसूत्रि, विशालराजशिष्यश्रादिना प्रतिष्ठाकल्पोपां आ वस्तु स्पष्टरूपे लखेली छे छतां तेने न समजीने कांतिसागरे
 आ छत्रद्वी वाल्यो छे एमां कशो संदेह नथी, ' विभवप्रवेशविधि 'कारनी आवी भूल जाण्या पछी अमारी श्रद्धा ए पुस्तक उपरथी
 उठी गइ अने निर्णय कर्यो के आवा अनधिकारीने हाथे रचायेल आ संदर्भ करतां तो नवी विधि तैयार करवी वधु उपयोगी
 थइ पडथे अने विधिकारोने आवी भूलोथी बचावयो.

(४) अष्टोत्तरी-स्नात्रविधि—
 विभवप्रवेशविधि उपरांत श्री कांतिसागरे अष्टोत्तरी स्नात्रविधि उपर पण पोतानी कृति तरीकेनी महोर छाप मारी छे जे
 तेना निम्नोक्त मंगलाचरणना श्लोक उपरथी जाणी सकाय छे—
 “ प्रणम्य पार्श्वपादाब्जं, ज्ञानकान्तिप्रदायिनम् । वक्ष्ये शताष्टभेदेन, विधिना स्नात्रमुत्तमम् ॥१॥ ”
 अष्टोत्तरीना उपर्युक्त श्लोकमां श्री कान्तिसागर एवा ढंगथी बोले छे के जाणे पोते कोइ नवी कृतिनी रचना करता होय,
 वास्तवमां श्रीकांतिसागरे प्राचीन अष्टोत्तरी स्नात्रविधिमां अनावश्यक वस्तुओनो बधरो अने निरूपयोगी प्रकरणोनो उमेरो
 करवा उपरांत नहुं कंइ ज कर्युं नथी आ दकीकत आगल उपर स्पष्ट थशे, अष्टोत्तरीनी प्रशस्तिमां श्रीकांतिसागर रचनासमय,
 पोताना गुरु तथा गच्छपति श्रीपूज्य आचार्यनो आ प्रमाणे परिचय आपे छे—

“ संवद् गुगेन्दुनागेन्दु (१८१४) प्रमिते माधवोज्ज्वले । पक्षे हि कविपञ्चम्यां, दर्भावत्यां पुरि स्थितः ॥१॥
 पुण्यानुबन्धिपुण्याल्य-पुण्यादिसिन्धुसुरीणाम् । राज्ये प्राज्ञसुज्ञानादि-सागराणां हि शिष्यकः ॥२॥

तेनेदं (नाय) मन्दमतिना, समुच्चितोऽष्टोत्तरीस्नात्रविधिमार्गः ।
 ज्ञात्वा गुक्तोऽत्र यद्यदशुद्धं शोधय हि बुद्धिर्वरैः ॥३॥ ”

त्रिप्रवेशविधिमां पण एउ व्रण पद्यो शशस्तिरूपे लखेल छे, मात्र तृतीय पद्यना तृतीयचरणमां “समुच्चितो जिनप्रवेश विधिमार्गः ।” ए पाठान्तर करेल छे, वने निग्धोना मगलाचरणमां निवयकारे “ ज्ञान-कान्ति ” शब्दोनो उल्लेख करी गुरु तथा पोताना नामनु गभित सूचन कर्यु छे, प्रशस्तिमा ए वने प्रग्धो सं० १८१४ ना वैशाख शुदि ५ शुक्रवारे डभोइमां रहेल मुझानसागरना शिष्ये (कान्तिमार्गरे) त्रिप्रवेशविधिना मार्ग अने अष्टोत्तरी स्नात्रविधिना मार्ग समुच्चित कर्यो एम जणा- ब्युं छे पण मार्गनुं प्रदर्शन थाय नहि के ‘समुच्चय’. छतां श्रीकान्तिमार्ग मार्गनो समुच्चय करे छे ए पण एक नवी हकीकत छे.

श्री कात्तिमार्गरे आ अष्टोत्तरीस्नात्रविधिमा समानविषयक केटलो वद्यो निरर्थक वधारो कर्यो छे तेनो खरो ख्याल तो प्राचीन अष्टोत्तरीनु स्वरूप अने तेना सामाननुं लिस्ट जोगाथी ज आवी शके, एटला वास्ते अमोए कलिकामां प्राचीन अने कान्तिमार्गरे तैयार करेल अर्वाचीन अष्टोत्तरीनु दिग्दर्शन करावी जुनी नवी वने अष्टोत्तरीनी सामान सूचीओ आपी छे के जे उपरशी वाचक गण तुलना करी शके, अष्टोत्तरीनी प्राचीनविधिमा अष्टाहिकोत्सव, जलयात्रा. कुंभस्थापन, अष्टमंगलस्थापन, स्मरणपाठ आदिनी जरूरत नथी, श्रद्धादिक्पालोनुं सधित पूजन छे, पण ग्रहोनी मालाओ नथी, १०८ नालनो कलश नथी, चोखंडा २ रूपैया तथा १९ ब्राह्मना अथेलाओ सिवाय नाणुं जोइतुं नथी, २ अखंड वस्त्रो अने १०) गज रगीन वस्त्रना १०) खंडो घ्राउ सिनाय वस्त्रनी आवश्यकता होती नथी.

वीजां उपकरणौ पण घणां ज ओछां अने अल्पमूल्य छे.

वीजां उपकरणौ पण घणां ज ओछां अने अल्पमूल्य छे. प्रति अमारी पासे छे, पण एथी जुनी प्रति क्यांइ असोए जोइ नथी. अन्यत्र वीजां उपकरणौ पण घणां ज ओछां अने अल्पमूल्य छे. प्रति अमारी पासे छे, पण एथी जुनी प्रति क्यांइ असोए जोइ नथी. अन्यत्र

सत्तरमा सैकाना पूर्वार्धमां लखायेल आ अष्टोत्तरीनी प्रति अमारी पासे छे, पण एथी जुनी प्रति क्यांइ असोए जोइ नथी. अन्यत्र सत्तरमा सैकाना पूर्वार्धमां लखायेल आ अष्टोत्तरीनी प्रति अमारी पासे छे, पण एथी जुनी प्रति क्यांइ असोए जोइ नथी. अन्यत्र

आचारदिनकरान्तर्गत प्रतिष्ठाविधिमां महापूजा मले छे, ए ज प्रमाणे पञ्चाश्रुतमहास्नात्रना नामथी ओलखाती पूजाओ अन्वय पण जोवाय छे. पण अष्टोत्तरी स्नात्रनामथी ओलखाती आ पूजानी साथे ते महापूजाओनो कशो ज संबन्ध नथी.

उपलब्ध प्रतिष्ठाकल्पोमां आधी अष्टोत्तरी स्नात्रपूजा क्यांइ मलती नथी, आथी जणाय छे के 'अष्टोत्तरी' पूजा बहु प्राचीन नथी, विक्रमना पंदरमा अथवा सोलमा शतकमां आहुं निर्माण थयुं हसे एवं अम्हारं अनुमान छे. अने एथी ज सोलमा सैका

सुधी आमां मौलिकता जलवाइ रही छे. उपलब्ध प्रतिष्ठाकल्पोमां आधी अष्टोत्तरी स्नात्रपूजा क्यांइ मलती नथी, आथी जणाय छे के 'अष्टोत्तरी' पूजा बहु प्राचीन नथी, विक्रमना पंदरमा अथवा सोलमा शतकमां आहुं निर्माण थयुं हसे एवं अम्हारं अनुमान छे. अने एथी ज सोलमा सैका

आ विधि घणी ज सुगम सुलभाध्य अने अल्पसाध्य अने अल्पव्यय साध्य छे एज एनी मौलिकतामां प्रमाण छे, ते समये आने भणान- नार अने प्रचारक साधुओ त्यागी होवाना कारणे आनी सामग्रीमां स्वार्थने लेइने अनुचित वृद्धि कराई नथी, पण कालान्तरे

आमां ते विकृति पेसी गइ जे आजे छे. आ विधि घणी ज सुगम सुलभाध्य अने अल्पसाध्य अने अल्पव्यय साध्य छे एज एनी मौलिकतामां प्रमाण छे, ते समये आने भणान- नार अने प्रचारक साधुओ त्यागी होवाना कारणे आनी सामग्रीमां स्वार्थने लेइने अनुचित वृद्धि कराई नथी, पण कालान्तरे

१६३९ अने १८८७ नी वच्चेनां ४८ वर्षोमां सामग्रीमां के सामग्रीो मतपदारथोना परिमाणमां बहु वधारी थयो नथी, आमां ते विकृति पेसी गइ जे आजे छे. आ विधि घणी ज सुगम सुलभाध्य अने अल्पसाध्य अने अल्पव्यय साध्य छे एज एनी मौलिकतामां प्रमाण छे, ते समये आने भणान-

अष्टमंगलनी पाटली, १२ पाटला, केटलांक वखो अने केटलांक बीजां सामान्य उपकरणोमां वृद्धि थइ छे अने विभिनां पण केटलांक वधारी थयो छे, प्राचीन विधिने अनुसारे पूर्व अष्टोत्तर स्नात्र थया पछी प्रतिमाथोने शुद्ध जले पखाली अंगलूछी पूर्णने नैवेद्यादिक धरी आठ थोये देववंदन कराहुं अने ते पछी लघुस्नात्र भणानीने आरती करानी हती. ओगणीगमा सैकानी लखेली

૪-૫૦ પ્રાણપ્રતિષ્ઠા એટલે શું ? કેટલાક પ્રતિષ્ઠાસ્થાપનાઓ અજનશલાકાને ' પ્રાણપ્રતિષ્ઠા ' કહે છે એ વચ્ચે ?

૩૦ નહિ, અજનશલાકા પ્રાણપ્રતિષ્ઠા કરેનારી નથી પણ પ્રતિમામા પ્રાણપાનાદિ વાયુદશકનો ન્યાસ કરવો એ પ્રાણપ્રતિષ્ઠા છે, આજકાલની અજનશલાકાઓમા ' પ્રાણપ્રતિષ્ઠા ' વ્યવનકલ્યાણકની વિધિમા અંતર્ગત કરાય છે. અજનશલાકાને પ્રાણપ્રતિષ્ઠા કહેનારા અજાણ છે.

૫-૫૦ સ્વદિત્તપ્રતિમાને વિમર્જન કરવાની ક્રિયા સત્ત્વ સેવચા માટે કરાય છે. તો અહિંયાં ' સત્ત્વ ' શબ્દથી શું સમજવું ? ફોર એને અજન સેવચાની ક્રિયા પણ કહે છે તે વચ્ચે ?

૩૦ નહિ, અજન સેવચા માટે એ ક્રિયા નથી, તેમ પ્રતિષ્ઠા સમ્બંધી મંત્ર-સત્ત્વ સેવચાની પણ એ ક્રિયા નથી, કેમકે પ્રતિમા સ્વદિત્ત યતા પ્રતિષ્ઠાનું માનિધ્ય તો સ્વય મટી જાય છે, જીર્ણોદ્ધારની ક્રિયામાં જે સત્ત્વ સેવચાય છે તે વ્યન્ત-રાદિ દેગરૂપ સત્ત્વ સેવચાય છે, ફોર લાક્ષણિક સુન્દર દેવપ્રતિમા સ્વદિત્ત થયા પછી તેમાંથી પ્રતિષ્ઠાનું સાનિધ્ય મટી જાય છે અને ભૂત પ્રેતાદિ જાતિના હલકા દેવસત્ત્વનું તેમાં અધિષ્ઠાન થાઢ જવાનો સંભવ રહે છે, તેવી પ્રતિમામાં જો કોઈનું અધિષ્ઠાન થયેલ હોય ને તે પ્રતિમા આમ મંદારી દેગય તો તુકસાન થયાનો ભય રહે છે તે કારણે તે અધિષ્ઠાત્ત્વ મરુને ત્દાર કાઢવાની ક્રિયા કરવી પડે છે.

૬-૫૦ માઢમાડી અથવા માઢશાઢિકાનો શો અર્થ છે ?

૩૦ લગ્નપ્રસંગે કન્યા માઢપરમા (માહેરમા) જે સાડી ઓઢે છે તે માઢશાઢિકા કહેવાય છે. તેજ પ્રકારના કુસુમી રાગના

વલ્લને પ્રતિષ્ઠા વિધિકારો ' માહસાડી ' કહે છે. આ વિષયમાં શ્રીચન્દ્રસૂરિજી કહે છે—

“ અવ્યક્ત્યાં યમલિં દત્ત્વા, કારણેદધિવાસનામ્ । દ્વિતીયાં ભક્તિતો દત્ત્વા, પ્રતિષ્ઠાં ચ વિધાયેત્ ॥ ”

આમ શ્રીચન્દ્રસૂરિજી અને એમની પદ્ધતિના અનુયાયીઓ અધિવાસના અને પ્રતિષ્ઠામાં ત્રે માહસાડીઓનું વિધાન કરે છે ત્યારે પાદલિપ્તપ્રતિષ્ઠાપદ્ધતિના માર્ગે ચાલનારા કલ્પકારો અધિવાસના સમયે જ માહસાડી આરોપવાનો આદેશ કરે છે. અને પ્રતિષ્ઠાપ્રસંગે શ્વેતવલ્લનું વિધાન કરે છે.

૭-૫૦ રાહ્લવલિ અને કોરકવલિ નો અર્થ શો છે ?

૩૦ રાહ્લવલિ એટલે સંધિલ નૈવેદ્ય, મલે સાત ધાન્યનો લીચડો જ હોય પણ જે અગ્નિ ઉપર સીંચેલ હોય તે સર્વ રાહ્લવલિ ગણાય છે જ્યારે માત્ર મીઝવીને જે વાકલા વલિ રૂપે નંલાય છે તે કોરકવલિ કહેવાય છે, પૂર્વે વાકલા પણ સંધીને જ તેમાં ઘૂટ, ઝાંડ, મેવો વિગેરે નાંલીને ઉછાલાતા હતા પણ યતિ કાંતિસાગરે આ રાહ્લવલિ નાલ્લાની રીતિને માત્ર પ્રવાહ છે એમ કહીને કોરા વાકલાની હિમાયત કર્યા પછી એમની વિધિઓનો પ્રચાર થતાં વિધિકારો કોરી વલિ નાલ્લાને ચીલે ચઢી ગયા છે.

૮-૫૦ પ્રવેશમાં કલશ-ચક્ર ન મલતું હોય તો પ્રતિમાને ગભારામાં લેઈ જડને અંજનશલાકા કરી શકાય :

૩૦ નહિ, કોઈ પણ પ્રતિમાનું અંજન વિધાન અધિવાસના મંડપમાં કરવાનું હોય છે, જેઓ કલશચક્રના અભાવે પ્રતિમાનું

अंजन विधान गभारामा करे छे तेओ कल्पविरुद्ध करे छे.

१-प्र० प्रवेशमा कलशचक्र होबुं ज जोइये ए नियम खरो ।

उ० आधुनिक ज्योतिषिओ तथा क्रियाकारकोए नियम मानी लीयो छे, बाकी प्राचीन ज्योतिषशास्त्रमा के प्रतिष्ठाकल्पोमा कलशचक्रनी चर्चा नथी, उसो त्रणसो बर्षोधी ज्योतिषिओ ए स्वरशास्त्रोक्त केटलाक चक्रो अपनावी लीधा छे, वास्तवमा ए वस्तु ज्योतिषिओना घरनी नथी

१०-प्र० विमप्रवेशमा चद्र डानो जमणो ज होबो जोइये संमुखनो अगर पाछलनो नहि, आम आजकाल केटलाक ज्योतिषीओ कहे छे ते यथार्थ छे ?

उ० नहि, प्रवेशमा चंद्रनु गोचर नल ज जोवाबुं छे, दिशा जोवानी नथी, चद्र संमुख पृष्ठनो वर्जित कर्यो छे ते प्रसंग गृहारंभनो छे, नहि के प्रवेशनो, ओछी बुद्धिना ज्योतिषीओए आ गृह निर्माणना विधानने गृहप्रवेशमा जोडीने अज्ञाननुं ज प्रदर्शन कर्युं छे, चन्द्र, काल, पाश, योगिनी आदिनुं जे दिशापरक विधान छे तेनो सम्य यत्रा मकरणी साथे छे नहि के प्रवेशनी साथे

११-प्र० प्रतिष्ठा, पूजामा कराता कुमस्थापनमा कलशचक्र होनु ज जोइये ए खर ?

उ० ना, कुमस्थापनमा कलशचक्र होय तो सारु एवी मान्यता पं० कांतिसागरनी विव प्रवेशविधि प्रचलित थया पछीनी छे, पूंरकालीन कोइ पण विधिमां आ विपेनो उल्लेख मलतो नथी.

१२-प्र० प्रतिष्ठाटिकार्योंमां जवारा क्यारे वाववा ?

उ० जवारा उत्सवना आरंभ पूर्वे वत्राय तो वधारे सारुं, केमके शीत ऋतुमां म्होडा उगता होवाथी वहेला ववाय तो ज देखवा जेवा थाय, पण ए वातचुं ध्यान राखचुं जोड्ये के वाचवानो दिवस जे कार्यं निमित्ते ते ववाय छे तेना लयथी पहलांनो बीजो छडो के नवमी न होवो जोड्ये, कारण के आ दिवसोमां शुभ कार्यनिमित्ते यवचारक वपन, तथा मंडप अने वेदी आदिनो आरंभ करवाचुं वजित छे.

१३-प्र० प्रतिष्ठा-अंजनशलाका निमित्ते मंडपमां करगता कुंभस्थापननी जोडे क्षेत्रपालनी स्थापना करी तेल सिंदूर चढावे छे ए वस्तु वरावर छे ?

उ० नहिं, प्रतिष्ठासंडपमां क्षेत्रपालनी स्थापनाचुं विधान मथी, मात्र भगवाननी जमणी दिशामां तेनो मंत्र बोलीने पुष्पाक्षतो वडे पूजवानो उल्लेख छे, सकलचंद्रीय प्रतिष्ठाकल्पमां तेना वर्णनचुं एक काव्य छे जेमां अफीण, तेल, गोल, चंदन, पुष्प, धूपो नो भोग स्वीकारवानी प्रार्थना छे, 'सिंदूर' शब्द नथी, बली क्षेत्रपालनो आह्वान अने पूजन मंत्र छे पण स्थापनमंत्र नथी तेम नालिएर अगर पत्थर उपर तेल सिंदूर चढावी क्षेत्रपालनी स्थापना करवानो उल्लेख छथां अमारी उक्त प्रतिष्ठाकल्पनी कोइ प्रतिमां नथी, बली प्रतिष्ठासंडप जेवा पवित्रस्थानमां तेल सिंदूरचुं प्रदर्शन के जे वास्तवमां 'रुधिर'नुं प्रतीक छे, आ खरंखर बीभत्स वस्तु छे.

१४-प्र० यक्ष यक्षिणीनी प्रतिष्ठा निमित्ते जिनप्रतिष्ठागां पण केटलाक विधिकारो होम कराने छे ए योग्य छे ?

३० जिनप्रतिष्ठामा तो शु स्वंत्रपणे यक्ष यक्षिणीनी प्रतिष्ठा होय तो ये होम करवानी आवश्यकता नथी, यक्षयक्षिणी जिनचैत्यमा जिनसेवक रूपे प्रतिष्ठित थाय छे नहि के विशिष्ट देवरूपे, जिनभक्तो जिन सामीप्यमा अग्निमुखी भोग्यस्तुनी स्वप्नमा पण इच्छा न राखे, आचारदिनकरमा जे होमनो निर्देश छे ते तान्त्रिक मतनी छाया छे, गीजा कोइ पण प्रतिष्ठाकल्पकारे ए वस्तुनो स्वीकार कर्यो नथी, पादलिप्तसूरिजी जे तान्त्रिक युगना समर्थ विद्वान् हता पण तेमणे पोतानी पद्धतिमा हजनु नाम पण निर्देशुं नथी, आथी समजवु जोइये के होम ए जैतानी क्रिया नथी.

१५-प्र० अजनशलाका थया पछी जिनविपना हाथथी करुण क्यारे छोडवुं ?

उ० जरूरी कारणे अजनशलाका थया पछी प्रतिमा ज्यारे गादीए बेसी जाय त्यारपछी सौभाग्यमन्त्र्यासपूर्वक पहले दिवसे करुण छोडवां, अने उताउल न होय तो चद्रवल पहोचतु होय ते गीजे पाचमे सातमे आदि विपम दिवसे करुण छोडवानी क्रिया करीने करुण छोडवां, स्नात्रकारो नोकार गणीने पण पोतानां करुण छोडी शके छे.

१६-प्र० आजकालना केटलाक विधिकारो दीक्षा कल्याणकनी उजवणी प्रसंगे वधी प्रतिमाओनां करुण छोडी नाखे छे ए केरु ?

उ० प्रतिष्ठा थया पूर्वेज करुण छोडी देवा ए भूल छे, जे कार्य निमित्ते करुण उघाय छे ते कार्य पूर्ण थया पछी ज करुण छोडवुं पहेला नहि.

१७-प्र० घरदहेरासरमा मछिनाथ, नेमिनाथ अने महावीर आ ऋण तीर्थकरोनी प्रतिमा न पूजवी आम कहेवाय छे ए शास्त्रीक छे ?

उ० शास्त्रीक तो नथी, पण सर्वप्रथम खतरगच्छना कोइ आचार्ये लखुं अने चाली पडथु, पाछलथी उगाध्याय सकल-

चंद्रजीए पोताना प्रतिष्ठाकल्पमां ते लोकोनी गाथानुं उद्धरण आधुं एटले आपणामां पण ते वस्तु मनाइ गइ, वास्तवमां छे जेमां ए प्रतिमाओ घरमां पूजवानो वहेम राखवो ए अनुचित छे.

आजकाल केटलेक ठेकाणे प्रतिष्ठा मंडपमां अथवा तेनी पासे जुदा भागमां केटलांक घटनाचित्रो देखाडाय छे जेमां केटलांक भयंकर उपसर्ग संबन्धी होय छे, तो आवां चित्रो प्रतिष्ठा प्रसंगे लोकोने देखाडवामां बाध खरो के नहि? आवां चित्रो न देखाडवां जोइये मानसिक प्रसन्नता अने लागणीने

उ० ज्यां केवल मानसिक उत्साह अने मंगलमय वातावरण होवुं जोइये ए शुभ प्रसंगे आवां चित्रो मानसिक प्रसन्नता अने लागणीने के जे जोतां दर्शकना मनमां खेद अने दुःखनी लागणी जाग्यु करे अने एकथारी सुवर्णकल्पोमां अल्पमात्र पण क्षति पहाँचाडे.

१९-प्र० प्रतिमानुं अंजन करती बलते प्रतिष्ठाचार्यने सुवर्णमुद्रिका तथा सुवर्णकंकण धारण करावा संबन्धी प्रतिष्ठाकल्पोमां लेख छे खरो ?

उ० हां, निर्वाणकलिका, श्रीचन्द्रप्रतिष्ठापद्धति, जिनप्रभप्रतिष्ठापद्धति, आचारदिनकरीय प्रतिष्ठापद्धति वगैरेमां उक्त मुद्रिकादि प्रतिष्ठाचार्य धारण करवां एवुं विधान छे, पण गुणरत्न विशालराजशिष्य सकलचन्द्र आदिना प्रतिष्ठा-

२०-प्र० प्रतिष्ठाकल्पोमां ए विषयमां मतभेद होवानुं कइ कारण हरो खरं ?
उ० हा, आज जेटला पण प्रतिष्ठाकल्पो विद्यमान छे ते तथा उपर चैन्यवासियोना विधाननी आचाद असर छे, निर्वा-

णकलिकानुं निर्माण चैत्यवासकालमा थयेलु छे अने श्रीचंद्रादिनी पद्धतिओ तत्पश्चाद् भावि होइ तेनुं अनुसरण कर्युं छे.
२१-प्र० गुणरत्नद्वरिप्रमुखे पूर्वप्रतिष्ठाकल्पोनुं अनुसरण केम न कर्युं ?

उ० तेरमा सैकामा चैत्यमासनां उतरता पाणी हतां, जगचन्द्रद्वरिए क्रियोद्धार कर्या पछी तेमणे आचारविषयक रूढ परम्पराओ के जे सुविहित आचारमार्गथी प्रतिकूल हती ते बन्ध करी दीधी हती ते पैकीनी शुद्धादि धारण-परम्परा पण एरु हती

२२-प्र० आज्ञे पण कोइरु प्रतिष्ठाचार्य अजन कस्ता सोनाना कडा पहेरे छे. त्यारे कोइ कोइ केसर वडे ककण-शुद्रिकाना आकार पोताना जमणा हाथे करावे छे तो एमां कंइ वाघ खरो ?

उ० सुविहित होवानो फांको राखे तेने माटेतो अभूषण पहेरामां तेमज तेनो शरीर उपर आकार पण चित्रवामां बांधोछे ज अंजनशाला प्रविष्टादिना विधान माटे केटला रूप आदिनुं जल लाववु जोइये ?

उ० प्राचीन विधियोमा उल्लेख छे के गंगादिनां तीर्थजलोનો संग्रह करवो, केटला तीर्थोनुं ? तेनी संख्या लखी नथी, लगभग पांचसो वर्षोथी ? १०८ रूप नदी आदिनु जल एकत्र करवाना उल्लेखो मले छे.

२४-प्र० जलयात्रानी विधि करीने केटला कुवाओनुं जल लाववुं जोइये ?

उ० पूरी विधि रूरीने एक स्थानथी जल लाव्या पछी बधे ते विधि करवानी जरूरत नथी, बीजा जलाशयोने काठे जइ असत फलथी जलदेवीने वधामी तेनी आज्ञा मांगी थोडु थोडु जल सोचाने भोगुं करवुं जोइये.

२५-ग्र० वर्तमान कालीन गुजराती विधिकारो नदीनी आर्द्र भूमिमां १०८ न्हाना खाडा करे छे अने ते खाडाओने १०८ कूआ मानी तेमनुं पूजन करीने जल भरे छे ते विधि-विहित खरुं के नहिं ?

उ० आ विधि नहिं पण बालक्रीडा छे, आबी क्रीडा-जेवी विधिजी जल लाववा करतां न लावबुं वधारे सारुं छे घणा स्थानोनुं के १०८ कूवा वावडीओथी पाणी लाववानुं मूल कारण तो ए छे के घणा स्थानोमां कोइ स्थान देवताधिष्ठित पण होय अने तेवा स्थानथी अनुज्ञा पूर्वक जल आबेल होय तो प्रकृत कार्यमां विशेष सिद्धिकारी निवडे, प्राचीन कालमां घणां तीर्थोनुं जल मंगावातुं हतुं तेनुं कारण एज हतुं के तीर्थो प्राय देवताधिष्ठित होइ त्यांनुं जल सिद्धि-कारी होय छे. नदीने कांठे हाथे करेल खाडाओ देवताधिष्ठित होता नथी माटे तेवा खाडाओनुं पूजन करबुं निरर्थक छे.

२६-प्र० प्रतिष्ठा अंजनशलाकादिना विधानमां केटला पाटलाओनुं पूजन करबुं जोइये ?

उ० प्रतिष्ठा अंजनशलाकामां नन्द्यावर्त सहित ४ अने प्रतिष्ठा पूजामां आजनी त्रिधि प्रमाणे ३ पाटलाओनुं स्थापन कराय छे.

२७-प्र० अंजनशलाकामां नन्द्यावर्त सहित ४ अने प्रतिष्ठा पूजामां आजनी त्रिधि प्रमाणे ३ पाटलाओनुं स्थापन कराय छे.

उ० अंजनशलाकाक विधिकारो वेवडा पाटला पूजावे छे ए बराबर छे ?

उ० वर्तमानमां केटलाक विधिकारो वेवडा पाटला पूजावे छे ए बराबर छे ?

उ० वेवडा पाटला पूजा माटे कोइ शास्त्राधार नथी, विधिकारोनी कल्पना मात्रथी एम करे छे, कुंभ-दीपक आदि वे ठेकाणे स्थपाय एनुं कारण तो ए वस्तुओ स्थावर होवानुं छे, शुद्धिकपालोनी स्थापन स्थिर स्थावर नथी, भगवान् मंडपमांथी देहरामां गया पछी पाटला पण त्यां लइ जइ अक्राय छे.

૧૧-પ્રકૃતવપ્નદ્વાનુષંગી—

૧-૬ પરિચ્છેદ—ત્રીજા સ્વરૂપમાં તમામ વિધિઓનો સમૂહ છે આના ૨૧ પરિચ્છેદોમાં પ્રારંભના ૬ પરિચ્છેદોનો સંબંધ ચૈત્યનિર્માણમાં થતી વિધિઓની સાથે છે, ૧-૨ પરિચ્છેદ શિલ્પશાસ્ત્રાનુસારી છે, ૩ જો પરિચ્છેદ પ્રતિષ્ઠાકલ્પાનુસારી છે, ૪ થા પરિચ્છેદમાં શિલાન્યામ વિધિઓ શિલ્પશાસ્ત્રોક્ત છે પણ અન્તમાં પૂરુ પ્રતિષ્ઠાકલ્પોક્ત શિલાન્યામ વિધિનો પણ આમાં સમાવેશ કરેલો છે. પરિચ્છેદ ૫-૬ ની વિધિઓ નિર્વાણકલ્પને આધારે લખાયેલી છે

૭-૧૨ પરિચ્છેદ—૭ માથી ૧૦ મા સુધીમાં પ્રતિષ્ઠાવિધિઓ છે ૭ મો પરિચ્છેદ નિર્વાણકલ્પોક્તવિધિ પ્રતિષ્ઠાવિધિનું નિરૂપણ કરે છે અને મૂલવિધિના શબ્દેશબ્દનો ગુજરાતી અનુવાદ છે, ૮ મો પરિચ્છેદ સકલચદ્રીય પ્રતિષ્ઠાકલ્પોક્ત દગાહક વિધિનું નિરૂપણ કરે છે, આ પરિચ્છેદમાં સકલચદ્રીય પ્રતિષ્ઠાકલ્પ તથા ગુણરત્નચદ્રીય પ્રતિષ્ઠાકલ્પ આ બંનેનો સમાવેશ થઈ જાય છે, ૯ થી ૧૧ સુધીના પરિચ્છેદો ક્રમશઃ ચૈત્યપ્રતિષ્ઠા, કલશપ્રતિષ્ઠા અને ધ્વજદંડ પ્રતિષ્ઠાનું નિધાન વતાવે છે, આ ત્રણેય પરિચ્છેદો માંની હસ્તાલિખિત વિધિઓને આધારે તૈયાર કરાયેલા છે. ૧૨ મો પરિચ્છેદ જિનાર્ચન પ્રવેશવિધિઓ વતાવે છે, પ્રચલિત સચિસ્તર વિન પ્રવેશવિધિ ઉપરાંત આમાં સશિષ્ટ વિનપ્રવેશ વિધિઓ છે જેમાં ૧ વિન ગૃહપ્રવેશવિધિ છે અને ૨ જિનાર્ચન ચૈત્ય પ્રવેશવિધિઓ છે જો આ સશિષ્ટ પ્રવેશ વિધિઓનો પ્રચાર થાય તો એ નિર્મિત થતો ધનવ્યય અને સમયવ્યય ત્રણો વચાવી શકાય તેમ છે

૧૩-૧૭ પરિચ્છેદ—૧૩ થી ૧૭ સુધીના ૫ પરિચ્છેદોમાં પૂજા વિધિઓ તથા શાંતિકવિધિઓ છે, તે પૈકીની અહંદમિયેક

बन्ने वाचनानुयायी श्रमणसंघोनी सभामां एक गंधर्व वादिवेताल शांतिस्वरि उपस्थित हता जेमणे बालभ्य संघना प्रमुख श्री कालकाचार्यनी संघ कार्यमां सहायता करी हती अने बंने वाचनानुगत आगसोनो समन्वय कराव्यो हतो, असारी मान्यता प्रमाणे ते गंधर्व वादिवेताल अने अभिषेक विधिकारवादिवेताल शांतिस्वरि अभिन्न होवा जोइये, केटलाक विद्वानो उत्तराध्यय-ननी पाइयटीकाकार शांतिस्वरिने 'वादिवेताल' माने छे जे बराबर नथी, पाइयटीकाकार शांतिस्वरि थारापद्रगच्छीय हता अने ते अग्यारमा सैकाना विद्वान हता अने वादिवेताल शांतिस्वरिची अर्वाचीन हता.

जिनरनात्रविधि अने अहंद्भिषेक विधिनी समकालीनता—

श्रीजैन साहित्य विकाससंघल तरफथी जेना प्रकाशननी जाहेरात थइ हती ते ' जिनस्नात्रविधि 'नी वादिवेतालीय अभिषेक विधिनी साथे तुलना करी जोतां जणायुं के उक्त बंने विधिओ एक बीजीवी असथी मुक्त छे, वादिवेताले 'स्नात्रविधि' के स्नात्रविधिकार आचार्यश्री जीवदेवे 'अभिषेकविधि' जोइ होत तो तेनी थोडी पण असर एक बीजानी कृतिमां आव्या विना रहेत नहिं आथी जणाय छे के उक्त बंने कृतिओ लगभग समकालीन होवी जोइये.

अभिषेकविधिना मूलनी कोपी तथा अभिषेकविधिनी पंजिकांतुं पुस्तक विद्वान् मुनिवर्य श्रीपुण्यविजयजीना सौजन्यथी मलतां अमे कलिकामां ए विधि आपवा समर्थ थया छीये ए वातनो अमारे स्वीकार करवो जोइये,

। १४-चौदमा परिच्छेदमां वे अष्टोत्तरी पूजाओ छे, वास्तवमां वे अष्टोत्तरीओ जुदी नथी, पण सामानता न्यूनाधिक्यना कारणे वे जुदी बतावी छे, ओगणासमा सैकानी अष्टोत्तरीमां सत्तरमा सैकानी अष्टोत्तरी करतां केटली सामान वृद्धि थइ छे ए

जाणवा अने थोडा खर्च कोऽ अष्टोत्तरी पूना भगाववा इच्छे तो सत्तरमा सैकानी विधि प्रमाणे भणावी शक्राय ए सोटे वे जुदी जुदी आपी छे.

१५—पंदरसो परिच्छेद शान्तिस्नात्रे रोक्कलो छे. शान्तिस्नात्रना कर्ता तपगच्छना उपाध्याय श्रीसकलचंद्रगणि छे. मारवा-दमां शान्तिस्नात्र भणावमानी रीति वधारे छे. वली त्या भणाववावाला थोडा एटले पुस्तरुना आधारे हरेक भणावी शक्रे एटला माटे आमां प्रत्येक अभिपेकमा गोल्लाती गाथाओ वारंवार छापमाथी पुनरुक्ति थमाथी केटलुक मेटर वधु छे छतां मारवाडना विधिकारी माटे आ पुनरुक्ति उपयोगी यशे एम अमारुं मानवुं छे. अष्टोत्तरीनी विधिओ जेम उपलब्ध थई तेम शान्तिस्नात्रनी प्राचीन लिखित विधि मेलवामा सफलता न मली. सो वर्ष पूर्वे लवायेली एरु पण शान्तिस्नात्र विधि न मलवाथी जे हती ते प्रतिओ उपरथी ज ए विधि तैयार करवी पडी छे.

१६—सोलमा परिच्छेदमा तीर्थयात्रा शान्तिक छे, संघसमुदायनी साथे संघपति वनीने तीर्थयात्राए निकलता संघपतिना घरे प्रथम ए शान्तिक करी पडी प्रयाण करचु जोइये एवी मर्यादा छे, आ शान्तिक अमोए प्राचीन पानाआ उपरथी तैयार करेल छे

१७—सत्तरमा परिच्छेदमा ने ग्रह शान्तिको छे, पहेलु सामान्य ग्रहशान्तिक छे ज्यारे बीजुं शान्तिक गोचग्रहपीडानी शान्ति-करवा माटेनु छे, आ वंदे शान्तिको अमोए प्राचीन हस्तलिखित प्रतो उपरथी लीधेक छे.

१८—अठारमा परिच्छेदमां जीर्णोद्धार विधि छे, जीर्णोद्धारनो अर्थ अहिया भन्नजिन प्रासाद के खंडित जिनप्रतिमा आदिनु विसर्जन करवानो छे. आ विधि अमे निर्वाणकलिका तथा शिल्पशास्त्रना आधारे तैयार करेल छे.

१९—ओगणीशमा परिच्छेदमां देवी प्रतिष्ठाविधि अमे एक हस्तलिखित प्रति उपरथी तैयार करेल छे, ते प्रतिमां पण एतुं नाम ' देवी प्रतिष्ठा विधि ' ज हतुं पण तपास करतां जणायुं के ए विधिनो आधार ग्रन्थ ' आचारदिनकर ' छे. आ विधि यधिणी आदि परिकर रूपे गणाता देवदेवीओनी प्रतिष्ठामां करवानी नथी पण तेमां जणावेल देवीओ पैकीनी कोइ देवीनी स्वतंत्र रूपे कोइ जुदा ते निमित्ते बनेला देहरामां प्रतिष्ठा करवी होय तो त्यां करवानी छे,

२०—वीसमा परिच्छेदमां विविध उपकरणोने अधिवासित करवानी विधि छे, आ परिच्छेद आचारदिनकरानुसारी छे

२१—एकवीसमो परिच्छेद प्रकीर्णक प्रतिष्ठाविधियोनो छे अने ए विधियो पण अधिकांशे आचारदिनकरना आधारे ज लखायेली छे

उपर्युक्त विधिखंडना संकलन माटे अमारी पासेना प्रतिष्ठाकल्पो उपरांत प्राचीन प्रतिष्ठाकल्पो मेलववा माटे प्रयत्न करेल, खास करीने उ०सकलचंद्रजीए पोताना प्रतिष्ठाकल्पनी समाप्तिमां निर्दिष्ट नामना श्यामाचार्य हरिभद्रस्वरि—हेमचंद्राचार्य जगच्चन्द्रस्वरिना नामे चढेला प्रतिष्ठाकल्पो पैकीनो कोई अस्तित्वमां होय तो तपास करवा जेसलेपर पाटण आदिना भंडार व्यवस्थापकीने पूछाव्युं पण बधेथी एकज प्रकारनो उत्तर मलयो के अत्रेना भंडारमां आपे जणावेल कोइ प्रतिष्ठाकल्प नथी. अमने लाग्युं के उ० सकलचंद्रजीए जादूना बले आ कल्पोनुं सर्जन कराने श्रीविजयदानस्वरिने देखाडचा होय तो बात जुदी छे अन्यथा आटला अल्पसमयमां बधा उक्त कल्पो नाम शेष थइ जाय ए संभवित नथी, ज्यारे न्हारथी विशेष उपयोगी सामग्री न मली त्यारे उपलब्ध सामग्रीना आधारे ज कार्य चालुं कर्षुं जेना अवलोकन अने मनन पछी प्रकृत खंडनी संकलना थइ ते सामग्री नीचे प्रमाणे हती—

१-निर्माणकलिका-मुद्रित छता ताडपत्रना पुस्तकने आधारे सुधारेली ।

२-श्रीचन्द्रस्वरि प्रतिष्ठापद्धति कंईक अशुद्ध, मुद्रित ।

३-'विधिधर्मप्रणा' सामाचारीगत जिनप्रभ्रीय प्रतिष्ठापद्धति सं० १७८३ मा लखेल प्रति उपरथी सं० १९४२ मा लखा-
येली शुद्धप्राय ।

४-श्री वर्धमानस्वरिकृत प्रतिष्ठापद्धति मुद्रित अशुद्धिग्रहल

५-गुणरत्नस्वरिकृत प्रतिष्ठाकल्प पुस्तक २, (१) १८ पत्रात्मक " इति मतिष्ठादि समग्रविधिः । सं० १५४२ वर्षे आसो
वदि पचमीदिने लिखितः संखारीग्रामे ॥" इति लेखपुष्पिकायुक्तशुद्ध । (२) दशपत्रात्मक, संवत् १७५३ वर्षे मागसर वदि
५ दिने लिखित प्रति उपरथी लखावेल अने शुद्धप्राय "इति चिन १ ध्वजा २ कलश ३ प्रतिष्ठाकल्पः श्रीतपाचार्य श्री श्रीगुण
रत्नस्वरि विरचितः ॥ इति श्री जिनप्रतिष्ठाकल्पः ॥" ए समाप्ति-लेखयुक्त ।

६-विशालराजशिष्यकृत प्रतिष्ठाकल्प पुस्तक ४-(१) १८ पत्रात्मक शुद्धप्राय, " संवत् १६१९ वर्षे आपाढ मासे शुक्लपक्षे
११ दिने ।" ए लेखकना समाप्तिलेखनाळुं । (२) १७ पत्रात्मक शुद्ध प्राय । " इति विमस्थापना विधिः । श्लो ५५० ।
प्रतिष्ठाग्रदीपग्रंथतोद्धृतः श्रीविजयसेनस्वरिभिः । श्रावक मेघाग्रहेण कृतोऽयम् " इति समाप्तिलेख सहित छे । (३) (१८) पत्रात्मक शुद्ध ।
पडीमायायुक्त लेखन संवत् रहित, अनुमानथी सोलमा सैनामा लखावेल छे । (४) २० पत्रात्मक, शुद्धप्राय, प्राचीन प्रति उपरथी
१९८४ मां लखावेल छे

अशुद्ध ।:

७-१२ पत्रात्मक शुद्ध । जीर्णभावात्मक पडोमात्राओमां लखायेल, विधिप्रपाडुसादि, क्वचित् संशोधित, वक्रात्मक ३७ पत्रात्मक अशुद्ध ।

८-उपाध्याय तारुचंद्रदीय प्रविष्टाकरुय पुस्तक ३ (१) आसरे ओगगोशपा सैक्रामां लखायेल ३७ पत्रात्मक अशुद्ध ।

(२) ३९ पत्रात्मक, अशुद्धिचंद्रहल सं० १९५६ मां लखायेल छे अने (३) मुद्रित, ए पण अशुद्धि प्रचुर अने क्वचित् खंडित पण छे, कलिका नो द्वितीय खंड संकलिा करायां मुख्य आधार ग्रन्थो उपर्युक्त ८ छे, पण ए उपरांत पण केटलीय हस्तलिखित विधिओनो केटलाक परिच्छेदो लखनामां उपयोग कर्यो छे जे पैकीनी केटलीकना नामो आ प्रमाणे छे—

(१) प्रतिष्ठाविधि पा. ७ । (२) प्रतिष्ठाविधि पा. ३ (३) संक्षिप्तप्रतिष्ठा-दण्डध्वजारोप विधि पा. ३ (४) प्रतिष्ठाविधि पा. ६ (५) कलशप्रतिष्ठाविधि पा. ३ (६) ध्वजारोपविधि पा. १ (७) कंरुणमोचनविधि पा. १ । आ बधी य प्रतो अति-प्राचीन अने शीणा अक्षरोमां लखयोली छे.

त्रीजो खंड—

कलिकानो त्रीजो खंड प्रतिष्ठोपयुक्त चैत्यचन्दनो, स्तुतिओ, स्तनो, स्मरणो अने सामग्रीस्त्रिओनो बनेलो छे एटले ए विषयमां बहु कहेवा जेथुं नथी, मात्र स्मरणो, मंत्रो तथा सामग्री स्त्रिओने अंगे बे शब्दो लखी ए विषयने पूरो करीथुं आजकाल आपणा गच्छमां प्रतिष्ठादि विधानोमां कुंभस्थापन थया पछी उत्रसगहर १ संतिकर २ तिजयपहुत्त ३ नमि-उण ४ अजितशान्ति ५ भक्तामर ६ अने बृहच्छान्ति ७ आ सात स्मरण-स्तोत्रो नो त्रिकाल पाठ करवानी परम्परा चाले छे जे बहु जुनी नथी, बसो वर्षथी चालती होय तो भले, ते पहेलानी विधिओमां उभयकाल स्तोत्रपाठ करवानी लेखो मले छे,

पण एय घणा जुना नहि, चारसो पाचसो वर्ष पहेलानी विधिओ अने प्रतिष्ठाकल्पोमा मात्र जिन विं व गदीए वेसाब्बा पछी लघुशक्ति १ वृहच्छक्ति २ अजितशक्ति ३ तिजयपहुच ४ नामिऊण ५ उवसगहर ६ समवसरण स्वव ७ आ सात स्मरणो गणवानो आदेश छे, पण आजै कुभ स्थाप्या पछी रोज निकाल गणवानी पद्धति छे एथी असे पण निकाल गणवीये छीये अने क्रम पण आजना क्रमने मलतो ज छे मात्र भक्तामर बाद करी तेना बदलामा लघुशक्ति दाखल करी छे अने क्रम ले क्रमे स्तोत्र-स्मरणो छपाया छे तेज क्रमे गणवानां छे समवसरण स्वव नित्य गणरानु नथी पण भगवान प्रतिष्ठित थया पछी गणाता स्मरणोने अते एक वार ज ए गणवानु छे.

आ परिच्छेदमा आपेल प्रतिष्ठोपयोगी मत्रो विधिकारोना अभ्यासार्थे छे, तिजयपहुचना कल्पो आप्या छे ते मात्र आरुस्मिक उपद्रवादिनी घटना प्रसंगे उपयोगमा लेवा माटे छे आ अम्नायो असे स्पष्ट नथी कर्यो, कारण के आवी वस्तु अस्पष्ट रहेवामा ज गुण छे, जे एना अनुमयी हथे ते स्वयं उपयोग करी शक्ये.

प्रतिष्ठादिनी सामान सूचिओ अमोए अमारी पद्धतिने अनुसरीने आपेली छे, द्रव्य क्षेत्रादिने जोइ विधिकारो शक्य न्यूनार्थिक्क करी शके छे, पण प्राचीन कल्पोना विधानने लक्ष्यमा राखता आमां आधिस्यनी अपेक्षाए न्यूनतानो ज अधिक अत्रकाश छे एम जणाया विना रहेशे नहि “अधिरुस्याधिकं फल” आ मान्यता विधिकारोए हवे बदलवी जोइये, घणायी घणो भावो-ल्लास थवानी मान्यता बराबर नथी, प्रतिष्ठाकारकगृहस्थनी भावना कोइ पण रीते कुठित न थाय ए वातनो प्रतिष्ठाचार्योए तथा विधिकारोए प्रतिक्षण विचार राखवानी आवश्यकता छे.

प्रसिद्ध श्रुतधर आचार्य श्री हरिभद्रनी निम्नोक्त वे आर्याओ प्रतिष्ठाचार्योए अने विशेषे करीने विधिकारोए पोताना हृदयमां कोतरी राखवी जोइये—

“ इड्यादेर्न च तस्या, उपकारः कश्चिदत्र मुख्य इति । तदतत्त्वकल्पनैषा, बालक्रीडा समा भवति ॥ ”

अर्थ—शुक्तिप्राप्त जिनदेवतानी पूजा सत्कार-आभूषणादिथी तेनो कंइ पण मुख्यपणे उपकार थतो नथी तेथी एमनी ‘पूजा’ आदि ए अतात्त्विक कल्पना छे अने ते बालक्रीडा समान होय छे.

“ लवमात्रमयं नियमा-दुचितोचितभाववृद्धिकरणेन । क्षान्त्यादियुतैर्मंत्र्यादि-संगतैर्बृहणीय इति ॥ ”

अर्थ—प्रतिष्ठा करानारना प्रतिष्ठागतभावने ते लेशमात्र होय तोये उचित-उचित रीतिथी तेनी वृद्धि करवी अने क्षमादिगुणोए युक्त मैत्र्यादि भावनाओ साथे जोडीने तेने पुष्ट करवो.

उपसंहार—

उपोद्घातमां कहेवानी केटलीक वातो रही गइ हशे त्यारे केटलीक वधारे पडती पण कहेवाइ हशे, पण अमारा मनथी अमने जे उचित लागुं ते लखायुं छे, बांचनारने जे प्राण जणाय ते ग्रहण करे अने वीजुं अमारें माटे छोडी दे, एज प्रार्थना ।

कल्याणविजय

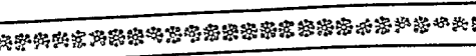
साधनपुरा-अहमदाबाद

७-३-५६

विषयानुक्रम—

परिच्छेद	विषय	पत्रांक पृ.	परिच्छेद	विषय	पत्रांक पृ.
	प्रस्तावना १-१ थी २-२ सुची			बीजा खण्डनो उपोद्घात ३-१ थी ३८-२ सुची	
परिच्छेद	विषय	पत्रांक पृ.	परिच्छेद	विषय	पत्रांक पृ.
परिच्छेदसूची—			४—	शिलान्यास कंटलो नीचे करवो ?	८-२
१— भूमिग्रहणविधि		१-२	"	शिलान्यासमा वास्तुना मर्मो टालना	८-२
"	खातविधि	२-२	"	शिलाओनो ढाल कद तरफ ?	९-१
२— सक्षिप्त वास्तु पूजाविधि		३-२	"	शिलाभिषेक	९-१
३— कर्मप्रतिष्ठाविधि		५-१	"	शिलान्यास अने रत्नादिन्यासना मंत्रो	१०-१
४— शिलान्यासविधि (१)		७-२	"	चतुःशिलाप्रतिष्ठा	१०-२
"	शिलान्यासनो क्रम	७-२	"	पंचशिलामतिष्ठा	११-२
"	शिलान्यासनां वास्तुस्थानो	८-१	"	नवशिलाप्रतिष्ठा	१२-२

परिच्छेद	विषयाः	पत्रांक पृ.	परिच्छेद	विषयाः	पत्रांक पृ.
४—	शिलान्यास पत्नीनां शुभाशुभ निमित्तो	१४-१	७—	भूतत्रलिमंत्र	२६-२
"	शिलान्यासविधि प्रतिष्ठाकल्पोक्त (२)	१५-१	"	प्रतिमामां वर्णन्यास	२६-२
५—	चैत्यद्वार प्रतिष्ठाविधि	१६-१	"	द्विग्रन्ध मंत्र अने स्नानविधि	२७-१
६—	हृदयप्रतिष्ठाविधि	१७-२	"	जल-पुष्प-धूप मंत्रो	२७-२
७—	पादलिप्तद्वारि प्रणीत प्रतिष्ठाविधि	२०-१	"	नन्द्यावर्तमंडलालेखनविधि	२८-१
"	मंडपनां तोरणोनी उंचाई	२०-२	"	लोकांतिकदेवदिशाज्ञापकयंत्र	२९-२
"	वेदी रचना	२१-१	"	३ प्राकारो	३०-२
"	वेदीनां उपादान द्रव्यो	२१-२	"	नन्द्यावर्तनी पूजनविधि	३१-२
"	वेदीना खूणाओमां रोपवानी खीलओ	२२-१	"	नन्द्यावर्त पूजन मंत्रो	३२-१
"	प्रतिष्ठोपयोगी सामग्री	२२-१	"	अधियासना—अधियासना मंत्रो	३४-२
"	उत्सवक्रिया—मंडप प्रतिमाप्रवेश	२३-१	"	प्रतिमामां पृथ्वी आदि तत्त्वन्यास	३५-१
"	देववंदनविधि	२४-२	"	इन्द्रियादिन्यास	३५-१
"	शुचिविद्यारोपण अने सकलीकरण	२५-२	"	नाडीदशकन्यास	३५-२



पत्रांक पृ. ४६-२
४६-२
४७-१
४७-२
४८-१
४९-१
४९-२
५०-१
५१-१
५२-१
५२-२
५४-१
५५-१

विषयाः

परिच्छेद

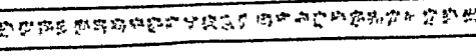
८— नव्यप्रतिष्ठापद्धति
पूर्वक्रियावीजरूपम्
मुहूर्तनिर्णय-राजपृच्छा-भूमिशोधन
मंडपनिर्माण
वेदीनी रचना
संघमक्तिना आदेश
संघामंत्रणपत्रिकाओ
ओषधि गटनारी स्त्रियो
स्नानकरो
अमारिषोपणा
प्रतिष्ठोपस्तरसभार
व्यवस्थापरुमंडल
उत्सवक्रिया-प्रथमाह्निकनीजरूपम्

पत्रांक पृ. ३५-२
३६-१
३७-१
३७-२
३९-१
४०-१
४०-२
४१-१
४१-२
४२-२
४३-१
४३-१
४३-२

विषयाः

परिच्छेद

७— राष्ट्रद्वन्द्विन्याम
सहस्रगुणरुगापन
प्रतिष्ठाविधि—
द्रव्यो व्यापयानी ममजण—
नामस्थापन
मगलगाथापाठ
प्रतिष्ठागुणगर्भितेयना
शान्तिरत्नमंत्र
संश्लेषप्रतिष्ठाविधि
लेपमयत्रिमाप्रतिष्ठाविधि
सरस्वत्यदित्रिमाप्रतिष्ठाविधि
प्रतिष्ठारारनीचमापदारी
पादलिप्रतिष्ठान्पमूलम्



परिच्छेद	विषयाः	पत्रांक पृ.	परिच्छेद	विषयाः	पत्रांक पृ.
८— (१)	प्रथमाह्निक कृत्यविधि-मंडपप्रवेश	५६-१	८—	ग्रहपूजनकोष्टक	७६-२
"	जलयात्राविधि	५७-१	"	ग्रहपूजन	७७-१
"	कुंभस्थापनविधि	५९-१	"	ग्रहशान्तिस्तोत्र	७९-२
"	अखंडदीपकस्थापना	६१-१	"	अष्टमंगलस्थापना	८०-१
"	कुंभस्थापननी प्राचीनविधि	६१-१	"	अष्टमंगलस्थापनाविधि	८०-२
"	नवांगवेदी रचना अने यत्रवारकवपन	६१-२	(४)	चतुर्थाह्निक-बीजकम्	८१-२
"	द्वितीयाह्निकबीजकम्	६३-१	"	सिद्धचक्रपूजन-कृत्यविधि	८१-२
"	द्वितीयाह्निककृत्यविधि	६३-२	"	सिद्धचक्रपूजन	८२-२
"	नन्दावर्तआलेखनविधि	६४-१	"	पंचमाह्निक-बीजकम्	८४-२
"	नन्दावर्तपूजनविधि	६६-२	(५)	वीसस्थानकपूजनविधि	८५-१
"	तृतीयाह्निकबीजकम्	६९-१	"	वज्रपंजरस्तोत्ररक्षा	८५-२
"	दिक्पालपूजनविधि	७०-१	"	वीसपदस्थापनाकोष्ठक अने २० पदपूजन	८६-१
"	दिशाचलिक्षेप	७५-१	"	(६) षष्ठाह्निक-बीजकम्	८९-२
"	ग्रहपूजाविधि	७६-१	"	कृत्यविधि-इन्द्र-इन्द्राणीकल्पना	८९-२

परिच्छेद	विषयाः	पत्रांक पृ	परिच्छेद	विषयाः	पत्रांक पृ.
८—	अपनमन्याणरुविधि	९१-१	८—	अधिरासनाकृत्यविधि	१०७-२
"	(७) सप्तमाह्निकबीजकम्	९३-१	" (१०)	दशमाह्निकबीजकम्	११०-१
"	कृत्यविधि-जन्म कृत्याणरुविधि	९३-२	"	अजनशलाका-कृत्यविधि	११२-१
"	द्विकुमारीकृतोत्सवविधि	९४-२	"	शान्तिमंत्र	११२-२
"	इन्द्र-इन्द्राणीकृतजन्माभिषेकोत्सव	९६-१	"	नयनोन्मीलन	११४-१
"	(८) अष्टमाह्निक बीजकम्	९८-१	"	मगलगाथापाठ	११६-१
"	कृत्यविधि-उपरुण	९९-२	"	प्रतिष्ठाफलदेशना	११६-२
"	जलादिमन्त्रविधि	१००-१	"	मध्यकालीनअजनशलाकाविधि	११७-१
"	अभिषेकरुकाव्यादि	१०१-१	"	सामग्रीमेलन	११७-१
"	जिनाह्वानादिश्रयान्तरविधि	१०२-१	"	स्नात्रोपक्रम	११७-२
"	दिक्पालादिआह्वान	१०२-१	"	नन्द्यामर्तभालेखनविधि	११८-१
"	मंत्रशामादिअगान्तरविधि	१०२-२	"	नन्द्यामर्तपूजनविधि	१२०-१
"	पंचामृतनो अभिषेक-१०८ अभिषेक	१०४-२	"	प्रतिष्ठास्थानमां प्रतिमाप्रवेश	१२१-१
"	(९) नयमाह्निक-बीजकम्	१०६-१	"	जलयत्राविधि	१२१-२

परिच्छेद	विषयाः	पत्रांक पृ.	परिच्छेद	विषयाः	पत्रांक पृ.
८—	वेदीस्थापना	१२२-१	८—	पंचामृतस्नान-स्वच्छजल १०८ स्नानो	१३५-१
"	दिक्पालस्थापना	१२२-१	"	कंकणमोचनविधि-(प्रकारान्तरेण)	१३७-१
"	स्नानकारो अने औषधि वांटनारीओ	१२२-१	"	विसर्जन-विसर्जनविधि	१३८-१
"	प्रतिष्ठाप्रारंभमंगल	१२२-२	"	प्रतिष्ठाविधिबीजकानि	१३८-२
"	अधिवासनानो उपक्रम	१२४-१	"	श्रीचन्द्रप्रतिष्ठापद्धतिबीजककाव्यानि	१३८-२
"	अद्वार अभिषेको	१२४-२	"	परंपरागताः प्रतिष्ठाबीजकगाथाः	१३९-१
"	अधिवासना	१२८-१	"	ध्वजदण्डारोपविधिबीजकम्	१४०-२
"	प्रतिष्ठाविधि	१२९-२	"	जिनप्रभम्बरस्क्रित प्रतिष्ठाविधिबीजकम्	१४१-१
"	मंगलगाथापाठ	१३०-२	"	स्थापनाचार्यप्रतिष्ठाविधिगाथाः	१४१-२
"	यक्षयक्षिणीप्रतिष्ठा	१३१-१	९	चैत्यप्रतिष्ठाविधि	१४२-१
"	नवीनप्रतिष्ठितविन्दवगृहेःस्थापनविधि	१३२-१	१०	कलग्रप्रतिष्ठाविधि	१४३-१
"	संक्षिप्तप्रतिष्ठाविधि	१३३-१	"	कलग्र ९ अभिषेको-अधिवासना	१४४-१
"	लवणजलाऽऽरीत्रिकविधि	१३३-२	"	कलग्रप्रतिष्ठा	१४८-१
"	कंकणमोचनविधि	१३४-२	११	ध्वज-दण्डप्रतिष्ठा प्रारंभिकविधि	१५०-१

परिच्छेद	विषयाः	पत्रांक पृ.	परिच्छेद
१४—	दिकूपालोने बलिक्षेप	१९६-१	१८—
"	पूजाप्रारंभ	१९७-१	१९—
"	अष्टोत्तराशतस्नात्रविधि सत्तरमा सैकानी	१९८-१	२०—
"	स्नात्रनां पूर्वकृत्यो	१९९-१	"
"	ग्रहस्थापनविधि	२००-२	"
"	दिकूपालस्थापनविधि	२०१-२	"
"	बलिक्षेपविधि	२०२-२	"
"	तात्कालिकृतैयारी स्नात्रनो प्रारंभ	२०३-१	"
"	शांतिकलश भरवानी विधि	२०४-१	"
"	श्रीशान्तिस्नात्रविधि	२०५-२	"
१५—	स्नात्रनो प्रारंभ	२२०-१	"
"	तीर्थयात्राशान्तिक	२२३-१	"
१६—	ग्रहशान्तिक	२२५-१	२१—
१७—	गोचरग्रहपीडाशान्तिक		

पत्रांक पृ.

२३०-१

२३२-१

२३८-१

२३८-१

२३८-१

२३८-१

२३८-१

२३८-१

२३८-१

२३८-१

२३८-१

२३८-१

२३८-१

२३८-१

२३८-१

२३८-१

२३८-१

२३८-१

२३८-१

विषयाः

जीर्णोद्धारविधि

देवीप्रतिष्ठाविधि

विधिवस्त्वधिवासनाविधि (पूजा-शयन-आसन-

विहार-क्षेत्र-सर्वकार्योपयोगि भूमिओनी अधि-

वासना

जल-अग्नि-चूलो-सीघडी-वस्त्र-भूषण-पुष्पमा-

ला-सुगंध-तंबोल आदिनी अधिवासना २३८-२

ला-सुगंध-तंबोल आदि-गजाद्यादि-उपानत-सर्व-

चंद्रयो-शयना-सनादि-गजाद्यादि-उपानत-सर्व-

वर्तन-ओषध-मणिरत्न-दीपक-भोजन २३९-१

भंडार-पुस्तक-जपमाला-बाहन-शस्त्र-कवच-पा-

खर-ढाल-गाय-भैस-बलद-गृहोपकरण २४०-१

क्रयाणक-विक्रिय-भोगोपकरण-चामर-बाद्य-

उवताति-रिक्त सर्ववस्तुनी अधिवासना २४०-२

प्रकीर्णकप्रतिष्ठाविधि

२४१-२

२४१-२

कल्याण-कलिकायां

द्वितीय-खण्डः

परिच्छेद-सूची

भूमिग्रहविधिस्तद्वद्, वास्तुपूजाविधिस्तथा । कूर्मन्यासप्रतिष्ठां च, शिलान्यासविधिस्तथा ॥१॥

द्वारप्रतिष्ठा हृदय-प्रतिष्ठां जिनविम्बप्रतिष्ठां श्री-पादलिप्तप्ररूपिता ॥२॥

अद्यतनो जिनार्चानां, प्रतिष्ठाविधिविस्तरः । चैत्यप्रतिष्ठां कलश-प्रतिष्ठां दण्डरोपणम् ॥३॥

जिनविम्बप्रवेशश्च, त्रिविधः परिकीर्तितः । अभिषेकविधिस्तद्वद्व्योत्तरशतार्चनम् ॥४॥

शान्तिस्नानविधिस्तौर्धयात्रायां शान्तिकं तथा । ग्रहशान्तिद्वयं जीर्णोद्धारस्य विधिरेव च ॥५॥

देवीप्रतिष्ठां विविध-वस्त्वधिवासनाविधिः । प्रकीर्णकप्रतिष्ठांश्च, परिच्छेदाः प्रकीर्तितः ॥६॥

भा० टी०—भूमिग्रहण विधि १, वास्तुपूजा विधि २, कूर्मन्यास-प्रतिष्ठा ३, शिलान्यास विधि ४, द्वाश्रयतिष्ठा विधि ५, हृदयप्रतिष्ठा विधि ६, पादलिप्तस्त्ररि निरूपित जिनविंश प्रतिष्ठा विधि ७, वर्तमान समयमां प्रचलित जिनविंश प्रतिष्ठा विधि ८, चैत्यप्रतिष्ठा विधि ९, कलशप्रतिष्ठा विधि १०, ध्वजदण्ड प्रतिष्ठा विधि ११, ज्ञान प्रकारे जिनविंश प्रवेश विधि १२, अभिषेक विधि १३, अष्टोत्तरीयात्रपूजा विधि १४, शान्तिस्नात्रपूजा विधि १५, तीर्थयात्रा ज्ञान्तिक १६, त्रे प्रकारे ग्रहशान्तिक १७, जीर्णोद्धार विधि १८, देवी प्रतिष्ठा विधि १९, त्रिविधस्त्वधियासना विधि २० अने प्रकीर्णक प्रतिष्ठा विधि २१; अत्र बीजा खंडना परिच्छेदो कथा. हवे प्रत्येक परिच्छेदं नुं निरूपण कराय छे.

परिच्छेद १. भूमिग्रहण विधि :

परीक्षितापि चैत्यार्हा, भूमिग्राह्या विधानतः । येन तत्र कृतं वेदम, निर्विघ्नं शान्तितदं भवेत् ॥७॥

भा० टी०—चैत्यने योग्य परीक्षित भूमिनो पण स्वीकार विधि पूर्वक करवो जोइये के जेयी तेमां निर्विघ्नपणे जिनघर वनी शके अने ते शान्तिदायक थाय. पूर्वोक्त प्रकारे वर्ण, गन्ध, रसादिके करी परीक्षा करी पछी ते भूमि विधि पूर्वक पोताना अधिकारमां लेवी. प्रासाद भूमि उपर अधिकार सारा सुहूर्ते अने शुभ लगनां करवो, अने तेज सुहूर्ते तेमां लात सुहूर्ते करीने भूमि शुद्धि करवी जोइये. प्रासाद करायनार गृहस्थ, अथवा मृत्रधार प्रथम स्नान करी, शुद्ध नल धारण करी, अज्ञानमिश्रितवास पुष्पादि पूजोपस्कर लेइ, ते परीक्षित भूमिमां जइ, वास्तु भूमिना मध्य भागे पंचरत्नादिशुक्त कुंभ स्थापित करे, पछी पूर्वोदि दिग्ग माहमो उभो रही—

- १ ॐ इन्द्राय आगच्छ २ अर्घं प्रतीच्छ २ स्वाहा । ३ ॐ अग्नये आगच्छ २ अर्घं प्रतीच्छ २ स्वाहा ।
- २ ॐ यमाय आगच्छ २ अर्घं प्रतीच्छ २ स्वाहा । ४ ॐ निर्ऋतये आगच्छ २ अर्घं प्रतीच्छ २ स्वाहा ।
- ३ ॐ वरुणाय आगच्छ २ अर्घं प्रतीच्छ २ स्वाहा । ५ ॐ वायवे आगच्छ २ अर्घं प्रतीच्छ २ स्वाहा ।
- ४ ॐ कुबेराय आगच्छ २ अर्घं प्रतीच्छ २ स्वाहा । ६ ॐ ईशानाय आगच्छ २ अर्घं प्रतीच्छ २ स्वाहा ।
- ५ ॐ नागाय आगच्छ २ अर्घं प्रतीच्छ २ स्वाहा । ७ ॐ ब्रह्मणे आगच्छ २ अर्घं प्रतीच्छ २ स्वाहा ।

आ प्रमाणे प्रत्येक लोकापालने अर्घं निवेदन करी पठी पीला रापव हाथभा लडने मत्र बोली भूमिनो स्वीकार करवो

अपक्रामन्तु भूतानि, देवदानचराक्षसाः । चासान्तर ब्रजन्त्वस्मात्, कुर्या भूमिपरिग्रहम् ॥१॥

यदत्र सस्थित भूत, स्थानमाश्रित्य सर्वदा । स्थान त्यक्त्वा तु तत्सर्वं, यत्रस्थ तत्र गच्छतु ॥२॥

अपक्रामन्तु भूतानि, पिशाचाः सर्वतो दिशम् । सर्वेषामविरोधेन, चैत्यकर्म समारभे ॥३॥

आ श्लोको बोलीने पूर्वादि न्यारे दिशामा सरसव फेकी भूतादिसरने दूर करु, पठी त्या पच गव्य अने सुर्यजल छाटु ते पठी घरगणीअे पूर्ण मलय खावे लइ गीत यादिना नाद पूरुं क प्रथम पूर्वदिशामा ते भूमिनी सोमार्पयन्त जतु त्या सणभर रोकुइ आग्नेय कोणमा, त्याथी दक्षिण सीमामा थइ नैऋत्य कोणमा, त्याथी पश्चिम सीमा उपरं थई वायव्य कोणमा अने त्याथी उत्तर सीमामा थइ ईशान कोण पर्यन्त ते भूमिमा फरी, भूमिनी चतुर्दिक् सीमा नियत करवी, मूत्रगार त्या शकु(खीलीओ) अने दोरी लडने हाजर रहे, प्रासाद वास्तुनी सीमा निश्चित करचा माटे आग्नेय कोणथी सष्टि क्रमथी ४ कोणोमा ८ खोलियो

रोपी, वे वे खीलियो वच्चे अक अक दोरी खेचीने बांधे. आ प्रमाणे भूमिनी चार मीमा निश्चित करी सोना रूपा मोती दही अक्षतादि मांगलिक पदार्थी वडे तेनी प्रदक्षिणा कराववी अने संक्रान्त्यनुसारे जे कोणमां खातस्थान आवंतुं होय त्यां लग्न समय आघतां विधिपूर्वक खात मुहूर्त करवुं.

खातविधि—वास्तु भूमिना मध्यभाग उपर कुंभ स्थापन करी तेनी सामे पाटळो ढालीने ते उपर प्रथम वास्तु पुरूपसुं आढान पूर्वक स्थापन करवुं. ते आ प्रमाणे—

ॐ वास्तोष्पतये ब्रह्मणे नमः । ॐ वास्तोष्पते इद्भागच्छ २ स्वाहा । ॐ वास्तोष्पते इह तिष्ठ २ स्वाहा ।
ॐ वास्तोष्पते पूजां प्रतीच्छ २ स्वाहा । ॐ वास्तोष्पतये नमः ।

मुद्रापूर्वक आढान-स्थापना करी नीचेना मंत्रोच्चारण पूर्वक द्रव्यो चढाववां, ते आ प्रमाणे—

१ ॐ वास्तोष्पतये धूपं समर्पयामि स्वाहा । २ ॐ वास्तोष्पतये चन्दनादिकं समर्पयामि स्वाहा ।
३ ॐ वास्तोष्पतये पुष्पाणि समर्पयामि स्वाहा । ४ ॐ वास्तोष्पतये वस्त्रं समर्पयामि स्वाहा ।
५ ॐ वास्तोष्पतये फलं समर्पयामि स्वाहा । ६ ॐ वास्तोष्पतये दीपं समर्पयामि स्वाहा ।
७ ॐ वास्तोष्पतये नैवेद्यं समर्पयामि स्वाहा । ८ ॐ वास्तोष्पतये अक्षतादिकं समर्पयामि स्वाहा ।
प्रत्येक मंत्रमां जणावेल द्रव्यो चढाव्या वाद हाथ-जोडीने नीचेनो श्लोक बोलवो—

वास्तु पुरुष ! नमस्तेऽस्तु, भूमिशय्यारत प्रभो ! । मद्गृहं धनधान्यादि-समृद्धं कुरु सर्वदा ॥४॥

આમ પ્રાર્થના કરી શુદ્ધ જલ અજલિમા લઈને—“ ઊં વાસ્તોષ્પતયે વ્રહ્મણે વિસર વિસર પુનરાગમનાય સ્વાહા ”
 આ મંત્ર વહે વિસર્જન મુદ્રાએ વિસર્જન કરુ તુ તે પટ્ટી લ્વાતસ્થાને જડ ગવ પુષ્પ ફલાક્ષતાદિતુ પાત્ર હાયમા લઈને નીચેના મંત્ર
 શ્લોકો ગોલી પૃથ્વીને અર્પ્ય આપતુ

આગચ્છ સર્વ કલ્યાણિ ! , વસુધે ! લોકધારિણિ ! । પૃથિવિ ! હેમગર્ભાંસિ, કાશ્યપેનાંસિવન્દિતા ॥૬॥
 ચૈત્ય તુ કારંયામ્યઘ, ત્વદૂર્લ્ભવ શુભલક્ષણમ્ । શુહાણાર્ઘ્યં મયા દત્તં, પ્રસન્ના શુભદા ભવ ॥૬॥

આ પટ્ટી નીચેનો શ્લોક વોલીને પૃથ્વીની ક્ષમા પ્રાર્થના કરવી.

ક્ષમે ! ક્ષમસ્વ મત્પ્રીઘ, મેદિનિ ! મનુજામ્બિકે । ચૈત્યકર્મ સમારંભે, કરિણ્યે તવ ઘટ્નમ્ ॥૭॥

આમ પ્રાર્થના કર્યા પટ્ટી કોદાલી આદિ લ્વાતોપકરણો ઉપર સુવર્ણ જલ ઢાટી, કેસર ચદનાદિ મુગધ પર્યર્થો છાટવા, અને
 હવ્ર સમય આવતાં વાદિત્ર નાદો અને જયઘોષો પૂર્વેક લ્વાતમુહૂર્ત કરતુ. ઓઝામા ઓછો એક હાય હડો ચોરસ લાહો મુહૂર્ત
 સમયમા કરવાથી જ લ્વાત મુહૂર્ત વધુ ગણાય

परिच्छेद २. संक्षिप्त वास्तु पूजा विधि :
चैत्यकर्मसमारम्भे, प्रवेशसमयेऽपि च । वास्तुपूजा यथाशक्ति, विधेया शान्तिमिच्छता ॥८॥

भा० टी०—“चैत्यना कामनो आरंभ कारतां अने तेमां प्रवेश करवाना (प्रतिष्ठाना) समयमां शान्तिना इच्छुके शक्त्यनुसार ‘वास्तु पूजा करवी.’ वास्तुभूमिनुं पूर्वोक्त प्रकारे संज्ञोचन करी, प्रासाद अथवा गृहना परिमाणानुसार तेने पत्थरो अने माटी वडे उंची छेइ. दिशाओ निश्चित करीने शिलान्यास करती वखते प्रथम त्यां वास्तु मण्डल आलेखी वास्तु पूजा करवी. मंडलना कया पदमां कया देवनो वास छे, ते कोष्ठकोमां आपेल नामो उपरथी निर्णय कयां पछी पूजानो प्रारंभ करवो. पूजानो प्रारंभ कया पदथी करवो अ विषयमां शिल्पशास्त्रो अक्रमत नथी. घणा ग्रन्थकारो ब्रह्मा, तेनी परिधिना मरीचि आदि ४, अने आप, आपवत्सादि ८, आ १२ देवो अने अन्तमां ईशादि ३२ प्राकारगत देवो; आ क्रमथी पूजा विधान लखे छे. ज्यारे केडलाक ग्रन्थकारो अथी विपरीत ईश आदि ३२ देवो, अने ब्रह्मा; आ क्रमथी पूजा प्रारंभ करवानुं लखे छे. ‘चरकी’ आदि पदवाद्य-स्थित देवीओनो पूजा सर्वना मते पाछलथी करवानी छे. पूजा बलि द्रव्यो, प्रत्येक पदस्थित तेमज पदवाद्य देवोने माटे भिन्न भिन्न विहित छे, छतां सर्व द्रव्योनी प्राप्ति न थतां पुष्प, अक्षत, सुगन्ध, धूप, दीप अने शुद्ध पक्वान्नानी बलिनुं पण पूजामां विधान कर्तुं छे. निवार्णकलिकाकारे “दूर्वादध्यक्षतादि”, आ पाठमां आदि शब्द वापर्यो छे. अटले पुष्प धूप, दीप, फल, मेवो, विगेरे यथोपलब्ध द्रव्योनो पूजामां उपयोग करवो, एक पदमां वे देवो होय तो प्रत्येकनो नाम भंत्र बोली, तेनां उपहार द्रव्यो चढावयां, अकथी अधिक पदोमां अक देव होय तो प्रत्येक पदमां ते देवनो नाम भंत्र बोलीने पूजापो चढावयो, पूजानो प्रारंभ

ईशान कोणधी करीने प्रथम 'ईश' आदि ८-पूर्व दिशामा, पाचरूादि ८ दक्षिण दिशामा, पिनादि पश्चिम दिशामा अने त्रापु ८ आदि ८ उत्तरमा, आम वाद्य पद्दगत ३२ देवोनी पूजा करवी, ते पत्नी आप, आपरस्तादि ईशानादि अभ्यन्तर कोणगत ८, मरीचि-त्रिस्तान् आदि पूर्वादि दिग्गत ४ अने श्ल्या १ मयमा; आ क्रमधी रास्तु महलगत ४५ देवोने पूजवा अन्ते 'चरकी' आदि अनुचरी देविभोनु पूजन करवु, नीचे प्रमाणे नाम मन्त्रोच्चारण पूर्वक ते ते दिशामा ते ते देवोनी पूजा करवी

आदि अनुचरी देविभोनु पूजन करवु, नीचे प्रमाणे नाम मन्त्रोच्चारण पूर्वक ते ते दिशामा ते ते देवोनी पूजा करवी

आदि अनुचरी देविभोनु पूजन करवु, नीचे प्रमाणे नाम मन्त्रोच्चारण पूर्वक ते ते दिशामा ते ते देवोनी पूजा करवी

आदि अनुचरी देविभोनु पूजन करवु, नीचे प्रमाणे नाम मन्त्रोच्चारण पूर्वक ते ते दिशामा ते ते देवोनी पूजा करवी

आदि अनुचरी देविभोनु पूजन करवु, नीचे प्रमाणे नाम मन्त्रोच्चारण पूर्वक ते ते दिशामा ते ते देवोनी पूजा करवी

आदि अनुचरी देविभोनु पूजन करवु, नीचे प्रमाणे नाम मन्त्रोच्चारण पूर्वक ते ते दिशामा ते ते देवोनी पूजा करवी

आदि अनुचरी देविभोनु पूजन करवु, नीचे प्रमाणे नाम मन्त्रोच्चारण पूर्वक ते ते दिशामा ते ते देवोनी पूजा करवी

आदि अनुचरी देविभोनु पूजन करवु, नीचे प्रमाणे नाम मन्त्रोच्चारण पूर्वक ते ते दिशामा ते ते देवोनी पूजा करवी

आदि अनुचरी देविभोनु पूजन करवु, नीचे प्रमाणे नाम मन्त्रोच्चारण पूर्वक ते ते दिशामा ते ते देवोनी पूजा करवी

आदि अनुचरी देविभोनु पूजन करवु, नीचे प्रमाणे नाम मन्त्रोच्चारण पूर्वक ते ते दिशामा ते ते देवोनी पूजा करवी

आदि अनुचरी देविभोनु पूजन करवु, नीचे प्रमाणे नाम मन्त्रोच्चारण पूर्वक ते ते दिशामा ते ते देवोनी पूजा करवी

आदि अनुचरी देविभोनु पूजन करवु, नीचे प्रमाणे नाम मन्त्रोच्चारण पूर्वक ते ते दिशामा ते ते देवोनी पूजा करवी

आदि अनुचरी देविभोनु पूजन करवु, नीचे प्रमाणे नाम मन्त्रोच्चारण पूर्वक ते ते दिशामा ते ते देवोनी पूजा करवी

‘अभ्यन्तर कोणगत ८ देवीनी पूजा’—ईशान कोणे-ॐ अद्भ्यो नमः ३३ । ॐ आपवत्साय नमः ३४ । आग्नेय कोणे-ॐ सचित्रे नमः ३५ । ॐ सावित्राय नमः ३६ । नैऋत्यकोणे-ॐ इन्द्राय नमः ३७ । ॐ इन्द्रजयाय नमः ३८ । वायव्यकोणे-ॐ रुद्राय नमः ३९ । ॐ रुद्रदासाय नमः ४० । पूर्वमां-ॐ मरीचये नमः ४१ । दक्षिणमां-ॐ विवस्वते नमः ४२ । पश्चिममां-ॐ मित्राय नमः ४३ । उत्तरमां-ॐ धराधराय नमः ४४ । मध्यां-ॐ ब्रह्मणे नमः ४५ ॥

‘सण्डल बाह्ये ईशाने-ॐ चरक्यै नमः १ । पूर्वमां-ॐ स्कन्दायै नमः २ । अश्विकोणे-ॐ विदार्यै नमः ३ । दक्षिणमां-ॐ अर्यमायै नमः ४ । नैऋत्ये-ॐ ललनायै नमः ५ । पश्चिमे-ॐ जंभायै नमः ६ । वायव्य कोणे-ॐ पूतना पापराक्षस्यै नमः ७ । उत्तरे-ॐ पिल्लिपिच्छायै नमः ८ ॥

बृहत्संहितादिक ग्रन्थोमां चरकी, विदारी, पूतना, पापराक्षसी आ ४ विदिकस्थित देवियोनो उल्लेख छे. पण दाक्षिणात्य पद्धतिना शिल्प ग्रन्थोमां उक्त ४ उपरान्त पूर्वादि दिशाओमां सर्वस्कन्द, अर्यमा, जंभक, अने पिल्लिपिच्छक; ए नामक ४ पुरुष देवीनी पण मंडलनी बहार पूजा करवावुं विधान कर्युं छे, कलिकांमां दिशा देवीने पण त्री लिङ्गमां ज लख्या छे. तेथी अमोअे तेना अनुसारे अत्र पूजनमां नामो लख्यां छे, उक्त वास्तु पूजाने केटलाक प्रतिष्ठाकल्पकारो ‘स्थंडिल वास्तु’ नाम आपे छे, ज्यारे वास्तु भूमिमां खाडो खोदीने तेमां कराता वास्तुपूजनने ‘पातालवास्तु’ कहेल छे. पादलिप्तमूरिअे उक्त अेकज प्रकारवुं वास्तु मांग्युं छे अने तेनुं विधान शिलान्यासना समयमां जणावुं छे.

परिच्छेद ३. कूर्म प्रतिष्ठा विधिः (प्रतिष्ठा कल्पोक्त)

चैत्यकर्म विधावत्र, कूर्मो भूमौ निधीयते । यत्पीठानहितं चैत्यं, चिरस्थायि भवेद् ध्रुवम् ॥९॥

भा० शी०—चैत्य कार्यना निर्माणमा नीचे भूमिमा कूर्म स्थापित करी तेनी पीठ उपर चैत्य वनाववायो ते स्थिर अने चिरस्थायी नन छे

सामग्री—सोनानो काचरो १ । पचरलनी पोदली ५ । माटीना कलशिया ५ । कलशियाना ढाकणा ५ । उपशिला-शिलाओना सपुट ५ । सात धान्य कोरा सुट्टि ५ । सातधान्यना वारूला याली १ । स्नात्रपूजानो सामान । पचासुतनो कलशियो १ । पुष्प सर्व जातना । फल मूरा-लीला । ढामनी शली ५ । जलनो कलश १ । कूर्मने ओढाववानु नह्य हाथ १ । सिंहासन १ । पचतीर्थीप्रतिमा १ । आरीसो १ । दीवो फाणसमा १ । आरती मरेली १ । टीवासलीनी पेटी १ । मगलदीवो मरेलो १ । न्दाना कलशिया ४ । गेनामूत्र नोयो १ । स्नातकार ४ । शोतिया उत्तरासण ४, ४ । प्रक्षालनी कुडी १ । अग लूछणा ३ । वाला कुची १ । पाट म्होडो १ शिलाओना अभिपेक माटे ॥

विधि—कूर्म प्रतिष्ठाविधि प्रतिष्ठा कल्पोमा नीचे प्रमाणे मळे छे, जे स्थानमा कूर्म स्थापवो होय त्या शुद्धतना दिवसे प्रथम पूर्व प्रतिष्ठित प्रतिमा सिंहासन उपर पथरावी स्नात्र पूजा भणाववी, आरती उतारवी, मगल दीवो करवो, अने पठी त्या चैत्यवदन कारवु. जे जिनना नामथी कूर्म प्रतिष्ठानु शुद्धतं होय ते जिननुं चैत्यवदन वोलवु. कदापि ते तीर्थकरनु चैत्यवदन याद न होय तो—‘उं नमः पार्श्वनाथाय विभ्वचिन्तामणीयते ।’ इत्यादि चैत्यवदन कहीने “नमुत्युण” कही उभा थई ३ स्तुतिओ कथा पळी

‘श्रीशान्तिनाथ आराधनार्थं काउसगं कुरु ? इच्छं, श्रीशान्तिनाथ आराधनार्थं करेमि काउसगं, वंदण वत्तियाए०’ इत्यादि पूरो पाठ बोली १ नोकरनो काउ० पारी नमोऽर्हत्० कही—

श्रीमते शान्तिनाथाय, नमः शान्तिविधाधिने । त्रैलोक्यस्याऽमराधीश-सुकुशभ्यर्चितांहये ॥१॥

अे स्तुति कहेवी, पछी सुअदेवयाअे करेमि काउसगं, अबत्थ० १ नोकारनो काउ० पारी नमोऽर्हत्० स्तुति—

यस्याः प्रसादममुलं, संप्राप्य भवन्ति भव्यजननिवहाः । अनुयोगवेदिनस्तां, प्रगतः श्रुतदेवतां वन्दे ॥२॥

अे स्तुति कही, पछी श्रीशान्तिदेवयाए करेमि काउसगं, अबत्थ० ? नोकारनो काउ० नमोऽर्हत्० स्तुति—

उन्मृष्टरिष्ट-दुष्ट-ग्रहगतिदुःस्वप्नदुर्निमित्तादि । संपादितहितसंपन्नमग्रहणं जयति शान्तेः ॥३॥

कही, श्रीशासनदेवयाए करेमि काउसगं, अबत्थ० ? नोकारनो काउ० नमोऽर्हत्० स्तुति—

या पाति शासनं जैनं, सद्यः प्रत्यूहनाशिनी । साभिप्रेतसष्टद्वयर्थं, भूयात् शासनदेवता ॥४॥

कही, अम्बादेवीअे करेमि काउसगं, अबत्थ० ? नोकारनो काउ० नमोऽर्हत्० स्तुति—

अम्बा बालांकिताङ्कासौ, सौख्यह्यातिं ददातु नः । माणिक्यरत्नालङ्कार-चित्रसिंहासनस्थिता ॥५॥

कही, खित्तदेवयाए करेमि काउसगं, अबत्थ० ? नोकरनो काउ० नमोऽर्हत्० स्तुति—

यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रिया । सा क्षेत्रदेवता नित्यं, भूयान्नः सुखदायिनी ॥६॥

कही, अधिवासना देवीए करेमि काउसगं, अबत्थ० ? लोगसस सागर वरगंभीरा सुवीनो काउ० नमोऽर्हत्० स्तुति—

पातालमन्तरिक्ष, भवन वा या समाश्रिता नित्यम् । साऽऽत्रावतरतु जैने, कूर्मे ह्यधिवासना देवी ॥७॥
 कही, समस्तवेयावद्यगराण सम्मद्विद्विसमाहिराण करेमि काउ० अत्रत्य० १ नोकारनो काउ० नमोऽर्हत्० स्तुति—
 सर्वे यंक्षाम्बिकाया ये, वैषावृत्यकराः सुराः । क्षुद्रोपद्रवसंघात, ते द्रुतं द्रावयन्तु नः ॥८॥

कही पत्नी उभा उभा ? नोकार पूरो गणी बेसीने ' नमुत्थुण ' कहेवो. ' जावति चेइआः० जावतकेविसाहू० नमोऽर्हत्०
 म्बवनने स्थाने ' शान्ति शान्ति निशान्त ' इत्यादि लघुशान्ति स्तव कहीने ' जयत्रीयराय ' पूरा रुहेवा. ते पत्नी स्नानजुं अभियेरु-
 जल ते वास्तु भूमिमा बने डांट्यु, दश दिक्पालोनु आहान करी वलिक्षेप करवो, अने ते पत्नी स्थापनीय शिलासंपुटो तैयार
 करवा, जो मासाद पापाणनो वनात्रवो होय तो शिलाओ पापाणनी अने इदोनो उनात्रवो होय तो शिलाओ पण इदोनो तैयार
 करवी अने वाम्नुभूमिना ४ खूणाओमा ४ अने मन्यमा ?, आम ५ खाडा शिलाओ करता कइक म्होटा खणावीने राह्या होय
 ते मर्येक म्होटा खाडाने नीचे मन्यमा अरु अरु न्हानो खाडो खणाववो आ न्हाना खाडाओमा १-१ माटीनो न्हानो कल-
 शियो (कुलड्ड) सात धान्य अने पचरत्न सहित मूरुवो, रुञ्जशिआ उपर माटीनु ढाकणु देवु अने ते उपर लग्न समय आवता शिला
 सपुटो थापरा, शिलासपुटो जे उपर नीचे ने ने शिलाओ राखीने करेला होय तेओने प्रथम स्नात्र जल वडे पखालीने पत्नी नाल
 बाला कलेशोयी शुद्ध जले अभिषेक करी केसर चदननु विलेपन करतु अने जे शिलासपुट जे खाडामा स्थापवानो होय ते त्या
 लड जवो, जो सपुटो वधारे भारे होय अने मुहूर्तना समयमां वरार जमावीने स्थिर करता लग्ननो समय निकली जवानो भय
 होय तो नीचे ढामनी १-१ शली मूरुकीने सपुटो पोतपोताना खाडामा वरावर जमावी देवा अने उवारे स्थापनानो समय आवी

पहोचे तयारे नीचेथी ढाभनी शलिओ काही लेवी. शिलासंपुटो अे वास्तवमां ५ शिलाओ छे, अने आ शिलाओनां नाम अनुक्रमे १ नन्दा, २ भद्रा, ३ जया, ४ विजया अने ५ पूर्णा छे अने आनी स्थापना अनुक्रमे १ आग्नेयी, * २ नैऋती, ३ वायवी, ४ ऐशानी, अे दिशाओना खूणाओमां अने मध्यमां करवी. मध्यमां प्रतिष्ठाप्य पूर्णा शिला उपर निम्न मुख वालो कूर्म (काचवो) अने त्रण रेखा वाली श्रेष्ठ कोडी, आ वे वस्तुओ स्थापन करवी. कूर्म बनतां सुधी सोनानो वनाववो, के जेथी वास्तु भूमिमां शल्य दोष हाय तो ते टली जाय, कूर्मने पंचामृत वडे अभिषेक करीने पछी शिला उपर स्थापनो, लग्नो समय आवे तयारे उपर्युक्त क्रम प्रमाणे ज वधी शिलाओ प्रतिष्ठित करवी अने उपर वासक्षेप नाखीने शिलाओनी प्रतिष्ठा करवी. मध्यशिला उपर कूर्म स्थापन करतां-

“ॐ ह्रौं श्रीं कूर्मं तिष्ठ देवगृहं धारय स्वाहा” आ मंत्र बोली उपर वासक्षेप नाखनो, कूर्म प्रतिष्ठा-देवगृह, प्रासाद, रथशाला, गृह आदि दरेक वास्तुना निर्माणमां थवी जोइये, जेमां कूर्म प्रतिष्ठा करवी होय ते वास्तुतुं नाम मंत्र मध्ये बोलवुं, कूर्म प्रतिष्ठित करी वासक्षेप कर्यां पछी सोभाग्य १, सुरभि २, प्रवचन ३, कृतांजलि ४ अने गरुड ५, आ पांच मुद्राओ देखाडची, पछी इरियावही पडिक्कमवा पूर्वक पूर्वोक्त विधि प्रमाणे संपूर्ण चैत्यवंदन करवुं. आ चैत्य वंदनमां छ्त्री स्तुति कला पछी-श्री प्रतिष्ठा देवतायै करेमि काउसगं, अन्नत्थ० इत्यादि कहीने १ लोगस्स सागरवरगंभिरा सुधीनो काउस्सगग करी पारीने नमोऽर्हत् कही-

* विष्णु संहितामां आग्नेयी विशानो अर्थ गृहद्वारनो जमणो भाग, आवो कर्यां छे, जेम के-
“ पुनः कृण्वेष्टकाधानं, कुर्याद् द्वारे तु कल्पिते । द्वारस्य दक्षिणे भागे, कर्तव्या प्रथमेष्टिका ॥ ”

“ यदधिष्ठिताः प्रतिष्ठाः, सर्वाः सर्वास्पर्देषु नन्दन्ति । जैनं कूर्मं सा विशतु, देवता सुप्रतिष्ठमिदम् ॥ ”

आ स्तुति रुहेवी शेष विधि प्रथम प्रमाणे करवी चैत्यवदन विधि कर्या वाद अक्षताजलि मरीने-

जह सिन्धाण पइद्दा, तिलोकचूडामणिम्मि सिद्धिपए । आचंदसूरिय तह, होउ इमा सुपइद्वत्ति ॥१॥

जह सगस्स पइद्दा, समत्थलोयस्स मज्झयारम्मि । आचदसूरिय तह, होउ इमा सुपइद्वत्ति ॥२॥

जह मेरुस्स पइद्दा, दीवससुद्धाण मज्झयारम्मि । आचदसूरिय तह, होउ इमा सुपइद्वत्ति ॥३॥

जह जंबुस्स पइद्दा, जंबुदीवस्स मज्झयारम्मि । आचदसूरिय तह, होउ इमा सुपइद्वत्ति ॥४॥

जह लचणस्स पइद्दा, समत्थउददीण मज्झयारम्मि । आचदसूरिय तह, होउ इमा सुपइद्वत्ति ॥५॥

आ मगल गायओ भणी अक्षताञ्जलि कूर्मं उपर नाखवी, स्नानकारोअे अक्षताजलि उपरान्त पुष्पाजलि पण नाखवी, ते पडी कूर्मं उपर वज्राछादन करी च्यारे वाजुमा इटो चणीने उपर शिला अयमा पत्यरु पाटियु, बाही देवरात्रु के जेयी कूर्मं उपर शिला आदिनुं दवाण न आवे.

परिच्छेद ४- शिलान्यास विधि :
वेश्मनां भर्तुरप्यथ ॥१०॥

वास्तुनां पादरूपिण्यः, शिला न्यस्ता विधानतः । चिरायुष्करवकारिण्यो, वेश्मनां भर्तुरप्यथ ॥१०॥
चिरायुष्करवकारिण्यो, तेथी शिलाओ विधि पूर्वक स्थापन करवाथी
पाया रूप गणाय छे, तेथी शिलाओ विधि पूर्वक स्थापन करवाथी

भा० दी०—शिलाओ वास्तु (घर, मंदिर आदि)ना पाया रूप गणाय छे, तेथी शिलाओ विधि पूर्वक स्थापन करवाथी

घर तथा घरस्वामीनु दीर्घायुष्य करनारी थाय छे.
शिला ४-५ अथवा ९, उपशिला ४-५ अथवा ९, निधिकलत्र ४-५ वा ९, पंचरत्न पोटली ४-५ वा ९,
सामग्री—शिला ४-५ अथवा ९, शिलापक्षे-रातुं, श्याम, नीलु अने श्वेत, ५ शिलापक्षे-रातुं, श्याम, नीलुं अने २ श्वेत
वहो ४-५ वा ९ हाथहाथनां, तेमां (४ शिलापक्षे-रातुं, श्याम, नीलु अने श्वेत, ५ शिलापक्षे-रातुं, श्याम, नीलुं अने २ श्वेत
अने ९ शिला पक्षे-रातुं, श्याम, नीलुं, काळं, आस्मानी, पीलुं अने ३ श्वेत), नेवासूत्र कोयो १, सातधानना बलिवाकला थाली १,
शुद्ध जले भरेला घडा २, अभिषेक योग्य कलशिया ४, कांसानी थाली १, वेलण १, म्होटो पाट १ (वेदीना बदलामां),
सर्वौषधि चूर्ण पडिकुं १, शिलाखंछणां वल २, रुई (दीवेट माटे) पुभो १, घसेला केसरनी वाटकी २, दीवो १, धूपघाणुं १,
गंगाजल, तीर्थजल, अक्षत, सोना-रूपा वा तांबानो कूर्म १, घृत (दीवा तथा निधिकलशने योग्य), दूध, दहि, साकर, दशांग
घप पडिकुं १, अगरवती पडिकुं १, पुष्पो सुगंधि पूजायोग्य, वासक्षेप पडिकुं १, गृहपति १, शिल्पी १, स्नात्रकार १ अने रत्न
घातु आदिनी ९ पोटलीओ.

शिलान्यासना क्रम—शिलान्यासमां दिशाक्रमने अंगे पण ग्रंथकारोमां मतभेद छे. च्यार शिलाना घणा पक्षकारो
घातु आदिनी ९ पोटलीओ.
शिलान्यासना क्रम—शिलान्यासमां दिशाक्रमने अंगे पण ग्रंथकारोमां मतभेद छे. च्यार शिलाना घणा पक्षकारो
घातु आदिनी ९ पोटलीओ.
शिलान्यास आंगेय कोणथी प्रारंभ करी ईशान कोणमां समाप्त करे छे, ज्यारे बैलानसतंत्र आदिमां ईशान कोणथी शिलान्यास

રચાવું પણ વિધાન કર છે, પવનિચારાદિ પ્રત્યક્ષારો દેવાલયના વાસ્તુમાં આપ્રેય કોળયી પ્રારમ્બ કરી મધ્યમા છેલ્લી શિલા દક્ષિણી રચાવું વિધાન કર છે, આપ્રેય પુરાણમાં ત્રિચાન્યાસનો ક્રમ મ યથી આરમ્બી ઈશાનમા સમાપ્ત કરવાનો જણાવ્યો છે, ત્રિચાન્યાસ પદ્ધતિમાં પણ ત્રિચાન્યાસનો સ્થાપના ક્રમ-પૂર્વ, દક્ષિણ, પશ્ચિમ, ઉત્તર, અને મ-ય આ પ્રમાણે જણાવ્યો છે, નવશિલા-ત્રિચાન્યાસ આપ્રેય, દક્ષિણ, નૈઋત્ય, પશ્ચિમ, તાપવ્ય, ઉત્તર, ઈશાન, પૂર્વ અને મ-ય, આ દિગ્ગાન્યયો નન્દાદિ ૯ શિલાઓ અનુક્રમે સ્થાપિત કરવી એ વિધાન કરે છે, દક્ષિણાત્મ પદ્ધતિના નવશિલાઓની સ્થાપના પૂર્વથી આરમ્બ કરીને મ-યમા સમાપ્ત કરવાનું વિધાન છે. મયાંત્ર પ્રથમ પૂર્વમા પત્રી આપ્રેય કોળયા; इत्यादि सृष्टि क्रमे आठमो ईशानमा અને નવમી શિલા મ યમા આવે છે.

અટ્ટ ત્રિચાન્યાસ ત્રિચાન્યાસ રૂપ તુરાજ છે, ત્રાસુશ્રુતિમા પ્રથમ ત્ર્યુગાઓના ચાર ચોરમ કોણો (ગાલો) કરવા, આપ્રેય તથા તાપવ્ય કોળના કોણના પૂર્વે અને નૈઋત્ય તથા ઈશાન કોળના કોણનો ઉત્તરાગ્ર કરવા, પ્રત્યેક કોણક્રમા ને ને શિલાઓ કાટક્રમા પ્રમાણે સ્થાપિત કરવો, પ્રથમ આપ્રેય તથા તાપવ્ય કોણોમાં પૂર્વે અને નૈઋત્ય તથા ઈશાન ગત કોણોમાં ઉત્તરાગ્ર ને ને ત્રિચાન્યાસ ગુણ્યો સ્થાપિત કરવા. અટ્ટ શિલા પસમા બેક વાંજો પણ સ્થાપના ક્રમ દક્ષિણાત્મ ત્ર્યુગા બાપેલો છે, તે ક્રમ પૂર્વથી પ્રારમ્બીને ગૃહિક્રમે ઈશાનમા ટેટ્ટી શિલા સ્થાપનાનો છે, પ્રથમ દક્ષિણાત્મ પદ્ધતિના શા અટ્ટશિલા અને નવશિલાના પસમા યાત્ર બેક ત્રિચાનીત કરવી પેળી છે, વાંજો ફેરફાર નવો.

ત્રિચાન્યાસના ત્રાસુશ્રુતિનો—માલ્લ ભરાના ગોદામી, રાજ્યાધિકાર આદિના મદ્યો, સાધુઓને રહેવાના મઠો, ત્રાપયો, મોદાંધો, મંત્ર ત્રાવિના ઓળોને રહેવાના વાવો, નાટકશાલાઓ, દેવમંદિરો, મધ્યમંદ્યો, ક્રિશ્નાઓ, નગરના ઘાટો

अने पारिवारिक गृहोना निर्माण समये शुभ शुद्धर्तमां प्रथम शिलान्यासनी विधि करवी जोइये.

शिलान्यास केदलो नीचे करवो ?—शिलान्यास वास्तुभूमिना उपरितन तलथी केदलो नीचाणमां करवो जोइये अे वस्तु शिल्पीगणे-सारी रीते समजी लेवा जेवी छे, अपराजितपृष्ठा ग्रन्थना निर्माण समय सुधीमां देवालय संबन्धी वास्तुमां जलान्त अथवा पाषाणान्त खात करीने कर्म, तेमज दिशा-विदिशामां स्थापनीय शिलाओनो विन्यास करवानी परिपाटी प्रचलित थई चुकी हती जे आज पर्यन्त ते प्रमाणे चाले छे. पण गृहवास्तुना शिलान्यासमां अेटळं वधुं खोदवानुं के अेटला उंडाणमां शिलान्यास करवानी आवश्यकता नथी, गृहवास्तुनी भूमिशुद्धि पुरुष प्रमाण भूमि खोदीने करवानुं विधान छे अने अेटला नीचाणमां ज शिलान्यास करवो जोइये, कदांच भूमिमां अधिक नीचे सुधी शल्य होइ तेना उद्धार निमित्ते खात वधु उंडुं थइ गधुं होय तो ते शुद्ध माटी के पत्थर आदिथी पूरीने चतुर्थांश जेटळं भरवानुं बाकी रहे त्यारे शिलान्यास करवो अेवुं विधान पण दृष्टिगोचर थाय छे.*

शिलान्यासमां वास्तुना मर्मो टालवा—देवालयना वास्तुना मानमां तेनी भींत सामेल गणाय छे, आथी देवगृहना शिलान्यासमां मर्मनी विशेष चिन्ता करवा जेवुं रहे छे, ज्यारे गृह वास्तुनुं माप भींतोनी अन्दरना भूमि भागनुं कराय छे, छतां शिलान्यासमां गृहवास्तुने अंगे पण अेनो विचार तो करवो ज जोइये. वास्तुभूमिना ६४ अथवा ८१ समान भागो करी रज्जुओ, वंशो अने महावंशोनां संपातस्थानो निश्चित करीने शिलान्यास करवो के जेथी मर्म, उपमर्मादिनो शिलावडे वेध न थाय, आ

* पुरुषांजलिमात्रे तत्, खाते वाऽखिलधामसु । पादावशिष्टे खाते वा, विन्यसेत्प्रथमेष्टिकाम् ॥१॥

प्रथम विषयनी विशेष चर्चा प्रकरणान्तरमा करेली होड त्यायी अे विषय समजी लेवो जोडये.

शिलाओनो ढाल कड तरफ ?—शिलान्यासमा शिलाओ कड दिशामा ढालती (सहेज नीची) राखवी ते पण शिलपीअे प्रथमयी न निश्चित करीने पत्री न्यास करवो, केंमके अेकवार विविधपूर्वक स्थापित कर्या पत्री शिलाने चलायमान करवी ते अशुभ-फण्दायक ठे. शिलानो दुरुवा (ढाल) पूर्व अथवा उत्तर दिशा तरफ राखवो शुभ गणाय ठे, वास्तुनुं द्वार पूर्व तरफ होय तो शिलानो ढाल पूर्वया अने उत्तरया होय तो उत्तरया राखवो. वास्तुनुं द्वार पश्चिमया होय तो शिलानो ढाल उत्तरया अने दक्षिणया होय तो पूर्वया राखयो जोडये, कारण के पश्चिम अथवा दक्षिण तरफना ढालवालो शिलाओ अशुभ गणाय ठे

शिलाभित्तिके—शिलाओनो प्रथम अभित्तिके करी पत्री ते यथास्थान प्रतिष्ठित करवी जोडये, ज्या शिलान्यास करवानो होय ने वास्तुभूमिना ईशान अथवा नैऋत कोणमा अेक चोरस वेदी बनावची, वास्तुमाने जेवडी शिलाओ होय तेने अनुसार अभित्तिकेवेदी बनावची. शिलाओ ४-५-८-९ पैकी नेटली ठे, अने तेओनुं दै-र्ग-विस्तार केडलो छे, अे तयो विचार करीने शिलाओ सारी रीते रही शके तेवा प्रमाणमा वेदी बनावीने ते उपर शिलाओ-उपशिलाओ अने कलशोनो अभित्तिके करवो. अभित्तिके सोनाना, रूपाना, श्रामाना अथवा माटीना ५ कलशो वडे करवो, ओछामा ओत्रा १ कलशयी पण अभित्तिके करी सकाय छे. गंगा, जमना, नर्मदा, सरस्वती, आदि महानदियो तथा शुभ तीर्थोना शुद्ध जलो यथालाभ प्राप्त करी अभित्तिकेना जलमा मेलवया. जलमा सर्वोपधि चूर्ण, सुवर्ण रज, सुगंधि द्रव्यो अने सुगंधि पुष्पो नाखीने ते जलना भरला म्होडा घडां उपर वंढा-छादन करी उपर हाथ देड वृहज्जान्तिनो अखड पाड योलवो अने ते पत्री ते जल वडे अभित्तिकेना कलशो भरा शिलाओ,

उपशिलाओ अने निधिकलशो वेदी उपर प्रथम यथास्थान गोठवी देवा, वेदीना अभावे लाकडानो म्होडो पाट गोठवीने ते उपर त्रांवा पीतलनी कथरोटो गोठवी तेमां शिलाओ राखीने पण अभिषेकनुं कार्य कसतुं. वधी तैयारी थइ गया पछी स्नातविल्लिस स्पपति अथवा गृहपति हाथमां जलकलश लेइने-

“ ॐ हिरण्यगर्भाः पाविन्यः, शुचयो दुरितच्छिदः । पुनन्तु शान्ताः श्रीमत्स्य, आपो युष्मान् मधुच्युतः ॥१॥ ”

आ मंत्रश्लोक बोली नन्दा शिलानो अभिषेक करे, अे ज प्रकारे प्रत्येक वार कलश भरी उपरनो मंत्र बोली अनुक्रमे ‘भद्रा’ आदि वधी शिलाओनो अभिषेक करे. शिलानी सायेज तेनी उपशिला तथा निधि कलशानो पण अभिषेक करी लेवो, वधी शिलाओना अभिषेक थइ गया पछी शुद्ध जले पखाली अने शुद्ध वस्त्रे लुंछीने शिलाओ कोरी करी उपर वसेला केसर चंदनना छांटा नाखवा, धूप उखेववो, पुष्पो चढाववां अने दिशापालोना वर्णानुसारि वर्णानां वस्त्रो ओढाडवां, ते पछी प्रत्येक उपशिला शिलायुगळो तथा निधि कलशो पोतपोताना स्थापना स्थाने पढांचाडवां, एम प्रतिष्ठा करवा माटे तैयार राखवां.

शिलान्यास करतां पहेलां नीचेना श्लांको बोलीने खाडाओमां त्यां रत्न-धात्वादिनो न्यास करवो. रत्नो, धातुओना ककडाओ, औपधिओ तथा धान्योनी चानीओ लाल वा पीला शुद्ध वस्त्रखंडोमां वांधीने राखवी, ८ पोटलीओमां दरेकमां १-१ रत्न, धातु खंड, औपधी, धान्यवानी सूकवी अने ९ मी पोटली आ वधी चीजोनी बांधवी अने मुहूर्तनो समय आने ते पहेलांज अेक अेक मंत्रश्लांक बोली आ पोटलीओ सूकवी.

शिवलान्यास अने रत्नादिन्यासना मंत्रो .

- १ ॐ इन्द्रस्तु महता दीप्तः, सर्वदेवाधिपो महान् । वज्रहस्तो गजारूढ-स्तस्मै नित्य नमो नमः ॥२॥
- २ ॐ अग्निस्तु महता दीप्तः, सर्वतेजोधिपो महान् । मेघारूढः शक्तिहस्त-स्तस्मै नित्य नमो नमः ॥३॥
- ३ ॐ यमस्तु महता दीप्तः, सर्वप्रेताधिपो महान् । महिपस्थो दण्डहस्त-स्तस्मै नित्य नमो नमः ॥४॥
- ४ ॐ निर्ऋतिस्तु महादीप्तः, सर्वक्षेत्राधिपो महान् । खड्गहस्तः शिवारूढ-स्तस्मै नित्यं नमो नमः ॥५॥
- ५ ॐ वरुणस्तु महादीप्तः, सर्वचार्यधिपो महान् । नक्रारूढः पाशहस्त-स्तस्मै नित्य नमो नमः ॥६॥
- ६ ॐ वायुस्तु महता दीप्तः, सर्वमण्डलपो महान् । ध्वजारहस्तो मृगारूढ-स्तस्मै नित्यं नमो नमः ॥७॥
- ७ ॐ कुबेरस्तु महादीप्तः, सर्वयक्षाधिपो महान् । निधिहस्तो गजारूढ-स्तस्मै नित्यं नमो नमः ॥८॥
- ८ ॐ ईशानस्तु महादीप्तः, सर्वयोगाधिपो महान् । शूलहस्तो वृषारूढ-स्तस्मै नित्य नमो नमः ॥९॥
- ९ ॐ धरणस्तु महादीप्तः, सर्वसर्पाधिपो महान् । पद्मारूढो नागहस्त-स्तस्मै नित्य नमो नमः ॥१०॥

उपरना अकयी आठ सुधीनो अंक अंक मत्रश्लोक वोलिने नीचे लखेल धातुओ औपधिओ, रत्नो अने धान्योने पूर्वोदि
८ दिशाना खाडाओमा अनुक्रमे मूकत्रा, अने छेल्लो श्लोक गोलिने मयना खाडामा यथा पदार्थो मूकत्रा. न्यसनीय रत्न धातु-
औपधि-धान्यो नीचे प्रमाणे ठे-

अनेन क्रमपयोगेन, रत्नन्यास तथोत्तमम् । पूर्वोदिक्रमयोगेन, रत्नधात्वौपधानि च ॥११॥

वज्र-वैदूर्य-सुक्ताश्च, इन्द्रनीलं सुनीलकम् । पुष्परागं च गोमेदं, प्रवालं पूर्वतः क्रमात् ॥२॥
 हैमं रौप्यं ताम्रकांस्ये, रीतिकां नाग-वङ्कौ । पूर्वादिक्रमत्तश्चैव, आयसं चैवमन्ततः ॥१३॥
 वचा बहिः सहदेवी, विष्णुक्रान्ता च वारुणी । संजीवनी ज्योतिष्मती, ईश्वरी पूर्वतः क्रमात् ॥१४॥
 यवो व्रीहिस्तथा कंगु-जूर्णाद्याश्च तिलैर्युताः । शाली सुद्धाः समाख्याता, गोघृमाश्च क्रमेण तु ॥१५॥
 भा० टी०—पूर्व दिशाथी मांडीने सृष्टिक्रमे रत्न-धातु-औषधि-बीजोनो आ क्रमथी न्यास करवो जोइये, रत्नोमां-१ हीरो,
 २ वैदूर्य (अकीक), ३ मोती, ४ इन्द्रनील, ५ महानील, ६ पुष्पराग (पुत्रराज), ७ गोमेद, अने ८ प्रवाल अे पूर्वादि दिशाना
 खादाओमां क्रमे स्थापवां. धातुओ-१ सोनुं, २ रूपुं, ३ चांदु, ४ कांसु, ५ पीतल, ६ सीसुं, ७ कथीर, अने ८ लोहडुं पूर्वादिमां
 अनुक्रमे स्थापन करवी. औषधिओमां-१ वचा (बोडावज), २ चित्रक, ३ सहदेवी, ४ विष्णुक्रान्ता, ५ वारुणी, ६ संजीवनी,
 ७ ज्योतिष्मती (मालकांगणी) अने ८ ईश्वरी (शिवलिंगी): आ औषधिओ पूर्वादिक्रमे स्थापवी. धान्योमां-१ जत्र, २ व्रीहि, ३
 कांग, ४ जूर्णा (जुवार) ५ तल, ६ शालि, ७ मग, अने ८ गेहुं अे धान्यो पूर्वादिमां अनुक्रमे स्थापवां. अने मध्य खातमां
 सर्वरत्नो, धातुओ, औषधिओ अने धान्यो स्थापवां, ते पछी त्यां शिला प्रतिष्ठित करवी. आ रत्नादिन्यास जेइली शिलाओ
 स्थापवी होय तेइला खातोमां करवो.

चतुःशिला प्रतिष्ठा :—

१. नन्दानी स्थापनामां—(?) “ॐ आधारशिले ! सुप्रतिष्ठिता भव ।” आ प्रमाणे कहीने आग्नेयकोणना खातमां

उपशिला स्थापन करी, (२) “उं पद्म ! इहाऽऽगच्छ, इह तिष्ठ, उं पद्मनिधयेनमः” एम ऋषी तेमा ‘पद्म’निधिरुद्रश्च स्थापयो, ते पत्नी (३) “उं नन्दे ! इहाऽऽगच्छ, इह तिष्ठ, उं नन्दायै नमः” ए मत्र भणी उपर नन्दाशिलानो न्यास करयो अने उपर वासक्षेप ऋषयो, सुगध द्रव्यो लाट्वा, अने नीचे प्रमाणे प्रार्थना करवी.

“ वीर्येणादिवराहस्य, वेदाथस्त्वभिमन्त्रिताम् । वसिष्ठनन्दिनी नन्दा, प्राकृ प्रतिष्ठापयाम्यहम् ॥१६॥ ”

“ सुसुहर्ते सुदिवसे, सा त्व नन्दे ! निवेशिता । आयुः कारयितुर्दीर्घं, श्रिया चाश्रयामिहाऽऽनय ॥१७॥ ”

२. भद्रानी स्थापनामा—(१) “उं आधारशिले ! सुप्रतिष्ठिता भव ।” (२) “उं महापद्म ! इहाऽऽगच्छ, इह तिष्ठ, उं महापद्मनिधये नमः” (३) “उं भद्रे ! इहागच्छ, इह तिष्ठ उं भद्रायै नमः ।” आ मत्रो वडे नैर्ऋत कोणमा उपशिला निधिकलश अने भद्राशिलाने नन्दानी जेम स्थापी वासक्षेपाटि करीने नीचेनो प्रार्थना श्लोक कहेयो.

“ भद्राऽसि सर्वतोभद्रा, भद्रे ! भद्र विधीयताम् । कश्यपस्य प्रियसुते !, श्रीरस्तु गृहमेधिनः ॥१८॥ ”

३. जयानी स्थापनामां—(१) “उं आधारशिले ! सुप्रतिष्ठिता भव ।” (२) “उं शाल ! इहागच्छ, इह तिष्ठ, उं शालनिधये नमः” (३) “उं जये ! इहाऽऽगच्छ, इह तिष्ठ, उं जययै नमः” आ मत्रो वडे-जयाने वायव्य कोणमा सुप्रतिष्ठित करीने प्रार्थना करी.

“ जये ! विजयतां स्वामी, गृहस्याऽऽस्य माहात्म्यतः । आचन्द्रार्कं यशश्चास्य, भूम्यामिह विरोहतु ॥१९॥ ”

४. पूर्णानी स्थापनामां—(१) “उं आधारशिले ! सुप्रतिष्ठिता भव ।” (२) “उं सुभद्र ! इहागच्छ, इह

पूर्णानि आङ्गमंत्रोयी पूरणानि
“ पूर्णैः पूणैश्चैतमः । ” आङ्गमंत्रोयी पूरणानि
“ ॐ पूर्णैः पूणैश्चैतमः । ” आङ्गमंत्रोयी पूरणानि
“ ॐ पूर्णैः पूणैश्चैतमः । ” आङ्गमंत्रोयी पूरणानि

तिष्ठ, ॐ सुभद्रनिघये नमः । ” (३) “ ॐ पूर्णैः पूणैश्चैतमः । ” आङ्गमंत्रोयी पूरणानि
ईशान कोणमां प्रतिष्ठित करी प्रार्थना करे,
“ त्वयि संपूर्णचन्द्राभे !, न्यस्तायां वास्तुनस्तले । भवत्वेष गृहस्वामी, पूर्णे ! पूर्णमनोरथः ॥२०॥ ”

पंचशिला प्रतिष्ठा :—
१. नन्दा—(१) “ ॐ आधारशिले ! सुप्रतिष्ठिता भव । ” (२) “ ॐ पय ! इहाऽऽगच्छ, इह तिष्ठ, पद्मनि-
घये नमः । ” (३) “ ॐ नन्दे ! इहाऽऽगच्छ, इह तिष्ठ, ॐ नन्दायै नमः । ” आ मंत्रो वडे नन्दाने आग्नेय कोणमां
स्थापन करीने नीचेना श्लोकोथी प्रार्थना करवी,
“ नन्दे ! त्वं नन्दिनी पुसां, त्वामन्न स्थापयाम्यहम् । वेदमनि त्विह संतिष्ठ, यावच्चन्द्रार्कतारकाः ॥२१॥ ”

“ नन्दे ! त्वं नन्दिनी पुसां, त्वामन्न स्थापयाम्यहम् । वेदमनि त्विह संतिष्ठ, यावच्चन्द्रार्कतारकाः ॥२१॥ ”
“ नन्दे ! त्वं नन्दिनी पुसां, त्वामन्न स्थापयाम्यहम् । वेदमनि त्विह संतिष्ठ, यावच्चन्द्रार्कतारकाः ॥२१॥ ”
“ आयुः कामं श्रियं देहि, देववासिनि ! नन्दनि ! अस्मिन्न रक्षा त्वया कार्या, सदा वेदमनि यत्नतः ॥२२॥ ”
“ आयुः कामं श्रियं देहि, देववासिनि ! नन्दनि ! अस्मिन्न रक्षा त्वया कार्या, सदा वेदमनि यत्नतः ॥२२॥ ”

२. भद्रा—(१) “ ॐ आधारशिले ! सुप्रतिष्ठिता भव । ” (२) “ ॐ महापद्म ! इहाऽऽगच्छ, इह तिष्ठ, ॐ
“ ॐ भद्रे ! इहाऽऽगच्छ, इह तिष्ठ, ॐ भद्रायै नमः । ” आ मंत्रो द्वारा नैर्कृत कोणमां
महापद्मनिघये नमः । ” (३) “ ॐ भद्रे ! इहाऽऽगच्छ, इह तिष्ठ, ॐ भद्रायै नमः । ” आ मंत्रो द्वारा नैर्कृत कोणमां

भद्रानी प्रतिष्ठा करी आ पट्टपदी वडे प्रार्थना करवी,
“ भद्रे ! त्वं सर्वदा भद्रं, लोकानां कुरु काश्यपि ! । आयुदा कामदा देवि !, सुखदा च सदा भव ॥२३॥ ”
“ भद्रे ! त्वं सर्वदा भद्रं, लोकानां कुरु काश्यपि ! । आयुदा कामदा देवि !, सुखदा च सदा भव ॥२३॥ ”
“ भद्रे ! त्वं सर्वदा भद्रं, लोकानां कुरु काश्यपि ! । आयुदा कामदा देवि !, सुखदा च सदा भव ॥२३॥ ”

“ भद्रे ! त्वं सर्वदा भद्रं, लोकानां कुरु काश्यपि ! । आयुदा कामदा देवि !, सुखदा च सदा भव ॥२३॥ ”
“ भद्रे ! त्वं सर्वदा भद्रं, लोकानां कुरु काश्यपि ! । आयुदा कामदा देवि !, सुखदा च सदा भव ॥२३॥ ”
“ भद्रे ! त्वं सर्वदा भद्रं, लोकानां कुरु काश्यपि ! । आयुदा कामदा देवि !, सुखदा च सदा भव ॥२३॥ ”

३. जया—(१) “ॐ आधारशिले ! सुप्रतिष्ठिता भव ।” (२) “ॐ शंख ! इहाऽऽगच्छ, इह तिष्ठ, ॐ शखनिधये नमः ।” (३) “ॐ जये ! इहाऽऽगच्छ, इह तिष्ठ, ॐ जययै नमः ।” आ मन्त्रो द्वारा वायव्य कोणमा जयाशिलाने प्रतिष्ठित करी जा पट्पदी वढे प्रार्थना करवी.

“गर्गगोत्रसमुद्भूतां, त्रिनेत्रा च चतुर्भुजाम् । गृहेऽस्मिन् स्थापयाम्यद्य, जया चारुचिलोचनाम्॥”

नित्य जयाय भृत्यै च, स्वामिनो भव भार्गवि । ॥२४॥”

४. रिक्ता—(१) “ॐ आधारशिले ! सुप्रतिष्ठिता भव ।” (२) “ॐ मकर ! इहाऽऽगच्छ, इह तिष्ठ, ॐ मकरनिधेय नमः ।” (३) “ॐ रिक्ते ! इहाऽऽगच्छ, इह तिष्ठ, ॐ रिक्तानि नमः ।” आ मन्त्रो द्वारा ईशान कोणमा

रिक्ताशिलाने स्थापीने आ श्लोकथी प्रार्थना करवी

“रिक्ते ! त्व रिक्तदोषत्रे !, सिद्धिसुक्तिप्रदे ! शुभे । सर्वदा सर्वदोषघ्नि ! निडाऽस्मिन् तत्रनंदिनि ॥२५॥”

५. पूर्णा—(१) “ॐ आधारशिले ! सुप्रतिष्ठिता भव ।” (२) “ॐ सुभद्र ! इहाऽऽगच्छ, इह तिष्ठ, ॐ सुभद्रनिधेय नमः ।” (३) “ॐ पूर्णे ! इहाऽऽगच्छ, इह तिष्ठ, ॐ पूर्णायै नमः ।” आ मन्त्रो वढे वास्तुना मय्य भागमा आधारशिल्या, निधिरुलश अने पूर्णाशिल्या प्रतिष्ठित करी पासे दीपक मूलीने आ श्लोको बोलीने प्रार्थना करवी.

“पूर्णे ! त्वं सर्वदा पूर्णान्, लोकान् सकुरु कारयपि ! आयुर्दी कामदा देवि !, घनदा सुतदा भव ॥२६॥”

“गृहाधारा वास्तुमयी, वास्तुदीपेन सयुता । त्वामृते नास्ति जगता-प्राधारश्च जगत्प्रिये ॥२७॥”

नवशिला प्रतिष्ठा :-
 १. नन्दा—(१) “ॐ आधारशिले ! सुप्रतिष्ठिता भव ।” (२) “ॐ पद्म ! इहाऽऽगच्छ, इह तिष्ठ, ॐ
 ॐ अग्रये नमः, ॐ शक्तये नमः ।” (४) “ॐ नन्दे ! इहाऽऽगच्छ, इह तिष्ठ, ॐ
 पद्मनिधये नमः ।” (३) “ॐ अग्रये नमः, ॐ शक्तये नमः ।” (४) “ॐ नन्दे ! इहाऽऽगच्छ, इह तिष्ठ, ॐ
 नन्दे ! त्वं नन्दिनी पुंसां, त्वात्सन्न स्थापयाम्यहम् । प्रासादे त्विह संतिष्ठ, यावच्चन्द्रार्कनारकाः ॥२८॥” ॐ

“ॐ नन्दे ! त्वं नन्दिनी पुंसां, त्वात्सन्न स्थापयाम्यहम् । प्रासादे त्विह संतिष्ठ, यावच्चन्द्रार्कनारकाः ॥२८॥” ॐ
 “ॐ नन्दे ! त्वं नन्दिनी पुंसां, त्वात्सन्न स्थापयाम्यहम् । प्रासादे त्विह संतिष्ठ, यावच्चन्द्रार्कनारकाः ॥२८॥” ॐ
 “ॐ नन्दे ! त्वं नन्दिनी पुंसां, त्वात्सन्न स्थापयाम्यहम् । प्रासादे त्विह संतिष्ठ, यावच्चन्द्रार्कनारकाः ॥२८॥” ॐ

२. भद्रा—(१) “ॐ आधारशिले ! सुप्रतिष्ठिता भव ।” (२) “ॐ भद्रे ! इहाऽऽगच्छ, इह तिष्ठ, ॐ
 महापद्मनिधये नमः ।” (३) “ॐ अग्रये नमः, ॐ शक्तये नमः ।” (४) “ॐ नन्दे ! इहाऽऽगच्छ, इह तिष्ठ, ॐ
 भद्रायै नमः ।” आ मंत्रो द्वारा दक्षिणमां भद्रशिलाने स्थापन करो आ श्लोक बोली प्रार्थना करो, ॐ
 “ॐ नन्दे ! त्वं नन्दिनी पुंसां, त्वात्सन्न स्थापयाम्यहम् । प्रासादे त्विह संतिष्ठ, यावच्चन्द्रार्कनारकाः ॥२८॥” ॐ

३. जया—(१) “ॐ आधारशिले ! सुप्रतिष्ठिता भव ।” (२) “ॐ जये ! इहाऽऽगच्छ, इह तिष्ठ, ॐ
 शंखनिधये नमः ।” (३) “ॐ निर्द्वन्द्वये नमः, ॐ खड्गय नमः ।” (४) “ॐ जये ! इहाऽऽगच्छ, इह तिष्ठ, ॐ
 जयधये नमः ।” आ मंत्रोथी नैर्द्वन्द्वय कोणमां जयनी प्रतिष्ठा करो आ श्लोक बोडे प्रार्थना करो, ॐ
 “ॐ नन्दे ! त्वं नन्दिनी पुंसां, त्वात्सन्न स्थापयाम्यहम् । प्रासादे त्विह संतिष्ठ, यावच्चन्द्रार्कनारकाः ॥२८॥” ॐ

निघये नमः।” (३) “ॐ वरुणाय नमः, ॐ पाशाय नमः।” (४) “ॐ रिक्ते ! इहागच्छ, इह तिष्ठ, ॐ रिक्तायै नमः।” आ मन्त्रो द्वारा रिक्तानी पश्चिम दिशामा प्रतिष्ठा करी—
 “रिक्ते ! त्व रिक्तदोषघ्ने !, ऋद्विवृद्धिप्रदे ! शुभे !। सर्वदा सर्वदोषघ्ने ! तिष्ठाऽस्मिन् तत्रनंदिनी ॥३१॥”
 आ श्लोक्यी प्रार्थना करवी.

६. अजिता—(१) “ॐ आधारशिले ! सुप्रतिष्ठिता भव।” (२) “ॐ कुन्द ! इहाऽऽगच्छ, इह तिष्ठ, ॐ कुन्दनिघये नमः।” (३) “ॐ चायवे नमः, ॐ अकुशाय नमः।” (४) “ॐ अजिते ! इहाऽऽगच्छ, इह तिष्ठ, ॐ अजितायै नमः।” आ मन्त्रो द्वारा वायव्य कोणमा अजिताने प्रतिष्ठित करी—
 “अजिते ! सर्वदा त्व मा, कामानामजित कुरु । प्रासादे तिष्ठ सहृष्टा, यावच्चन्द्रार्कतारकाः ॥३२॥”
 आ श्लोक वढे प्रार्थना करवी.

६. अपराजिता—(१) “ॐ आधारशिले ! सुप्रतिष्ठिता भव।” (२) “ॐ नील ! इहागच्छ, इह तिष्ठ, ॐ नीलनिघये नमः।” (३) “ॐ कुवेराय नमः, ॐ गदायै नमः।” (४) “ॐ अपराजिते ! इहाऽऽगच्छ, इह तिष्ठ, ॐ अपराजितायै नमः।” आ मन्त्रो बोधी उत्तरदिशाभागमा अपराजिताने स्थापी—
 “स्थिराऽपराजिते भूत्वा, कुरु मामपराजितम् । आयुर्दा धनदा चात्र, पुत्रपौत्रप्रदा भव ॥३३॥”
 आ श्लोके करीने प्रार्थना करवी

७. शुक्ला—(१) “ ॐ आधारशिले ! सुप्रतिष्ठिता भव ! ” (२) “ ॐ कच्छप ! इहाऽऽगच्छ, इह तिष्ठ, ॐ कच्छपनिधये नमः । ” (३) “ ॐ ईशानाय नमः, ॐ त्रिशूलाय नमः । ” (४) “ ॐ शुक्ले ! इहाऽऽगच्छ, इह तिष्ठ, ॐ शुक्लै नमः । ” आ मंत्रोत्थी ईशान कोणमां शुकाने प्रतिष्ठित करी—
“ शुक्ले ! त्वं देहि मे स्थैर्यं, स्थिरा भूत्वाऽत्र सर्वदा । आयुः कामं श्रियं चापि, प्रासादेऽत्र ममाऽनवे ! ॥३४॥ ”
आ श्लोक वडे प्रार्थना करवी.

८. सौभागिनी—(१) “ ॐ आधारशिले ! सुप्रतिष्ठिता भव । ” (२) “ ॐ सुकुन्द ! इहाऽऽगच्छ, इह तिष्ठ, ॐ सुकुन्दनिधये नमः । ” (३) “ ॐ इन्द्राय नमः, ॐ वज्राय नमः । ” (४) “ ॐ सौभागिनि ! इहाऽऽगच्छ, इह तिष्ठ, ॐ सौभागिन्यै नमः । ” आ मंत्रोत्थी सौभागिनीने पूर्वमां प्रतिष्ठित करी—
“ प्रासादेऽत्रस्थिरा भूत्वा, सौभागिनि ! शुभं कुरु । धनधान्यससृष्टिं च, सर्वदा कुरु नन्दिनि ! ॥३५॥ ”
आ श्लोकथी प्रार्थना करवी.

९. धरणी—(१) “ ॐ आधारशिले ! सुप्रतिष्ठिता भव । ” (२) “ ॐ खर्व ! इहाऽऽगच्छ, इह तिष्ठ, ॐ खर्वनिधये नमः । ” (३) “ ॐ नागाय नमः, ॐ उत्तराय नमः । ” (४) “ ॐ धरणि ! इहाऽऽगच्छ, इह तिष्ठ, ॐ धरण्यै नमः । ” आ मंत्रो वडे वास्तुना मध्य भागमां धरणीशिलाने स्थापीने—
“ धरणि ! लोकधरणीं, त्वामत्र स्थापयाम्यहम् । निर्विघ्नं धारय त्वं मे, प्रासादं सर्वदा शुभे ! ॥३६॥ ”

आ श्लोक भणी प्रार्थना करवी.

अे पत्री अभिपेक करीने तैयार राखेलो सुवर्ण, रूप्य, वा ताम्रमय कूर्म हाथसा लेइने “ उ कूर्म ! इहाऽऽगच्छ, इह तिष्ठ, उ कूर्माय नमः । ” अे मत्र वडे मध्यशिला ऊपर कूर्मनी गतिष्ठा करी वासक्षेप पूर्वक केसर चदनादिके पूजा करवी, घूप उखेवत्रो, अते—

“ सर्वलक्षणसंपन्न !, कूर्म ! भृधरणक्षम ! । चैत्य कर्तुं महीपृष्ठे, ममाज्ञां दातुमर्हसि ॥३७॥ ”

आ श्लोक वडे प्रार्थना करी कूर्म ऊपर पुष्पाजलि नाखवी. पछी वार्जिनो बगडाववा, दिग्पालोने वल्द्वान आपबु, गृहस्वामीअे यथाशक्ति याचकोने दान देबु, साधर्मिकभक्ति प्रभात्रनादिक करबु, शिल्पीनो सत्कार करवी.

शिलान्यास पछीना शुभाऽशुभ निमित्तोः—

“ चिन्यस्य चैव पुनरिष्टका च, गधोदकैः संपरिपूर्य गर्तम् ।

कृत्वा प्रसूनानि परीक्षयेच्च, निक्षिप्य चावर्तमथाक्षतानि ॥३८॥ ”

“ तदक्षिणावर्तमतीव शस्त, वाम तु निय त्वलु दुःखदत्वात् ।

शाल्यादिभिः क्षेत्रजसृत्तिकाभिस्त्रन्मध्यगर्तं परिपूर्य रक्षेत् ॥३९॥ ”

भा० टी०— उक्त विधिथी शिलान्यास करीने ते खाहाओने शुद्ध सुगंधि जल वडे भरी उपर पुपो तथा असतो नाखीने आवर्तोनी परीक्षा करवी जो ते खातोना जलमा दक्षिणावर्त उत्पन्न थाय, एटले के पुष्प असतादि सृष्टिक्रमे फरता देखाय

तो निमित्त घणंज उत्तम जाणवां, जलमां अथी विपरीत त्रामावर्त उत्पन्न थाय तो निमित्त अशुभ समजवां, परिणाम साहं नथी अग जाणी लेबुं. दक्षिणावर्त के त्रामावर्तमांथी कंडू पण निमित्त न देखाय तो निमित्त मध्यम प्रकारनां जाणवां, जो अशुभ निमित्त दृष्टिगोचर थयां होय तो शिलान्यास फरिथी शुभ गृहंत करवो जोइये.

शिला प्रतिष्ठा थया पल्ली शिल्पीअे प्रत्येक शिला उपर च्यार थरो चणी लेवा, मध्यशिलाने फरती शिलाओ अथवा इंदो चणीने चोरस कुंडीनो आकार करी उपरथी शिला ढांकवी के जेथी कूर्म उपर भार न आततां ते वचला पोलाणमां रही शके, शिला प्रतिष्ठित कर्या पल्ली चलित न करवी-थुभ गृहंतें प्रतिष्ठित कर्या पल्ली शिला चलायमान न करवी जोइये, जो चलित करे तो गृहस्वामी अने सूत्रधार-शिल्पी वंनेने मोटे अशुभ फलदायक थाय छे. आ संवन्थमां शास्त्र कवे छे के—

“प्रतिष्ठितास्ताः प्रथमं, भूतले सुस्थिताः समाः । न चालयेचालने तु स्याद्, गृहभर्तुर्बृहद्भयम् ॥४०॥”

“कंपने च भयं विद्या-देतासां स्थिरता पुनः । स्थपतेर्गृहभर्तुश्च, मङ्गलं परमं विदुः ॥४१॥”

“प्राग्दक्षिणायाश्चलने, गृहभर्तुर्महद् भयम् । भार्याचिनाशो नैर्ऋत्यां, अन्यं भीनिर्मरुद्दिशि ॥४२॥”

“गुरोश्च भयमैशान्यां, मध्यचारेऽपि तद् भवेत् । प्रथमं स्थापितानेवं, स्तंभानपि न चालयेत् ॥४३॥”

“नोद्धरेत प्रणुद्याच, विधिस्तुल्यो यतोऽनयोः । विन्यासं प्रथमं तस्मात्, कुर्यात्सम्यग्गसमाहितः ॥

शिलानां स्थपतिस्तद्वत्, स्तंभानामपि सर्वथा ॥४४॥”

भा० टी०—“शूमितलमां प्रथम सारी रीते प्रतिष्ठित करेली सग अने सुस्थित शिलाओने पाळथी चलित न करवी

જોડ્યે, એમ કરવું એ ગૃહસ્વામીને માટે ભયકારક છે, એટલું જ નહિ પણ શિલાઓને કપાયમાન કરવાથી પણ ગૃહકારકને ભય ઉત્પન્ન કરે છે. એથી વિપરીત શિલાઓની સ્થિરતા શિલ્પી તેમ ગૃહપતિ બંનેને પરમ મગલ કારક યાય છે.

અગ્નિકોણમા પ્રતિષ્ઠિત શિલાને ચલાયમાન કરવાથી ગૃહસ્વામીને ભય, નૈર્ઋત્ય કોણસ્ય શિલાને ચલાવવાથી તેની સ્ત્રીનું મૃત્યુ, વાયવ્ય કોણની શિલાને ચલિત કરવાથી શૂન્યતા તથા ભય, દેશાની દિશા અને મધ્યસ્થિત શિલાને કપિત કરવાથી ગુરુને ભય ઉપજાવે છે

એજ પ્રકારે પ્રથમ વિધિ પૂર્વક પ્રતિષ્ઠિત કરેલા સ્તંભોને પણ પોતાના સ્થાનથી વિચલિત કરવાથી અશુભ ફલ યાય છે, કેમકે શિલાન્યાસ અને સ્વયં ન્યાસનો વિધિ સમાન છે સૂત્રધાર-શિલ્પીએ પ્રથમયોજ મનને સ્થિર કરીને શિલાન્યાસ અને સ્તંભારોપ એવી સ્ત્રીથી કરવો કે પાછલથી તેને હલાવવા-ચલાવવાની આવશ્યકતા જ ન પડે. ઇતિ શિલ્પશાસ્ત્રોક્તઃ શિલાન્યાસવિધિઃ॥

શિલાન્યાસવિધિ પ્રતિષ્ઠાકલ્પોક્ત :

જે વાસ્તુભૂમિમા શિલાન્યાસ કરવો હોય તેમા પ્રથમ સ્વાત મુહૂર્ત પૂર્વક ભૂમિનું સંશોધન કરી પત્થર, ઈંટ, વાલુકા, આદિએ કરી સ્વાહો ભરવો, અને જ્યાથી ચળવાનું કામ ચાલુ કરવું હોય ત્યા સુધી આવી અગ્નિકોણ આદિ ૪ ત્રિદિશાઓ અને ૧ મધ્ય-ભાગ; આ પાંચ સ્થલોમા શિલાન્યાસ માટે ૧-૧ હાથ સમચોરસ અને ૧-૧ હાથ હડા સ્વાહા રાહી તેમા ન્યાસ વિધિ કરવી. મધ્યમાગના સ્વાહાંમા સર્વ પ્રથમ કાચગાના આલેસવાલુ રૂપાનું પત્થર યાપવું, ઉપર રૂપાનાશુ મૂકવું, તે ઉપર માટીનું શરાવલું યાપી અન્દર માટીનું ન્દાનું કૂલ્હડું મૂકવું કુલ્હડામા પંચરત્નની પોટલી, ઘૃત અને સાત ધાન્ય મૂકવા. એ પછી કુલ્હડા ઉપર બીજું

शरावळं ऊर्ध्वमुख मूकं, एज प्रमाणे चार कोणना खाडाओमां शरावळां, कुल्हाडां अने उपर वीजां शरावळां मूकवां अने वया शरावळं उपरनां शरावळांना मथारा सुथी पत्थरो, ईदोना ककडा अने चूना वडे भरी देवा, ते पळी शिला संपुट तैयार करा, ईट खाडाओ उपरनां वनावळुं होय तो वे ईदोना संपुट करा अने पत्थरलुं करावळुं होय तो शिला संपुटो पण पत्थरना वनाववा, ईट मकान ईदोनुं वनावळुं होय तो वे ईदोना संपुट करा अने पत्थरलुं करावळुं होय तो शिला संपुटो पण पत्थरना वनाववा, ईट या शिलाना, जेना संपुट वनाववा होय तेने प्रथम शुद्ध जलथी पवाली तेओ उपर कुंकुमना हाथा 'थापा' देइ वेने ईदोना अथवा शिलओना संपुट करी नेत्रामूत्र वीटळुं, ड्यारे मुहूर्तनो शुभ समय आवे त्यारे मल्येक संपुट अक एक खाडामां स्थापवो, प्रथम मध्यमां "ॐ कूर्म निज पृष्टे प्रासादं धारय २ स्वाहा" आ मंत्र बोलतां कूर्मशिला स्थापनेने मुहूर्त साचवळुं, मुहूर्त करतां गीत वार्दित्रो वगाडवां, प्रथम शिला मध्यमां, वीजी अग्नि कोणमां, वीजी नैर्ऋत्य कोणमां, चौथी वायव्य कोणमां अने पांचमी शिला ईशान कोणमां स्थापन करवी, ४ सधवा स्त्रियो कुंकुम अने अक्षतो वडे स्थापित शिलाओने सत्कार अने संघनो यथा उपर वासनिक्षेप करे, अे पळी दशदिक्पालोने वलि क्षेप करवो, देवगृह वनावनार मूत्रधार शिलपीनो सत्कार ॥ इति 'प्रतिष्ठाकल्पोक्तः' शक्ति भक्ति करवी. प्रतिष्ठागुरुअे जिनमासाद निर्माण विषयक फलना कथन पूर्वक उपदेग करवो. ॥ इति 'प्रतिष्ठाकल्पोक्तः' शिलान्यास विधिः ॥

परिच्छेद ५. चैत्यद्वार प्रतिष्ठा विधि.

चैत्यद्वारसमारोपो, विधेयो विधिपूर्वकम् । यस्माद् द्वारमुखं चैत्यं, शस्तद्वारं शुभावहम् ॥११॥

भा० टी०—चैत्यनो द्वारारोप त्रिधिपूर्वक करवो जोइये, कारण के द्वार चैत्यनु मुख छे; शुभद्वारवालु चैत्य ज शुभ-फलदायक थाय छे

मासादनु द्वार उभु करता पहला तेना अगोनो अभियेक करी अधिवासना करवा साये तेना अगोमा देवताओनो न्यास करवो, अनु नाम द्वार प्रतिष्ठा छे द्वार प्रतिष्ठानु सुहूर्त नकी करी प्रतिष्ठोपयोगी अभियेकनी औपचिओ विगेरे द्रव्यो प्रथम तैयार करी राखवा, सुहूर्तना दिवसे प्रथम मासादना द्वारपालोनु नामत्रोच्चारपूर्वक सुगन्ध द्रव्यो बडे पूजन करवु, प्रत्येक दिशाना मासादना द्वारपालो भिन्न भिन्न होय छे, माटे जे दिशानो मासाद होय ते दिशाना द्वारपालोनी पूजा करी. पूर्वीदि दिशामुख जैनमासादोना द्वारपालो अनुक्रमे १ इन्द्र २ इन्द्रजय, १ माहेन्द्र २ विजय १ धरणेन्द्र २ पद्म, १ सुनाथ २ सुर-दुदुभि, ओ नामना रे वे होय छे. माटे जे दिशामुख द्वारनी प्रतिष्ठा होय ते दिशामुख द्वारना द्वारपालुगळनी नीचे प्रमाणे नाममत्र बडे वासक्षेपे पूजा करवी.

(१) पूर्वमुखद्वारे—ॐ इन्द्राय नमः ॐ इन्द्रजयाय नमः । (२) दक्षिणमुखद्वारे—ॐ माहेन्द्राय नमः ॐ विज-याय नमः । (३) पश्चिममुखद्वारे—ॐ धरणेन्द्राय नमः ॐ पद्माय नमः । (४) उत्तरमुखद्वारे—ॐ सुनाभाय नमः ॐ सुरदुन्दुभये नमः ।

प्रथमं नाममंत्रधी पोताना जमणा हाथ तरफनी वारसाखना स्थाने अने बीजा नाममंत्रधी दावा हाथ तरफनी वारसाखना स्थाने वासक्षेप करीं द्वारपालोबुं पूजन करवुं, अे पल्ली द्वारनां अंगो-त्रे शाखाओ, उंबरो, अने उत्तरंगनें द्वार निकट मंगवी, यथास्थान गोठवी, १ सप्तधान्य, २ पंचरत्न, ३ मंगल माटी, ४ कपायछाल, ५ मूलिका चूर्ण, ६ अष्टवर्ग, ७ पंचगव्य, ८ सुवर्णरज अने ९ तीर्थजल; आ नव द्रव्यो अनुक्रमे जलमां नाखीने ते जल वडे तेमना अभिषेक करवा, अन्तमां अबोट-स्वच्छ जले करी द्वारांगोने घोई लळीने ते रक्त वस्त्रोथी दांकवां.

अभिषेक कर्यां पल्ली द्वारांगोने प्रतिष्ठा मंडपमां लाववां, जो प्रतिष्ठा मंडप बनाव्यो न होय तो द्वारनी वहार उपर चन्द्रवो वांधी त्यां तेमनी अधिवासना करवी, अधिवासनामां—

“ ॐ नमो खीरासवलद्वीणं. ॐ नमो महुआसवलद्वीणं, ॐ नमो संभिलसोईणं, ॐ नमो पयाणुसारीणं, ॐ नमो कुट्टुद्वीणं, जमियं धिज्जं पंडजामि सा मे चिज्जा पसिज्जउ, ॐ कः क्षः स्वाहा । ”

आ विद्या त्रणवार भणी द्वारांगो उपर वासक्षेप करवो, चन्दनादि सुगन्ध द्रव्यो छांटवां, पुष्पाक्षतो चढाववा, अे पल्ली उंबरा नीचे वास्तु पूजन करवुं, उंबरा नीचे मध्यभागे न्हानो खाडो करीने तेमां पंचरत्ननो न्यास करवो, उपर “ॐ” लखीने उंबरा नीचे वास्तु पुरुषाय नमः ” आ मंत्र भणी वास्तु पुरुषं पूजन करवुं, वासाक्षत नाखवां, चंदनना छांटा नाखवा.

“ ॐ वास्तुपुरुषाय नमः ” आ मंत्र भणी वास्तु पुरुषं पूजन करवुं, वासाक्षत नाखवां, चंदनना छांटा नाखवा. अने प्रथमं उंबरो, ते पल्ली लग्नो समय आवतां प्रतिष्ठाचार्यं मूर्तिमंत्र वडे अथवा प्रतिष्ठा मंत्र वडे द्वारनी प्रतिष्ठा करवी अने प्रथमं उंबरो, पल्ली जमणा हाथ तरफनी शाखा, दावा हाथ तरफनी शाखा अने उत्तरंग, आ क्रमधी द्वारांगो उभां कराववां. श्वेतसर्पप,

विष्णुकान्ता, ऋद्धिद्विद्धि, कमल, कुष्ठ, तिल, लक्ष्मणा. गोरोचन, सहदेवी अने दूर्वा; अे सर्व औपयिओ अथवा यथोपलब्ध औषधियोनी रगीन वखे वांधेळी पोडली उत्तरगे वांधवी, अने ते पळी द्वारागो उपर नीचे प्रमाणे ६ देवताओनो न्यास करवो—

“ॐ यक्षेशाय नमः” उत्तरग उपर, “ॐ त्रियै नमः” उम्वरा उपर, (१) ॐ कालाय नमः (२) ॐ. गगायै नमः

पोवाना जमणा हाथनी शाखा उपर अने (१) ॐ महाकालाय नमः (२) ॐ यमुनाये नमः अे हाया हाथनी शाखा उपर.

मत्येक देवतानो नाममत्र भणी ते ते अगो उपर त्रण ० वार वासक्षेप करी देवताओने त्या स्थापी सनिरोधन करवु अने दूर्वा चासासत वडे तेमनु पूजन करवु.

आ पळी शान्तिपत्रे वलि मनीने दिक्पालोना नाममत्रो बोलवा पूर्वक पूर्वादि दिशाओमां बलिक्षेप करवो, भगवन्तनी पूजा करवी, अने संघनी भक्ति करवी.

इति द्वारप्रविष्टा विधिः

परिच्छेद ६. हृदय प्रतिष्ठा विधि :

प्रासादहृदयस्थाने, प्रासादपुरुषाह्वयः । नरः स्वर्णमयः स्थाप्यो, हृत्प्रतिष्ठा हि सा मता ॥१२॥

भा० टी०—प्रासादना हृदय स्थानमां (आंवल सारामां) सुवर्णमय पुरुष स्थापत्रो तेनुं नाम हृदयप्रतिष्ठा छे. प्रासादपुरुष—देवसंदिग्धना शिखरे आंवलसारामां त्रांबानो कलत्र स्थापन करी. तेना उपर सुवर्णनी वनावेली पुरुषना आकारनी अक मूर्ति धातुना अथवा चन्दनना पलंग उपर सुवाडवामां आवे छे तेने ' प्रासादपुरुष ' अे नाम आपेछे छे. प्रासाद-पुरुषनुं स्वरूप अेक ध्वजाधारी पुरुषना जेनुं होय छे, तेना जमणा हाथमां कमलनुं फूल वतावनुं अने डावा हाथमां त्रण पताका वालो ध्वज देवो. डावो हाथ छातीना भागमां अडकेलो अने तेनो ध्वज खांशे अडकेलो करवो.

प्रासादपुरुषनी उंचाइनुं परिमाण प्रासादना मान प्रमाणे करनुं. प्रासादमानना ? हाथ पाछल पुरुषनुं उदयमान अर्थे आंगल राखनुं, प्रासादना मानमां अर्थ—पात्र हाथनी हानि-दृष्टि होय तो पुरुषना मानमां पण तदनुसार हानि-दृष्टि करवो उदाहरणरूपे प्रासाद ३ हाथ १ ? आंगलनो होय तो पुरुष उंचाईमां त्रे आंगलमां त्रे जव ओळो करवो.

? थी ५० हाथ सुधीना प्रासादना प्रासादपुरुषनुं प्रमाण प्रतिहस्त अर्थ आंगलना दिगाने ज राखतानुं विधान छे. प्रासादना मानानुसार मृवर्णमय प्रासादपुरुष वनावरावी प्रथम. तेनी विधिपूर्वक प्राणप्रतिष्ठा करवी अने ते पत्नी तेनी स्थापना करवी. प्रतिष्ठा :

प्रासादपुरुषनी प्राणप्रतिष्ठा आ विधिथी करवी. प्रतिष्ठा गण्डपमां अने तेना अभावमां प्रासादना मंडपमां उत्तरवेदी

करीने अथवा वो थुद पाट ऊपर मूर्धन्यमय मासाडपुरुषने स्थालया स्थापन करीने तेने सुवर्णमले अने औपधिपय जळ वडे स्नान करारु, ल्हीने वंघे दाकी मुखय वेदी अथवा भद्रपीठ 'विहासन' उपर स्थापन करी " ॐ ह्रीं आत्मन् त्वया अत्र शरीरे सन्धातन्यम् " आ मद्रारा रेचन करीने पोताना प्राणनो पुरुषना शरीरमां प्रवेश करावो, ते पंढी कला-

रिवादि तत्वानो नीचे प्रमाणे तेना शरीरमा न्यास करुयो—

- " ॐ ह्रीं फलयै नमः । ॐ ह्रीं कलाधिपतये नमः । ॐ कलाधिपाऽस्य कर्तृत्वव्यक्ति कुरु कुरु । " ॥१॥
- " ॐ ह्रीं विद्यायै नमः । ॐ ह्रीं विद्याधिपाय नमः । ॐ विद्याधिपाऽस्य ज्ञानाऽभिव्यक्ति कुरु कुरु । " ॥२॥
- " ॐ ह्रीं रागाय नमः । ॐ ह्रीं रागाधिपतये नमः । ॐ रागाधिपाऽस्य बोध कुरु कुरु । " ॥३॥
- " ॐ ह्रीं बुद्धयै नमः । ॐ ह्रीं बुद्ध्याधिपतये नमः । ॐ बुद्ध्याधिपाऽस्य अभिमानं कुरु कुरु । " ॥४॥
- " ॐ ह्रीं अहंकाराय नमः । ॐ ह्रीं अहंकाराधिपतये नमः । ॐ अहंकाराधिपाऽस्य संकल्पचिह्नत्व कुरु कुरु । " ॥५॥
- " ॐ ह्रीं मनसे नमः । ॐ ह्रीं मनोधिपतये चन्द्राय नमः । ॐ मनोऽधिपाऽस्य शब्दश्रावकत्व कुरु कुरु । " ॥६॥
- " ॐ ह्रीं श्रोत्राय नमः । ॐ ह्रीं श्रोत्राधिपतये आदित्याय नमः । ॐ श्रोत्राधिपाऽस्य रूपग्रहकत्व कुरु कुरु । " ॥७॥
- " ॐ ह्रीं चक्षुषे नमः । ॐ ह्रीं चक्षुरधिपतये रक्ताय नमः । ॐ चक्षुरधिपाऽस्य गन्धग्रहकत्व कुरु कुरु । " ॥८॥
- " ॐ ह्रीं घ्राणाय नमः । ॐ ह्रीं घ्राणाधिपतये अश्विनीभ्यां नमः । ॐ घ्राणाधिपाऽस्य वाच कुरु कुरु । " ॥९॥
- " ॐ ह्रीं गाने नमः । ॐ ह्रीं वाचाधिपतये अन्नये नमः । ॐ वाचाधिपाऽस्य वाच कुरु कुरु । " ॥१०॥

“ ॐ ह्रीं त्वगधिपतये वायवे नमः । ॐ त्वगधिपास्य स्पर्शग्राहकत्वं कुरु कुरु । ” ॥११॥
 “ ॐ ह्रीं पाणिभ्यां नमः । ॐ ह्रीं पाण्यधिपतये हन्द्राय नमः । ॐ पाण्यधिपास्य पदार्थग्राहकत्वं कुरु कुरु । ” ॥१२॥
 “ ॐ ह्रीं पादाभ्यां नमः । ॐ ह्रीं पादाधिपतये चिष्णवे नमः । ॐ पादाधिपास्य गसनोत्साहं कुरु कुरु । ” ॥१३॥
 “ ॐ ह्रीं पायवे नमः । ॐ ह्रीं पाय्वधिपतये मित्राय नमः । ॐ पाय्वधिपास्य वायूत्सर्गं कुरु कुरु । ” ॥१४॥
 “ ॐ ह्रीं उपस्थाय नमः । ॐ ह्रीं उपस्थधिपतये ब्रह्मणे नमः । ॐ उपस्थधिपास्यानन्दं कुरु कुरु । ” ॥१५॥
 “ ॐ ह्रीं शब्दाय नमः । ” ॥१६॥ “ ॐ ह्रीं रूपाय नमः । ” ॥१७॥ “ ॐ ह्रीं गन्धाय नमः । ” ॥१८॥ “ ॐ ह्रीं रसाय
 नमः । ” ॥१९॥ “ ॐ ह्रीं स्पर्शाय नमः । ” ॥२०॥ “ ॐ ह्रीं आकाशाय नमः । ” ॥२१॥ “ ॐ ह्रीं वायवे नमः । ”
 “ ॐ ह्रीं तेजसे नमः । ” ॥२३॥ “ ॐ ह्रीं अद्भ्यो नमः । ” ॥२४॥ “ ॐ ह्रीं पृथिव्यै नमः । ” ॥२५॥

नाडिदशकनो न्यास—उपरनां २५ तत्त्वोनी पुरुषां न्यास करी नीचे प्रमाणे १० नाडिओनो न्यास करवो.
 ॐ ह्रीं इडायै नमः । ॐ ह्रीं पिङ्गलायै नमः । ॐ ह्रीं सुषुम्णायै नमः । ॐ ह्रीं सावित्र्यै नमः । ॐ ह्रीं अंखिन्य
 नमः । ॐ ह्रीं कूर्माण्डिन्यै नमः । ॐ ह्रीं यशोवत्यै नमः । ॐ ह्रीं हस्तिजिह्वाय नमः । ॐ ह्रीं पूषायै नमः । ॐ ह्रीं
 अलम्बुषायै नमः ।

वायुदशकनो विन्यास—ॐ ह्रीं प्राणाय नमः । ॐ ह्रीं अपानाय नमः । ॐ ह्रीं समानाय नमः । ॐ ह्रीं उदा-
 नाय नमः । ॐ ह्रीं व्यानाय नमः । ॐ ह्रीं नागाय नमः । ॐ ह्रीं कूर्माय नमः । ॐ ह्रीं कृकलासाय नमः । ॐ ह्रीं

त्रैलोक्याय नमः । ॐ ह्रीं धनजयाय नमः ।

ए प्रमाणे ग्रामादपुरुषमा २५ तत्त्वो, १० नाडी, अने १० पवनोतो न्याय करी विधिकारं गन्ध. पुष्प. अश्वत्थद्विधी तेनी पृना करी '५ मुद्राओ देवाडवी

नियेशन—ग्रामाद पुरुषमा प्राणप्रवेग्य कराव्या पछी शचीन विधि प्रमाणे आवलमारामा पलंग ढाली, ते उपर सोनानो म्यानो जयमा नेउटे श्रावानो कुंभ स्थापन करवो, तेने मधु अने घृत वडे भरी तेमा पचरस नाखी तेज जातिनी घातुना दोरुणाची दाकी, तेने चन्दनादि सुगंध पदार्थोनुं विलेपन करवु. पछी श्वेत रत्नपुगळ पहारानी, ग्रासादपुरुषनी ते उपर स्थापना करपी, एतु निर्माणरुलिका-प्रतिष्ठा पद्धतिमां विधान छे पण आ विधि आजकाल प्रचलित नथी.

अपराजितपृन्नामा ग्रामाद पुरुषने घृतपूर्ण पात्र उपर त्रामाना पलंगमां मुत्राढवानुं अने पलंगना ४ पायाओ पासे ४ निधि कल्प्यो स्थापयानु विधान म्युं ते प्रमाणे पण आज्ञे शिल्पिओ करता जणाता नथी

जानमाननी प्रचलित पद्धति प्रमाणे प्रथम त्रामाना कलशियामा घृत भरीने घणा खग कारीगरो तेना उपर त्रामानुं ढाकणुं देइने पर करी दे ते ज्यांरं तेंडलाको एम ज दाकी दे छे. पछी ते घृतकल्प्य मारा मुहूर्ते आवलसाराना गर्भमा मूर्तीने तेने उपरची दाकी दे ते अने पाठलथी ते उपर चन्दन्तना पलगमा ग्रासाद पुरुषने पोढाडे छे

पलंग सोनानो, स्थापानो, त्रामानो अथवा चंदननो वनामनी, पलंगनुं परिस्रण पुरुषता माननी दोढु लातु, अने लंमाडथी अर्थ पवोतु करुं, पलग रेशमनी दोरीनी वणी उपर रेशमी गादी तकिया वीछावीने शुभ ममयमा “अर्हदाजया प्रासाद-

स्थितिपर्यन्तं त्वयाऽत्र स्थातव्यम्” आ मंत्र बोली प्रासाद पुरुषने पलंग उपर पोढाडवो, अने ‘संनिधापनी’ मुद्रा देखाडी संनिधापन करुं.

प्रासादपुरुषनुं, मस्तक प्रासादने पछवाडे अने पग आगल द्वारनी दिशामां आवे एवी रीते शयन करावतुं, उपर वासक्षेप करवो, चन्दनादि सुगन्ध पदार्थो छांटया, उपर श्वेत वस्त्र ओढाडतुं, पासे भूपरीप मूकवा, अने पछी ते गर्भने उपरना. थर वडे हांकी देवो.

आ प्रसंगे पण मंगलगीत चादित्रादिना स्वरोथी उरसवतुं ह्यय दीपावतुं, भूमधाम करवो, विधि करनारतो सत्कार करवो.

परिच्छेद ७, श्री, पादलिखसूत्रिप्रणीतः प्रतिष्ठाविधिः ।

प्रतिष्ठाविधिरादिष्टोः निर्माणकल्पाभिधे । ग्रन्थे मोऽत्रोद्धृत. पाद-लिखसूत्रिमतानुगः ॥ १३ ॥

सा० टी०—निर्माणकृत्काम नामक ग्रन्थमात्रे विधिज्ञो आदेश करेलो छे ते पादलिखसूत्रि मंसत विष्णु प्रतिष्ठाविधि अही उच्यते छे, आ विष्णुप्रतिष्ठा-निमित्ते प्रथम वे-मण्डपो रनामया, एक अधिवासा मंडप अते नीजो स्नानमंडप मण्डप निर्माण विधि—प्रतिष्ठा मण्डप रनामयानो कार्यारम्भः प्रतिष्ठाकाररुत्ने चन्द्राल पदोचतु होय तेना शुभ मूर्हते नि शुभ लग्ना रुग्णो जोखे

मण्डप तथा चेद्विज्ञानी रचयताः अने परिमाण—ज्या नीतरागढनी प्रतिष्ठा, करवी होय. त्या एरुमो हाथ जेदली भूमिने तयगापंरु नुद करीने मंगल स्थोथी आरुपंरु रनागी तेमा, उपर्युक्त वे मंडपो रनामया अने तयार यता विधिपर्यंत तमा मयन रुग्णो प्रतिष्ठा मंडपनी रचना यमचोगम तथा चतुर्भुज अने तंती लम्बाई पहोलाइतुं माप प्रतिष्ठाप्य प्रतिमाना माप उपर्यधी निश्चित थाय ३ रानी उंचाई ण प्रतिष्ठाप्य प्रतिमाना उंचाई माये संग्रय रागे छे प्रतिष्ठाप्य प्रतिमाना उंचाई जो १-२ अथवा ३ हाथनी होय तो तेने योग्य प्रतिष्ठा मंडप अनुक्रमे ८-०-१० हाथ लामो-पहोलो होयो जोडये अने प्रतिष्ठा ४-१-६-७-८ तं ९ हाथनी उनी होय तो प्रतिष्ठा मंडप अनुक्रमे १२-१४-१६-१८-२०-२२ हाथ लामो-पहोलो होयो तोदये. रीना मत प्रमाणे १-२-३-४-५-६-७-८-९ हाथनी प्रतिमाने योग्य मंडप अनुक्रमे १२-१४-१६-१८-२०-२२-२४-२६-२८ हाथनी अनुक्रमे हाथ छे. नर हाथनी म्होटी प्रतिष्ठा होती नवी, तेवी २८ हाथनी म्होटी प्रतिष्ठा मण्डप

पण विहित नथी.

प्रतिष्ठा मंडपथी पूर्व अथवा ईशान दिशांमां एक स्नान मंडप पनावचो जोइये, स्नान मंडपनी लंवाई-पहोलाई. प्रतिष्ठा मंडपना करतां अडधी होवी जोइये.

॥ २० ॥

मण्डपनां तोरणोनी उंचाई—

मण्डपमां स्थापित थनार प्रतिमा जो ?-२ या ३ हाथनी होय अने मंडप तेने अचुरूप बनवेल होय तो तेनां तोरणो अनु-क्रमे ५-६ या ७ हाथ उंचां होथां जोइये. कदापि प्रतिमा ४-५-६ पैकीना कोई मापनी होय तो तोरणो ७ हाथ ८ आंगल उंचां अने प्रतिमा ७-८-९ हाथनी होय तो तोरणो ७ हाथ ? २ आंगल उंचां राखवां. तोरणोनी उंचाई एज मंडपनी उंचाई समजवानी छे.

पूर्वादि दिशानां तोरणो अनुक्रमे वट, उंबर, पारमपीपल, अने पीपलीनां होवा जोइये. गात्रोगां आ तोरणोनां नामो अनु-क्रमे ? शान्ति, २ भूति, ३ वल अने ४ आरोग्य ए प्रमाणे ललेलां छे.

तोरणो उपर श्वेत अथवा विविध रंगना ध्वजो लगाववा अने ध्वजानी पारमे कमळवणे (गुलाबी), श्वेत, लाल, नीली, पीली, आदि अनेक रंगनी पताका (छोटीध्वजा) ओ रोपवी.

पूर्वादि द्वारोनां तोरणोनां ध्वजो अनुक्रमे ? धर्मध्वज, २ मानध्वज, ३ राजध्वज अने ३ सिंहध्वज ए नामांशी प्रसिद्ध छे. प्रतिष्ठा मंडपने रंगीन पुष्पमालाओ रेशमी वस्त्रना चंद्रवाओ तथा विविध रंगोमां रंगावेल मंत्राड वस्त्रांना पडनाओ वंडे

शुणगावो, मंडपना शुणगावमा कालारगता उखोनो उपयोग न करवो, तेमज तेना पडदाओमा उपसर्ग अथवा उपद्रवोना भयजनक दृश्यो न नतावना तीर्थक्षोना कल्याणक प्रसंगो. प्रमगने अनुरूप मंगलग्रचक अने आह्लादजनक चित्रो अने प्रसिद्ध तीर्थस्थानोना चित्रपटो देवाडवा लाभदायक होय छे.

वेदीरचना

मण्डप तैयार धवा आवे तयारे तेना मध्यभागमा एकसुन्दर वेदी वनावची वेदीने अष्टमगल आदिकनां शुभचित्रोयी सुसोमित वनावची जोइये अने ते मंडपने अनुरूप परिमाणनी होपी जोइये, प्रतिष्ठाकल्पोमा १ नन्दा, २ मुनन्दा, ३ प्रबुद्धा, ४ सुप्रभा, ५ सुमगला, ६ कुमुदमाला, ७ विमला अने ८ पुण्डरीकिणी, आ नामोथी आठ प्रकारनी वेदियोनु निरूपण कर्युं छे

(१) एक हाथ चोरस अने चार आगल उची वेदीने 'नन्दा' कहे छे, (२) ते हाथ ममचोरस अने आठ आगल उची होय ते वेदी 'मुनन्दा' नामथी ओलवाय छे, (३) त्रण हाथ ममचोरस अने बार आगल उची वेदीनुं नाम 'प्रबुद्धा' कहवाय छे, (४) चार हाथ समचोरस तेम सोल आंगल उची होय ते वेदी 'सुप्रभा' ए नामथी ओलवाय छे, (५) पाच हाथ ममचोरस अने वीथ आगल उची वेदी 'सुमगला' ए नामथी प्रतिष्ठाकल्पोमा प्रसिद्ध छे, (६) छ हाथ समचोरस अने चोरीस आगल उची वेदीनुं नाम 'कुमुदमाला' छे. (७) सात हाथ ममचोरस अने अठावीस आगल उची वेदी 'विमला' नामनी होय छे अने (८) आठ हाथ समचोरस अने नन्नीस आगलनी उचाईवाली वेदीनुं नाम 'पुण्डरीकिणी होय छे.

शुभ आय लाभमा माटे वेदियोना उपर्युक्त मापमां एक एक आंगलनी वृद्धि करी शक्याय छे

आचार्य श्री पादलिप्तग्रिणी माते वेदियोतुं स्वरूप उपर जणाव्या प्रमाणे छे. पाठलना प्रतिष्ठा कल्पोमां वेदियोतुं माप अने स्वरूप जुदा प्रकारतुं पण जोवाय छे. तेतुं कारण प्रतिष्ठा मंडपतुं रूपान्तर थंयुं ए छे. पादलिप्तग्रिणीए प्रतिष्ठामंडपने 'अधि-वासनामंडप' कथो छे, एनो अर्थज ए छे के ते मंडप अधिवासना अने प्रतिष्ठानी खाप क्रियाओने माटे ज वनावातो, तेमां प्रतिष्ठाकारक आचार्य, शिल्पी अने इंद्रादिक ४ स्नात्रकारो ज जता अने प्रतिष्ठा संबन्धि कार्यविधि करता-करावता. प्रतिष्ठा मंडपना मुख द्वार आगल प्रेथको माटे जुदो सभामंडप वांधवामां आवतो; कालान्तर आ चतुर्मुख प्रतिष्ठामंडपतुं स्थान आज-कालमां वनता एक दिशापरक त्रिद्वार अने पंचद्वार मण्डपोए लीथुं, समचोरसने वदले लम्बचोरस अने मापमां उक्त उत्कृष्ट ए ज कारणथी वेदिओ पण मध्यभाग छोडीने सामेनी भीतनी पासे पर्वोची गइ अने पोतातुं समचोरस रूप छोडीने लम्ब-चोरस थवा मांडी. आ स्वरूपपरिवर्तन 'अंजनप्रतिष्ठा' अने 'स्थापनप्रतिष्ठा'नो भेद भूलाशपी थंयुं छे. 'स्थापनाप्रतिष्ठाने माटे मंडप अने वेदीतुं आ परिवर्तितस्वरूप थले स्वीकार्य होय पण 'अंजनशलाका प्रतिष्ठा'ना प्रसंगे तो मंडप अने वेदी शास्त्रोक्त रीतथी ज वनावतो जोइये.

वेदी कया उपादानोधी वनावती? ए विषे श्री पादलिप्तग्रिणीए कहू पण सूचन कर्युं नथी, छतां पाठलनां विधिग्रंथोमां वेदी शुद्ध जल अने शुद्ध माटीथी वनावेली काची इंद्रोनी वनाववाना उल्लेखो मले छे, तेथी वेदी शुद्ध रीते वनावेली काची इंद्रोनी

ज ननाचची जोड्ये.

वेदीना मृगाओमा रोपवानी खीलियो—

वेदीना ४ मृगाओमा राह्यगादि वणिनिरुत पलाश, रड, ऊंर अने खेजडी, ए न्यारनी ४ खीलियो घडाचीने रोपवी जो प्रतिष्ठा करामनार गृहस्थ नालग होय तो पलाशनी, धनिय होय तो रडनी, वैश्य होय तो ऊंरगानी अने शूद्र होय तो खेजडीनी खीलियो योग्य गगाय, अथवा गर्व रणने गायनी खीलियो योग्य होय ते, न्यारे खीलियो एरु ज इंधनी होड गाठ निनानी, फाट, रण अने पोल निनानी होवो जोड्ये, खीलियोने रुष्ट-पत्थर अथवा लोहची न ठोकणी, पर्ण तांबा, रूपा, मोना के गीजा सोड शुभ घातुना ननेला साधकची ठोकणीने रोपची जाड्ये

मडपनी लीपाई-पोताई—

मण्डप अने वेदी तैयार थड जाय त्यार मंडपने गौर अने घोली माटी खडी अथवा गोर माटीनी गारची लीपवी जोड्ये, गारमा सुगन्धी जल, यक्षकंदम नाखीने सुगन्धी घनावची.

वेदीने पण खडी अथवा चूनाना वोलथो पोतची, घोलमा यक्षकंदम उपगत, पचर-ननु चूर्ण अने सुवर्णनी रज नाखीने एक-रस करचो. वेदीने पोताची तैनी मीतो उपर चारे गंडुए मागलिक चित्रो रुढावची.

प्रतिष्ठोपयोगी सामग्री

मडपो वनाचीने जा प्रमाणे प्रतिष्ठोपयोगी सामान लावचो. ८ स्नपनकंडशो—सीना, रूपा, त्रात्रा अथवा माटीना।

४ आच्यकुंभो (प्रतिमाना च्यार विदिशाकोणोमां स्थापणाना) । ? स्थपतिकुंभ । धान्यवर्ग—ज्व, व्रीहि, गहुँ, तल, अडद, मग, बाल, चणा, महर, तूत्र, शणवीज, नीवार (वंटी), शामो. आदि । रत्नवर्ग—हीरा, सूर्यकान्त, नीलम, महानीलम, मोती, पुखराज, पद्मराग (माणिक), वैदूर्य (अकीक), आदि । लोहवर्ग—सोनुं, रूणुं, त्रांनुं, कृष्णलोह, जशद, पीतल, कांसुं, सीसुं, आदि । कपायवर्ग—चड, उंवर, पीपल, चंपो, आशोपालव, कदंब, आंवो, जांत्र, वकुल (बोलसिरी), अर्जुन, पाडल, वेत्र, पलाश, आदि (नीछाल) । सृत्तिकावर्ग—उद्देहीना राफडानी, पर्वतना शिखरनी, नर्दाना त्रे कांडानी, महानदीना संगमनी, डाममूलनी, चिख्यमूलनी, चोहटानी (चौटानी), हाथीदांतनी, वृषभंगनी, राजद्वारनी, पद्मसरोवरनी अने एकवृक्ष आदिनी जुदी जुदी माटी । पानीयमार्ग—गंगा-यमुना-मही-नर्मदा-सस्वती-तार्पी-गोदावरी-आदि नदिओ अने समुद्र, पद्मसरोवर तथा ताग्रपर्णी नदीसंगम आदि जलाशयोलु पाणी. औषधिवर्ग—सहदेवी, जया, विजया, जयन्ती, अगगजिना, त्रिणुकान्ता, शंखपुष्पी, बला, अतिबला, हेमपुष्पी, विशाला, नाकुली, गंधनाकुली, महा, वागती, शनवरी, मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीरकाकोली, कुमारी भृशंगणी, चक्रांका, मोरशिया, लक्ष्मणा, दूर्वा, दर्भ, पतंजारी, गोरभा, रुद्रजटा, लज्जालु, मेपशंगी अने ऋद्धिवृद्धि, यादि औषधिओ । अप्रकवर्ग—वज, लोभ जेटीमधु, कूठ, देवदारु, त्रसपूल, ऋद्धिवृद्धि अने शतावरी, ए ८ औषधिओ । अप्रकवर्गद्वितीय—मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीरकाकोली, जीवक, वृषभक, नसी अने महानली, ए बीजी ८ औषधिओ. सर्वौषधिवर्ग—प्रियंगु, सुगंधीनालो, आंबला, जांचत्री, हलदर, त्रिषिपणिक (पाटवण), नागरमोथ अने कूठ आदि सर्वौषधि । गन्धवर्ग—शिलारस, कूठ, जटामांसी, पुरमांसी, श्वेतचंदन, अगार, कर्पूर, नखला अने

પૃતિક્રેશા આદિ ગન્ધો । વામ—શ્વેતચંદન, કેમર, ઝંઘૂ (ગાસ)થી વનેલ વામચૂર્ણ અર્થાત્ વામક્ષેપ । મુદ્રિકાઓ—
 (ગ્રાચાર્ય-સ્ત્રાદિનિધિકાગ્યોગ્ય) । મીઠાલઘુલો (ઝાકળયોગ્ય) । રક્તસૂત્ર (લાલ રંગે રંગેલ સૂત્ર અથવા ગેવાસૂત્ર) । ઝન
 કાતેલી । લોહની મુદ્રિકા । ઋદ્ધિવૃદ્ધિસહિત ઝાકળો । જવની માલાઓ । તરાકો (પૂતરાકો સુત્રની કોઠડી
 મરેલા) । મેનશિલ । ગોરોચન । શ્વેતસર્પપો (અથવા પીલા સર્પપો, અર્ચ તથા રથા પોટલીયોગ્ય) । ઘોલી પહેડી નં ૨ ।
 નન્યાચર્તના માટલાનુ આગટન વસ્ત્ર (શ્વેત) । પ્રતિમાને પહડો કરવાનુ વસ્ત્ર । ફુટકર વસ્ત્રો (નીલ પીત રક્ત આદિ
 રાગના) । ઘટ અને ઘટકાઓ । ઘુપચાણા । કાંસાની વાટકી । સોનાની સલી । આરીસો
 (દર્પણ) । શુભફલવર્ગ—નાલિયેર, વીજોરાં, કેલા, નારગી, આવા કેરી, જાંઘુ, કોહલા, વેતાક, આવલા, વોર, આદિ શ્રેષ્ઠ ફલો ।
 સોપારિઓ । નાગરવેલના પાનો । ૧૦૮ માટુકા પકાઓ । ૧ સેઈ અલંકાર ચોખા—શેલકાઓ, અને વિવિધ
 ફૂલો । इत्यादि प्रतिष्ठा मामग्री पुष्कल एकत्र करी उत्तम वेदिका उपर राखमी
 ऊत्सव क्रिया

(૧) મહાપ્રતિમા પ્રવેશ—પ્રતિષ્ઠાત્સવના પ્રથમ દિવસે સર્વ પ્રથમ મહાપત્ની પ્રતિષ્ઠા અને વેદીનુ પૂજન કરીને તેમાં
 પ્રતિમા પ્રવેશ કરાવવો તે માટે પ્રથમ પ્રતિષ્ઠાચાર્ય ૪ સ્નાનકારોની સાથે પ્રતિષ્ઠામહાપના પૂર્વ દ્વારે જાને—
 ૧—“ૐ ન્યયોગ્યાત્મને સુરાધિપતોરણાય નમઃ ।” આ મત્ર વોલી તોરણ ઉપર વાસાક્ષત વાલે, સ્નાનકારો
 જલ-ચંદનાદિક ઝાટે, પુષ્પો ચઢાવે અને ધૂપ ઉલ્લેખે .

२—“ ॐ पूर्वद्वारव्यवस्थिताय धर्मवजाय नमः । ” आ मंत्र भणी ध्वज उपर,
३—“ ॐ मेघाय नमः ” आ मंत्र वडे डावा हाथ तरफनी वार शाखा उपर अने
४—“ ॐ महामेघाय नमः ” ए मंत्रथी जमणा हाथ तरफनी वार शाखा उपर त्रण वार वासाधत नाखे, स्नात्र-

कारो नल-चन्दन-पुष्पादि चढावे.
ए पछी प्रतिष्ठाचार्य दक्षिणद्वारे जंइ उपर प्रमाणे ज-तोरण, ध्वज अने शाखाना मंत्रो वडे ते ते उपर वासक्षेप करे, स्नात्र-
कारो जलचन्दनादि चढावे. ए पछी दक्षिणद्वारे जइ त्यां प्रतिष्ठा करे, तेना मंत्रो नीचे प्रमाणे—
दक्षिणद्वारना प्रतिष्ठायमंत्रो—१ “ ॐ उदुम्बरात्मने धर्मराजतोरणाय नमः । ” २ “ ॐ दक्षिणद्वारव्यव-
स्थिताय मानध्वजाय नमः । ” ३ “ ॐ कालाय नमः । ” ४ “ ॐ नीलाय नमः । ”

ए पछी पश्चिमद्वारे जइ प्रतिष्ठा करे तेना मंत्रो.
१—“ ॐ अद्वत्थात्मने स्मलिलाधिपतोरणाय नमः । ” २—“ ॐ पश्चिमद्वारव्यवस्थिताय गजध्वजाय
नमः । ” ३—“ ॐ जलाय नमः । ” ४—“ ॐ अजलाय नमः । ”

ए ज रीते उत्तरद्वारे जइ प्रतिष्ठा करे तेना मंत्रो
१ “ ॐ प्लक्ष्मात्मने यक्षधिपतोरणाय नमः । ” २—“ ॐ उत्तरद्वारव्यवस्थिताय सिद्धध्वजाय नमः । ” ३—
“ ॐ अचलाय नमः । ” ४—“ ॐ लुलिताय नमः । ”

ए पछो प्रतिष्ठाचार्य स्नात्रकारोनी साथे मूलनायरु प्रतिमानु मुख जे दिशा संमुख राखवानु होय तेना सामेनी^१ दिशाना द्वारायी मण्डपमा जइने “ॐ भूरसि भूतधात्री सर्वभूतहिते विचित्रवर्णरत्नकृते देवि ! भूमिशुद्धिकुरु २ स्वाहा ।” आ मंत्रथी भूमि उपर त्रण वार वासक्षेप करे, स्नात्रकारो जल, चन्दनादि छाटे, पुप चढावे, धूप उखेवे, वेदीनी च्यारे तरफ १००-१०० हाथनी अन्दर अपवित्र रस्तु ‘लोही, मांस-हाडकुं मल-मूत्रादि होय तो दूर करावी भूमिशुद्धि करे.

ज्या पूर्वप्रतिष्ठित पंचतीर्थी जादि प्रतिमा देववंदनादि निमित्ते स्थापवी होय त्या सिंहासनादि स्थापन करीने ते उपर-

“ ॐ चतुर्भुवदिव्यसिंहासनाय नमः । ” ए मंत्रथी वासक्षेप करवो.

ज्या नमीन प्रतिष्ठाप्य प्रतिमाओ स्थापित करानो होय ते वेदी उपर “ ॐ अर्चणीठाय नमः । ” आ मंत्रे वासक्षेप करी मढप प्रतिष्ठानुं कार्य पूर्ण करतु.

मंडप प्रतिष्ठा थया पछी शुद्धपणे तैयार करावेल अने घण्टाकरणना मंत्रथी २१ वार अथवा ७ वार अभिसंमन्त्र करीने तैयार राखेल गोलनी ५ सेर सुवडी घालकोने वहेंची देनी,^१

उपर प्रमाणे विधि सहित मण्डप प्रतिष्ठा करी शुभ समय जोड वेदी उपर नवीन प्रतिमाओ पूर्वाभिमुख अथवा उत्तराभिमुख स्थापन करी, अने पूर्वप्रतिष्ठित प्रतिमानो स्थापना सिंहासन उपर करी. जो स्थिर प्रतिष्ठा होय अर्थात् प्रतिष्ठाप्य प्रतिमा सदने माटे त्या ज स्थापित रहवानी होय तो तेनी नीचे पचरत्ननी पोडली कुंभकारचक्रनी माटी महित प्रथम स्थापीने पछो-

^१ आ विधान पाठलिहोर नथो त्रता वंतेमातरुते न युनिक विधिओना लेखयी करतु होइ लब्धु ठे

प्रतिमानी स्थापना करवी. पण प्रतिष्ठा जो 'चल' होय, एटले के प्रतिष्ठा थया पछी प्रतिष्ठाप्य प्रतिमा त्यांशी चीजे लेह जवानी होय तो तेनी नीचे वाम भागनी तरफ समूले डोभ अने नदीनी पवित्र बालुका स्थापन करवी. ते पछी प्रतिष्ठानार्थे नवां वन पहेरी स्वात्रकागे साथे मंगल निमित्ते नीचे प्रमाणे चैत्यवंदन करचुं अने शान्ति निमित्ते देवताओना कायोत्सर्ग करवा.

मूलनायकनो नमस्कार—चैत्यवंदन कही, नमुत्थुणं, अरिहत चैद्याणं करेमि कउस्सगं वंदण वत्तिभा० अन्नत्थ० ? नोकारनो काउसग करी, नमोऽहंत्वं० कही, मूलनायकनी स्तुति कहेवी. मूलनायकनी स्तुति याद न होय तो— अहंस्तनोतु स श्रेयः—श्रियं गद्दधानतो नरैः । अप्येन्द्री सकलाऽत्रैद्वि, रंहसा सहसौच्चत ॥ १ ॥

ए स्तुति बोलवी. पछी लोगसस० सबलोए० अन्नत्थ० ? नोकारनो काउसग द्वितीया स्तुति नीचेनी पण कही शकाय छे— ऊमिति मन्ता गच्छा—सनस्य नन्ता सदा यदंद्दिभ्र । आश्रीयते श्रिया ते, भवतो भवतो जिनाः पान्तु ॥२॥

पछी पुक्खखर्दीवड्डे० मुअसस भगवओ करेमि का० अन्नत्थ० ? नोकारनो काउ० वृतीया स्तुति नीचेनी पण कही शकाय. “ नवनत्वयुता त्रिपदी—श्रिता रुचिज्ञानपुण्यशक्तिमता । वरुणर्मकीर्तिनिशा-नन्दाऽऽस्या जैनगीर्जीयात् ॥३॥

पछी भिद्धानं. बुद्धानं, पूर्ण कर्हीने श्रीगान्तिनाथ आराधनार्थं करेमि काउसगं, वंदणवत्तिआए० अन्नत्थ० ? लोगसस सागरवरंगंधीरा सुधीनो काउसग करी पारी नमोऽहंत्वं० स्तुति—

“ श्रीशान्तिः धुनशान्तिः प्रगान्तिकोसावशान्तिमुपशान्तिम् । नयतु सदा यस्य पदाः, सुशान्तिदाः संतुपन्ति जने ॥ ४ ॥

पत्नी श्री श्रुतदंततायै करेमि काउसगं, अन्त्य० १ नो० का० नमोऽर्हत् कही स्तुति—
“वद वदनि न चाग्वादिनि” भगवति । कःश्रुतसरस्वत्तिगमेच्छुः । रगत्तरङ्गमतिथर-नरणिस्तुभ्य नम उतीह ॥५॥

पत्नी श्रीश्रान्तिदेवतायै करेमि काउसग, अन्त्य० १ नो० काउ० करी, नमोऽर्हत् स्तुति—
पत्नी श्रीश्रान्तिदेवतायै करेमि काउसग, अन्त्य० १ नो० काउ० करी, नमोऽर्हत् स्तुति—
श्री चतुर्विधसघस्य, शासन्नोत्ति कारिणी । शिवशान्ति करी भूयात्, श्रीमती शान्तिदेवता ॥ ६ ॥

पत्नी श्री शासनदेवतायै करेमि काउसग, अन्त्य० १ नो० काउ० करी, नमोऽर्हत् स्तुति—
श्री चतुर्विधसघस्य, शासन्नोत्ति कारिणी । शिवशान्ति करी भूयात्, श्रीमती शान्तिदेवता ॥७॥

“उपसर्गवलयविलयन-निरता जिनशासनावनेकरताः । इतमिह समीरितकृते, स्युः शासनदेवता भवताम् ॥७॥
पत्नी श्रीभजनदेवतायै करेमि काउसग, अन्त्य० १ नो० काउ० करी नमोऽर्हत् कही स्तुति—

“जानादिगुणयुताना, नित्य स्वाध्यायस्रयमरतानाम् । विदधातु भवनदेवी, शिव सदा सर्वसाधूनाम् ॥८॥
पत्नी क्षेत्रदेवतायै करेमि का० अन्त्य० १ नो० का० नमोऽ० स्तुति—

यस्याः क्षेत्र समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रिया । सा क्षेत्रदेवता नित्य, भूयान्नः सुखदायिनी ॥९॥
पत्नी अभिकायै करेमि का० अन्त्य० १ नो० का० नमोऽर्हत् स्तुति—

“अम्बा बालाङ्किताङ्गाऽसौ, सौख्यरव्याति दधातु नः । माणिभ्यरत्नालङ्कार-चित्रसिंहासनस्थिता ॥१०॥
पत्नी अद्भुतायै करेमि का० अन्त्य० १ नो० काउ० करी नमोऽर्हत् स्तुति—

“चतुर्भुजा तडिडर्णा, कमलाक्षी वरानना । भद्र करोतु संघस्या-ऽद्भुता तुरगवाहना ॥ ११ ॥

पृथ्वी सगरसत्वेसावच्यवराणं संतिगराणं सम्मद्विद्विसमाहिगराणं कण्ठमिः काउ० अन्नत्थ० ? नोकार० काउ० नमोऽर्हत्०
कही स्तुति—

संघेऽत्र ये गुरुगुणौघनित्रे जुवेयावृन्धादिकृत्यकरणेकनिबद्धकक्षाः ।

ते शान्तये सह भवन्तु सुराः सुरीभिः, सद्दृष्टयो मित्रिलविभ्रविधानइक्षः ॥२॥

उपर नोकार ? गणीने वेसी, नमृत्थुणं० जावति चेइथाई०, जावत के वि० साहू० नमो० कही, नीचेतु स्तव कहे.

“ ॐमिति नमो भगवओ, अरिहंतसिद्धायरिउवज्जाय । चरसन्वसहसुगिंसंघ-धम्मतिथ्यपवग्रणस्स ॥१॥

सपणवं नमो भग-वईह, सुपदेवयाइ सुहयाए । सिचसंतिदेवयाणं, सिचपवयणदेवयाणं च ॥ २ ॥

इंदागणिजमनेरइअ-वरुणवाव कुवेर ईसाणा । वंभोनागुत्ति दसण्ह-सवि अ खुदिसाण पालाणं ॥३॥

सोमयमवरुणवेसमण-वासवाणं तहेव पंचण्हं । तह लोगपालयाणं, मूराइगहाण च नचण्हं ॥४॥

साहंतस्स समक्खं, मज्झमिणं चैव धम्मणुद्धाणं । मिद्धिमविग्घं गच्छउ, जिणाइनवकारओ धणिअं ॥५॥

उपर ' जयवीरयायु ' इत्यादि कहीने चैत्यवंदना ममाप्त करथी. पृथ्वी वेदी उपर बेसी प्रतिष्ठान्त्ये आत्सामां नीचे प्रमाणे शुचिविद्या आसेपवी—

शुचिविद्या—“ ॐ नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्जायाणं, नमो लोण

सन्वसाहणं, ॐ नमो सन्वोसहिपत्ताणं, ॐ नमो विजाहराणं, ॐ नमो आगासगामीणं, ॐ कं क्षं नमः,

अशुचिः शुचिर्भवामि स्वाहा ।”

उप्युक्तं शुचिनिधाने धेनुमुद्रामंडे ५-७ मार आत्मामा आरोपीने पत्रिथ थु, पजी नईटादि मंत्रो द्वारा आत्माने चिधे सकलीकरण करतु

सकलीकरणना मंत्रो अने चिधि—१-ॐ ह्रीं नमो अरिद्विताण, हृदये-हृदये हस्तपङ्कं करवो २-ॐ ह्रीं नमो सिद्धाण, शिरसि-मस्तकने स्पर्शवु ३-ॐ ह्रीं नमो आयरियाण, शिगाया-शिखाए स्पर्श करवो. ४-ॐ ह्रीं नमो उवज्जायाणं, कवचे-सर्वांगनो स्पर्श करवो ५-ॐ ह्रीं नमो लोण मन्त्रसाहण, अम्त्र-आयुधग्रहण चेष्या करवी.

उपेना ५ मत्रपदो पैकी प्रथमना ४ पदो नडे ते ते अंगनो स्पर्श करता अनुक्रमे आन्नेय, ऐशान, नैऋत्य अने त्रायव्य कोण तरफ धेनुमुद्रा देखाडनी अने पाचमा पदवडे हाथोमा शस्त्रग्रहणनी चेष्या करी पूर्व, दक्षिण, पश्चिम अने उत्तर दिशा जोमा अनुक्रमे त्रासनी मुद्रा देखाडनी.

ए मधुं कर्या पछी नदालु, पवित्र जने तपयिथुद देह तथा मुहुद, रुद्रक (रुद्र), सुजंबंध, कुंडल, मुद्रिका, हार, जनोंई (नैऋत) आदि १६ आभरणोपी भूपित श्वेतवस्त्रधारी एया ग्रहस्थने देवनी जमणी युजा तरफ उभो राखी नेने इन्द्र कल्पजो अने उक्त मंत्रो नडे तेंतु पण सकलीकरण करतु, ए प्रमाणे इन्द्रनी अगक्षा कर्या पजी प्रतिष्ठाचार्य चिधनोच्चाटन निमित्ते नीचेना भूतगलि मंत्रे बलि मंत्रोने इन्द्रना हाये नत्वामवो.

भूतबलिमंत्र—“ ॐ नमो अरिहंताणं, नमोसिद्धाणं, नमो आघरियाणं, नमो आगासगामीणं, नमो चारणाइलद्धिणं, जे इमे किंनर किंपुरिस महोरग गरुल सिद्ध गंधर्व जम्बू रक्वस भूय पिसाय डाइणि पभिई जिणघरणिवासिणो नियनियनिलयद्धिया पचियारिणो संनिहिया य असंनिहिया य ते सब्बे चिले-वणपुप्फधुवर्षवसणाहं बलिं पडिच्छन्तु तुट्टिकरा भवंतु सत्थयणं कुणंतु सब्बजिणाण संनि-हाणप्पभावओ पसन्नभावेण सब्बत्थ रक्खं कुणंतु सब्बदुरियाणि नासंतु सब्वासिं उवसंसेतु संति-पुट्टि-तुट्टि-सिचसत्थयणकारिणो भवंतु स्वाहा ।”

ते पही स्थापेल प्रतिमाना ४ खूणाओमां ४ कलशो स्थापत्ता. कलशोना मुखे फल मूकवां अने गलासां मूले परोएल मीढलनां कांकण बांधवां अने पुष्पमालाओ पहाराववी.

कलशो स्थाप्या पही प्रतिमाना अंगोमां आ प्रमाणे वर्ण न्यास करवो—१ ‘ ॐ ह्रीं ’—ललाटमां, २ ‘ ॐ ह्रीं ’—डावा काने, ३ ‘ ॐ हूं ’—जमणा काने, ४ ‘ ॐ ह्रीं ’—माथाना पाछला भागमां, ५ ‘ ॐ हूं ’ मस्तक उपर, ‘ ६ ॐ क्ष्मी ’ बे नेत्रो उपर, ७ ‘ ॐ क्ष्मी ’ मुख उपर, ८ ‘ ॐ क्ष्मी ’ कंठ भागमां, ९ ‘ ॐ क्ष्मी ’ हृदयमां, १० ‘ ॐ क्ष्मः ’ बे सुजाओमां.

११ ‘ ॐ क्रीं ’ पेट उपर, १२ ‘ ॐ ह्रीं ’ कटिभागमां, १३ ‘ ॐ हूं ’ बे जांघोमां, १४ ‘ ॐ क्ष्मी ’ बे पगोमां अने १५ ‘ ॐ क्ष्मः ’ बे हाथोमां.

उपर प्रमाणे केसर चंदन, रूईर, आदिना स्मथी प्रतिमाना उक्त अंगभागोसा दृष्टिदोषनिवारणार्थं संवाद्यगतो स्याम करणो मन्त्रयास पडी आचार्य नीचेना दिग्गन्ध मंत्रवडे श्वेतसर्पणो मंत्रीने पूर्वादि दिशाओमां नैखावी दिग्गन्ध करणो दिग्गन्ध मन्त्र—ॐ ह्रूं फुट किरिटि किरिटि घातय घातय परिचिधान् स्फोटय स्फोटय मन्त्रमालंबान् कुरु कुरु परमुद्रा छिन्द छिन्द परमन्त्रान् भिन्द भिन्द क्षः फुट स्वाहा ”

स्नान विधि—दिग्गन्ध कर्पा पडी प्रतिष्ठाप्य प्रतिमाने स्नानमंडपमा लइ जड स्नान करणवु. तेमा ४ कलशो उपेल जलवडे भरीने पुष्प अक्षतादिके पूजी समन्त्रे अभिमंत्रित करीने आचार्य प्रथम स्थपतिनो म्बालकार, तावुल, आदियी मत्कार करीने एक मुद्रित (दाग्णवालो) कलश स्थपति (मन्धार) ने आपे, बीजा कलशो इंद्रादिकेने आपीने लग्नो ' इष्ट' नमाश आत्रता प्रथम स्थपति पोतानो कलश ढाले, पत्री बीजाओ फोतपोताना कलशो नडे प्रतिमाने स्नात करावे. ए पत्री १ मानयान्य, २ रत्नचूर्ण, ३ मंगलमृत्तिका, ४ रूपयछाल अने ५ सडौपयि, आ पदार्थीना जल वडे कलशो भरीने एक पत्री एक एम ५ स्नानो करावना, प्रथमनु ४ मलशस्नान अने ए पाच स्नानोना जल कलशो मंत्रवानो मत्र नोचे प्रमाणे एक ज छे

‘ ॐ नमो गः सर्वगरीरावस्थिते महाभूते आपो जल गृह्ण गृह्ण स्वाहा । ’

प्रत्येक अभिमंत्रना द्रव्यमिश्रजलवडे कलशो भरीने आ मने अभिमानीने कलशमुद्राए कलशो नडे ए उ स्नान करणया. छ पडी ७ प्रथमाष्टमर्ग, ८ द्वितीयाष्टमर्ग, ९ सचौपयि, १० पचामृत, ११ कुसुमजल, १२ गन्ध. १३ नास, १४ चन्दन, १५ कुसुम (केसर), १६ रूईर, १७ तीर्थोदक अने १८ कुसुमाञ्जलि, ए बीजा १२ अभिपेसो करण. अष्टमर्गादि ११ द्रव्यो

जलमां नाखीने ते जल वडे कलशो भरीने अने १२ मा कुसुमांजलि माटे हाथोनी पसलीमां पुष्पो लेइने अभिषेक मंत्रे० मंत्रीने प्रतिमानुं स्नपन करावतुं, आ १२ अभिषेकोनो मंत्र नीचे प्रमाणे हे—

“ ॐ नमो यः सर्वशरीरावस्थिते प्रथु पृथु चिपृथु गन्धं गृणह गृणह स्वाहा । ”

प्रत्येक अभिषेकना कलशो आ मंत्रवडे मंत्रवा अने कलशमुद्रा देखाडी प्रतिमा उपर ढालवा, कुसुमांजलि अभिषेकमां कलश मुद्रा नथी. प्रत्येक अभिषेक पछी नीचेना मंत्रो वडे मंत्रीने प्रतिमाना मस्तके पुष्प चढावतुं अने धूप उखेववो.

सर्वस्नानोनो पुष्पमंत्र—“ ॐ नमो यः सर्वशरीरावस्थिते मेदिनि पुरु पुरु पुष्पवति पुष्पं गृणह गृणह स्वाहा । ”

सर्वस्नानोनो धूपमंत्र—“ ॐ नमो यः सर्वशरीरावस्थिते दह दह महाभूते तेजोधिपते धू धूपं गृणह गृणह स्वाहा । ”

आम स्नानादिवडे प्रतिमानी आकारगुद्धि करीने तेमां परसेष्टि मुद्राए नीचे ग्रमाणे भगवंतुं आह्वान करतुं—

“ ॐ नमोऽर्हत्परमेश्वराय चतुर्भुखपरमेष्ठिने त्रैलोक्यगताय अष्टदिक्कुमारीपरिपूजिताय देवाधिदेवाय दिव्यशरीराय त्रैलोक्यमहिताय आगच्छ आगच्छ स्वाहा । ”

आह्वान कर्या पछी अभिभंत्रित चंदनवडे प्रतिमाने सर्वांगे विलेपन करतुं, अञ्जलिमुद्राए पुष्पो चढाववां, धूप उखेववो, वासक्षेप कावो अने श्वेत वस्त्रथी ढांकी ‘ ॐ ह्रीं अर्हद्भ्यो नमः ’ आ मूल मंत्रवडे पूजवी.

उक्त मंत्रिक्रिया-विधान स्नानमहपमा कर्षा पछी प्रतिमाने हृदय उपर स्थापी (जो प्रतिमा न्हानी होय तो हाथोमा लेड छाती जागल राखीने अने म्होटी होय तो स्थमा त्रैसाडी) अधिवासनामडपने प्रदक्षिणा देता मुक्को, रूप्य, कांस्य, वन, रत्नो, कोडी, प्रभुबनाणुं उडालतां मडपना पश्चिम द्वारे जडु, त्या प्रतिमाने स्थथी उतारीने ते द्वारथी मंडपनी अंदर प्रवेश करावनां, प्रतिमाने भद्रपीठे स्थापी तेनी सामे पीठिका उपर नन्द्यावर्तमण्डलनु पूजन करवुं

॥ नन्द्यावर्तमण्डलनी आलेखन विधि ॥

लगभग एक गज समतारस सेवनना पाटलने चदनना द्रवुं निलेपन करी मृकव्या पछी तेमा चोगस क्षेत्र माधतु, तेना मयस्थानथी सूत्र गोल भमडीने तेमा ६ गोल वृत्तो पाडगा, अने ते वृत्तोनी न्हार एक पछी एक एना ३ गोल प्राकारो बनाववा

१-प्रथमवृत्तां—मध्यभागे नन्द्यावर्तनो आकार जालेखी तेना मध्यमा—

“ ॐ नमो हृद्भ्यः स्वाहा १ अने पूर्वार्दि दिशाओमा अनुक्ते— ‘ ॐ नमः सिद्धेभ्यः स्वाहा २, ॐ नम आचार्येभ्यः स्वाहा ३, ॐ नम उपाध्यायेभ्यः स्वाहा ४ अने ॐ नम. सर्वसाधुभ्यः स्वाहा ५, आ पदो लववां तथा आग्नेयादि खुणाओमा अनुक्ते— ‘ ॐ नमो ज्ञानाय स्वाहा ६, ॐ नमो दर्शनाय स्वाहा ७, ॐ नम-आरित्राय स्वाहा ८ अने ॐ नमः शुचिविधायै स्वाहा ९ ।

आ ९ मत्र पदो लवीने जिननो जमणी गजु उपर ‘ ॐ नमः शक्राय स्वाहा १०, तेनी नीचे ॐ नमः श्रुतदेवतायै स्वाहा ११, जिननी डानी गजु ‘ ॐ नम ईशानाय स्वाहा १२, नीचे ॐ नमः शान्ति देवतायै स्वाहा १३ मु लखवुं अने

ॐ नमो नंदावर्तय स्वाहा' आ मंत्र नंदावर्तनी उपर लखवो. नंदावर्तनी पूर्वादि दिशाओंमें छेडे अतुक्रमे वज्र, यव, अंकुश अने पुष्पमालाना आकारो आलेखवा अने पूजन समये नाम मंत्रो बोलीने पुष्पादि वडे पूजा.

(२) बीजा वृत्तमां—कर्णिकानी तरफथी निकलेली केसरनी पांखडीओ वनाववी, पांखडी मूलमां धोली, मध्यमां राती अने अंतमां पीला रंगनी करथी, पांखडीओमां दिशा त्रिदिशामां ३-३ ना हिसावे. २४ कोष्ठको कोष्ठकथी शर करीने—

ॐ नमो मरुदेव्यै स्वाहा १, ॐ नमो विजयायै स्वाहा २, ॐ नमः सेनायै स्वाहा ३, ॐ नमः सिन्हा-
थयै स्वाहा ४, ॐ नमो मंगलायै स्वाहा ५, ॐ नमः सुसीमायै स्वाहा ६, आ नमः पृथ्व्यै स्वाहा ७, ॐ नमो
लक्ष्मणायै स्वाहा ८, ॐ नमो रामायै स्वाहा ९, ॐ नमो नन्दायै स्वाहा १०, ॐ नमो विष्णवे स्वाहा ११,
ॐ नमो जयायै स्वाहा १२, ॐ नमः श्यामायै स्वाहा १३, ॐ नमः सुयशसे स्वाहा १४ ॐ नमः सुव्रताय
स्वाहा १५, ॐ नमोऽचिरायै स्वाहा १६, ॐ नमः श्रियै स्वाहा १७, ॐ नमो देव्यै स्वाहा १८, ॐ नमः
प्रभावत्यै स्वाहा १९, ॐ नमः पद्मावत्यै स्वाहा २०, ॐ नमो वप्रणै स्वाहा २१, ॐ नमः शिवायै स्वाहा

२२, ॐ नमो वामायै स्वाहा २३, ॐ नमः त्रिशलायै स्वाहा २४.

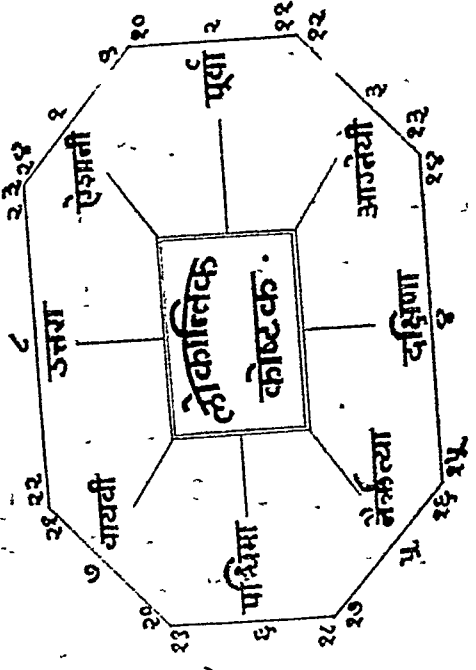
ए २४ मातृनाम मंत्रो लखवा, पछी ए बीजा वृत्तमां ज केसरनी पांखडियोनी नीचेथी वहार निककेलां आत्र कमलपत्रो
पूर्वादि आठ दिशाओमां वनावीने पूर्वादि ४ दिशाओमां ॐ जयायै स्वाहा १, ॐ विजयायै स्वाहा २, ॐ अजितायै

स्वाहा ३, ॐ अपराजितायै स्वाहा ४, आ स्यातो न्यास करवो अने आग्नेयादि ४ विदिशाओमा—

ॐ जम्ममि स्वाहा ५, ॐ जमिन्यै स्वाहा ७, ॐ मोर्यै स्वाहा ८, आ च्यार देवीओनो आलेख कनी.

३ व्रीजा वृत्तमा—पूर्वादि दिशा-विदिशाओमा ३-३ कमलपररूपे कोठाओ पाहीने कोष्टकुबलय करवु, अने ते पछो ईशान १, पूर्व २, जाशेय ३, दक्षिण ४, नैऋत्य ५, पश्चिम ६, वायव्य ७ अने उत्तर ८ आ क्रमयी आठ दिशाओमा अनुक्रमे मारस्वत १, आदित्य २, वह्नि ३, वरुण ४, गर्दतोय ५, तुषित ६, अब्यावाध ७ अने अरिष्ट ८, ए आठ लोकान्तिक देवीनो आलेख कर्या पछी सारस्वत-जान्ति्य वेनी वच्चे ९ अग्न्याभ अने १० सूर्याभ, आदित्य-वह्नि वेनी वच्चे ११ मा चंद्राभ अने १२ सत्याभ, वह्नि-वरुण वेनी वच्चे १३-१४ श्रेयम्बर अने क्षेमकर, वरुण-गर्दतोय वेनी वच्चे १५ वृषभाभ अने १६, कामचार, गर्दतोय-तुषितनी वच्चे १७-१८ निर्माण अने दिशान्तरक्षित, तुषित-अव्यावाध वेनी वच्चे १९-२० आग्नेक्षित अने सर्वरक्षित, अब्यावाध-अरिष्टनी वच्चे २१-२२ मन्त्र अने वसु, अने अग्निष्ट-सारस्वत वेनी वच्चे २३ अन्न अने २४ मिथ, ए नामक लोकान्तिक देवीनु आलेखन करवुं,

नीचेना कोष्टक ऊपरयी कथा दिशाभागमा कया लोकान्तिक देवतुं स्थान छे ते जणागे—



स्वाहा १४, ॐ नमो बृहस्पतिभ्यः स्वाहा १५, ॐ नमः कामचारेभ्यः स्वाहा १६, ॐ नमो निर्माणेभ्यः स्वाहा
 ॐ नमो दिशान्तरक्षितेभ्यः स्वाहा १७, ॐ नमः सर्वरक्षितेभ्यः स्वाहा
 २०, ॐ नमो महतेभ्यः स्वाहा २१, ॐ नमो वसुभ्यः स्वाहा २२, ॐ नमो इवेभ्यः स्वाहा २३, ॐ नमो
 चित्रेभ्यः स्वाहा २४.

ए प्रमाणे क्रमांक साथे पूरा नाम मंत्रो लखवा.

उा कोष्टकने फरता आंकडाथी लोकान्तिक देवोनां क्रमिक नामोना नंबरो समजवाना छे. आ प्रत्येक काष्टकमां ॐ नमः सार-
 स्वतेभ्यः स्वाहा १, ॐ नमः आदित्येभ्यः स्वाहा २, ॐ नमो
 नमो वह्निभ्यः स्वाहा ३, ॐ नमो वरुणेभ्यः स्वाहा ४, ॐ नमो
 गर्दनोथेभ्यः स्वाहा ५, ॐ नमस्तुबितेभ्यः स्वाहा ६, ॐ नमो
 इन्द्राबाधेभ्यः स्वाहा ७, ॐ नमो इरिष्टेभ्यः स्वाहा ८, ॐ
 नमो इन्द्राभ्यः स्वाहा ९, ॐ नमः सूर्याभ्यः स्वाहा १०,
 ॐ नमश्चन्द्राभ्यः स्वाहा ११, ॐ नमः सत्याभ्यः स्वाहा
 १२, ॐ नमः श्रेयस्करेभ्यः स्वाहा १३, ॐ नमः क्षेमकरेभ्यः
 स्वाहा १४, ॐ नमः कामचारेभ्यः स्वाहा १६, ॐ नमो निर्माणेभ्यः स्वाहा
 ॐ नमः सर्वरक्षितेभ्यः स्वाहा १९, ॐ नमः सर्वरक्षितेभ्यः स्वाहा
 २०, ॐ नमो महतेभ्यः स्वाहा २१, ॐ नमो वसुभ्यः स्वाहा २२, ॐ नमो इवेभ्यः स्वाहा २३, ॐ नमो
 चित्रेभ्यः स्वाहा २४.

४-चोथा वृत्तमां—दिशा-विदिगामा २-२ ना हिसाने १६ कमलपत्रो नगानीने तेमा नीचेना क्रमथी सोल विद्यादेवि-

ओनो आलेख फरवो—

“ॐ नमो रोहिण्यै स्वाहा १, ॐ नमः प्रहस्यै स्वाहा २, ॐ नमो वज्रगुंखलायै स्वाहा ३, ॐ नमो वज्रा-
कुश्यै स्वाहा ४, ॐ नमो ऽप्रनिचक्रायै स्वाहा, ५, ॐ नमः पुरुषदत्तायै स्वाहा ६ ॐ नमः काल्यै स्वाहा ७,
ॐ नमो महाकाल्ये स्वाहा ८, ॐ नमो गीर्यै स्वाहा ९, ॐ नमो गान्धर्व्यै स्वाहा १०, ॐ नमो महाज्वालायै
स्वाहा ११, ॐ नमो मानव्यै स्वाहा १२, ॐ नमो वेरोदय्यै स्वाहा १३, ॐ नमो ऽच्छुसायै स्वाहा १४, ॐ

नमो मानस्यै स्वाहा १५, ॐ नमो महामानस्यै स्वाहा ।”

५-पाचमा वृत्तमा—पूर्वादि दिगा निदिशाओमा कमलपत्राकारे ८ कोष्ठको ननामया अने तेमा क्रमशः पूर्वादिमा
ॐ 'नमः' मीघर्मादीन्द्रादिभ्यः स्वाहा १, ॐ नमस्तद्देवीभ्यः स्वाहा २, ॐ नमो चमरादीन्द्रादिभ्यः
स्वाहा ३, ॐ नमस्तद्देवीभ्यः स्वाहा ४, ॐ नमश्चन्द्रादीन्द्रादिभ्यः स्वाहा ५, ॐ नमस्तद्देवीभ्यः स्वाहा ६, ॐ नमः
किन्नरादीन्द्रादिभ्यः स्वाहा ७, ॐ नमस्तद्देवीभ्यः स्वाहा ८

ए प्रमाणे मंत्रो आलेखना—

६-उट्टा वलयमां—पूर्वादि दिशाओमां कमल पत्राकारे आठ कोष्ठको करीने तेमा—ॐ नमः इन्द्रात्स्वाहा १, ॐ नमो-
-ग्रये स्वाहा २, ॐ नमो यमाय स्वाहा ३, ॐ नमो निरःनये स्वाहा ४, ॐ नमो वरुगाय स्वाहा ५, ॐ नमो-

वायवे स्वाहा ६, ॐ नमः कुबेराय स्वाहा ७, ॐ नमः ईशानाय स्वाहा ८, लखे तथा उर्ध्वदिशां ॐ नमो
ब्रह्मणे स्वाहा ९, अने अधोदिशां ' ॐ नमो धरणेन्द्राय स्वाहा ' १०, लखुं.

प्रथमवृत्तमां नन्द्यावत्स्थित जिनविभनां चरणो नीचे—

“१ ॐ नमः आदित्याय स्वाहा, २ ॐ नमः सोमाय स्वाहा, ३ ॐ नमो मङ्गलाय स्वाहा, ४ ॐ नमो बुधाय
स्वाहा, ५ ॐ नमो बृहस्पतये स्वाहा, ६ ॐ नमः शुक्राय स्वाहा, ७ ॐ नमः शनैश्वराय स्वाहा, ॐ नमो राहवे
स्वाहा अने ९ ॐ नमः केतवे स्वाहा.” ए नव मन्त्रोष्ठी नवग्रहीने आलेखना.

वृत्तोष्ठी बहार अर्थात् गढोष्ठी अंदर दक्षिण दिशां

‘ ॐ नमः क्षेत्रपालाय स्वाहा ’ अशिक्षोणमां ‘ ॐ नमो गणधरादि त्रिकाय स्वाहा, ’ नैऋत्यमां ‘ ॐ नमो
भवनपत्यादिद्वैवीत्रिकाय स्वाहा ’ वायव्यमां ‘ ॐ नमो भवनपत्यादिद्वैवत्रिकाय स्वाहा ’ अने इक्षानमां ‘ ॐ नमो
वैमानिकदेवादित्रिकाय स्वाहा. ’ ए पर्यदा मंत्रो लखवा.

त्रण प्राकारो—नन्दावर्तनां ६ वर्तुलो पछी तैओने आंवरी लेता त्रण प्राकारोनां ३ वलयो बनाववां, आनी च्यारें दिशा-
ओमां द्वारों राखी ते उपर तोरणो अने ध्वजो आलेखवा.

प्रथम प्राकारनां पूर्वादि द्वारोनी अंदर बन्ने बाजुए १ वैमानिक, २ व्यंतर, ३ ज्योतिष्क अने ४ भवनपतिः ए देवदेवी-
ओनां त्रै वे बुगलो अनुक्रमें पीत, श्वेत, रक्त अने कृष्णवर्णनां आलेखवां.

प्रथम प्राकारना पूर्वादि द्वारपालो अनुक्रमे सोम, यम, वरुण अने कुंभ, धनु, दण्ड, पाश अने गदाधारी आलेखना प्रत्येक द्वारना मध्यमा यष्टिधारी तुम्हूनो आलेख करवो

वीजा प्राकारना पूर्वादिद्वारपाली तरीके जया १, त्रिजया २, अजिता ३, तथा अपराजिता ४, अने

त्रीजा बाह्यप्राकारना पूर्वादि द्वारपालो तरीके च्यार तुम्हू आलेखना.

उपो प्राकारोना पूर्वादि तोरणो एरु ज नामना ठे. पूर्वद्वारोना 'सुराधिप' १, दक्षिणद्वारोना 'धर्मराज' २, पश्चिम द्वारोना 'सलिलाधिप' ३ अने उत्तरद्वारोना 'यक्षाधिप' ४, ए च्यार च्यार तोरणो आलेखना

त्रणे प्राकारोना पूर्वादि ध्वजोना नामो पण समान छे, त्रणे पूर्वद्वारो उपर 'धर्मध्वजो' १, दक्षिणद्वारो उपर 'मानध्वजो' २, पश्चिम द्वारो उपर 'गजध्वजो' ३, अने उत्तर द्वारो उपर 'सिंहध्वजो' ४, ए च्यार च्यार आलेखना

वीजा प्राकारमा त्रियंशो अने त्रीजा प्राकारमा यान-नाहनो आलेखना, त्रण प्राकारोनी चहारनी भूमिमा देव अने मनुष्येने आलेखना,

च्यारे द्वारोनी बन्ने बाणुए कमलवन सहित नावद्वियो आलेखवी. अतला नवलाल्छित पृथ्वीमंडप आलेखीने

पूर्वादि ४ दिशाओमा "परविद्या: क्ष: फुट्" अने अग्निपादि ४ विदिशाओमा—"परमन्ना: क्ष: फुट्" आ मंत्राभरो लखवा.

नन्दावर्चना पाटलाना या पट्टना च्यारे खणाओ उपर कमलस्थित अने कमलोवडे ढांकला मुखमाला ४ पूर्णकलशो आले-

खवा, अने सर्वनी बाहर वायुमंडल आपवुं.

खुलासो—‘ आलेखन ’ अथवा ‘ आलेख ’नो ‘ अर्थ ’ चित्रवुं छे, एथी समजवुं जोइये के नंदावर्तना पडुना प्रत्येक बलयमां अने बलयना प्रत्येक कोष्टकमां आवतां देव-देविओनां नामोना स्थाने तेमनां चित्रो आलेखवाना होय छे, पण ए कार्य अशक्य होइ एमनां नाममंत्रो ज लखवानी पद्धति प्रचलित थई छे, तेथी प्रत्येक देवदेवीना स्थाने तेनो नाममंत्र लखाय छे. नामनी पूर्व ‘ ॐ नमः ’ अने नामने चतुर्थी विभक्ति लगाडीने अन्तमां ‘ स्वाहा ’ शब्द लखवो, एने ‘ नाममंत्र ’ कह्ते छे. नाममंत्र लखवा जेटलो पण अवकाश न होय तो एकलां नामो लखीने पण पूजन करी शक्याय छे.

दुत्तनी बहार ३ प्राकारोनां द्वारो, तेनां तोरणो, ध्वजो, चात्रडियो, कलशो, अने पार्थिवादि मंडलो, वनतां गुप्ती ते ते आकारमां चित्रवां जोइये, छतां तेम वनवुं अशक्य होय तो प्रत्येकवुं नाम मात्र लखीने काम चलावी लेवुं, पण प्रत्येक बलयना कोष्टकोमां के बहार लखातां नामोनी साथे संख्यांक अवश्य लखवो के जेथी पूजन समये नंतरवार मंत्रोपदे नंतरवार कोष्टकोमां आवता आराध्यपदेवुं पूजन सुगमताथी थई शके.

नंदावर्तनी पूजनविधि.

पूर्वोक्त प्रकारे नंदावर्तवुं आलेखन करीने प्रसंग आवतां आवश्यक सामग्री जोडीने तेवुं पूजन करवुं. नंदावर्त पूजननो मुख्य अधिकार प्रतिष्ठा गुरुनो छे, योग्य प्रतिष्ठा गुरुनो योग्य होय तो नंदावर्तवुं पूजन तेमना हाथे ज कराववुं, मन्थेक पदतो मंत्र बोली गुरु वासशेषवडे तेवुं पूजन करे, ते पछी म्नावकार श्रावक पुष्पाश्रतादि चढाये.

नद्यावर्तनो पूजा-सामग्री तरीके वासक्षेप, पुष्प, अक्षत, धूप, दीप, फल, नैवेद्य, ए पदार्थों मुख्य छे कोइ ग्रंथमा मुद्रानो पण उल्लेख छै, आज काल केटलाक विधिकारो पैसा-टका पूजामा मृत्ताने पण छै. नद्यावर्तना बलयोमा मुख्य देवपदो १३ छै। पटले चदानामाना द्रव्योनी संख्या ते दिसावे राखची, प्रथम उलयमा नन्द्यावर्त, यज्ञ, यव, अंकुश अने पुष्पमाला, आ मंगल चिह्नोसु पूजन तेना मत्रो गोलोने वासक्षेपथी करतु, प्राकारगठ परित्तत्रिलो, देवयुगलो, द्वारपालो, तोरणो, ध्वजो अने मडलो पण वासक्षेप बडे पूजयां प्रत्येक कोटकरगत पदोनो मत्र गोलोने ते पछी तेपइतुं पूजन करतु, प्रत्येक उलयना पूजामत्रो नीचेप्रमाणे छै.

नन्द्यावर्त पूजनमत्रो—प्रथम बलये १ पदानि. ॐ नमोऽर्हद्भ्यः स्वाहा १, ॐ नमः सिद्धेभ्यः स्वाहा २, ॐ नम आचार्येभ्यः स्वाहा ३, ॐ नम उपाध्यायेभ्यः स्वाहा ४, ॐ नमः सर्वसाधुभ्यः स्वाहा ५, ॐ नमो ज्ञानाय स्वाहा ६, ॐ नमो दर्शनाय स्वाहा ७, ॐ नमश्चारित्राय स्वाहा ८, ॐ नमः शुचिविद्यायै स्वाहा ९ ।

प्रथम बलये वेयात्रयकर ४ पदानि ॐ नमः शक्राय स्वाहा १ । ॐ नमः श्रुतदेवतायै स्वाहा २ । ॐ नमो ईशानाय स्वाहा ३ । ॐ नमः शान्तिदेवतायै स्वाहा ४ ।

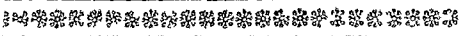
प्रथम बलये ५ मंगलचिह्नानि—ॐ नमो नन्द्यावर्ताय स्वाहा १ । ॐ नमो वज्राय स्वाहा २ । ॐ नमो यवाय स्वाहा ३ । ॐ नमोऽङ्कुशाय स्वाहा ४ । ॐ नमः सुमनोदाने स्वाहा ५ ।

१ प्रथम बलयमा अर्हदादि ० अने इन्द्रादि ४, वीजामा जिनमाता २४ अने जयादि ८, वीजा वृत्तमा २४ लोकात्मिक, चौथामा १६ विद्यादनी, पाचमामा इन्द्रादि ८, छट्टामा विशापाल १० प्रह ९ अने क्षेत्रपाल १ कुल ११३ ।

द्वितीय बलये २४ जिन्ममातृपदानि—ॐ नमो भरुदेव्यै स्वाहा १ । ॐ नमो विजयायै स्वाहा २ । ॐ नमः
सेनायै स्वाहा ३ । ॐ नमः सिद्धार्थायै स्वाहा ४ । ॐ नमो मंगलायै स्वाहा ५ । ॐ नमः सुसीमायै स्वाहा ६ ।
ॐ नमः पृथिव्यै स्वाहा ७ । ॐ नमो लक्ष्मणायै स्वाहा ८ । ॐ नमो रामायै स्वाहा ९ । ॐ नमो नन्दायै स्वाहा
१० । ॐ नमो विष्णवे स्वाहा ११ । ॐ नमो जयायै स्वाहा १२ । ॐ नमः इयामायै स्वाहा १३ । ॐ नमः
सुयशायै स्वाहा १४ । ॐ नमः सुव्रतायै स्वाहा १५ । ॐ नमोऽचिरायै स्वाहा १६ । ॐ नमः अत्रियै स्वाहा १७ ।
ॐ नमो देव्यै स्वाहा १८ । ॐ नमः प्रभावत्यै स्वाहा १९ । ॐ नमः पद्मावत्यै स्वाहा २० । ॐ नमो वप्रायै
स्वाहा २१ । ॐ नमः शिवायै स्वाहा २२ । ॐ नमो वामायै स्वाहा २३ । ॐ नमस्त्रिशलायै स्वाहा २४ ।

द्वितीय बलये जयादि ८ देवी पदानि—ॐ नमो जयायै स्वाहा १, ॐ नमो विजयायै स्वाहा २, ॐ
नमोऽजितायै स्वाहा ३, ॐ नमोऽपराजितायै स्वाहा ४, ॐ नमो जंभायै स्वाहा ५, ॐ नमो जंभिन्यै स्वाहा ६,
ॐ नमो मोहायै स्वाहा ७, ॐ नमो मोहिन्यै स्वाहा ८ ।

तृतीय बलये २४ लोकान्तिक पदानि—ॐ नमः सारस्वतेभ्यः स्वाहा १, ॐ नम आदित्येभ्यः स्वाहा २,
ॐ नमो वह्निभ्यः स्वाहा ३, ॐ नमो वरुणेभ्यः स्वाहा ४, ॐ नमो गर्दतोयेभ्यः स्वाहा ५, ॐ नम स्तुषितेभ्यः
स्वाहा ६, ॐ नमोऽव्याबाधेभ्यः स्वाहा ७, ॐ नमोऽरिष्टेभ्यः स्वाहा ८, ॐ नमोऽग्न्याभेभ्यः स्वाहा ९,
ॐ नमः सूर्याभेभ्यः स्वाहा १०, ॐ नमश्चन्द्राभेभ्यः स्वाहा ११, ॐ नमः सत्याभेभ्यः स्वाहा १२, ॐ नमोः

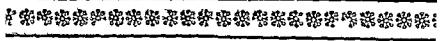


श्रेयस्करेभ्यः स्वाहा १३, ॐ नमः क्षेमकरेभ्यः स्वाहा १४, ॐ नमो वृषभेभ्यः स्वाहा १५, ॐ नमः कामचारेभ्यः
 स्वाहा १६, ॐ नमो निर्माणेभ्यः स्वाहा १७, ॐ नमो दिशान्तरिक्षेभ्यः स्वाहा १८, ॐ नम आत्मरक्षितेभ्यः
 स्वाहा १९, ॐ नमः सर्वरक्षितेभ्य स्वाहा २०, ॐ नमो मरुतेभ्यः स्वाहा २१, ॐ नमो वसुभ्यः स्वाहा
 २२, ॐ नमोऽश्वेभ्यः स्वाहा २३, ॐ नमो विश्वेभ्यः स्वाहा २४ ।

चतुर्थं बलये १६ विद्यादेवी पठानि—ॐ नमो रोहिण्यै स्वाहा १ । ॐ नमः प्रजप्त्यै स्वाहा २ । ॐ नमो
 वज्रगंखलायै स्वाहा ३ । ॐ नमो वज्रकुड्यै स्वाहा ४ । ॐ नमोऽप्रतिचक्रायै स्वाहा ५ । ॐ नमः पुम्पटत्रायै
 स्वाहा ६ । ॐ नमः काल्यै स्वाहा ७ । ॐ नमो महाकाल्यै स्वाहा ८ । ॐ नमो गौर्यै स्वाहा ९ । ॐ नमो
 गान्धार्यै स्वाहा १० । ॐ नमो महाज्वालार्यै स्वाहा ११ । ॐ नमो मानव्यै स्वाहा १२ । ॐ नमो वैरोटथार्यै
 स्वाहा १३ । ॐ नमोऽष्टुषार्यै स्वाहा १४ । ॐ नमो मानस्यै स्वाहा १५ । ॐ नमो महामानस्यै स्वाहा १६ ।

पचम बलये सौधमन्द्रादि ८ पदानि—ॐ नमः सौधमन्दीन्द्रादिभ्यः स्वाहा १ । ॐ नमस्तद्देवीभ्य स्वाहा
 २ । ॐ नमश्चर्मरेन्द्रादिभ्यः स्वाहा ३ । ॐ नमस्तद्देवीभ्य स्वाहा ४ । ॐ नमश्चन्द्रादीन्द्रादिभ्यः स्वाहा ५ ।
 ॐ नमस्तद्देवीभ्यः स्वाहा ६ । ॐ नमः किन्नरादीन्द्रादिभ्यः स्वाहा ७ । ॐ नमस्तद्देवीभ्यः स्वाहा ८ ।

षष्ठ बलये विरुपालपदानि—ॐ नम इन्द्राय स्वाहा १ । ॐ नमोऽग्नये स्वाहा २ । ॐ नमो यमाय स्वाहा
 ३ । ॐ नमो निर्कतये स्वाहा ४ । ॐ नमो वरुणाय स्वाहा ५ । ॐ नमो वायवे स्वाहा ६ । ॐ नम कुबेराय



स्वाहा ७ । ॐ नम ईशानाय स्वाहा ८ । ॐ नमो धरणेन्द्राय स्वाहा ९ । ॐ नमो ब्रह्मणे स्वाहा १० । ॐ नमः सोमाय स्वाहा २ । ॐ नमः आदित्याय स्वाहा १ । ॐ नमः शुक्राय स्वाहा ५ । ॐ नमः क्रुत्वाय स्वाहा ९ । ॐ नमो बृहस्पतये स्वाहा ५ । ॐ नमः क्रुत्वाय स्वाहा ९ ।
 प्रथम बलये जिनचरणाय स्वाहा ८ । ॐ नमो बुधाय स्वाहा ४ । ॐ नमः क्रुत्वाय स्वाहा ९ ।
 नमो मंगलाय स्वाहा ३ । ॐ नमो बुधाय स्वाहा ४ । ॐ नमो राहवे स्वाहा ८ । ॐ नमः क्रुत्वाय स्वाहा २ ।
 ६ । ॐ नमः शनैश्वराय स्वाहा ७ । ॐ नमो राहवे स्वाहा ८ । ॐ नमो भवनपत्यादिदेवीत्रिकाय स्वाहा २ ।
 क्षेत्रपालपदं—ॐ नमो दक्षिणदिग्भवस्थित-क्षेत्रपालाय स्वाहा ।
 परिषत्त्रिकपदानि—ॐ नमो गणधरादित्रिकाय स्वाहा १ । ॐ नमो वैमानिकयुगलकाभ्यां स्वाहा १ । ॐ नमो
 ॐ नमो भवनपत्यादिदेवत्रिकाय स्वाहा ३ । ॐ नमो वैमानिकयुगलकाभ्यां स्वाहा ३ । ॐ नमो भवनपतियुगलकाभ्यां
 प्रथम प्रकारे द्वाराभयपार्श्वस्थितदेवयुगलकपदानि—ॐ नमो ज्योतिष्कयुगलकाभ्यां स्वाहा ३ । ॐ नमो
 व्यन्तरयुगलकाभ्यां स्वाहा २ । ॐ नमो यमाय स्वाहा २ । ॐ नमो
 स्वाहा ४ ।
 प्रथम प्रकारे द्वारापाल पदानि— ॐ नमः सोमाय स्वाहा १ । ॐ नमो विजयायै स्वाहा २ । ॐ नमो-
 वरुणाय स्वाहा ३ । ॐ नमः कुबेराय स्वाहा ४ ।
 द्वितीय प्रकारे द्वारापाली पदानि— ॐ नमो जयायै स्वाहा १ । ॐ नमो विजयायै स्वाहा २ । ॐ नमो-
 ऽजितायै स्वाहा ३ । ॐ नमोऽपराजितायै स्वाहा ४ ।

तृतीय प्रकार द्वारपाल पदानि— ॐ नमस्तुभ्यस्वे स्वाहा १ । ॐ नमस्तुभ्यस्वे स्वाहा २ । ॐ नमस्तु-
भ्यस्वे स्वाहा ३ । ॐ नमस्तुभ्यस्वे स्वाहा ४ ।

पूर्वादितोरणपदानि— ॐ नमः सुराधिपतोरणेभ्यः स्वाहा १ । ॐ नमो धर्मराजतोरणेभ्यः स्वाहा २ ।

ॐ नमः सलिलाधिपतोरणेभ्यः स्वाहा ३ । ॐ नमो यक्षाधिपतोरणेभ्यः स्वाहा ४ ।
पूर्वादिध्वजपदानि— ॐ नमो धर्मध्वजेभ्यः स्वाहा १ । ॐ नमो मानध्वजेभ्यः स्वाहा २ । ॐ नमा

गजध्वजेभ्यः स्वाहा ३ । ॐ नमः सिद्धध्वजेभ्यः स्वाहा ४ ।

मण्डलपूजा मन्त्रपदानि— ॐ नमः पीतद्युतिपृथिवीमण्डलाय म्वारा १ । ॐ नमः कृष्णद्युतिवायुमण्डलाय
स्वाहा २ ।

नन्द्यावर्तना पूजनना अन्ते यथोपलब्ध फलमेवो चढानी रूप उभेनी, पाटलाने दक्षिणा ढड नना श्वेत रक्षे ढाकनो, उपर
गेनाश्वर अथना रक्तसूत्र वीटडु, ढत्र उपर चन्दन-कैमरना छाटा नावना. पुष्प-अक्षत वेरना, प्रतिष्ठागुम्प वासक्षेप करवी, स्थिर
प्रतिष्ठामा नन्द्यावर्तना कर्णिक्रा भागमा प्रतिमानी कल्पना करवी अने. चर्यतिष्ठामा र्प्या प्रतिमा स्थापन करवी अने ते पडी
पाटलो प्रतिष्ठाप्य जिनप्रतिमावाली वेदी उपर आगलना भागमा स्थापित करनो, आगे नीजा पाटिया उपर नैवेद्य ढोडु,

॥ इति नन्द्यावर्तपूजा मन्त्रपदानि ॥

अधिवासना

ए पछी पुष्प, अक्षत, वास, चंदन, जत्रमाला, कंकळ, त्रल, सींदल, आदि अधिवारानानी सामग्री एकत्र करी सौभाग्यमंत्रे अथवा अधिवासना मंत्रवडे मंत्रवी, मुद्राओ देखाइवी, पंछी ते लेइने प्रतिष्ठाप्य प्रतिमाने पास जवुं, प्रथम चंदन वडे प्रतिमाने सर्वांगे विलेपन करावुं पुष्पो चढावचां अने वासनिक्षेप करवो. ते पछी कपाट अने जितल्क मुद्राओ वडे शक्तिने उत्तेजित करी प्रतिमाना १. मस्तक, २ दक्षिणस्कन्ध, ३ वामस्कन्ध, ४ दक्षिणकुक्षि अने ५ वामकुक्षि; आ पांच अंगोसां अथवा तो १. मस्तक, २ हृदय, ३ नाभि, ४ पृष्ठभाग, ५ दक्षिणभुजा, ६ वामभुजा, ७ दक्षिण ऊरु (साथल) अने ८ वाम ऊरु; आ आठ अंगोसां आचार्य मंत्रवडे अथवा वीजा (वर्धमानविद्यादि) मंत्रवडे मंत्रन्यास करवो. ए पछी सौभाग्यमुद्रा पूर्वक प्रतिमासां सौभाग्यमंत्रनो न्यास करवो.

अधिवासना मंत्रो—१. “ ॐ नमो भगवतो उसभसामिस्स पढमतिथयरस्स सिञ्ज्जड मे भगवई महाविजा जेण सच्चैण इंदेण सव्वदेवससुद्धयेण मेरुस्मि सव्वोसहीहिं सव्वे जिणा अहिसित्ता तेण सव्वेण अहिवासयामि सुव्वयं दह्व्वयं सिद्धं बुद्धं सम्बद्धंसणम्मणुपत्तं हिरिं हिरिं गिरिं गिरिं मिरिं मिरिं गुरु गुरु अमले अमले विमले विमले सुविमले सुविमले सुविमले मोक्खम्मण्णमणुपत्तै स्वाहा । ” अथवा—

२ “ ॐ नमो खीरासवलद्दीणं ॐ नमो महुआमवलद्दीणं, ॐ नमो संभिण्णसोईणं, ॐ नमो चयाणु-
सारीणं ॐ नमो कुट्टयुद्धीणं, जमियं विज्जं पउंजामि मा मे विजा पसिञ्ज्जड ॐ कं क्षः स्वाहा । ”

आ वे अधिवासना विद्याओ पीकीनी कोई पण एक विद्या ३ बार भणीने प्रतिमा उपर नासनिक्षेप करी तेनी अधिवासना करवी.
अधिवासनान्त आचार्य—

“ ॐ नमो चगु निवगु निवगु सुमिणे सोमणसे महुमहुरं जयते अपराजिए स्वाहा । ”

आ सौभाग्यमत्र ऋडे ७ बार जपीने प्रतिमाने करुण, मीढल अने जवमाला नाथवी

ए पछी प्रतिष्ठाचार्य प्रतिमामा नीचे प्रमाणे पृथिन्याटि तप्पोनो न्यास करवो—

१ ॐ ह्रीं पृथिव्यै नमः, २ ॐ ह्रीं गन्धाय नमः, ३ ॐ ह्रीं अद्भ्यो नमः, ४ ॐ ह्रीं रमाय नमः, ५ ॐ ह्रीं तेजसे नमः, ६ ॐ ह्रीं रूपाय नमः, ७ ॐ ह्रीं वायवे नमः, ८ ॐ ह्रीं स्पर्शाय नमः, ९ ॐ ह्रीं आकाशाय नमः,
१० ॐ ह्रीं शब्दाय नमः,

१ ॐ ह्रीं पादाभ्या नमः, ॐ ह्रीं पादाधिपतये विष्णवे नमः, पादाधिपाऽस्य गमनोत्साहं कुरु कुरु ।

२ ॐ ह्रीं पाणिभ्या नमः । ॐ ह्रीं पाण्यधिपतये इन्द्राय नमः । पाण्यधिपाऽस्य पदार्थग्राहकत्व कुरु २ ।

३ ॐ ह्रीं पायवेनमः । ॐ ह्रीं पाद्वधिपतये मित्राय नमः । पाद्वधिपाऽस्य वायृत्सर्गं कुरु २ ।

४ ॐ ह्रीं उपस्थाय नमः । ॐ ह्रीं उपस्थधिपतये ब्रह्मणे नमः । उपस्थधिपाऽस्यानन्द कुरु कुरु ।

५ ॐ ह्रीं वाचे नमः । ॐ ह्रीं वागधिपतये भग्नये नमः । वागधिपाऽस्य वाच कुरु कुरु ।

६ ॐ ह्रीं त्वचे नमः । ॐ ह्रीं त्वगधिपतये वायवे नमः । त्वगधिपाऽस्य स्पर्शग्राहकत्व कुरु कुरु ।

- ७ ॐ ह्रीं जिह्वाधिपतये नमः । जिह्वाधिपास्य रसग्राहकत्वं कुरु कुरु ।
 ८ ॐ ह्रीं घ्राणाधिपतिभ्यामन्विभ्यां नमः । घ्राणाधिपास्य गन्धग्राहकत्वं कुरु कुरु ।
 ९ ॐ ह्रीं चक्षुरधिपतये रक्ताय नमः । चक्षुरधिपास्य रूपग्राहकत्वं कुरु कुरु ।
 १० ॐ ह्रीं श्रोत्राधिपतये आदित्याय नमः । श्रोत्राधिपास्य शब्दग्राहकत्वं कुरु कुरु ।
 ११ ॐ ह्रीं मनसे नमः । मनोऽधिपास्य संकल्पविकल्प कुरु कुरु ।
 १२ ॐ ह्रीं अहंकाराय नमः । अहंकाराधिपतये नमः । अहंकाराधिपास्याभिमानं कुरु कुरु ।
 १३ ॐ ह्रीं बुद्धये नमः । बुद्धयधिपतये नमः । बुद्धयधिपास्य बोधं कुरु कुरु ।
 १४ ॐ ह्रीं रागाय नमः । रागाधिपास्य विषयेषु रागं कुरु कुरु ।
 १५ ॐ ह्रीं विद्यायै नमः । विद्याधिपास्य ज्ञानाभिव्यक्तिं कुरु कुरु ।
 १६ ॐ ह्रीं कलायै नमः । कलाधिपास्य कर्तृत्वव्यक्तिं कुरु कुरु ।

नाडीदशक चिन्यास—

- १ ॐ ह्रीं इडायै नमः । २ ॐ ह्रीं पितृशयै नमः । ३ ॐ ह्रीं सुभुगयै नमः । ४ ॐ ह्रीं साधिभ्ये नमः ।
 ५ ॐ ह्रीं शंखिन्यै नमः । ६ ॐ ह्रीं कूर्भमाण्डयै नमः । ७ ॐ ह्रीं यशोव (म) त्यै नमः । ८ ॐ ह्रीं हस्तिजिह्वयै
 नमः । ९ ॐ ह्रीं पूषायै नमः । १० ॐ ह्रीं अलम्बुषायै नमः ।

वायुदशकचिन्यास—

- १ ॐ ह्रीं प्राणाय नमः । २ ॐ ह्रीं अपानाय नमः । ३ ॐ ह्रीं समानाय नमः । ४ ॐ ह्रीं उदानाय नमः ।

५ ॐ ह्रीं व्यानाय नमः । ६ ॐ ह्रीं नागाय नमः । ७ ॐ ह्रीं कूर्माय नमः । ८ ॐ ह्रीं कृकलासाय नमः ।
 ० ॐ ह्रीं देवदत्ताय नमः । १० ॐ ह्रीं धनञ्जयाय नमः ।

सहजगुणस्थापन—पृथिव्यादि तत्त्वोन्नीयान् कर्षा पृथ्वी आ मंत्रवडे प्रतिमायां महजातिगुणो स्थापन करमा—

“ ॐ नमो विश्वरूपाय अहंते केवलज्ञानदर्शनधराय ह्रूं ह्रीं सः सहजगुणान् जिनेशे स्थापयामि स्वाहा । ”
 ए मंत्रद्वारा सहजगुण स्थापनी अभिमन्त्रित श्वेत मल्लयी प्रतिमानुं आच्छादन करतु, उपर पुष्प अपन नावना, चंदन छाटतुं
 अने रत्न तथा फलमिश्रित सात धान्यनो प्रतिमाने अभियेक करतो (शगमीज १, व्रीहि २, कुलत्थ ३, जम ४, काग ५, उडद
 ६ अने सरसज, ए सात धान्यो प्रतिमा उपर वरमानना)

ए पृथ्वी नमीन वल्ल ओढाडेल ते प्रतिमानी न्यारे तरफ ४ श्वेत कलशो स्थापन करमा, कलशो जलमडे मरी अडर अडत,
 सुवर्ण, रूप्य अने मणि (पचरत्न), नावना, उपर चंदननु मिश्रयन करतुं, काठे पुष्पमालाओ पहेरावनी, घुले जयाराना पात्रो
 मूरुना अने चौगुणा रक्तध्वजा तातणे भरेला ८ तराकोना मंत्रमडे ते कलशो वाचना.

गहूना आठाना ४ कोडिया करी घी-गोली भरना अने तेमा दीपको प्रगटानी कलशोनी पासे सुंदर अक्षतनी दगलीओ करी
 तेनी उपर दीपको मूरुना, पासे शेलडी प्रमुख मंगलिक द्रव्यो मूरुना. ते पृथ्वी ७ सात-सारावां (कोडिया)मा भिन्न भिन्न प्रकारनो

विविध पक्वान्नमय कंद-मूल-मिश्र बलि (नैवेद्य) देवो, बलिना ७ सरावो नीचे प्रमाणे करवा—१-दूधपाकनो, २-गोलना पिण्डोनो. ३-खीचडीनो, ४-दहि अने भातना करंचानो, ५-सुहाली (सुवाली)नो, ६-शालिना भातनो अने ७ तलेल पिंडलिओ (घुठीया)नो, सरावोषां मेवो तेमज सुगंधीवास पुण्यो नांखवा.

ए पछी चवरी (चोरी) मांडवी, तेमां जवारा, वेदी, आदि ८ नंगलिक द्रव्यो स्थापन करां, चवरी अने वेदीने रक्तमूत्र बडे वोंटीने मजबूत करवी, चवरीना ४ खूणाओमां रक्षानिमित्ते बजरूपी ४ वाणो अथवा भालडिओ (नाना भालाओ) अखमने अभिमंत्रित करीने खोसवी.

ए पछी रूपलावण्यवती अने सुन्दरवेशवाली ४ अथवा ८ युवति सधवा स्त्रियोए चवरीना ४ नूणाओमां ४ कलथो स्थापन करावा, कलथोना मुखे गोलना पिंडो मूकवा अने गलासां सुहालीनी माला पहाराववी, पछी कांसांनी थालीमां राखेल (द्रव्य) ओ, दहि, अक्षत, तराक आदि उपकरणो सहित सुवर्णादि दान देती ते ४ अथवा ८ स्त्रियो रक्तमूत्रबडे स्पर्श करीने पुंखणां करे, साथेनी बीजी स्त्रियो मंगल गीत गावे, आ स्त्रियोनो वेप सारामां सारो होवो जोईये, आ पुंखवानी क्रिया करनारी स्त्रियोए यथाशक्ति सुवर्णादिदुं दान करवुं जोईये, जिनने पुंखनारी स्त्रियो कदापि काले वैधव्य अथवा दासिधपणाने पामती नथी. पुंखणां करनारी स्त्रियोने गोल लवण आदि आपीने तेमनो सत्कार करवो, एमना हाथे ज लूणपांणी अने आरति पण उतराववी.

ते पछी संघसहित चैत्यवन्दन करवुं, कथमान स्तुतिओ कहेवी, त्रण स्तुतिओ कळा पछी 'सिद्धाणं बुद्धाणं' कही श्री अधिवासनादेवतायै करेमि काउसगं, अन्नत्थ उससियेणं० १ लोगस्स सागरवरंगमीरा सुधीनो काउस्सग करी नमोऽह्वत्० कही-

“विश्वाऽशेष-सुखस्तुष्टु, मन्त्रैर्याऽजस्रमधिवसति वसतौ । साऽस्यामवतरतु श्री-जिनतनुमधिवासना देवी ॥१॥”

आ स्तुति करेयी, उपरात—

“प्रोत्फुल्लकमलहस्ता, जिनेन्द्रवरभवनसस्थिता देवी । कुन्देन्दुशखवर्णा, देवी अधिवासना अयति ॥१॥”

जा स्तुति र्हीने बाकीना देवताओना काउस्सगो करी स्तुतिओ कही चैत्यमन्दना मंणुण करवी.

आ प्रमाणे विधियी अधिनासित करीने भगवन्तने गन्ध-वृष-पुष्यादिक वासित अने सुन्दर पाभरेली मिद्रमशय्यामा (नमय-
छा जेयी कोमल रक्तास्तणगाली शय्यामां) पोढाडना अने उपर अभिमंत्रित रक्त वस्त्र ओढाडनु

पछी सात स्वसमय गीतो गाता, मंगल वायो वगाडता चतुर्विंश श्रीश्रमणमंथनी साथे धर्मजागरिका करवी इति
अधिवासना । ३

१ प्रतिष्ठा विधि:— ।

अधिवासना थया पछी केडलोक समय व्यतीत करवो, रात वीतीने सूर्योदय थइ गथा पछी प्रतिष्ठा करनी
पूर्वे जेमे मित्रोचाटन निमित्ते भूतवलिनो प्रक्षेप कर्यो तेम आ प्रमने प्रथम शान्तिगलि नाबीने पछी चैत्यमन्दनादिक

कार्यो करया

१ चैत्यमन्दनमा ३ ववमानस्तुतिओ कथा पछी श्री प्रतिष्ठा भेवतार्य करेनि राउस्सग गन्ध अउससिणणं ? लोगस्सं-
सागरवरगभीया सुधीनो काउस्सग करी, पारी नमोऽहंत दती—

ते पछी प्रतिमा उपरनुं वल्ल उठायी लईने सौभाग्यवती स्त्रीना वा कुमास्किना हाथमां आपनुं अने रूपानी वाटकीमां तैयार राखेल मधु-दृतरूप अंजनमां सोनानी शलाका भरी शुभ लग्न-नवमांसां 'ॐ अर्हन्' आ मंत्रनुं उच्चारण करवा पूर्वक जिनप्रतिमां 'नयनोन्मीलन' करुं, अर्थात् अंजनशलाका करी ज्ञानरूप नेत्र उघाडवां.

अंजनशलाका करीने दृष्टिना संतर्पण निमित्ते वृत तथा दक्षिनां पात्रो देखाडवां अने आरीसो पण देखाडवो, पछी "ॐ नमो भगवते अर्हते घातिक्षयकारिणे घातिक्षयोत्पन्नगुणान् जिने संस्थापयामि स्वाहा ।"

आ मंत्रवडे प्रतिमामां घातिकर्मक्षयोत्पन्न ? अतिशयनी स्थापना करवी.

ए पछी प्रतिष्ठाचार्य स्वमंत्रोच्चार पूर्वक देहरासरमां जइ भद्रपीठ उपर ज्यां प्रतिमा प्रतिष्ठित करवी होय त्यां मध्यभागे तेमज पूर्वादि दिशाओमां करावेल ९ खातोमां रत्नादि ५-५ द्रव्यो स्थापन करवां. ए ध्यानमां राखुं के अर्होयां द्वार तरफनी दिशाने पूर्वा अने सुष्टिक्रमे ते पछीनी आश्रेथ्यादि गणवानी छे,

द्रव्यो स्थापयवानी समजण— १-स्तनो पैकी पूर्वादिमां अनुक्रमे-१ हीरो, २ सूर्यकान्त, ३ नीलम, ४ महानील, ५

“ यदधिष्ठिताः प्रतिष्ठाः, सर्वाः सर्वास्पदेषु नन्दन्ति । श्रीजिनविभवं सा विशतु देवता सुप्रतिष्ठमिदम् ॥१॥

जइ सगणे पायले, अहवा खीरोदहिग्मि कमलवणे । भगवइ करेहि संति, सन्निज्जं सयलसंघस्स ॥२॥”

आ वे स्तुतिओ कह्या पछी बीजा देवताओना काउस्सग्ग करवा अने स्तव कह्या चाइ जयवीरयाय कही चैत्यवंदना समाप्त करवी.

મોતી, ૬ પુષ્પરાગ, ૭ પદ્મરાગ તથા ૮ વેદ્ય અને મધ્યગર્ભમા હીરક આદિ મર્મ
 ૨-લોહ પૈકી-પૂર્વાદિમાં ૧ સુવર્ણ, ૨ તામ્ર, ૩ કૃષ્ણલોહ, ૪ ગુ, ૫ રુપ્ય, ૬ પિત્તલ, ૭ ક્વાસુ, ૮ સીસું અને મધ્યમા
 યથોપલબ્ધ મર્મ.

૩-ઘાતુઓ પૈકી-પૂર્વાદિમા ૧ હસ્તિલા, ૨ મૈનશિલ, ૩ તુરી, ૪ સુવર્ણમાક્ષિક, ૫ પારો, ૬ સોનાગેરુ, ૭ ગન્ધક, ૮ અત્રક
 અને મધ્યમા ઉક્ત મર્મ.

૪-ઔષધિઓ પૈકી-પૂર્વાદિમા ૧ સ્વશ, ૨ વિષ્ણુક્રાન્તા, ૩ રક્તચંદન, ૪ કૃષ્ણાગુરુ, ૫ શ્રીલંકા, ૬ ઉત્પલસારિક, ૭ કુઠ,
 ૮ શંખપુષ્પી, અને મધ્યમા ઉક્ત મર્મ.

૫-ત્રીજો પૈકી-૧ ત્રીહિ, ૨ ગોધૂમ, ૩ તિલ, ૪ અહદ, ૫ મગ, ૬ જવ, ૭ નીચાર (વટી), ૮ શામો અને મધ્યમા ઉક્ત મર્મ ત્રીજો.
 સર્વસ્ત્રોના અભાવે ત્રીજો, સર્વલોહના અભાવે સુવર્ણ, સર્વ ઘાતુઓના અભાવે ટ્રતાલ, સર્વ ઔષધોના અભાવમા સહદેવી,
 (વિષ્ણુક્રાતા), અને મર્મત્રીજોના અભાવમા જવનો ઉપયોગ કરવો અથવા સર્વના અભાવમાં એકલો પારો સર્વ સ્વાહાઓમા
 મૂકવો, મધ્યગર્ભ ઉપર પાહુકેનલશિલા તથા સિંહાસન સહિત સોનાનો, ત્રાજનો અથવા માટીનો મેરુપર્વત સ્થાપિત કરવો.

ઉપર્યુક્ત વિધિ સ્થિર પ્રતિષ્ઠાની છે, જો પ્રતિષ્ઠા ચર હોય ત્યજીને કે પ્રતિષ્ઠાપ્ય પ્રતિમા આસન ઉપર ચર રાસવાની હોય તો
 ઉક્ત વિધિના સ્થાને આસને સ્તનગર્ભિત કુંભકારના ચક્રની માટી અને દર્મ, આ તે ત્રીજોનો જ વિન્યામ કરવો.

પીઠ ઉપર પૂર્વોક્તકારે સ્નાદિકનો વિન્યાસ કર્યા પછી મગવન્તને અભિમન્ત્રિતસ્થનો પહલો કરીને અધિવાસનામંડપમાથી

भद्रपीठ भद्रपीठ रत्न-रूपैया-पैसा उछालतां खाडाओने
वाडाओने सुत्रधारे भद्रपीठ उपरना
लह, लोकपालोने वलिषेप करी, 'जय' शब्दादि मंगलोच्चार पूर्वक वाजित्रीना नाद साधे ए शब्दो कहेना, लयसमय निकट
(गभारामां पवासन) उपर पधराववा, त्यां उत्तारती वखते 'स्थिरो भव' ए शब्दो करवी, प्रतीक्षा करवी, लग्नसमय निकट
पाटीआओशी हांकी प्रतिमाने वेसाडवाने-स्थिर करवाने योग्य रात्रं तेयारी करीने लगनी अने मुद्रिमां
आवतां सुत्रधारे प्रतिमा उपरनो पडदो दूर करवी अने आचार्ये मध्यमा आंगलीमां चंदन, अंगूठा-तर्जनीमां नासत्रणे अने मुद्रिमां
'ॐ अं ह्रीं' आ मंत्रवडे-१ मस्तक, २-३ जमणो-डातो प्रतिष्ठित करवी.

पुष्पाक्षत लेह श्रासतुं कुंभक करी प्रतिमाने मूलस्थाने प्रतिष्ठित करवी. ॐ अं ह्रीं आ मंत्रवडे-१ मस्तक, २-३ जमणो-डातो प्रतिष्ठित करवी.
रकंध, अने ४-५ जमणो-डातो जानु, आ पांच अंगो उपर वासादि निक्षेप करतुं, चंदनतुं तिलक करतुं अने—
"ॐ नमो अरिहंताणं । ॐ नमो सिद्धाणं । ॐ नमो आघरियाणं । ॐ नमो उबज्जायाणं । ॐ नमो लोण-
सन्नसहणं । ॐ नमो ओहिजिणाणं । ॐ नमो परसोहिजिणाणं । ॐ नमो सन्नवोहिजिणाणं । ॐ नमो अण-
सन्नसहणं । ॐ नमो केवलजिणाणं । ॐ नमो भवरथकेवलजिणाणं । ॐ नमो भगवओ अरहओ महई
न्तोहिजिणाणं । ॐ नमो केवलजिणाणं । ॐ नमो महाविज्जा वीरे वीरे महावीरे जयवीरे सेगवीरे वद्ध-
महावीरवद्धमाणसामिस्स सिद्धउ मे भगवई महई महाविज्जा वीरे वीरे महावीरे जयवीरे सेगवीरे वद्ध-
माणवीरे जये वियजे जयन्ते अपरा जिण अणिहए मा चल मा चल वृद्धिरे वृद्धिरे हूं हूं ह्रीं ह्रीं सः सः ओहिणि

माहिणि स्वाहा ।"
आ प्रतिष्ठांमंत्रे अथवा आचार्यमंत्रवडे चक्रमुद्राए प्रतिमां ३-५ वा ७ वार मन्त्रन्याम करे. " स्याचरे तिष्ठ तिष्ठ
" ॐ ह्रीं अहंन्मूर्तये नमः । " आ मंत्रे मंत्रन घुंरा देखाडी प्रतिमाने प्रतिबोधित करे, अने

स्वाहा।" आ मने जिनमुद्रा देखाडी पछी प्रतिमानु स्थिरीकरण करे. पछी, त्रेतुमुद्रा देखाडी जमुतीकरण करे अने " हू अस्त्राय हू फट् " आ अक्षरी गण्डमुद्राद्वारा दुःखनिम्नादिकरुं उच्छेदन करे पछी मीभाग्यमुद्रापूर्वक प्रतिमासा सीभाग्य स्थापे.

नामस्थापन-ए पछी प्रतिष्ठित जिननु रूपम आदि कोड पण एक नाम प्रतिष्ठित करी गत्र-पुण्यादिके पूजा करनी, रूप उखेनयो. अने नमस्कार मुद्राए नमस्कार करयो.
ते पछी देवकृतातिशय, प्रादिये, यत्र, गणेश्वरी, अंबेकर, मृगदंड, मन्वान प्राकारत्रय, नादिनी नीचे लम्बेला तेना तेना मंत्राडे स्थापना करनी—

१. ॐ नमो भगवते अहंते मृगकृतानिडागान् जिनमंत्रशरीरे स्थापयामि स्वाहा । ० ॐ नमो भगवते अहंते अमिआउसा जिनस्य प्रातिहार्याष्टकं स्थापयामि स्वाहा । ३ ॐ मद्बोधवगय स्वाहा । ४ ॐ नमो भगवते शासनद्वयै स्वाहा । ५ ॐ धमेचक्राय स्वाहा । ६ ॐ नृगदंडाय स्वाहा । ७ ॐ रत्नध्वजाय स्वाहा । ८ ॐ नमो भगवते अहंते जिनस्य प्राकारादित्रय स्थापयामि स्वाहा ।

ए पछी प्रथम-अध्यामनाना प्रसंगे कर्षी तेम ५ जया ८ यथा स्त्रियो ढाग पुत्राणा रगमया, लृणपाणी उतरात्रु अने आरती मंगलार्दानो करामो.

पछी आचार्ये चतुर्विध श्रमण संघ महित देमंडन करु देमन्दनमा नर्दनी ३ स्तुतिओ कथा पछी सिद्धाण तुद्दानं०

कही श्री प्रतिष्ठादेवतायै करेमि काउसगं, अनत्थ० ? लोगससागसरगंभीरा सुधीनो काउसग करी, पारी, नमोर्हतं कही—
॥१॥”

कही श्री प्रतिष्ठादेवतायै करेमि काउसगं, अनत्थ० ? लोगससागसरगंभीरा सुधीनो काउसग करी, पारी, नमोर्हतं कही—
॥१॥”

“अष्टविष्टिताः प्रतिष्ठाः सर्वाः, सर्वासंघेषु नन्दन्ति । श्री जिनविम्बं सा विद्यातु, देवता सुप्रतिष्ठामिदम् ॥१॥”

“ए स्तुति कहीने श्री प्रवचनदेवतायै करेमि का० अनत्थ० ? नो० काउ० नमोर्हतं कहीने—
“जइ सगो पायाले, अहवा खीरोदहिम्मि कमलवणे । भयवइ करेहि संति, सन्निज्झं सयलसंघस्स ॥१॥”

“ए स्तुति कहीने श्री सिद्धायिकायै करेमि काउ० अनत्थ० ? नो० काउ० नमोर्हतं कहीने—
“जइ सगो पायाले, अहवा खीरोदहिम्मि कमलवणे । भयवइ करेहि संति, सन्निज्झं सयलसंघस्स ॥१॥”

“अष्टविष्टिताः प्रतिष्ठाः सर्वाः, सर्वासंघेषु नन्दन्ति । श्री जिनविम्बं सा विद्यातु, देवता सुप्रतिष्ठामिदम् ॥१॥”

“ए स्तुति कहीने श्री प्रवचनदेवतायै करेमि का० अनत्थ० ? नो० काउ० नमोर्हतं कहीने—
“जइ सगो पायाले, अहवा खीरोदहिम्मि कमलवणे । भयवइ करेहि संति, सन्निज्झं सयलसंघस्स ॥१॥”

“अष्टविष्टिताः प्रतिष्ठाः सर्वाः, सर्वासंघेषु नन्दन्ति । श्री जिनविम्बं सा विद्यातु, देवता सुप्रतिष्ठामिदम् ॥१॥”

“ए स्तुति कहीने श्री प्रवचनदेवतायै करेमि का० अनत्थ० ? नो० काउ० नमोर्हतं कहीने—
“जइ सगो पायाले, अहवा खीरोदहिम्मि कमलवणे । भयवइ करेहि संति, सन्निज्झं सयलसंघस्स ॥१॥”

कल्याण-
कलिका
खं० २ ॥
॥ ३९ ॥

“ज्ञानादिगुणयुतानां, नित्यं स्वाध्याय संयमरतानाम् । विदधातु भवनदेवी, शिबं सदा सर्वसाधूनाम् ॥१॥”
“जीसे खित्ते साइ दंसणनाणेहिं चरणसन्धिण्हिं । साहेति मुक्खमग्गं, सा देवी हरउ इरियाइं ॥१॥”
“अष्टविष्टिताः प्रतिष्ठाः सर्वाः, सर्वासंघेषु नन्दन्ति । श्री जिनविम्बं सा विद्यातु, देवता सुप्रतिष्ठामिदम् ॥१॥”
“ए स्तुति कहीने श्री प्रवचनदेवतायै करेमि का० अनत्थ० ? नो० काउ० नमोर्हतं कहीने—
“जइ सगो पायाले, अहवा खीरोदहिम्मि कमलवणे । भयवइ करेहि संति, सन्निज्झं सयलसंघस्स ॥१॥”

जह मिद्धाण पड्ठा, निलोय चूडामणिम्मि मिद्धिणप । आचदस्वरिय तह, होइ इमा सुप्पड्ठत्ति ॥१॥
 जह मिद्धाण पड्ठा, निलोय चूडामणिम्मि मिद्धिणप । आचदस्वरिय तह, होइ इमा सुप्पड्ठत्ति ॥२॥
 जेविज्जगकप्पाण, सुपड्ठठा वणिणया जहा समण । आचदस्वरिय तह, होइ इमा सुप्पड्ठत्ति ॥३॥
 जह मेहस्स पड्ठठा, असेससेलाण मञ्जयारम्मि । आचदस्वरिय तह, होइ इमा सुप्पड्ठत्ति ॥४॥
 कुलपव्वयाण चक्खार-वट्ठवेयड्ढुदीहियाण च । क्खडाण जमग-कचण-चित्त-विचिताडयाण च ॥५॥
 अजणग-रुयग-कुडल-माणुस-इसुयारमाडयाण च । सेलाण जह पड्ठठा, तह एसा होइ सुपड्ठठा ॥६॥
 जह लवणस्स पड्ठठा, असेसजलहोण मञ्जयारम्मि । आचदस्वरिय तह, होइ इमा सुप्पड्ठत्ति ॥६॥
 जह लवणस्स पड्ठठा, असेसजलहोण मञ्जयारम्मि । आचदस्वरिय तह, होइ इमा सुप्पड्ठत्ति ॥७॥
 कुड्डाण दहाण तह, महानईणं च जह य सुपड्ठठा । आ कालिगी तहेसा, वि होउ निच्च तु सुपड्ठठा ॥८॥
 जवुदीवार्इण, दीव समुद्धाण सव्वकालभि । जह एयाण पड्ठठा, सुपड्ठठा होउ तह एसा ॥९॥
 यम्मा यम्मागासत्थि-कायमइयस्स सव्वलोयस्स । जह सासया पड्ठठा, एसा वि तहेव सुपड्ठठा ॥१०॥
 पचण वि सुपड्ठठा, परभिदीण जहा सुए भणिया । नियया भणाइनिहणा, तह एसा होउ सुपड्ठठा ॥११॥
 तह पवयणस्स गमभंग-हेउ-नय-नीड कालकलियस्स । जह एयस्स पड्ठठा, निचा तह होउ एसा वि ॥१२॥
 तह सय-नराहिव-जणवयाण रज्जस्स तह यठाणस्स । गोदूटीण सव्वकालमि, सासया होउ सुपड्ठठा ॥१३॥
 इय एसा सुपड्ठठा, युन्देवजईहि तह य भविण्हि । निउणं पुट्ठठा सवेण, चैव कप्पट्ठिया होइ ॥१३॥
 कार्यविशेषमा प्रवृत्ति करनार बुद्धिमात् मनुष्य मगल शब्द साभलीने जेम पोताना इट्ठ कार्यनी मिद्धिमा ते शुभ शकुन-

तथा गरुः

गणे छे ते ज प्रमाणे बुद्धिमान् मनुष्योए प्रतिष्ठाना अन्तमां भणती आ मंगलायाओने सांभलीने प्रतिष्ठानी सिद्धि
 लतानी बुद्धि-करवी अने धान्य अंजलिने भगवंत सामे प्रक्षेप करी ह्ये प्रदक्षित करतो जोइये.
 ए पढी प्रतिष्ठाचार्ये नीचे प्रमाणे प्रतिष्ठानुप्रसभित देशना करवी—
 राग्या चलेण चडूइ, जसेण घचलेइ सचल दिखि भाए। पुणं वडूइ चिउलं सुपहट्टा जस्स देसस्मि ॥१॥
 उचहणइ रोगमारि, दुब्बिमखं हणइ कुणइ सुहभावे। अणुमंथंति पहदिणं, सव्थे सुहभाहणो हुंति ॥३॥
 जिणविंघवपइठं छे, करिंति तह कारधिंति असोए। जं लगइ तं महलं, दुग्गइजणं सारयं ठाणं ॥५॥
 दव्वं तसेव अणइ, जिणविंघ पइठंणाइकज्जेसु। पायेह जेण जारअरण-चड्डियं सारयं ठाणं तथा महापारीने
 एवं नाज्जण सया, जिणवरविंघस्स कुणइ सुपइठं। पायेह जेण जारअरण-चड्डियं सारयं ठाणं तथा महापारीने
 भा०टी०—जे राजाना देशमां विधिपूर्वक प्रतिष्ठा आय छे (१) भावथी क्कामो उत्तम प्रतिष्ठा सन्लोकना रोग तथा भक्तिशी जिनप्रति-
 उज्ज्वल बनाने छे अने त्यां विपुलपुण्यनी वृद्धि आय छे (२) भावथी क्कामो उत्तम प्रतिष्ठा सन्लोकना रोग तथा भक्तिशी जिनप्रति-
 दूर करे छे, दुभिक्ष-दुष्कालनो नाश करे छे अने सुभिक्ष आदि शुभ यानेनो वधाओ करे छे (३) द्रव्य ते ज गरुड ऋहेणय के जे
 मानी प्रतिष्ठा करे छे, फरावे छे अने नित्य अनुभोदे छे ते सर्व सुखता मानी आय छे (३) द्रव्य ते ज गरुड ऋहेणय के जे
 जिनप्रतिष्ठा-प्रतिष्ठाना कामोमां लागे छे, ए शिवायहुं धन दुर्गतिमां लइ जनाहं छे; एम जार्णाने जिनेश्वरानी प्रतिष्ठाओनी
 उत्तम प्रतिष्ठा सदाकाल करी करानो के जेथी जरा-अणरहित श्वाथतपरने प्राप्त करी शहो! (१-५)

ए पृथी सुलोद्घाटन करीने नीचेना मंत्रे अभिमंत्रित करीने शान्तिमलिनो प्रक्षेप करवो.

“ ॐ नमो भगवते अहंते शान्तिनाथस्वामिने सकलातिशेषमहासप्तसमन्विताय त्रैलोक्यपूजिताय नमो नमः शान्तिदेवाय सर्वोमरसुममूहस्वामिसपूजिताय सुवनपालनोद्यताय सर्वदुरितविनाशनाय सर्वाऽशिवप्रशमनाय सर्वदुष्टग्रहभूतपिशाचमारिशकिनीप्रमथनाय नमो भगवति जये विजये अजिते अपराजिते जयन्ति जयवहे सर्वसद्यस्य भद्रकल्याणमगलप्रदे साधूनां श्रीशान्तिपुष्टिदे स्वस्तिदे भव्याना सिद्धि-वृद्धिनिर्वृत्तिनिर्याणजनने सस्वानामभयप्रदानरते भक्ताना शुभावहे सम्यग्दृष्टीनां घृतिरतिमतिबुद्धिप्रदानो-न्यते जिनशासनरताना श्रीसम्यक्कीर्तियशोधर्षिनि रागजलज्वलनविषघरदुष्टज्वरव्यन्तरराक्षसरिपुमा रिचौर-ईतिश्वापदोपमर्गादिभ्येभ्यो रक्ष रक्ष कुरु कुरु शान्ति कुरु कुरु तुष्टि कुरु कुरु पुष्टि कुरु कुरु ॐ नमो नमः ॐ हूं हूं क्षः ह्रीं फट् फट् स्वाहा ॥ ”

ए पृथी सघादिपूजा, दीनानाथादिदान, वदिवन्धमोक्ष, आदि प्रसंगोचित कार्यों करवा के जे शामनोन्नतिना अग वने, स्वजननर्ग अने साधर्मिकवर्गने निपे विशेष वात्सल्य देखाडु.

प्रतिष्ठा पृथी अष्टाह्निक-महोत्सव करवो, देश, काल के कार्यवशात् तेम न बनी शके तो त्रण दिवसो तो अवश्य उत्सवमां व्यतीत करवा आशयककार्य होय तो प्रतिष्ठाना दिवसे, अन्यथा गीजा दिवसे विशेषपूजा करी, लोकरपालने पूजी, सोहागण स्त्रीयोना मगलगीतो पूर्वक “ ॐ हूं हूं क्ष्वी स’ आ मंत्रना उचार पूर्वक करुणो डोडवां

ते पळी नन्दावर्तनी पासे जह् ग्रथप विसर्जनार्थक अर्घ आपवो, पळी पूर्वाक्तन्याये भोगागो संहरीने देवने विषे जोडी संहार शुद्धाए " स्वस्थानं गच्छ गच्छ " आ मंत्रवडे पूजाने खंची मस्तके चढावी पूरक द्वारा—" क्षमस्व " आम चोलीने तेतुं हृदयकमलमां विसर्जन करतुं.

कंकणमोचन अने नन्दावर्तविसर्जनना प्रसंगे पण प्रतिमाने घृत, दूध, दधि आदिथी न्दवराधीने शुद्ध जले भरेला १०८ माटीना चारको (न्दाना कलशाओ) वडे अभिषेक करवो.

ते पळी प्रति महीने प्रतिष्ठानी तिथि आवे त्यारे उपर प्रमाणे स्नात्र करावतुं, वर्ष पूरुं थाय त्यारे अष्टाहिका महोत्सव पूर्वक विशेष पूजा करीने दीर्घायु निमित्ते गाठ वांचवी अने कल्याणना अभिलाषी भाग्यशाली गृहस्थे सदा सावधान रहिने अधिकाधिक विशेष पूजादिक भक्ति करवी. इति पादलिप्तोक्त विष्वप्रतिष्ठापद्धति.

अथ संक्षिप्त-प्रतिष्ठाविधि (पादलिससूरीया)

इय सत्सिचिहवसत्ताणु-सारओ वणिणआ पड्डाड । विहवाभावो इयं कुज्जा ॥१॥
भा०टी०—उपर प्रमाणे शक्ति विभव अने सत्त्वने अनुसरीने प्रतिष्ठा विधि वर्णवेल छे, जेनी पासे विभव अने शक्तिनो अभाव होय ते निष्कण्ट परिणामी गृहस्थ नीचे प्रमाणे करे—

पुहइमयं पिह्नुअंगुठ-मेत्तयं तणकुडाए चिसुओ य । सुइभूओ जिणबिंबं, ठविज्ज इमिणा विहाणेण ॥२॥
संसारविरागमणो, गरहानिंदाजुगुच्छियप्पणो । काऊण भावंसंगल-पंचनसुक्काररुवं तु ॥३॥

भा०टी०—संसार उपर अनासक्तमनवालो, आत्मसाक्षीए अने गुरु साक्षीए पोतानी भूलोने पश्चात्प करनारो गृहस्य पृथ्वीमय (माटीना) एक अंशुष्ठ प्रमाण जिनविचने चाल श्रद्धिपूर्वक पंचनमस्कार पाठरूप भावमंगल करीने घासनी झुंपडीमा पण प्रतिष्ठित करी शके. २-३

कलसाईणमभावे, विरहे तह सेसमंगलाण च । पचनमुक्कारोचिप, भावोत्तममंगलं नियमा ॥४॥

भा०टी०—कलश आदिना अभाजनां तेजद्वीजा मगलोना विरहमां पचपरमेष्ठिनमस्कार ज नियमा करीने उत्तम, भावमंगल हे

पञ्जत्तमिणं नियमा, मायालोहेहि चिप्पमुक्कस्त । पचनमाक्कारेणं, ज कीरई मगलाईय ॥५॥

भा०टी०—जे कण्ट अने लोभे करी मुक्त छे तेवो श्रद्धितहीन केवल पंचनमस्कार वडे मंगल आदिक कार्यो करे ते तेने नियमा संपूर्ण समजवा ५.

संवत्य भावमंगल-पचनमाक्कारपुन्वियया किरिया । कायव्या जिगविनाण, संवभावेण सुपइट्टा ॥६॥

भा०टी०—सर्वत्र भावमंगल-पंचनमस्कारापूर्वक क्रिया करवी अने जिनविचोनी उतम प्रतिष्ठा सर्वभावथी पचनमस्कार पूर्वक ज करी, ६.

इय सामन्नपहटा-विहाणमेयं समासओ भणिंयं । इण्हि भणिमो लिप्पाह-याण अचलाण पडिमाण ॥७॥

भा०टी०—उपर प्रमाणे आ सामान्य प्रतिष्ठा-विधान कथुं, हर्षे 'लेमपय' आदि अत्र-प्रतिमाओतुं प्रतिष्ठा-विधान

लेपमयप्रतिष्ठा-प्रतिष्ठाविधि—

कहीये छीये.

कल्याण-
कलिका
खं० २ ॥

॥४२॥

लेपमय प्रतिष्ठा एटले शास्त्रोक्तरीतिथी वज्रलेप बनावी ते वडे तैयार करेली प्रतिष्ठा, आवा प्रकारनी प्रतिष्ठाओ देवालयना गर्भगृहना मूल आसन उपर ज मांडनामां आवती अने धीरे धीरे पूर्ण थई सुकाई जती त्यारे ते ज स्थले ते उपर प्रतिष्ठां विधान करवामां आवतुं, तेवी प्रतिष्ठाओ त्यांथी आवी पाछी करी शकती नहिं, तेथी ते 'अचलप्रतिष्ठा'ओ कहेवाती हती,

प्रथम भूतबलिषेप पूर्वक चैत्यवन्दन तथा देवताओना कायोत्सर्गो करी प्रतिष्ठाचार्य पोतातुं तेमज इन्द्रादिक स्नात्रकारोतुं सकलीकरण करतुं.

ते पछी अभिषेकनी सर्व सामग्री तैयार करी स्नानमंडपमां गोठवची. स्नानमंडपनी पीठिका उपर शुद्ध अने स्वच्छ एक दर्पण (मोटो आरीसो) एवी रीते गोठवचो के लेपमय प्रतिष्ठा तेमां प्रतिविविध थई जाय, दर्पणमां प्रतिविविध प्रतिष्ठा उपर पूर्वोक्त विधिथी सर्व अभिषेक करवा अने चंदनना हांटा नांखवा, तथा चंदनविलेपनादि करतुं. वाकीनी 'अधिवासनानो वासक्षेप, प्रतिष्ठानो वासक्षेप, शुद्धापूर्वक सौभाग्यादि मंत्रोनो न्यास' आदि तमाम क्रियाओ मूल लेपमय प्रतिष्ठाओ उपर करची.

चित्रित तीर्थपट्ट, चित्रप्रतिष्ठा, के चित्रितयंत्रपट्टेनी प्रतिष्ठा विधि पण लेपमय प्रतिष्ठांनी जेम ज आरीसामां प्रतिविविध लेहने करची. अभिषेक, चंदनविलेपनादि प्रतिविविध उपर अने वासनिक्षेपादिक मूल वस्तु उपर करवा. इति लेपप्रतिष्ठा प्रतिष्ठाविधि ।

सरस्वत्यादि प्रतिमा प्रतिष्ठा—

पूर्वनी जेम महलादिक कार्यो करीने पोल पोताना मत्रयेड मग्वती जाडि प्रतिमाओनी प्रतिष्ठा करवी सरस्वत्यादिसमस्तरीयावृत्तार आदिनो अधिवासनामत्र— “ॐ क्षु नमः” प्रतिष्ठामत्रः— “ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं नमः ।” अते सौभाग्यमत्रः— “ॐ जये श्रीं ह्रीं सुभद्रे डं स्वाहा ।” ए०३.

विशेषविचरण नीचे प्रमाणे छे—

(१) “ॐ ड ह्री श्री ह्री इ सरस्वति । अवतर अवतर तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा ।”

(२) “ॐ ह्री माणिभद्रयक्ष ! अवतर अवतर तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा ।”

(३) “ॐ ह्रीं व ब्रह्मशान्ते ! अवतर अवतर तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा ।”

(४) “ॐ ह्रीं अ अम्बिके ! अवतर अवतर तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा ।”

प्रतिष्ठाररुनी जवावदारी—

एवमनेन विधिना यथावत् विज्ञाय अभ्यस्य च अभिमानादिरहितेनार्येण प्रतिष्ठार्थादक कर्तव्यमन्यथाकरणे भवपातः । तथा चोक्तम्—

अत्रियाणिज्जण य चिद्धि, जिणचिन्त जो ठवेड षडमणो । अट्टिमाणलोहजुत्तो, निचडड ससारजलहिम्मि ॥१॥
भा०३०—एम ए विधिथी यथार्थ रहस्य समजीने—अभ्यास करीने अभिमानादिरहित एसा आर्यप्रकृतिना आचार्ये

प्रतिष्ठादि कार्यो कश्चां. विपरीतपणे करताथी संसार भ्रमण थाय छे, शाल्क्षमां कहुं पण छे, 'विधिने पूरी रीते जाण्या विना अभिमान अने लोभने वश थइ जे मूढ मननो मनुष्य जिनप्रतिष्ठानी प्रतिष्ठा करे छे ते संसारसमुद्रमां पडे छे.'

! इति पादलिप्तनिवम्रप्रतिष्ठाविधिः समाप्तः ॥

पादलिप्तप्रतिष्ठाकल्पमूलम्—

क्नाउं खेचविसुद्धिं, मङ्गलकोउयजुयं मणभिरामं । वर्युं जतथ पड्डा, क्नायव्वा वीयरायस्स ॥१॥
सुरविजाए सुइणा, पंचंगान्नद्धपरियरेण चिसा । निसिऊण जहाठाणं, दिसिदेवयसाइए सव्वे ॥२॥
एवं सन्नद्धगतो य, सुई दक्खो जिइंदियो । सियवत्थपाउरंगो, पोसहिओ कुणइ पइइं ॥३॥
उइयदिरासु धिणिवेसियस्स दक्खिणभुयाणुमणेण । उत्तमसियवत्थविहूसिएण, कयसुकयकम्भेणं ॥४॥
मज्झे य नसेयव्वं नंदावज्जं (त्तं) जवंकुसं सुमाणवज्जं । तस्सोवरि इविजा, णडिमा देवस्स इत्था(च्छा)ए ॥५॥
मज्झे निरंजणजिणो, पुव्वावरदाहिणोत्तरदिसासु । तह सिद्ध-मूलवज्जाय-साहू-सुति-रयणतियनासो ॥६॥
केसरनिलथे तह मायरो य मरुदेवि विजयसेणा य । सिद्धत्था तह मंगल, सुसीम पुहवी य लभ्खणया ॥७॥
रामा नंदा विण्हू जयसामा सुजसमुव्वयाअइरा । सिरिदेवी य पहावइ, तत्तो पउमात्रइ वप्पा ॥८॥
सिव वग्गा तिसलावि य मायाए नामरूवाउ । ॐ नमो पुव्वं अन्ते साह चि तओ य वत्तव्वं ॥९॥
लोक्यंतियदेवाणं, तत्तो चउवीसपरिणो नसिइं । सगमन्तेहिं विहिणा, सोलसविज्जागणो य तओ ॥१०॥

पुनोचराड रोहिणी, पन्नति वजसकला तह य । वज्रकुर्मी य अप्यडि-वधा तह पुरिसदत्तो य ॥११॥
 काली य महाकाली, गोरी गन्धारी जालमाला य । माणनि नइरोड्डाज्जुत्ता माणसि महामाणमी चैव ॥१२॥
 वेमाणिया य देवा ततो य चउब्बिहा संदेयीया । इंदाइ दिसाड(हि)वई नसेज्ज नियएहि मंतेहि ॥१३॥
 दारे य ठाड सोमो यमो य वरुणो य तह कुमेरो य । हत्यंसु वहर-घणुदण्ड-धामगयगाहिणो तह य ॥१४॥
 मक्को य जिणामन्नो, णाणांदावा जहोड्डिया नारे । पडिहागे त्रिय तुवट संतो पणनो तओ माहा ॥१५॥
 एव नमित्ठ सन्न, पुज्जेओ चिविहगन्धमल्लेहि । नसियव्वो पञ्चगो, मतो पडिमाइजत्तेण ॥१६॥
 मत्तसनमधमलवत्थेण, ठाइ वामपुष्फधूपेणं । अहिनासिअ तिनिवाराउ मृशिणा मृरिमन्तेण ॥१७॥
 चत्तारि पुरो कलसा सलिलकवयरुणयरुप्यमणिगम्भा । नरकुमुमदाम कण्ठो-नसोहिया चन्दणविलिच्चा ॥१८॥
 जववारयसयत्ताइधट्टिया रयणमालियाकलिया । सुहणुणचत्तचउततुगोत्थया होंति पासेसु ॥१९॥
 मंगलद्रीवा य तहा, धयगुलपुण्णा तहैवमुत्तकवाय । नरन्नअक्खयविचिच्च-सोहिया तह य कायव्या ॥२०॥
 ओसहिफलत्थसुण्णरयगुत्ताइयाइ चिन्दिवाइ । अन्नाडवि गरुय सुदंसणइ दब्बाई निमलाड ॥२१॥
 चित्तमलिगन्धमल्ला, विचिच्चसुमाइ चित्तासाइ । विन्दिवाइ वन्नाइ, सुहाड रूमाड उग्गेह ॥२२॥
 चउनारीओमिणणं, नियमा अहियासु नत्थि उ निरोहो । नेयत्थ च इमामि, ज पनर तं इह सेय ॥२३॥
 दिक्खित्तयज्जिण ओमिणणा, दाणाइ मसत्तियो तहेयमि । वेहन्न टालिह, न होड कड्यानि नारीण ॥२४॥

आरत्तियमवयाराण-संगलदीवं च निम्मितं पच्छा । चउनारीहि निम्म(त्य)च्छणं च विहिणा उ कायन्वं ॥२५॥
 वन्दितुं चेइयाइं, उस्सगो तह य होइ कायन्वो । आराहणानिमित्तं पवयणंदेवीए संघेण ॥२६॥
 विश्वाशोपसुवस्तुए, सन्धैर्याजसमधिवासति वसतो । सास्यामत्रतरु श्री-जिनतनुमधिवासना देवी ॥२७॥
 प्रोत्फुल्लकमलहस्ता, जिनेन्द्रवरभवनसंस्थिता देवी । कुन्देन्दुशह्वर्णा, देवी आधिवासना जयति ॥२८॥
 इय विहिणा अहिवासेज्ज, देवधिवं निसाए सुद्धमणो । तो उगगयम्मि सरे, होइ पइडा समारम्भो ॥२९॥
 कल्लणसलायाए, महुघयपुणाए अञ्छि उग्घाडे । अण्णेण वा हिरण्णेण, नियजहसत्तिविहवेण ॥३०॥
 तो चेइयाइं विहिणा वंदिज्जा सयलसंघसंजुतो । परिवड्डहमाणभावो जिणदेवे दिन्नदिट्ठीओ ॥३१॥
 तत्तो चिय पवयणदेवयाए पुणरवि करेज्ज उस्सग्गा । आराहणथिरकरणट्ठयाए परमाए भचीए ॥३२॥
 यद्दधिष्ठिताः प्रतिष्ठाः, सर्वाः सर्वास्पदेषु नन्दन्ति । श्रीजिनधिवं सा विशतु, देवता सुप्रतिष्ठमिदम् ॥३३॥
 जइ सग्गे पायाले, अहवा खिरोदहिम्मि कमलवणे । भयवइ करेहि संति, सन्निज्जं सयलसंघस्स ॥३४॥
 अट्ठविहकम्मरहियं, जा वन्दइ जिणवरं पयत्तेण । संघमस हरउ दूरियं, सिद्धा सिद्धाया देवी ॥३५॥
 वंदितुं चेइयाइं, इमाइं तो सरभसं पढेज्जा । सुमंगलसाराइं तह थिरत्तसारेण तिद्धाइं ॥३६॥
 जह सिद्धाण पइट्ठा, तिलोयचूडामणिम्मि सिद्धिपे । आचन्दम्मरियं तह, होइ इमा सुपइट्ठत्ति ॥३७॥
 भेविज्जगकण्णं, सुपइट्ठा वणिण्या जहा समए । आचन्दम्मरियं तह, होइ इमा सुपइट्ठत्ति ॥३८॥

अह मेरुस पडटा, असेससेलाण मञ्जयारीमि । आचदयूरिय र्ह, होइ इमा सुपइठ्ठि ॥३९॥
 कुलपव्वयाण उक्खावइवेयइठ्ठिदीहियाणं च । कुडाण जमग-कंचण-चित्त-विचिताहयाण च ॥४०॥
 अज्जग-लम्मा-कुण्डल-माणुस-इसुयारमाइयाण च ; सेलाण जह पढा, तह एसा होइ सुपइठ्ठा ॥४१॥
 जह लवणस्स पइठ्ठा, असेसजलहीण मञ्जयारीमि । आचन्दमरियं तह, होइ इमा सुपइठ्ठिचि ॥४२॥
 कुडाण दत्ताणं तह, महानईणं च जह य सुपइठ्ठा । आरुलिंगी तेसा, नि होउ निचं तु सुपइठ्ठा ॥४३॥
 जम्बुदीवार्हेणं, दीवसमुद्दाण मव्वकालंमि । जह एयाण पडटा, सुपइठ्ठा, होउ तह एसा ॥४४॥
 घम्माधग्मागासतिय-कायमइयस्स मव्वल्लोयस्स । जह सामया पडटा एमावि तहेव सुपइठ्ठा ॥४५॥
 पंचव वि सुपइठ्ठा, परमेठ्ठीण जहा सुए भणिया । नियया अणाइणिहणा, तह एसा होउ सुपइठ्ठा ॥४६॥
 तह पव्वयणस्स गम-अंग-हेउ नयनीइमालकलियम्म । जह एयस्स पडटा, निन्चा तह होउ एसा वि ॥४७॥
 तह संघ-नारीहिव-जणधयाण रज्जस्स तहय ठाणस्स । भोदठिए सव्वकालेपि, मामया होउ सुपइठ्ठा ॥४८॥
 इय एसा सुपइठ्ठा, गुरेदेवजईहि तहय भक्किहि । निउणं पुट्ठासद्धवेण, चेम रुप्पट्ठिआ होइ ॥४९॥
 सीउ मगलसह, सउण ति जहेम इट्ठिसिद्धिचि । एत्थं पि तहा सम्म, नायंञ्च तुद्धिमतेहि ॥५०॥
 रायानलेण वइडड, जसेण धवलेइ सयलदिसिभाए । पुण्ण उद्धइ विउलं, सुपइठ्ठा जस्स दंमग्मि ॥५१॥
 उनहणइ रोगभारी, दुग्ग्मिक्ख हणड कुणड सुहभावे । भावेण कीरमाणा, सुपइठ्ठा मयल्लोयस्स ॥५२॥

जिणविभ्रपइदं जे, करिंति तह कारविंति भचीए । अणुमण्णन्ति पइदिणं, सब्बे सुहभाइणो होंति ॥५३॥
दब्बं तमेव यण्णइ, जिणविंनपइदठणंमि भण्णानं । जं लग्गइ ते महलं, दोग्गइजणणं हवइ सेसं ॥५४॥
एवं नाऊण सया, जिणवरविभ्रसस कुणह सुपइदं । पावेह जेण जसमरण-यज्जियं सासयं ठाणं ॥५५॥
सचीए सङ्खपूया, विसेसपूया य चहुगुणा एसा । जं एस सुए भणिओ, तित्थयराणंतरो सङ्खो ॥५६॥
गुणससुदओ य संबो, पचयण तित्थंति होइ एगट्ठा । तित्थयरोवि य एयं, नमए सुहभावओ चैव ॥५७॥
तपुञ्चिया अरहया, पूइयपूया य त्रिणयक्रमं य । कयक्किओ वि जह कंहे, कंहेइ नमए तहा तित्थं ॥५८॥
एयंमि पूइयंमि, नत्थिं तयं जं न प्रइयं होइ । सुवणेवि पूयणिज्जं, न पुण ठाणं जओ अन्नं ॥५९॥
तपूयापरिणामी, हेदि महाविसयमो सुणेयव्वो । तद्देसपूयणम्मि वि, देवयपूयाइ नाएण ॥६०॥
आसन्नंसिद्धियाणं, लिंगसिणं जिणवरेहिं पन्नत्तं । संधंमि चैव पूया, सामन्नेणं गुगानिहिम्मि ॥६१॥
एसा य महादानं, एस चिय होइ भावसन्नत्ति । एसा गिहत्यसरो, एमच्चिय सम्पयामूलम् ॥६२॥
एईए फलं एयं, परमं निव्याणमेव नियमेग । सुरनरसुहाइं अणुसंगियाइं इह किसिपलालं व ॥६३॥
कयमेत्थ पसंगेणं, उत्तरकालोइयं इहाडणं पि । अणुरूवं कायन्वं, तित्थुन्नइक्कारंगं नियमा ॥६४॥
जेइओ जणोवयारो, विसेसओ णवर सयणवर्गमि । साहम्मिय वग्गम्मि य, एयं खलु परमवच्छइ ॥६५॥
अदठाहिया य महिमा, सम्मं अणुवन्नसहि्या केइ । अहवा तित्थि य दिवहे, निओगओ चैव कायव्वा ॥६६॥

अट्ठाहियास्राणे, पडिस्मरोभुयणमेव कायव्व । भूपत्रलिदीगदाण, एत्थंपि समत्तिओ कुजा ॥६७॥
 इय सच्चिव्हवसत्ताणुसारओ नणिया पइट्ठा उ । विहवाभावामचीए असठभाओ इय कुजा ॥६८॥
 पुइइसय पिहु अट्ठुट्ठ-मेत्तय तणकुडाए विसुओ य । सुइभूओ जिणनिं, ठमिज्ज इमिणा विहाणेण ॥६९॥
 ससारत्रिसागमणो, गरहानिदालुगुण्णियप्पाणो । काऊण भावमगल, पचनमुकारूव तु ॥७०॥
 कासम्म य कुसुमेहि, पुण्ह उ मुरहिउसुमनिर्हम्मि । कारिज्ज पइट्ठ परम-भत्तिवहुमाणमंयुत्तो ॥७१॥
 कलमार्तणमभावे, निरहे तह सेममंगलाण च । पञ्चनमुकारो चिय, भावोत्तममगल नियमा ॥७२॥
 पल्लत्तमिण-णियमा, मायालोहेहिं विप्पमुक्कस्स । पञ्चनमुकारेण, ज कीरुड मगलाईय ॥७३॥
 सब्वत्थ भावमगल-पच नमोव्वापुव्विया क्रियया । कायव्वा जिणत्रिसाण, सब्वभावेण सुपइट्ठा ॥७४॥
 मणिरुयमुन्नरीरी-पडिम पाहाणणिम्मिए श्रुण्णे । जो ठमइ भत्तिजुत्तो, तस्स दुंहं नेव ऋट्थायि ॥७५॥
 इय सामन्नपइट्ठा, विहाणमेयं समानओ भणिय । इह्मि मणिमो लिप्पाइयाण अचलाण पडिमाणं ॥७६॥
 अत्रियाणिऊण य विहिं जिणविम्म जो ठवेइ मूढमणो । अहिमागलोहजुत्तो, निवट्ठ समारजलहिम्मि ॥७७॥

गुणरत्नमुनीन्द्रोक्तं, सकलेन्दुविदभिः । (१) धूर्वक्रिया

८ अथ नव्यप्रतिष्ठापद्धतिः । प्रतिष्ठाकल्पमाश्रित्य, प्रतिष्ठाविधिरुच्यते ॥२०॥

गुणरत्नमुनीन्द्रोक्तं, सकलेन्दुविदभिः । प्रतिष्ठाकल्पमाश्रित्य, प्रतिष्ठाविधिरुच्यते ॥२०॥

भा०टी०—तथा-गुणरत्नस्य संदर्भित प्रतिष्ठाकल्पे अने उपाध्याय सकलचंद्र योजित प्रतिष्ठाकल्पं अनुसंग करीने आ

प्रतिष्ठाविधि कहेवाय छे.

मुहूर्तनिर्णयो १ राज-पृच्छा २ भूमेविशोधनम् ३ । मण्डपस्य विनिर्माणं ४, वेदिकारचना ५ तथा ॥२१॥

संघमक्तिसमादेशाः ६. संघासंरणपत्रिका ८। प्रतिष्ठाविधिवर्तिन्य-श्रतस्यः शुभलक्षणाः ८ ॥२२॥

अन्वेष्ट्याः स्नात्रकाराश्च शुभलक्षणलक्षिताः ९ । अमारिदोषणं कार्यं. रत्ना संघेन वा स्वतः १० ॥२३॥

प्रतिष्ठापस्करानाना-विधा मेल्या यतस्ततः ११ । व्यवस्थायां नियोक्तव्याः धीमन्तः श्रमसेविनः १२ ॥२४॥

अनागतविधेयानि, विधेयानि विचक्षणैः । कार्यणि क्षणकार्यणि, यानीमानि निवोयत ॥२५॥

भा०टी०—मुहूर्तनिर्णय १, राजपृच्छा २, भूमिपृच्छा ३, मंडपनिर्माण ४, वेदिकारचना ५, संघमक्तिअवेष्ट ६, संघासंरण-
पत्रिकालेखन ७, प्रतिष्ठाविधीवाटनारी ८ खियोनी नियुक्ति ८, निर्दीप स्नात्रकारोहे अन्वेष्टण ९, अमारिदोषणा राजाद्वारा करावती
अनागतविधेयानि, विधेयानि विचक्षणैः ११, अने प्रतिष्ठाना कार्योनी व्यवस्था करत्ता बुद्धिमान

अनागतविधेयानि, विधेयानि विचक्षणैः ११, अने प्रतिष्ठाना कार्योनी व्यवस्था करत्ता बुद्धिमान

अने परिश्रमी पुरुषोनी समितियो निमती १०, आ २२ का कार्यो वृद्धिमानोण प्रतिष्ठोत्वन्ती तैयारीरूपे प्रथम करवा जोडये
उत्पव दर्मियान रुग्ना कायो ३ ते आ प्रमाणे जाणना

(१) सुदृढनिर्णय—

प्रतिष्ठा करावचानो मिथय थता ज सर्व प्रथम सुदृढनो निर्णय करावचो, मूलनायरुजिन, मघ, गाम, गामघणीना नामयी
चन्द्रमलादि जोडने निर्दोय सुदृढ आपनार सारा अभ्यासी ज्योनिपशास्त्रना विद्वान्नी पासे प्रतिष्ठामुदृढनो निर्णय करावचो
घणा अल्पजोने पृछवा करता एक विद्येपत्रने पृछवायी ए विषयनो जब्दी निश्रान्त निर्णय वड शकं डे ए वस्तुने ध्यानमा राखीने
ए विषयमा प्रवृत्ति करवी जोडये

२ राजपृच्छा—

सुदृढ श्रेष्ठ मली जाय अने प्रतिष्ठा करावचानु निश्चित होय तो ते राजस्थान होय तो प्रतिष्ठाना निषयमा गजानी संसति
लेवी, तथा योग्य सहायतानी मागणी करगी, प्रतिष्ठानु स्थान राजधानी न होइ गाम के नगर होय तो त्यानो अधिकार जे
अधिकारीना दायमा होय तेने मलीने तेनी सहायुभृति प्राप्त करवी, अने प्रतिष्ठा कोड गामघणीना गाममा होय, तो ते घणीने
पृछीने कामसां तेनी सहायता प्राप्त करीने कार्यारम करतो

३ भूमिशोधन—

मडपने माटे भूमि एवी पसंद करवी जोडये के जे स्वभाविक रीते ज शुद्ध होय, ज्या हाडकां यंगे अल्प न होय अने

गंदकीतुं स्थान अथवा सडेल गलेल खातरवाली के मांसाहारियोना .निवासवाली न होय, वली मंडप उपरान्त खुल्ली भूमि केदली रहेसे ए पण प्रथमथी ज जोइने मंडपनी भूमि पसंद करवी, केमके प्रतिष्ठामंडप, स्नानमंडप अने सभामंडप ए वधाने माटे पर्याप्त होय ते भूमिज मंडपने माटे योग्य गणी शक्याय. वनी शके त्यां सुधी प्रतिष्ठामंडपनी भूमि देहरानी सामे राखवी. एवा कदापि सामे पर्याप्त भूमि न होय तो जसणे पडखे राखवी पण देहरानी पठमां तो मंडपभूमि न ज होवी जोइये अने एवा स्थानमां मंडप न ज वनाववो जोइये.

भूमि उपरथी कचरो अने सुतक वूल दूर कराव्या पछी ज ते उपर मण्डपतुं निर्माणतुं कार्य चालु करावतुं. मण्डपना जे भूमि भागे वेदिका वनाववी होय तेने एक हाथ खोदावीने त्यांनी धूल बहार नंवाववी अने ते स्थल जंगलनी शुद्ध माटी चीली अथवा नदीनी शुद्ध रेतीथी भरावीने त्यां वेदी करावनी.

जघन्यथी पण प्रतिष्ठामण्डपना मध्य भागथी १०० हाथ सुधीमां क्षेत्रशुद्धि करवी, सुगंधजल छांटवुं, पुष्पो वेवां अने धूप उखेववो, आ प्रकारे मण्डप भूमिनो सत्कार करवो.

४ मंडप-निर्माण-

प्रतिष्ठामां प्रतिष्ठा-मंडप पण एक आवश्यक अंग छे, पूर्वकालमां प्रतिष्ठा मंडपो अने वेदिकाओ प्रतिष्ठाप्य प्रतिष्ठाना नानने अनुसारे न्हानां म्होटां वनतां पण पाळलां सेंकडो वर्षोथी आ सैद्धान्तिक वस्तु लुप्त प्रायः यह छे. आजना प्रतिष्ठा-मंडपोमां लोकाकर्षण माटे भपको अथवा नाटकीय सिनेरी मले होय पण आय, व्यय, नक्षत्रादि जेवुं कांइ ज जोवातुं नथी, खरी रीते

ચૈત્યને અંગે ચોમાતી વધી માતો નહિ તો પળ આપ ૧ વ્યય ૨ નવત્ર ૩ આ ત્રણ અંગ મેલનીને મંડપ કરાવ તો ઘણો સુલાક્ષણિક વને.
 શુદ્ધ કરેલ ચોસ અથવા લંચોરસ ભૂમીના તલને જમીનની સપાટીથી લગભગ દોઢ ફુટ ઝડુ લેઈ તેમા પ્રતિષ્ઠા-મંડપનુ
 નિર્માણ કરાવું કલ્યાણકારી હોય છે, એ મંડપનો ઉપયોગ માત્ર વિધિ વિધાનને માટે જ કરવો, સમામંડપ તેની આગે જુદો
 વનામો જોઈયે.

મંડપધૂમિની લગાઈ અને પહોલાઈ અને વિષમ (એકી) હસ્ત પરિમિત લેવાથી મંડપનો આય શુભ આવે છે, એ વાત ધ્યાનમાં રાખી
 મંડપનુ તલ નિશ્ચિત કરવું અને વ્યય આપ કરતા ઓટ્ટો હોય તે લેવો.

જો મંડપનુ દ્વાર પૂરુ જ દિશામા રાખવાનું હોય તો મંડપનું નશ્ત્ર તદિગ્ધારિક લેવું, આ વસ્તુ મંડપ વનાવનાર ન સમજતો
 હોય તો તેને તમારા શિલ્પી (મંદિર વનાવનાર) દ્વારા સમજાવવો.

મંડપની સજાવટ મારામા સારી કરવી, પણ તેમા ભયજનક, દુઃખજનક કે ઉપદ્રવશ્ચક દ્રવ્યો ન રનાવવો, શોકશ્ચક
 રગો ક્યત્તા તેમાં વધ્ધો પણ નિશ્ચેપ પ્રમાણમા ન ગાપરના.

તીર્થોનાં દ્રવ્યો, જિન-કલ્યાણકોના પ્રસંગો, ગોષદાયક ઘટના ચિત્રો અને ધાર્મિક इतिહાસને તાજો કરનારા ધાર્મિક
 પ્રસંગોના પડદાઓ અને સિનેરીઓથી મંડપ વિશેષ આકર્ષક રને છે, પાણીના ફુવારાઓ, જલધ્વારણાઓ, નદીઓ અને તીર્થ-
 સ્વરૂપ પર્વતોની રચનાઓથી તો મંડપ સરેસર તીર્થરૂપ રની જાય છે, મંડપના મધ્ય ભાગમા વેદી રનાવવી

૫ વેદીની રચના—

मंडपनी जेस वेदीओ पण घणा समय पूर्व मंडपने अनुसार बनती पण आ पद्धति आजे प्रचलित नथी, छेल्ली प्रतिष्ठा-
पद्धतिओमां वेदी ३ हाथ समचोरस अने १॥ हाथ उंची बनाववाचुं विधान छे, पण आजे ए विधान चालतुं नथी, जो मंडप
चोरस होय तो वेदी पण चोरस बनावाय छे, पण मंडप चाम दक्षिण दीर्घ होतां वेदी पण चाम दक्षिण लंबी बनावाय छे,
गणे तेम होय पण वेदीनी लंबाई, पहोलाई अने ऊंचाई बनेमां शुभ आय तो होतो ज जोइये.

प्रतिमाओ घणी होय अने मण्डपनुं मध्यपद विशाल होय तो वेदी तेने अतुसारं म्होटी बनावतो, अने वेदीनो मध्य भाग
वधारे उंचो बनावी तेनी चारे दिशाओमां त्रण पांच आदि मेखलाओ बनावची, के जेथी घणी प्रतिमाओ रही शकें अने
सरखी रीते तेओनां दर्शन थह शकें.

वेदीनी उंचाई तेना अंगने अनुरूप करनी पण ३५ इंचथी ओछी तो न ज करनी.

वेदीना मध्य भागमां साडो करी तेमां पंचरत्ननी पांटली आदि मांगलिक पदार्थो मूरुवां.

वेदी जो चोरस होय तो तेना चारें खुणाओमां चांसनी अथा बीजा शुभ द्युक्षनी थांभलीओ शेपी वेदी उपर तंश मंडप
बनाववो, चारें दिशांमां ?-? अथवा ३-३ द्वारो बनाववां, द्वारोनी उंचाई पहोलाईथी पोषाघमणी बनावची, वंशमंडप जो ४
द्वारनो होय तो चार दिशांमां ?-? अने मध्यमां ? आम ५, अथवा म्होटी ? घुमटी बनावची अने ३-३ द्वाग्नो मंडप होय
तो मध्य द्वारोना भागें ४, खुणाओना भागें ४ अने मध्यभागें ?, आम ९ घुमटीओ बनावची.

मंडप अने वेदी तैयार थट जाय त्थारं मंडपभूमिने गोवर अने थोली गाटीनी गारथी लोंपनी जोइये, गागमां सुगन्धी जल

तथा यक्षकर्मनो घोळ नाखी सुगन्धी वनावची.

वेदीने पण खडी अथवा चूनाना घोळथी पोतावची, घोळमा यक्षमर्दम, पचरतनु चूर्ण तथा सुरणनी रज नाखी एक, रस कम्बो, वेदीने पोतावी तेनी ब्यारे गजुओ समुख मागलिक चित्रो कढाववा

६ सधभक्तिना आदेश—

प्रतिष्ठाप्रसंगे भक्तिवात्सल्यनो वन्दोमस्त करीने ज प्रतिष्ठा करावनारे देश परदेशना सधने आमत्रित करवो जोड्ये.

प्रतिष्ठा करावनार एक व्यक्ति होय तो तेणे पोतानी व्ययशक्तिनो विचार करीने सार्धमिक्रमात्सल्य अथवा नोकारसीनी व्यग्रम्या करी. अने ते मुजर ज संघसमुदाय एकत्र करवो. प्रतिष्ठानु महत्त्व खावापीवानी धमालमा नहि पण तेना क्रिया-विधाननी शुद्धतासां अने मानमिक उद्यासमा छे ग्रथमथी ज शक्तिना अनुमानथी खर्चना द्वार उघाडना के पाछल्ली अधिक-व्ययनिश्चक मनोभंग न थाय अथवा तो कृष्णता जन्तित लोकापवाद साभलवानो समय न आये.

प्रतिष्ठा करावनार स्थानीय सध अथवा सरुलसध होय अने सधभक्ति निमित्ते सार्धमिक वात्सल्य अथवा नोकारसिओ करनारा गृहस्थो घणा होय तो शुभ मृहूर्ते चढावा बोलीने आदेश आपवा

मारवाडमा नोकारसी निमित्ते बोलाता चढावाओमा पूर्वे नोकारसीनो खर्च आदेश लेनार उपर रहतो हतो पण आज केन्टलाक समयथी त्या पण रीजा प्रदेशोनी जेम नोकारसीनो खर्च पोलाण्ल रकमगाथी ज करवानी पद्धति पडी गइ छे, जा दशामा जो चढावानी रकम भोजनखर्च पूरती पण आजवानी समय न होय तो रकमनो एक सारो जाक बाधीने त्याधीज

चढावो बोलावानी शरुआत करवी के जेथी थोडामां नोकारसीतुं नाम करीने साधारण स्वातामां चाथो बालनारा फावी शके नहिं अने नोकारसीओना आधिप्यथी प्रतिष्ठा करावनारने अधिक स्वर्चमां उतरतुं पडे नहिं.

साधारणिक वात्सल्यो नोकारसीओ अथवा बीजा गमे ते नाम नीचे संघ तरफथी संवगक्तिनो आदेश थया पछी संघने बोलाववा माटेनी आमंत्रण-पत्रिकाओ तैयार करवी,

७ संघ-आमंत्रण-पत्रिका

संघने बोलाववा निमित्ते लखाती आमंत्रण पत्रिका पूर्वे वर्णा ज सादी अने मुद्रासरनी हेनी. पण लगभग ४० वर्षीयी आ पत्रिकाए पौतानुं स्वरूप बदलवा मांडतुं अने थोडूं अने थोडूं कर्तां कलेवर वणुं ज वधी गयुं छे. आजं जे प्रतिष्ठानी आमंत्रण पत्रिका दोढ हाथ लांवी अने एक हाथ पहोली न होय ते प्रतिष्ठा ज सामान्य हये आम सामान्य जनसमाज मानी ले छे, वली आजनी प्रतिष्ठा-पत्रिकामां ञण रंगो न पूराय त्यां सुधी ते उपर वर्णानी पसंदगी ज उत्तरी नथी.

पत्रिका संवन्धी आ परिवर्तनोनी असो अनुमोदना करी शकता नथी, पत्रिकानुं कलेवर बधावाथी के तेमां घणा रंगा पूरावाथी तेनुं महत्त्व वधतुं नथी, लखनारनी समज चतुराई अने विद्वत्पूर्ण लेखन शैलीना समागमयी ज तेनी क्रियमत वये छे. असद्भूत विशेषणोनी हारमाला गोठवी नाखवाथी पत्रिकानी वास्तविकता चाली जाय छे अने समजु माणसोनी दृष्टिए ते केवल अर्थवाद-प्रशस्तितुं रूप धारण करे छे.

पत्रिकामां लखनार तरीके सही करवानो पण रीवाज छे. कोइ स्थले नगरशेठ, तो कोइ स्थले संघनो आगेवान सही करे

ते पण श्वेटी प्रतिष्ठाओनी आमंत्रण पत्रिकाओमा सही करवाना पण चढाना मोलाय छे अने हजामे रुपियानी उपज थाय छे. गंगा गामोमा प्रतिष्ठाना दिवसनी नोकरास्तीनो चढानो लेनार गृहस्थ आमंत्रण पत्रिकामा लगनाररूपे हस्ताक्षर करे छे, भले हस्ताक्षर गमे ते करे पण ते दश गज वर्पनो निगालियो तो न ज होबो जोडेने. पत्रिका नीचे हस्ताक्षर करनार माणस प्रसिद्ध अने चढानो लेनारना यत्नो अग्रेसर व्यक्ति होबो जोडेने.

लगभग च्यार टापका पूर्वे पत्रिकाओ परिमित संख्यामा लखाती हती. पोताना गोलना २५-५० गामोमा अने गहु तो ते उपरान्त आमपासना २-४ गोलोना गामो सुधी पत्रिकाओ लखाती के जे १००-१५० वी भाग्ये ज अधिक होती. आजि ए मर्यादा रही नथी. घर्णा स्वले १००० अथवा तो २०००नी संख्यामा पत्रिकाओ छपाय अने मोकलाय छे. जा अतिप्रवृत्ति उपयोगी नथी, दूर दूर मोकलाती पत्रिकाओनो अर्थ एक विज्ञापनथी अधिक यतो होय एम अमो मानता नथी.

८ औपधि चाडनारी स्त्रियो—

प्रतिष्ठामा औपधिओ चाडना अने पुंस्वना आदिना कामो कस्वा माटे ४ अथवा ८ स्त्रियोनी प्रथमयी ज मगाड करी रावनी जोडे. निर्माणकलिका पण ८ अथवा ८ स्त्रियोद्वारा पुण्यवास्तु विधान करे ते के—“सुवर्णादिदानपुरःसरमष्टौ चतस्रोचानायाँ रक्तसूत्रेण स्पृशेयुः, अथवा पुण्यवास्तु दधुः।” अर्थात् सुवर्ण आदितु दान आपती ८ अथवा ४ ग्रियो रक्तसूत्रनो स्पर्श कस्वा पूर्वक पुण्यवास्तु करे अने तीस्रो स्त्रियो मगल गाने भागियोना र्णनमां कलिका लभे छे के—“रूपयौवनलावण्यवत्यो रचितोदारवेपा अघिघनाः” अर्थात्। ते

स्त्रियो रूपलावण्यवती युवती अने सुन्दर वेपवाली 'अविधवा' होवी जोइये. पादलिप्ताचार्यना 'अविधवा' शब्दप्रयोगशी समजी शकाय छे के ते स्त्रियो 'विधवा' न होवी जोइये. 'सधवा' अथवा 'कुमारिका' होय तेनी हरकत नथी.

श्रीचन्द्रस्त्रीजी ए विषयमां नीचे प्रमाणे वर्णन आपे छे.
'तत्रैव मंगलाचारपूर्वकजविधवाभिश्चतुःप्रभृतिभिः प्रधानोज्ज्वलनेपथ्याभरणाभिश्चतुःशतशिलाभिः सकं-
'कणहस्ताभिर्नारीभिः पञ्चरत्न—कपाय—मंगल्यमृत्तिका—मूलिकाऽष्टवर्गसर्वोपध्यादीनां वर्तनं कारणीयं क्रमेण ।'

भा०टी०—“त्यां मंगलाचार पूर्वक श्रेष्ठ उज्वल वेपभूपावाली शुद्धशीलवती अने हाथे कंकणवाली ४ आदि 'अविधवा' स्त्रियोना हाथे पंचरत्न, कपायछाल, मंगलमाटी, मूलिका, अष्टवर्ग सर्वोपधि आदि अनुक्रमे वटाववां.
ए सवन्धमांजिनप्रभस्त्रीजीए 'जीवित मातापिता साम्प्रसरावाली' ए विशेषण वधायुं छे. ज्यारे वर्धमानमूर्तिजीए 'सपुत्रा ए विशेषण अधिक सूत्र्युं छे, पण बीजा प्रतिष्ठा कल्पकारोए श्रीचन्द्रस्त्रीछुं ज अनुसरण कर्युं छे.

आजकाल आ विषयमां लक्ष्य ओछुं अपाय छे. विनप्रवेशना समयमां कराती पुंखवानी क्रिया प्राये चढावो बोलीने आंदोलनार गृहस्थना घरनी एक ज स्त्री करे छे. बीजा प्रसंगे पण करातां पुंखणां वांग भांगे एक ज स्त्रीद्वारा थाय छे जे योग्य नथी. पुंखणा ४ स्त्रियोए ज कसवा जोइये, जीवित मातापिता साम्प्रसरावाली होय अथवा नहिं पण पंचेन्द्रिय पूर्ण अने अलंङित अंगवाली सधवा अथवा कुमारिका तो होवी ज जोइये.

प्रतिष्ठा निमित्तक औपधि गढवानु, पुखणा करवानु, अंजन तैयार रगवानु, नैवेद्य राधवानु, इत्यादि कार्यो आ स्त्रियो पासे करामा. अने प्रतिष्ठा करावनेरें काचली, कापट्ट प्रभावना आदि अपीने आ स्त्रियोनी मत्कार करसो

०. स्नात्रकारो—

प्रतिष्ठाकल्पकारो 'स्नात्रकारो' अथवा प्रतिष्ठाकार्यना श्रावरोनुं पोताना अथोमा अर्णन रुंछु छे जेनो मार नोचे प्रमाणे छे -
आचार्य पादलिप्तमस्त्रिणी ? शिल्पी, ० इड अने ३ आचार्य ए अर्णेने प्रतिष्ठाना सूत्र मार तरीके मानीने एमना लक्षणो जणाया छे

(१) शिल्पी—शिल्पीना अर्णनमा पादलिप्तमस्त्रि फट्टे—'ते अर्णमा पहलो शिल्पी मर्वाङ्गमुन्दर, क्षमाशील, नम्र, सरल, सत्यभाषी, शौचसपन, मदिरामामादि अभक्ष्य ग्वान पाननो त्यागी, कृतज्ञ, विनयी, शिल्पनी क्रियाओमा अर्चीण, शिल्पशास्त्रनो ज्ञाता, चतुर, धैर्यवान, निर्मलत्मा, शिल्पिममात्रमा अग्रमर मोदादि आन्तर ३ श्रुओने जीतनार, स्थापत्यना कार्योमा सिद्धहस्त अने स्थितप्रज्ञ होवो जोइये

(२) इन्द्र—

इन्द्रनी शक्यतानुं अर्णन पादलिप्तमस्त्रिणीए रुंछु छे के—

“इन्द्र पण उचम जातिकुलवालो, युवावस्थावालो मनोहर शरीरधारी, कृतज्ञ स्वपराण्यादिगुणोनी आधार, सर्वलोकरप्रिय, सर्वशुभलक्षणसंपन्न, देवगुरुभक्त, धर्मश्रद्धालु, सर्वप्रकारे व्यवसनमुक्त, मदाचारी, पंचभणुप्रतादि गुणधारक, मशीनपकृतिनी

શ્વેતવસ્ત્રધારી, અંગે ચન્દનાદિના વિલેપનવાલો, મસ્તકે માલતીના પુષ્પોની રચનાવાલો, સુવર્ણમય કંઠુનાદિકે ભૂષિત, ઊરઃસ્યલમાં સુન્દર હારે કરી શોષિત અને સ્થાપત્યકલાનો જ્ઞાતા હોવો જોઈએ.”

(૨) આચાર્ય—

પ્રતિષ્ઠાકર્તા આચાર્યના સંવન્ધમાં પાદલિપ્તસૂરિજી કહે છે કે—
પ્રતિષ્ઠાચાર્ય આર્યેદેશમાં જન્મેલ, હલુકર્મી, ત્રમ્ભચર્યાદિ ગુણગણે કરી શોષિત, પંચાચારપાલક, રાજાદિકનો અદ્રોહી, આગમામ્યાસી, તત્ત્વજ્ઞાની, ભૂમિ તથા ગૃહવાસ્તુના લક્ષણોનો જ્ઞાતા, દીક્ષાવિધિમાં કુશલ, મૂત્રપાતનાદિના જ્ઞાનમાં પારંગત, સર્વતોભદ્ર આદિ મળ્ડલોની રચના કરનાર, અતુલપ્રભાવી, અપ્રમાદી, પ્રિયભાષી, ધૈન્યદુઃસ્વીની દયા કરનાર, સત્સમ્ભાષી અને સર્વગુણસંપન્ન હોવો જોઈએ.

ઉપરના નિરૂપણથી જણાય છે કે પાદલિપ્તાચાર્યના સમય સુધી પ્રતિષ્ઠાકાર્યમાં ગિલ્પી, ઇન્દ્ર અને આચાર્યની જ પ્રધાનતા હતી, પણ તે પછીના સમયમાં શિલ્પીનું મહત્ત્વ ઘટી ગયું અને ઇન્દ્રનો અધિકાર પણ લગભગ મૂલ્યે ગયો અને તેના સ્થાને ઇ સ્નાત્ર-કારો આગલ આવ્યા.

શ્રીચન્દ્રસૂરિજીએ સ્નાત્રકારોના લક્ષણો જણાવ્યાં છે—

“સ્નપનકારાશ્ચ સમુદ્રા; સકંકળા; અક્ષતાજ્ઞા; દક્ષા; અક્ષતેન્દ્રિયા; કૃતકવચરક્ષા; અલંકિતોઞ્જ્વલ-વેષા; ઉપોપિતા; ધર્મવહુમાનિન; કુલીનાશ્ચત્વારઃ કરણીયા.”

भा० टी०—स्नपनकारो बुद्धिः कृत्वा संहित, अक्षतशरीर, प्रवीण, अखण्डेन्द्रिय, मन्मथचयी रक्षित, अस्रग्ध अने उज्ज्वल-
नेपथारी, उपनती, धर्मबुं बहुमान करनारा अने कुलमान एवा ४ कर्वा.

वर्धमानसुरिजीण स्नात्रकारो मटे—“ नरिण, मीग्य, स्नात्रविधिना जाणकार, ” ए विशेषणो लख्या ठे.
गुणरत्नद्वरि अने विशालरात्रिशिष्य आ स्नात्रकारोने अंगे वीली गतोमा तो एकमत छे, पण ब्रह्मचर्यनी चावतमां जुटा-
पंडे छे गुणरत्नद्वरि स्नात्रकारोने “ तद्दिनब्रह्मचारिणः ” एटले ‘ ते दिवसे ब्रह्मचर्यपालनार ’ विशेषण आपे छे ज्यारे त्रिशाल-

गजशिष्य “ जघन्यतोऽपि ८ दिनब्रह्मचारिणः ” अर्थात् ‘ ओछामा ओठुं आठ दिवस सुधी ब्रह्मचर्य राखनार ’ जणाने छे.
गमे तेओनो गमे ते मत होय पण एटलु तो निश्चित छे के प्रतिष्ठानी विधिमा काम करनारा स्नात्रकारो सदाचारी,
सुशील, निर्लोमी, वर्मप्रेमी, पंचेन्द्रियपूर्ण, प्रक्षत-अगोपागमाला, अने उत्सवना ममय दर्मियान तो ब्रह्मचर्य पालनाग
होना ज जोइये

स्नात्रकारोए पोतानी प्रामाणिकतामा सदेह उपनन थाय एरी कोई पण प्रवृत्ति न करवी जोइये, नकरो निज्जावल जे
कइ कोइने अपानबुं होय ते प्रतिष्ठा कराननार गृहस्थना हाये परमारु अपाबुं, पण पोने आची प्रवृत्तिओमा न पडबु
?० अम्मारी घोषणा

प्रतिष्ठा उत्सवना ममय दर्मियान अम्मारी घोषणा अर्थात् ‘ हिसानिषेध’नी उद्घोषणा करानवी जोइये जो राजा जैन
धर्मनो अनुयायी श्रेय तो तेनी मारफत आखा देशमा ‘ अम्मारी ’ जाहेर करानवी जो तेम न यनी अक्रे तो ज्या प्रतिष्ठा थयानी

होय ते गाम वा नगरमां ज तेमं करावुं, कंदापि उत्सवना सर्व दिवसोमां हिंसा न रोकी शकाय तो छेवटे प्रतिष्ठाना खास दिवसे तो राजा, राज्याधिकारी के गामधणीने प्रार्थना करीने अमारीनी घोपणा कराववी ज जोइये.

कोई पण उपाये देश, मंडल के नगरमां एक दिवसने माटे पण 'अमारी'नी घोपणा न करावी शकाय तो छेवटे स्थानिक जनसंघे तो आठ या दश दिवस उत्सव चाले त्यां सुधीने माटे पोताना समाजमां 'आरंभनिघेव'नी घोपणा कराववी ज जोइये कमठा कारवार बन्ध कराववाथी घणा मनुष्यो उत्सवना कार्योमां भाग लेशे अने सोथे ज सांसारिक कार्यनिमित्तक हिंसा-आरंभो ओछा थशे.

१? प्रतिष्ठोपस्कर-संभार

प्रतिष्ठाने अंगे आवश्यक सामग्रीसंभारना विषयमां प्रतिष्ठा पद्धतिओ एकमत नयो. निर्वाणकलिकानी प्रतिष्ठासामग्री घर्णी परिमित छे. पण ते पछीनी पद्धतिओमां क्रमे क्रमे सामग्रीमां बधारी थतो गयो छे अने ज्यास्थी प्रतिष्ठाविधिमां कल्याणकरोनी उजवणीनो प्रवेश थयो छे त्यास्थी तो तेमां अनेकगुणी वृद्धि थइ गइ छे. आर्वा स्थितिमां साशरीनी सूचीमां शुं लेवुं अने शुं छोडवुं? ए एक विक्रम समस्या थइ पडी छे. एथी आ पद्धतिमां अमोए जे विधानो स्वीकार्यो छे अने तेमां जे उप-करणोनो उपयोग जणाव्यो छे, ते उपकरणो अने पदार्थोनी सूची आपीने संतोष मानीशुं.

उपकरण-पदार्थसूची—

वेह ४ नवअंवी। पाणी भरवाना मोटां माटलां २। पाणी भरवाना घडा ८। पुंखथा योग्य न्हाना गाडवा ८। नव्यावत्त

योग्य गाढवा ४। घातुना स्नात्र योग्य कलशिया ८। १०८ नालनो कलश १। पबालनी कुडी घातुनी २। कासीनी थाली ४
 झालर १॥
 जवाराना सरानला ८। वीजा सरानला ५०। कुंडा ८। कुडिओ ४। माटीना कलशिया १०८। आरती १। मंगल दीवो १।
 जलण्ड दीपक योग्य फाणस २। तामापीतलनां मोटां कोडिया २। जर्मनशिल्वर न्धानी वाटकियो १५। कासीना वाटका २।
 रूपानी वाटकी १। रूपानी रकानी 'तासक' १। सोनानी सलाई १। सोनानी मुद्रिका 'बॅटी' स्नात्रकार योग्य ४।
 सोनाना काकण स्नात्रकार योग्य ४। सुवर्णपुष्प १०८। रूप्य पुष्प १०८। घंट १। घटडी १। घूपघाणा २। छत्र १।
 चामर २। केंसर तोला ८। कपूर तोला ८। कस्तुरी वाल ३। गोरोचन वाल २। वरास तोला ५। अगर तोला ५।
 तगर तोला ५। कनोल तोला ५। चदनना मूठा २। लाल चदननो मूठो १। बालाकूची २। वासक्षेप घोळो तोला ५।
 वासक्षेप पीलो सेर १॥
 सोनानां वरख थोरुडी २। रूपाना वरख थोरुडी ४। रूपाना पुखणा ३-धूसर मूसल खाइयो। पंचरत्न पोडली ४०
 (मोती मोनुं रुपु ताम्र प्रमाल)। आरीसो भ्हेडो १। कालो सुरमो तो. २ 'डली'। त्रियगु तोला ५। श्वेत सर्पप पोडलियो
 विन प्रति १। अरिठानी मालाओ विन प्रति १। जवनी मालाओ विन दीठ १। सम्लो डाम ४ मूल्या। मोडल काकण।
 मरोडाफली। गेमाद्यत्र 'पाच पाक उपर वटेंडु'। नालियेर १५१। खजर सेर २। द्राख-किसमिस सेर २। नदाम गोला
 सेर १। दशांग धूप सेर १। अगरमची सेर १। किद्रुप धूप सेर ८। कुंकुम सेर १। तीर्थजल शीशी १। गंगाजल

शीशी १ । १०८ रूप-नदीजल बढो १ । गंगा नदीनी वेळ पडीकुं १ । ३६० क्रियाणानो पुडो १ । सर्वोपधिचूर्ण पडीकुं १ । यक्षकर्दम तोला २ । अष्टगंध तोला २ । पुष्पो 'जाइ, जुही, चमेली, मोगरो गुलावआदिनां' । ग्रहदिक्पाल पूजन योग्य पुष्पो (लालकेणर, जाइ, कुशुद, जाम्बूल, चंपो, सेवंती, जाइमोगरो, मालती, दमणो, मचकुन्द, बहुवर्ण,) ॥
 बदाम शेर २ । राती सोपारी गोटा १२५ । काली सोपारी १५ । नागरवेलनां पान २०० । कृपाय छाल पडीकुं १ । मंगल मृत्तिका पडीकुं १ । सदीपधि चूर्ण पडीकुं १ । मूलिका चूर्ण पडीकुं १ । प्रथमाष्टवर्ग पडीकुं १ । द्वितीयाष्टवर्ग पडीकुं १ । चख्रो-नीलुं हाथ ७ । रातुं हाथ ७ 'छोटो पन्नो' । रातुं हाथ ५ 'वारनो पन्नो' । थोळुं हाथ ७ । काळुं हाथ २ । आस्मानी हाथ २ । सोसनी हाथ १ । उदारंगी हाथ १ । फलो-दाडिम, केलां, आंबा, नारंगी आदि । ग्रह जिगपालपूजन योग्यफलो-(सेलडी २, नारंगी २, जंबीरी २, बीजोरा ३, दाडिम ३ । घृत मण ०॥) दीपक, नैवेद्य आदि योग्य मधु तोला २ अंजन योग्य । साकर शेर २ । जवारिया वांस ४ सात. छात्रवाला । सुत्रधार योग्य वेष १-धोतिशुं १, उत्तरासण १ । प्रतिष्ठा गुरु योग्य वेष १ । दशियावड कोरुं वस्त्र १ हाथ १२ प्रतिमा योग्य । दशियावड कोरुं वस्त्र नंदावर्त योग्य हाथ १२ । दशियावड कोरुं वस्त्र नंदावर्त लेखक योग्य । माइ साडी १ 'कुणुंभी वस्त्र हाथ १० । वस्त्र पीळुं-हाथ ७ । अडद शेर ४ । शणबीज शेर २ । चणा शेर ४ । मसूर शेर २ । चोलां शेर ४ । बाल शेर २ । जन्नार शेर ३ । कुलय शेर २ । जव शेर ५ । गहुं शेर ५ । सुंग शेर ४ ।
 मलमल मोटो पन्नो हाथ १० । जगन्नाथी हाथ १० हाथनो पन्नो । धोतिशां ८ । उत्तरासण ८ । नंदावर्त योग्यः पाटलो १

सेवनो । दिग्पालयोग्य पाटलो १ । नम्रग्रहयोग्य पाटलो १ । अष्टमालयोग्य पाटलो १ । अखंड चोला, सेर १ । 'अर्घो मण मात' ।
 'फोतरावाला चोला सेर ४ । तल सेर २ । घोलीया पीअ सरम्व सेर ०॥) । चोलानी फून्नी सेर १ । नैवेद्य 'घारी, लाड, ठोर,
 घेवर, मोहनयालआदि' । नैवेद्य सराव ७ 'घाट, खीर, कंजो, सीवडी, कूर, सीघमडी (पोंडली)' । सनालिकेर पाच सेरना लाड १ ।
 पञ्चव्य-धी-दूध-दहि-गायत्रु गोबर-मूत्र-चाप-पाणी । माला ५ जातनी ग्रहयोग्य-प्रमालनी, स्फुटिकनी, केरवानी ।
 अरुलवेनी, गोमेद, अथवा सिंदूरियारफुटिकनी' ।

१२ व्यवस्थापक मण्डल

प्रतिष्ठाना कार्यो व्यवस्थितरूपे थया करे एटला माटे सघना बुद्धिशाली अने परिश्रमी पुरुषोतुं सत्ताप्राप्त व्यवस्थापक-
 मडल स्थापयु के जेना निरीक्षण नीचे सर्व कार्यो भिन्न भिन्न समितियो द्वारा थया करे
 आ मण्डल, जुदा जुदा कामो माटे योग्य माणसोनी पर्मन्गी कतिने तेमनी समितिओ योजी, कार्यो तेमने सुप्रन करी
 पोतानो भार ओछो करे

कया काम माटे केटला माणसोनी समिति होवी जोहये एनी अमे एरु आनुमानिक तात्रिका नीचे आपीये जीये, देश-काल
 अने कार्यनो विचार करीने मडल आ संख्यामा यथारो घटाडो करी शक्रे छे.

- | | | |
|------------------|---------------------|---------------------------|
| १ भोजन प्रमन्ध ८ | २ जलप्रमन्ध २ | ३ नगर सफाई २ |
| ४ छाया प्रमन्ध २ | ५ वरयोडा व्यवस्था ४ | ६ पूजा स्नातकार प्रमन्ध ४ |

७ मंगलधर प्रबन्ध २
१० मोदीखानुं २
१३ नगर शणगार २
१६ दान, त्याग-इनाम. ५ वा ८

८ सामग्री प्रबन्ध ४
११ घासचारो २
१४ यान-वाहन २

९ संघ स्वागत ५
१२ प्रतिष्ठामण्डप २
१५ चोकी पहेरो २

प्रतिष्ठा प्रसंगे करवानां उपर्युक्त कार्योनी व्यवस्था माटे जणावेल संख्याना माणसोनी समितिओ नीमीने भिन्न भिन्न कार्यो भिन्न भिन्न समितिओनी जबाबदारी तले मूकवाथी कार्यो घणीज सरलताथी थरो, अने कोइने विशेष श्रम न पडतां प्रतिष्ठामहोत्सव बहुज यशस्वीपणे पार पड्यो.

२. उत्सवक्रिया

प्रथमाह्निकम् । मण्डपप्रतिष्ठा-जलयात्रा-कुम्भस्थापन विधिओ आह्निक-बीजकम्—

प्रविश्य मण्डपं मन्त्रैर्भूमिशोधनपूर्वकम् । पीठपूजनमाधायाऽभिमन्याऽथ सुखादिकाम् ॥२७॥

बालकेभ्यो वितोर्यादौ, ततो भूतबलिं क्षिपेत् । सिंहासने जिनं प्रत्नं, पीठे नव्यजिनावलिम् ॥२८॥

न्यस्य कुर्याज्जिनस्नात्रं, चैत्यानां वन्दनं तथा । जलयात्रार्थमृत्कुम्भ-चतुष्कस्याधिवासनम् ॥२९॥

घटोत्पाटनकारिण्यः, सधवा वा कुमारिका । रक्षासूत्रेण संरक्ष्य, ततो वाद्यपुरस्सरम् ॥३०॥

जलाशयत्ते गत्वा, पूर्वं दिक्षु बलिं क्षिपेत् । क्षेत्रस्य देवतां शान्ति-देवतां जलदेवताम् ॥३१॥

अनुश्लयितुं कुर्यात्, कायोत्सर्गंश्च तस्तुतोः । ततो जलाशयात् पूत-घटेषु जलमाहरेत् ॥३२॥

तैश्च ममहं तर्पेन्नादेर्भृतदिगन्तरम् । आगत्य जिनगेहान्तर्जलकुम्भान्निवेशयेत् ॥३३॥

कोणेषु मण्डपस्याऽथ, चतस्रो वस्त्रेदिकाः । साच्छादना विषमाङ्ग्यो, न्यस्तव्या विधिवेदिना ॥३४॥

प्रतिवेदि चतुर्दिक्षु घटकानां चतुष्टयम् । न्यस्य तदुपरि स्थाव्या, यववारशरावकाः ॥३५॥

अथवा—

विधानीतिन नीरेण, घटमापूर्य मन्त्रवित् । स्थापयेज्जिनदशाङ्गे, दीपं तत्पार्थतो न्यसेत् ॥३६॥

शरावकेषु वंशानां, पात्रेषु च यवारकाः । वाया विधानतः कार्य-भिर्यादि प्रथमेऽहनि ॥३७॥
भा० डी०-मंत्रो द्वागं भृगिष्ठुद्धिं करावा पूर्वक मंडपमां गवेश करी पीठपूजन करीते सुखडी अभिमंत्रित करी वालकोने बहेचवी, ते पछी भूतचलिक्षेप करी, ते पछी गंडपमां सिंहासन उपर विधि माटे प्राचीन, जिनप्रतिमा स्थापन करवी अने पीठ उपर प्रतिष्ठाप्य जिनचित्रो स्थापवां. ते पछी स्नात्र करीने त्यां चैन्यवंदन करुं, अने जलयात्रा माटे तैयार राखेल ४ माटीना गजवृत कलशोनुं प्रतिष्ठाचार्ये वासादि वडे अधिवासन करुं, कलश उपाडनारी सयवा स्त्रियो अथवा कुमारिकाओना हाथे गेवास्वरूप स्थाप्य वाजिनान्द प्रर्वक रूप-नद्यादि जलाशय पासे जनुं, त्यां प्रथम दिक्पालोने त्रिलिक्षेप करवी, ते पछी क्षेत्रदेवता, शांतिदेवता अने जलदेवताओने अनुकूल करवा निमित्ते तेमना कायात्सर्ग करवा अने स्तुतिओ कहेवी.

ते पछी जलाशयमांथी पवित्र कलशोमां छाणीने जल भरुं अने पाछा तं ज रीते धाममूयशी वाजिनोना नादे दिशाओने गजवता नगरमां आवी जिननैत्यने प्रदक्षिणा करी जल कलशो जिननैत्यमां निरुपद्रव स्थाने स्थापवा. पछी प्रतिष्ठामण्डपना ४ खुणाओमां ४ उत्तम वेदिकाओ स्थापवी. वेदिकाओ ७ अथवा ९ एम विपम अंकनी करवी अने विधिज्ञाताए तेओ उपर ब्रह्मान्छादन करुं, प्रत्येक वेदिनी चारे दिशाओमां चार चार न्दाना घडाओ स्थापवा अने वडाओ उपर जवारानां पात्रो मूकनां. अथवा तो (वर्तमान गमयमां प्रचलित रीति प्रमाणे) विधिथी लावेल जलथी घडो भरीने मंत्र जाणनार विधिकार जिन-प्रतिमाना जमणा अंगनी दिशामां विधिपूर्वक कुंमस्थापना करे अने तेनी पासे दीवो स्थापे. माटीना शरावोपां अने वंश पात्रोमां

निधिची त्रीदि परना जवारा वाचना, इत्यादि उत्सवना प्रथम दिसे कार्यो करा

प्रथमाह्निक कृत्यविधि—

मडपप्रवेश—प्रतिष्ठात्सवना प्रथम दिसे प्रतिष्ठाचार्य स्नातकारो माये मडपना मुर यद्वारची मडपमा प्रवेश करतो. स्नातकारे हृष्यकन्थमा सुर्णजल लेः “ॐ जीराचली पार्श्वनाथ रक्षा कुरु कुरु स्वाहा” आ मत्र गडे जल ७ वार मंत्री मडपमा नीचे उपर बाजुमा गे अट्टु, अने प्रतिष्ठागुण- ॐ मूरसि मृतधात्रि । सर्वभूतहिते देवि ! भूमिशुद्धि कुरु कुरु स्वाहा । आ मत्र नोलता मडपमा गे वासक्षेप करी भूमिशुद्धि करी, स्नातकारोए चंदनादि छाट्टु, पुण्यो वेरमा, धूप उखेववो. देवबन्दादि निमित्ते ज्या पूर्व प्रतिष्ठित पवतीर्थी आदी स्थापनी होय त्या सिंहामनादिके व्यापन करी ते उपर—

“ ॐ चतुर्भुजदिन्यसिंहामनाय नमः” ए मत्रची गुरूप वासक्षेप करवो

पळी ज्या नमीन प्रतिष्ठाप्य प्रतिमाओ व्यापवानी छे ते वेदी पसे जइ मुरय प्रतिमाओना आसनस्थानो उपर सुगन्धी पदार्थो वेडे स्वस्तिको अथवा समस्मरणना गण गढो आलेखना अने “ ॐ अहंतीर्षोऽय नमः ” मत्र गडे प्रतिष्ठागुरूप वासक्षेप करवो.

वेदीपूजन थया पळी शुद्धरणे तयार करावेल अने वटाकर्णना मत्रथी २१ अथवा ७ वार अभिमंत्रित करेली गोलनी ५ तेर सुखडी यालकोने र्हेंचमी

पूर्वोक्त गर्वा निधि थया पळी शुभ समयमा नमीन प्रतिमाओ मडपमा लावची अने वेदी उपर प्रथम पूर्वाभिमुख अथवा

उत्तराभिमुख अने पछी बधी दिशाओमां पयरावती. प्रतिमाओ नीचे डाया भागे समूली डाम अने थोडी थोडी नदीनी शुद्ध बालुका मूकवी, जे प्रतिमा कोइ स्थले स्थापीने पछी अंजनादि विधान करबुं होय तेनी नीचे पंनारत्न अक्षतादि मूकवा.

पूर्व प्रतिष्ठित प्रतिमा तेनी आगल स्थापेल सिंहासन उपर विराजमान करवी.

प्रतिमा मंडपमां स्थापन कर्या पछी स्नान भगवती अने मंगलार्थ चैत्यबंधन अने शान्त्यर्थ दंडवताना कायोत्सर्गो करावा. चैत्यबन्धना-विधि—इयाँवही पडिकमी दामाश्रमपूर्वक इच्छाकारेण संदिसह भगवत् चैत्यबंधन करुं ? कही—

ॐ नमः पार्थवनाथाय, विश्व चिन्तामणोयते० इत्यादि, नमुत्पुंगं०, अरिहंतचेइआणं०, अन्नत्य०, ?

नवकारनो का०, पारी “ नमोऽर्हत् ” कही— अर्हस्तनोतु स श्रेयः—अियं य० । ए स्तुति कहेवी, पछी—
लोगस्त०, सबलोए०, वंदण०, अन्नत्य०, ? नवकार, पारी- ओमिनि मन्ना यच्छात्मनस्य०, पुष्यवर्षावर्षावर्षे०,
मुखस्त०, वंदण०, अन्नत्य०, ? नवकार, पारी-नवतत्त्व युता त्रिपदी०, सिद्धाणवृद्धाणं०, श्री शान्तिनाथ आराधनार्थं करेमि
का० वंदणवर्चियाए, लोगस्त ? सागरवरगंभीरा पर्यन्त. पारी-नमोऽर्हत्—

श्रीशान्तिः श्रुतशान्तिः०, सुअदेवयाए करेमि का०, अन्नत्य०, नमोऽर्हत्, वद् वदति वाग्वादिनि०,
संति देवयाए करेमि का०, अन्नत्य०, ? नवकार, नमोऽर्हत्, श्री चतुर्थिय संवत्स्य० इत्यादि.

शासनदेवयाए करेमि का०, अन्नत्य०, ? नव०, नमोऽर्हत्, उपसर्गवलयविलयन० इत्यादि.
श्रीभवनदेवयाए करेमि का०, अन्नत्य०, ? नव०, नमोऽर्हत्, शानादिगुणानां० इत्यादि.

खित्तदेवयाए करेमि का०, अन्तथ०, ? नव०, नमोऽर्हत०, यस्याः क्षेत्र समाश्रित्य० इत्यादि
 अत्रदेवयाए करेमि का०, अन्तथ०, ? नव०, नमोऽर्हत०, अस्या मालाङ्किताङ्काऽसौ० इत्यादि
 अञ्जुत्तादेवयाए करेमि का०, अन्तथ०, ? नव०, नमोऽर्हत०, चतुर्भुजा तद्विद्वर्णा० इत्यादि.
 समस्तवयावचराण सतिगण सम्मट्टिगमहिगारणं करेमि का०, ? नव०, नमोऽर्हत०, सवेऽत्र ये गुरुमुणौघनित्रे० इत्यादि.
 ? नव० गणी, वेसी, नमुत्थुण, जायति०, स्वमा०, जानत केत्रि०, नमोऽर्हत०, -ओमिति नमो भगवओ०, जयमीयराय०
 कवी विधि कला अविधि आशातना हुई० भिन्नामि दृक्कड । पवी जलयात्रा काढवी

(१) जलयात्राविधि

जलयात्रायोग्य उपकरण—पंचतीर्थी प्रतिमा ? । सिद्धचक्र मडल ? । वाजोठ या मिहासन ? । पाटलो ? ।
 स्नात्रयोग्य कलशिया ४ । चालाकुची ? । जगल्ल्याणा ? । हाथळ्ळणुं ? । केसर चटननी गटकी ? । घोटिया-अत्रोटिया
 ४ । उत्तरासणिया ४ । कपूर डली ? । फूल डाल वा पुडो ? । अगरमची पुडी ? । गृपुडी ? । गेवामत्र वा रक्तसूत्र
 कोयो ? । नालिपर ? ४ । फल ५ । नैवेद्य सेर ? । चोखा सेर ? । रंकी ? । याली ? । काचनुं काणस ? ।
 धूपघाणु ? । दर्पण ? । पसो-पोंजो ? । आरती ? । मगलर्दो ? । घंटडी ? । जनाग महित बहेडा ४ अथवा
 मुल उपर नालिपर सूकी लाल पीला बल्लोवडे वाक्रेल ४ गागर या ' देडिया (बडा) ' । कलश उपाडनारी ४ बियो ।

१-फलशो उपर सूत्राने जगारानो सरामले तैयार न होय तो नालिपर ८ लेवा ।

फूलमाला ४ । बलिवाकलानी थाली १ । थाली त्रेलण ?-? । मीढल-मढासिंगीशुक्त गेवामूत्रना दोरा ४ । ग्रहनो पाटको ? ।
धीलोटी ? । रु पुंसो ? । चन्द्रवो श्रुंठियु तोरण ?-? । स्नात्रयोग्य पंचामृतकलश ? । जलकलम ? । प्रवालकुंडी ? ।
स्नात्रिया ४ । वासशेष पुडी १ । वदाम २ ? । पान २ ? । सोपारी २ ? । पैमा छटा २५ । चन्नना लाल बटका २-दोह २
वहेतनां । नीला बटका २-दोह २ वहेतना । लाल बटको ? , हाथ ? । पीळो बटको ? , हाथ ? । गलणुं ? । दोरी लोटो वा
मंत्रनुं सिचणिसुं ? । दिक्पालनो पाटलो ? । छत्र मेघांडवर ? । चामर २ । कंकुनी वाटकी ? । पंचशब्द चार्जित्र । ध्वजा-
वावटा । रथ वा पालखी । जाजम वा शेतरंजी ।

आवश्यक सामग्रीनी तैयारी करी अनेक चार्जियोना शब्दोथी दिद्याओने गजवतो, छत्र चामर निशानडंका आदिथी
शोभतो बरघोडो लेहने चतुर्विध संघ सहित पवित्र जलाशय उपर जंगुं, त्यां पूर्वप्रतिष्ठित श्रीगांतिनाथनी अथवा श्रीपार्श्वनाथनी
अने तेना अभावे गमे ते पंचतीर्थीं प्रतिमा अने सिद्धचक्रमंडलने जलाशयने कांडे शुद्धभूमिकामां चाजोठ ढाली ते उपर अथवा
तो सिंहासन उपर स्थापन करी जन्माभिषेक कलश भणत्वापूर्वक स्नात्रपूजा भणावची. स्नात्र करतां वनी वके नो इन्द्रमाला
आदिनो चढावो करी चढावो लेनारना हाथे वास-धुप-धूप-नैवेद्य वडे जिनजा करावची, ते पळी प्रतिमा आगल ग्रहनो
पाटलो मूकीने—

ॐ नमः सूर्याय स्वाहा, ॐ नमः सोमाय स्वाहा, ॐ नमो मंगलाय स्वाहा, ॐ नमो बुधाय स्वाहा,
ॐ नमो वृहस्पतये स्वाहा, ॐ नमः शुक्राय स्वाहा, ॐ नमः शनैश्वराय स्वाहा, ॐ नमो राहवे स्वाहा,

ॐ नमः केतवे स्वाहा,

आ प्रमाणे प्रत्येक ग्रहको नाम-मंत्र बोली ते ते ग्रहना स्थाने चन्दन पुष्पादि द्रव्यो चढाववा.

एज रीते दिक्पालोना पाटला उपर—

ॐ नम इन्द्राय स्वाहा, ॐ नमोऽग्नये स्वाहा, ॐ नमो यमाय स्वाहा, ॐ नमो निकेतये स्वाहा, ॐ नमो चरुणाय स्वाहा, ॐ नमो वायवे स्वाहा, ॐ नम. कुबेराय स्वाहा, ॐ नम ईशानाय स्वाहा, ॐ नमो नागाय स्वाहा, ॐ नमो ब्रह्मणे स्वाहा

आ प्रमाणे दिक्पालोना नाम-मंत्रो बोली, ते ते पदविभाग उपर द्रव्यो चढाववा अने पाटलाओ उपर मनुक्रमे लाल अने पीत रत्न जोढाडना

ग्रहो दिक्पालोने पूजीने मिद्वचक्रना मंडल उपर—ॐ ज्ञानाय नमः, ॐ दर्शनाय नमः, ॐ चारित्र्याय नमः ।
आम बोली ते ते पदोनु केसर चन्दन बडे पूजन करु, पछी पूर्मादि दिशाओमा डिगापालोना आहुत सूँक रलिनाकुल उछालीने आरती मागलिक दीपक उतासा. पछी चैत्यबदन करी, नमु-धुण०, अरिहतवेष्टयाण, वंद०, वन०, १ नवराग्नो का०, पारी नमोऽर्हत०, स्तुति. —

अर्हस्तनोतु स श्रेय.-श्रिय यद्दधानतो नरेः । अर्ष्यैन्द्री सकलाञ्जैरि, रहसा सहसोच्यते ॥१०
लोगस०, अरिहत चै०, वदणमत्ति०, अन्त्य०, १ नव० का०, स्तुति:—

ओमितिमन्ता यच्छासनस्य नन्ता सदा यद्दह्नींश्च । आश्रीयते श्रिया ते, भवतो भवतो जिनाः पान्तु ॥२॥

ओमितिमन्ता यच्छासनस्य नन्ता सदा यद्दह्नींश्च । आश्रीयते श्रिया ते, भवतो भवतो जिनाः पान्तु ॥२॥

पुवखरदी०, सअस्०, वंदणवत्ति०, अन्नत्थ०, ? नव०, का०, स्तुतिः—

नवतत्तयुता त्रिपदीश्रिता, रुचिज्ञानपुण्यशक्तिमता । वरधर्मकीर्तिचिद्या-नन्दाऽऽस्या जेनगीर्जीयात् ॥३॥

सिद्धाणं बुद्धा०, श्रीशान्तिनाथआराधनार्थं करेमि काउसगं०, वंदणवत्ति०, अन्नत्थ०, ? लोगस्स सागरार गंभीरा सुधीनो

काउसग, नमोऽर्हत्०, स्तुतिः—

श्रीशान्तः श्रुतशान्ति-प्रशान्तिकोऽसावशान्तिमुपशान्तिम् । नयतु मदा यस्य पदाः, सुशान्तिदाः
संतुयन्ति जने ॥४॥

श्रीशान्तः श्रुतशान्ति-प्रशान्तिकोऽसावशान्तिमुपशान्तिम् । नयतु मदा यस्य पदाः, सुशान्तिदाः
संतुयन्ति जने ॥४॥

श्री द्वादशांगी आराधना०, वंदण व०, अन्नत्थ०, नमोऽर्हत्०, स्तुतिः—

सकलार्थसिद्धिसाधन-वीजोपांगा सदा स्रुरदुपांगा । अवतादनुग्रहतमहा-नमोपहा द्वादशांगी वः ॥५॥

संतिदेव्याए करेमि काउसगं, अन्नत्थ०, ? नोकार०, नमोऽर्हत्०, स्तुतिः—

श्रीचतुर्विधसंघस्य, शास्त्रनोन्नतिकारिणीम् । शिवशान्तिजरी भयात्, श्रीमती शान्तिदेवता ॥६॥

सासणदेव्याए करेमि काउसगं । अन्नत्थ०, ? नो० का०, नमोऽर्हत्, स्तुतिः—

या पाति शासनं जैनं, सद्यः प्रत्यूहनाशिनी । साऽभिधेतसचूह्यर्थं, भूयाच्छासनदेवता ॥७॥

खित्तेदेव्याए करेमि काउसगं । अन्नत्थ०, नो०, का०, नमोऽर्हत्, स्तुतिः—

यस्या' क्षेत्र समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रिया । सा क्षेत्र देवता नित्यं, भूयान्नः सुखदायिनी ॥८॥
अच्युताए करेमि काउसगं, १ नो०, का०, नमोऽर्हत्, स्तुतिः—

चतुर्भुजा तड्डिङ्गर्णा, कम्पलाक्षी वरानना । भद्र करोतु सधस्याऽच्छुसा तुरगवान्ना ॥९॥

समस्तवेयावचरणसतिगराण सम्मद्द्विममाहिगराण करेमि काउसगं, अन्तथ०, १ नोकारनो का०, नमोऽर्हत्०, स्तुतिः—

सवेऽत्र ये गुरुगुणौघनिघे सुवेया-धृत्यादि कृत्यकरणेकनिबद्धकक्षाः ।

ते शान्तये सह भयन्तु सुराः सुरीभिः, सद्दृष्टयो निग्विलचिघ्नचिघातदक्षा. ॥१०॥

जलदेवयाए करेमि काउसगं, अन्तथ०, नो० १, नमोऽर्हत्०, स्तुतिः—

मकरासनमासीनः, कृलिशाङ्गुशचक्रपाशपाणिचयः । आश्यामाशापालो, चिकिरतु कुरितानि बहणो वः ॥११॥

ए पञ्जी—

करोतु शान्ति जलदेवताऽसौ, सम प्रतिष्ठाविधिमाचरिष्यतः ।

आदास्यतो वा मम वारि तत्कृते-प्रसन्नचिन्ताः प्रदिशंत्वनुज्ञा ॥१२॥

१ नोकार कदी, वेमी, नमृत्युण, जावंति चे०, स्वमासमण, जावत केवि साहू०, नमोऽर्हत्, स्तवन नीचेतुं—

ओमिति नमो भगवओ, अरिहंतसिद्धायरियउवज्जाय । वरसव्यसाहुसुणिसय-धम्मतित्यप्पवयणस्म ॥१॥

सम्पणवं नमा तद् भगवद्देह, सुयदेवयाद् सुहयाण । सिवसंति देवयाणं, सिवयवगणंदेवयाणं च ॥२॥
 इंदाऽगिजमनेरुद्रय-वरुगावाउकुवैर्दसाणा । वंभो नागुत्ति दस-ण्डमवि य सुदिसाण पात्राणं ॥३॥
 सोमयमवरुण वंसमण-वासवाणं तहेव पंचण्डं । तद् लोगपालयाणं, सुराङ्गहृण य नचण्डं ॥४॥
 साहंतस्स समक्खं, मज्झमिणं चैव धम्मणुठाणं । सिद्धिमच्चिग्रं गच्छकू, जिणाद् नचकारओ धाणिं ॥५॥

जयवीरय पूरा कहंवा. पछी विधिकार कल्लोना कंडे गेवासुव वॉने, गुरु कल्लो उर यामधेप करे. कंसर चन्दतना छांडा नांवे, प्रतिष्ठाविधिकार श्रावको ते कल्लोने जल पासे स्थापन करी पुत्र नालिये, कल ४, जत्रमां नाने. पछी—
 क्षीरोदधे ! स्वयंभूश्च, सरः पद्ममहाहूद् ! । जीते ! शीतादके ! कुण्ड !, जलेऽस्मिन् संनिधिं कुरु ॥१॥
 गंगे ! च यमुने चैव, गोदावरि ! सरस्वति ! । कावेरि ! नर्मदे ! सिन्धो !, जलेऽस्मिन् संनिधिं कुरु ॥२॥

आ चै श्लोको बोलीने वसे गली ते जलडे ४ कल्लो संपूर्ण भरवा, जल पासे लाडवा आदि तैयम मुकी थल नंगल देवरावतां, वाजिनोना नादपूर्वक पवित्र शरीर तथा वरुवाली ४ कुलीन श्रियोने ते कल्लो उपडवी, वस्त्र वंगोल आदियो संघनी भक्ति करे, महोत्सवपूर्वक देहरासरे आनी देहराने ३ प्रदशिणा देऽ जलहस्तो तथा जिननिग गनाए आदि पवित्र स्थाने, बुधिन स्थापन करे, धवलमंगल गीत गवरावे, तथा वाजिनो वगडावे. इति जलयात्रा विधिः ॥

अथ कुंभस्थापना विधिः ॥

आवश्यक सामग्री—कुम स्थापना माटे नीचे लखेल सामग्री शयस तैयार करवी, सुन्दर कोणे धोलेल कुंम ? , कुममा जल रेडवा
 माटे जराक म्बोटो मीजो कोरो कुम ? , अमोट जलनो हाडो अथवा घडो, जलयात्राविधियी लावेक जल, गगाजल, कडुनी चाटकी ? , झेर
 चंदननी चाटकी ? , अयाडानी अथवा सरियानी लेखण ? कोरी, जव अने भात, अथवा जव अने सुनार सेर ? 1, पंचरतननी
 पोडली, रूपानाणु ? , पचपल्लर पैकीनां अथवा नागखेळनां पान ४, नालियेर ? , नीछु वख चोरस हाथ ? 1, मॉडल-मरोडाफली
 गंधल गेमासखु करुण ? , ह्येरी रकं पानां ३, फूलमाला ? , गामक्षेप पुडी ? , अक्षत रकंजी ? , फल ? , नैवेद्य सेर ? 1),
 आस्ती दीपो तैयार करेल ? -१ ।

उपर्युक्त सामान ? कुम स्थापनानो छे जो बे स्थानके २ कुम स्थापना होय तो मामान जावी वसणो तैयार करवो जेदिये.
 विधि—उत्सवना प्रथम दिवसे वा ५-७ दिवस पूर्व अने छेगटे मुहूर्तना दिवसे पण कुमचक्र अने चन्द्रबलवालो शुभ
 दिवस नीदने रुमस्थापना करी.

प्रतिष्ठानां कुमस्थापना बे स्थले करवानी होय छे. ? -ज्यां मित्रनी स्थापना करवानी होय त्या मित्रा जमगा हाथनी
 तरफ, अने २-जे स्थानके-महप आदिमा स्थापनीय मित्र उत्तर दिक्कान स्थापिन होय त्या मित्रा जमगा हाथनी तरफना
 भूमि भागमा.

स्थापनीय कुम काला दाग विनानो, सुन्दर आकारवालो पासो होवो जोड्ये. वने त्या सुधी नेने धोत्रीने उपर -अटमगल

आदि मांगलिक चित्रो चीतरावधां, जे स्थानके कुंभ स्थापवो होय त्यां सधवा स्त्रीनां हाथे प्रथम कंकुनो स्वस्तिक करावी ते उपर जब अने छालिनो अथवा जब अने जुवार सेर १। नो स्वस्तिक कराववो, प्रथम कुंभने धोइ धूपीने तेमां केसरचंदननो स्वस्तिक करावो अने फरतो च्यारे तरफ—“ॐ ह्रीं सर्वांपद्रवाच्च नाशय नाशय स्वाहा।” या मंत्र केसर-चंदन वडे आवाडानी लेखणथी लखवो, पछी पंचरत्ननी पोटली कुंभमां मूकवी, रुपानाणुं पण ए उ वखते कुंभमां नाखी देखुं.

ए पछी जलयात्रा विधिथी लावेल जल अने गंगाजल सेलवेल अचोट जलनी अखंड धाराए करी सधवा स्त्रीना हाथे ते कुंभ भराववो, अथवा तो कुंभ सधवाना हाथमां आपीने अखंड जलधाराथी भरवो. कुंभ भराया पछी तेना मुखे च्यारे दिशाओमां १-१ पान ऊंची शिखाये मूकवुं, वच्चे श्रीफल मूक्रीने उपर सोभाग्य मंत्रे अभिमंत्रित मोंडल-मरोडा फलीयुक्त कंकण बांधवुं, कण्ठे फूलमाला पहाराववी, वल्ल उपर केसर-चन्दन लगाडी रुपेरी वर्कना पानां छापी माथा उपर ईडाणी मूकावी ते कुंभ ते सधवा स्त्रीने उपडाववो, अने भगवानने त्रण प्रदक्षिणा अपावी ते कुंभ पूर्वे करेल स्वस्तिक उपर “ॐ ह्रीं ङः ङः स्वाहा” ए मंत्र ७ वार गणीने श्वासकुंभक ‘ स्थिर ’ करी स्थापन कराववो, कुंभ स्थाप्या पछी गुरुनो योग होय तो गुल्ना हाथे ते उपर वासक्षेप कराववो, गुरुना अमाने विधिकार श्रावके वासक्षेप करवो, पछी कुंभनी आगल पाटलो ढाली सधवा स्त्रीना हाथे अक्षतनी गहुली कराववी, उपर फल मूकाववुं, अने नैवेद्य होतराववुं. जवारा वावेल होय तो तेमांथी ४ सरावलां कुंभनी च्यारे वाजु मूकाववां, जवारा वावेल न होय तो पाळलथी ववरावीने पासे मूकाववा.

कुम्भनी आगल सधत्रा स्त्रीना हाथे प्रतिदिन गहुली कराववी, धमलमगल गीत गव्हाय्या, कुम्भनी पांमे हिसक जीव-मान्जर आदिने ज्ञा देया नहि, रजस्वलाधीनी अथवा सोड पण अधवित्र मनुष्यनी टाटि पड्या देवी नहि.

॥अखण्ड दीपकस्थापना— (1)

उपकरणो—फाणस म्होड ? , कोडियुं म्होड ? , सचागीस तारनी दीवेट ? , पचरत्ननी पोटली ? , रूपानाणुं ? , ग्रावानाणु ? , मीढल मरोटाफलीवालुं रुक्कण ? , गापलुं घृत सेर ? , दीवासलीनी पेदी ? ॥

विधि—कुंभस्थापननो सामान तयार करती वखते ज उपरनो मामान पण तयार करीने साधे राख्चो, अने कुंभस्थापन पठी तरत ज फाणसने मंत्रित करण वाधी कोडियामा पचरत्ननी पोटली, रूपानाणु अने ग्रावानाणुं मूकवा ते पठी सधत्रा स्त्रीना हाथे ते कोडियामा दीवेट मुकागी गापनु घी पूरावचु अने दीपक चेतावचो. दीपक चेतावती वखते—

ॐ घृतमायुर्वृद्धिकर, भवति पर जैनदृष्टिसपर्कात् । तत्संयुतः प्रदीपः, पातु सदा भावदुःखेभ्यः ॥१॥

आ 'लोक ३ वार बोलचो—ते पळी दीपक सहित सधत्रा स्त्री जिनप्रतिमाने तण प्रदिक्षणा देडने कुंभनी जोडे पूर्व करेल कचु अथवा चंदन-केंसरना स्वस्तिक उपर फाणसनी अन्दर दीपक स्थापन करे अने ते पठी कुंभ अने दीपकनी आंगे आरती-मंगल दीपो करे

(२) कुंभ स्थापनविधि-प्राचीन—

आजकाल जाणणामां प्रतिष्ठा पूजा आदिनां प्रसंगोमां विधिकारोमा कुंभस्थापननी जे विधि प्रचलित छे, ते वर्णा अर्गाचीन

है, एटलें ज नहिं पण घणा मतमेदो पण तेमां जेवांमां आवे छे, असो आ स्थले 'शान्तिपर्वविधि'मां लखेल एक जुनामां जुनी विधि आलेखीये छीए. आशा छे के प्राचीन वस्तुना श्रद्धालु क्रियाकारको आनी उपयोग करतो.

चन्द्रबलादियुक्त शुभवेलां जेनां माता-पिता, साध-ससरो अने भर्तार जीवित होय एवी निःशुल्य निर्दोष साधर्मिक सीने पोताना घरे तेडी तेनो तांबूल आदिथी यथाशक्ति उपचार करीने शुभ अने साव नवो पाको माटीनो घडो लेइ चावल आदिना चूर्णवडे घोली शुभ स्थानथी लवेल जलथी भरवो. अंदर सोपारी अने सुवर्ण नाखी कंठे सुगंधी पुष्पमाला पहेंरावी, मुखे ४ नागखेलनां पान चारे दिशामां स्थापी, कलशचतुं मुख दांकी ते स्त्रीने उपडाववो, कलश उपर 'चन्द्रवो, रखाववो, पछी पंचसब्द वाजिन्त्रो वांगतां साथे शुभ स्त्रियो द्वारा गीत गवावतां वच्चे वच्चे शंख, मृदंग, ढोल, आदि वगडनाराओने दान आपती सुन्दर वेशे शोभती ते कलश उगाडनारी स्त्री भूमधाम पूर्वक देवालयना बाह्य द्वार पासे आवे, त्यां द्वारनी भीते चन्दन केसरना हाथा देइने विधि पूर्वक देवालयमां प्रवेश करे अने गहुंली उपर माची आदि राखीने ते उपर कलशनी स्थापना करे. कलशनी स्थापना थई एटले मुहूर्त सथायुं एम समजतुं. ?

नवांग वेदीरचना अने यववारक चपन ।

आ नवांग वेदीओनां वर्तनो (वासनो) मंगलगीतो अने वाजिन्त्रोना शब्दो पूर्वक शुभ चौघडियामां कुंभारना घरथी मंगा-
वर्वा अने मंगल घरमां एक बाजुमां राखी मूकचां. कुंभस्थापन कर्यां पहेलां अने न वनी शके तों पछी प्रतिष्ठा-मण्डपना ४

? आ कुंभस्थापन विधि श्रीजिनप्रमस्त्रिजोप. "शान्तिपर्वविधि"मां लखेल छे.

સ્વપ્નાઓમા નદ-ઉત્તર માપના ૯-૯ માટીના ગામ્ણો (વર્તનો) ઉપરા ઉપરી મૂકી તેને ફરતા ૪-૪ વાસડાઓ રોપી ગેવાયન
 વીટીને નવાગ વેદીઓ મજબૂત કરવી, અને ઉપર જવારાનું એક એક સરાવલું મૂકવું

આ નવાગ વેદીને જૂની ભાષામા 'નવાગવેદિ' એ નામથી ઉલ્લેખી છે. ઝાંઝાલ મારવાડમા અને 'વેદ' કહ છે.
 વર્તમાન સમયના ત્રિધિકારો આ 'નવાગવેદીને' વિવાહની 'ચોરી' તરિકે ઉપયોગમા લે છે.

કુપસ્થાપના પહેલાં અને તેમ ન વને તો તે ઘણી જવારા પળ વાનવા જમારા ૧૬ સરાવલાઓમા અને ૪ ગાંમની ૨૮
 છાવડિઓમા વાવમા જોયે.

જવારા વાનવા માટે જંગલની પીલી માટી અથવા તો શુદ્ધ જલાશયની 'માટી સુહલા (ટોપલા) ૫ અને ગાયોના વાડામાંનું
 લાતર સુહલા ૨ મંગાવી કુટાવીને ચારીકુ કરવા. કાટો કાકરો દૂર કરી વનેને મેગા ફરી થોડુ થોડુ પાણી છાટતા ઝુંચું-નીચું
 કરી મીનુ મજુ કરવું અને સરાવલાઓમા તેમજ વાશની છાવડિઓમા મારવું. સરાવલાની કોર ૧૥ આગલ અને છાવડિઓની કોર
 ને આગલ લાલી રાલવી પત્રી તેઓમા જર અને ત્રીહિ મેગા ફરી વાનવા. એક એક સરાવ અને ઝામડીમા એક એક મૂઠી ધાન્ય
 વાવવું. વને સરાવું વિલેરીને ઉપર મેલવેલ માટી-લાતર નાલ્વી વીજને ઢાંકી દેવું, આગલનો ધર આવે એટલુ માટી-લાતર ઉપર
 નાલવું, ઘણી દ્વારી વડે અથવા હાથનાં આગલાનીચે રાલ્વીને થોડું થોડું પાણી છાટીને જવારા પાગ. મરાવલાઓમા પાણી વધારે
 છાટવાથી જવારા ગલી જાય છે, માટે ઉપર પડવું રહે એટલું પાણી સરાવલામા ન છાટવું. માત્ર સાંજે અને સવારે ૨ વાર જ પાણી
 છાટવું. વાશની છાવડિઓમાં પાણી વધારે અને વધુ ગર છાટવું, તેમાં ગલવાનો મય નથી. વધારે પડવું પાણી હશે તો તે દ્વારી

ज्यो, अने 'जवारा' सारा उगरो. उन्हालामां चोथे, चोमासामां पांचमे अने शीयालामां छंद्द दिवसे जवारा उगे छे, माटे बनता सुधी वेलासर वाववा, बहु वहेला नहिं तो पण उरसवना पहला दिवसे तो अवश्य वाववा ज जोईये, कुंभस्थापना भले चादमां थाय तेनो बांधो नथी.

अर्वाचीन विधिओमां जवारा ब्राह्मणना हाथे अथवा ब्रह्मचारीना हाथे वववावाजा उल्लेखो छे; पण प्राचीन कल्पोमां एवो नियम नथी. एटले निर्दोष शुद्ध ब्रह्मचारी गमे ते होशियार माणस जवारा चात्री शकें छे. "यववारका त्रीहियवांकुरमयाः" आवुं

आधुनिक विधिओमां सात धान्य वाववातुं लखे छे, पण ए आस्त्रीय वस्तु नथी. "यववारका त्रीहियवांकुरमयाः" आवुं प्राचीन कल्पोतुं वचन होइ यव-क्रीहिना जवारा वाववा एज योय गणाय.

जवारा जो वहेला वाववा होय अने उगी गया होय ता जलयात्रामां ४ कलशो उपर ४ सराबलां मूकवां, पण आजकाल विधिकारो म्होडा आववाना कारणे जवारा म्होडा ववाय छे. ने जलयात्राना जलकलशो उपर नालीएर मूकवानी अने स्थापित कुंभने फरतां ४ जवारातां पात्रो मूकवानी प्रवृत्ति चालु भइ छे, तेथी स्थापित कलशोने फरतां ४-४ जवारातां पात्रो मूकवां.

आज-काल नयांगवेदीओ उपर विधिकारो जवारातां पात्रो मूकवता नथी, पण मौलिक विधिआना विधान प्रमाणे ४ वेदीओ उपर ४ जवारापात्र अवश्य मूकवां जोइये.

मौलिक प्रतिष्ठा विधि प्रमाणे नद्यावर्तना पाटलाना ४ खूणाओमां ४ गाडवा स्थापी ते उपर जवारातां ४ पात्रो मूकवातुं विधान छे, पण आज-काल आ विधि प्रमाणे नद्यावर्तना पाटलाने खूणे गाडवा थपता नथी ने जवारा मूकाना नथी, पण ए प्राचीनविधि चालवी जोईये, एस अमी मानीये छीये.

२ द्वितीयाह्निकम् ।

नन्यावर्तं आलेखनं-पूजनविधि, आह्निकबीजक्रमे ।

श्रीपर्णीपट्टके चन्द्र-चन्द्राभ्यां विलेपिते । नन्दावर्तं लिखेद्विमान्, शोभनं मन्थवर्तुले ॥३८॥
द्वितीये ब्रह्मे लेखा, परमेष्ठिपदावलिः । ज्ञानादिकत्रयं चैव, तृतीये जिनमातरः ॥३९॥
चतुर्विंशतिरालेख्या-श्रुतुर्थे ब्रह्मे ततः । कृत्वा षोडश क्रोष्ठानि, रोहिणीप्रमुखा न्यसेत् ॥४०॥
पञ्चमे ब्रह्मे विद्या-देवीनामुपरि क्रमात् । देवां लोकादन्तिका लेख्या-श्रुतुर्विंशतिसंख्यकाः ॥४१॥
षष्ठेऽष्टकोष्ठके वृत्ते, सौधर्मादिसुरधराः । तद्व्यश्रुत्वा समालेख्या-श्रुतुर्देवनिकायजाः ॥४२॥

सप्तमेऽष्टगृहे वृत्ते, दिशां पालान् विलेखयेत् । अष्टमे ब्रह्मे ष्यष्टगृहे, लेख्या गृहास्तथा ॥४३॥
अष्टवृत्तबहिर्भागे, प्राकारान् त्रीन् विलेखयेत् । अजतोरणसंयुक्त-चतुर्द्वारोपशोभितान् ॥४४॥
आद्यादारभ्य सर्वेषु, वृत्तेषु स्वस्वनामभिः । पूजयेद्वासचूर्णेन, मुग्गन्धेन सुरान् गुरुं ॥४५॥
आच्छाद्याऽखण्डवस्त्रेण, सितनाथं मुग्गन्धिना । संपूज्य बलिपुपाद्यैः पदः स्याद्यो जिनाग्रतः ॥४६॥

परिस्थितः कुम्भान्, सयवारशरावकान् । स्थापयित्वा गुर्खेवचन्दनं तनुयात्ततः ॥४७॥

भा०टी०—कहू चन्दनना रस बडे लेपेला सेवनना पाटला उपर ८ गोलवृत्त बनावीने बुद्धिमाने मध्य वर्तुलमां सुंदर नन्धावर्तनेओ आलेख करवो. वीजा वलयमां ८ कोठा करी ५ परमेष्ठिपदो अने ३ ज्ञानादि पदो आलेखवां. पल्ली वीजा वर्तुलमां चोवीसः जिनमाताओनां नाम लेखवां, ते बाद चोथा वलयमां १६ कोठाओ बनावी रोहिणी आदि १६ विद्यादेवीओ आलेखवी. विद्यादेवीओ पल्ली पांचमा वलयमां २४ लोकात्तिक देवीनां नामो आलेखवां. छट्टा वलयनां ८ घरोमां चारे निकायना सौधर्मा-दि इन्द्रादिके सहित तेमनी देवीओ आलेखवी.

सातमा वलयना ८ घरोमां ८ दिक्षापालो लेखवां. आठमा वलयना ८ घरोमां ग्रहोनाओ आलेख करवो. आठ वृत्तोनी बहार भज्जो, तोरणो अने चार द्वारोथी शोभता ३ प्राकारो (समवसरणना गढो) आलेखवा.

उपर प्रमाणे आलेखीने तैयार करेल नन्धावर्त पदना मध्यभागथी मांडीने, पेहेला, वीजा, वीजा आदि क्रमथी, तत्र स्थित देवीओ नाममन्त्रना उच्चार पूर्वक प्रतिष्ठाचार्ये वासत्रार्ण करीने वीजा दिवंसे पूजन करवुं. पुण्यादि सुगन्धि पदार्थोथी वासित अने सुगन्धि वनावेल अखंड श्वेत वस्त्र हांकीने उपर फल-नैवेद्यादि चढावी नन्धावर्तनेओ पट्टक जिनप्रतिमांनी आगल स्थापवो. नन्धावर्तपट्टकनी फरता चार दिक्षामां चार कलशो स्थापवां, कलशो उपर यवारा पात्रो मूकवां, ए वचुं कार्य समाप्त करीने प्रतिष्ठाचार्ये देवचन्दन करवुं.

द्वितीयाह्निक कृत्य विधि—

नन्द्यावर्त आलेखन अने पूजन योग्य मामग्री—आलेखन योग्य सेवननो अथवा अन्य शुभ काष्ठनो पाटलो चोरुम ? लोहाऽऽष्टुट । सोनानी पिंडी, कलम अथवा जाईनी लेखण १, आलेखन योग्य । मद्दश अंबड वान्न ? नंद्यावर्त, लेखक योग्य । रुद्रमिश्र चन्दनसनी वाटकी १, सतलेप योग्य । रुद्र-कस्तुरी-गोरोचन संमिश्र केसरनी वाटकी ? । रावानो अथवा ग्पानो प्रकार १, वृत्त लेखने ॥

पूजनयोग्य सामान—

रुद्रचूर्ण, वामचूर्ण, पूजन योग्य । गाड्या (न्हाना वडा धोलला) ४ । यवारा पात्र ४ । पात्र प्रकारना एकवान-नेवेध सेर १ । केसर चन्दन धोल वाटकी १ । पुष्प रंकेरी अथवा छार ? । मातु गान्य रंकेरी ? । अक्षत रंकेरी १ । मेनो रंकेरी १ । गंगा मूत्र कोषो ? । दूध तोला ५ । इपधाणु ? । दीपक फाणम ? । दृत्ववाडी ? । जलपात्र ? । कलशियो । सदशरु १, शान्छादन योग्य मफत । श्रीफल १ ।

नन्द्यावर्त आलेखन विधि—सेवन अथवा गीजा शुभ काष्ठना ? गज ममचोरस पाटला ने रुद्र-मिश्रित चन्दन-रसनो अक पंढी अक ७ वार लेप करी सुकई गया पंढी तेना मध्यभागथी छत्र भमवीने अथवा तो रावाना परकार वडे ८ दृत्तो (वलयो) पाड्या

मध्यगत प्रथम वलयमां—मध्यभागमा रुद्र-कस्तुरी-गोरोचन मिश्रित केसरना रस वडे सोनानी पिंडी या मोनानी लेखणथी अथवा तो जाईनी लेखणथी ९, लुगावलो प्रदक्षिणांत नंद्यावर्त आलेखने, तेना मध्यमा प्रतिष्ठाथ जिनप्रतिमा

अने उाची तरफ ईशानिन्द्र तथा शानिदेवतानी स्थापना कऱ्ची अने
चिन्तवी. जिननी जमणी तरफ शेखेन्द्र तथा श्रुतदेवता अने उाची तरफ ईशानिन्द्र तथा शानिदेवतानी स्थापना कऱ्ची अने
मध्यभांगां “ॐ नमोऽहे देव्यः” लखतुं.
२- बीजा बलयमां—पूर्वादि दिशाओंमां ८ कोष्ठको पाडी तेओमां अनुक्रमे—
१ ॐ नमोऽहे देव्यः । ३ ॐ नमः उपाध्ययैभ्यः । ४ ॐ नमः सर्वसाधुभ्यः । ५
२- बीजा बलयमां—पूर्वादि दिशाओंमां ८ ॐ नमः आचार्यैभ्यः । ६ ॐ नमः शुचिविद्यायै ।
१ ॐ नमः सिद्धेभ्यः । २ ॐ नमः नमश्चारित्र्येभ्यः । ७ ॐ नमः अश्रुतरिभ्यः । ८ ॐ नमः शुकुचिविद्यायै ।
३- बीजा बलयमां—पूर्वादि आठ दिशाओ पैकीनी प्रत्येक दिशां ३-३ कोष्ठको पाडी एकंदर २४ वने क्री प्रत्येक
ॐ नमो ज्ञानेभ्यः । ६ ॐ नमो दर्शनेभ्यः । ७ ॐ नमो दिशाओ पैकीनी प्रत्येक दिशां ३-३ कोष्ठको पाडी एकंदर २४ वने क्री प्रत्येक
ए आठ पदो पैकी सिद्धादि, ४ दिशाओमां अने ज्ञानादि ४ विदिशाओमां लखतुं.
३- बीजा बलयमां—पूर्वादि आठ दिशाओ पैकीनी प्रत्येक दिशां ३ ॐ सिद्धत्याए स्वाहा, ५ ॐ
स्वाहान्त नाम प्राकृत भाषामां लखतुं.
घरमां जिनमातलुं चतुर्थ्यंत स्वाहान्त नाम प्राकृत भाषामां लखतुं.
१ ॐ मरुदेवीए स्वाहा, २ ॐ विजयाए स्वाहा, ३ ॐ मेगाए स्वाहा, ४ ॐ मिद्धत्याए स्वाहा, ५ ॐ रामाए
१ ॐ मरुदेवीए स्वाहा, २ ॐ विजयाए स्वाहा, ३ ॐ पुहंवीए स्वाहा, ४ ॐ लक्ष्मणाए स्वाहा, ५ ॐ सामाए स्वाहा, ६ ॐ
मंगलाए स्वाहा, ६ ॐ सुमीमाए स्वाहा, ७ ॐ विष्णुए स्वाहा, ८ ॐ अचिराए स्वाहा, ९ ॐ विष्णुए स्वाहा, १० ॐ अचिराए स्वाहा, ११ ॐ अचिराए स्वाहा, १२ ॐ अचिराए स्वाहा, १३ ॐ अचिराए स्वाहा, १४ ॐ अचिराए स्वाहा,
स्वाहा, १० ॐ नंदेए स्वाहा, ११ ॐ सुव्यांगए स्वाहा, १२ ॐ सुव्यांगए स्वाहा, १३ ॐ सुव्यांगए स्वाहा, १४ ॐ सुव्यांगए स्वाहा, १५ ॐ सुव्यांगए स्वाहा, १६ ॐ सुव्यांगए स्वाहा, १७ ॐ सुव्यांगए स्वाहा, १८ ॐ सुव्यांगए स्वाहा,
ॐ सुजसाए स्वाहा, १५ ॐ सुव्यांगए स्वाहा, २० ॐ सुव्यांगए स्वाहा, २१ ॐ सुव्यांगए स्वाहा, २२ ॐ सुव्यांगए स्वाहा, २३ ॐ सुव्यांगए स्वाहा,
स्वाहा, १९ ॐ सुव्यांगए स्वाहा, २० ॐ सुव्यांगए स्वाहा, २१ ॐ सुव्यांगए स्वाहा, २२ ॐ सुव्यांगए स्वाहा, २३ ॐ सुव्यांगए स्वाहा,
२३ ॐ सुव्यांगए स्वाहा, २४ ॐ सुव्यांगए स्वाहा

४-जिनमातृ बलय उपरना चोया बलयमा—पूर्वादि आठ दिशाओमा बे बे कोष्ठ कर्वां, एटले आत्वा बलयमा १६ थरो आ कोष्ठओमा नीचे प्रमाणे १६ विद्यादेवीओ नखवी.—

ॐ रोहिणीए त्वा त्मा स्वाहा । ॐ पन्नसोए ही क्षी स्वाहा । ॐ वज्रसिखलाए ली स्वाहा । ॐ वज्र-
कुमीण त्मा वा स्वाहा । ॐ अपडिचक्राए श्वा स्वाहा । ॐ पुरिसदत्ताए त्मा स्वाहा । ॐ कालिए साँ हँ
स्वाहा । ॐ महाकालीए ॐ क्ष्मा स्वाहा । ॐ गोरीण यूँ इयूँ स्वाहा । ॐ गधारीण रँ क्षी स्वाहा । ॐ सब्त्य-
महाजालाए तूँ हाँ स्वाहा । ॐ मागत्रीण यूँ क्ष्मा स्वाहा । ॐ वडरुहाए सुँ मौँ स्वाहा । ॐ अच्युताए यूँ मौँ
स्वाहा । ॐ मागसीण ग्लुँ मौँ म्वाहा । ॐ महामाणसीण ह्यँ सुँ स्वाहा ।

५-विद्यादेवीओ उपरना पाचमा बलयमा—पूर्वादि दिशाओमा ३-३ कोठा पाहवा आ कोठाओमा लोकान्तिक
देवोना नामो लखा, ते नीचे प्रमाणे—

१ ॐ आदित्येभ्यः स्वाहा । २ ॐ आदित्येभ्यः स्वाहा । ३ ॐ वह्निभ्यः स्वाहा । ४ ॐ वरुणेभ्यः स्वाहा ।
५ ॐ गर्वतोयेभ्यः स्वाहा । ६ ॐ तुषितेभ्यः म्वाहा । ७ ॐ अन्यावाधेभ्यः स्वाहा । ८ ॐ रिष्टेभ्यः स्वाहा ।
९ ॐ अग्न्याभेभ्यः स्वाहा । १० ॐ सूर्याभेभ्यः स्वाहा । ११ ॐ चन्द्राभेभ्यः स्वाहा । १२ ॐ मत्याभेभ्यः
स्वाहा । १३ ॐ श्रेयसरेभ्यः स्वाहा । १४ ॐ क्षेमकरेभ्यः स्वाहा । १५ ॐ द्रुपभेभ्यः म्वाहा । १६ ॐ कामचारेभ्यः
स्वाहा । १७ ॐ निर्माणेभ्यः म्वाहा । १८ ॐ दिशान्तरक्षितेभ्यः म्वाहा । १९ ॐ आत्मरक्षितेभ्यः स्वाहा । २०

ॐ सर्वरक्षितेभ्यः स्वाहा । २१ ॐ मरुतेभ्यः स्वाहा । २२ ॐ वसुभ्यः स्वाहा । २३ ॐ अश्वेभ्यः स्वाहा । २४

ॐ विश्वेभ्यः स्वाहा ।
६ छट्टा बलयमां-आठ दिशाओमां ८ खानां पाडी पूर्वादि दिशाओमां—? ॐ सौधर्मादीन्द्रादिभ्यः स्वाहा ।

२ ॐ तद्देवीभ्यः स्वाहा । ३ ॐ चमरादीन्द्रादिभ्यः स्वाहा । ४ ॐ तद्देवीभ्यः स्वाहा । ५ ॐ चन्द्रादीन्द्रादिभ्यः स्वाहा । ६ ॐ तद्देवीभ्यः स्वाहा । ७ ॐ किन्नरादीन्द्रादिभ्यः स्वाहा । ८ तद्देवीभ्यः स्वाहा ।

७-सातमा बलयमां-आठ कोठाओ करी तेमां पूर्वादि क्रमथी नीचे प्रमाणे आठ दिशापालोने लखवा— १ ॐ इन्द्राय स्वाहा । २ ॐ अग्नये स्वाहा । ३ ॐ यमाय स्वाहा । ४ ॐ निर्रक्तये स्वाहा । ५ ॐ बरुणाय स्वाहा ।

६ ॐ वायवे स्वाहा । ७ ॐ कुबेराय स्वाहा । ८ ॐ ईशानाय स्वाहा ।
८-आठमा बलयमां-पण आठ कोठा करवा अने पूर्वादि दिशाओमां—ॐ आदित्येभ्यः स्वाहा । ॐ सोमेभ्यः स्वाहा । ॐ मंगलेभ्यः स्वाहा । ॐ बुधेभ्यः स्वाहा । ॐ बृहस्पतिभ्यः स्वाहा । ॐ शुक्रेभ्यः स्वाहा । ॐ शनै-

श्रेभ्यः स्वाहा । ॐ राहु-केतुभ्यः स्वाहा ।
आठ बलयोनी वहार चार चार द्वारयुक्त त्रण प्राकारो (गढे) बनाववा. प्राकारोना पूर्वादि द्वारो शान्ति १, भूति २, बल ३, आरोग्य ४, नामना तोरणो वडे शोभाववा, अने ते द्वारो उपर धर्म १, मान २, गज ३, अने मित्र ४, नामक ध्वजो आलेखवा.

प्रथम प्राकारना पूर्वादि द्वारो उपर सोम १, यम २, वह्म ३ अने कुबेर ४, नामना चार प्रतिहारो आलेखवा, प्रतिहारोना

हायमा अनुक्रमे धनुष्य १, दण्ड २, पात्र ३ अने गदा ४, ए आयुधो आपवा.
रीजा मध्यम प्राकारना पूर्वादि द्वारो उपर अनुक्रमे जया १, विजया २, अजिता ३, अने अपराजिता ४, ए नामक द्वार-

पालिकाओनो विन्यास रुखो

रीजा चार प्राकारना चारे द्वारेण यष्टिआयुगाला तुनरुनो आलेख करवो.

प्रथम प्राकारमा ज्ञेयादि ४ विदिशाओमा १० मभाओ आलेखी, ते आ प्रमाणे—

प्रथम प्राकारमा ज्ञेयादि ४ विदिशाओमा १० मभाओ आलेखी, ते आ प्रमाणे—

आग्नेयी विदिशामा साधुओ १, वैमानिक देवीओ २, अने साधीओ ३ एम त्रण मभाओ आलेखी.

नैऋतेयी विदिशामा भवनपतिदेवीओ १, व्यन्तरदेवीओ २, अने ज्योतिष्कृतेयीओ ३, एम त्रण मभाओ आलेखी.

वायवी विदिशामा भवनपतिदेवो १, व्यन्तरदेवो २, अने ज्योतिष्कृतेओ ३, ए त्रण मभाओ आलेखी.

ऐशानी विदिशामा वैमानिकदेवो १, मनुष्यपुरुषो २, अने मनुष्यस्त्रियो ३, ए त्रण मभाओ आलेखी.

रीजा प्राकारनी जदर तिर्यञ्चो आलेखवा, अने त्रीजा प्राकारनी अदर देम मनुष्योना यानो अने गहनो आलेखवा

रीजा प्राकारनी चहार मनुष्यो, देवो, आदिना आलेखो रुखा.

प्रत्येक द्वारानी अने तत्तक कमलिनीवनशोभित वावडीओ आलेखनी.

ते पडी वज्रलाडित इन्द्रपुर देह दिशाओमा “परविद्याक्ष. फ३” लवतु अने रोग विभागोमां “पामन्त्रा क्ष. फ३”

लखवुं, छेले चारे खुणाओमा ४ पूर्णकलशो लखना अने तेनी चहार वायुभवत आपवुं.

नन्द्यावर्तं पूजन विधि—नन्द्यावर्तं पूजन कर्तां प्रत्येक पदस्थित देवना नामनी आदिमां “ ॐ ” अने अन्तमां चतुर्थी विभक्ति लगाडी पूजार्थक ‘नमः’ शब्दनी प्रयोग करवो।
नन्द्यावर्तं पूजन वासक्षेप तथा कर्पूरना चूर्ण वडे प्रतिष्ठाचार्यना हाथे करवावुं विधान छे, जो प्रतिष्ठाचार्य ऐकथी अधिक होय तो पूजन मुख्याचार्य करवुं।

१—पूजाना आरंभमां प्रथम वलयना मध्य भागे परमेष्ठिमुद्राअे—
“ ॐ नमोऽर्हत्परमेश्वराय, चतुर्भुग्वारमोष्ठिने, त्रैलोक्यगताय, अष्टदिक्कुमारीपरिपूजिताय, देवाधि-
देवाय, दीव्यशरीराय, त्रैलोक्यमहिताय, आगच्छ आगच्छ स्वाहा। ”
आम आह्वान करी “ ॐ जिनाय नमः ” आ मंत्रथी वास कर्पूर वडे नन्द्यावर्तं स्थित जिनतुं पूजन करवुं, पछी जिननी जमणी वाजुमां “ ॐ शक्रेन्द्राय नमः ” आ मंत्रथी वास कर्पूर वडे नन्द्यावर्तं स्थित जिनतुं पूजन करवुं, पछी जिननी ॐ शान्तिदेवतायै नमः । आम नाम मंत्रो बोलीने शक्रेन्द्र, तदेवता, ईशानेन्द्र अने शान्तिदेवतानी वासचूर्ण पूजा करवी।

२—बीजा वलयना पूर्वादि कोष्ठकोमां सुष्टिक्रमे—
ॐ नमः सिद्धेभ्यः १, ॐ नमः आचार्येभ्यः २, ॐ नमः उपाध्यायेभ्यः ३, ॐ नमः सर्वसाधुभ्यः ४,
ॐ नमः ज्ञानेभ्यः ५, ॐ नमः दर्शनेभ्यः ६, ॐ नमः श्रारित्रेभ्यः ७, ॐ नमः शुचिविद्यायै ८,
आ प्रमाणे नाम मंत्रोच्चारण पूर्वक आलेखकमे वास-चूर्णवडे पूजा करवी।

३-त्रीजा वलयमा-२४ जिनमाताओनी नीचे प्रमाणे नाम मन्त्रे बडे वासचूर्णे पूजा करवी.

ॐ मरुदेवीए नमः १, ॐ विजयाए नमः २, ॐ सेणाए नमः ३, ॐ सिद्धथाए नमः ४, ॐ मंगलाए-
नमः ५, ॐ सुसीमाए नमः ६, ॐ पुहवीए नमः ७, ॐ लक्ष्मणाए नमः ८, ॐ रामाए नमः ९, ॐ नन्दाए
नमः १०, ॐ विण्डूए नमः ११, ॐ जयाए नमः १२, ॐ सामाए नमः १३, ॐ सुजसाए नमः १४,
ॐ सुव्वयाए नमः १५, ॐ अचिराए नमः १६, ॐ सिरिए नमः १७, ॐ देवीए नमः १८, ॐ पभावइए
नमः १९, ॐ पडमावइए नमः २०, ॐ वण्याए नमः २१, ॐ सिवाए नमः २२, ॐ वासाए नमः २३,
ॐ तिसलाए नमः २४.

अहो बधे 'नमः' शब्द पूजाना अर्थसां छे, शणाप अर्थसां नथी. एज प्रमाणे आगे यण जाणवुं.

४-चोथा वलयसां-पूर्वादि प्रत्येक दिशाना २-२ कोष्ठरोमा-

ॐ रोहिणीए नमः १, ॐ पन्नचीए नमः २, ॐ वज्जसिखलाए नमः ३, ॐ वज्जकुसीए नमः ४,
ॐ अपट्टिचक्काए नमः ५, ॐ पुरिसदत्ताए नमः ६, ॐ कालीए नमः ७, ॐ महाकालीए नमः ८,
गोरीए नमः ९, ॐ गन्धारीए नमः १०, ॐ सब्बत्थ-महाजालाए नमः ११, ॐ माणवीए नमः १२,
वद्धटाए नमः १३, ॐ अच्छुत्ताए नमः १४, ॐ माणसीए नमः १५, ॐ महामाणसीए नमः १६.

५-पांचसां-वलयता २४ कोष्ठकोमा नीचे प्रमाणे नाममंत्रोच्चारण पूर्वक लोकात्मिक देवीनी वासचूर्णे पूजा करवा-

ॐ सारस्वतेभ्यो नमः १, ॐ आदितेभ्यो नमः २, ॐ वह्निभ्यो नमः ३, ॐ वरुणेभ्यो नमः ४, ॐ गर्द-
तोयेभ्यो नमः ५, ॐ तुषितेभ्यो नमः ६, ॐ अग्न्यावाधेभ्यो नमः ७, ॐ अग्न्याधेभ्यो नमः ८, ॐ रिष्टेभ्यो-
१३, ॐ सुराभेभ्यो नमः १०, ॐ चन्द्राभेभ्यो नमः ११, ॐ सत्याभेभ्यो नमः १२, ॐ अयस्करेभ्यो नमः
दिशान्तरक्षितेभ्यो नमः १४, ॐ वृषभेभ्यो नमः १५, ॐ कामचारेभ्यो नमः १६, ॐ निर्मणिभ्यो नमः १७, ॐ
नमः २१, ॐ बसुभ्यो नमः २२, ॐ आत्मरक्षितेभ्यो नमः २३, ॐ सर्वरक्षितेभ्यो नमः २०, ॐ मरुतेभ्यो
१-छट्टा वज्रयमां—आठ कोष्ठक्रीमां नीचे प्रमाणे चार निकायना इन्द्रादि देवो तथा तेपनी देवीओलुं पूजन कालुं.—
ॐ सौधर्मादीन्द्रादिभ्यो नमः १, ॐ तद्देवीभ्यो नमः २, ॐ चमरादीन्द्रादिभ्यो नमः ३, ॐ तद्देवीभ्यो नमः
४, ॐ चन्द्रादीन्द्रादिभ्यां नमः ५, ॐ तद्देवीभ्यो नमः ६, ॐ किन्नरादीन्द्रादिभ्यो नमः ७, ॐ तद्देवीभ्यो नमः ८.
ॐ सातमा बलयमां—नीचे प्रमाणेनां आठ कोष्ठक्रीमां आठ दिशापालोनी पूजा करवी—
ॐ इन्द्राय नमः १, ॐ अग्नये नमः २, ॐ यमाय नमः ३, ॐ निऋतये नमः ४, ॐ वरुणाय नमः ५,
ॐ वायवे नमः ६, ॐ कुबेराय नमः ७, ॐ ईशानाय नमः ८.
ॐ आठमा बलयमां—आठ कोष्ठक्रीमां नीचे प्रमाणे ग्रहोनी पूजा करवी—
ॐ आदितेभ्यो नमः १, ॐ सोमिभ्यो नमः २, ॐ मंगलेभ्यो नमः ३, ॐ बुधेभ्यो नमः ४, ॐ बृहस्पति-

नव्य
प्रतिष्ठा-
पद्धतिः

स्यो नमः ५, ॐ शुक्रेश्यो नमः ६, ॐ शनैश्वरेश्यो नमः ७, ॐ राहु-केतुभ्यो नमः ८,
आठ बलयो पछीना प्रथम प्राकारनी आग्नेय कोणमा—ॐ गणधरादिपरिपत्त्रिकाय नमः । १-३ ।

नैऋत्य कोणमा—ॐ भवनपत्यादिदेवीपरिपत्त्रिकाय नमः । ४-६ ।

चायव्य कोणमा—ॐ भवनपत्यादिदेवपरिपत्त्रिकाय नमः । ७-९ ।

ईशान कोणमा—ॐ वैमानिकदेवादिपरिपत्त्रिकाय नमः । १०-१२ ।

आ मन्त्रपदो गेलीने वासचूर्ण वडे परिपत्त्रिकायनी पूजा करवी.

द्वितीय प्राकारमा तिर्यञ्चो अने तृतीयमा यान-वाहनो उपर वासक्षेप करामो, प्रथम प्राकारना पूर्वादि द्वारपालोनी नीचे
प्रमाणे पूजा करवी—

ॐ सोमाय नमः १, ॐ यमाय नमः २, ॐ बरुणाय नमः ३, ॐ कुवेराय नमः ४

द्वितीय प्राकारनी द्वारपालिकाओनी नीचेना मंत्रो द्वारा वासपूजा करवी—

ॐ जगद्यै नमः १, ॐ त्रिजगद्यै नमः २, ॐ अजितायै नमः ३, ॐ अपराजितायै नमः ४.

तृतीय प्राकारना द्वारपाल तुम्हरो नीचे प्रमाणे पूजा करवी—

ॐ तुम्बरवे नमः १, ॐ तुम्बरवे नमः २, ॐ तुम्बरवे नमः ३, ॐ तुम्बरवे नमः ४

त्रणे प्राकारोना पूर्वादि द्वारोना तोरणोनी पूजा नीचे प्रमाणे करवी—

ॐ शान्तिस्तोरणेश्यो नमः १ । ॐ श्रुतितोरणेश्यो नमः २ । ॐ बलतोरणेश्यो नमः ३ । ॐ आरोग्य-
तोरणेश्यो नमः ४ ।
पूर्वादि द्वारोनां ध्वजोतुं पूजन नीचे प्रमाणे करवुं।
ॐ धर्मध्वजाय नमः १ । ॐ मानध्वजाय नमः २ । ॐ गजध्वजाय नमः ३ । ॐ सिंहध्वजाय नमः ४ ।

पूर्वादि दिशाओमां-“ परविद्याः क्षः फट् ” अने विदिशाओमां-“ परमंत्राः क्षः फट् ” आ प्रमाणे आलेखेल मंत्रो
उपर तेना उच्चारणपूर्वक वासक्षेप करवो।
इन्द्रपुर उपर-“ ॐ पृथिवीमंडलाय नमः ” आ मंत्रोच्चारण पूर्वक वासक्षेप करवो।
पूर्ण कलयो उपर-“ ॐ पूर्णकलशाय नमः ” आ मंत्रोच्चारण करतां कलयो उपर वासक्षेप करवो।
वायुभवन उपर-“ ॐ वायु-मंडलाय नमः ” आ नाम मंत्रथी वासक्षेप करवो।
पछी पाटला उपर श्वेत वस्त्र ढांक्रवुं, गेवास्त्र वींटो उपर श्री कल मूक्रवुं, चल प्रतिष्ठा जणाववा माटे मध्यभागमां प्रतिष्ठाप्य
विचनी स्थापना कल्पनी, आसपास सात धान्य वेरवुं, फल-मेवो वस्त्र उपर चढाववो, आगल पवचान्नादि नैवेद्य ढोक्रवुं, अने पछी
नमस्कार पूर्वक संपूर्ण चैत्यवेदना करवी।

“ त्रयीक्रान्ताऽल्पन्तश्चततमोराशिचिदादं, जगज्जातालोकं जनयसि जगन्नेत्र ! हुतशुक्र ! ।
प्रसीदत्येतेन त्वयि मम मनो वाक् च सफला । भवत्येवाऽभ्यर्णीभवति स्नात्रसमये ॥ २ ॥ ”

ॐ नमः श्री अन्नपे प्रभृततेजोमयाय आग्नेयदिगधीश्वराय शक्तिहस्ताय सैषवाहनाय सपरिच्छदाय ।
श्री अग्ने ! सायुध सयाहन सपरिच्छद इह अशुक्नगरे अशुक्स्थाने श्रीजिनप्रतिष्ठामहोत्सवे, आगच्छ
आगच्छ, जल गन्ध गुण्यमक्षतान् फलानि घूपं दीपं नैवेद्यं सर्वोपचारान् गृहाण गृहाण, शान्तिं तुष्टिं पुष्टिं
ऋद्धिं धृद्धिं कुरु कुरु, सर्वममीहितं देहि स्वाहा ॥ २ ॥

३. यम —

“ प्रत्यूह समूहाऽपोह-शक्तिरहृत्प्रभावसिद्धेन । समवर्तिन्निह रक्षा-कर्मणि विनियोग एव तव ॥ ३ ॥ ”
ॐ य य नमो यमाय दक्षिणदिगधीशाय, कृष्णवर्णाय दण्डहस्ताय मरिष्यवाहनाय सपरिच्छदाय,
श्रीयम ! सायुधः सयाहन सपरिच्छद इह अशुक्नगरे अशुक्स्थाने श्रीजिनप्रतिष्ठामहोत्सवे आगच्छ आगच्छ,
जल गंध गुण्यमक्षतान् फलानि घूपं दीपं नैवेद्यं सर्वोपचारान् गृहाण गृहाण, शान्तिं तुष्टिं पुष्टिं ऋद्धिं धृद्धिं
कुरु कुरु, सर्वममीहितं देहि स्वाहा ॥ ३ ॥

४ निरुक्ति --

“मा मंस्थाः सस्थानो, युष्मदपिच्छित्तदिगेव वीनाया ।

निर्कृते ! निर्वृत्तिकारी, जगतोऽपि जिनाभिषेकोऽयं ॥ ४ ॥”

ॐ हंसकल ही नमः ही श्रीनिर्कृतये नैर्कृतदिग्धीशाय धूम्रवर्णाय ऋषुगहस्ताय शबवाहनाय सपरिच्छदाय श्रीनिर्कृते ! सायुधः सवाहनः सपरिच्छद इह असुकनगरे असुकस्थाने श्रीजिनप्रतिष्ठामहोत्सवे आगच्छ आगच्छ, जलं गन्धं पुष्पमक्षतान् फलानि धूपं दीपं नैवेद्यं सर्वोपचारान् गृह्णाण गृह्णाण, शान्तिं तुष्टिं पुष्टिं क्वडिं वृद्धिं कुरु कुरु, सर्वसमीहितं देहि देहि स्वाहा ॥ ४ ॥

५. वरुण --

उदाररसनागुणक्वणितकिंकिणीजालक- प्रबुद्धजघनस्थलस्थिरनिविष्टचेतोसुवः ॥

ससंभ्रमसमागता धनदराजहंसैः समानयन्तु मणिनूपुरान् वरुण ! वारनार्यस्तव ॥ ५ ॥”

ॐ वं नमः श्रीवरुणाय पश्चिमदिग्धीशाय मेघवर्णाय पाशहस्ताय मकरवाहनाय सपरिच्छदाय श्रीवरुण ! सायुधः सवाहनः सपरिच्छदः इह असुकनगरे असुकस्थाने जिनप्रतिष्ठामहोत्सवे आगच्छ, जलं गन्धं पुष्पमक्षतान् फलानि धूपं दीपं नैवेद्यं सर्वोपचारान् गृह्णाण गृह्णाण, शान्तिं तुष्टिं पुष्टिं क्वडिं वृद्धिं कुरु कुरु सर्वसमीहितं देहि देहि स्वाहा ॥५॥

६. वायु--

“ जाते जिनाभिषेके, विसृजन्तो विविधविटपिकुसुमानि ।

विंकिरन्तु वाग्धो वी, मिथ्यात्वतमोर्वितानानि ॥ ६ ॥”

ॐ य नमः श्रीवायवे चायन्यदिगधीशाय धूसरांगाय ध्वजप्रहरणाय हरिणवाहनाय श्रीवायो !
सायुधः सवाहनः संपरिच्छद इह असुकनगरे असुकस्थाने श्रीजिनप्रतिष्ठामहोत्सवे आगच्छ आगच्छ,
जले गंध पुष्पमक्षतान् फलानि धूप दीपं नैवेद्य सर्वोपचारान् गृहाण गृहाण, शान्ति तुष्टि पुष्टि ऋद्धि वृद्धि
कुरु कुरु सर्वसमीहित देहि देहि स्वाहा ॥६॥

७. कुबेर—

“ अहो विविधविस्मयाऽभ्युदयभृतिसद्भाजन, भवन्ति भवभेदिनो भगवतोऽभिपेकात्सवाः ।
यतस्त्वमपि गुणेश्वर ! समेत्य तत्कारिणः, करोपि परमेश्वरान् प्रकृत्कीरुत्वानपि ॥ ७ ॥”

ॐ य य य नमः कुबेराय उत्तरदिगधीशाय सर्वगक्षेश्वराय श्वेतवस्त्राय गदायुधाय नरवाहनाय सप-
रिच्छदाय, श्रीकुबेर ! सायुधः सवाहनः संपरिच्छद इह असुकनगरे असुकस्थाने श्रीजिनप्रतिष्ठामहो-
त्सवे आगच्छ, आगच्छ जलं गंध पुष्पमक्षतान् फलानि धूप दीपं नैवेद्य सर्वोपचारान् गृहाण गृहाण, शान्ति
तुष्टि पुष्टि ऋद्धि वृद्धि कुरु कुरु, सर्वसमीहितं देहि देहि स्वाहा ॥ ७ ॥

८. ईशान—

“ पतत्पदपरिक्रमक्रमविघूर्णितक्षमाधर, कटाक्षकपिलीभवद्भुवनभागमीशान ! ते ।

समस्तु करवर्तनाधिवलितशहर्क्ष क्षमानिधेरिह महोत्सवे सकलभावभाक् ताण्डवम् ॥ ८ ॥”
ॐ नमः श्रीईशानाय ईशानदिगधीशाय त्रिशूलहस्ताय वृषभवाहनाय सपरिच्छदाय श्रीईशान !
सायुधः सवाहनः सपरिच्छद इह असुकनगरे असुकस्थाने श्रीजिनप्रतिष्ठामहोत्सवे आगच्छ आगच्छ,
जलं गंधं पुष्पमक्षतान् फलानि धूपं दीपं नैवेद्यं सर्वोपचारान् गृह्णाण गृह्णाण, शान्तिं तुष्टिं पुष्टिं ऋद्धिं
वृद्धिं कुरु कुरु, सर्वसमीहितं देहि देहि स्वाहा ॥ ८ ॥

९. नाग—

“ नागाः फणामगिमयूखशिखाववह-शक्रायुधप्रकरविच्छुरितान्तरिक्षम् ।

सद्यः कुरुध्वसभियेकदिनं समन्ताद्, भूत्वा भवोद्भवभिदो भवने प्रदीपाः ॥९॥”

ॐ ह्रीं फूं नमः श्रीनागराजाय पातालस्वाभिने सायुधाय सवाहनाय सपरिच्छदाय श्रीनागराज !
सायुधः सवाहनः सपरिच्छद इह असुकनगरे असुकस्थाने श्रीजिनप्रतिष्ठामहोत्सवे आगच्छ आगच्छ,
जलं गंधं पुष्पमक्षतान् फलानि धूपं दीपं नैवेद्यं सर्वोपचारान् गृह्णाण गृह्णाण, शान्तिं तुष्टिं पुष्टिं ऋद्धिं वृद्धिं
कुरु कुरु, सर्वसमीहितं देहि देहि स्वाहा ॥ ९ ॥

१०. ब्रह्मा—

अद्याभियेकसमये स्मरसूदनस्य, भक्त्या नता विक्रमपञ्चमकल्याणत्पाः ।

ग्रहपूजन—

ग्रहेषु पूजनं पणं ग्रहचिन्त्रं च संनमना पाटला उपरं कुरु ज्ञो पाटलो आलेश्वेलो न होय तो तत्काल ज तेमा ९ कोठा करी एरु कोठामा एरु एक ग्रहेषु विहितद्रव्यं नडे मंडल आलेश्वरु अने साथे ज तेनु ग्रहयोग्य गंध, पुष्प, फल, नैवेद्य, वस्त्र, धूप, दीप, आदि वडे पूजन करु ते दर्शियान एक जण जे ग्रहेषु पूजनं यतु होय ते ग्रहना नाममंत्रनी माला गणे, “ॐ सूर्योय नमः । ॐ सोमाय नमः । ॐ भौमाय नमः । ॐ बुधाय नमः । ॐ शुक्राय नमः । ॐ शनैश्चराय नमः । ॐ राहवे नमः । ॐ केतवे नमः । ॐ ए ग्रहोना नाममंत्रो छे. एमनी मालाओ अनुक्रमे-शवालानी, स्फटिकनी, प्रवालानी, केशवानी, सुवर्णनी अथवा केशवानी, स्फटिकनी वा स्वर्णनी, अकलवेरनी, अने गोमेद अथवा सिद्धिया स्फटिकनी होय छे

पूजन श्राभ करता हाथमा पुष्पाजलि लेने—

“सर्वे ग्रहा दिनकरप्रसुग्वाः स्रुक्रम-पूर्वोपनीतफलदानकरा जनानाम् ।

पूजोपचारनिकर स्वकरेषु लात्वा, सन्तगाताः सपदि तीर्थकरार्चनेज्ज ॥१॥”

आ वाक्य बोली पुष्पाजलि पाटला उपर नासी ग्रहोने वधाववा, पछी एरु एरु काव्य मंत्रसहित बोली पोतपोतानी दिशामा स्थापेल प्रत्येक ग्रहेषु पूजन करुं.

१. सूर्यः—

“ चिकसितकमलावलीविनिर्यत्-परिमललालितप्लुतपादवृन्दः ।

दशशतकिरणः करोतु नित्यं, भुवनगुरोः परमार्चने शुभौघम् ॥ १ ॥”

“ ॐ घृणि घृणि नमः सूर्याय सहस्रकिरणाय रक्तवस्त्राय कमलहस्ताय ससाधरश्रवाहनाय सपरिच्छ-
दाय श्री सूर्य ! सायुधः सवाहनः सपरिच्छद् इह असुकनगरे असुकस्थाने श्रीजिनप्रतिष्ठामहोत्सवे
आगच्छ आगच्छ, जलं गंधं पुष्पमक्षतान् फलानि धूपं दीपं नैवेद्यं सर्वोपचारान् गृहाण गृहाण, शान्तिं
तुष्टिं पुष्टिं ऋद्धिं वृद्धिं कुरु कुरु, सर्वसमीहितानि देहि देहि स्वाहा ॥१॥”

२. चन्द्रः—

“ प्रोद्यत्पीशूषपूरप्रमृमरजगतीपोपनिर्दोषकृत्य-व्यावृत्तो ध्वान्तकान्ताकुलकलितमहामानदत्तापमानः ।
उन्माद्यत्कण्टकालीदलकलितसरोजालिनिद्राविनिद्रः-अन्द्रअन्द्रावदातं गुणनिवहमभिव्यतनोत्वात्मभाजाम् ॥२॥”

“ ॐ चं चं चं नमश्चन्द्राय अमृताय अमृतमयाय श्वेतवस्त्राय अक्षसूत्रकमण्डलुपाणये हरिणवाहनाय
सपरिच्छदाय, श्रीचन्द्र ! सायुधः सवाहनः सपरिच्छद् इह असुकनगरे असुकस्थाने श्रीजिनप्रतिष्ठामहो-
त्सवे आगच्छ आगच्छ, जलं गंधं पुष्पमक्षतान् फलानि धूपं दीपं नैवेद्यं सर्वोपचारान् गृहाण गृहाण, शान्तिं
तुष्टिं पुष्टिं ऋद्धिं वृद्धिं कुरु कुरु, सर्वसमीहितानि देहि देहि स्वाहा ॥ २ ॥”

३. मंगलः—

“ ऋणाभिहन्ता सुकृताधिगन्ता, सदैव वक्रः क्रतुभोजिमान्यः ।
प्रमाथकृत् विघ्नसमुच्चयानां, श्रीमगलो मंगलमातनोतु ॥ ३ ॥”

“ ॐ हूं हूं हंस. नमः श्रीमगलाय विद्रुमवर्णाय रक्तानराय, रक्ताक्षसूत्रकुण्डिकापाणये गजवाहनाय
सपरिच्छदाय, श्रीमगल ! सायुधः सवाहनः सपरिच्छद इह अमुकनगरे अमुकस्थाने श्रीजिनप्रतिष्ठासहो-
त्सवे आगच्छ आगच्छ, जल गन्धं पुष्पमक्षतान् फलानि धूप दीप नैवेद्य सर्वोपचारान् गृहाण गृहाण, शान्ति
तुष्टिं पुष्टिं कृद्धिं वृद्धिं कुरु कुरु सर्वसमीहितानि देहि देहि स्वाहा ॥ ३ ॥”

४ बुधः—

“ प्रियगुणरूपागो गलदमलपीयूषनिरुप-स्फुरद्ग्राणीत्राणोद्भूतसकलशास्त्रोपचयधीः ।
समस्तभ्रातीनामनुषमविधान शशिसुतः, प्रनृनारातीनामुपनयतु भग स भगवान् ॥ ४ ॥”

“ ॐ ॐ नम श्रीबुधाय हरितवस्त्राय अक्षसूत्रकमण्डलुपाणये केसरिवाहनाय सपरिच्छदाय श्रीबुध !
सायुध. सवाहनः सपरिच्छद इह अमुकनगरे अमुकस्थाने श्रीजिनप्रतिष्ठासहोत्सवे आगच्छ आगच्छ जल
गन्धं पुष्पमक्षतान् फलानि धूप दीप नैवेद्य सर्वोपचारान् गृहाण गृहाण, सर्वसमीहितानि देहि देहि स्वाहा ॥४॥”

५. गुरुः—

“शास्त्रप्रस्तारसारप्रतमतिचितानाभिमानानिमान-प्रागल्भ्यः शम्भुजं भक्षयकरदिनकृद्धिष्णुभिः पूज्यमानः ।
निःशेषाश्चप्नाजतिव्यतिकार परमाधीतिहेतुर्ब्रूहत्याः, कान्तः कान्तादिदृष्टिं भवभयहरणं सर्वसंघस्य कुर्यात् ॥५॥”

“ॐ जीव जीव नमः श्रीगुरवे बृहतीपनये सर्वदेवाचार्याय पीतनस्त्राय पुस्तकहस्ताय श्रीहंसवाहनाय
सपरिच्छदाय, श्रीशुभः सवाहनः सपरिच्छद् इह असुकनगरे असुकस्थाने श्रीजिनप्रतिष्ठामहोत्सवे
आगच्छ आगच्छ, जलं गंधं पुष्पमक्षतान् फलानि धूपं दीपं नैवेद्यं सर्वोपचारान् गृहाण गृहाण, शान्तिं तुष्टिं
पुष्टिं क्विं वृष्टिं कुरु कुरु, सर्वसमीहितानि देहि देहि स्वाहा ॥ ५ ॥”

६. शुक्रः—

“दयिनसंश्रुतदानपराजिनः, प्रवग्देहि शरण्य ! द्विरण्यद !
दनुजपूज्य ! जयोशन ! सचदी-दयिनसंश्रुतदानपराजितः ॥६॥”

“ॐ सुं नमः श्रीशुक्राय देत्याचार्याय स्फटिकोज्ज्वलाय श्वेतवस्त्राय कुंभहस्ताय तुरगवाहनाय सपरिच्छ-
दाय, श्रीशुक्र ! सायुधः सवाहनः सपरिच्छद् इह असुकनगरे असुकस्थाने श्रीजिनप्रतिष्ठामहोत्सवे आगच्छ
आगच्छ, जलं गंधं पुष्पमक्षतान् फलानि धूपं दीपं नैवेद्यं सर्वोपचारान् गृहाण गृहाण, शान्तिं तुष्टिं पुष्टिं क्विं
वृष्टिं कुरु कुरु, सर्वसमीहितानि देहि देहि स्वाहा ॥६॥”

७ शनैश्वर—

“ मा भूत् विपत्समुदयः गच्छ देहभाजां, द्रगित्युदीरिनलघिप्रगतिनितान्तम् ।
रुद्रग्निनीकलितकान्तिरनन्तलक्ष्मी, सूर्यात्मजो विननुतात् विनयोपग्रहः ॥७॥ ”

“ ॐ शः नमः शनैश्वराय नीलाम्बराय परशुहस्ताय कमठवाहनाय सपरिच्छदाय श्रीशनैश्वर ! सायुधः
सवाहनः सपरिच्छद् इह असुकनगरे असुकस्थाने श्रीजिनप्रतिष्ठामहोत्सवे आगच्छ आगच्छ, जलं गंधं पुष्पम-
क्षतान् फलानि धूप दीप नैवेद्य सर्वापचारान् गृहाण, शान्तिं पुष्टिं कृद्धिं शृद्धिं कुरु, सर्वस-
मीहितानि देहि देहि स्वाहा ॥७॥ ”

८ राट्ट—

“ मिहिरासुत ! सुवाकरगुर्यो-न्माटसादन ! विपाठविघातिन् ।।
उच्यत झटिति शत्रुसमूह, श्राद्धैवशुभानि नयस्व ॥ ८ ॥ ”

“ ॐ क्षः नमः श्रीराट्टे कञ्जलद्वयामलाय श्यामाल्वाय परशुहस्ताय मिहवाहनाय सपरिच्छदाय
श्रीराट्टे ! सायुः, जल गंध पुष्पमक्षतान् फलानि द्रूप दीप नैवेद्य सर्वापचारान् गृहाण गृहाण, शान्तिं पुष्टिं
कृद्धिं शृद्धिं कुरु कुरु, सर्वसमीहितानि देहि देहि स्वाहा ॥ ८ ॥ ”

०. केतुः—

“सुखोत्पातहेतो ! विपद्वाधिसेतो !, निपद्यासमेतोचरी घातकेतो ! ! ९ ॥”
अभद्रानुपेतोपमात्रायुकेतो !, जयाशंसनाहनिशं तादर्थ्यकेतो ! ! ९ ॥”
पन्नगयाहनाय संपरि-
श्रीजिनप्रतिष्ठासहोत्सवे
अशुक्लनगरे अशुक्लस्थाने श्रीजिनप्रतिष्ठासहोत्सवे
इह अशुक्लनगरे अशुक्लस्थाने श्रीजिनप्रतिष्ठासहोत्सवे
सर्वोपचारान् गृह्याण गृह्याण, शान्तिं तुष्टिं
जमणे

“ॐ नमः श्रीकेतवे राष्ट्रप्रतिच्छन्दाय श्यामाज्ञाय श्यामवस्त्राय पन्नगहस्ताय पन्नगयाहनाय संपरि-
श्रीकेतो ! सायुधः सवाहनः सपरिच्छद इह अशुक्लनगरे अशुक्लस्थाने श्रीजिनप्रतिष्ठासहोत्सवे
फलानि धूपं दीपं नैवेद्यं सर्वोपचारान् गृह्याण गृह्याण, शान्तिं तुष्टिं
स्वाहा ॥९॥”

आगच्छ आगच्छ, जलं गंधं पुष्पमक्षतान् फलानि धूपं दीपं नैवेद्यं सर्वोपचारान् गृह्याण गृह्याण, शान्तिं तुष्टिं
जमणे

पुष्टिं ऋद्धिं वृद्धिं कुरु कुरु, सर्वसमीहितानि देहि देहि स्वाहा ॥९॥”
पण्डितानां नये य कोष्ठो उपर सर्वद्रव्यो चही गया पछी तेने रत्नस्रै हांकवो; उपर भेवासूत्र चांधी जिनप्रतिमाना जमणे
पडसे स्थापन करवो. “जिनेन्द्रभक्त्या जिनभक्तिभार्या, सुषन्तु पूजावल्लिपुष्पधूपपात्र ।
अहा गता ये मत्किंलभावं, ते सानुक्कला वरदा भवन्तु ॥ १ ॥”

अहा गता ये मत्किंलभावं, ते सानुक्कला वरदा भवन्तु ॥ १ ॥”
आ काव्य बोली पाटला उपर चहावनी, प्रतिष्ठागुरु तेना उपर बासक्षेप कावो.
ग्रहस्थापन करी, तेनी आगल नीचे लखेल ग्रहशान्तिस्तोत्रतो पाठ करवो.
“ग्रहशान्तिस्तोत्रम्”

जगद्गुरुं नमस्कृत्य, श्रुत्वा सद्गुरुभाषितम् । ग्रहशान्तिं प्रवक्ष्यामि, सन्धानां सुब्रह्मेतवे ॥१॥

जन्मलग्ने च राशी च, उदा पीठन्ति खेचरा । तदा सप्रजयेद् धीमान्, खेचरे सहितान् जिनान् ॥२॥
 पुण्यैर्गन्धैर्धूपदीपैः, फलनैवेत्यसंयुतैः । वर्णसदृशदानैश्च, वस्त्रैश्च दक्षिणान्वितैः ॥३॥

पद्मप्रभस्य मार्तण्ड-श्चन्द्रश्चन्द्रप्रभस्य च । वासुपुत्र्यो भूसुतश्च, बुधोऽप्यष्ट जिनेश्वरा ॥४॥

विमलानन्तधर्माः, शान्तिः कुन्थुर्नमिस्तथा । चर्षमानो जिनेन्द्राणा, पादपद्मे बुध न्यसेत् ॥५॥

ऋषभाजितसुपार्धा-श्चाभिनन्दनशीतलौ । सुमतिः समवस्वामी, श्रेयासश्च बृहस्पतिः ॥६॥

सुविधेः ऋथित शुक्र, सुव्रतस्य शनैश्चरः । नेमिनाथस्य राहु. स्यात्, केतुः श्रीमल्लिपाठव्योः ॥७॥

जिनानामग्रतः कृत्वा, ग्रहाणा शान्तिहेतवे । नमस्कारगतं भक्त्या, जपेदष्टोत्तर शतम् ॥८॥

भद्रयादुरुवाचैवं, पञ्चमः श्रुतकैवली । विद्याप्रदातः पूर्वाद्, ग्रहशान्तिविधिं शुभम् ॥९॥

ॐ ह्रीं श्रीं ग्रहाश्चन्द्रसूर्याङ्गारऋषुधवृहस्पतिशुक्रशनिश्चराराहुकेतुसहिता मेधा जिनपतिपुरतोऽवतिष्ठन्तु,
 मम धनधान्यजयविजयसुखसौभाग्यवृत्तिर्हीर्तिरान्तिशान्तिस्तुष्टिपुष्टिबुद्धिलक्ष्मीधर्मार्थकामदाः स्युः स्वारा ॥
 इति ग्रहशान्तिः ।

॥ अष्टमगल स्थापना ॥

१ दर्पण	२ भद्रासन	३ वर्षमान	४ आगतस
५ मत्स्ययुगल	६ पूर्णकण्ठ	७ स्मृतिरु	८ नन्यार्त

अष्टमंगल स्थापनविधि—जिनत्रिम्य आगल सेवननो अथवा बीजा उत्तम काष्ठनो पाटलो मांडीनि हाथमां पुष्पाञ्जलि लेई-
मंगलं श्रीमदहन्तो, मंगलं जिनशासनम् । मंगलं सकलः संघो, मंगलं पूजका अमी ॥ १ ॥

आ पद्य बोली पुष्पाञ्जलि पाटला उपर चढाववी, ते पढी—

१. दर्पण—

आत्सालोकविधौ जनोऽपि सकलस्तीव्रं तपो दुश्चरं, दानं ब्रह्म परोपकारकरणं कुर्वन् परिसफूर्जति ।
सोऽयं यत्र सुखेन राजति स वै तीर्थार्थिधिपस्थाऽग्रतो, निर्भयः परमार्थस्त्विदुरैः संज्ञानिभिर्दर्पणः ॥१॥

२. भद्रासन—

“जिनेन्द्रपादैः परिपूज्यप्रष्टे—रतिप्रभावैरपि संनिकृष्टम् । भद्रासनं भद्रकरं जिनेन्द्र—पुरो लिखेन्मंगलसप्तयोगं ।२॥”

३. वर्धमान संपुट—

पुण्यं यशः ससुदयः प्रसुना महत्त्वं, सौभाग्यधीचिनयशर्ममनोरथात्र ।
वर्धन्त एव जिननायक ते प्रसादात्, तद्धर्ममानयुगसंपुटमादधासः ॥ ३ ॥

४. श्रावत्स—

“अन्तः परमज्ञानं, यद् भाति जिनाधिनाथहृदयस्य । तच्छ्रीवत्सव्यजात्, प्रकटीभूतं बहिर्वन्दे ॥४॥”

१-२ स्वस्तिक, २ श्रीवत्स, ३ नन्दावर्त, ४ वर्धमानक, ५ भद्रासन, ६ कलश, ७ मान्य, ८ दर्पण, (भगवती सुत्रोक्ताष्टमंगलक्रम)

५. मत्स्ययुगल—

“ त्वद्दध्यपचशरकेतनभाक्कूलस, कर्तुं सुधा, सुवननाथ ! निजापराधम् ।
सेवां तनोति पुरतस्तव मीनयुग्म, आढिः पुरो विलिखितोऽननिजाङ्गयुक्त्या ॥ ५ ॥”

६. पूर्णकलश—

“ विश्वत्रये च स्वकुले जिनेशो, व्याख्यायते श्रीकलशायमानम् ।
अतोऽत्र पूर्ण कलशं लिखित्वा, जिनार्चनाकर्म कृतार्थयामः ॥ ६ ॥”

७ स्वस्तिक—

“ स्वस्ति भृगगननागविष्टपे—पूदित जिनवरोदयेक्षणात् ।
स्वस्तिक तदनुमानतो जिन-स्याग्रतो बुधजनैर्विलिख्यते ॥ ७ ॥”

८. नन्यावर्त—

“ त्वत्सेवकानां जिननाथ ! दिक्षु, सर्वासु सर्वाभिधय. स्फुरन्ति ।
अतश्चतुर्धा नवकोणनन्यावर्तः सता वर्तयतां सुन्यानि ॥ ८ ॥”

उपरनु एक एक पद्य बोलीने जिनभिम् आगल पाटला उपर चन्दनना द्रवयी सोना-रूपाना जमो नडे अथया तो चानलो वडे ते ते मगलचिन्होनो आकार चित्रवो, उपर अक्षत पान सोपारी मूक्री पाटला उपर श्वेत रत्ननु आच्छादन करी गेवासुत्र वींटीने

पादलो जिननी आगल सूक्रवो. पछी पुष्पमाला हाथमां लेई—
“ दर्पणभद्रासनवर्द्धमानपूर्णघटमत्स्ययुग्मैश्च । नन्द्यावर्तश्रीवत्स-विस्फुटस्वस्तिकैजिनार्चाऽस्तु ॥१॥”

आ पद्य कहीने पुष्पमाला जिन प्रतिमाने चहावयी. ॥ इति तृतीयग्राहिकं कृत्यं ॥

(४) चतुर्थग्राहिकम् ।

“ सिद्धचक्रपूजन—आह्निकबीजकम् ”

“ क्षेत्रपालं दिशां पालान्, स्मृत्वा खेदानपि पुनः । जैनदेवीः सुरेन्द्राश्च, समाहाय प्रपूजयेत् ॥६२॥”

“ ततो भूतबलिं क्षित्वा, देहे पाणौ मंत्रान्दयसेत् । अर्हदादिपदैः सिद्धं, सिद्धचक्रं प्रपूजयेत् ॥६३॥”

भा०टी०—क्षेत्रपाल, दिक्पालो तथा ग्रहोर्नुं स्मरण करी शासनदेवीओ तेमज इन्द्रोने आहुवान करीने पूजवा, पछी दिशा-ओमां भूत-बलिक्षेप करवो अने अंगमां तथा हाथोमां मंत्रन्यास करावो. ए पछी अर्हत् आदि नवपदो वडे बनेला सिद्ध-चक्रनुं पूजन करवुं ।

कृत्यविधि—हाथमां पुष्पांजलि लेईने—

ॐ क्षौ क्षौ क्षौ क्षौ क्षौ । अर्हं जिनशासनवासिने क्षेत्रपालाय नमः । ए मंत्र अणोने दक्षिणदिशामां उछालवी.
“ ॐ ह्रीं दिक्पालेभ्यो नमः ” । “ ॐ ह्रीं ग्रहेभ्यो नमः ” आ मंत्रो वडे अनुक्रमे दिक्पालो अने ग्रहोनी पूजा करयी.
“ ॐ ऐं क्लीं ह्रौं भगवत्यः श्रीजिनशासनेश्वर्यश्चतुर्विंशति शासनदेव्यश्चकेश्वरी-अम्बिका-पद्मावती

कारिणो भवंतु स्वाहा ।”

आ मंत्र वडे भृत-वलि मंत्रीने दशे दिशाओमां धूप दीप चंदन पुष्प जल वास लापसी पुडला वडां सहित बलिवाकुला जिनगृहनी बहार उछालवा, पछी नीचे प्रमाणे अंगन्यास करवो—

“ ॐ नमः सिद्धे ” मस्तके, ॐ औं ह्रीं क्रीं वद वद वाग्वादिनि अर्हन्सुवकमलचामिनि नमः” मुखे, “ ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रूः अर्हन् नमः” हृदये, “ ॐ ह्रीं सर्वसाधुभ्यो नमः” नाभौ, “ ॐ ह्रीं धर्माय नमः” शरीरे ।

उपर प्रमाणे अंगन्यास कर्या पछी नीचेना मंत्रो द्वारा करन्यास करवो—
ॐ नमो अरिहंताणं-अंशुष्टाभ्यां नमः ।
ॐ नमो आयरियाणं-सध्यमाभ्यां नमः ।
ॐ नमो लोए सच्चसाहूणं-कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।

उपर प्रमाणे अंगन्यास तथा करन्यास करीने पुष्पाक्षत फल पत्र धूप वंडे सिद्धचक्र मंडलनी-निचेना क्रमथी पूजा करवी.

“ अर्हन्तः सिद्धसूरीन्द्रो-पाध्यायाः सर्वसाधवः । ज्ञानदर्शनचारित्र-तपांसि सिद्ध्येऽङ्गिनाम् ॥१॥”
आ श्लोक त्रिलीने सिद्धचक्रना अष्टदलकमलाकारमंडलने प्रथम पुष्पाक्षतोए वधावबुं.

सिद्धचक्र पूजन—

ॐ नमो सिद्धाणं-तर्जनीभ्यां नमः ।
ॐ नमो उवज्जायाणं-अनामिकाभ्यां नमः ।
ॐ नमो आगासगामीणं-करतलकरपुष्टाभ्यां नमः ।

पृष्ठी प्रत्येक पद विषे नीचे प्रमाणे श्लोकों अने मंत्रों गोलिने अरिहंत आदिनी जल, चन्दन, पुष्प अक्षत फल पत्र धूप दीप आदियी पूजा करवी, प्रत्येकपदनी पूजा गरु करता पहला- " नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।" आ नमस्कार वाक्य गोल्या करतु

१ " अथाष्टदलमध्याब्ज-कर्णिकाया जिनेश्वरान । आविर्भूतोऽहसद्बोधा-नादृतः स्थापयाम्यहम् ॥१॥"

" नि.शेषदोषेन्धनधूमकेतुनपारससारममुद्रसेतुन ।

यजे समस्तातिशयेरुहेतुन्, श्रीमज्जिनानग्जुजकर्णिकाया ॥ २ ॥"

" ॐ नमोऽर्हते जिनाय रजोहननायाऽगोरस्वभावाय निरतिशयप्रजार्हाय अरुहाय भगवते ह्ये अर्ह-
त्परमेष्ठिने स्वाहा ॥१॥"

आ श्लोकों अने मंत्र गोलि मध्यकर्णिकामा अरिहंतनी पूजा करती ॥१॥

२ " तस्य पूर्वदले सिद्धान्, सम्यक्त्वाद्विगुणात्मकान् । निःश्रेयसा पद प्राप्तान्, निदधे भक्तिनिर्भरः ॥३॥"

" तत्पूर्वपत्रे परित प्रनष्ट-दृष्टाष्टकर्मासधिगम्य शुद्धिम् ।

प्राप्तान्तरान् सिद्धिमनन्बोधान्, सिद्धान् भजे शान्तिकराक्षराणाम् ॥ ४ ॥"

ॐ नम. स्वयंभुवेऽजराय मृत्युजयाय निरामयाय अनिधनाय भगवते निरञ्जनाय ह्री सिद्धपरमेष्ठिने स्वाहा ॥२॥

आ श्लोक संहित मंत्र गोलिने पूर्वपत्रस्थित सिद्धनी पूजा करती ॥२॥

३. “स्थापयामि ततः सूरीन्, दक्षिणेऽस्मिन् दलेऽमले । चरतः पंचधाचारं, षट्त्रिंशत्सद्गुणैर्युतान् ॥६॥”
 “सूरीन् सदाचारविचारस्मरानाचारयन्तः स्वपरान् यथेष्टम् ।
 उग्रोपसर्गैकनिवारणार्थं-मभ्यर्चयाम्यक्षतगंधधूपैः ॥ ६ ॥”
 ॐ नमः पंचविधाचारवेदिने तदाचरणशीलाय तत्प्रवर्तकाय हूँ आचार्यपरमेष्ठिने स्वाहा ॥ ३ ॥
 उपरानो मंत्र बोली दक्षिणपत्र उपर आचार्यनी पूजा करवी ॥ ३ ॥
४. “द्वादशाङ्गश्रुताधारान्, शास्त्राध्यापनतत्परान् । निवेशयाम्युपाध्यायान्, पवित्रे पश्चिमे दले ॥७॥”
 “श्रीधर्मशास्त्राण्यनिशं प्रशान्त्यै, पठन्ति येऽन्यान्पि पाठयन्ति ।
 अध्यापकौस्तान् पराब्जपत्रे, स्थितान् पवित्रान् परिपूजयामि ॥ ८ ॥”
 ॐ नमो द्वादशाङ्गपरमस्वाध्यायससृद्धाय तत्तद्गुणैर्युतान् हूँ उपाध्यायब्रह्मणे स्वाहा ॥४॥
 आ पाठ बोलीने पश्चिमदिशागतपत्रमां उपाध्यायनी पूजा करवी ॥४॥
५. “व्याख्यादिकर्म कुर्वाणान् शुभधानैरुत्तमानसान् । उक्तरुद्रगतान् सर्वान्, माधूनर्चामि सुव्रतान् ॥९॥”
 “वेगगममन्तर्वचमि प्रसिद्धं, सत्यं तपो द्वादशधा शरीरे ।
 येषामुद्दक्षपन्नगतान् पवित्रान्, माधून् सदा तान् परिपूजयामि ॥ १० ॥”
 ॐ नमः स्वर्गाप्यर्गनाथकाय हूँ साधुमहात्मने स्वाहा ॥ ५ ॥

आ मंत्र पाठ बोलोने उत्तरदिशास्थितपामा माथुपट्टनी पूजा करनी ॥ ५ ॥

६ " खिनेन्द्रोक्तमतश्रद्धा-लक्ष्मणं दर्शनं यजेत् । मिथ्यात्वमथनं शुद्धं, न्यस्तमीशानसंखले ॥ ११ ॥ "

७ " ॐ नमः परमाभ्युदयनि श्रेयसहेतवे दर्शनाय स्वाहा ॥ ६ ॥ "

आ मंत्र बोली ईशानस्थित, दर्शननी पूजा करनी ॥ ६ ॥

८ " अशेषद्रव्यपर्याय-रूपमेवावनामकम् । ज्ञानमश्रेयपदार्थ, पूजयामि हितावहम् ॥ १२ ॥ "

९ " ॐ नमः सम्यग्ज्ञानाय स्वाहा ॥ ७ ॥ "

आ मंत्रपाठ बोली आग्नेयकोणना पत्रमा शाननी पृजा करनी ॥ ७ ॥

१० " सामायिकादिभर्भदै-आरित्र चारु पचथा । सखापयामि पूजार्थं, पत्रं हि नैकंते क्रमात् ॥ १३ ॥ "

११ " ॐ नमः परमाभ्युदयनि श्रेयसहेतवे चारित्राय स्वाहा ॥ ८ ॥ "

आ पाठ बोली, नर्मन्त कोणना पत्रमा चारित्रनी पूजा करनी ॥ ८ ॥

१२ ' द्विधा, ढादशधा भिन्न, पूतं पत्रे नप स्वयम् । निरापयामि मत्स्रासत्र, वाथव्या दिशि शर्मन्तम् ॥ १४ ॥

१३ " ॐ नमः परमाभ्युदयनि श्रेयसहेतवे नपसे स्वाहा ॥ ९ ॥

आ मंत्र बोली आग्नेयकोणमा नपपट्टनी पूजा करनी ॥ ९ ॥

पछी, अर्धपात्र हाथमा लेंई-

“निःस्वेदत्वादिदिव्यातिशयमयतनन् श्रोजिनेन्द्रान् सुसिद्धान्, सम्यक्त्वादिप्रकृष्टगुणभृतइहाचारसारांश्च सूरीन् ।”

शास्त्राणि प्राणिरक्ष्याप्रवचनरचनासुन्दराण्यादिशान्तः, तत्सिद्ध्यै पाठकाञ् श्रीयतिपतिसहितार्चयाम्यर्घदानैः ॥१॥”

“ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रूः पञ्चभ्यः परमेष्ठिभ्यः सम्यग्ज्ञानादिचतुष्टयान्वितेभ्यः स्वाहा ॥”
श्लोकसहित उपरानो मंत्र बोली मण्डल आगे अर्घपात्र मूकतुं अने उपर चन्दन पुष्प फल नैवेद्य-चढावर्षां, धूप उखेवर्षो। सिद्धचक्रतुं पूजन कर्या पछी प्रतिमा आगल स्नात्र पूजा भणानत्री, अने आरती उत्तारी मंगलदीपक करयोः ॥ इति सिद्ध-चक्र पूजा विधि ॥

॥ समाप्तं चतुर्थीहिक्र कृत्यं ॥

(५) पंचमाहिक्रम् ।

। विंशतिस्थानकपूजन-आहिक्रवीजकम् ।
क्षेत्रपालं नमस्कृत्य, दिगीशान् खेचरानपि । विद्यादेवीजैनदेवी-राहूय प्रणिपत्य च ॥६४॥
'रोगशोकादिभिः' श्लोकै-विधाय शान्तिघोषणाय । 'चत्वारि मंगलं' प्रोच्य, वज्रपञ्जरमाचरेत् ॥६५॥
ततश्च विंशतिस्थान-पदान्येवं प्रपूजयेत् । स्नात्रपूजां विधायान्ते, चैत्यवंदनमाचरेत् ॥६६॥
भा०टी०-क्षेत्रपाल दिशापालो अने ग्रहेने नमस्कार करी विद्यादेवीओ तथा शासनदेवीओतुं आहवान अने नमस्कार

करी ' रोगशोकादिभिर्दोषैरजिताय ' इत्यादि ' लोको वडे शान्ति घोषणा करवी, पत्नी ' चचारिमगलं ' इत्यादि शरण सुत्रनो पाठ नीलवो अने ' वज्रपञ्चर ' स्तोत्र वडे अगस्त्या करीने निश्चिती स्थानकना पढेनु अचुकमे पूजन करतु, स्नात्र भणायवु अने त्रेवटे चैत्यमदन करतु पाचमा दिवसे आटला हृतयो करवा

त्रीशस्थानक पूजा—

ॐ क्षा क्षेत्रपालाय नमः । ॐ ह्रीं दिक्पालेभ्यो नमः । ॐ ह्रीं प्रहेभ्यो नमः । ॐ ह्रीं पोडश विद्यादेवीभ्यो नमः । ॐ ह्रीं जिनशासनदेवीभ्यो नमः ।

उपरना मयो मणी पही नीचे प्रमाणे शान्तिघोषणा करवी—

रोगशोकादिभिर्दोषैरजिताय जितारये । नमः श्रीशान्तये तस्मै, चिह्नितानन्तशान्तये ॥१॥

श्रीशान्तिजिनभक्त्याय, भन्याय सुखसम्पदम् । श्रीशान्तिदेवता देया-दशान्तिमपनीयताम् ॥२॥

अम्वा निहतडिम्बा मे, सिद्ध-बुद्धममन्विता । सिते सिद्धे स्थिता गौरी, वित्तनोतु समीहितम् ॥३॥

धराधिपतिपत्नी वा, देवी पद्मावती सदा । क्षुद्रोपद्रवतः सा मा, पातु फुल्लफणावली ॥४॥

चञ्चककथरा चारु-प्रवालदलदीधितिः । चिर चक्रेश्वरी देवी, नन्दतादवताच्च माम् ॥५॥

खङ्गसैटककोदण्ड-बाणपाणिस्तिडिद्वयुतिः । तुरङ्गगमनाञ्छुसा, कल्याणानि करोतु मे ॥६॥

मथुरायां सपार्थश्री-सुपार्थस्तृपरक्षिका । श्रीकुवेरा नराख्ढा, सुताङ्काऽवतु वो भयात् ॥७॥

ब्रह्मशान्तिः स मा पाया-दपापाद्दीरसेवकः । श्रीमत्सत्यपुरे सत्या, येन कीर्तिः कृता निजा ॥८॥

श्रीशक्रमनुखा यक्षा, जिनशासनसंस्थिताः । देवा देवप्रस्तदन्धेऽपि, संघं रक्षन्त्वपायतः ॥९॥
 श्रीसहिसानमारुढा, यक्षसातङ्गसंगता । सा सां सिद्धायिका पातु, चक्रचापेषुधासिणी ॥१०॥
 उपरवा श्लोकी वडे शान्ति उद्घोषणा कर्मा पत्नी संपूर्ण नयकार गणी—
 चत्वारि मंगलं-अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, कैवल्यपन्नतो घम्मो मंगलं ।
 चत्वारि लोचुत्तमा-अरिहंता लोचुत्तमा, सिद्धा लोचुत्तमा, साहू लोचुत्तमा, कैवल्यपन्नतो घम्मो लोचुत्तम्मो ।
 चत्वारि सरणं पवज्जासि-अरिहंते सरणं पवज्जासि, सिद्धि सरणं पवज्जासि, साहू सरणं पवज्जासि,
 चत्वारि पवज्जासि-अरिहंते सरणं पवज्जासि ।
 केवल्यपन्नतं घम्मं सरणं पवज्जासि ।
 आ चार शरणानो पाठ मणवो अने अंते वज्रपञ्जर स्तोत्र वडे अंगन्याम कवो.

वज्र पञ्जर स्तोत्रम्—
 परमेष्ठि नमस्कारं, सारं नवपदात्मकं । आत्मरक्षाकरं वज्र-पञ्जराभं स्मराम्यहम् ॥ १ ॥
 ॐ नमो अरिहंताणं, शिरस्कं विरसि स्थितम् । ॐ नमो सिद्धाणं, मुखे शुक्लपटं चरम् ॥ २ ॥
 ॐ नमो आयरियाणं, अंगरक्षतिशायिनी । ॐ नमो उवज्जायाणं, आयुधं हस्तयोर्दृढम् ॥ ३ ॥
 ॐ नमो लोए सब्बसाहणं, मोचके पादयोः शुभे । एसो पंचनलुकारो, थिला वज्रमयी तले ॥ ४ ॥
 ॐ नमो लोए सब्बसाहणो, वप्पो वज्रमयो बहिः । मंगलाणं च सब्बेसि, खादिराजारस्रातिका ॥ ५ ॥
 सब्बपावप्पणासणो, वप्पो वज्रमयो बहिः । मंगलाणं च सब्बेसि, खादिराजारस्रातिका ॥ ५ ॥
 स्वाहान्तं च पदं ज्ञेयं, पहमं एवम् मंगलं । वप्पोपरि वज्रमयं, पियानं देहरक्षणे ॥ ६ ॥

महाप्रभावा रक्षेय, क्षुद्रोपद्रवनाशिनी । परमेष्ठिपदोद्भूता, रुचिता पूर्वसूरिभिः ॥७॥
यश्चैव कुरुते रक्षा, परमेष्ठिपदैः सदा । तस्य न स्याद् भय व्याधि-राधिश्चापि कदाचन ॥ ८ ॥
वज्रपञ्च मय्या पृथी श्रावणोए घसेला चन्दन केसर वडे-वीजा पाटला उपर नीचे ग्रमाणे २० कोष्ठको करवा-

१ ॐ ह्रीं नमो अहिंताय	२ ॐ ह्रीं नमो मित्राय	३ ॐ ह्रीं नमो पापणस्त	४ ॐ ह्रीं नमो आयरि- याणं	५ ॐ ह्रीं नमो उवज्जा- याणं
६ ॐ ह्रीं नमो येराण	७ ॐ ह्रीं नमो लोए स- वसाहण	८ ॐ ह्रीं नमो नाणो- उत्ताण	९ ॐ ह्रीं नमो सम्मदसण-	१० ॐ ह्रीं नमो विणय- घारीण
११ ॐ ह्रीं नमो चारि- घराण	१२ ॐ ह्रीं नमो सीलव्य	१३ ॐ ह्रीं नमो खणलव झाणीण	१४ ॐ ह्रीं नमो तवस्तीणं	१५ ॐ ह्रीं नमो गोयमस्स
१६ ॐ ह्रीं नमो वेया- घरयाण	१७ ॐ ह्रीं नमो समाहि गराणं ।	१८ ॐ ह्रीं नमो अपुवनाण-	१९ ॐ ह्रीं नमो सुअ- साण	२० ॐ ह्रीं नमो तित्थ- प्यभावगाणं

पछी स्नात्रकारे हाथमां पुष्पांजलि लेई—

अहंतसिद्धप्रवचन—गुरुस्थविरिचहुश्रुतास्तपस्वी च । ज्ञानोपयोग-समग्र्यदर्शनविनयाः सचारित्राः ॥६७॥
शीलव्रतक्षणलव-ध्यानतपस्त्रागसेवनव्रतानि । सभाध्यपूर्वज्ञान-श्रुतसेवाः प्रभावना तीर्थे ॥६८॥

विंशतिपदान्यमूनि, सकलसुखोत्कर्षधीजभूतानि । जगदानन्दकराणि, जयन्तिजगदेकशरणानि ॥६९॥
आ पद्यो बोलीने पुष्पांजलि वीसस्थानकना पाटला उपर नाखनी, ते पछी लखेल प्रत्येक पदनुं स्तुति-काव्य अने तेनो नाम मंत्र भणीने प्रत्येकपदनुं चंदन-पुष्प-फल-अक्षतो वडे पूजन करवुं.

१-यन्नाम मन्त्रजपलव्वभवविधिःश्ल, मूलानि जन्मजरयोर्भरणस्य भित्वा ।

भव्या व्रजन्ति पद्मक्षयमस्तदोषं, सोऽर्हन् ददातु विरुजं पद्मर्चकेभ्यः ॥७०॥
“ ॐ ह्रीं नमो अरिहंताणं ॥१॥”

उपायुं काव्य तथा नाम मंत्र बोळो अरिहंत पदनी पूजा करवी. पची ज रीते प्रत्येक पदनुं काव्य अने नामसंघ्र बोलीने पूजा करवी, प्रथम पदनुं काव्य बोळतां पहेलां अने वीससा पदनुं काव्य बोळतां पहेलां पण “ नमोऽर्हंत ” कहेवुं.
२-गङ्गेयधातुरिव कर्भरजोविदिग्ध-मात्यस्वरूपमधिकृत्य गुणक्रमालिम् ।

ध्यानानलेन विमलं विदधे निजं यैस्ते सिद्धये सम भवन्तु समस्तसिद्धाः ॥७१॥

“ ॐ ह्रीं नमो सिद्धाण ॥२॥ ”

३-तैर्यङ्कराद् वदनपङ्कजतः प्रसृतं, वाक्यं परागसदृशं भविनां हिताय ।
अस्योपयोगसहितोऽथ मुनिप्रधानः, संघः सदा प्रवचनं भवताद् विभूत्यै ॥७२॥

“ ॐ ह्रीं नमो पवयणस ॥३॥ ”

४-धर्मोपदेशकवरा गुरवो गणीन्द्रा, आचार्यमुख्यविबुधाः प्रवरप्रतापाः ।
आचारमार्गहृदयाः सदयाः सदाया, देयासुरस्तवृजिना जिनतत्त्वमार्गम् ॥७३॥

“ ॐ ह्रीं नमो आयरियाण ॥४॥ ”

५-जात्या श्रुतेन मुनिमार्गताव्दराशेर्दृष्ट्वा विलीनवृजिनाः सुजिनागमज्ञाः ।
शिष्याः पठन्ति समुपेत्य यदीयपार्श्वे, ते मङ्गलं ददतु पाठकपूज्यपादाः ॥७४॥

“ ॐ ह्रीं नमो उवज्जायाणं ॥५॥ ”

६-जेनागमाब्धिपरिमल्लनिर्मलाङ्गा-स्तीर्थान्तरीयनयनिर्झरधौतपादाः ।
सर्वज्ञमार्गरतिका रतिकान्तरीणान्, मार्गं बहुश्रुतवरा मुनयो दिशन्तु ॥७५॥

“ ॐ ह्रीं नमो धेराणं ॥६॥”

७-चाह्यान्तरङ्गरिपुनिर्दलनैकहेतौ, केतौ शिवस्य सरणस्तपसि प्रवृत्ताः ।
क्षाप्त्यादिधर्मनिरता विरतास्तपस्वि-वर्या दिशन्तु विविधोत्सवमङ्गलानि ॥७६॥

“ ॐ ह्रीं नमो लोए सञ्चसाह्रणं ॥७॥”

८-ज्ञानोपयोगकरणाच्चरणादिवृद्धि-ज्ञानोपयोगकरणाच्छिवशर्मसिद्धिः ।
ज्ञानोपयोगनिरता विरताः स्वदोषाञ्च, ज्ञानं ततः सदुपयोगमयं नमामि ॥७७॥

“ ॐ ह्रीं नमो नाणोवउत्ताणं ॥८॥”

९-सद्दर्शनं सकलदुर्गुणदोषहारि, सद्दर्शनं सकलसद्गुणपोषकारि ।
सद्दर्शनेन चरणादिगुणाः फलन्ति, सद्दर्शनेन मनुजाः शिवमानुवन्ति ॥७८॥

“ ॐ ह्रीं नमो सम्महंसणधराणं ॥९॥”

१०-सर्वार्णमेषु विनयो गुणमूलभूतः, संवर्णितः सकलकार्णकरो नराणाम् ।
एकेन येन हरिविक्रमभूपुरव्याः, पात्रं बभूवुरजामरसौख्यलक्ष्म्याः ॥७९॥

- “ ॐ ह्रीं नमो विणयधराण ॥१०॥”
- ११-आवश्यके चरणशुद्धिनिमित्तभूते, पूतेन्द्रियात्मनिरूपविभूतिदूते ।
सर्वादरेण निरतान् विरतानवधात्, भक्त्या नमामि चरणाश्रयसाधुवर्यान् ॥८०॥
- “ ॐ ह्रीं नमो चारित्तधराण ॥११॥”
- १२-मूलोत्तरे गुणगणे व्रतशीलसंज्ञे, सद्ब्रह्मगुप्तगुणिलोजितवीरचर्ये ।
स्थैर्याप्तमेरुसमताः सुमताङ्गिवर्गे, शं साधवो ददतु शीलरथाङ्गधुर्याः ॥८१॥
- “ ॐ ह्रीं नमो सीलव्यधारीण
- १३-ध्याने स्थिताः प्रतिलवं च प्रतिक्षणं च, संरुध्य चित्तममलं परमात्मतत्त्वे ।
ध्यायन्ति धीरसदृशं समतासमेता-स्ते सिद्धये मम भवन्तु सुयोगिवर्याः ॥८२॥
- “ ॐ ह्रीं नमो खणलचक्ष्णाणीण ॥१३॥”
- १४-विघ्नौघघाति सुनिकाचितकर्मपाति, जातिस्मृतिप्रभृतिदं हृतमन्मथार्ति ।
चेतोविशुद्धिकरमस्तसमस्तरोपं, पापं ददातु चरणस्य तपो ऽस्तदोपम् ॥८३॥

“ ॐ ह्रीं नमो सचस्सीणं ॥१४॥”

१५-त्यागस्त्रिलोकमहितो रहितो मदेन, त्यागं वदन्ति मुनयो भववार्धिपोतम् ।

त्यागेन तोषसहितेन जयन्ति मृत्युं, त्यागान्विताय गुणिने गणिने नमोऽस्तु ॥८४॥

“ ॐ ह्रीं नमो गोयमस्य ॥१५॥”

१६-व्यावृत्तभावनिरतं जिन-सूरि-पाठा-चार्येषु साधु-शिशु-वृद्ध-रुगन्वितेषु ।

लीड्रं तपश्चरति चैत्यवरे संसंघे, भक्त्या नमामि जिननामनिकाचनार्हम् ॥८५॥

“ ॐ ह्रीं नमो वेयावच्चरयाणं ॥१६॥”

१७-चारित्र्यधर्मनिरतेन रतेन मार्गे, सद्ब्रह्मभावविषयः स शुभान्वितेन ।

कार्यः समाधिरनिशं गुरुमुख्यपूज्य-पादेषु कृत्यकरणेन मनोनुकूलम् ॥८६॥

“ ॐ ह्रीं नमो समाहिगराणं ॥१७॥”

१८-गत्वा कुहापि गुणहीनमपि प्रणम्य, ग्राह्यं श्रुतवतामुपकारकारि ।

तस्मादपूर्वगुणकृत् पठतामपूर्व-ज्ञानं नमामि जिनशासनमार्गयामि ॥८७॥

“ ॐ ह्रीं नमो अपुष्पनागधराय ॥१८॥”

१९-सम्यच्छ्रुतं श्रुतधरश्च जिनेन्द्रधर्म-तत्त्वस्य मूलमनिरुद्धमहाप्रभावम् ।

यस्माद्धिनीतविनयाः सुजिनागमज्ञास्तापं विधूय विरुजं पदमाश्रयन्ते ॥८८॥

“ ॐ ह्रीं नमो सुअभक्षाणं ॥१९॥”

२०-वादेन धर्मकथनेन निमित्तवाण्या, सिद्धाञ्जनादिगुणतो निजयात्मशक्त्या ।

जैनेश्वरप्रवचनस्य विकाशकारो, तीर्थकरैरभिहितः स भवाब्धितारी ॥८९॥

“ ॐ ह्रीं नमो तिल्यप्पभावगाण, ॥२०॥”

ए पल्ली-गण, धूप, अक्षत, पुष्प, दीप, नैवेद्य, फल अने जळ, ए अष्ट द्रव्यो वडे, जिनपूजा करी पूर्वप्रतिष्ठित जिनविपनी आगल आदिनाथनो कलश भणवा पूरुंरु स्नान करतुं ते पल्ली चेत्यवदन करी ८ स्तुतिशाशी देवमन्दन करुं अने, प्रत्येक स्थान-कनो पूर्वोक्ति नाम मय नोली १-१ नवकार गणनो अन्ते वीमस्थानकना पाटला आगल-नैवेद्य-दोवकुं इति वीसस्थानक पूजा विधि ।

॥ समाप्तं पञ्चमाहिकम् ॥”

॥ (६) षष्ठाह्निकम् ॥

च्यवन कल्याणकोत्सवविधि—आह्निकबीजकम्

षष्ठे च दिवसे क्षेत्र-पालादीनां नमस्कृतिम् । विधाय विदुषा कार्य-मिन्द्रेन्द्राण्योः प्रकल्पनम् ॥९०॥

तथा च्युतिजिन्द्रेस्य, कल्पनीया भवान्तरात् । मातृकुक्ष्यवतारश्च, तत्र प्राणप्रवेशनम् ॥९१॥

सकलीकरणं हस्तन्यासो मन्त्रपदः सह । मातृकापर्णविन्यासो, जिम्बाङ्गेषु विधीयते ॥९२॥

एवं जिनस्य च्यवन-कल्याणक-महोत्सवम् । विधाय स्नात्रमन्ते च, विधेयं देववन्दनम् ॥९३॥

भा०टी०—छद्म दिवसे क्षेत्रपालादिकने नमस्कार करीने विद्वान् विधिकारे इन्द्र अने इन्द्राणीनी कल्पना करवी, अने ते बाद जिनना जीवन्तुं स्वर्गादि भवान्तरथी च्यवनं-मातानी क्लृप्ते अवतरन्तुं अने मानवीयप्राणप्रतिष्ठा-विधि करवी. प्रतिष्ठाप्य जिन विवना अंगोमां मंत्रपदो वडे सकलीकरण अने करल्यारा करी मातृका वर्णन्यास करवो.

आ प्रमाणे जिनतो च्यवन कल्याणक महोत्सव करीने स्नात्र करन्तुं अने अन्त्यां देववन्दन करन्तुं.

कृत्य विधि—

ॐ ह्रीं स्वौं लौं क्षौं क्षेत्रपालाय नमः । ॐ ह्रीं दिक्षपालेभ्यो नमः । ॐ ह्रीं ब्रह्मेभ्यो नमः । ॐ ह्रीं

षोडश महादेवीभ्यो नमः । ॐ ह्रीं जिनशासन देवीदेवेभ्यो नमः ।

क्रियाकारके उपर ग्रामणे मंत्रोन्वचरण पूर्वक पुण्याजलिओ नालवी, आ पछी प्रतिष्ठाकारक गृहस्थने विणे नीचेना मंत्रोवारा इन्द्रनी रूपना कती आपुण्णो पहेरामां—

सष्टेः प्रविकल्पिताऽतिविशदप्राग्भारमाभासुर-ज्ञानस्यापि विकल्पजालजघिनश्चारित्रतत्त्वस्य च ।
यत् पूर्वैः परिकल्पित जिनमहं रत्नत्रयाराधक, चिह्नं तद् निदये महेशकलितं यज्ञोपवीतं परम् ॥१॥

आ काव्य भणीने प्रतिष्ठा करावनारे जनोई रूपे सोनानी सांकली पहेरी
रत्नप्ररोहरुचिरैर्यदुत्थै-राकाशमस्त्रीकृतम् चिभाति ।

तच्छेखर शेषविधेयविज्ञो, मौलौ मयूखाढय मह दयामि ॥ २ ॥
आ काव्य भणीने मस्तके मुकुट अने ललाटे तिलक धारण करवो

दिव्यं दिव्यैरत्न जालैरनेकै-नेदं युन्वद् ध्वान्तमन्तःस्फुरद्भिः ।
हेमं हेम्ना निर्मित विश्वषणौ, पुण्य पुण्यैः कङ्कणं स्वीकरोमि ॥३॥

आ काव्य भणीने कंरुण पहेरु.

प्रथोतयन्ती निखिल स्वकान्त्या, प्रकोष्ठमद्गुतिराजिरम्या ।

शुभ्रेव जैनी वरसुद्रिकाभा-मलङ्करोत्वद्गुलिपर्वमूले ॥ ४ ॥

आ काव्य भणीने सुद्रिका पहेरी

स्थापयामीति संवौपद् ।

आ मंत्र वडे वासक्षेप मंत्री नवीन विवना मस्तके नाखवो अने जलमिश्रित करीने विम्बना सर्वांगे तेचु विलेपन करुं, तेनी आगे दुग्धभृत सुवर्ण कलश स्थापवो, अने—

सुकृतकरणदक्षः पञ्चसुख्यः समस्तः, सकलदुरितनाशश्छिन्नद्रुज्जर्मपाशः ।

विमलकुलविवृद्धये देवलोकाच्छ्युतः श्री-नियतपदसमृद्धये मानुषेर्दहं सदा त्वम् ॥१॥

रत्नत्रयालङ्करणाय नित्य-मच्छायकायाय निरामयाय । निःस्वेदतानिर्मलतायुताय, नमो नमः श्रीपरमेश्वराय ॥२॥

आ काव्यो भणी—

ॐ हौं ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रूं ह्रौं ह्रूं ह्रौं देवलोकाच्छ्युत्वा मानुषत्वेऽवातरत्, हंसः हंसः हंसः हंसः

श्रीपरमेश्वराय नमः स्वाहा ।

आ मंत्र बोली प्रतिष्ठाय नवीन सुन्दर जिन विम्बने दूधथी भरेला सुवर्ण कलशमां स्थापवुं, अने—

ॐ ह्रौं ह्रीं ह्रौं य र ल व श ष स ह क्षौं हंस असुष्य प्राणान् इह प्राणे असुष्य जीव इह स्थितः सर्वे-

न्द्रियाणि वाग्मनश्चक्षुःश्रोत्रःप्राणजिह्वासुहानि स्थापय संवौपद् वपद् स्वाहा स्वधा ।

आ मंत्र भणीने ते विम्ब उपर वासक्षेप करवो. ए रीते विम्बमां प्राणप्रतिष्ठा करवी. पळी

ॐ ह्रीं अहं ॐ ह्रीं-मोक्षद्वारे (ब्रह्मरंध्र उपर) ॐ ह्रीं अहं अ आ ललाटे (ललाट उपर)

ॐ ह्रीं अहं इ ई-दक्षिणेतरेनेत्रयोः ।
 ॐ ह्रीं अहं ऋ ऋ-नासापुटयोः ।
 ॐ ह्रीं अहं ओ औ-स्तन्ययोः ।
 ॐ ह्रीं अहं अः-जिह्वाग्रे ।
 ॐ ह्रीं अहं ग ङ-कंठे ।
 ॐ ह्रीं अहं च छ ज झ-दक्षिणसुजे ।
 ॐ ह्रीं अहं ङ ञ ङ ङ-दक्षिणकुकुक्षौ ।
 ॐ ह्रीं अहं प-दक्षिणोरी ।
 ॐ ह्रीं अहं व-गुले ।
 ॐ ह्रीं अहं म-स्त्रिजोः (श्त्रियोभयपार्श्वयोः) ।
 ॐ ह्रीं अहं र-ऊर्ध्वरोमात्रे (मस्तकादिकेषु) ।
 ॐ ह्रीं अहं ष-श्रीवाकृशादिसन्धिषु ।
 ॐ ह्रीं अहं य-गुल्फमूलयोः ।
 ॐ ह्रीं अहं ह-हृदये (माणस्थाने) ।

ॐ ह्रीं अहं उ ऊ-दक्षिणेनरकर्णयोः ।
 ॐ ह्रीं अहं ऋ ऋ-ऊर्ध्वार्धयो दन्तपत्रयोः ।
 ॐ ह्रीं अहं अ-मस्तके ।
 ॐ ह्रीं अहं क ख-सुखमंडले ।
 ॐ ह्रीं अहं ङ-ऊर्ध्वस्थाने । (दाढी पर) ।
 ॐ ह्रीं अहं प्र-वामसुजे ।
 ॐ ह्रीं अहं त थ द ध न-ग्रामकुकुक्षौ ।
 ॐ ह्रीं अहं क-वामोरौ ।
 ॐ ह्रीं अहं म-नाभिमंडले ।
 ॐ ह्रीं अहं य-शरीरस्थाने (उदरे) ।
 ॐ ह्रीं अहं ल-पृष्ठे ।
 ॐ ह्रीं अहं श-जानुयुग्मे ।
 ॐ ह्रीं अहं स-पदयोः ।

द्वयर्नदन करे आ प्रमाणे व्यवहन कल्याणरुनी विधि करवीं

इति च्यवन कल्पप्येक विधि ।

(७) सप्तमाह्निकम् ।

। जन्मकल्याणकोत्सवं विधि-आह्निककृत्यबीजकम् ।

सकलीकरणं स्वस्मिन्, शुचिविद्याधिरोपणम् । विधाय धलिप्रक्षेपः, कायो धूपजलान्वितः ॥९५॥
नव्यविन्धेषु सर्वेषु, क्षेप्तव्यः कुसुमाञ्जलिः । मुद्रा च तर्जनी वाम-शयेनाऽऽच्छोटनं ह्यपाम् ॥९६॥
तिलकं पुष्परोपं च, कृत्वा कार्यं तत परम् । वज्र-तार्क्ष्य-मुग्दराख्य-मुद्राभिर्विर्मरोपणम् ॥९७॥
दिग्बन्धनं च विधिना, सप्त-धान्याभिषेचनम् । विधायांश्चां प्रपूज्यांश्च, जन्मक्षणं निदर्शयेत् ॥९८॥
पट्टपञ्चाशत्कुमारीभिः, सृतिकर्म प्रकारयेत् । रक्षापोट्टलिकां वैध्या, करं मातुस्सुतस्य च ॥९९॥
जलचन्दनगन्धादि-पुष्पवासादिकांस्तथा । स्वस्वमन्त्रैरभिमन्त्र्य, रत्नमन्त्रिः कराद्भुजौ ॥१००॥
वध्या जिनस्य कण्ठे च, क्षेप्याऽरिष्टयवालिका । जलदर्शनपूर्वं च, गीतमृत्यादि कारयेत् ॥१०१॥
इन्द्राणीभिः कृते जन्म-क्षणे कार्यं जिनेशित्तुः । चतुःपष्टिसुराधीशै-भरौ जन्मभिषेचनम् ॥१०२॥

प्रतिष्ठाकारकेन्द्रेण, जिनाग्रे रूष्यतन्दुलैः । कार्योऽष्टमङ्गलालेष-स्ततश्चारात्रिकादिकम् ॥१०३॥

भा० टी०—प्रतिष्ठाचार्ये पोताना आत्सामां सकलीकरण करी शुचि विद्यानो आरोप करवो, पछी धूप तथा जलयुक्त बलि-क्षेप कराववो, अने वधा नचीन विम्बो उपर कुसुमांजलिक्षेप कराववो, तर्जनी मुद्रा देखाडवी, क्रियाकारके डावा हाथसां जल लेह् रौद्रदृष्टिपूर्वक जिनविम्बे आछोटुं, पछी विम्बेने तिलक करी मस्तके पुष्प चढाववां, गुरुए वज्र, गरुह, मुद्गर मुद्राओ वडे विम्बेने कवच करवो, मंत्रपूर्वक दिग्बन्ध करवो, क्रियाकारके अभिसंव्रणपूर्वक सप्तधानथी विम्बेने स्नपन करावुं, अग्ना देवीने पूजवा पूर्वक जन्ममहोत्सवतुं निदर्शन करावुं, छप्पन दिशाकुमारीओ वडे स्रुतिकम कराववु, माता तथा पुत्रने हाथे रक्षापोटली बांधवी, अने जल, चन्दन, गन्ध पुष्प, वास आदिने पोतपोताना मंत्रे अधिमंत्रित करवा, जिनना जमणां हाथनी आंगलीए पंचरत्ननी पोटली बांधवी, जिनता कंठे आरेठांनी माला तथा यवनी माला पहाराववी, अने जलदर्शन करावी गीत नृत्यादिनी धामधूम कराववी. कुमारीओ तथा इन्द्राणीओ द्वारा जन्ममहोत्सव कराया पछी ६४ इन्द्रोए मेरुर्वत उपर लेह् जईने च्चिननो जन्मभिषेक करवो, इन्द्ररूपे कल्पाथेला प्रतिष्ठाकारक गृहस्थे जिननी आगल रूपाना अक्षतो वडे अष्टमंगल आलेखवा अने ते पछी मंगलदीपक, आरती तथा लवणावतारणादिक कार्यो करवां.

कृत्यविधि—

ॐ नमो अरिंहताणं-हृदये, ॐ नमो सिद्धाणं-मस्तके, ॐ नमो आयरियाणं-शिखायाम्,
ॐ नमो उवज्जायाणं-सन्नाहे, ॐ नमो लोए सव्वसाहूणं-दिव्यात्ते

एष आत्मरक्षार्थं ३ वार पद भणनपूर्वक प्रतिष्ठाचार्ये ङगन्यास करवो, तथा —
 ॐ नमो अरिहंताण, ॐ नमो सिद्धाणं, ॐ नमो आयरियाण, ॐ नमो उवज्झयाणं, ॐ नमो लोए
 सच्चसाहण, ॐ नमो आगासगामीणं, ॐ नमो हः क्षः अशुचि. शुचिर्भवामि स्वाहा ।

आ शुचि विद्याए ३ वार सर्वो ग स्वर्गं करी प्रतिष्ठाचार्ये पोतानी पवित्रता करीने स्नाकारोनु पण सकलीकरण करु.
 ए पछी ' क्षि प ॐ स्वा हा ' ' हा स्वा ॐ प क्षि ' आ ५ तत्वोने पणो १, नाभि २, हृदय ३, मुख ४, ललाट ५ ।,
 तथा ललाट १, मुख २, हृदय ३, नाभि ४, पगोमा ५, एम च्छ उतर क्रम वडे ३ वार स्थापना. पछी—
 " ॐ ह्रीं ६ वीं सर्वोपद्रव चिन्मस्य रक्ष रक्ष स्वाहा "

आ मन्त्रमंडे बलि नाकुला भंगी प्रतिष्ठाना स्थानथी जल सहित बलि उरक्षेय करवा, धूप उखेवगो, चन्दन पुष्प अक्षत उछालना,
 पछी सर्वे नरीन जिन मित्रो उपर जल सहित कुसुमाञ्जलि—

अभिनवसुगन्धिविकसित-पुष्पौघभृता सुगन्धिधूपपाढया । चिन्मोपरिनिपतन्ती, सुखानि पुष्पाञ्जलिः
 कुरुताम् ॥

ए काव्य बोलीने गुरुए क्षेपवी, रने बचली आगळिओ उची करी रौद्रदृष्टिथी नवीन मित्रोने ' तर्जनी ' मुद्रा देवाडची,
 अने श्रावके डावा हायमा जल लेई " जलौं म्लौं " उच्चारणपूर्वक प्रतिमाने आछोटवु. पछी गुरुए—
 ॐ " ह्रीं क्ष्वीं सर्वोपद्रवं चिन्मस्य रक्ष रक्ष स्वाहा । " आ मन्त्रोच्चारण पूर्वक विवने दृष्टिदोप निवारणार्थं ' वज्रमुद्रा,

विंशो त्रण त्रण धान्योनी त्रण त्रण सुष्टि विंशो

अने अज मंत्रांश्री दिग्बन्धन पंण करुं. सांत धान्योनी त्रण त्रण सुष्टि विंशो

गण्डमुद्रा अने मङ्गलमुद्रा' वडे ३ वार कवच करुवो अने अज मंत्रांश्री दिग्बन्धन पंण करुं. सांत धान्योनी त्रण त्रण सुष्टि विंशो
श्रावके शण १, कुलथ २, रोह ३, जव ४, सरसव ५, कांग ६ अने अडेद ७; आ
ध्यातं श्रीमदनन्तबोधकलितैल्लौकिक्यतत्त्वोपमम् ।
उपर नाखवी, अने कुलदेवी अंशानी पूजा करुवी. पळी—
कुम्भिनः शुभसंभवाय सुरभिद्रव्याढ्यैर्वाः पूरितैः ॥१॥
“ संसारदुमदावपावकमहाज्वालाकलापोपमं, लोका-लोकिकविलोकनाय ।
श्रीमन्लौजिनरामप्रसूतिसमयस्नानं मनःपार्वनं, प्रसृतभद्राय जिनेश्वराय ॥२॥ ”
“ नमस्त्रिलोकीतिलकाय लोका-लोकिकविलोकनाय ।
सर्वेन्द्रवन्द्याय जितेन्द्रियाय, प्रसृतभद्राय प्रसवाय जगज्ज्योतिष्कराय
सर्वेन्द्रवन्द्याय जितेन्द्रियाय ह्रीं मानुशुभ्याः प्रसवाय

अहंते नमः स्वाहा ।”
आ श्लोको अने मंत्र भणवो, ते पळी—
उद्योतस्त्रिजगत्यासीद्, दध्वान विचि द्मुभिः । षड्रपशाशद्विकुमार्यः, समांगत्याऽकृत क्रियाम् ॥१॥
कुमार्योऽष्टावधो लोक-वासिन्यः कम्पितासनाः । अहंजन्मावधेर्ज्ञात्वा-ऽभ्येयुस्तत्सूतिविद्मनि ॥२॥
भोगकरा भोगवती, सुभोगा भोगमालिनी । सुवत्सा वत्समित्रां च, पुष्पमाला त्वनिन्दिता ॥३॥
नत्वा प्रभुं तदम्भ्यां च-शाने सूतिपृष्ठं बन्धुः । सर्वतानांऽशोभयन् श्मा-मायोजनमितां गृह्यात् ॥४॥

“ॐ ह्रीं अष्टावधोलोक-वासिन्यो देव्यो योजनमण्डल स्रुतिगृहमशोधयन् स्वाहा ।”

आ श्लोको अने मंत्र भणीने भूमिशोधन करावु.

मेघंकरा मेघवती, सुमेधा मेघमालिनी । तायधारा त्रिचिन्ना च, वारिषेणा बलाहका ॥१॥

अष्टोर्ध्वलोकादेत्यैता, नत्वाऽहन्त समातृक्म् । तत्र गन्धाम्बुषुषौघ-वर्षा हर्षाद्वितेनिरे ॥२॥

“ ॐ ह्रीं अष्टाबुर्ध्वलोकवासिन्यो देव्यो योजनमण्डल गन्धाम्बुषुषौघमवर्षयन् स्वाहा ।”

आ श्लोको अने मंत्र भणी सुगन्धोजल छटायवु, पछी पुष्प वेसाया.

अथ नन्दोत्तरा नन्दे, आनन्दा-नन्दिवर्धने । विजया वैजयन्ती च, जयन्ती चापराजिता ॥

“ ॐ ह्रीं अष्टौ पूर्वर्ल्लचक्रवासिन्यो देव्यो विलोकनार्थं दर्पणानि अग्रेऽधारयन् स्वाहा ।”

आ श्लोक तथा मंत्र भणीने आरीसा देसाडया

समाहारा सुप्रदत्ता, सप्रबुद्धा यशोधरा । लक्ष्मीवती शेषवती, चित्रगुप्ता वसुन्धरा ॥

“ॐ ह्रीं अष्टौ दक्षिणरचकवासिन्यो देव्यः स्नानार्थं करे पूर्णकलशान् धृत्याभिषेक कुर्वन्त्यो गीतगाने

विदधति स्वाहा ।”

आ श्लोक अने मंत्र भणीने जल रुलशोवाली ८ जणीश्रीए उपस्थित थवु

इलादेवी सुरादेवी, पृथिवी पद्मवत्यपि । एकनासा नवमिका, मद्रा शीतिति नामतः ॥

- “ ॐ ह्रीं अष्टौ पञ्चिभरुचकवासिन्यो देव्यो वीजनानि वीजयन्ति स्वाहा ।”
 आ श्लोक अने मंत्र भणीने पंखा चलाववा.
 अलम्बुषा मितकेशी, पुण्डरीका च वारुणी । हासा सर्वप्रभा श्रीह्रीं-रष्टोदग्रुचकाद्रितः ॥
 “ ॐ ह्रीं अष्टौ उत्तररुचकवासिन्यो देव्यो बालव्यजनानि वीजयन्ति स्वाहा ।”
 आ श्लोक अने मंत्र भणीने चायर ढालवा.
 चित्रा च चित्रकनका, सुतारा वसुदामिनी । दीपहस्ता विदिश्वेत्या-ऽस्थुर्विदिग्रुचकाद्रितः ॥
 “ ॐ ह्रीं चतस्रो विदिग्वासिन्यो देव्यः प्रदीपहस्ता उद्योतं कुर्वन्ति स्वाहा ।”
 आ श्लोक अने मंत्र भणीने दीपक देवाडवा.
 रूपा रूपसिका चापि, सुरूपा रूपकावती । चतुरङ्गुलतो नालं, छित्त्वा खातोदरेऽक्षिपन् ॥१॥
 “ ॐ ह्रीं चतस्रो रुचकद्वीपवासिन्यो देव्यश्चतुरङ्गुलतो नालं छित्त्वा भूखातोदरेऽक्षिपन् स्वाहा ॥”
 आ श्लोक तथा मंत्र भणी ४ आंगल नाल कापी खाडामां दाव्यु.
 “ ॐ ह्रीं पूर्वोत्तरदक्षिणेषु रम्भाग्रहत्रयं व्यधुः स्वाहा ॥”
 आ मंत्र भणी ३ केलघर बांधवा.
 “ ॐ रौं रौं रौं रौं रौं रौं रः उत्तरे अरणिकाष्टाभ्यामग्निमुत्पाद्य चन्दनागैर्जुहुवात् वषट् ।”

आ मंत्र वडे चन्दनादि काष्टनो होम करी तेनी रानी पोटलीओ तैयार करी जिनने तथा जिनमाताने हाथे बांधवी.
ए पळी पवित्र जलफलयो, चन्दन, पुष्पो अने स्नात्रनी पुढिओ नीचेना मंत्रो वडे मंत्रवी.

“ ॐ नमो यः सर्वशरीरावस्थिते महाभूते आपो जल गृह्ण गृह्ण स्वाहा ।” आ मंत्रवी सर्व जल मंत्रवु

“ ॐ नमो यः सर्वशरीरावस्थिते पृथु पृथु गन्धान् गृह्ण गृह्ण स्वाहा ।” आ मंत्रवी वास, चन्दन, तथा सर्व औषधितुं अभिमंत्रण करु.

“ ॐ नमो यः सर्वतो मेदिनी पुष्पवती पुष्प गृह्ण गृह्ण स्वाहा ।” आ मंत्र वडे पुष्पोतुं अभिमंत्रण करु.

“ ॐ नमो यः सर्वतो बलिं दह दह महाभूते तेजोधियते धू धू धूपं गृह्ण गृह्ण स्वाहा ।”

ए मंत्रवी धूपनु अभिमंत्रण करु.

ए पळी नवीन त्रिना जमणा हाथनी आगलीए पचरत्ननी रक्षा पोटली वाधवी, पोटलीओ सोभाग्यमंत्र वडे मंत्रीने प्रत्येक विचन जमणा हाथे वाधवी, वली अरीठानी माला तथा जवनी माला प्रत्येक विचन कंठमां नाखवी, जलयत्राथी लायेल जल जलकुडीमां मरी तेमां वास चंदन पुष्पादि नाखी ‘ ॐ ह्रीं नमः ’ आ मंत्र भणतां जलदर्शन करावतु, धूप दीप करवा, गीत-गान नाटकादि करवा. आम दिक्कुमारिकाओनो उत्सव थया पळो—

इन्द्राण्यायग्रमहिषी, सामानिकैश्च सयुता । अगरक्षकंदवीभिः, समागता जिनगृहे ॥१॥

तारा तिलोत्तमा तारु, मनोवेगा च मोहिनी । सुन्दरी त्रिपुरा चैता, माना मानवती मुदा ॥२॥

“ ॐ नमो जिजाणं सरणाणं संगलाणं लोयुतमाणं हूँ ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रैः असिआउसा-त्रैलोक्यललामभूताय अहृते नमः स्वाहा । ”

आ श्लोक अने मंत्र बोलीने नवीन विधना भालमां क्रेसरुनो तिलक कसवो, अने इन्द्राणीए गीत-गान-नाटकादिक कखुं, इन्द्राणीना उत्सव पछी

“ ततः सिंहासनं शक्रं, चचालाऽचलनिश्चलम् । प्रयुञ्ज्याऽथावधिं ज्ञात्वा, अहञ्जन्माभिषेचनम् ॥१॥ ”

“ वज्रैकयोजनां घण्टां, सुघोषां नैगमेपिणा । अवादयत्तलो घण्टा-रेणुः सर्वविमानगाः ॥२॥ ”

“ प्रचेष्टुः सुराऽसुरेन्द्रा-विविधैर्वाहनैर्धनैः । समागत्य जिनाम्बां च, नत्वा रूपं च पञ्चधा ॥३॥ ”

“ एको गृहीततीर्थेशः, पार्श्वं द्वावात्तचामरी । एको गृहीतातपत्र, एको वज्रधरः पुरः ॥४॥ ”

“ शक्रः सुमेरुगृहस्थं, गत्वाऽथो पाण्डुकं वनम् । मेरुचूलादक्षिणेना-तिपाण्डुकम्बलासने ॥५॥ ”

“ अभिषेकोत्सवे जने, चतुःषष्टिः पुरन्दराः । सुमेर्वधिष्ठिते स्थाने, समेयुस्ते यथाक्रमम् ॥६॥ ”

“ चमरेन्द्रो १ बलोन्द्रश्च २, धरणेन्द्रस्तृतीयकः ३ । भूतानन्दश्च ४ वेण्वन्द्रो ५, वेणुदालिस्तथैव च ॥७॥ ”

“ हरिकान्तो ७ हरिशेणो(सखो)ऽग्निशिखो ९ थाग्निमानवः १० ।

पूर्णेन्द्रोऽथ १ विशिष्टश्च २, जलकान्तो ३ जलप्रभः १४ ॥८॥ ”

“ अमृतगति १५ भवनेन्द्रोऽमृतवाहननामकः १६, वेलम्बक १७, प्रभञ्जनो १८, घोष १९ महाबोषकावपि २० ॥९॥ ”

" कालेन्द्रोऽथ महाकालः २, सुत्पः ३ प्रनिरूपकः ४ । पूर्णभद्रः ५ - माणि भद्रौ ६, भीमेन्द्रो ७, महाभीमकः ८ ॥ १० ॥"
 " कालेन्द्रोऽथ महाकालः २, सुत्पः ३ प्रनिरूपकः ४ । पूर्णभद्रः ५ - माणि भद्रौ ६, भीमेन्द्रो ७, महाभीमकः ८ ॥ १० ॥"
 " क्रिन्नर ० क्रिपुरुपेन्द्रः १०, सत्यरूपस्तथैव ? द्वि । महापुरुप ? २ नामैको - इति कायाश्च ? ३ तथाऽपरः ॥ ११ ॥"
 " महाकायो १४ गीतरति १६ - गीतयशाश्च ? ६ षोडश । सनिरिति ? १ समानी को २, घाता ३ विघाता ४ थापरः ॥ १२ ॥"
 " ऋषीन्द्रो ६ ऋषिपालश्च ७, श्वर ७ आपि महेश्वर ८ । सुवत्सो ९, विशालेन्द्रश्च १० हासो ? १ हासरति, २ पुनः ॥ १३ ॥"
 " श्वेतो १ ३ महाश्वेत १४ पतङ्ग १५ पतगपतीश्वराः १ ६ चन्द्रा १ दित्यौ २ ज्यातिपेन्द्रौ, कल्पेन्द्रा दशधा पुनः ॥ १४ ॥"
 " सौभ्रमेन्द्र १ ईशानेन्द्रः २, सनत्कुमार ३ पुरन्दरः । माहेन्द्रो ४ ब्रह्मेन्द्रश्च ५, लान्तकेन्द्रश्च ६ चम्रिणः ॥ १५ ॥"
 " शुक्रेन्द्रः ७ सहस्रारेन्द्र ८, आनत - प्राणतेश्वरः ९ । आरणाच्युतशक्रश्च १०, इतीन्द्राः चतुषष्टिका ॥ १६ ॥"
 (आ प्रकरणा - लोको भणीने) ' ॐ ह्रीं क्षुं ह्रीं सौभ्रमेन्द्रादिचतुषष्टिरिन्द्रा अस्मिन् प्रतिष्ठामहोत्सवे सर्वविघ्नप्रशान्तिकरा भगवदाज्ञया सावधाना भवन्तु स्वाहा ।'
 ए श्लोको तथा मत्र भणीने -
 " श्रीमन्मन्दरमस्तके शुचिजलैश्चैते सदभीक्षते, पीठे मुक्तिवर निधाय रुचिरे तत्पादपुष्पस्रजा ।
 इन्द्रोऽह निजभूपणार्थममल यज्ञोपवीत दधे, मुद्राककणजोखराण्यपि तथा जैनाभिषेकोत्सवे ॥ ११ ॥"
 " विश्वेश्वर्यैकवर्यान्विदशपतिशिरःशेखर स्पष्टपादाः, प्रक्षीणाऽशेषदोषाः सकलगुणगणग्रामधामान एव ।

आ -लोक भणनो अने मंगलदीनो तथा आस्ती उताग्नी, नाजिनादि वगाडना, अते जाठ म्नुनिओवी देववदन फरुं. आ प्रमाणे देवहृत जन्मोत्सव करसो.

(८) अष्टमाह्निकम् ।

अष्टादश अभिषेकविधि-आह्निकवीजकम्

जिनस्य जन्मवृत्तान्ते, दास्या रात्रे निवेदिते । राज्ञा नृत्योत्सवमयी, स्थितिश्चक्रे दशाहिका ॥१०४॥
 तथाहि-प्रथमे घस्त्रे, कृतकौतुकमङ्गलः । अभिषेकविधिवर्यो, विदधे मङ्गलार्थिना ॥१०५॥
 जलं गन्धाश्च पुष्पादि, स्वस्वमन्त्राभिमन्त्रितम् । अभिषेकेषु सर्वेषु, नियोज्यं विधिवित्तमैः ॥१०६॥
 प्रत्येकस्नात्रपर्यन्ते, मूर्धनि पुष्परोपणम् । ललाटे तिलकं घूप-दाहः कार्यो विदांवरैः ॥१०७॥
 सुवर्णस्य जलेनाऽथ, पञ्चरत्नजलेन च । कपायच्छिनीरेण^१, मृत्तिकाभिश्चारिणा^२ ॥१०८॥
 पञ्चगव्यकुशोदेन,^३ सदैपधिजलेन^४ च । मूलिकाचूर्णनीरेणा^५ -ऽऽ द्याष्ट्यर्गजलेन^६ च ॥१०९॥
 द्वितीयाष्टकवर्गस्य, वारिणा गुणधारिणा^७ । विधाप्य स्नाननवकं, जिनाह्वानमथाचरेत् ॥११०॥
 दिक्पालांश्च समाहूय, तत्तद्दिशि विनिक्षिपेत् । पुष्पाञ्जलि ततः सर्वो-पधिस्नानं विधापयेत् ॥१११॥

ततो नव्यजिनं स्पृष्ट्वा, स्वेन दक्षिणपाणिना । मन्त्रन्यासं गुरुः कृत्वा, ग्रन्थिं सर्पपसंभवम् ॥११२॥
जिनपाणौ बन्धयित्वा, दुर्द्वेगदोषनिवारणम् । तिलकं चाञ्जलिं कृत्वा, ततो विश्वसिमाचरेत् ॥११३॥
अर्घं सुवर्णपात्रस्थं, जिनस्याथे विमोचयेत् । तथैव दिग्धीशानामर्घदानं निवेदयेत् ॥११४॥
ततः पुष्पजलेनैकादशं स्नानं विधापयेत् । गन्धं वासजलेः^{१३} कार्यं, चन्दनस्य रसेन^{१४} च ॥११५॥
केसरस्य^{१५} जलेनापि, स्नानं पञ्चदशं विदुः । ततस्तीर्थजलोत्थं^{१६} च, तथा कर्पूरवारिणा^{१७} ॥११६॥
पुष्पाञ्जलिभवं^{१८} चान्त्यं, स्नानमष्टादशं स्मृतम् । द्रुतं दुग्धं दधि चेशु-रसः सर्वोपधिस्तथा ॥११७॥
पञ्चासृतानितैर्वृतं, मतं पाञ्चासृताभिधम् । सर्वस्नानेषु वृत्तेषु, वासचूर्णादिना ततः ११८॥

विभवस्नेहं निराकृत्य, भूयो निर्भलवारिणा । कुम्भाष्टकेन संस्तप्य, काव्यधोषपुरस्सरम् ॥११९॥
रक्षयित्वा ततो विभवं, विलिप्य चन्दनादिभिः । पुष्पारोपं विधायाऽऽश-त्रिकादिकं समाचरेत् ॥१२०॥

भा० टी०—दाही द्वारा जिनजन्मनी वधाई राजाने अपाई अने राजाए गीत-नृत्यादि महोत्सवसयी दश दिवसनी जन्म महोत्सवनी स्थिति जाहेर करी. तेमां पहले दिवरो राजाए मंगलाचारपूर्वक मंगल निमित्ते जन्माभिकेकनी विधि करी ते रीते विधिना जाणकारीए जल, गन्ध, पुष्प आदि अभियेकोपयोगी पदार्थो स्व स्व मंत्रोए अभिमंत्रित करीने सर्व अभियेकोमां वाप-

राम, प्रत्येक स्नाने अन्ते जिनने मस्तकं पुष्परोपणं कुरु, ललाटे तिलकं करवो अने प्रत्येक अभिषेकना अन्तगले जाणकारोप धूप उक्तेववो.

अभिषेको आ प्रमाणे करवा—सुवर्णजलनो १, पञ्चरस जलनो २, रुपाय छालना जलनो ३, तीर्थमृत्तिकाणा जलनो ४, पञ्च-गव्यकुशोदकनो ५, सदीपधि जलनो ६, मूलिकाचूर्णना जलनो ७, प्रथमाष्टकनर्गं जलनो ८ अने द्वितीयाष्टकनर्गं जलनो ९, ए नमः अभिषेको करीने जिनाह्वानं कर्तुं अने दश दिरुपालोडुं आह्वानं करीने ते ते दिशामा पुष्पाञ्जलि क्षेपवी पट्टी सर्वोपधिना अभिषेक १० मो करवो.

ए पट्टी सुरए पोताना जमणा हाथधी नव्य जिनधिचने स्पर्शी मंत्रन्याम करवो अने दृष्टिदोष निवारणार्थं मित्रना हाथे मरस-वोनी पोटली गधीने ललाटमा तिलकं करी विश्वासि करी, जिन जागे सुवर्णपात्रमा अर्घं मरुनो, तथा दिश्यापालने पण ते ते दिश्यामा अर्घं आपवो.

ए पट्टी पुष्पजलनो ११ मो अभिषेक करवो, गंधजलनो १२ मो, रासजलनो १३ मो, चन्दनजलनो १४ मो, अने केसर जलनो १५ मो अभिषेक करवो, तीर्थजलनो १६ मो, कर्पूरजलनो १७ मो, अने पुष्पाञ्जलि क्षेपनो १८ मो अभिषेक करवो.

वी, दूध, दही, शेरडीस तथा मरौपधि, आ पांच अमृत गणाय छे, आ पंचामृत ते “पञ्चामृत” नामनो एक अभिषेक करवो, सभे स्नानो थंडे रवा पट्टी वास-कर्पूर-चूर्णादिक घसीने प्रतिमाना अग उपरधी स्निग्धता (चिक्राम) दूर करवी अने छे निर्मल जलना कलशे करीने “चक्रं देवेन्द्रराजं” आ काव्य उच्च स्वरं बोलता आठ अभिषेको करवा

अभिषेको थई रखा पछी अंगल्लेखणां करी विवने चंदनादिनुं , विलेपन करुं, पुष्प चहाववां अने मंगलदीपक तथा आरती आदि कार्यो करवां.

ऋत्यविधि—

उपकरणो

सुवर्णचूर्ण अथवा सुवर्णकलश ४।
मंगलमृत्तिका पडिकुं ?।

मूत्रिकाचूर्ण ।
सर्वोपधि चूर्ण ।
वासचूर्ण जल ।
तीर्थजल ।

घी-दूध-दही-खांड-सर्वोपधि ।
सुगंधीपुष्प छाव ?।
बसेल केसर चंदनत्रासनी चाटकी २।
अर्घ पात्र २ ।

पञ्चरत्नचूर्ण पडिकुं ?।

पंचगव्य दर्भजल ।
प्रथमाष्टवर्ग चूर्ण ।
पुष्पजल ।

चन्दनद्रव ।
कर्पूरचूर्ण जल ।

वासक्षेप रक्षावी ?।
शुद्ध जले भरेला कलश ४।
पंचरत्ननी पोडली ?।
हस्तलेपनी चाटकी ?।

क्रमावछालचूर्ण पडिकुं ?।

मदोपधि पडिकुं ?।
द्वितीयाष्टवर्ग चूर्ण ।
गन्धचूर्णजल ।

केसरजल ।
पुष्पाञ्जलि ।

दशांग धूप पडिकुं ?।
धोला अथवा पीला मसस्र नांखेल
बयेला चंदन-गेरिचननी चाटकी ? ।
घीनी चाटकी ?।

मेगासुरनी कोकडी ?।

मोडलना करुण ।

सरसनी पोडली ।

जवनी माला ।

फल ।

आरेठानी माला मित्र प्रति ?-? ।

नेवेद्य ।

अक्षत ।

पान मोपारी ।

आरीसो ?।

गलास या नालनिनानो कलशियो ?।

कलशिया ४।

नामक्षेपनुं पडिकुं ?।

जर्मनशिल्वरनी अथवा यावापीतलनी कुंडी ?। यक्षालनी कुंडी ।

दीवो ? (जंगल) ।

रलिमाकुल भीजवेला ।

मगल दीवो ? आगती ?।

विधि—प्रथम स्नात्रकार श्रावके जिनसुटाए उभा रही जल कलशादिकनी अपिमासना करी—

ॐ नमो यः सर्वशरीरावस्थिते महाभूते आगच्छ आगच्छ, जल गृह गृह स्वाहा ।

आ मंत्रे करी जलभृत कलशादिकनुं अभिसमरण करवुं.

ॐ नमो यः सर्वशरीरावस्थिते पृथु पृथु विपृथु विपृथु गन्धान् गृह गृह स्वाहा ।

आ मन्त्रयी गंध, वास, चन्दन, अष्टवर्ग मदीपधि मदीपधि, केसर, कर्पूरादिनुं अभिसमरण करवुं.

ॐ नमो यः सर्वतो मेदिनि ! पुष्पं गृह गृह स्वाहा ।

आ मन्त्रयी प्रत्येक स्नात्रमा चढावयाना पुष्पो अभिसमन्वा.

ॐ नमो यः सर्वतो बलिं दह दह, महाभूते तेजोधिपते धू धू धूप गृह गृह स्वाहा ।

आ मंत्रशी प्रत्येक अभिषेकमां करातो धूप अभिमंत्रवो. पछी अभिषेक वखते तेमांशी कलशो भरवा, थोडो थोडो वास, घसेल चन्दन, पुष्पो, प्रत्येक अभिषेकना जलमां नाखावा, प्रत्येक स्नात्रने अन्ते प्रतिमाना मस्तकें पुष्प चढावचुं, ललाटमां तिलक करचुं, वाससेप करवो, अने धूप उखेववो.

अभिषेकना प्रारंभमां श्रावकोए प्रतिमाना जमणा हाथनी आंगलीमां पंचरत्ननी गांठडी बांधवी, ते पछी तैयार करेल स्नात्रनी पुडियोमांशी अनुक्रमे एक एक पुडी मंत्रमुद्राधियासित पवित्र तीर्थजलमां नाशी ते जल वडे चार चार कलशो भरीने परमेष्ठीमंगलपूर्वक वाजित्रीना शब्दो साथे स्नात्रकारोए १८ स्नात्रो करवां. 'नमोऽर्हत्' कन्नो मंत्रपाठ कहे त्यां सुधी वादित्रो वंध रखाववां. दरेक अभिषेकना पाठनुं काव्य बोलतां पहेलां 'नमोऽर्हत्' बोलचुं अने काव्य बोलया पछी, "ॐ नमो जिनाय ह्य अर्हते स्वाहा" आ मंत्र बोलीने प्रतिमा उपर अभिषेक करवो.

प्रत्येक अभिषेकने अंते श्वेत अथवा पीत सरसवामिश्रित चंदन-गोरोचनो ललाटमां तिलक करवो. तिलक करतां नीचेचुं काव्य बोलचुं.

" भाति भवतो ललाटे, राकाचन्द्रार्धसंनिभे भगवन् । प्रासलयो मलयोद्भव-सिद्धार्थकरोचनतिलकः ॥१॥"

प्रत्येक अभिषेकने अन्ते तिलक कर्या पछी नीचेचुं काव्य बोलतां मस्तके पुष्प चढावचुं.

" किं लोकनाथ ! भवतोऽतिमहर्धैतेषा, किं वा स्वकार्यकुशलत्वमिदं जनानाम् ।

किं वाऽस्मृतः सुमनसां शुण एष कश्चि-दुष्णीषदेशमधिरुह्य विभान्ति येन ॥१॥"

प्रत्येक अभिषेचना अंतं नीचेंतुं काव्य बोलीने दशाग धूप उखेस्यो—

“ मीनकुरगमदाङ्गुरुसारं, सारसुगंधनिशाकरतारम् ।
तारमिलन्मलयोत्थविकार, लोकगुरोर्दह धूपसुदारम् ॥ १ ॥”

अभिषेककाव्यादि—

१ सुवर्णजल— ‘नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः’
सुपवित्रतीर्थनीरेण, सयुत गन्धपुष्पसमिश्रम् । पततु जलविधोपरि, सत्तिरण्य मन्त्रपरिपूतम् ॥१॥

ॐ नमो जिनाय ह्यो अर्हते स्वाहा ।

२ पचरत्न जल— ‘नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः’
नानारत्नौथयुत, सुगन्धपुष्पाधिवासित नीरम् । पतताद् विचित्रवर्णं, मंत्राढ्यं स्थापनाविभ्वं ॥२॥

ॐ नमो जिनाय ह्यो अर्हते स्वाहा ।

३ कपायछाल जल— नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।
प्लक्षाम्बृत्योद्गुम्बर-शिरोपत्ल्यादिकल्कसमिश्रम् । विवे कृपायनीरं, पततादधिवासित जने ॥३॥

ॐ नमो जिनाय ह्यो अर्हते स्वाहा ।

४ मंगलमृत्तिका जल— नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

पर्वतसरोनदीसंग-मादिमृद्भिश्च मंत्रप्लूताभिः । उद्धर्त्य जैनविम्बं स्नपयाम्यधिवासनासमये ॥४॥

ॐ नमो जिनाय हौ अर्हते स्वाहा ।

५ पंचगव्यद्भौदक- नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।
जिनचिम्बोपरि निपतद्, घृतदधिदुग्धादिद्रव्यपरिप्लुतम् । दर्भोदकसंमिश्रं, पंचगवं हरतु दुरितानि ॥५॥

ॐ नमो जिनाय हौ अर्हते स्वाहा ।

६ सदैपधिचूर्णजल- नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।
सहदेव्यादिसदैपधि-वर्गेणोद्धत्तितस्य विम्बस्य । संमिश्रं विम्बोपरि, पतज्जलं हरतु दुरितानि ।६॥

ॐ नमो जिनाय हौ अर्हते स्वाहा ।

७ मूलिकाचूर्णं जल- नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।
सुपचित्रमूलिकावर्ग-मर्दिते तद्दुदकस्य शुभधारा । विम्बेऽधिवाससमये, यच्छतु सौख्यानि निपतन्तां ॥७॥

ॐ नमो जिनाय हौ अर्हते स्वाहा ।

८ प्रथमाष्टकवर्गं जल- नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।
नानाकुश्टाद्यौपधि-संसृष्टे तद्युतं पतन्नीरम् । विंवे कृतसन्मन्त्रं, कर्मौघं हरतु भव्यानाम् ॥८॥

ॐ नमो जिनाय हौ अर्हते स्वाहा ।

०. द्वितीयाष्टकवर्ग जल- नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसायुभ्यः ।
मेदाद्यौपथिभेदो-ऽपरोऽष्टवर्गः स्वमंत्रपरिपूतः । जिनविम्बोपरि निपतत्, सिद्धिं विदधातु भव्यजने ॥१॥

ॐ नमो जिनाय हौ अर्हते स्वाहा ।

जिनाह्वानादि आन्तर विधिः—नव अभिषेक यथा पृष्ठी प्रतिष्ठाचार्ये उभा यई गरुड, मुक्ताशुक्ति अने परमेष्ठी नामक त्रण मुद्राओ पैकीनी कोई पण एक मुद्रा करीने प्रतिष्ठाप्य देवतु आ प्रमाणे आह्वान करतु—
ॐ नमोऽर्हत्परमेश्वराय चतुर्भुजपरमेष्ठिने त्रैलोक्यगताय अष्टदिक्कुमारीपरिपूजिताय देवाधिदेवाय दिव्य-
शरीराय त्रैलोक्यमहिताय आगच्छ, स्वाहा ।

जिनाह्वान पृष्ठी विधिकारे नीचे प्रमाणे दिक्पालोलु आह्वान करतु—

- १ ॐ इन्द्राय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह जिनेन्द्रप्रतिष्ठाविधौ आगच्छ स्वाहा ।
- २ ॐ अग्नये सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह जिनेन्द्रप्रतिष्ठाविधौ आगच्छ स्वाहा ।
- ३ ॐ यमाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह जिनेन्द्रप्रतिष्ठाविधौ आगच्छ स्वाहा ।
- ४ ॐ निर्ऋतये सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह जिनेन्द्रप्रतिष्ठाविधौ आगच्छ स्वाहा ।
- ५ ॐ वरुणाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह जिनेन्द्रप्रतिष्ठाविधौ आगच्छ स्वाहा ।
- ६ ॐ वायवे सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह जिनेन्द्रप्रतिष्ठाविधौ आगच्छ स्वाहा ।

- ७ ॐ कुबेराय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह जिनेन्द्रप्रतिष्ठाविधौ आगच्छ आगच्छ स्वाहा ।
 ८ ॐ ईशानाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह जिनेन्द्रप्रतिष्ठाविधौ आगच्छ आगच्छ स्वाहा ।
 ९ ॐ नागाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह जिनेन्द्रप्रतिष्ठाविधौ आगच्छ आगच्छ स्वाहा ।
 १० ॐ ब्रह्मणे सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह जिनेन्द्रप्रतिष्ठाविधौ आगच्छ आगच्छ स्वाहा ।

ए मंत्रोत्थी प्रत्येक दिक्पालं आह्वान तेनी दिशा संमुख उभा रहीने करुं ' स्वाहा ' पछी तेनी तरफ वासक्षेप करवो अने श्रावके पुष्पांजलि फेंकवी

जो अंजन शलाकालुं विधान होय तो ' प्रतिष्ठाविधौ ' बोलुं, पण केवल ' विद्यस्थापनानो ज प्रसंग होय तो ' इह जिनेन्द्र-
 स्थापने ' अथवा ' जिनेन्द्रस्थापनाविधौ ' आमांश्री कोई एक पाठ बोलवो,

१० सर्वौषधि जल— नमोऽहर्तृसिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

सकलौषधिसंयुत्या, सुगन्धया धर्षितं सुगतिहेतोः । स्नपयामि जैनधिभ्यं, मंत्रिततत्त्वोरनिवहेन ॥१०॥

ॐ नमो जिनाय ह्यँ अहर्ते स्वाहा ।

मंत्रन्यासादि अचान्तर विधि—दशमो अभिषेक थया पछी प्रतिष्ठाचार्यं दृष्टिदोष निवारण माटे प्रतिष्ठाप्य प्रतिमाने
 पोतानो जमणो हाथ अडकावी नीचेना मंत्रनो न्यास करवो—

ॐ इहागच्छन्तु जिनाः सिद्धा भगवन्तः स्वसमयेनानुग्रहाय भव्यानां भः स्वाहा । अथवा

ॐ क्षौ क्ष्वी ईी क्षी भः स्वाहा ।

आ वै पैकीना एक मंत्रो न्यास करवो, ते पछी श्रावकं इष्टिदोष विघातार्थं लोहाऽऽष्ट घोला सरसमोनी पोटली नीचे लखेल मंत्रे ७ बार मत्रीने जिनविभ्वने हाथे बाधवी

पोटली मंत्रानो मंत्र—“ ॐ क्षौ क्ष्वी ईी स्वाहा । ”

सं मित्रोने पोटली बाधी ललाटमा चन्दननी टीली देनी, ए पछो प्रतिष्ठाचार्य हाथ जोडीने आ प्रमाणं विद्वसि करे,— स्वागता जिनाः सिद्धाः प्रसाददा. सन्तु, प्रसादं धिया कुर्वन्तु, अनुग्रह परा भवन्तु, भव्याना स्वागतमनुस्वागतम् ॥

ते पछी श्रावक सर्पप दहि घृत असत डाम आ पाच द्रव्यात्मक अर्घं सुवर्णं पात्रमा लेईने हाथ जोडी—

ॐ भ. अर्घं प्रतीच्छन्तु पूजा गृह्णन्तु जिनेन्द्राः स्वाहा ।

जा मंत्र बोलवा पूर्वक अर्घपात्र जिन जागल मुरुबु. एज रीने श्रावक सरसवाटि पाच द्रव्यात्मक अर्घनु चीञ्चु पात्र हाथमा केईने तथा प्रतिष्ठाचार्य गास लेईने दिक्पालोनु नीचे प्रमाणे आह्वान करी अर्घं प्रदान करे.

ॐ इन्द्राय आगच्छ आगच्छ, अर्घं प्रतीच्छ प्रतीच्छ, पूजा गृहाण गृहाण स्वाहा ।

उपर प्रमाणे पूर्वदिशा समुख इन्द्रनु आह्वान करी प्रतिष्ठाचार्य मासक्षेप करे, अने स्नात्रकारो अर्घं चन्दन अक्षत पुष्प उछाले, दीपक दखाडे, धूप उखेये. अग्नि, यम, निर्मृति, वरुण, वायु, कुबेर, ईशान, नाग, ब्रह्माने एण ते ते दिशा समुख आह्वान पूर्वक अर्घप्रदान करवो.

श्रावको अर्घ आषती वेलाए “ दिक्पाला अर्घ प्रतीच्छन्तु ” आ शक्यो बोल्या करे. पत्नी-

११ कुसुम जल-नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

अधिवासितं सुमंत्रैः, सुमनःकिंजकराजितं नायम् । तीर्थजलादिसुपुत्रं, कलगोन्मुक्तं पततु चिन्वे ॥११॥

ॐ नमो जिनाय ह्रीं अर्हते स्वाहा ।

१२ गंध जल-नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

गन्धांगस्नानिकया, सम्मुष्टं तद्द्रुकस्य धाराभिः । स्नपयानि जैनचिन्मं, कर्मोचोच्छित्तये जिवदम् ॥१२॥

ॐ नमो जिनाय ह्रीं अर्हते स्वाहा ।

१३ वास जल-नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

हृद्वेराहादकरैः, स्पृहणीयैर्मंत्रसंस्कृतैर्जैनम् । स्नपयामि सुगतिहेतो-चिन्मं व्यधिवासितं त्रासैः ॥१३॥

ॐ नमो जिनाय ह्रीं अर्हते स्वाहा ।

१४ चन्दन रस-नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

शीतलसरससुगंधी, मनोमतश्चन्दनद्रुमसमुत्थः । चन्दनकल्कः मजलो, मन्त्रयुतः पततु जिनचिन्मे ॥१४॥

ॐ नमो जिनाय ह्रीं अर्हते स्वाहा ।

१५ केसर जल-नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

काश्मीरजसुचिलिप्तं, विम्ब तन्नीरधारयाऽभिनवम् । सन्मन्त्रयुक्तया शुचि, जेन स्नपयामि सिद्धयर्थम् ॥१५॥

ॐ नमो जिनाय ह्ये अर्हते स्वाहा ।

आन्तरविधिः—पदरभो अभिषेक करी प्रतिमाने आरिभो देखाडवो

१६ तीर्थ जल-नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

जलधिनदीहृद्कुण्डेषु, यानि तीर्थोत्कानि शुद्धानि । तंन्त्रसरकृतैरिह, विम्ब स्नपयामि सिद्धयर्थम् ॥१६॥

ॐ नमो जिनाय ह्ये अर्हते स्वाहा ।

१७ कर्पूर जल-नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

शशिकरतुपारथवला, उज्ज्वलगया सुतीर्थजलमिश्रा । कर्पूरोदकधारा, सुमत्रपूना पततु विम्बे ॥१७॥

ॐ नमो जिनाय ह्ये अर्हते स्वाहा ।

१८ विम्बोपरि पुष्पाजलिक्षेप-नमोऽर्हत्सिद्धामिन्द्राचार्यपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

नानासुगन्धिपुष्पौघ-रञ्जिता चचरीककृतनावा । धूपामोदविमिश्रा, पतनात्पुष्पाजलित्रिम्बे ॥१८॥

ॐ नमो जिनाय ह्ये अर्हते स्वाहा ।

पञ्चामृतनो अभिषेक—अठार अभिषेकने अन्ते द्रुत १, दुग्ध, २, दहि ३, ग्राह ४, मर्वोपधि चूर्ण ५; आ पाच द्रव्योत्तुं पंचामृत करीने नीचेना -लोको नीली तनो श्रिषिषेक करीने,—

नमोऽहंतसिद्धाचार्योपाध्ययसर्वसाधुभ्यः ।

घृतमायुर्वृद्धिकरं, भवति परं जैनगात्रसंपर्कात् । तद् भगवतोऽभिषेके, पातु घृतं घृतससुद्रस्य ॥१॥
दुग्धं दुग्धांभोधे-रूपाहृतं यत्पुरा सुरवरेन्द्रैः । तद् बलपुष्टिनिमित्तं, भवतु सनां भगवदभिषेकात् ॥२॥
दधि मंगलाय सततं, जिनाभिषेकोपयोगतोऽप्यधिकम् । भवतु भविनां शिवा-ध्वनिदधिजलधेराहृतं त्रिदशैः ॥३॥
इक्षुरसोदादुपहृत-इक्षुरसः सुरवरैस्त्वदभिषेके । भवदन्नसदवधु भविनां, जनयतु नित्यं सदानन्दम् ॥४॥
सर्वौषधेषु निवसत्यमृतमिदं सत्यमर्हदभिषेके । तत्सर्वौषधिसहितं, पञ्चाशुतमस्तु वः सिद्धये ॥५॥

ॐ नमो जिनाय ह्यै अर्हते स्वाहा ।

पंचामृतनो अभिषेक कर्यां पछी कर्पूरना चूर्णं वडे घसी प्रतिमानी भिन्ग्यता दूर करयी. चीकाश वधारे होय तो साधारण उष्ण जलनो उपयोग करवो, पछी ८ कलशिया शुद्धजले मरी अभिमंत्रित करीने नीचेनुं काव्य बोलतां आठ अभिषेक करवा—
चक्रे देवेन्द्रराजैः सुरगिरिशिखरे योऽभिषेकः पयोभि-र्नृत्यन्तीभिः सुरोर्भिल्लिलितपदगमं तूर्यनादैः सुदीप्तैः ।
कर्तुं तस्यानुकारं शिवसुखजनकं मन्त्रयूतैः सुकुम्भै-र्विम्बं जैनं प्रतिष्ठाविधिवचनपरः स्नापयाम्यत्र काले ॥१॥

आ काव्य प्रत्येक अभिषेके उच्च स्वरे बोलुं. पछी अंग लुंछी चन्द्रनादि विलेपन करुं. प्रतिमा आगे पान, सोपारी, फलादि ठोडुं, ते पछी स्नात्रकारोए आरती मंगल दोवो करवो अने प्रतिष्ठाचार्ये संव महित मूलनायकनां चैत्यवन्दन-स्तुतिथी देववन्दन करुं, मूलनायकनुं चैत्यवन्दन स्तुतिओ याद न होय तो नीचेनुं चैत्यवन्दन करेनुं—

जय श्रीजिन ! कल्याण-बल्लोकन्दलनाम्बुद ! । सुनीन्द्रहृदयाम्भोज-विलासवरपद्मपद ॥१॥
तव नाथ ! पदद्वन्द्व-सपर्यारसिका जनाः । सर्वसपत्सुत्रश्रीभि-विलसन्ति सदोदया ॥२॥

तूलोके चक्रिताया याः, स्वर्लोके चन्द्रतादयः । शिवेऽनन्तसुखाद्यास्ता-स्तव भक्तिवशाः श्रियः ॥३॥

सर्वश्रेय.श्रिया मूलं, ददध्मं समग्रवित् । योगक्षेमकरो नाथ-स्त्वमेव जगतामसि ॥४॥

त्वमेव शरण वस्तु-स्त्वमेव मम देवता । तन्मा पाहि भवात्तात ! कुरु श्रेयःसुखास्पदम् ॥५॥

नमृत्युणं, अरिहत चेऽयाणं, ? नो० का०, नमोऽर्हत्, स्तुति- 'अर्हस्तनोतु'०, लोगस्स०, सबलोए अग्हित०, ? नो०
का०, स्तुति- 'अमिति मन्ता', पुक्खवरदी०, सुअस्स भगओ करेमि का०, उट्ठणत्तियाए०, ? नो० का०, स्तुति-
'नवत्तयुता', मिद्धाणं बुद्धाणं, श्रीशान्तिनाथ आराधनार्थं करेमि का०, वंढणम्, का० ? लोगस्स-सागरर गंभीरा०,
नमोऽर्हत्, स्तुति- " श्रीशान्ति श्रितशान्ति," सुयदेवयाए करेमि का०, अन्तथ०, ? नो०, नमोऽर्हत्, स्तुति- " भूद वदति
न वाग्नादिनि," सासणदेवयाए करेमि का०, अन्तथ०, ? नो०, नमोऽर्हत्, स्तुति- ' उपसर्गमलयविलयन०" अम्बिकायै
करेमि का०, ? नो०, नमोऽर्हत्, स्तुति- " अम्बा गालाद्धित्कामो", अचुत्ताए करमि का०, ? नो०, नमोऽर्हत्, स्तुति-
" चतुर्भुजा तडिद्धर्णा", खित्तेययाए करेमि का०, अन्तथ०, ? नो०, नमोऽर्हत्, स्तुति- " यस्याः क्षेत्र
समाश्रित्य०, " समस्तवेयावच्च०, ? नो० का०, नमोऽर्हत्, स्तुति- " सधेऽय ये०" ? नमका०, नमृत्युण०, जावति त्रे०,
जावत केवि०, नमोऽर्हत्, स्तवन- " अमिति नमो भगओ०, " जयवीयराय० ।

ए पछी मूलनायक विवतुं नामस्थापन करवुं, कुंजुमनां छोटणां करवां. पत्रदान आपवुं अने ते पछी नीचेनी विधिया प्रतिमाने वस्त्राभूषणोथी अलंकृत करी नैवेद्य चढाववुं.

चञ्चचारुशुचिप्ररोहविसरप्रद्योतिताशामुखे, दिव्यश्रीकदिवाकरद्युतिभरादालुप्तदृगोचरे ।

निर्भूल्ये विशुची शुचौ जिनमहे दिव्यैकदेवाङ्गना-नीतैराभरणैरलंकृतमहो देहे दधे वाससी ॥९॥

ॐ ह्रीं ह्रीं परमअर्हते वस्त्राभरणैरर्चयामिति स्वाहा ।

आ काव्य तथा मंत्र भणीने प्रतिमाने आभूषण पहाराववां, वस्त्रयुगल चढाववुं, अने—

सज्जैः प्राज्याज्यशुक्लैः परिमलबहुलैर्मौदकैर्मिश्रखण्डैः, खाद्याचैर्लापनश्रीघृतवरशुशुलाप्सुपसारैरुदारैः ।

स्निग्धौघोभिनितान्तं चरुभिरभिनवैः कर्मवल्लीपुठारान्, चापे(येः)निर्मायशुपर्निस्सुरनरमहितानर्चयेदहं दग्धान् ॥१॥

ॐ ह्रीं ह्रीं परमअर्हते नैवेद्येनार्चयामीति स्वाहा ।

आम काव्य सहित मंत्र भणीने नैवेद्य चढाववुं अने बलिवाकुला उजालवा ॥ इति अभिषेकविधि ॥

(९) नवमाह्निकम् ।

दीक्षाकायणकोत्सव अने अधिवासना—आह्निकवीजकम् ।

अथोपनयनं लेख-शालायां समहोत्सवम् । जिनस्य शिशुच्छात्राणां, कृते नाना सुखादिका ॥१२१॥
पाठोपकरणं चापि, पट्टिकापुस्तकादिकम् । प्रदेयं छात्रवर्गाय, गुडधानादिकं तथा ॥१२२॥
जिनं यौवनसंप्राप्तं, मत्वा लोकैपणां विदन् । विवाह-मंगलं कुर्या-ल्लोकरीतिमनुस्मरन् ॥१२३॥
विज्ञः स्नात्रकरः श्राद्धो, निजं वामपाणिना । जिनस्य दक्षिणं पाणिं, समादाय ममर्चयेत् ॥१२४॥
श्रीखण्डकुडकुमद्वैः, सर्वाङ्गं श्रीजिनेशितुः । धेनुपद्माञ्जलिमुद्रा-त्रिकं कृत्वा गुरुस्तदा ॥१२५॥
अधिवासनमन्त्रेणा-भिमन्त्र्य कङ्कणोच्चयम् । सव्यं करं जिनेशानां, कुर्यात्कङ्कणभूपितम् ॥१२६॥
मुक्ताशुक्तिवक्रमुद्रा-पूर्वं स्पृष्ट्वा जिनेश्वरम् । मस्तके स्कन्धयोर्जान्वी-स्ततश्च धूपमुत्क्षिपेत् ॥१२७॥
गुरुश्च परमेष्ठ्याख्य-मुद्रयाऽद्भ्य श्रीजिनम् । त्रिरधिवासयेत् मन्त्रः, पश्चाद्भासानपि क्षिपेत् ॥१२८॥
मदशं धूपवासादि-चासित वस्त्रभक्षतम् । समारोप्य जिने सप्त-धान्यस्नानं प्रकारयेत् ॥१२९॥
कार्यं प्रोक्षणक स्त्रीभिः, सुवर्णदानपूर्वकम् । भोगसामग्रिकामये, दौकयेल्लोकदुर्लभाम् ॥१३०॥

सर्वेषां जिनविम्बानां, हस्तेषु हस्तलेपनम् । प्रियंगु-रोचनाचन्द्र-संभवं तनुयात् सुधीः ॥१३१॥
 षष्ठ्यधिका च त्रिशती, क्रयाणकसमुद्भवा । जिनहस्ते प्रदातव्या, सर्वसंप्राप्तिसूचिका ॥१३२॥
 ग्रहानाहूय तेभ्यश्च-बलिभाण्डोपढौकनम् । विधाय तोरणोपेतां, वरां चतुरिकां न्यसेत् ॥१३३॥
 तत्र भद्रासनं न्यस्य, प्रतिमामुपवेशयेत् । पार्श्वे स्वर्णघटं न्यस्य, न्यसेद्दीपचतुष्टयम् ॥१३४॥
 बलिपात्राणि संढौक्य, ततः कोणचतुष्टये । चतुरो घटकान् श्येतान्, स्थापयेत् कङ्कणान्वितान् ॥१३५॥
 ततोऽधिरोपयेद् वस्त्रं, वासितं वासचन्दनैः । मन्त्रपूर्वं ततो भोग-सामग्रीसुपढौकयेत् ॥१३६॥
 राज्यरोहसमारोहः, कर्तव्यस्तिलकादिकः । दीक्षाकल्याणकं पश्चाच्चथायुक्तिं प्रदर्शयेत् ॥१३७॥
 चैत्यवन्दनमाधाय, ततोऽधिवासनादिकाः । स्मर्तव्या देवताः कायोत्सर्ग-स्तुतिकदम्बकैः ॥१३८॥

भा० टी०—हृदये प्रथम जिनने निशाले मोकलवानो उत्सव करवो, त्यां निशालिआ व लको माटे अनेक प्रकारनी मुखडी तथा पाटी, पुस्तकादि भणवानां उपकरणो साथे लेवां, अने छात्रोने बहूंचवां, छोकुराभोने गोलधाणा आदि आपनुं.

जिननी यौवनावस्था कल्पीने लोकैक्षणाना ज्ञाता चिधिकारे लोकरीति ग्रामाणे विवाह-मंगलनुं निदर्शन कर्वावनुं, विद्वान् स्नात्रकार श्रावके पोताना डात्रा हाथ वडे जिननो जमणो हाथ पकडीने सुखड केसरना वोल वडे जिनना गर्गीने पूजन करनुं.

ગુરુ ધેતુ, પદ્મ અને ઝજલિ, એ ત્રણ મુદ્રાઓ દેલાહવી, અને અધિવાસના મંત્રે કરી કરુણો મંત્રીને ત્રી નવ્ય જિન પ્રતિમા-
 ઓના ઝમણા હાથે ૧—૧ કરુણ વાઘનું મુક્તાશુક્તિ મુદ્રા દેલાહી ચક્રમુદ્રાએ મસ્તક, બે સ્કન્ધ, અને બે જાતુનો સ્પર્શ કરવો
 તથા (શામકે) ધૂપ ઉત્તેવવો અને ગુરુએ પરમેષ્ઠિમુદ્રાએ જિનનું આહ્વાન કરતું ગુરુએ ત્રણ ચાર અધિવાસના મંત્ર વહે અધિવાસના
 કરી વિમના મસ્તકે વાસક્ષેપ કરવો, દશાઓ સહિત અલંક વહને ધૂપ વાસાદિકે અભિગમિત કરી ઓઠાહલું, સ્નાત્રકારે તે
 પછી સાત ધાન્ય વહે પ્રતિમાને સ્નાન કરાવું ૪ અથવા ૮ સ્ત્રીઓએ સુવર્ણનું દાન આપવા ધૂવંક પોલણુ કરાવું, સ્નાત્રકારોએ
 જિનને આંગે ઉત્તમોચમ ફલ-તૈવેયાત્રિ ભોગ સામગ્રી દોમી અને ત્રિયગુ, ગોરોચન તથા કર્પૂર વહે તૈયાર કરેલો હસ્તલેપ સર્વ
 જિન વિમોના હાથોમા આપવો તથા સર્વ પદાર્થની પ્રાપ્તિ સૂચવતારાં ત્રણસો સાઠ ત્રયાણા જિનના હાથમા આપવા,

એ પછી ગ્રહોતુ આહ્વાન કરી તેમને ચલિપાય ઢોતુ અને તોરણો સહિત ચૌરી સ્થાપવી ચૈત્રીમા મદ્રાસન સ્થાપી તે ઉપર
 જિન પ્રતિમાને વેસાહવી, પ્રતિમાની પાસે સુવર્ણનો કલશ સ્થાપી ચાર મગલદીવા સ્થાપવા, આંગે નૈવેદ્ય પાત્રો ઘર્મને ચાર
 સુવાઓમા ચાર કરુણ વાધેલા શ્વેત ગાહવા સ્થાપવા અને વામ ચંદન પુષ્પાદિકે વાસિત વગ્ર આરોપી મન્નપૂર્વક ભોગ સામગ્રી
 દોઢવી

એ પછી રાજ્યપદાધિરોહણના ઉત્સવમા રાજ્યતિલકાદિક કમવતુ અને પત્રી દીપ્તાત્મયાણકની ઉત્તવળી યુક્તિપૂર્વક
 દેલાહવી. અન્તમાં ચૈત્યવંદન કરી કાયોત્સર્ગો તથા સ્તુતિઓ દ્વારા અધિવાસનાદિ દેવીઓતુ સ્મરણ કરવું

व्रत्यविधि-

“ ॐ नमो वंभीए लिवीए । ॐ हां ही परमअहंते लेखकशालाकरणमिति स्वाहा ॥”

आ प्रमाणे मंत्रो भणीने निशालिआओने गोल-घाणा वंहंचवा, तथा लेखण, दवात, कागल, वगेरे भणवानां उपकरणो आपवां. ए पडी विवाह महोत्सव करवो.

प्रतिष्ठाकारक-शाले पोताना डाया हाथे जिननो जमणो हाथ पकडी पोताना जमणा हाथे विवना सर्वगी अभिमंत्रित वाडा चंदन केसर वडे विलेपन करवुं, वली सर्व विवो प्रति फूल-धूप-वास शुक्रवां.

प्रतिष्ठागुरुए सुरभि मुद्रा, पद्ममुद्रा अजे अंजलिमुद्रा, ए त्रण मुद्राओ जिनविवने देखाडवी.

“ ॐ नमः शान्तये ॐ क्षूं इं सः ॥” अथवा “ ॐ नमो खोरासवलक्षीणं, ॐ नम्रा संभिन्नसोआणं, ॐ नमो पयाणुसारीणं, ॐ नमो कुड्डवुद्धीणं, जमियं चिळं पंजामि सा मे विज्जा पसिज्जल, ॐ अवतर अवतर, सोसे सोसे, कुरु कुरु, वग्यु वग्यु, सुमिणे सोमणसे महु महुरे ॐ कविले कः क्षः स्वाहा ॥”

आ वे अधिवासना मंत्रो पंकीना कोई एक मंत्र वडे अभिमंत्रित ऋद्धि वृद्धि सहित शीलना कंक्रणो सर्व देव प्रतिमाओना हाथे बांधवां.

तथा बीजा अधिवासना मंत्रधी युक्ताशुक्तिमुद्रा, अने चक्रमुद्राए करी श्रावके विवनां मस्तक ?, स्कन्ध २, अने जातु २; आ पांच अंगो स्पर्शवां अने धूप उखेववो, प्रतिष्ठागुरुए परमेष्ठिमुद्राए करी वली जिनने नीचेना मंत्र वडे आहान करवुं—

ॐ नमोऽर्हतपरमेश्वराय चतुर्भुवपरमेश्चिने त्रैलोक्यगताय अष्टदिवक्त्रुमारोपरिश्रुजिताय देवाधिदेवाय दिव्यशरीराय त्रैलोक्यमहिताय आगच्छ आगच्छ स्वाहा ।

चार ३ आह्वान करी आमनमुद्राए रास रुद्रादिवडे पूजा करवी.

श्रायके चंदन, फल, फूल, धूप, वास, अने वासित पूजित एवु सदश वस्त्र ढांकवु, ते उपर ९ नालिए मूकवा, निचिचि फल-बलि-जमीरा-रायण-दाडिम-केला-द्राख-खारेरु-सिंधोडा-अखरोट-यदाम-कमलकाकडी-पिस्ता-अमूख ढोवा.

पछी भगवानेने फुलेके चढाववा, ४ अविधना स्त्रीओए पुखणा करावा, पुखनारी स्त्रीओए सुवर्णादिकडुं दान आपडुं, धीनी आरनि-मंगलदीनो करावो.

पछी श्रावकोए नवकार गणीने प्रिययु, नरास, कर्पूर, गोरुचननो वनेलो हस्तलेप संगं धिवीना हाथोमा करवो, अने —

ॐ आदित्यसोममंगल-पुधगुरुशुक्राः शनैश्चरो राहुः । केतुप्रमुखाः खेटा, जिनपतिपुरतोऽवतिष्ठन्तु स्वाहा ।
आ श्लोक गेली पूरें तयार करावी राखेल चाट, खीर, करंगो, सेव, कूर, लापती, पुडला, वडा, भजीया, आ ९ वानीना पात्रो थालमा भरी आगल मूकवा

पछी गेवासर तथा केसरथी रंगेल पीला छरना तातणाओधी वेष्टित एवी चोरी बाधनी, तोरण महित मंडप करवो, तेनी नीचे सिंहासन स्थापी तेमा प्रतिमा वेसाडवी, प्रतिमानी पासे सोनानो कलश स्थापनो अने पासे धी-गोल्थी भरेल ४ मंगल-दीवा थापवा.

ए पछी चाट, खीर, कंसार, वेवर, करंबो, क्रूर (भात), घी, मेवा, पुडी, सुखडी, एटलां वाना थालमां भरी सथवा खो लावीने त्यां मूके, ओवाणां करे, धाणा अने जल मूके, ४ गाडुआ (न्हाना घडा) त्यां थापे, तेओना गलामां गेवासुव अने सुहाली (सांकली-मीठी सुकी पुडि)नां कांकरण बांधवां अने उपर जवारानां ४ सरावलां मूकवां.

पछी गुरुए शक्रस्तवे चैत्यचंदन करवुं, चंदनवारा धूप फूल सहित कुंभुभी वल्ल सन्तक्र-गुल्य उपर हांकवुं, धिवनी सुरिमंत्रे अभिमंत्रित वाले गुरुए अधिवासना करवी अर्थात् आचार्ये सुरिमंत्र अने अन्य प्रतिष्ठापके अधिवासना मंत्र भणीने धिवना मस्तके वासक्षेप करवो.

“ ॐ नमः शान्तये हुं क्षूं हूं सः ” अथवा “ ॐ नमो खीरासवलक्ष्मीणं० इत्यादि ” आ वे पैकीना एक मंत्र वडे अधिवासना करवी, पछी लग्न समये ऋद्धिद्विज्जि, सोपारी, केसर, चंदन, हाथमां लेईने—

संसारे भोगयोग्या श्री-गृह्णित्वाव्यक्तसंपन्नाय संसारभोगकारणाय मङ्गलार्थं पाणिपीडनमिति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं ह्रीं ऐं क्लीं ह्रसौं अव्यक्ताव्यक्तसंपन्नाय संसारभोगकारणाय मङ्गलार्थं पाणिपीडनमिति स्वाहा ।
आ श्लोक तथा मंत्र भणीने सोपारी आदि धिवना हाथमां मूकवां, वाजिनो वगाडववां, धवल मंगल गनरात्रवां, पोड-शांश होम करवो, टीको करवो (धिवना भाले कुंकुमलुं तिलक करवुं.) धिवने वस्त्राभरणादिक पहारावां, ५ जातिना २५ लाडवा होवा, मेवो वड्ढेचवा.

जयति जगति यस्य प्राग्भवं पुण्यमात्मोदयविविजितविपक्षं विश्वकल्याणबीजम् ।

सुरसरिदमलाभोधारणाधारणीयं, बहुगुणजिननाथं स्यापथेत्पटभोगे ॥१॥

ॐ ह्रीं स्निहासंतच्छत्रामराचलंकारै राज्याभिषेकोऽय पटस्थापनमिति स्वाहा ॥
आ श्लोकं तथा मत्र मणीने भगवन्तने राजपाटे त्रेगाडवा, राजतिलकं करुं, पछी नीचे श्रमाणे दीक्षाकल्याणकनो
उत्सव करुयो—

सावत्सरं दानवर नराणा-माधारसारैकचञ्चरिचम्रम् । पर पवित्रं पुण्य पुराणं, पद्मकृष्ट सुगरिष्टज्येष्ठम् ॥१॥

ॐ ह्रीं परमअर्हते जिननाथाय स्नापयामीति स्वाहा ॥

आ श्लोकं तथा मंत्र भणीने श्रुने दीक्षा स्नान करानु, पछी महोत्सव पूर्वक इन्द्र-इन्द्राणी श्रुतु परिवारे परिष्ठुत दान
आपता अशोरुस नीचे जई सर्वालंकार मुक्त करी पंचमुष्टि लोच करयो अने " ॐ नमो सिद्धाण " पाठ बोली—

चारित्र्यचक्रदथतं भुवनैरुपूज्यं, स्थाद्यादतोयनिधिवर्धनपूर्णचन्द्रम् ।

तत्त्वार्थभावपरिदर्शनबोधदीप-मैश्वर्धवयंसुमन चिगताभिमानम् ॥ २ ॥

निर्ग्रन्थनाथममलं कृतदर्पनाशं, सर्वाङ्गमासुरमनन्तचतुष्टयाढयम् ।

मिथ्यात्वपद्मपरिशोधणवासरेशं, क्रोधादिदोषरहितं वरपुण्यकायम् ॥३॥

ॐ ह्रीं परम अर्हते महाव्रतपञ्चसमितित्रिगुसिधराय मनःपर्यवजानाय विपुलमत्यात्मकाय जिनना-
थाय नमः स्वाहा ।

आ श्लोको तथा मत्र बोलवो, आम दीक्षा कल्याणक उजववु

पत्नी प्रतिष्ठा गुरुए चैत्यवन्दन करबुं, त्रण स्तुतिओ कबा पत्नी सिद्धानं”, बुद्धानं. कही ‘अधिवासनादेवी एकरेमि काउस्सगं,’
अन्नत्थ०, लोगस सागरवगंभीरा सुधीनो काउस्सग, नमोऽर्हत्त्वं, कही—

विश्वशेषसुवस्तुबु, मन्त्रैर्याऽजस्रमधिचसति वसतौ । सेमामवतरतु श्री-जिनतनुमधिवासनादेवी ॥१॥

आ स्तुति कहेवी. पत्नी सुयदेवयाए करेमि काउस्सगं, अन्नत्थ०, ? नवकारनो का०, नमोऽर्हत्त्वं, स्तुतिः—

वद वदति न वागवादिनि, भगवति कः श्रुतासरस्वतिगमेच्छुः । रत्नचरद्भ्रमतिवर-तरणिस्तुभ्यं नमः इतीह ॥१॥

संतिदेवयाए करेमि काउस्सगं०, अन्नत्थ०, ? नवकारनो काउस्सग, नमोऽर्हत्त्वं स्तुतिः—

श्रीचतुर्विधसंधस्य, शासनोन्नतिकारिणी । शिवशान्तिकरी भूयात्, श्रीमती शान्तिदेवता ॥१॥

अंवादेवयाए करेमि का०, अन्नत्थ०, ? नवकारनो काउस्सग, नमोऽर्हत्त्वं, स्तुतिः—

अम्बा बालाङ्किताङ्काऽसौ, सौख्यव्यातिं ददातु नः । माणिक्यरत्नालंकार-चित्रसिंहासनस्थिता ॥

खिचदेवयाए करेमि का०, अन्नत्थ०, ? नव०, नमोऽर्हत्त्वं स्तुतिः—

यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रिया । सा क्षेत्रदेवता नित्यं, भूयान्नः सुखदायिनी ॥१॥

शासनदेवयाए करेमि का०, अन्नत्थ०, ? नव०, नमोऽर्हत्त्वं स्तुतिः—

या पाति शासनं जैनं, सद्यः प्रत्यूहनाशिनी । साभिप्रेतसमृद्धयर्थं, भूयात् शासनदेवता ॥

समस्तवेशावचरणं०, ? नव०नो का०, नमोऽर्हत्त्वं स्तुतिः—

सधेऽत्र ये गुरुगुणौघनिघे सुचैया-धृत्यादिकृत्यकरणैकानि यद्वकक्षाः ।

ते शान्तये सह भवन्तु सुराः सुरीभिः, सद्दृष्टयो निखिलविघ्नविघातदक्षाः ॥

नवकार १ प्रकट, नम्रगुणं०, जावंतिचैइयाइ०, नमोर्द्धै०, स्तवन लघुशान्ति, जयवीराराय, आ प्रमाणे देववदन करी गुरु
वेधीने धारणा करे-

स्वागता जिनाः प्रसाददाः सन्तु, प्रसादं सुधिया कुर्वन्तु, अनुग्रहपरा भवन्तु, भव्यानां स्वागत-
मनुस्वागतम् ।

आ अधिवासता रात्रिना समयमा थाय छे

आम नवमा दिवसे दीक्षा कल्याणनो उत्सव कारवो.

नव्यप्रतिष्ठापद्धतौ दशमाह्निकम् ।

अ-अनशाला-नाप्रतिष्ठाविधि-आह्निकचीजकम्

स्नात्रकारकरे वध्वा-भिमन्त्र्य कङ्कणादिकम् । दिशापालान् ग्रहान् स्मृत्वा, वासपुष्पादिकैर्यजेत् ॥१३९॥

ततः श्रीशान्तिमन्त्रेण, मन्त्रितं दिग्बलि क्षिपेत् । चैत्यानां वन्दनं कृत्वा, प्रतिष्ठादेवतां स्मरेत् ॥१४०॥

धूपपूर्वं ततो विम्बाद्, वस्त्रे दूरीकृते गुरु । विन्यसेत् प्रतिमोद्गेषु, मन्त्रवर्णान् पृथक् पृथक् ॥१४१॥

जिनाह्वानं परमेष्ठि-सुद्रया त्रिविधाय च । तेषां शासनदेवांश्च, देव्यश्च प्रतिहारकान् ॥१४२॥

आहूय स्थापयित्वा च, संनिवाप्या जिनान्तिके । प्रतिष्ठाभेदतो विम्ब-तले रत्नादिकं न्यसेत् ॥१४३॥
 अञ्जनं रूप्यकचोल-स्थितं सर्पिर्मधुसुतम् । मन्त्रगित्वा शुभे स्थाने, रक्षणोयं प्रयत्नतः ॥१४४॥
 शुभे लग्ने नवमांशे, प्राप्ते स्वर्णशालाकया । नयनोन्मीलनं कुर्याद्, गुल्मन्त्रविधानवित् ॥१४५॥
 स्थैर्यं कृत्वाऽञ्जनस्याथ, मन्त्रन्यासपुरस्सरम् । वासगन्धादिनिकेयः, कर्तव्यो विम्बमस्तके ॥१४६॥
 कार्यो मन्त्रोपदेशश्च, विम्बवासितरश्रुतौ । चक्रमुद्राविधानेन, सर्वाङ्गस्पर्शनं तथा ॥१४७॥
 दधिपात्रं करे धृत्वा, दृष्टिमागं विधाय च । दृष्टिदोषनिरोधाय, सौभाग्यवर्धनाय च ॥१४८॥
 स्थैर्यसंपादनार्थाय, सौभाग्यधेनुबोधिकाः । मुद्राः मंदस्य सौभाग्य-मन्त्रं तत्र न्यसेद् गुरुः ॥१४९॥
 रत्नसिंहासने विम्बं, निवेश्य मन्त्रपूर्वकम् । नमस्कारं पठ्त्वा सूरि-र्वासान् शिरसि निक्षिपेत् ॥१५०॥
 ततः प्रोक्षणकं कार्यं, मङ्गलातोद्यपूर्वकम् । दानपूर्वं ततः पुष्प-चर्पणादिकमाचरेत् १५१॥
 निर्वाणोत्सवश्रायोग्य-स्तुतिमन्त्रपुरस्सरम् । कृत्वा स्नानविधि पूजां, वर्षापनमथाचरेत् ॥१५२॥
 गन्धापुष्पादि पूजाङ्ग-भावेद्य मन्त्रपूर्वकम् । पूर्वपूजाभयापहृत्य, नवपूजां विधापयेत् ॥१५३॥
 आरात्रिकादि संपाद्य, चैत्यवंदनपूर्वकम् । प्रतिष्ठादेवताकायो-त्सर्गादिकं समाचरेत् ॥१५४॥

भूताऽक्षताञ्जलिः संघ-सहितो गुरुरुचकै । गाथामङ्गलमुद्घोष्य, संमुखमक्षतान् क्षिपेत् ॥१५५॥
 प्रतिष्ठागुणगभी तां, गुरुः कुर्यात् सुदेशनाम् । यां श्रुत्वा भव्यात्मानोऽन्ये-पि स्युस्तत्करणेच्छवः ॥१५६॥
 स्थापनास्थानमन्यत्र, प्रतिष्ठास्थानतो यदि । स्थापनास्थानकं गत्वा, गुरुः सञ्जीकरोत्वदः ॥१५७॥
 चरा चेत् प्रतिमा विम्बं चामाङ्गे दर्भवालुकाम् । निवेशयेदचलायां, पञ्चरत्नादिकं तथा ॥१५८॥
 ततोऽधिवासनास्थानाद्, विम्बमानीय सोत्सवम् । शुभे लग्ने भद्रपीठे, स्थापयेद् विधिपूर्वकम् ॥१५९॥
 तत्रैव समये चैत्य-मस्तके कलशं न्यसेत् । खजदण्डं च विधिवत्, कुर्याच्च जिनवन्दनम् ॥१६०॥
 शान्तिस्तवं स्तवस्थाने, पठित्वा दिग्बलि क्षिपेत् । स्थापनां निश्चलां कृत्वा, स्मरणसंसकं पठेत् ॥१६१॥
 शान्तित्रयं भयहर-मुपसर्गहरं तथा । स्तोत्रं ममवसुत्याख्यं, तिजयपहुत्तस्तवम् ॥१६२॥
 मुखोद्घाटनपूर्वं च, प्राभृतान्पुण्ड्रीकयेत् । संघभक्तिमर्गिणानां, दानं कार्यं यथोचितम् ॥१६३॥

भा०टी०—स्नानकारोना हाथे अभिमन्त्रित कुरुणादिक गाथी दिक्पालो तथा ग्रहोनु स्मरण करीने तमने ग्राम पुण्यादिके पूजवा, पछी याति मन्थी अभिमन्त्रित बलि दिग्गाथोना करुनो, देववन्दन करुं, तेमा प्रतिष्ठा देवतानो काउस्सग. करी तेनी स्तुति कहेनी, धूप उखरीने बिन उपरयी देव दूर कर्या पछी गुरुए प्रतिष्ठाणा अगोमा मन्त्र वर्णोनी न्यास करवो अने परमेष्ठियुद्रा

करी व्रण वार जिनाह्वान करीने शासनदेवी, शासनदेवीओ, अने प्रतीहारोतुं जिननी पासे आह्वान, स्थापन, तथा संनिधापन काखुं, प्रतिष्ठा जो चर होय तो विवनी नीचे वामांगे बालुका साथे डाम अने प्रतिष्ठा स्थिर होय तो प्रतिष्ठा नीचे पंच रत्नादिनी न्यास करवो.

नेत्रांजन-जे घृत-मधुमय होय छे तेने रूपाना कच्योलामां मरी अभिमंत्रित करीने शुभस्थाने संभालपूर्वक राखवुं अने शुभ लग्न अने शुभ नवमांशक आवतां मन्त्र विधानज्ञाता प्रतिष्ठागुरुरूप सुवर्ण शलाका वडे प्रतिमानुं नेत्रोन्मीलन करवुं, अने मंत्रद्वारा अंजनतुं स्थिरी-करण करा प्रतिमाना मस्तके वासक्षेप करवो, तेना चंदन त्रिलिप्त जमणा काने मंत्रोपदेश करवो, तथा मुद्रा करी तेना सर्वांगनो स्पर्श करवो, दहिंतुं पात्र हाथमां लेई विवने दृष्टिगोचर करी आगल मूकतुं अने दृष्टिदोष निवारणार्थ, सौभाग्यवर्धनार्थ, तथा स्थैर्यवृद्धयर्थ 'सौभाग्य, सुरभि अने प्रवचन' आ व्रण मुद्राओ देखाडीने गुरुरूप जिनशरीरे सौभाग्य मंत्रनो न्यास करवो, तथा विवने मंत्रोच्चारण पूर्वक रत्न सिंहासने स्थापीने प्रतिष्ठाचार्य नसस्कार मन्त्र भणतां तेना मस्तके वासक्षेप करवो. स्त्रीओए दान आपवा पूर्वक वाजिंत्र गीतोना नादपूर्वक प्रतिष्ठित प्रतिमाने पोंखणां करवां अने पुण्यो वर्षविवां.

पछी निर्वाण कल्याणकोत्सवंन योग्य स्तुति पाठ अने मंत्रोच्चारणपूर्वक निर्वाणतुं स्नान तथा पूजन करीने पुण्यांजलि नाखीने कल्याणकारक जिनने वधाववा, गंधपुष्पादि प्रत्येक पूजांगो मंत्रपूर्वक जिन आगे निवेदित करवां अने प्रथमनी पूजा दूर करी निवेदित द्रव्यो वडे नवी पूजा करची, आरती आदि छेछां कृत्यो करीने देववंदन करवुं, तेमां पण प्रतिष्ठा देवतानो कायो-त्सर्ग करवो तथा तेनी स्तुति कहेवी.

सद्य सहित गुरु असतो बडे अजलि भरीने उच्च स्वरे मंगल गाथाओनी उद्घोषणा करे अने जिन संमुख अक्षताजलि प्रक्षेप करे अन्ते गुरु सद्य समक्ष प्रतिष्ठागुणगर्भित देशना करे के जेने सामग्रीने वीगा पण भव्यजीमो प्रतिष्ठा करानवाना इच्छुक वने.

अधिनासना प्रतिष्ठाना स्थानथी जो विघनी स्थापना-प्रतिष्ठानु स्थान भिन्न होय तो स्थापना-स्थाने अर्धने गुरुए आ प्रमाणे तैयारी करवी जो प्रतिष्ठा चर अर्थात् चल रहेगानी होय तो प्रतिमा नीचे दर्भ तथा वालुका स्थापनी अने स्थिर होय तो प्रतिमा नीचे पचरत्न आदिनो विन्यास आदि तैयारी करवी. ते पछी प्रतिष्ठा मंडपमाथी उल्लसपूर्णक शुभ शकुनो पूर्वक विघने स्थापना-स्थानके लागुं अने शुभ समयमां विधिपूर्वक मद्र पीठे (प्रासन उपर) प्रतिष्ठित करुं, तेज शुभ समयमा प्रासादना शिखर उपर कलश तथा धजादण्डनु पण विधिपूर्वक आरोपण करुं अने देवमदन करु, वदनमा स्तवनना स्थाने अजित-शान्ति कहेगी, देवमदन करीने दिक्पालोने मल्लिज्ञेप करगे अने म्हरधारना हाथे स्थापना निथल करगीने तेनी आगल सात स्मरणनो पाठ करगे, सात स्मरणोमा यण शान्ति (अजितशान्ति स्तव, लघुशान्ति स्तन, अने घृहच्छान्ति) भयहर स्तव (नमिऊण) ४, उपसर्गहर ५, मममरण स्तोत्र ६ अने तिजयपहुत्त स्तन ७, आ स्तोत्रोनी पाठ करवो.

अन्ते मुखोद्घाटन करवु, अने जिन आगल मेडो धरनी, संघनी मक्ति करगी, अने याचरुदान आदि शासन प्रभावनानां कार्यो करवा.

कृत्यविधि—

प्रतिष्ठा—शयम करुण मिठल मरोडाफली सर्व स्नात्रकारोने हाथे यथामयी, अने—

शक्राग्न्यन्तकर्मकृतेशयरुणश्रीवायुवस्वीश्वरा-ईशानोऽब्जभवः प्रभूतफणभृद् देवा अमी सर्वतः ।
निघनन्तो दुरितानि शीघ्रमभितस्तित्तन्तु पूजाक्षणे, स्वस्वस्थानमनेकधा धृतिभूतः प्रोचद्विकृष्टास्यः ॥११॥

आ काव्य भणीने दिक्षपालीनी पुष्प-त्रासादिधी पूजा करवी,

आनुं चन्द्रं निर्मलं श्रुमिपुत्रं, सौम्यं शान्तं देवपूज्यं सशुक्रम् ।

शौरिं राहुं केतुयुक्तं सुपुण्यैः, संशान्त्यर्थं पूजयेद् भावभक्त्या ॥२॥

आ काव्य भणीने ग्रहो उपर वास पुष्पाक्षत-चहावावां, पृथी नीचेना मंत्र वडे शान्ति बलि मंत्रां-

ॐ नमो भगवते अहते शान्तिनाथस्वासिने नकलानिशोपकर्महासंपरसमन्विताय त्रैलोक्यपूजिताय नमो
नमः शान्तिदेवाय सर्वोऽम्बरसुसामृहत्रामिसंपूजिताय सुवनजनपालनोद्यताय सर्वदुरितविनाशनाय सर्वाऽ-
शिवप्रशमनाय सर्वदुष्टग्रहभृतपिशाचगाकिनीमारीप्रमथनाय, नमो भगवति जये विजये अग्राजिते जयन्ति
जयांचहे सर्वसंधस्य अद्रकल्याणमङ्गलप्रदं साधुनां शान्ति-तुष्टि-पुष्टि-प्रदे स्वस्तित्ने भव्यानां कद्वि-बृद्धि-
निर्धृतिनिर्घाणजननि स्वस्वानामभयप्रदाननिरते भक्तानां शुभावहे सक्यदृष्टीनां धृति-रति-मति-बुद्धि-प्र-
दानोद्यते जिनशासननिरतानां श्रीसंपत्कीर्तियशोवर्द्धनि रोग-जल-ज्वलन-विपथर-दुष्टद्वार-व्यन्तर-राक्ष-
स-रिपु-मारी-चौरैरिति श्वापदोपसर्गादिभयभयो रक्ष रक्ष शिवं कुरु कुरु तुष्टिं कुरु कुरु ॐ नमो
नमो हौं ह्रीं हूं ह्रूं हः क्षः ह्रीं कुट् स्वाहा ।

आ मत्र ३ वार मणी नलि वाकला मंत्रीने प्रतिष्ठा स्थानकेथी दशे दिशामा धूप, दीप, वास, पुष्प, अक्षत, बल सहित बलिहोप करी। पछी निव उपर कुसुमी वल्ल ढाकनुं।

गुरुए चैत्यवंदन करु, नमुत्थुणं विगिरे स्तुति ३ कला पछी सिद्धाणं बुद्धाण कही प्रतिष्ठा देवयाए करेमि का०, अन्त्य०, लोगस १ चिन्तनी, नमोऽर्हव० कही

यद्घिष्टिताः प्रतिष्ठाः, सर्वाः सर्वास्पदेषु नन्दन्ति । जिनबिंबं सा विशतु, देवता सुप्रतिष्ठमिदम् ॥१॥”

शासनदेवयाए करेमि काउस्सगं, नमकार १ नो काउस्सग, नमोऽर्हव०, स्तुतिः—

या पाति शासन जैन, सबः प्रत्यूहनाशिनी । साभिप्रेतसमृद्धर्थे, भूयाच्छाशासनदेवता ॥१॥

खित्तदेवयाए करेमि काउस्सगं, अन्त्य०, नमोऽर्हव०, स्तुतिः—

यस्याः क्षेत्र समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्लिया । सा क्षेत्रदेवता नित्य, भूयान्नः सुखदयिनी ॥१॥

सतिदेवयाए करेमि काउस्सग, अन्त्य०, १ नमकार, नमोऽर्हव०, स्तुतिः—

श्रीचतुर्विधसयस्य, शासनोन्नतिकारिणः । शिवशान्ति करी भूयाच्छ्रामती शान्तिदेवता ॥१॥

समस्तवेयावचगणं, १ नम० का०, नमोऽर्हव०. स्तुतिः—

सधेऽत्र ये गुरुगुणीघनिघे सुवैया-धृत्यार्थाद्वृत्त्यकरणैकानिबद्धकक्षाः ।

ते शान्तये सह भवन्तु सुराः सुरीभिः, सद्दृष्टयो निखिलविघ्नविघातदक्षाः ॥१॥

१ प्रकट नक्कार कही, नमुत्थुणं०, जावंति०, उवसगहरं०, जयवीयराय० ।

पछी श्राद्धे सर्वं विग्गोने धूप उखेववो, आच्छादित (हांशेल) वल्ल दूर करवुं.

पछी गुरु लग्न निकट आवतां उच्च. स्वरे अने उच्चथासे विग्गने विषे आ अक्षरो स्थापे—

‘ह्रीं’ ललाटे । ‘ओ’ नेत्रयोः । ‘ह्रीं’ हृदये । ‘रे’ सन्धिस्थानेषु । ‘ह्रौं’ प्राकारे ॥

वर्णन्यास करीने विग्ग आगल घृतपात्र सूक्तुं. पछी

उदयति परमात्मज्योतिरुच्योतिताशं, विषयचिनययुक्त्या ह्वस्तलोहान्वकारम् ।

शुचितरघनसारोह्लासिभिश्चन्द्रनौधेः, जिनपतिगुरुगन्धैश्चर्चयेद् भक्तभृतम् ॥१॥

घातिक्षयोद्भूतविशुद्धबोध-प्रबोधिताऽशेषविशेषविज्ञान् ।

सुरेन्द्र-नागेन्द्रनरेन्द्रवन्द्यान्, समर्चयेत् श्रीजिननायकाञ्जः ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं ह्रीं नमोऽहत्परमेश्वराय चतुर्भुजपरमेश्चिने त्रैलोक्यगताय अष्टदिककुमारीमहिताय इन्द्रपरिपूजि-
ताय देवाधिदेवाय दिव्यशरीराय त्रैलोक्यमहिताय अष्टमहाप्रतिहार्धधराय आगच्छ आगच्छ स्वाहा ।

परमेश्चि मुद्राए ३ वार कही जिनाह्वान करवुं, पछी—

ॐ ह्रीं ह्रीं ऋषभादिवर्द्धमानान्तास्तीर्थकरपरमदेवाः तेषां प्रतिहारदेवाः शासनदेवा देव्यश्च प्रत्येक एका-
दश देवाः इन्द्रधरा, चामरधरा, कुण्डलधारकौ, सिंहासनोभयपार्श्वयोर्दीपधूपधारकौ, शासनयक्षौ, इमे

हाथ उपर देइ एज मंत्रनो न्यास करवो, चक्र मुद्राए एज मंत्र भणतां प्रतिमानो सर्वौग स्पशै करवो, दधिपात्र देवाळहुं, अने धूप उखेववो.

ए पछी गुरुए दृष्टि स्थार्थ, सौभाग्यार्थ, स्वैरार्थ, सौभाग्य १, सुरभि २, प्रवचन ३, अंजलि ४, अने गरुड ५, ए पांच मुद्राओ सहित नीचेना मंत्रनो प्रतिमामां न्यास करवो—

ॐ अचतर अवतर सोमे सोमे कुरु कुरु वग्नु निवग्नु सुभणे सोभणसे महु महुरे ॐ कविले ॐ ह्रीं कः क्षः स्वाहा ।

ए मंत्र बार ३ भणीने वास-धूप करवो.

ॐ इदं रत्नमयसासनमलङ्कुर्वन्तु इहोपविष्टा भव्यानवलोकयन्तु हृष्टदृष्टया जिनाः स्वाहा ।

आ मंत्र पञ्च मुद्राए भणीने त्रिबने समवसरणमां बेसाळहुं, समंत्राक्षर ३ नक्कार कहीने वासशेष करवो, ३६० कयाणकोनो पढो प्रतिमाना हाथमां मूकनो, ४ स्त्रिओए पुंलणां करवां, स्त्रीओए यथाशक्ति सुवर्णदान देहुं, आम केवल कल्याणकनो उरस-व करी पुष्पवासनी दृष्टि करवी, धूप करवो. पछी

सर्वाऽपायव्यपायादधिगतविमलज्ञानमानन्दसारं, योगीन्द्रधेयमग्नं त्रिशुवनमहितं यत्तथाव्यक्तरूपम् ।
नीरन्ध्रं दर्शनाद्यं शिवमशिवहरं छिन्नसंसारपाशम्, त्रित्ते संचिन्तयामि प्रकटमचिकटं सुक्तिकान्ता-
सुकान्तम् ॥ १ ॥

इत्थं सिद्धं प्रसिद्धं सुरानरमहत् द्रव्य-भावाङ्किकर्म-पर्यायिध्वंसलब्धाऽक्षयपुरचलसद्राज्यमानन्दरूपम् ।
 ध्यायेद्विध्यातर्कमाशक्तमविकलं सौख्यमाप्यैहिकं सत्, ब्रह्मोपेतं प्रलोदादसमस्तुल्यमयं शाश्वतं हेल्यैव ॥२॥

ॐ ह्रीं ह्रीं परमअर्हते अष्टकर्मरहिताय सिद्धिपद प्राप्ताय पारगताय स्नापयामीति स्वाहा ॥

आ माव्यो तथा मंत्र बोली प्रतिमानो अभिषेक करवो अने—

‘ ॐ ह्रीं अहं सिद्धाय नमः ।’ आ मंत्र भणी प्रतिमानी नवाणे पूजा करवी

पही श्रावकोए हाथमा ५-५ पुण्यो अंजलिमा लेईने—

च्यवन-जन्म-चारित्र-ज्ञान-निर्वाणनामके । कल्याणयन्त्रके लोका-नन्ददृग्ब्रन्दताजिनः ॥१॥

आ श्लोक भणी पुण्यो प्रतिमा उपर क्षेत्रमा पठी स्नात्रकारोए वने हाथनी अंजलिमां गन्ध लेईने—

ॐ हृम्ये गन्धान् नः प्रतीच्छन्तु स्वाहा । आ मंत्र भणी गन्धयी पूजा करवी, तथा पुण्यो हाथमां लेई—

ॐ हृम्ये पुष्पाणि गृह्णन्तु स्वाहा । आ मंत्र बोली प्रतिमा उपर पुण्यो चढारवां, धूपयाणुं हाथमां लेई धूप पूडी

उपर नाखी—

ॐ हृम्ये धूपं भजन्तु स्वाहा । आ मंत्र बोली धूप उखेरयो, कुसुमांजलि हाथमां लेईने—

ॐ हृम्ये सकलसत्त्वलोकमवलोकय भगवन्नवलोकय स्वाहा । आ मंत्र बोली विंग्र सामे त्रण वार कुसुमांजलि

नाखवी

पही म्नात्रकारोए पहलां करेली सखळी पूजा दूर करी चंदन, केसर, पुष्प, वस्त्र, आभरणादि वडे नवी पूजा करवी,

पहेलानुं सयलुं बलि नैवेद्य दूर कखुं, अने वीजोरादिक फलो, ५ जानिना ५-५ लाडवा, भेषो, सुखवास, आविर्त्तव नवुं चढावयुं, पळी लूण-पाणीनी विधिपूर्वक आरति अने मंगलदीपो करवो.
पळी प्रतिष्ठागुरुए नीचे प्रमाणे देववंदन करवुं—

आकाशगामित्वचतुर्भुवत्वं, विन्धेश्वरत्वाऽस्मितवीर्यनाथाः ।

प्रिया हिता वागपि यत्र नित्यं, नमो नमस्तीर्णकराय तस्मै ॥१॥

देवेन्द्रवन्द्यमनिमेषनिसैवितार्त्वि, सत्प्रातिहार्येविभवाश्चितमाप्तसुख्यम् ।

लोकातिशयिचरितं वरितं गुणौघे-श्चिद्रूपमस्तानृजिनं द्वि जिनं नमामि ॥२॥

अशोकवृक्षः सुरपुण्यवृष्टि-दिव्यध्वनिश्चामरमासनं च । भामण्डलं द्रुन्दुभिरातपत्रमैतैर्युतं नौमि जिनेशस्वरम् ॥३॥

नित्योदयं दलितमोहमहान्धकारं, संसारतापहरणं शरणं गुणानाम् ।

नष्टाष्टकर्मकलिलं विजितान्तरारम्, रूपं व्रजामि शरणं जितक्रीतभानोः ॥४॥

गजेन्द्रसिंहादिभयं समुद्र-संग्रामसर्पाग्निमहोदराणाः ।

यतः प्रणाशं छुपयान्ति सद्यः, सदा तमर्चै शिवदं जिनेन्द्रम् ॥५॥

उपराणां नमस्कार काव्यो बोलीने नमुत्सुपं कही जे तीर्थकरनी प्रतिष्ठा होय तेनी स्तुति कहेवी, वीजा 'ओमिति मत्ता' अने 'नवतचमुता' आ वे स्तुतिओ कही 'सिद्धाणं वृद्धाणं' कही, श्रीप्रतिष्ठादेवताये करेमि काउत्सुगंगं०, अजत्य० कही, लोगस्त ? काउत्सुगग करवा, नमोऽर्हत० कही—

यदधिष्ठिताः प्रतिष्ठाः, सर्वाः सर्वास्पर्शेषु नन्दन्ति । जिनस्मिन् सा विशतु, देवता सुभक्तिप्रमिदम् ॥
 आ प्रतिष्ठादेवतानी स्तुति कहेवी, पछी श्रुतदेवता १, शान्तिदेवता २, क्षेत्रदेवता ३, शासनदेवता ४, अने समस्त देवा-
 वचनार ५ ना काउसगण १-१ नमकाराना करवा, नमोऽर्हत् कही नीचेनी स्तुतिओ अनुक्रमे कहेनी—
 १ 'वद वदति न वाग्वादिनि' । २ 'उन्मृष्ट रिष्ट द्रुष्ट' । ३ 'यस्याः क्षेत्र समाश्रित्य' । ४ 'उपसर्गवल-
 यविलयन' । ५ 'सर्वेऽत्र ये गुरुगुणौघनिवे' ।

आ स्तुतिओ गेली १ नमकार प्रकट कही रेसीने नमुत्थुणं, जायति चेइआइं, क्षमां, जायत कोष साहं, नमाऽर्हत्
 कहीने, स्तनने स्थाने शान्ति (अजितशान्ति) कहेवी, अन्ते जयवीर्याय कहीने देववदन पूरुं करुं, पछी प्रतिष्ठागुरुर तया
 श्रीसंघे अस्तोनी अंतलिओ भरवी अने गुरुण नमोऽर्हत् कही नीचेनी मगल-गाथाओ उच्चस्वरे बोलवी—

जह सिद्धाण पइहा, तिलोअचूडामणिम्मि सिद्धिपण । आचंदसूरिअं तह, होउ इमा सुपइह्त्ति ॥१॥

जह सगसस पइहा, समत्थलोगसस मज्झयारम्मि । आचंदसूरिअं तह, होइ इमा सुप्पइह्त्ति ॥२॥

जह मेरुसस पइहा, दीवससुद्धाण मज्झयारम्मि । आचदसूरिअं तह, होउ इमा सुप्पइह्त्ति ॥३॥

जह जयुसस पइहा, समगदीवाण मज्झयारम्मि । आचदसूरिअ तह, होउ इमा सुप्पइह्त्ति ॥४॥

जह लवणसस पइहा, समत्थउदहीण मज्झयारम्मि । आचदसूरिअ तह, होउ इमा सुप्पइह्त्ति ॥५॥

घम्माघम्मागास-त्थिकायमइअसस सब्वलोगसस । जह सासया पइहा, एसा चि अ होउ सुपइहा ॥६॥

पंच वि सुपइहा, परमिद्धीणं जहा सुए भणिया । नियया अणाइनिरणा, तह एसा होउ सुपइहा ॥७॥

પછી વધારા અક્ષતાંજલિ વિન સામે ઉછાલવી, શ્રાવકોળ પુષ્પાંજલિ પણ નાલખવી.

૫ પછી પ્રતિષ્ઠાગુરુણ પ્રવચન મુદ્રાણ પ્રતિષ્ઠાકલદર્શનક દેશના આપની.

પ્રતિષ્ઠાકલ દેશના—

રાયા બલેણ વડ્ડહહ, જસેણ ધવલેહ સચલવિસિમાણ । પુણાં વડ્ડહહ વિત્તલં, સુપદ્ધા જસલ દેસલ્લિ ॥૧॥

ઉવહણહ રોગમારિં, દુઝિમચ્ચલં હણદ હુણહ સુહહાવે । માવેણ કીરમાણા, સુપદ્ધા સચલલેયલ્લ ॥૨॥

આંટી૦ —જે રાજાના દેશમાં ત્રિથિર્સુક પ્રતિષ્ઠા થાય છે તે રાજાનું કલ વધે છે, સર્વે વિદ્યા યાગોને તે પંચાના ગચથી ઉજ્જવલ વનાવે છે, અને ત્યાં થિપુલ પુણ્યની વૃદ્ધિ થાય છે, માવથી કરાતી ઉત્તમ પ્રતિષ્ઠા સર્વલોકના રોગ તથા મહાપાપોને દૂર કરે છે, દુર્ધિકા-દુષ્કાલનો નાશ કરે છે, અને મુખિય આદિ ધુમ માંયોની સૃષ્ટિ કરે છે ॥૧-૨॥

જિણવિમ્મયપદ્ધં જે, કરિંતિ તહ કારવિંતિ મતીણ । અણુમચ્ચંતિ પદ્ધિં, સચ્ચે સુદ્ધમાહણો હુતિ ॥૩॥

દવ્વં તમેવ સ્મણહ, જિણવિંવપદ્ધુણાહકજેસુ । જં લગ્ગહ તં સહલં, હુગ્ગહજાગણં દવ્વહ સેસં ॥૪॥

પવં નાકજ સયા, જિણવરવિંવસ્સ હુણદ સુપદ્ધં । પવેહ જેણ જરમરણ-વજ્જિએં સાસચં ઠાણં ॥૫॥

આંટી૦ —જેઓ મક્તિથી જિનવિંવની પ્રતિષ્ઠા કરે છે, કરાવે છે, અને નિત્ય અનુમોદના કરે છે, તે સર્વં મુલના માગી થાય છે, દ્રવ્ય તે જ ગફલ કહેવાય કે જે જિન-વિમપ્રતિષ્ઠા આદિના કામોમાં લાગે છે. ‘વાતીનું યન દુર્ગતિમાં લેઈં જનારું છે.’

પમ જાણીનેં મદા જિનેધરના વિમ્મોની ઉત્તમ પ્રતિષ્ઠા કરો, કરાવો, કે જેથી જરા-પણ સહિત શાથતપદને પાવો ॥૩-૪-૫॥

॥ ३२४ ॥ मध्यकालीन अंजनशलाका विधि—

जो के पादलिख्त्वरिप्रणीत प्रतिष्ठा त्रिधि विस्तृत नहीं छता कंश्क कहिन तो छे ज, सकलचन्द्रोपाध्याय सकलित, विध्यनु
मारिणी दशाह्निक त्रिधि अतिविस्तृत होई समय अने शक्तिको व्यय मागे छे, आ वंने प्रतिष्ठाविधियोथी षण संक्षिप्त, सरल,
अने सुल साध्य एसी मध्यकालीन अंजनशलाकाविधि अमो आपीदे छीए गरिस्थिति वश ओछा त्वर्च अने ओछा परिश्रमे
साथी शक्य एसी आ प्रतिष्ठाविधि छे आ संक्षिप्त प्रतिष्ठाविधिनो मूल आधार तपा श्रीगुणरत्नहरिप्रणीत प्रतिष्ठाकल्प छे, आ
प्रतिष्ठाविधिने अमोए अमारी नव्यप्रतिष्ठापद्धतितुं एक त्रिचिष्ट अंग गणीने एमा शामेल करी छे, श्रीमान् गुणरत्नहरिजी ग्रन्था-
रंभमा नीचे प्रमाणे मंगलदूरक प्रतिज्ञा करे छे—

श्रीमद् वीरंजिन नत्वा, प्रतिष्ठाविधिसुत्तमम् । यति-श्रावक-कर्तव्यं, व्यवस्था वक्ष्ये समासतः ॥
सामग्रीमेलन—त्या प्रथम लागणीयाला प्रतिष्ठा करावतार लयना दिवस पहला ज प्रतिष्ठोपयोगी आ वस्तुओ मेलनीने
एकर करनी; लेम के-४ नगागेदी । ४ वारो गहुनीदि जमना, जमारा । शराले चमारा ८ । सोना रूपा त्रवाना अथवा माटीना
स्नपन योग्य क्लश ८ । पणी भरणने घडा कोरा । घडी योग्य कुडी २ । नंदार्वतयोग्य रसगुडा ८ । शराला ६४ । कुंडा
८ । आचार्ययोग्य सदश रखी । छत्रधार योग्य रत्न । अक्षत पात्र ? । सेवननो नंदार्वत योग्य पाटलो ? । सदश कोरा आच्छा-

? पूर्वजन्मा जलघडी द्वारा मुहूर्तसमय निश्चित करानो हतो तेथी जल भरवाने त्रे कुडिओनी आणदयकता पडती हती
आले जलघडी उठी जग छता प्राचीन लिस्टनो उनारो होइ 'मोय लखी छे

दन वस्त्र २ । नन्दवर्तयोग्य १ । प्रतिमायोग्य १ । सोनानां कांक्षण ४ । सुवर्णसुद्रिका ४ (ए चार स्नात्रकार योग्य जाणवां) । रूपानी वाटकी । सोनानी शली । कालो सुरसो । मध साकर मेलवनीने अंजन । प्रियंगु कपूर गोरोचननो-हस्तलेप । प्रवाल, सोडुं, रूपुं, वांडुं, मोती, ए पंचरत्ननी पोटली विंवननी आंगुलीए बांधवी । आरीसो । मातृशाडी-कसुंधी (बस्त्र) । मीढल-कृद्धि-वृद्धि सहित कांक्षण (कृद्धिवृद्धि शब्दथी मरोडा सींग जाणवी) । आरेठानी माला । जवमाला । लोहाब्देदित श्वेत सरसवनी रक्षा पोटली । रासव, दहि, अक्षत, वी, डाम, सहित अर्धपात्र । गेवासून वींटेल् पूर्णत्राक । धूसर-सुसल-स्वाइयो, पुंखणोपकरण । पुंखनारी ४ स्त्रीओ सकांक्षणी । भांमणां शराव । गंगोदक । समूलदर्भ । गंगावेष्ट । कुवां नदीनां १०८ पाणी । ३६० क्रियाणानो पडो । घसेल सुखडवास । धवलवास । केसर-कपूर-कस्तुरी-भोगपुडी । धूपपुडी । वणां फूल । अखंड तंदुल (चावल) सेई २ । वंट । धूपघाणां । छत्र-चामर पंचशब्दादि वाजित्र । घारी । सुहाली । लाडू । मांडा । नादह । नादह (सर्व प्रकारनां फल नैवेद्य) काकरिआ २५, (केवी रीते ? मगना ५, तिलना ५, चणाना ५, गडुघाणीना ५, फूलोना ५ ए प्रकारे २५) वाट, खीर, करंबो, सात धाननी खीचडी, कूर (भात), सीधडी (पिडली-मुंठियां), पुडला, एस बलिशरावलां ७ । सात धान-शणवीज १, कुलथ २, मसूर ३, जव ४, कांग ५, उडड ६, सरसव, ७, अथवा शाल १, जव २, गोडू ३, मुंग ४, वाल ५, चणा ६, चोला ७ । नालेर । सोपारी । खजूर । द्राख । वरसोलां । फलावली । साकर । दाडिम । जंबेरी । नारंगी । बीजीरां । सेलडी । आंवा । घृतवाटको । दधिवाटको । वाडुला वांनी ३ । इति ।

स्नात्रोपकरण—अथ स्नात्रयोग्योपकरण मेलववां-सुवर्णचूर्ण, अथवा सोनाना कलश ४, अथवा सुवर्ण सहित जलस्नात्र

१ । प्रवाल १, मौक्तिक, सुवर्ण ३, रजत ४, ताम्र ५, ए पचरत्नजलस्नात्र २ । पीपली, पीपल, त्रिरीप, उंवरो, वह, चंपो,
 अयोक, आचो, जांबू, मकुल (गोलसिरी), अर्जुन (आजणु), पाडल, क्रिथुक्रुनी अंतरछालतुं चूर्ण, कपायस्नात्र ३ । गजदत-
 द्रुपमंशुंग उखेडी, पर्वतशिखर उदेहीघर, महाराजद्वार, नदीसंगमे उभयतट, पद्मसरोवस्नी माटी मेलवी मृत्तिकास्नात्र ४ । छान-
 गोमूत्र-धी-दहि-दूध, ए पंचागमा डाम अने पाणी मेलनी पचगव्यस्नात्र ५ । सहदेवी, नला, जतावरी, कुंआरी, पीठवन्ति,
 सालवन्ति. वही (उमी) रीगणी, लहुडा (भूंह) रीगणी, ए सदौपधिस्नात्र ६ । मयूरशिखा, विरहक, अंकोल, लक्ष्मणा, शंखपुष्पी,
 सुरसाणिथो (शरपुंला), गंधनोली, महानोली, एतु मूलिकाचूर्ण, स्नात्र ७ । उपलोट १, नज २, लोघ्र ३, वीरणीमूल (जालो) ४,
 देवदारु ५, श्रो ६, जेठीमध ७, ऋद्धिद्विद्धि ८, ए प्रथम अष्टवर्ग चूर्णस्नात्र ८ । मेदा १, महामेदा २, काकोली ३, खीर-
 काकोली ४, जीमक ५, रूपभक ६, नखी ७, महानखी ८, ए द्वितीयाष्टवर्गस्नात्र ९ । हलदर, वज, सोआ, जालो, मोय,
 गाठिवनो, मियणु, सुरमासी, रुचूरो, उपलोट, तल, तमालपत्र, एलची, नागकेसर, लंग, ऋकोल, जायफल, जावितरी, नखी,
 चदन, उडहडीलो, शिलास, प्रमुल सर्वोपधी चूर्ण स्नात्र १० । सेधवादि कुमुमस्नात्र ११ । शिलास, उपलोट, सुरमासी, नास,
 सुखड, आर, कर, मयजघ, स्नात्र १२ । वासस्नात्र १३ । चदनस्नात्र १४ । केसर-कुंकुमस्नात्र १५ । गंगाप्रपृथि तीर्थजल-
 स्नात्र १६ । रूपस्नात्र १७ । पुष्पाजलिस्नात्र १८ । इति उपकरण मेलनया ।

नंदावर्त आलेखन चिधि—हवे नंदावर्त आ प्रकारे लखुं-कर्पूर संमिश्र श्रीखंडना सात लेप करेल सेवनना पाटला उपर
 अथवा कोई पण शुभ पाटला उपर तेना मध्यभागथी ह्यत्र भमाडीने ८ इत्तो करवा, मर्घेना प्रथम बलयमा कर्पूर-कस्तूरी-गोरो-

चनयुक्त कैसर-कुंकुमरसवडे सुवर्णनी लेखणीथी अथवा तो सोनानी कुंचीथी मध्यभागे ९ (नव) कोणयुक्त नंदावर्तनो आलेख करवो अने ते उपर प्रतिष्ठाप्य जिनप्रतिमा स्थापवी वा चितववी. ते पछी जिनना जमणा भागसां शक्रेन्द्र अने शुतदेवतानो तथा डावा भागे ईशानेन्द्र अने शांतिदेवतानो आलेख करवो अने 'ॐ नमोऽर्हद्भ्यः' लखवुं.

बीजा वृत्तमां पूर्वादि ४ दिशाओमां 'ॐ नमः सिद्धेभ्यः' । ॐ नम आचार्येभ्यः । ॐ नम उपाध्यायेभ्यः । ॐ नमः सर्वसाधुभ्यः' अने ईशानादि ४ विदिशाओमां अनुक्रमे—' ॐ नमो ज्ञानेभ्यः । ॐ नमो दर्शनेभ्यः । ॐ नमश्चारित्रेभ्यः । ॐ नमः शुचिचिचार्यै' आम लखवुं.

त्रीजा वलयमां पूर्वादि ८ दिशाओमां प्रतिदिशा विदिशां ३-३ कोष्टक करी प्रतिकोष्टके जिनमातानुं एक एक प्राकृतनाम 'पणवादि स्वाहान्त' लखवुं, यथा ' ॐ मरुदेवीए स्वाहा १, ॐ विजयाए स्वाहा. २' एज प्रकारे सेणा ३, सिद्धस्था ४, मंगला ५, सुसीमा ६, पुहवी ७, लखवमणा ८, रामा ९, नंदा १०, विण्डु ११, जया १२, सामा १३, सुजसा १४, सुव्वया १५, अचिरा १६, सिसी १७, देवी १८, पमावई १९, पउमावई २०, चप्पा २१, सिवा २२, वामा २३, तिसला २४ ।

माताओना उपरना चौथा वृत्तमां पूर्वादि ८ दिशाओमां प्रत्येकमां २-२ घोरो करी सोल विद्यादेवीओ लखवी. जेमके—' ॐ रोहिणीए सां त्मां स्वाहा १ । ॐ पन्नचीए हूँ की स्वाहा २ । ॐ वज्रसिखलाए लीं स्वाहा ३ । ॐ वज्रकुसीए लमां वां स्वाहा ४ । ॐ अपविचक्राए झीं स्वाहा ५ । ॐ पुरिसदचाए त्मां स्वाहा ६ । ॐ कालीए सां हे स्वाहा ७ । ॐ महाकालीए ॐ क्षमां स्वाहा ८ । ॐ गौरीए यूं ग्रयूं स्वाहा ९ । ॐ गंधारीए ३ क्षीं स्वाहा १० । ॐ संवत्थ महाजालाए लें हीं स्वाहा

११ । ॐ माणवीए यूँ ६मां स्वाहा १२ । ॐ वहरुद्वाए खँ माँ स्वाहा १३ । ॐ अब्हुत्ताए यूँ माँ स्वाहा १४ । ॐ माणसीए ग्लुँ माँ स्वाहा १५ । ॐ महामाणसीए हुँ खँ स्वाहा १६ ॥

विद्यादेवीओनी उपरना पाचमा वृत्तमा आठे य दिशाओमा ३-३ कोष्टको बनावी लोकांतिक देवीनो विन्यास करवो. ते आ प्रमाणे—

ॐ मारस्वतेम्यः स्वाहा, ॐ आदित्येभ्यः स्वाहा, ॐ वह्नियः स्वाहा, एज रीते नामनी आदिमा . ॐ' अने अन्तमां चतुर्थीनुं बहुवचन लगाडबु अने छेल्ले 'स्वाहा' शुब्द मृत्नीने वधा नामो लवर्गा, आगेनां नामो वरुग ४, गर्दतोय ५, वृषित ६, अब्यायाध ७, रिष्ट ८, अन्याम ९, युर्याम १०, चंद्राम ११, सत्याम १२, श्रेयस्कर १३, सेमंकर १४, वृषम १५, कामचार १६, निर्माण १७, दिशातराक्षित १८, आत्मरक्षित १९, सर्वरक्षित २०, मरुत २१, वसु २२, अश्व २३ अने विश्व २४ ।

छट्टा वृत्तनी पूर्वादि आठे य दिशाओमा अनुक्रमे ॐ सौधमार्दीन्द्रादिभ्यः स्वाहा । ॐ तदेवीभ्यः स्वाहा । ॐ चमरादीन्द्रादिभ्यः स्वाहा । ॐ तदेवीभ्यः स्वाहा । ॐ चन्द्रादीन्द्राभिभ्यः स्वाहा । ॐ तदेवीभ्यः स्वाहा । ॐ किंनरादीन्द्रादिभ्यः स्वाहा । ॐ तदेवीभ्यः स्वाहा ।

सातमा वृत्तमा आठ दिशाओमा अनुक्रमे ॐ इन्द्राय स्वाहा १, ॐ अग्रे स्वाहा २, ॐ यमाय स्वाहा ३, ॐ निर्ऋतये स्वाहा ४, ॐ वरुणाय स्वाहा ५, ॐ वायवे स्वाहा ६, ॐ कुबेराय स्वाहा ७, ॐ ईशानाय स्वाहा ८ ।

आठमा वृत्तना ८ कोठओमा अनुक्रमे—ॐ आदित्येभ्यः स्वाहा १, ॐ सोमेभ्यः स्वाहा २, ॐ मगलेभ्यः स्वाहा ३,

ॐ बुधेश्वर्यः स्वाहा ४, ॐ बृहस्पतिभ्यः स्वाहा ५, ॐ शुक्रेश्वर्यः स्वाहा ७, ॐ शनैश्वर्यभ्यः स्वाहा ९, ॐ राहुकैतुभ्यः स्वाहा ८ ।

आठ वलयोनी बहार ४-४ द्वासेयुक्त ३ प्राकारो बनाववा, पूर्वादि द्वारो अनुक्रमे श्री १, शांति २, बल ३, आरोग्य ४, नामक-चार तोरणे वडे शोभायमान करावां, तथा धर्म १, मान २, गज ३, सिंह ४, नामक ध्वजो द्वारो उपर आलेखवा, प्रथम प्राकार-ना पूर्वादि द्वारो पर अनुक्रमे सोम १, यम २, वरुण ३, कुबेर ४, आ चार लोकपालोने द्वारपाल रूपे आलेखवा, एमना हाथमां अनुक्रमे धनुष्य १, दण्ड २, पाश ३, गदा ४, नामक आयुधो वताववां. वीजा प्राकारना द्वारोए अनुक्रमे जया १, विजया २, अजिता ३, अपराजिता ४, नामनी द्वारपालीओ आलेखवी. वीजा बहारना प्राकारना ४ द्वारो उपर यष्टिघर तुंबरुने द्वारपाल आलेखवी.

ते पछी प्रथम गढमां आग्नेयादि विदिशाओमां १२ सभाओ आलेखवी. साधु १, वैमानिकदेवी २, साध्वी ३, ए आग्नेय-कोणमां, भवनपति १, व्यन्तर २, ज्योतिष्क ३, नी देवीओ नैर्ऋत कोणमां, भवनपति १, व्यन्तर २, जोतिष्क ३, देवो वायव्य-कोणमां अने वैमानिक देव १, मनुष्य २, मानुषी ३, ए इशान कोणमां आलेखवी. वीजा प्राकारमां तिर्यचो आलेखवा अने वीजा प्राकारमां यानवाहनो आलेखवां. प्राकारनी बहारनी भूमीमां देवो-मनुष्यो वताववा, चारेय द्वारोनी वने बाजुए कमलव-नयुक्त वाचडिओ आलेखवा, पछी वज्रलांछित इंद्रपुर देह दिशाओमां "परविद्याः क्षः फुट्ट" कोणोमां " परमंत्राः क्षः फुट्ट" तथा चार कोणोमां चार पूर्ण कलशो लखवा, तेनी बहार वायुमंडल आपहुं, इति नन्द्यावर्से आलेखन विधि ।

अथ नन्द्यास्तं पूजनं चिचि—नन्द्यावर्तनी पूजा पोतपोताना नामोच्चारण पूर्वकं आ प्रमाणे करवी—प्रथमं कृत्वा
प्रथमां नन्द्यास्तं उरु प्रमिष्टाय त्रिननु भागान करी 'ॐ नमोऽंबुद्रम्यः' आ नाम मंत्रं बोली कंभूरादि वटे पूजनं कर्तुं.
रेतना उमाग भागालं उत्रं तथा भुवदेवतानी पूजा करी भने डाचा भागे ईशानं त्रं तथा शक्तिवेवताने पूजवी.

रीजा गजपती पूरादि दिगाश्रोमा " ॐ नमः सिद्धिमा, ॐ नम आचार्यम्यः, ॐ नम उपास्यायेम्यः, ॐ नमः सर्वसा-
पुम्यः " 'ने इगानादि सिदिशाश्रोमा " ॐ नमो गानेम्यः ॐ नमो दर्शनेभ्यः, ॐ नमयात्रिभ्यः, ॐ नमः शुचिविधायं

आ प्रमाणे नाम मनो बोलीने पूजनं कर्तुं.
प्रीजा पूजना—ॐ मखंडीए नमः । ॐ विजयाए नमः । ॐ सेणाए नमः । ॐ सिद्ध्याए नमः । ॐ मंगलाए नमः ।
ॐ मुगीनाए नमः । ॐ सुद्रीए नमः । ॐ लसमगाए नमः । ॐ रामाए नमः । ॐ नंदाए नमः । ॐ विष्णुए नमः । ॐ जयाए
नमः । ॐ सामाए नमः । ॐ मूत्रसाए नमः । ॐ सुव्याए नमः । ॐ अचिपाए नमः । ॐ सिरीए नमः । ॐ देवीए नमः ।
ॐ यमार्शए नमः । ॐ पत्रमावर्शए नमः । ॐ यप्पाए नमः । ॐ सिनाए नमः । ॐ गामाए नमः । ॐ तिसलाए नमः ।
ॐ यतुयं वृत्तमा ' ॐ सेहिणीए नमः । ॐ एनरीए नमः । ॐ वज्रसितलाए नमः । ॐ वज्रहृसीए नमः । ॐ अप्पट्टिच-
हाण नमः । ॐ पुरिगदगाए नमः । ॐ कालीए नमः । ॐ महाकालीए नमः । ॐ गोरीए नमः । ॐ गथरीए नमः । ॐ
मन्त्रयमहाजानाए नमः । ॐ मागरीए नमः । ॐ वरुद्राए नमः । ॐ अच्युताए नमः । ॐ माणसीए नमः । ॐ महामाण-
सीए नमः ।

पांचमा वृत्तमां—ॐ सारस्वतेभ्यो नमः । ॐ आदित्येभ्यो नमः । ॐ वह्निभ्यो नमः । ॐ वरुणेभ्यो नमः । ॐ गर्दतोयेभ्यो नमः । ॐ तुषितेभ्यो नमः । ॐ अव्याधायेभ्यो नमः । ॐ रिष्टेभ्यो नमः । ॐ अन्याभेभ्यो नमः । ॐ सूर्याभेभ्यो नमः । ॐ चन्द्राभेभ्यो नमः । ॐ सत्याभेभ्यो नमः । ॐ श्रेयशकरेभ्यो नमः । ॐ क्षेमकरेभ्यो नमः । ॐ वृषभेभ्यो नमः । ॐ कामचारेभ्यो नमः । ॐ निर्माणेभ्यो नमः । ॐ दिशान्तरक्षितेभ्यो नमः । ॐ आत्मारक्षितेभ्यो नमः । ॐ सर्वरक्षितेभ्यो नमः । ॐ मल्लेभ्य नमः । ॐ वसुभ्यो नमः । ॐ अश्वेभ्यो नमः । ॐ विश्वेभ्यो नमः ।

षष्ठ-वलयमां पूर्वादि कोष्ठकोमां ॐ सौधर्मादीन्द्रादिभ्यो नमः । ॐ तद्देवीभ्यो नमः । ॐ चमरादीन्द्रादिभ्यो नमः । ॐ तद्देवीभ्यो नमः । ॐ चन्द्रादीन्द्रादिभ्यो नमः । ॐ तद्देवीभ्यो नमः । ॐ किन्नरादीन्द्रादिभ्यो नमः । ॐ तद्देवीभ्यो नमः ।

सातमा वलयमां—ॐ इन्द्राय नमः । ॐ अग्नये नमः । ॐ यमाय नमः । ॐ निर्ऋत्ये नमः । ॐ वरुणाय नमः । ॐ वायवे नमः । ॐ कुबेराय नमः । ॐ ईशानाय नमः ।

आठमा वलयना आठ कोठाभोमां अनुक्रमे ॐ आदित्येभ्यो नमः । ॐ सोमभ्यो नमः । ॐ मंगलेभ्यो नमः । ॐ बुधेभ्यो नमः । ॐ बृहस्पतिभ्यो नमः । ॐ शुक्रेभ्यो नमः । ॐ शनैश्चरेभ्यो नमः । ॐ राहुकेतुभ्यो नमः ।

आठवलयोने फस्ता आलेखेला ऋण प्राकारो पैकीना अंदरना प्रथम प्राकारना आग्नेयादि ४ कोणोमां आ प्रमाणे चार पर्षदाओतुं पूजन करतुं. अधिकोणे—ॐ साधुभ्यो नमः १ । ॐ वैश्वानिकदेवीभ्यो नमः २ । ॐ साध्वीभ्यो नमः ॥ नैऋत्यकोणे—ॐ भवनपतिदेवीभ्यो नमः १ । ॐ व्यन्तरदेवीभ्यो नमः २ । ॐ ज्योतिष्कदेवीभ्यो नमः ३ ॥ वायव्यकोणे—ॐ भवनपति-

देवेभ्यो नमः १ । ॐ व्यन्तरदेवेभ्यो नमः २ । ॐ ज्योतिर्देवेभ्यो नमः ३ ॥ ईशानकोणे-ॐ वैमानिकदेवेभ्यो नमः १ । ॐ
 मनुचेभ्यो नमः २ । ॐ मनुष्येभ्यो नमः ॥ आम प्रथम प्राकारसां १२ पर्पाओने पूजीने बीजा प्राकारगत तिर्यचो अने तृतीय
 प्राकारगत यानवाहनादि उपर वासक्षेप करीने पूजन काबुं

ते पठी प्रथम प्राकारना द्वारपालने आ प्रमाणे नाममत्रो बोलीने पूजवा-ॐ सोमाय नमः । ॐ यमाय नमः । ॐ वरु
 णाय नमः । ॐ कुबेराय नमः । बीजा प्राकारनी द्वारपालिकाओने-ॐ जयार्यै नमः । ॐ विजयार्यै नमः । ॐ अजितार्यै नमः ।
 ॐ अपराजितार्यै नमः ॥ तृतीय प्राकारना द्वारपाल तरीके-ॐ तुंबरवे नमः । ॐ तुंबरवे नमः । ॐ तुंबरवे नमः । ॐ तुंबरवे
 नमः । आम ४ द्वारोपर तुंबरु द्वारपालनी पूजा करवी ॥ ए न प्रकारे ४ तोरणो, ४ ध्वजो, दिशाओमां परिविष्टाः क्षः फुद्द
 स्वाहा, विदिशाओमां ' परमन्त्राः क्षः फुद्द स्वाहा ' इन्द्रपुरादि जे जे आलेखो नंघावर्तने फस्ता करेला होय ते सर्वनी
 पूजा करवी, वासक्षेप करवो इति नन्दावर्तणविधि ॥

प्रतिष्ठास्थानमां प्रतिमा प्रवेश-रंग-चेरगी चन्द्रवाओ वढे मुखोभित्त अने पीठमहित एवा प्रतिष्ठास्थानमा (जे स्थाने
 नवीन प्रतिमाओ विधि माटे स्थापवी होय ते-प्रतिष्ठासंडपमां) शुभ समये महोत्सवपूर्वक नवीन तैयार थयेल जिनविं व पूर्वाभि-
 मुख अथवा उचराभिमुख वेसाढुं, जो त्रिं व स्थिर होय तो तेनी नीचे वामभागे पचरत्न तथा कुंभकारना चकनी माटी मूकीने
 प्रतिमा स्थापवी अने जो त्रिं व चल होय तो तेनी नीचे समूले हाभ तथा नदीनी शुद्ध चालुका मूक्का, जवन्य पटे पण १००
 हाथ सुधीमा बये भूमि शुद्धि करवी, सुगंधी जल छाटी तथा पुष्पो वेरीने भूमिनो सत्कार करवो, धूप उखेवो, अमारि पडहो

वगडावबो, राजाने पूछुं, मंदिर-मूर्ति बनावनार शिल्पीनो सत्कार करवो, संघने बोलाववा, अने घामघूमथी पवित्र जलाशयथी जल आ प्रमाणेनी विधिथी लावुं.

जलयान्नाविधि—पूर्वे मंगाले सुंदर मजदूर घडाओने प्रतिष्ठासंडपमां मंगवीने प्रतिष्ठाचार्यं चंदन-वास-अक्षतो वडे अभिमंत्रित करवा, श्रावकोए (स्नात्रकारोए) ते पवित्र तथा विविध प्रकारना पुष्पो-पत्रो अने सोपारी आदिथी पूजवा, ते पछी ते घडाओ प्रतिष्ठाचार्यद्वारा रक्षा प्राप्त अविधवा एवी चार ह्नीओने उपडाववा, पछी ते ह्नीओनी साथे संघ समुदाये महोत्सव पूर्वक नदी-सरोवरादिके जंउं, त्यां जलने कांठे उभा रही प्रतिष्ठागुरु क्षेत्रदेवता-जलदेवता अने शान्तिदेवताने अनुकूल करवा निमित्ते “क्षेत्रदेवता अनुकूला भवतु, जलदेवता अनुकूला भवतु, शान्तिदेवता अनुकूला भवतु,” आम बोला चन्दन-वास-अक्षत-क्षेप करे अने त्रणेना कायोत्सर्ग करे, आ क्षेत्रदेवतायै करेमि काउस्सगं अत्रत्य उस्सिणं०, १ नो०, पारी, नमोर्द्ध्व०, स्तुतिः—

यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रिया । सा क्षेत्रदेवता नित्यं भूयात्तः सुखदायिनी ॥१॥

श्री शान्तिदेवतायै करेमि का०, अत्रत्य०, १ नो०, पारी, नमोर्द्ध्व स्तुतिः—

श्री चतुर्विधसंघस्य, शासनोन्नतिकारिणी । शिवशान्तिकरी भूयाच्छ्रीमती शान्तिदेवता ॥२॥

श्रीजलदेवतायै करेमि का०, अत्रत्य०, १ नो० का०, पारी नमोर्द्ध्व० स्तुतिः—

यदधिष्ठितजलविमलाः, सकलाः सफला ज्जिनेश्वरप्रतिमाः । सा जलदेवी पुर-संघ-भूसुजां मंगलं देयात् ॥३॥

आ चखते श्रापज्ञो नात्रियेर आटि वडे अने अगर आदिना अंगभोग वडे पूजा करे. ते पछी नमस्कार मंत्र गणवापूर्वक जले करी घडाओ मरी घलमंगल गवाता वादिनादपूर्वक आबी जिनप्रासादने प्रदक्षिणा देइ निरुपद्रव स्थानके सुके. इति बलयाना विधि ।

वेदीस्थापना—चार मंडपना ४ न्यूणाओमां अविधवा श्राविकाए मंगलगीतपूर्वक आपोली ४ विषमागवेदिओ (नवांग-वेहि-वेह) स्थापनी, दरेक वेदीने उपर १-१ जवारानुं शरावल्ल मूकुं, वेदिओने गेवाखत्र अथवा राता रंगे रंगेल सूत्र वींटुं, उपर लाल रंगे रंगेल १२-१२ हाथना वे अडधिया ओढाडवा, फातो वासडाओनो टेको देइ वेदिओने मजवूत करवी. (प्रति-मानी) ब्यारे दिशाओमा (कइक जमणी तरफ) श्वेत सुदर ४ न्दाना गाडुआ (वेडिआ) स्थापवा, तेमना उपर १-१ जवारानुं सरावल्ल मूकुं,

दिक्पालस्थापना—एक पनित्र पाटला उपर दश दिक्पालोनी स्थापना करवी इन्द्र, अग्नि, यम, निर्ऋति, वरुण, वायु, कुबेर, ईशान, नाग अने ब्रह्मा, ए क्रमथी पूर्वादि योत पोतानी दिशामां चंदनना आलेखरूपे तिलको करवां, अने ते पछी ते स्थानोमां दिक्पालोनी पूजा करवी.

स्नात्रकारो अने औपधि वाटनारीओ—स्तनजडित सुवर्णमुद्रिका-कंकणधारी अखंडित शरीरवाला अक्षतेन्द्रिय एवा निपुण अखंडित-उद्भट वेपथारी धर्मवान् उपवासी ते दिवसे ब्रह्मचारी अने कुलगान् एवा चार अथवा अधिक स्नात्रकारो करवा. एज रीते जेना साह-ससरो, माता-पिता जीवित होय एवी सुकुलीन श्रेष्ठ ब्रह्मभरणोथी सुशोभित सुशील अने पवित्र

शरीरवाली न्यार स्त्रीओद्वारा स्नात्रनी सर्व औषधियो कूटापीने तैयार करावची, ते प्रत्येकने कापड, नालियेर, सुखडी, आदि आपीने तेमनी सत्कार करवो, एसांनुं कंई न वने तो छुंकुमतिलक, पुष्प अने तांबूल वडे पण यथाशक्ति उपचार करवो. ते औषधी वाटनारीओए पण यथाशक्ति देवने वस्त्रयुगलादि अर्पण करी भक्ति करवी. अष्टादश अभिषेकोनां औषधिचूर्णोनां जुदां जुदां पडिकां बांधी तेओ उपर दोरो वीटीने पडिकां करी राखवां, वाटेला प्रियंगु, कपूर, गोरोचनरूप हस्तलेपननुं पण पडिकुं बांधीने तैयार राखवुं.

पछी शान्तिकर्ममां प्रवीण धार्मिक स्नात्रकारोए दिक्पालोनी पूजा करी जिनप्रासादनी जगतीमां शांतित्रिलि क्षेपवो, ते पछी पूर्वप्रतिष्ठित प्रतिमानुं विधिपूर्वक स्नात्र करी पूजा करवी. आ वधी पूर्वक्रिया जाणवी. आ पछीनां जे जे कर्तव्यो छे ते वधां सुखे शीखी शकाय एदला माटे पूर्वाचार्योए गाथाओथी वर्णवेल छे, ते गाथाओ विस्तारना भयथी अत्र लखी नथी. ?
प्रतिष्ठाप्रारंभ मंगल—पूर्वप्रतिष्ठित प्रतिमाना स्नात्र पछी तरत ज तेनी आगल. नवीन वस्त्र पहेरेल पत्रित्र उपवासी आचार्य पूर्वोक्त स्नात्रकारो सहित चतुर्विध संघसमेत आ प्रकारे चैत्यवन्दना करे—

नमस्कार (कोइ पण चैत्यवंदन-स्तोत्रं), नमुत्थुणं०, अरिंहंत चैड्याणं०, १ नो० का० करी प्रतिष्ठाप्य देवनी स्तुति कहेवी ।
लोगस०, सव्वलोए०, द्वितीय स्तुति । पुक्खस्वरदीचङ्के०, सुअसस०, तृतीय स्तुति । सिद्धाणं बुद्धाणं०, श्रीसांतिनाथ आराधनार्थं०, कायोत्सर्गमां चतुर्विंशतिस्तव चिन्तववो. स्तुतिः—

१ आ गाथाओ असे ८ मा परिच्छेदने अंते कापी छे.

आशांतिः श्रुतशांतिः, प्रशान्तिःकोऽसौ शोऽन्तिशुपशान्तिम् ।
नयंतु सदा यस्य पदाः, सुशान्तिदाः सुषयन्ति जने ॥ १ ॥

ते पृथी श्रुतदेवतानो कायोत्सर्गं अने स्तुतिः—
वद वंदात न वाग्वादिनि! भगवति कः श्रुतसंस्वतिगमेच्छुः ।
रंगत्तरंगमतिवर-तरणिस्तुभ्य नम इतीह ॥ २ ॥

'शासनदेवतानो कायोत्सर्गं करीने स्तुतिः—
उपसर्गवल्यविलेयन-निरता'जिनशोसनानैकरताः ।
द्रुतमिह समीहितकृते, स्युः शासनदेवता भवताम् ॥ ३ ॥

भवनदेवतानो कायोत्सर्गं करो, स्तुतिः—
ज्ञानादिगुणयुताना, नित्य स्वाध्यायसमयमेरतानाम् ।
विदधातुं भवनदेवी, शिव सदा सर्वमाधुनाम् ॥ ४ ॥

क्षेत्रदेवतानो कायोत्सर्गं करो, स्तुतिः—
यस्याः क्षेत्र समश्रित्य, सार्धुभिः साध्यते क्रिया । सा क्षेत्रदेवता नित्य, भूयान्नः सुखदायिनी ॥ ५ ॥
अम्बदेवीनो काउत्सर्गं करो, स्तुतिः—

अम्बा बालाङ्किताङ्कासौ, सौख्यख्यातिं ददातु नः । माणिक्यरत्नालङ्कार-चित्रसिंहासनस्थिता ॥६॥

अच्छुप्तानो कारस्सग करनो, स्तुतिः—

चतुर्भुजा तडिङ्कर्णा, कमलाक्षी वरानना । भद्रं करोतु संघस्या-ऽच्छुप्ता तुरगवाहना ॥ ७ ॥

छेछो वैयावच्चगरोनो कायोत्सर्ग करवो, स्तुतिः—

संवेऽत्र ये गुरुणौघनिधे सुवैया-वृत्त्यादिकृत्यकरणैकनिबद्धकक्षाः ।

ते शान्तये सह भवन्तु सुराः सुरीभिः, सद्रदृष्टयो निखिलविघ्नविघातदक्षाः ॥८॥

नोकार गणी, वेधी, नमुत्थुणं० जावंति चेइआहं० स्तवन—

ओम्भिति नमो भगवओ, अरिहंतसिद्धायरियउवजझाय । वरसव्वसाहुसुणिसंग्र-धम्मतिथप्पवयणस्स ॥१॥

सप्पणव नमो तह, भगवईइ सुअदेवयाइ सुहयाए । सिवसंतिदेवयाए, सिवपवयणदेवयाणं च ॥२॥

इंदागणिजमनेरईय-वरुणवाउकुवेरईसाणा । बंभो नाशु त्ति दसणह-मवि अ सुदिसाण पालाणं ॥३॥

सोमयमवरुणवेसमण-वासवाणं तहेव पंचणहं । तह लोगपालयाणं, सराइगहाण य नवणहं ॥४॥

साहंतस्स समकंबं, मज्झमिणं चैव धम्मणुट्ठाणं । सिद्धिमविगंधं गच्छड, जिणाइनवकारओ धणिअं ॥५॥

‘ जयवीथराय ’ इत्यादि कही चैत्यवंदना समाप्त करवी.

बद्धपरिकरता—ते पछी आचार्ये पोतानामां सकलीकरण करुं, सकलीकरणनो मंत्र आ प्रमाणे छे—

ॐ नमो अरिहंताणं-हृदयं रक्ष रक्ष । ॐ नमो सिद्धाणं-ललाटं रक्ष रक्ष । ॐ नमो आयरियाण शिखां रक्ष रक्ष । ॐ नमो उवज्झायाण-कवचम् । ॐ नमो लोए सन्वसाट्टण-अखम् ।

उक्त प्रकारे ७ गार आत्मरक्षा करी, पढी—

“ ॐ नमो अरिहताण । ॐ नमो सिद्धाण । ॐ नमो आयरिआणं । ॐ नमो उवज्झायाणं । ॐ नमो लोए सन्वसाट्टणं । ॐ नमो आगासगामीणं । ॐ नमो चारणलद्धीण । ॐ हः क्ष. नमः । ॐ अशुचिः शुचिर्भवामि स्वाहा ।”

आ मनवडे पाच या सात गार आत्मानु शुचीकरण करतु, पोतानु मरुलीकरण तथा शुचीकरण कर्या वाद आचार्यं पूर्वोक्त सकलीकरण मंत्रयी स्नात्रकारेणुं पण मरुलीकरण करतुं, ते पढी “ ॐ ह्रीं ॐ वी सर्वोपद्रवं चिवस्य रक्ष रक्ष स्वाहा ” आ मनद्वारा ७ गार अभिमंत्रित करीने धूप तथा जल माये दिशाओमा गलिक्षेप करवो

अधिवासनानो उपक्रम—ए पढी श्रावकोए धूप जल सहित प्रतिष्ठाप्य प्रतिमा उपर नीचेनु पद्य भणीने कुसुमांजलि क्षेप करवो.

“ अभिनवसुगंधवासित-पुष्पोधमृता सुगन्धधूपपाढया ।

चिम्बोपरि निपतन्ती, सुखानि कुसुमाञ्जलिः कुरुताम् ॥ १ ॥

ते पढी आचार्यं प्रतिष्ठाप्य विंब सांसे करुं दृष्टि करी वे मध्यमा आगलीओ उंची करी तर्जनी मुद्रा देवी, श्रावके डांवा

हाथमां जल लेइ "स्त्री सौ" आस बोलतां प्रतिमा उपर आछोटबुं, अने पछी प्रतिमाने तिलक करवो, पुष्पादि चढाववां, मुद्गरमुद्रा देखाडवी अने अक्षतस्थाल गेट करवो.

ते वाद् आचार्य "ॐ ह्रीं ह्रीं" इत्यादि बलिमंत्र वडे वज्र १, गण्ड २, मुद्गर ३, मुद्राओनी साथे सातवार प्रतिमाने कवच करवो, जेथी प्रतिमानी दृष्टिदोषथी रक्षा थाय. एज मंत्र वडे सातवार दिग्वन्ध पण करवो.

ए पछी श्रावकोए उभा थइ जिनमुद्राए उभा रही- "ॐ नमो य सर्वशरीरावस्थिते महाभूते आगच्छ आगच्छ जलं गृह्ण गृह्ण स्वाहा" आ मंत्रे जलकलशादिकरुं अभिमंत्रण करबुं.

"ॐ नमो यः सर्वशरीरावस्थिते पृथु पृथु विपृथु विपृथु गन्धान् गृह्ण गृह्ण स्वाहा" आ मंत्रथी वास, चंदन, सर्वोपधिनुं अभिमंत्रण करबुं.

"ॐ नमो यः सर्वतो मे मेदिनी पुष्पवती पुष्पं गृह्ण गृह्ण स्वाहा । आ मंत्रे पुष्पो अभिमंत्रित कर्वां.

"ॐ नमो यः सर्वतो बलिं देह देह महाभूते तेजोधिपते धू धू धूपं गृह्ण गृह्ण स्वाहा ।" आ मंत्र वडे धूपने अभिमन्त्रित करवो, अने श्रावकोए उखेववो, ते पछी ते वास-चंदन-पुष्पो थोडां थोडां जलमां नांखवां, श्रावकोए पंचतलनी पोटी प्रतिमाना जमणा हाथनी आंगलीए बांधवी.

अहार अभिषेको-तदनन्तर पंचपरमेष्ठिमंगलपूर्वक तैयार करी राखेल स्नात्रपुडिओमांथी अनुक्रमे एक एक औषध पुडी जलमां नांखवी, मंत्र-मुद्रापूर्वक अधिवासित ते तीर्थजले ४-४ कलशो भरी गीत-वाजित्रनाद पूर्वक स्नात्रकारोए १८ स्नात्रो

करा, मंत्रं स्नातोमा शान्ते आतरे मन्त्रं पुष्पारोपण करं, ललाटमां तिलक कातुं वामक्षेप चढावमो भ्रमे धूप उखेववो.

(१) प्रथम ४ सुवर्णं कन्धोमा जल भरीने अथवा जलमा सुवर्णं चूर्णं नासीने ते वडे स्नात्र ते सुवर्णं स्नात्र—
सुपचित्तीर्थनीरेण, सयुत गन्धपुष्पसंमिश्रम् । पततु जल विम्बोपरि, सहिरण्य मन्त्रपरिप्लुतम् ॥१॥

(२) पीतुं पचरत्नजलस्नात्र—

नानारत्नौषधुत, सुगन्धपुष्पाधिवासित नीरम् । पतताद्विचित्रवर्णं, मन्त्राढ्य स्थापनाविम्बे ॥२॥

(३) क्लीपकपायस्नात्र—

प्रक्षान्धतयोद्गन्धर-स्मिरोपछल्ल्यादिकृत्कसंमिश्रम् । विम्बे कपायनीरं, पतनादधिवासित जैने ॥३॥

(४) नीपुं नृत्तिकास्नात्र—

परंतमरोनगीसग-मादिनृद्धि मन्त्रपूताभिः । उद्धृत्यं जिनविम्बं, स्नपयाम्यधिवासनासमये ॥४॥

(५) पाचम् गन्ध (पचगन्ध) दर्भजलस्नात्र—

जिनविम्बोपरि निपतद्, घृतदधिदुग्धादिछगणप्रचवणेः । दर्भौदकसंमिश्रेः, स्नपयामि जिनेश्वरप्रतिमाः ॥५॥

(६) उडु महदेव्यादिमदौषधिस्नात्र—

सर्गदेव्यादिसदौषधि-चर्गोर्बर्तितस्य विम्बस्य । संमिश्र विम्बोपरि, पतज्जल हरतु कुरितानि ॥६॥

(७) रातुं मूलिकास्नात्र—

सुपवित्रमूलिकावर्ग-मर्दिततदुदकस्य शुभधारा । विम्बेऽधिवाससमये, यच्छतु सौख्यानि निपतन्ती ॥७॥

(८) आठसुं प्रथमाष्टवर्गस्नात्र—

नानकुष्ठाद्यौषधि-संसृष्टे तथुत पतन्नीरम् । विम्बे कृतसन्मन्त्रं, कर्मौघं हरतु भव्यानाम् ॥८॥

(९) नवसुं द्वितीयाष्टवर्गस्नात्र—

मेदाद्यौषधिमैदो-ऽपरोऽष्टवर्गः स्वमन्त्रपरिपूतः । जिनविम्बोपरि निपतन्, सिद्धिं विदधातु भव्यजने ॥९॥

आ प्रमाणे नव स्नात्रो थया पछी आचार्य उठीने 'गृह-शुक्ताशुक्ति-परमेष्टि.' आ ३ मुद्राओमांथी कोह पण एक मुद्रा वडे प्रतिष्ठाप्य देवतासुं आह्वान करे, प्रतिमानी सामे उमा स्त्री उक्त त्रण मुद्राओ पैकीनी कोह एक मुद्रा दर्शन पूर्वक—

“ ॐ नमोऽहंते परमेश्वराय चतुर्मुखपरमेष्ठिने त्रैलोक्यगताय अष्टदिवकुम्भारीपरिपूजिताय देवाधिदेवाय दिव्यशरीराय त्रैलोक्यमहिताय आगच्छ आगच्छ स्वाहा ।” आग जिनाह्वान करसुं, पछी श्रावके १० दिक्पालोसुं आह्वान आ प्रमाणे करसुं,

ॐ इन्द्राय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह जिनेन्द्रस्थाने आगच्छ आगच्छ स्वाहा ॥१॥

ॐ अग्नये सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह जिनेन्द्रस्थाने आगच्छ आगच्छ स्वाहा ॥२॥

ॐ यमाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह जिनेन्द्रस्थाने आगच्छ आगच्छ स्वाहा ॥३॥

ॐ निर्ऋतये सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह जिनेन्द्रस्थाने आगच्छ आगच्छ स्वाहा ॥४॥

ॐ वरुणाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह जिनेन्द्रस्थाने आगच्छ आगच्छ स्वाहा ॥६॥
 ॐ वायवे सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह जिनेन्द्रस्थाने आगच्छ आगच्छ स्वाहा ॥६॥
 ॐ कुबेराय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह जिनेन्द्रस्थाने आगच्छ आगच्छ स्वाहा ॥७॥
 ॐ ईशानाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह जिनेन्द्रस्थाने आगच्छ आगच्छ स्वाहा ॥८॥
 ॐ नागाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह जिनेन्द्रस्थाने आगच्छ आगच्छ स्वाहा ॥९॥
 ॐ ब्रह्मणे सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह जिनेन्द्रस्थाने आगच्छ आगच्छ स्वाहा ॥१०॥

उपर प्रमाणे प्रत्येक दिक्पालनु आह्वान करी श्रावकोए ते ते दिशामा पुष्पाजलि चढाववी.

(१०) दशसुं सर्वोपधिस्नात्र—

सकलौपधिसयुक्त्या, सुगन्धया चर्चित सुगतिहेतोः, स्नपयामि जैनविभ्यं, मन्त्रिततत्रीरनिवहेन ॥१०॥

अहियां आचार्ये दृष्टिदोषनिरणार्थं पोताना जमणा हाथे प्रतिष्ठाप्य विभ्वनो स्र्गं करी नीचेना वे मंत्रोमांथी कोई पण एक मंत्रनो प्रतिष्ठाप्य विभ्वमां न्यास करवो

ते वे मत्रो—“ ॐ इहागच्छन्तु जिनाः सिद्धा भगवन्तः स्वसमयेनेहानुग्रहाय भव्यानां भः स्वाहा ” ए एक

अने “ ॐ क्ष्मा क्ष्वी ह्री क्षी भः स्वाहा । ” ए बीजो.

आ वलते श्रावकोए दृष्टिदोषविघातार्थं “ ॐ क्ष्मा क्षी ह्री स्वाहा । ”, आ मंत्रे ७ वार मत्रीने लोहअसृष्ट श्वेत सरसवो

नी रक्षा पोटली प्रतिमाना हाथे नांघवी अने ललाटे चंदननो तिलक करवो. पछी आचार्ये जिन सामे हाथ जोडीने आ प्रमाणे विज्ञप्ति करवी—

“ स्वागता जिनाः सिद्धाः प्रज्ञाददाः सन्तु प्रज्ञादं धिया कुर्वन्तु अनुग्रहपरा भवन्तु भन्यानां स्वागतम-
नुस्वागतम् । ”

ते पछी श्रावके सुवर्णपात्रमां राखेला सरसव १, दहि २, अक्षत ३, घृत ४, दर्भ ५, ए रूप अर्थ “ ॐ भः अर्थे प्रती-
च्छन्तु पूजां गृह्णन्तु गृह्णन्तु जिनेन्द्राः स्वाहा । ” आ मंत्रे अभिमंत्रित करीने निवेदन करवो.
ते पछी आचार्य उभा श्रु इन्द्र १, अग्नि २, यम ३, निर्ऋति ४, वरुण ५, वायु ६, कुबेर ७, ईशान ८, नाग ९, ब्रह्मा-
१०, ए नामक दश दिक्पालोतुं आह्वान करता ते ते दिशामां आ प्रमाणे वासक्षेप करे.

“ ॐ इन्द्राय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह जिनेन्द्रस्थाने आगच्छ आगच्छ स्वाहा । ” १
एज रीते अग्नि आदि प्रत्येक दिक्पालनी दिशासंमुख आह्वान करीने आचार्ये वासक्षेप करवो अने स्नात्रकारोए चंदन
अक्षत पुण्यादि नाखवां, धूप करवा, दीवो करवो, वळी श्रावको पूर्वाक्त प्रकारनो अर्थे एक पात्रमां लेइ “ दिक्पाला अर्थे प्र-
तीच्छन्तु ” एम उच्चारण पूर्वक अर्थनिवेदन करे.

(११) अग्यासुं पुष्पजलस्नात्र—

अधिवासितं सुमन्त्रैः, सुमनःकिजलकराजितं तोयम् । तीर्थजलदिसुपुक्तं, कलशोन्मुक्तं पततु बिम्बे ॥११॥

- (१२) वासु गन्धस्नात्र—
गन्धाङ्गस्नानिकया सन्ष्ट तदुदकस्य धाराभिः । स्नपयामि जैननिम्बं, कर्मोद्योच्छित्तये शिवदम् ॥१२॥
- (१३) तेषु वासस्नात्र—(धवल वणं गघ ते वास)
हृद्यैरात्हादकरै, स्पृहणीयैर्मन्त्रसंस्कृतैर्जैनम् । स्नपयामि सुगतिहेतोर्विम्व ह्यधिवासित वासैः ॥१३॥
- (१४) चौदशु चदनस्नात्र—
शीतलसरससुगन्धि-र्मनोमतश्चन्दनद्रुमसमुत्थः । चन्दन-रत्न- सजलो, मन्त्रयुतः पततु जिनविम्बे ॥१४॥
- (१५) पदसु कुकुमस्नात्र—
कश्मीरजसुचिलिस, विम्व तन्नीरधारयाऽभिनवम् । मन्मन्त्रयुक्तया शुचि, जैनं स्नपयामि सिद्धार्थम् ॥१५॥
- जा पष्ठी प्रतिमात्रोने आरीसो देवाढवो.
- (१६) सोलसु तीर्थजल स्नात्र—
जलधिनदीहृदकुण्डेषु, यानि तीर्थोदकानि शुद्धानि । तैर्मन्त्रसंस्कृतैरिह, विम्व स्नपयामि सिद्धार्थम् ॥१६॥
- (१७) मत्सु कर्पूरस्नात्र--
शशिकरतुपारधवला, उज्ज्वलगन्धा सुतीर्थजलमिश्रा । कर्पूरोदकधारा, सुमन्त्रपूता पततु विम्बे ॥१७॥
- (१८) अढारसुं विम्बोपरि पुष्पांजलिक्षेपस्नात्र--

नाना सुगन्धिपुष्पौध-रञ्जिता चञ्चरीककृतनादा । धूपामोदविमिश्रा,
आ प्रसाणे अढार स्नात्रो करीने वृत १, दहि २, दूध ३, खांड ४, सर्षपधि ५, रप पंचामृतं १ स्नात्र करुं, नमोर्ज्वर
सिद्धाचार्योपाध्याय० कहीने—

“ वृतमायुर्वृद्धिकरं, परमं श्रीजैनगात्रसंपर्कात् । तद् भगवतोऽभिषेके, पालु वृतं वृतससुद्रस्य ॥१८॥
दुग्धं दुग्धाम्भोधे-क्याहृतं यत्पुरा सुरचरेन्द्रैः । तद् बलपुष्टिनिमित्तं, भवतु सतां भगवदभिषेकात् ॥२॥

दधिमङ्गलाय सततं, जिनाभिषेकोपयोगतोऽप्यधिकम् । भवतु भवतां शिवाध्वनि, दधिजलधेराहृतं त्रिदशैः ॥३॥
इक्षुरसोदाहुपहत, इक्षुरसः सुरचरेस्त्वदभिषेके । भवदवसदवशुभविनां, जनयतु नित्यं सदानन्दम् ॥४॥

सर्षोपधीषु निवसत्यमृतसिद्धं मत्स्यमहदभिषेकात् । तत्सर्वौषधिसहितं, पञ्चामृतमस्तु वः सिद्धये ॥५॥
ए पत्नी कर्पूर आदि सुगंधि चूर्णं करी प्रतिमाने यसा चीकाश दूर करी गर्भजले पखाली, अने १०८ वार शुद्धजले
कलश मरी स्नात्र करुं, ते वाद अंग लुंछी सुगंधी विलेपन करुं, पूजा करवी, मेवो फलादि ढोवां, १०८ स्नात्र पर्यन्त—

“ चक्रे देवेन्द्रराजैः सुरगिरिशिखरे योऽभिषेकः पयोभि-र्नृत्यन्तीभिः सुरीर्गिलितपदगमं वर्यनादैः सुदीप्तैः ।
कर्तुं तस्यानुकारं शिवसुराजजनकं मन्त्रप्रतैः सुकुम्भै-र्विम्बं जैनं प्रतिष्ठाविधिवचनपरः स्नापयाम्यत्र काले ॥१॥

पंच शब्द वादित्रपूर्वक ए काव्य उच स्वरे भगवुं ।
पत्नी स्मरिंते अथवा अधिवासना मंत्रे अभिमंत्रित चन्दनवडे डावा हाथे पकडला जमणा हाथी विभचना सर्वांगे विलेपन

॥१२७॥

करतु, पुष्पपूजा करवी, धूप उखेवचो, अने वामक्षेप करवो अने आचार्ये सुरभि १, पद्म २, जजलि ३, आश्रण मुद्राओ देवाडवी.

ए पळी श्रावकं सर्वं प्रतिमाओने प्रियंगुकपूर गौरीचनाटि द्रव्यात्मक हस्तलेप करतो अने “ ॐ नमो खीरासचलद्वीण । ॐ नमो मह्नुआसचलद्वीण । ॐ नमो सभित्तसोआण । ॐ नमो पयाणुसरीणं । ॐ नमो कुड्डुद्वीण । जमिम चिज्ज पडजामि सामे चिज्जा पसिज्जउ, ॐ अवतर अवतर सोमे सोमे कुरु कुरु वग्गु वग्गु निवग्गु निवग्गु सुम्मिणे सोमणसे मह्नु मह्नुरे ॐ कविल ॐ कः क्षः स्वाहा” अथा “ ॐ नमः शान्तये ह्ये क्षू ह्ये सः”

आ वे अधिवासना मंत्रो पैकीना कोई पण एक मंत्रे अभिमंत्रित करीने प्रतिमाओने ऋद्धि इद्धि सहित मीढलना करुण वायवा अने नीजा अधिवासना मंत्रे करीने मुक्तासुम्तिमुद्रा अथवा चक्रमुद्राए प्रतिमाओना मस्तरु १, खाधा २, ढांचण २, ए ५ अंगोनो ७ चार स्पशं करतो, निरतर धूप उखेवचो.

आ खते परमेश्चिद्राए करी श्राचार्ये जिनतुं आह्वान करे, मंत्र नीचे प्रमाणे छे—

“ ॐ नमोऽर्हते परमेन्वराय चतुर्भुजाय परमेष्ठीने त्रैलोक्यगताय अष्टदिक्कुमारी परिपूजिताय देवाधिदेवाय दिव्यशरीराय त्रैलोक्यमहिताय आगच्छ आगच्छ म्वाहा ।”

ते पळी आसन उपर वसी आचार्ये पोते आसनमुद्राए वाम आदि द्रव्यो वडे नन्दाभंतुं पूजन करे, म्नात्रकारो पुष्पादि चढावे, प्रचुर अगभोग मामग्री चढावे, नन्दाभंतु पूजन मध्य भागयी चालु करतुं, एना लेसन-पूजननो तम अने विधि पूर्व लख्या प्रमाणे जाणनी, नन्दावर्त पूजीने दशीथो सहित अने अन्यगिन एना मंत्रे तेने दारुतु, तेना उपर १ नालिएर स्थापन

કરવું, કરવું સપ્થાન્ય ક્ષેપવું, પ્રતિષ્ઠા ચલ હોય તો તે જાણાવવા માટે નંદાવર્ત ઉપર સંકલ્પ કરી પ્રતિષ્ઠા ધિવને સ્થાપન કરવું. ઉપર રક્તસૂત્ર વીંટવું, બીજોરાદિક વિચિત્ર ફલો અને નૈવેદ્ય હોવું. આગે વાટ ૧, ક્ષીર ૨, કરંચો ૩, કેસરિ (સીચડી) ૪, સિદ્ધ-પિંડી ૫, ફૂર ૬, પૂઅડા ૭ એ સાત ચલિ શરાચો હોવાં. રક્તસૂત્ર અથવા ગેવાસૂત્ર વાંધેલ ૪ ન્હાના સુવર્ણના કલશિયા અથવા ચંદનવું વલિપન કરી સુવર્ણના વર્ક ચોડેલા ૪ કલશિયા (નંદાવર્તસ્થિત) પ્રતિમાની ચારે વાજુ સ્થાપવા, ઘી-ગોલના ૪ મંગલદીવા સ્થાપવા, નંદાવર્તના પાટલાની ચારે દિશાઓમાં કોડી ૧, સુવર્ણ ૨, જલ ૩, ધાન્ય ૪, યુક્ત ચ્યાર ધ્યેતવારકો (ન્હાના વડુલા) સ્થાપવા, તેમના ગલામાં સુકુમાલિઓ (હુંહાલી)નાં કાંકળ પહેરાવવાં તે ચારે ઉપર ૪ જવારાનાં શરાવલાં મૂકવાં અને તે ધ્યેત વારકોને ગેવાસૂત્ર વીંટવું, તે પછી શક્રસ્તવે કરીને ચૈત્યવન્દના કરવી.

હવે અધિવાસના લગ્નનો સમય નજીક આવતાં શ્રાવકે (નંદાવર્તપૂજન પૂર્વે પ્રતિમાઓને કદ્ધિવૃદ્ધિ સહિત મીઠલ ન વાંધ્યાં હોય તો) વાંધીને પુષ્પ ધૂપ ચંદન વાસે વાચિત ઇવા દશિયાવડ અર્ચક વલ્લે કરીને સર્વ વિવોતું મુલાચ્છાદન કરવું ઇટલે માઈસાડી (કુંડુંથી લાલવલ્લ) ઓઢાડી પ્રતિમાઓનાં મુલ ઢાંકવાં, તે વલ્લ ઉપર ચંદનના છાંટા નાંવવા, પુષ્પો વેરવાં, વામક્ષેપ કરવો.

(લગ્ન અને નવમાંગનો સમય આવતાં) આચાર્યે ૩ વાર સ્વરિમંત્રથી અને ઘીજા સાધુણ “ ૐ નમો સ્ત્રીરાસવલદ્વીળં । ૐ નમો મહુઆસવલદ્વીળં ! ” ઇત્યાદિ પૂર્વોક્તિ મંત્રથી અથવા તો “ ૐ નમઃ શાન્તયે ૐ ક્ષ્ણે ૐ સઃ ” આ અધિ-વાસના મંત્રથી વિધ્વોની અધિવાસના કરવી, વાદમાં શ્રાવકે ઐં જલિઓ વડે ગાલ ૧, જવ ૨, ગોહું ૩, મગ ૪, ચાલ ૫, ચળા ૬, ચોલા ૭, એ સાત ધાન્યોને પુષ્પવાસે મિશ્રિત કરી તે વડે પ્રતિમાઓને સ્નાન કરાવવું, પુષ્પારોપકરવો અને ધૂપ ઉલ્લેવવો,

ए गढ अविधवा चार अथवा अधिक स्त्रीओए पौखणा करावा, ते स्त्रियाए यथाशक्ति सुवर्णाङ्किकु दान करुं, आ वलते फरीने प्रचुर मोदकादि नैवेद्य द्योतु, ३६० कृपाणहोनी पुडीओ दोवी अने ते पछी श्रावके घृतनी आरती मगलदीपो उतारमां अने पछो चैत्यन्दना करी, चैत्यन्दनानी त्रिधि नीचे प्रमाणे छे—

(मूलनायकनु चैत्यन्दन बोली नमुणुणं कही मूलनायकनी स्तुति अने पडीनी वे स्तुतिओ एकदर ३ स्तुतिओ कया पछी) सिद्धाणं त्रुद्धाण कही अधिवासना देवीनो कायोत्सर्गं करवो, कायोत्सर्गमा १ लोगस गणनो, उपर अधिवासना देवीनी आ स्तुति कहेवी—

पातालमन्तरिक्ष, भवन वा या समाश्रिता नित्यम् । माऽत्राऽवतरतु जैर्ना, प्रतिमामधिवासनादेवी ॥१॥

ए पछी श्रुतदेवता २, शान्तिदेवता ३, अगा ४, क्षेत्रदेवता ५, शासनदेवता ६, सर्ववैयाहृत्यकरो ७, अनुक्रमे एओना कायोत्सर्गं करमा अने स्तुतिओ कहेवी, शान्तिदेवतानी स्तुति आ प्रमाणे छे—

श्रीचतुर्विधसघस्य, शाम्नोन्नतिकारिणः । शिवशान्तिकरी भृशच्छीमती शान्तिदेवता ॥१॥

पछी आचार्ये वेमीने फरी नीचे प्रमाणे धारणा करी—

“ स्वागता जिनाः सिद्धाः प्रसाददाः सन्तु, प्रसाद धिया कुर्वन्तु, अनुग्रहपर भवन्तु, भव्यानां स्वागतमनुस्वागतम् ”

अथ प्रतिष्ठा—अधिवासना रात्रि ए अने प्रतिष्ठा प्रायः दिवसे श्राय. जो लक्ष श्रेष्ठ आवतुं होय तो अधिवासना पछीना कोइ लयसां अने तेना अंभावे अधिवासना लयना ज अन्य नवमांशमां प्रतिष्ठा यइ गके छे.

प्रतिष्ठानो समय निकट आवतां प्रथम शांतिवल्लिखेप कर्या पछी चत्सवंदन करवुं, मिद्राणं बुद्धाणं कही प्रतिष्ठादेवीनो कायोत्सर्ग करवो, कायोत्सर्गं लोगरा. निस्तवो अने पारीने नीचेनी स्तुति कहेवी.

“यदधिष्ठिताः प्रतिष्ठताः, सर्वाः सर्वास्पदेषु नन्दन्ति। जिनचिस्वं सा विशतु, देवता सुप्रतिष्ठमिदम् ॥१॥

ए पछी शासनदेवता २, क्षेत्रदेवता ३, समस्तवैयावृत्यकरोनो ४, ए कायोत्सर्ग करवा अने एमनी स्तुतिओ कहेवी, आव-
कोए धूप उखेवीने प्रतिमाओ उपर ठकिल बल्ल दूर करवुं, लग्न समय नजीक आवतां कुंयक करी विने वर्णन्यास करवो, ते आ
प्रमाणे ‘हौ’ ललाटे, ‘श्री’ वे नेत्रो पर, ‘ह्री’ हृदय उपर, ‘रे’ सर्व संधिस्थानोमां, ‘ऋ’ आसन उपर.

लग्नसमय आवतां प्रथम घृतपात्र प्रतिमानी आगल सूकी कालो सुरमो १, घृत २, सशु ३, साकर ४, आ चार पदार्थोथी तैयार करेल अंजन रूपानी वाटकीमां भरी राखेल होय तेमांथी सोनानी सली भरी ते वडे जिनचिस्वोतुं नेत्रोन्मीलन करवुं अने मस्तके अभिमंत्रित वासक्षेप करवो. प्रतिमाना जमणा काने चंदन चर्चवुं, आचार्य पोताओ जसणो हाथ प्रतिमाना जमणा काने अडकाडी सुरिमंत्र अने अन्य साधु प्रतिष्ठा मंत्रनो त्रण, पांच वा सात वार न्यास करे, आ वे मंत्रो पैकीना एक मंत्रे आचार्य चक्रमुद्रा करीने प्रतिमानो सर्वांग स्पर्श करे, प्रतिष्ठामंत्र आ छे—

“ ॐ श्रीं वीरे जयवीरे मेणवीरे महावीरे जये विजये जयन्ते अपराजिए ॐ ह्रीं स्वाहा । ”

नामान्य साधुश्रीने प्रतिष्ठानो एज मत्र ले पछी प्रतिमानो आगल दहिपात्र मरुतु, आरीसो देग्याडवो अने आचार्य दृष्टि-
रथार्थ, सोभाग्यार्थ अने स्वैर्यार्थ साभाग्य, सुरभि २, प्रवचन ३, अजलि ४, गरुड ५, ए पाच मुद्राओ देग्याडवी अने साये
“ ॐ अवतर अवतर सोमे सोमे कुरु कुरु वग्गु निवग्गु सुमिणे सोमणसे महु महरं ॐ
कचिल ॐ कः क्षः स्वाहा ” इत्यादि मंत्रोनो न्याम करुओ, अने करीधी खीओ पासे पोंवणा करानवा

स्थिर गतिमानं प्रथमथी ज डानी तरफ नीचे चदन तादुल (अक्षत)नो स्वस्तिरु नथा कुभकारना चक्रनी माटी सहित
पचरत्नादि स्थापन करेल होइ अंजनप्रतिष्ठा पछी “ ॐ स्थावरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा ” आ मंत्रे तेनु स्थिरीकरण करवु, ए ज
प्रमाणे चल प्रतिमाना नामागे नीचे पहलेथीज सम्लो डाम अने वालुका स्यापेल होइ आ रत्नने ‘ ॐ जये श्री ह्रीं सुमद्रे
नमः । ’ आ मंत्रनो न्यास करवो. पछी मंत्र प्रतिमाश्रीनी आगे ‘ पद्ममुद्रा ’ गडे आ प्रमाणे निक्षिप्ति करवी-
“ इदं रत्नमयमासनमलकुर्वन्तु, इदोपविष्टा भव्यानवलोकयन्तु, दृष्टदृष्टया जिनाः स्वाहा । ”

पछी नीचे लसेला मंत्रोन्चारपूर्वक श्रावकोए नवेसथी पूजा करवी- ‘ ॐ हृम्ये गन्वाद् प्रतीच्छन्तु स्वाहा ’ आमत्र
नाली गन्धपूजा करनी, ‘ ॐ हृम्ये पुष्पाणि गृह्णन्तु स्वाहा ’ आ मंत्र पुण पूजा करनी. “ ॐ हृम्ये धूप भजन्तु स्वाहा ”
आ मंत्रे धूप-पूजा करनी “ ॐ हृम्ये सकलसत्त्वलाकमवलोकय भगवन्नवलोकय स्वाहा ’ आमत्रगोलीने प्रतिमाजी
उपर पुष्पाञ्जलिक्षेप करुओ, पछी वस्त्र अलकार आदिथी अने पुष्पोथी सपूर्ण पूजा करनी काकरिआ, सुदाली, ग्रफुल नवो नलि

होवो अने लूण-पाणीनी विधि करवा पूर्वक आरती तथा मंगलदीवो उतारवां अने अन्ते “ॐ ह्र्मये भूतचलिं शुक्लन्तु स्वाहा” आ मंत्रथी भूतचलि नांवावो.

पह्णो संघनी सांथे आचार्यं चैत्यवन्दना कश्ची, सिद्धाणं बुद्धाणं० सुधी कहीने पछी प्रतिष्ठादेवीनो कायोत्सर्गं करवो, कायोत्सर्गमां लोगसस चिन्तववो अने पारी नीचेनी स्तुति कहेवी—

यदधिष्ठिताः प्रतिष्ठाः, सर्वोः सर्वास्पदेषु नन्दन्ति । जिनविम्बं सा विद्यतु, देवता सुप्रतिष्ठमिदम् ॥१॥

ए पछी अनुक्रमे श्रुतदेवता २, शान्तिदेवता २, क्षेत्रदेवता ४, शासनदेवता ५, समस्तवैयाद्यत्यक्रोना कायोत्सर्गो करवा, अने एमनी स्तुतिओ कहेवी, छेछी स्तुति कथा पछी नोकार्पूर्वक नमुरथुणं० कही शान्तिस्तव (अजितशान्तिस्तव) भणवो अने उपर जयवीराराय० इत्यादि बोलवुं.

ते वाद अभिमंत्रित अक्षतोनी अंजलिओ भरीने मंगलगाथापाठपूर्वक चतुर्विध संघे अने आचार्यं अखंड अक्षतांजलिसेप करवो, नमोऽर्हत्सिद्धाचार्यो० इत्यादि बोलीने नीचेनी मंगलगाथाओ भणवी—

जह सिद्धाण पइहा, तिलोअचूडामणिम्मि सिद्धिपप । आचंदसूरिअं तह, होउ इमा सुप्पइइत्ति ॥१॥

जह सगगसस पइहा, समत्थलोयसस मज्झयारंमि । आचंदसूरिअं तह, होउ इमा सुप्पइइत्ति ॥२॥

जह मेरुसस पइहा, दीवससुहाण मज्झयारंमि । आचंदसूरिअं तह, होउ इमा सुप्पइइत्ति ॥३॥

जह जंबुरस पइहा, समगगदीवाण मज्झयारंमि । आचंदसूरिअं तह, होउ इमा सुप्पइइत्ति ॥४॥

जह लवणस्स पइड्ढा, समत्थउदहीण मज्झयारंमि । आचदसुरिअं तह, होउ इमा सुप्पड्डुत्ति ॥५॥
 धम्माधम्मागासत्थि-कायमडयस्स सव्वलोगास । जह सामया पड्डा, एसाचि अ होउ सुपड्डा ॥६॥
 पचण्ह वि सुपड्डा, परमिट्ठीण जहा सुग मणिआ-निगया अणाडनिहणा, तह एसा होउ सुपड्डा ॥७॥
 उधत्ताजलि अने श्रामकोए पुष्पाजलि नागया पत्ती, चैत्यवदना करी अने ते पत्ती आचार्ये प्रवचन मुद्राए धर्मेदेशना करी इति प्रतिष्ठानिधि ॥

अथ यक्षयक्षिणी-प्रतिष्ठा—

“ ॐ क्षूं नमः ” आ मंत्र ३-५-७ चार भणीने अत्रिका क्षेत्रपालादि सर्व देवी देवोनी अधिवासना करवी
 “ ॐ क्षी क्षूं नमो वीराय स्वाहा ” आ देवोनी प्रतिष्ठानो मंत्र छे, आ मंत्र बोलीने ३ चार वासक्षेप करी मोड पण

देवनी प्रतिष्ठा करवी

“ ॐ ह्रीं क्ष्मी स्वाहा ” आ मंत्र देवीश्रीनी प्रतिष्ठानो छे, आ मंत्र भणीने कोई पण देवोने ३ नाग वासक्षेप करी तेनी प्रतिष्ठा करवी

उपर प्रमाणे यन्-यत्रिणिश्रीनी मामान्य प्रतिष्ठा करी ते प्रत्येकनी त्रिशेण प्रतिष्ठा नीचिना क्रमयी करनी—

१ ॐ ह्रीं गोमुखयक्षः अवतर ० तिष्ठ २ स्वाहा । ॐ ह्रीं चक्रेश्वरि ! अवतर ० तिष्ठ २ स्वाहा ।

० ॐ ह्रीं महायक्ष ! अवतर ० तिष्ठ २ स्वाहा । ॐ ह्रीं अजिते ! अवतर ० तिष्ठ २ म्वाहा ।

ॐ श्रीं दुरितारिदेवि ! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा ।
 ॐ " कालीदेवि ! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा ।
 ॐ " महाकालीदेवी ! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा ।
 ॐ " अच्युते देवि ! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा ।
 ॐ " शान्ता देवि ! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा ।
 ॐ " इवालादेवि ! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा ।
 ॐ " सुतारे देवि ! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा ।
 ॐ " अशोकादेवि ! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा ।
 ॐ " श्रीवत्सादेवि ! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा ।
 ॐ " प्रचण्डादेवि ! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा ।
 ॐ " विजयादेवि ! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा ।
 ॐ " अंकुशादेवि ! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा ।
 ॐ " कंदर्पादेवि ! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा ।
 ॐ " निर्वाणीदेवि ! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा ।

ॐ श्रीं त्रिसुखयक्ष ! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा ।
 ॐ " ईश्वरयक्ष ! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा ।
 ॐ " तुम्बक्यक्ष ! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा ।
 ॐ " कुसुमयक्ष ! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा ।
 ॐ " मातङ्गयक्ष ! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा ।
 ॐ " विजययक्ष ! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा ।
 ॐ " अजितयक्ष ! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा ।
 ॐ " ब्रह्मयक्ष ! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा ।
 ॐ " मनुजेश्वरयक्ष ! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा ।
 ॐ " कुमारयक्ष ! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा ।
 ॐ " पण्मुखयक्ष ! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा ।
 ॐ " पातालयक्ष ! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा ।
 ॐ " किन्नरयक्ष ! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा ।
 ॐ " गरुडयक्ष ! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा ।

१७ ॐ श्री गन्धर्वयक्ष ! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा ।
 १८ ॐ " यक्षेन्द्र ! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा ।
 १९ ॐ " कुबेरयक्ष ! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा ।
 २० ॐ " वरुणयक्ष ! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा ।
 २१ ॐ " मृकृट्टियक्ष ! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा ।
 २२ ॐ " गोमेधयक्ष ! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा ।
 २३ ॐ " पार्श्वयक्ष ! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा ।
 २४ ॐ " मातंगयक्ष ! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा ।

प्रत्येक यक्ष यक्षिणीनी अधिवासना-प्रतिष्ठा करीने सौभाग्य मुद्राए तेमनामा नीचे लखेल सौभाग्यमंत्रनो त्रण त्रण वार न्यास करलो " ॐ जगे श्री हूँ सुभद्रे हूँ स्वाहा " यत्र यक्षिणी क्षेत्रपाल माणिमद्रादि दरेक देव देवीने माटे उपर लखेल अधिवासना प्रतिष्ठा थने सौभाग्य मंत्र जाणया.

ॐ श्री अच्युतादेवि ! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा ।
 ॐ " धारणीदेवि ! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा ।
 ॐ " वैरोढ्यादेवि ! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा ।
 ॐ " वरदत्तादेवि ! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा ।
 ॐ " गन्धारीदेवि ! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा ।
 ॐ " अम्बादेवि ! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा ।
 ॐ " पद्मावतीदेवि ! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा ।
 ॐ " सिद्धायिकादेवि ! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा ।

नवीन प्रतिष्ठित चिब देवगृहे स्थापन विधि—

जो ते ज दिवसे प्रतिमा चैत्यमां प्रतिष्ठित करवी होय तो ते पळी नीचेनी विधि करवी—

जे स्थानमां प्रतिमा स्थापन करवी होय त्यां कुंभारना चाकनी माटी अने डाम स्थापन करवी, उपर चन्दन केसरनो स्वस्तिक करवी अने ते उपर ३ आसन यंत्रो पैकींचुं कोइ पण यंत्र मूलनायकना आसने स्थापन करवुं, अथना लखवुं, ते पळी सर्वे दिशाओमां बलिवाकुला उछालवा.

मूलनायक स्थापन करवावुं आसन-स्थान (गादी) प्रथमथी ज द्वाग्ना चोसठिया ५५ मा भागे विवनी दृष्टि आवे ते प्रमाणे निश्चित करात्रीने गाववुं, मुहूर्तनो समय नजीक आवतां—

“ ॐ कर्म निजपुंष्ट्र जिनचिम्भं धारय धारय स्वाहा । ”

आ मंत्रथी ७ वार आसन-स्थान अधिमंत्रवुं अने मुहूर्तना समयमां त्यां प्रतिमा स्थापन करीने—

“ ॐ स्थावरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा ” ।

आ मंत्रनो प्रतिमा उपर ७ वार न्यास करीने प्रतिष्ठा-गुरुए प्रतिमा उपर वासश्लेष करवी, स्नात्रकार आपकं चन्दन केसरथी पूजा करवी, प्रप उखेववो, मुग्ध पदार्थो चढावतां, मंगलदीवो करवी.

॥ संक्षिप्त प्रतिष्ठा विधि ॥

पूर्वोक्त प्रकारे अखण्डित अगोपागनालो सदाचारी श्रावक सुगन्धि पचामृतरुढे प्रतिष्ठाप्य प्रतिमाने स्नान करणी, लग्न सम-
यमा रूपानी वाटकीमा राखेल घृतमधुमां कालवेल काला सुरमामा सोनानी शली भरीने त्रण तोरार गणी प्रतिमाने अजन करी
नेत्रोन्मीलन करे.

नादमा चन्दन तैसर, फल नैवेद्यादि वडे संपूर्ण पूजा करे

अग अग्रपूजा कर्या पछी भावपूजारूप चैत्यवदन करे. पछी संघने पहेरामणी, प्रभावनादि दान करे, प्रतिष्ठा पछी ३।८।१०
दिनस पर्यन्त विशेष उत्तम पूजा करवी.

॥ इति संक्षिप्त प्रतिष्ठा विधि ॥

卐 卐 卐

आरति अने मंगलदीवो अरिहन्त भगवन्तने आगे चेताववो, पासे अग्निपात्र लवणना न्दाना गांगडा पुष्प अने नालवानो जलनो कलशियो पण पासे तैयार राखवुं के जेमां लवण अने जल नाखवानुं छे,

पुष्प चन्दनादिके पूजां. पछी—
उवणेउ मंगलं वो,

जिणाण सुहलालिजालसंचलिआ । तित्थपवत्तणसमए, तिअससुक्का कुसुमवुड्डी ॥१॥
आ गाथा भणीने प्रथम जिनने आगे त्रण वार सृष्टि क्रमे फेरवीने पुष्प वृष्टि करवी, पछी लवणनी कांफरीओ रंकेनीमां लेइने—
उयह ! पडिभग्गपसरं, पयाहिणं सुणिवहं करेऊणं । पडइ सलोणत्तण-लज्जिअं व लोणं हुअवहंमि ॥२॥

आ गाथा बोलतां भगवंत उपर लवणने त्रण वार प्रदक्षिणावर्ते फेरवीने अथिमां नाखवुं, अने नालवाला कलशवडे प्रदक्षिणा मार्गं त्रण वार जलधारा देइने जलनो छांदो अग्निपात्रमां नाखवो. ए पछी सलगावेली आरती रंकेवी के थालीमां सूकी ते वर्तने हाथमां लेइने—

मरगयमणिघडियविसाल-थालमाणिकम्मंडिअपईवं । एहवणययरकरुक्खित्तं, भमउ जिणारत्तिअं तुम्ह ॥३॥
ए गाथा बोलतां आरति उतारीवी.
शिखर उपर कलश, तथा धजादण्ड पण एज वखते चढाववो. प्रतिमा स्थापन कर्या पछी चैत्यवंदन करवुं, स्तवनेने चढले शिखर उपर कलश, तथा धजादण्ड पण एज वखते चढाववो. प्रतिमा स्थापन कर्या पछी चैत्यवंदन करवुं, स्तवनेने चढले अजितशान्तिस्तवनी पाठ कहेवो अने दिशाओमां बलिक्षेप करवो. प्रतिमां पक्काव-नैवेद्य-उत्तम फलादि वडे विशेष पूजा

अजितशान्तिस्तवनी पाठ कहेवो अने दिशाओमां बलिक्षेप करवो. प्रतिमां पक्काव-नैवेद्य-उत्तम फलादि वडे विशेष पूजा

करतु, प्रतिमा स्थिर कर्या पछी त्या लघुशक्ति १, दृढच्छाति २, अजितशान्ति ३, भयहरस्त्व ४, उपसर्गहरस्तन ५, युग्मिनो केवलित्य ६ अने तिजयपट्ट ७, आ स्तोत्रो गणना

पछी निव आगे पढदो करी मुखोद्घाटन करतु अर्थात् संघने तत्रोल-प्रभावना-पहेरामणी आदि आपतु अने ए रीति साचव्या पछी पढदो दूर करीने सवे पण प्रतिमानी आगल फलादिनी भेट धरी नमस्कार करतो प्रतिष्ठा करानारे मोक्षो मोदक दोवो स्थापना-प्रतिष्ठा पछी १० दिन सुधी विशेष पूजा करनी. प्रति मास प्रतिष्ठानी तिथिजे स्नात्र पूजा भणावनी अने प्रथम वर्षगांठना प्रसंगे अष्टादि उत्सव करवो

एव प्रकारे मंगलदीनो पण—

कोसचिसडियस्स च, पयाहिण कुणह मवल्लिअपयावो । जिण ! सोमदंसणे दिण-यरु व्व तुह मंगलपईवो ॥४॥
भामिब्बंतो सुरसुदरीहिं तुह नाह मंगलपईवो । कणयायलस्स नज्जह, भाणुव्व पयाहिण दिन्तो ॥५॥

आ गाथाओ त्रोलता प्रदक्षिणावर्चे त्रणमार फेरवो, मंगलदीनो उतारीने उलतो ज मूकनो बुझावतो नहि, आरतीने बुझावी देवामा दोप नथी मंगलदीनो अने आरती मुख्यतः घी, गोल, कर्पूरथी करवी विशेष विशेष फलदायक होय छे, लवण, आरति आदि सर्व गच्छो अने परदर्शनश्रीना सप्रदाय प्रमाणे सृष्टिक्रम (दक्षिणार्त भ्रमण) धी ज उतागय छे.

॥ इति लवणजलारात्रिकविधि ॥



कंकण-मोचनविधि

प्रथमेऽह्नि तृतीये वा, पञ्चमे सप्तमे शुभे । विद्वान् कङ्कण-सुवस्वर्थं, विधिं कुर्यादधस्तनम् ॥१६४॥
 पञ्चामृतैजिनस्नानं, विधाय प्रथमं ततः । अष्टोत्तरशतघटैः, शुद्धनीरेण पूरितैः ॥१६५॥
 चक्रे देवेन्द्रराजैरि-त्यादि घोषपुरस्सरम् । संस्तव्य पूजयेत् प्राज्य-नैवेद्यमुपढौकयेत् ॥१६६॥

दिशासु बलिमुत्क्षिप्य, कृत्वा च जिनवन्दनम् । सौभाग्यमन्त्रमारोप्य, मोचयेत् कङ्कणं करात् ॥१६७॥
 भा०डी०—प्रतिष्ठाना दिवसे अथवा त्रीजे, पांचमे वा सातमे शुभ दिवसे कंकण मोचन निमित्ते विद्वान् विधिकारे नीचेनी विधि करवी.

प्रथम पंचामृत वडे जिनने स्नपन करावीने, शुद्ध जले भरेला १०८ कलशोए “ चक्रे देवेन्द्रराजैः ” इत्यादि काव्य भणवा पूर्वक १०८ स्वच्छ जलना अभिषेक करावीने पूजा करवी, नैवेद्य होकवुं अने दिशाओमां दिक्पालोने बलिक्षेप करवो. देववन्दन करवुं, अने सौभाग्य मंत्रन्यास करीने नमस्कार मंत्र भणतां हाथथी कंकण छोडवुं.

कृत्यविधि—प्रतिष्ठा पळी आवश्यक कार्य तेज दिवसे कंकण छोडवानी विधि करनी. अन्यथा त्रीजे पांचमे वा सातमे शुभ दिवसे कंकण छोडवां. प्रथम प्रतिमाने नीचे प्रमाणे पञ्चामृत स्नान करावुं.

पञ्चामृत स्नान—

एक कलशामा शुद्ध तांबुं घृत लेऽ “ नमोऽर्हंत मिद्धाऽऽचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ” कही—

घृतमायुर्वृद्धिकरं भवति परं जैनगात्रसपर्कात् । तद् भगवतोऽभिषेके, पातु घृतं घृतसमुद्रस्य ॥१॥

आ पद्य नीलीने प्रतिमानं घृतनो अभिषेक करवो, पछी दूधनो कलश लेऽने ‘ नमोऽर्हंत० ’ कही

दुग्ध दुग्धाम्भोधे-रूपाहृतं यत्पुरा सुरवरैन्दैः । तद् बलपुष्टिनिमित्तं, भवतु सतां भगवदभिषेकात् ॥२॥

ए पद्य कही दूधनो अभिषेक करवो, पछी दहिनी कलश लेऽ ‘ नमोऽर्हंत० ’ कही—

दधि मंगलाय सततं, जिनाभिषेको पयोगतोऽप्यधिकम् ।

भवतु भविना शिवा-ध्वनि दग्जलधेराहृत त्रिवशैः ॥३॥

आ पद्य बोली दहिनी अभिषेक करवो, पछी सेन्डीना रसनो अथवा देशी नाकरना पाणीनो कलश भरी ‘ नमोऽर्हंत ’ कही-
इक्षुरसोदाटुपहृत, इक्षुरसः सुरवरैस्त्वदभिषेके । भवदवसदवयु भविना, जनयतु नित्यं सदानन्दम् ॥४॥

ए नीलीने अभिषेक करवो, पछी सवौपयिना जलनो फलज लेऽ ‘ नमोऽर्हंत० ’ कही—

सवौपधीषु निवसत्यमृतमिव सत्यमर्हदभिषेके । नत्सवौपधिमहित, पञ्चामृतमस्तु चः सिद्धये ॥५॥

आ पद्य बोली सवौपयिनो अभिषेक करवो, उपरं प्रमाणं पंचामृत स्नान करानीने रुंपूरना चूर्णथी अथवा गन्ध-चूर्णनडे प्रतिमानी स्निग्धता दूर करी शुद्ध जन्ने भरेला १०८ कलशोवडे अभिषेक करवा, प्रत्येक अभिषेके—

चक्रे देवेन्द्रराजैः सुरगिरिशिखरे श्रोऽभिषेकः पयोभिर्द्व्यन्तीभिः सुरीभिल्लितपदगमं तूर्यनादैः सुदीप्तैः ।
कर्तुं तस्यानुकारं शिवसुखजनकं मन्त्रपूतैः सुकुम्भैर्विम्बं जैर्न प्रतिष्ठाविधिवचनपरः स्नापयाम्यत्र काले ॥१॥

ए काव्य बोलवुं, जिन आगे फल नैवेद्य होवुं, अभिषेको पूर्ण थया पछी अंग ल्हूछी प्रतिमानी पूजा करवी, दिशाआमां भूत बलिक्षेप करवो.

पछी ईयावही० पडिक्कीने चैत्यवंदन करवुं, चैत्यवंदन मूलनायकवुं बोलवुं, अने स्तुति पण मूलनायकनी कहेवी, तेना अभावे चैत्यवंदन अने स्तुतिओ नीचे लखेलां बोलवां—

ॐ नमः पार्श्वनाथाय, विश्वचिन्तामणीयते । ॐ ह्रीं धरणेन्द्रचैरुदथा-पद्मादेवीयुताय ते ॥ १ ॥

शान्ति-तुष्टि-महापुष्टि-धृतिकीर्तिविधायिने । ॐ ह्रीं द्विद्व्यलवेताल-सर्वाधिब्याधिनाशिने ॥२॥

जयाऽजिताख्याविजया-ऽख्याऽपराजितयान्विते । दिशांपालैर्ग्रहैर्दक्षै-विद्यादेवीभिरन्वितः ॥३॥

ॐ असिआउसाय नमस्तत्र त्रिलोक्यनाथताम् । चतुःपष्टिसुरेन्द्रारस्ते, भासन्ते छत्रचामरैः ॥४॥

श्रीशंखेश्वरमण्डन ! पार्श्वजिन ! प्रणतकल्पतरुकल्प । चूरय दुष्टव्रातं, पूरय मे वाञ्छितं नाथ ! ॥५॥

नमुर्युगं अरिंहत चेईआणं, वंदणवत्ति०, अन्नत्थ०, १ नो०, नमोऽर्हत्त०, स्तुतिः—

अर्हस्तनोतु स श्रेयः-श्रियं यद्दयानतो नरैः । अश्विन्द्री सकलाऽत्रेहि, रंहसा सहसौच्यत ॥१॥

लोगस्स०, सब्वलोए अरिंहत०, वन्दणव०, अन्नत्थ०, १ नो०, स्तुतिः—

ओमितिमन्ता यच्छासनस्य नन्ता सदा यद्द्रवीश्व । आश्रीयते श्रिया ते, भवतो भवतो जिनाः पान्तु ॥२॥

पुक्स्वरगदीनड्डे०, मुअस्स०, उन्दणउ०, अन्नत्थ०, १ नो०, स्तुतिः—

नवतरचयुतात्रिपदीश्रिता रुचिज्ञानपुण्यशक्तिमता । वरवर्मकीर्तिविद्या-नन्दाऽऽस्या जेनगीर्जीयात् ॥३॥

सिद्धाण बुद्धानं०, कंकणछोटनार्थ-प्रतिष्ठादेवता विसर्जनार्थं करेमि काउसगं अन्नत्थ०, १ लोगम्म०, मागरउरगमीरा०,
नमो०, स्तुतिः—

यदधिष्ठिताः प्रतिष्ठाः, सर्वाः सर्वास्पदेषु नन्दति । जिनविंश सा विशतु, देवता सुप्रतिष्ठमिदम् ॥४॥

श्रुतंटेयतायै करेमिक्का०, अन्नत्थ०, १ नो०, नमो०, स्तुतिः—

वद् वदति न वाग्वादिनि । भगवति ! कः श्रुतसरस्वतिगमेच्छु ।

रगत्तरगमतिवर-तरणिस्तुभ्यं नम इतीह ॥५॥

शान्तिदेवतायै करेमि का०, १ नो०, नमो०, स्तुतिः—

श्रीचतुर्विधसघस्य, शासनोन्नतिकारिणी । शिवशान्तिकरी भूयाच्छ्रीमती शान्तिदेवता ॥६॥

क्षेत्रंदेवतायै करेमि का०, अन्नत्थ०, १ नो०, नमो०, स्तुति—

यस्याः क्षेत्र समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रिया । सा क्षेत्रदेवता नित्यं, भूयान्नः सुखदायिनी ॥७॥

शामनदेवतायै करेमि का०, अन्नत्थ०, १ नो०, नमो०, स्तुतिः—

या पाति शासनं जैनं, सद्यः प्रत्यूहनाशिनी । साऽभिप्रेतसमृद्धर्थे, भूयाच्छासनदेवता ॥८॥

अथादेव्यै करेमि का०, अन्त्य०, १ नो०, नमो०, स्तुतिः--

अम्बा बालाङ्गिनाङ्काऽसौ, सौख्यख्यातिं ददातु नः । माणिक्यरत्नालङ्कार-चित्रसिंहासनस्थिता ॥९॥

अच्छुभायै करेमि का०, अन्त्य०, १ नो०, नमो०, स्तुतिः--

चतुर्भुजा तडिङ्गणी, कमलाक्षी वरानना । भद्रं करोतु संघस्याऽच्छुसा तुरगवाहना ॥१०॥

समस्तवेवावच्वंगरणं, सेति०, करेमि का०, अन्त्य०, १ नो०, नमो०, स्तुतिः--

संघेऽत्र ये गुरुगुणौघनिधे सुवैद्या-वृत्यादिकृत्यकरणैकनिबद्धकक्षाः ।

ते शान्तये सह अबन्तु सुराः सुरीभिः, सद्दृष्ट्यो निखिलविघ्नविघातदक्षाः ॥११॥

१ नक्कार प्रकट कही ' नभ्युणं, जायति चेऽहाइ०, नमो०, स्तवनं--

ओमिति नमो भगवओ, अरिंहंतसिद्धाद्यरिअवज्जाय । वरसव्यसाहुमुणिसंघ-धम्मतिथप्पवयणस्स ॥१॥

सप्पणवं नमो तह भगवईइ, सुघदेवयाए सुहयाए । सिवसंतिदेवयाणं, सिवपवयणदेवयाणं च ॥२॥

इंदागणिजमनेरइअ-वरुणवाउकुवेरईसाणा । वंभो नारुत्ति दसण्ह-मवि अ सुदिसाण पालाणं ॥३॥

सोमयमवरुणवेसमण-वासवाणं तहेव पंचण्हं । तह लोणपालयाणं, सराइगहाण य नचण्हं ॥४॥

साहंतस्स समवलं, मज्झमिणं चेव धम्मणुड्डाणं । सिद्धिमविग्घं गच्छड, जिणाइनक्कारओ धणिअं ॥५॥

जयवीरराय कहेवा पछी सौभाग्य सुद्रानडे—

“ॐ अवतर अवतर सोमे सोमे कुरु कुरु वगु वगु निवगु निवगु सुमणे सोमणसे महु महुरे ॐ
कविल ॐ क क्षः स्वाहा ।”

सौभाग्यसुद्राए आ मत्रनो विन उपर न्यास करी तेना हाथेथी सरसव पोदली, आरेठानी माला, मोंढलुं ककण, विंगरे
उतारी पोताना प्रिय जनना हाथमा अथवा सववा स्त्रीना हाथमां देवु

करुण छोटन चिधि (प्रकारान्तरेण)—

विग्रस्थापना सन्धी कार्य पूरु कर्या पछी श्रीसधे जन्माभियेक कलश भणनादिक त्रिधिपूर्वक पचामृत स्नात्र करुं,
नैवेद्यफलादि चढाववा, आगे अष्टभगलनो आलेख करवो, स्नात्र पूर्ण थया पछी ‘इग्यावाही०’ पढिकमीने गुरु साथे
देववदन करुं. चैत्यवदन तथा स्तुति मूलनायकनी कहेवी, याद न होय तो चैत्यवदन अने स्तुतिओ नन्दी क्रियानी
कहेवी, चोथो काउसग शान्तिनाथ आराधना निमित्ते ‘सागररगमीरा’ सुधीनो करवो, ने पारीने शान्तिनाथनी
स्तुति कहेवी. बीजा पण काउसगो नन्दीमां कराय छे तेज प्रमाणे करना, अने स्तुतिओ पण नन्दीनी कहेनी, स्तपनेने स्थाने
शान्ति (अजितगान्ति) स्तव रही ‘जयनीयराय०’ कहना.

ए पछी लभाममण देइ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! क्षेत्रदेवता आराधनार्थ काउसग करुं ? इच्छं, क्षेत्रदेवता आराध-
नार्थ करेमि काउसगं अन्नथ० ? लोगस्म सागररगमीरा सुधीनो काउसग करी पारी उपर ? नोकार प्रकट पूरो कहेवो

वली खमासण देइ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! शुद्रोपद्रव उवसमावणी काउस्सग करं ? इच्छं, शुद्रोपद्रव उवसमावणी करेमि काउस्सगं, अन्तथ०, ? नोकार, ? उवस्सगहर, ? लोगस्स सागरवर गंभीरा सुधी, आ वणनो काउस्सग करी पारी उपर ? नवकार प्रकट कहेवो.

त्राजी वार खमासण देइ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! कंकणछोटनार्थं काउस्सग करं ? इच्छं, कंकणछोटनार्थं करेमि काउस्सगं, अन्तथ०, ? नवकारनो काउसग करवो, पारी ? नवकार प्रकट कहेवो.

ए पछी सौभाग्य मंत्र भणी कंकण छोडुं, फलादिनी साथे सधवा खीने खोले मेलवुं अने विशेष प्रकारे गुरुभक्ति अने संघभक्ति करवी.

॥ इति कंकण छोटण विधि ॥

? आ कंकण छोटन विधि पंद्रमा सैकामां ललायेल एक प्राचीन पत्रना आधारे लखी छे.

— ❀ ❀ ❀ —

‘विसर्जनम्

नन्द्यावर्तस्थितं देव-गणं संपूज्य सक्रमम् । विसर्जयेत् सुरानन्यान्, दिशापालादिकानपि ॥१६८॥

मा०टी०—नन्द्यावर्त स्थित देवसमुदायने प्रथमना ज क्रम प्रमाणे वासादि षडे पूजीने विमर्जन करना, दिक्पालादि बीजा पण जे जे देवो आमत्रित करेला होय ते सर्वनु पूजा सत्कारपूर्वक विसर्जन करुं.

विसर्जन विधि—

नन्द्यावर्तनो पाटलो पूरुंक्रमथी वाम चन्दनादि षडे पूजीने “ ॐ विसर विसर स्वस्थानं गच्छ गच्छ स्वाहा ।”

आ मत्र बोली अजलि मुद्राए नन्द्यावर्तनुं विसर्जन करुं, एउ रीते “ ॐ विसर विसर प्रतिष्ठा देवते स्वाहा ” ।
कही ग्रह दिक्पाल आदिना पाटलाओने वासक्षेप करी—

“ देवा देवार्चनार्थं ये, पुराऽऽहृताश्चतुर्विधाः । ते विधायार्हतां पूजां, यान्तु सर्वे यथागतम् ॥१॥”

आ श्लोकरुथी मर्व देवोनुं विसर्जननीमुद्राए विसर्जन करु, उपर दृहच्छ्यतिनो पाठ कहेनो, अने सय भक्ति करवी ।

१ ककरण मोचननी क्रिया जो प्रतिष्ठागा दिवसे ज फरवानी होय तो विसर्जन विधि ककरण मोचन पछी कराववी, पण ककरण मोचन त्रीजे पाचमे के सातमे दिवसे करवानु होय तो विसर्जन तेज दिवसे अथवा बीजे दिवसे अगाउ करी देउ

॥ प्रतिष्ठाविधिवीजकानि ॥

। श्रीचन्द्रप्रतिष्ठापद्धतिवीजककाव्यानि ।

भूतानां बलिदानमग्निमजिनस्नानं तदग्रे स्वयं, चैत्यानामथ वंदनं स्तुतिगणः स्तोत्रं करे मुद्रिका ।
 स्वस्य स्नात्रकृतां च शुद्धसकलीसम्यक् शुचिप्रक्रिया, धूपाम्भःसहितोऽभिमंत्रितवलिः पश्चान्च पुष्पांजलिः ॥१॥
 मुद्रा मध्यांगुलीभ्यामतिक्रुपितदृशा वामहस्ताभसोन्चै-विम्बस्यान्डोटनं सत्सतिलककुसुमं मुद्गरश्चाक्षपात्रं ।
 मुद्राभिर्वज्रताक्ष्यादिभिरथकवचं जैनविधेस्य सम्यग्-दिग्बन्धः सप्तधान्यं जिनवपुरुपरि क्षिप्यते तत्क्षणं च ॥२॥
 कुम्भानामभिमंत्रणं जिनपतेः सन्मुद्रया मन्त्र्यते, नीरं गन्धगहौषधी मलयजं पुष्पाणि धूपस्ततः ।
 अंगुल्यामथ पंचरत्नरचना स्नानं ततः कांचनं, पुष्पासोपणधूपदानमसकृत् स्नात्रेषु तेप्वंतरा ॥३॥
 रत्नस्नानकपायमज्जनविधिर्मृतपंचगव्ये ततः, सिद्धौषध्यथ मूलिका तदनु च स्पष्टाष्टवर्गद्वयम् ।
 मुक्ताशुक्तिसुमुद्रया गुरुथोत्थाय प्रतिष्ठोचितं, मंत्रैर्देवतमाह्वयेद् दशदिशामीशैथ पुष्पांजलिः ॥४॥
 सर्वौषध्यथ स्मरिहस्तकलनाद् हृद्दोपश्चोन्मृजा, रक्षापुङ्गुलिका ततश्च तिलकं विज्ञप्तिकाऽयांजलिः ।
 अर्थोऽर्हत्थ्य दिग्धवेषु कुगुमस्नानं ततः स्नानिका, वासथ्यन्दनकुंजुमे मुकुटद्वक् तीर्थान्शु कर्षूचत् ॥५॥
 निक्षेप्यः कुसुमांजलिर्जैलघटस्नानं शतं साष्टकं, मंत्रार्थासतचन्दनेन वपुषो जैनस्य चालेपनम् ।
 वामस्पृष्टकरेण वाससुमनो धूपाः सुरभ्यम्बुजा-अल्यं स्यात् करलेपकंकणमथो पंचाङ्गसंस्पर्शनम् ॥६॥

धूपथ परमेष्ठी च, जिनाह्वान पुनस्ततः, उपविश्य निपद्याया, नन्यावर्त्तस्य पूजन्तम् ॥७॥
इति श्री चन्द्रसूरीयप्रतिष्ठापद्धतिवीजक नन्यावर्त्तपूजान्तम् ॥

परंपरागताः प्रतिष्ठावीजकगाथाः--

धोपाविज अमारि, रन्ना सधस्त तह य राहरणं । त्रिष्णावियसंमाणं, कुञ्जा खेचस्त सुद्धि च ॥१॥
तह य दिसियालठण, तकिरियंगण सनिहाण च । दुचिहसुई पोमहिया, वेईए ठविज्ज जिणविंबं ॥२॥
ननरं सुगुहूत्तमि, पुव्बुत्तरदिसिसुहं सउणपुवं । उज्जेत्तु चउव्विह-मगलत्तरेसु पउरेसु ॥३॥
तो सव्वसंधसहिओ, ठण्णायरिय ठवित्तु पडिमपुरो । देवे वंदः सूरो, परिहियनिरुमसुइवत्थो ॥४॥
संत्तिसुयंटेययाणं, करेइ उस्सग्ग थुइपयाण च । सहिरण्णदाहिणकरो, सयलीकरणं ततो कुञ्जा ॥५॥
तो सुद्धोभयपम्बवा, दक्खा खेयन्नुया निहियरक्खा । ष्हवणगरा उ खियन्ति, दिमासु सन्गासु सिद्धवलि ॥६॥
तयणत्तरं च मुद्दिय-कलसचउक्केण ते ष्हवति जिणो(ण) । पचरयणोदगेणं, क्कमायसल्लिणेण तत्तो य ॥७॥
मडियजलेणं ता अट्टवग्गसव्वोसहिजलेहिं च । गधजलेणं तह परमासमल्लिणेण य ष्हयन्ति ॥८॥
चदणजलेण कुकुमजलकुमेहिं च तित्थसल्लिणेणं । सुद्धकलसेहिं पन्था, गुल्णा अभिमंतिएहि तदा ॥९॥
ष्ह्वाणण सव्व्याणनि, जलधारापुण्णधधूमाई । दायव्वमताराले, जावत्तिमकलसपत्थायो ॥१०॥
एवं ष्हविए त्रिंत्वे, नाणकलानासमायस्सिज गुरु । तो सरमसुयथेण लिपिजा चन्दणदवेण ॥११॥

कुसुमाई सुगंधाई, आरोचिता ठविज विवपुरो । नन्दावचयवद्धं, पूडजइ चारुञ्ज्वेहि ॥१२॥
 चन्दण च्छडुब्भडेणं, वत्थेणं छाघए तओ पडुं । अह पडिसरमारोवे, जिणविवे रिद्धिविद्धिजुयं ॥१३॥
 तो सरससुगंधाई, फलाई पुरओ ठविज विवस्स । जंवीरवीजपूराइयाई तो विज्ज गंधाई ॥१४॥
 सुद्धामंतन्नासं, विव्वे हत्थंमि कंकणनिवेसं । मंतेण धाणविहिं, करिज विव्वस्स तो पुरओ ॥१५॥
 बहुविह पक्कनाणं, ठवणा वरत्थं गंधपुडियाणं । वरवंजणाण य तथा, जाइफलाणं च मचिसेसं ॥१६॥
 सागिकखू वरसोलयवंडाईणं वरोसहीणं च । मंपुन्नवलीइ तथा, ठवणं पुरओ जिणिदस्स ॥१७॥
 घयगुडदीवो सुकुमारियाजुओ चउ जवारया दिमिमु । विवपुरओ ठवेजा, भूयाण वलं तओ दिजा ॥१८॥
 आरच्चियमंगलदीवयं च उत्तारिज्जण जिणनाहं । वंदिज्जउहियासणदेवयाए उस्सग थुइयाणं ॥१९॥
 अह जिणपंचंगेसु, ठावेइ गुरु थिरीकरणमंतं । वाराउ तिवि पंच व, सत्त व अन्नंतमस्सतो ॥२०॥
 मयणहलं आरोवह, अहियासणमंतनासमवि कुणह । शायइ य तयं विचं, सजियं व जहा फुहं होइ ॥२१॥
 एवमभियासियं तं, विम्वं छाडज्ज सदस्सवत्थेण । चंदणच्छडुब्भडेणं, तदुपरि पुष्पाई विम्विविज्जा ॥२२॥
 प्हावेज्ज सत्तधन्नेण, तयणु जीवंत उभयवत्त्वाहिं । नारीहि चउहि समलंकियाहिं विज्जंतनाहाहिं ॥२३॥
 पडिणुणावत्तुसुत्तेण, वेहणं चउयुणं च काऊण । ओमिणमं कारेज्जा, तुट्टाहिं दिश्यादाणजुषं ॥२४॥

१ “ वरवेही ” इति पाठान्तरम् ।

ता नन्देज्जा देवे, पइइदेरीए काउं उस्सग्ग । देज्ज सुइं तीए च्विय, उवेज्ज पुरओ य वयपत्तं ॥२५॥
 मोवन्ननट्टियाए, कुज्जा महु-मक्कराहिं भरियाए । वणगगलाराए विवत्तयण-उम्मीलण लग्गे ॥२६॥
 सम्मं पइट्टमंत्तेण, अगसंवीसु अमखन्नासं । कुणमणो एग्गणो, सरी वासे त्विवेज्ज तहा ॥२७॥
 पुफ्फखयजलीहिं, तो गुरुणा घोसण मसत्तेण : धेज्जसंथं कायव्व, मंगलमदेहिं विम्बस्स ॥२८॥
 जह सिद्धि मेरु कुलपव्वयाण पंचत्थिकाय-कालणं । इह सासया पइट्टा, सुपइट्टा होउ तह एसा ॥२९॥
 जह दीव-सिन्धु-मसहर-त्रिणयर-सुरवास-वासखेत्ताण । इह सासया पइट्टा, सुपइट्टा होउ तह एसा ॥३०॥
 एत्थ सुहभाग्गए, अक्खयखेवे ऋयमि निम्भस्स । सविसंसं पुण पूया, किच्चा चिद्धवदणा य तहा ॥३१॥
 मुहउग्घाटण ममणत्तरं च पूया य समणसंघस्स । फासुयययगुडगोस्स-णतगमाईहिं कायव्वा ॥३२॥
 मोहणदिणे य मोहग्ग-मंतनिन्नासपुव्वयममस्स । मयणहलकंरुणं-ऋयलाओ निम्भस्स अणज्जा ॥३३॥
 जिणविम्भस्स य तिमए, नियनिय ठाणेसु मव्वमुद्दाओ । गुरुणा उउत्तेणं, पउत्तियव्वाउ ताउ इमा ॥३४॥
 जिणमुद्द कलमपरमेट्ठि-अंग-अंजलि-तहामणे चक्का । सुरभी पयण गरुडा, मोहग्ग ऋयंजलि चेन ॥३५॥
 जिणमुद्दाए चउकलसठावणं तह ऋरेह यिररुण । अदिदाममतनसणं, आमणमुद्दाए अन्ने उ ॥३६॥
 कलसाए कलमन्हयणं, परमेट्ठीओ उ आहरणमत्तं । अंगाए समालमण, अंनलिणा पुफ्फरुहणाई ॥३७॥
 आसणयाए पट्टस्स पूरणं अग्गफुसण चक्काए । सुरभीए अमयमुत्ती, पयणमुद्दाए पड्डियोहो ॥३८॥

गरुडाए दुडुरस्वा, सोहगाए य संतसोहगं । तह अंजलीए देसण सुदाहिं कुणइ कुणइ कज्जाइं ॥३९॥
इति प्रतिष्ठाविधि बीजकगाथाः ।

अथ ध्वजदण्डारोपविधिबीजकम् ।

धोसिज्जए अमारी, दीणाणाहाण दिज्जए दाणं । पउणीकिज्जइ वंसो, धयजोगो सरल सुसिणिद्धो ॥४०॥
वइतंतचारुपधो, अपोच्चडो कीडएहिं अत्रलद्धो । अइड्ढो वणणइठो, अणुइठसुको पमाणजुओ ॥४१॥
काज्जण मूलपडिमा-व्हाणं चाउदिसं च भूसुद्धि । दिसिदेवयआहवणं, वंसस्स विलेवणं तह य ॥४२॥
अहिवासियकुसुमारोवणं च अहिवासणं च वंसस्स । मयणफलरिद्धिविद्धि-सिद्धथारोवणं चैव ॥४३॥
धूयुक्खेवं मुदानासं, चउसुन्दरीहिं ओमिणं । अहिवासणं च सम्मं, महद्धयस्सिंदुधवलस्स ॥४४॥
चाउदिसिं जयारय, फलोहलीढोयणं च वंसपुरो । आरत्तियात्रयारणमह विहिणा देववंदणयं ॥४५॥
बलिसत्तधन्वफलवास-कुसुमसकसायवथुनिवहेणं । अहिवासणं च तत्तो, सिहरे तिपयाहिणीकरणं ॥४६॥
कुसुमंजलिपाडणपुरस्सरं च णवणं च मूलकलसस्स । खित्तदसद्दामलरयण धयहरे इडुसमयंसि ॥४७॥
सुपइडुपइठामंतखित्तवासस्स तयणु वंसस्स । ठवणं खिवणं च तओ, फलोहलीभूरिभवखाणं ॥४८॥
तत्तो उज्जुगईए, धयस्स परिमोयणं सजयसहं । पडिमाए दाहिणकरे, महद्धयस्सावि वंधणयं ॥४९॥
विसमदिणे ओसुयणं, जहसत्तीए य संघदानं च । इय सत्थुत्तविहीए कुणह धयारोवणं धन्ना ॥५०॥
इति ध्वजारोपणविधिगाथाः कथारत्नकोषात् ।

अथ जिनप्रश्नकारि प्रश्नोत्तराचार्य श्रीशुकम्—

पुत्रं पदिमद्वयं, चिह्नं उग्रस्य धुंश्च आण्डवृणयारोतु । रक्त्वा कुमुमाणजलि तज्जनि पूय च तिलयं वा ॥५१॥
 भोसाग्नेवस्वयथाह, वज्रं गरुडो बली ॐ ह्रीं श्रीं ममतेणं । रुद्रं दिमित्रयो च्चिव, पवित्रवर्णं सत्तथन्तस्म ॥५२॥
 कृत्स्न हिमंतेण सर्व्वोसहि चंदण चच्चि विच मतेण । पचरयणस्स गठी, परमेष्ठीपचग ष्णुण ॥५३॥
 पदम हिरण्यसह १ पच-रयण २ सकसाय ३ मडिया ४ ष्ववण । द्रवभोदयमीस पंचगव्व ५ ष्ववणं च पचमय ॥५४॥
 सहदेनाईमव्यो-सहीण ६ उगो य मूलिया ७ वग्गो । एवमद्द वग्ग, ८ वीयुद्ध-वग्ग ९ ष्ववणं तथा नवमं ॥५५॥
 जिणदिमिपालाहण, कुसुमजलि तव ज्योमहीद्वयं १० । दाहिणरुग्गुरिसेणं, जिणमंतो सूरिसवोड्डलिया ॥५६॥
 तिलयंजलिमुद्दाए, विन्नत्ती हसभायणत्यग्घो । पुण दिसिपालाहणं, परमेष्ठीगरुडमुद्दाए ॥५७॥
 कुसुमजल ११ मंघ १२ ष्णानिय-चासेहि १३ चंदणेण १४ घुमिणेण १५ । पतरमण्णान्तु रुग्गु, दंप्पणंदसण पुरओ ॥५८॥
 तित्थोदएण ष्णानं १६ कप्पूरेण १७ च पुष्फअजलिया । जट्टारमम ष्णान, सुद्धवडदट्टर १८ सएण ॥५९॥
 सव्वनिलेण खरी, पुष्फाईधुंवातसयणफल । सुरहीपउमा अजन्ति-मुद्दाओ हत्थलेमो य ॥६०॥
 अहिनासणमतेण, करुण तेणेव चक्कमुद्दाए । पचगक्काम पुण जिण-आहणं नंदपूया य ॥६१॥
 सत्तमरावा चदणचच्चियरुलमा मत्तुणो चउरो । घयगुलदीना चउरो, चउरुलसा नन्दयत्तस्म ॥६२॥
 सक्कयय अहिवासण-समये छाएहि माइसाडीए । सूरिमंताहिनासण-द्ववणंजलिसत्तअत्तस्म ॥६३॥

पुंस्वणय कणयदानं, बलि लङ्ङयमाइ पुडिय आरतियं । चिह्-अहिवासणदेवय-धुइ धारण सागयाईहि ॥६४॥
अधिवासनाधिकारः समासः ।

अथ प्रतिष्ठाधिकारः—

संतिबलि-चिह्-पइडा-उससगो धीयभायणं नित्ते । वन्न सिरि वास कन्ने, मंतो सव्वंगफास चक्केणं ॥६५॥
दहिमंड-मंत-मुदा, पुंस्वणं पुफंजलीउ मंतेणं । भूयबलि-लवण-रत्तिय, चिह् अक्खय धम्मकहमहिमा ॥६६॥
तइय-पण-सत्तमदिणे, जिणबलि भूयबलि वंदिउं देवे । कंकणमोयणहेउं; पइउससग मंत नसे ॥६७॥
काउं पूयचिसगं, नेदावत्तस कंकणं छोडे । पंचपरमेट्टिपुव्वं, मंगलगाहाउ पढमाणो ॥६८॥

इति जिनप्रभस्सरिकृतप्रतिष्ठाविधिबीजकम् ॥

अथ स्थापनाचार्यप्रतिष्ठाविधिः—

चुक्खंसुयकररणो, आरोवियसयलिरुणसुहविज्जो । गरुडाइ दलियणिवो, मलयजघुसिणेण लिपिना ॥
अक्खं फलिहमणि वा, सुहकइमयं व ठावणायरियं । काळण पंचपरमिट्ठि-ट्टिकए चंदणसेणं ॥
मंतेण गणहराणं, अहवा वि हु वद्धमाणविज्जाए । काळण सत्तलुत्तो, वासक्खेवं पइठिज्जा ॥

॥ इति स्थापनाचार्यप्रतिष्ठाविधि ॥

चैत्यप्रतिष्ठाविधि—

चैत्यं जिनगृहं तच्च, विधिना सुप्रतिष्ठितम् । प्रतिमास्थपनाहं स्यात् तस्माच्चैत्यं प्रतिष्ठयेत् ॥१६९॥

भा०टी०—चैत्यनो अर्थ अहिंया 'जिनगृह' समजवानो छे, ते चैत्य विधिपूर्वक प्रतिष्ठित वयेल होय तो ज प्रतिमा, स्थापने योग्य वाय छे, माटे चैत्यनी प्रतिष्ठा करनी जोइये.

चैत्य प्रतिष्ठा विग्नप्रतिष्ठा योग्य लग्नमा करनी ते विग्नप्रतिष्ठा पछी तरत, अथवा थोडा दिनस, पक्ष, मास, वर्ष पछी पण करी सत्ताय, उता करनी श्रेष्ठ लग्नमा अने ते प्रसंगे सघामंत्रण, वेदीरचना, नंदावर्त पूजन आदि गयी रीतिओ यथाशक्ति करवी

आज काल विग्नप्रतिष्ठाप्रसंगे अथवा विनस्थापनाना समयमा ज प्रायः चैत्यप्रतिष्ठा करवामा आवे छे, एम करनायी वेदीरचना आदि चैत्यप्रतिष्ठाना घणा खरा विधिकार्या विग्न प्रतिष्ठा निमित्ते अथवा ध्वजदंड प्रतिष्ठा निमित्ते मडपमा थइ जाय छे, तेथी आजकाल चैत्य प्रतिष्ठा निमित्ते नीचे प्रमाणे विशेष विधि ज ग्यारे करवी पडे छे

सर्व प्रथम शान्तिमंत्रयी मंत्रीने चैत्यने कस्ता २४ सूत्रना तातणा गौडीने चैत्यनी रक्षा करनी

ते पछी हाथमा पुष्पाञ्जलि लेई—

अभिनवसुगधिविक्रमित-पुष्पयौघमृता सुगंधघृपाढ्या । चैत्योपरि निपनन्ती सुखानि पुष्पाञ्जलिः कुरुताम् ॥१॥

आ फाल्गुनी चैत्य उपर पुष्पाञ्जलि नाखनी, प्रतिष्ठाचार्ये वे मध्यमा जागलीओ उंची करी कूरदृष्टिए तर्जनी मुद्रा देखा डवी. श्रावके डाना हाथमा जल लेड चैत्य उपर आगोट्टु, चैत्यने तिलक करवो, पुष्प चढाववा धूप उखेववो.

चैत्यने सुद्वारमुद्रा द्रेखाडवी, अने—

प्रतिष्ठागुरुए चैत्यने सुद्वारमुद्रा द्रेखाडवी, अने—
रक्ष रक्ष स्वाहा ॥

ॐ ह्रीं क्ष्वी सर्वोपद्रवं रक्ष रक्ष स्वाहा ॥
आ मंत्रनो न्यास करी चैत्यनी रक्षा करवी, ए पळी श्रावके प्रथम सात ध्याननी पसली वडे चैत्यनो अभिषेक करवो. उपर गुद्र जले चैत्यनुं शिलाराश पसली

पळी जिनाभिषेकना जल वडे अथवा स्नात्र जल वडे चैत्यनो अभिषेक करवो, उपर गुद्र जले चैत्यनुं शिलाराश पसली वडे चैत्यनो अभिषेक करवो. ते उपर केसर

पळी जिनाभिषेकना जल वडे अथवा स्नात्र जल वडे चैत्यनो अभिषेक करवो, उपर गुद्र जले चैत्यनुं शिलाराश पसली वडे चैत्यनो अभिषेक करवो. ते उपर केसर

पळी जिनाभिषेकना जल वडे अथवा स्नात्र जल वडे चैत्यनो अभिषेक करवो, उपर गुद्र जले चैत्यनुं शिलाराश पसली वडे चैत्यनो अभिषेक करवो. ते उपर केसर

पळी जिनाभिषेकना जल वडे अथवा स्नात्र जल वडे चैत्यनो अभिषेक करवो, उपर गुद्र जले चैत्यनुं शिलाराश पसली वडे चैत्यनो अभिषेक करवो. ते उपर केसर

पळी जिनाभिषेकना जल वडे अथवा स्नात्र जल वडे चैत्यनो अभिषेक करवो, उपर गुद्र जले चैत्यनुं शिलाराश पसली वडे चैत्यनो अभिषेक करवो. ते उपर केसर

पळी जिनाभिषेकना जल वडे अथवा स्नात्र जल वडे चैत्यनो अभिषेक करवो, उपर गुद्र जले चैत्यनुं शिलाराश पसली वडे चैत्यनो अभिषेक करवो. ते उपर केसर

जो कलशारोपण, घञ दंडारोपण अने चैत्यप्रतिष्ठा ए चर्चुं ते प्रसंगे ज थयु होय तो ' भवज दंड प्रतिष्ठाविधि 'ना अन्तर्मां जणावेल स्नात्र चैत्यवदनादि निधि करीने ए यथाना करुणो सर्पप पोटली अने चैत्याच्छादनवस्त्र प यथां साथे ज ते दिवसे अथवा ग्रीजे पाचमे सातमे दिवसे चन्द्रमल देखीने ओढवा, रुदायि एकली चैत्यप्रतिष्ठा ज रुरी हाय तो उक्त-विधि ज तेनुं आच्छादन करुण आदि दूर कराव

एकला चैत्यनी प्रतिष्ठा रुद्रानो ज प्रमग होय तो चैत्यने फरती वेदी रचना करवी तथा नन्धावर्तं स्थापना, कुंभ स्थापना आदि कार्यों चैत्यमाज करवा

१० कलशप्रतिष्ठा—

कलशो जिनगेहानां शिरोभूषा निगद्यते । तमाश्रमं स्वर्णजं वापि, विधिना प्रतिरोपयेत् ॥१७०॥

भा०टी०—कलश जिनचैत्यना मस्तकनु भूषण कहेनाय छे, ते पाषाणनो होय अथवा सुवर्णनो एण विधिपूर्वक ज तेने शिखर उपर चढावचो जोडये प्रथम भूमिशुद्धि करी सुगन्ध जल पुष्पादि छाटी तेनो मत्कार करवो, कलश राखमाने वेदिका मनाववी तेमा प्रथमर्थी ज सुर्यणं रूप्य ताम्र मौक्तिक प्रमाल रूप पचरत्न अने कुंभकार चक्रनी माटीनो न्याम करवो. उपर कलश स्थापन करवो मधवा खोत्रो पासे अभिषेकनी औपचिओ वटामनी

पछी पवित्र जलाशयथी लावेल जल वडे वेदीआगे स्थापित पूर्व प्रतिष्ठित प्रतिमानु स्नात्र करवु अने वलि गकुलना भाजन-मा पुष्प, वास, मेनो, वगेरे नाखीने—

ॐ ह्रीं क्षीं सचोपद्रवं रक्ष रक्ष स्वाहा ”

आ मंत्र ७ बार भणीने बलिमंत्री पूर्वादि दिशासंमुख उभा रही—

ॐ इन्द्राय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह कलशप्रतिष्ठाविधौ आगच्छ आगच्छ स्वाहा ॥१

ॐ अग्नये सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह कलशप्रतिष्ठाविधौ आगच्छ आगच्छ स्वाहा ॥२

ॐ यमाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह कलशप्रतिष्ठाविधौ आगच्छ आगच्छ स्वाहा ॥३

ॐ निरृक्तये सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह कलशप्रतिष्ठाविधौ आगच्छ स्वाहा ॥४

ॐ वरुणाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह कलशप्रतिष्ठाविधौ आगच्छ स्वाहा ॥५

ॐ वायवे सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह कलशप्रतिष्ठाविधौ आगच्छ स्वाहा ॥६

ॐ कुबेराय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह कलशप्रतिष्ठाविधौ आगच्छ स्वाहा ॥७

ॐ ईशानाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह कलशप्रतिष्ठाविधौ आगच्छ स्वाहा ॥८

ॐ नागाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह कलशप्रतिष्ठाविधौ आगच्छ स्वाहा ॥९

ॐ ब्रह्मणे सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह कलश प्रातष्ठाविधौ आगच्छ स्वाहा ॥१०

आ मंत्रो पैंकीनो १-१ मंत्र बोली एक २ दिशायां १ जल चुलुक २ चन्दन केसरनो छांटो, ३ पुष्पक्षेप ४ सप्तधान्य

बलि निक्षेप करवो.

ए पृष्ठी प्रतिष्ठागुणैः प्रथम नीचेना मंत्रे पोतातुं सकलीकरण करतुं.

ॐ नमो अरिहताणं-हृदयमा

ॐ नमो सिद्धाणं-माथामा

ॐ नमो आयरिआण-शिखाउपर

ॐ नमो उवज्जायाण-कवच-सर्वाङ्ग सवरण

ॐ नमो लोए सव्वसाहूण-अन्न-सकली करण करीने नीचेनी—

“ॐ नमो अरिहंताण ॐ नमो सिद्धाणं. ॐ नमो आयरियाण, ॐ नमो उवज्जायाणं. ॐ नमो लोए-सव्वसाहूण. ॐ नमो सव्वोमहिपत्ताण, ॐ नमो विज्जाहराणं ॐ नमो आगासगामीणं ॐ कः क्षः नमः अशुचिः शुचिर्भवामि स्वाहा ।”

आ शुचिविद्या ५ अथवा ७ वार सुरभिमुद्राए जपी आत्सामा आरोपवी.

उक्त सकलीकरण माथी स्नात्रकारोनी पण अंगरक्षा करवी, अने निम्नोक्त विधिथी देववदन करतु-इर्यावही पडिक्कमी मूल नायकतुं चैत्यवदन करतुं. तेना अभाजमा “ ॐ नमः पाठवनाथाय ” ए चैत्यवदन करी ‘ नमुत्थुणं० अरिहंत चेइआ० वदणव० अन्नत्य० १ नो० नमोऽहंत्वं स्तुति—

अहंस्तनोतु स श्रेय.-श्रिय यद्दयानतो नरेः । अप्येन्द्री सकलाऽत्रैहि रहसा सहसौच्यत ॥१॥

लोगस्स० सव्वलोए० अरिहंत० वंदण० अन्नत्थ० ? नो० स्तुति—
ओमितिमन्ता यच्छासनस्य नन्ता सदा यदंहिश्च । आश्रीयते श्रिया ते भवतो भवतो जिनाः पान्तु ॥२॥
पुव्वखवरदी० सुअस्स० वंदण व० अन्नत्थ० ? नो० स्तुति—
नवतत्त्वयुता त्रिपदी-श्रिता रुचिज्ञानपुण्यशक्तिमता । वरधर्मकीर्तिविधानन्दस्स्या जैनगीर्जायात् ॥३॥
सिद्धाणं बुद्धाणं० श्रीशान्तिनाथ आराधनार्थं करेमि काउसगं वंदणवत्ति० अन्नत्थ० ? लोगस्स, सागरवर गंभीरा पर्यन्त०
नमोऽर्हत्० स्तुति—

श्रीशान्तिः श्रुतशान्तिः प्रशान्तिकोऽसावशान्तिसुपशान्तिम् ।

नयतु सदा यस्य पदाः, सुशान्तिदाः संतुषन्ति जने ॥ ४ ॥

श्रुतदेवतायै करेमि काउसगं, अन्नत्थ० ? नो०, नमो० स्तुति—
वद वदति न वाग्वादिनि !, भगवति कः श्रुतसरस्वति गमेच्छुः । रंगत्तरंगमतिवर-तरणिस्तुभ्यं नम इतीह ॥५॥
क्षेत्रदेवतायै करेमि का० अन्नत्थ० ? नो० नमो० स्तुति—
यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रिया । सा क्षेत्रदेवता नित्यं, भूयान्नः सुवदयिनी ॥६॥
शासनदेवतायै करेमि का० अन्नत्थ० ? नो० नमो० स्तुति—
उपसर्गवलयविलयन-निरतां जिनशासनान्वनैकरताः । द्रुतमिह समीहितकृते, स्युः शासनदेवता
भवताम् ॥७॥

समस्तवेद्यात्रव्व० सनिगराण० करेमि का० १ नैऋत्ये० स्तुति—

सधेञ्च ये गुरुगुणौघनिवे सुवेयाकृत्यादिकृत्यकरणैरुनियद्वकक्षाः ।

ते शान्तये सह भवन्तु सुराः सुरिभिः, सदृष्टयो निखिलविघ्नविघातदक्षाः ॥८॥

१ नोकार प्रकृत गणी ' नस्तुयुणं । स्तन० लघुशान्ति० जयीयराय । ए पती श्रावके बने हाथमा पुण्याञ्जलि लेह—

“ अभिनवसुगधिविकसित-पुष्पौघभृता सुगधधृयाढया ।

कलशोपरि निपतती, सुखानि पुष्पाञ्जलिः कुन्ताम् ॥१॥”

आ काव्य बोलीने पुष्पाञ्जलि कलश उपर नांखी आ त्रवते प्रतिष्ठाचार्ये वे मध्यमा आगलीओ उची करी करू दधि करी तर्जनी मुद्रा देखाडवी, अने श्रावके ते पछी डाया हाथमा नत्र लेइ कलश उपर आछोटवुं. अने कलशने तिलक करवो, पुष्प चढावना, धूप उखेववो. प्रतिष्ठा गुरुए कलशने मुद्गगमुद्रा देखाडवी. अने—

ॐ ह्रीं क्ष्वेरी सर्वोपद्रव रक्ष रक्ष स्वाहा ।”

आ मन्त्रनो न्यास करी कलशनी दृष्टि रक्षा करवी. श्रावके कलश उपर मत धान्यनो प्रक्षेप करी प्रथम धान्य स्नान करावतु, अने पछी कलशना-सुवर्ण १ जल २ मर्चोपधि ३ मूलिका ४ गन्ध ५ वास ६ चन्दन ७ कुकुम (केसर) ८ कर्पूर ९ पुष्पजल, आ नत्र द्रव्योना जल वडेना अभिषेक करावा.

१-सुवर्ण स्नात्र—सुवर्णना ४ कलशो जले भरिने अथवा जलमा सुवर्णचूर्ण नांखीने—“ नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्व-

साधुभ्यः' कही—
सुपवित्रतीर्थनीरेण संयुतं गन्ध-पुष्पसंमिश्रम् । पततु जलं कलशोपरि सहिरण्यं मंत्रपरिप्लुतम् ॥१॥
आ काव्य बोली कलश उपर अभिषेक करवो, तिलक करखुं, पुष्प चढाववां।
२-सर्वौषधिसनात्र—सर्वौषधि चूर्णजलमां मेलनी ते चार कलशोमां भरी नमोऽर्हतं कही—
सर्वौषधिसंयुतया, सुगंधया घर्षितं सुगतिहेतोः । स्नपयामि चैत्यकलशं, मंत्रिततन्नीरनिवहेन ॥२॥
आ काव्य बोली अभिषेक करवो, तिलक करखुं, पुष्प चढावी धूप उखेववो।
३-मूलिकासनात्र—मूलिका चूर्ण जलमां नाखी ४ कलश भरी नमोऽर्हतं कही—
सुपवित्रमूलिकावर्ग-मर्दितं तदुदकस्य शुभधारा । कलशोऽधिवाससमये, यच्छतु सौख्यानि निपतन्ती ॥३॥
आ पद्य भणी कलशो ढालवा, तिलक करखुं, पुष्परोहण, धूप करवो।
४-गंधसनात्र—जलमां गन्धचूर्ण नाखी ४ कलश भरी नमोऽर्हतं कही—
गन्धांगसानिकया, सन्मृष्टं तदुदकस्य धाराभिः । स्नपयामि चैत्यकलशं, कर्मौघौच्छित्तये शिवदम् ॥४॥
आ काव्य भणी अभिषेक करवो।
५-वाससनात्र—जलमां वासचूर्ण नाखी ते वडे कलशा भरी नमो भणी—
हृद्यैराह्लादकरैः, स्पृहणीयैर्मन्त्रसंस्कृतैः कलशाम् । स्नपयामि सुगति-हेतो-र्वासिरधिवासितं सार्वम् ॥५॥

आ पद्य भणी कलशनी अभिषेक करवो तिलक करवुं, पुष्प चढाववा, धूप उखेववो.

६-चन्दनस्नान—जलमा चन्दननी घोल नाखी तेना कलशा भरी नमो० कही—
शीतलसरससुगन्धि-र्मनोमत्तश्चन्दनद्रुमससुतयः । चन्दनकल्कः सजलो, मंत्रयुतः पततु चरकलशे ॥६॥

आ पद्य कहीने ऋग्शनी अभिषेक करवो. तिलक धूप करवो पुष्प चढाववा

७-केसरस्नान--घसेल केसरनी घोल जलमा नाखी कलशा भरी नमो० कही—

“ काश्मीरजसुचिलित, कलशा तन्नीरधारयाऽभिनवम् । सन्मन्त्रयुक्तया शुचि, जैनं स्नपयामि सिद्धयर्थम् ॥७॥

आ पद्य भणी अभिषेक करवो. तिलक धूप करवो, पुष्प चढाववा.

८-कपूरस्नान-कपूरु चूर्ण जलमा नाखी ४ कलशा भरी नमोऽर्घ्व० कही—

शशिकरतुपारधवला, उज्वलगन्धा सुतीर्थजलमिश्रा । कर्पूरोदकधारा, सुमन्त्रपूता पततु कलशे ।८॥

आ पद्य गौली अभिषेक करवो, तिलक करवुं, पुष्प चढाववा, धूप उखेववो

९-कुसुमजलस्नान—जलकुंडीमा पुष्पो नाखी ते जलना कलशा भरी नमो० रुही-

अधिवासितं सुमन्त्रैः, सुमनः किञ्जल्कराजित तोयम् । तार्थजलादिसुष्टुक्रं, कलशोन्मुक्त पततु कलशे ॥९॥

आ काव्य गौली अभिषेक करवो, तिलक करवुं, फूल चढाववा, अने धूप उखेववो.

ए पछी पचरलनी पोटली तथा श्वेत अथवा पीला सरमवोनी पोटली ऋग्शने वाधवी, पोताना डावा हाथ वढे जमणा

हाथने कांडासांथी पकडी ते वडे चन्दननुं कलशना सर्व भागोमां विलेपन करीने पुष्पो चढाववां, ऋद्धि वृद्धि युक्त मीढलपल बांधुं अने चक्रमुद्राए कलशनुो सर्वाङ्ग स्पर्श करवो, पत्नी धूप उलेखीने ४ स्त्रियो द्वारा पुंखणां कराववां.

प्रतिष्ठागुरूपे सुरभि १ परमेष्ठी २ गरुड ३ अंजलि ४ प्रवचन ५ आ पांच गुद्दाओ देखाडची, अने मुरि मंत्रथी अथवा तो-
“ ॐ स्यावरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा॥”

आ मंत्र वडे ३ वार अधिवासना करवी, मंत्र भणीने ३ वार वासक्षेप करी कलश उपर रक्तवत्त आच्छादन करुं, ते उपर जम्बीरादि फलावली नांखवी, सात धान्य नाखुं, अंन आरति उतारवी. आरति उतारतां नीचेनुं पद्य बोलुं.—

दुष्टपुरासुररचितं, नरैः कृतं दृष्टिदोषजं विद्वध् । तद् गच्छत्वत्तिदूरं, भविककृनारारात्रिकविधानैः ॥१॥
आरति उतार्या बाद प्रतिष्ठागुरूपे स्नात्रकारिणी साथे ईर्याविही पडिकमी मूलनायकनुं अथवा “ ॐ नमः पार्श्वनाथाय ”

आ चैत्यवंदन करुं. नमुत्थुणं० कही, अरिहंतचेइआणं करेमि कां०, वंदणवत्ति०, अन्नत्थं०, १ नो०, नमो० स्तुतिः—
अहंस्तनोतु स श्रेयः—श्रियं यद्धथानतो नरैः । अप्यैन्द्री सकलाऽत्रैद्धि, रंद्मसा सहसौच्यत ॥१॥

लोगससं०, सबलोए० अरि०, वंदण०, अन्नत्थं०, १ नो०, स्तुतिः—
ओमितिमन्ता यच्छासनस्य नन्ता सदा यद्इद्धीश्च । आश्रीयते श्रिया ते, भवतो भवतो जिनाः पान्तु ॥२॥

पुक्खवर०, सुअससं०, वंदण०, अन्नत्थं०, १ नोकार, स्तुतिः—
नवत्तत्त्वयुता त्रिपदी-श्रितारुचिज्ञानपुण्यशक्तिमता । अरथर्मकीर्तिविद्या-नन्दाऽऽस्या जैनगीर्जायात् ॥३॥

सिद्धाणं बुद्धाणं, श्रीअधिवासनादेव्यै करेमि का०, अब्रथ०, लोगस०, सागरवरगंभीरा०, नमोर्हव०, स्तुतिः—
पातालमन्तरिक्ष, भवन वा या समाश्रिता नित्यम् । साऽत्राऽवतरतु जैने, कलशे ह्यधिवासनादेवी ॥४॥

श्रुतदेवतायै करेमि का०, अब्रथ०, १ नो०, नमो०, स्तुतिः—

वद वदति न वाग्वादिनि, भगवति ! कः श्रुतसरस्वतिगमेच्छुः ।

रगत्तरंगमतिवर-तरणिस्तुस्य नम इतीह ॥ ५ ॥

शान्तिदेवतायै करेमि का०, अब्रथ०, १ नो०, नमो०, स्तुतिः—

श्रीचतुर्विधसधस्य, शासनोन्नतिकारिणी । शिवशान्तिाकरी भूयाच्छ्रीमती शान्तिदेवता ॥६॥

क्षेत्रदेवतायै करेमि का०, अब्रथ०, १ नो०, नमो०, स्तुति —

यस्याः क्षेत्र समाश्रित्य, सायुभि. साध्यते क्रिया. । सा क्षेत्रदेवता नित्य, भूयान्. सुखदायिनी ॥७॥

शासनदेवतायै करेमि का०, अब्रथ०, १ नो०, नमो०, स्तुतिः—

उपसर्गवलयविलयन-निरता जिनशासनावर्नकरताः । द्रुतमिह समीहितकृते, स्युः शासनदेवता भवताम् ॥८॥

अम्बिकादेव्यै करेमि का०, अब्रथ०, १ नो०, नमो०, स्तुतिः—

अम्बा बालाङ्किताऽङ्गाऽसौ सौख्यव्यति ददातु नः । मार्षिक्यरत्नालङ्कार-चित्रसिंहासनस्थिता ॥९॥

अच्छुतायै करेमि का०, अब्रथ०, १ नो०, नमो०, स्तुतिः—

चतुर्भुजा तडिद्वर्णा, कमलाक्षी वरानना । भद्रं करोतु संघस्या-च्छुसा तुरगवाहना ॥१०॥

समस्तवेआवच०, संति०, सम्मद्विद्धि०, करेमि का०, ? नो०, नमो० स्तुतिः—

संस्वेत्र ये गुरुगुणौघनिवे सुवैषा-वृत्यादिकृत्यकरणैकनियद्वकक्षाः ।

ते शान्तये सह भवन्तु सुराः सुरीभिः, सद्दृष्टयो निखिलविघ्नविघातदक्षाः ॥११॥

? नोकार प्रकट कही नष्टुगुणं०, जावंति चेइआइ०, नमो०, स्तवन—

ओसिति नमो भगवओ, अरिहंतसिद्धाग्रियउवज्ज्ञाय । वरसव्वसाहमुणिसंघ-यम्मतिथ्यप्पवयणस्स ॥१॥

सप्पणव नमो तह, भगवईइ सुअदेवयाइ सुहयाण । सिवसंतिदेवयाणं, सिवपवयणदेवयाणं च ॥२॥

इंदागणिजमनेरइअ-वरुणयाउकुवेरईसाणा । वंभो नागुत्ति दमणहमधि अ सुदिसाण पालाणं ॥३॥

सोम-यम-यरुण-येसमण-वासवाणं तहेय पंचण्हं । तह लोगपालयाणं, मुराइगहाण य नवण्हं ॥४॥

साहंतस्स समवन्नं, मज्झमिणं चेव धम्मणुद्धाणं । सिद्धिमविगयं गच्छउ, जिणाइनवकारओ वणिअं ॥५॥

जयविययाय कहेवा । इति अधिवासना विधिः ।

। अथ कलशप्रतिष्ठा—

लग्नो समय निकट श्रावता पहला सात धानना गरुलानु भाजन तैयार करी—“ ॐ ह्रीं क्ष्वीं सर्वोपद्रव रक्ष रक्ष स्वाहा ।” आ मंत्र ७ बार भणी नलिने मन्त्री पूर्वादि दिशा ममुख उभा रही—

- “ ॐ इन्द्राय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह कलशप्रतिष्ठायाम् आगच्छ स्वाहा ।” १
- “ ॐ अग्नये सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह कलशप्रतिष्ठायाम् आगच्छ स्वाहा ।” २
- “ ॐ यमाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह कलशप्रतिष्ठायाम् आगच्छ स्वाहा ।” ३
- “ ॐ निर्ऋतये सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह कलशप्रतिष्ठायाम् आगच्छ स्वाहा ।” ४
- “ ॐ वरुणाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह कलशप्रतिष्ठायाम् आगच्छ स्वाहा ।” ५
- “ ॐ वायवे सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह कलशप्रतिष्ठायाम् आगच्छ स्वाहा ।” ६
- “ ॐ कुबेराय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह कलशप्रतिष्ठायाम् आगच्छ स्वाहा ।” ७
- “ ॐ ईशानाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह कलशप्रतिष्ठायाम् आगच्छ स्वाहा ।” ८
- “ ॐ नागाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह कलशप्रतिष्ठायाम् आगच्छ स्वाहा ।” ९
- “ ॐ ब्रह्मणे मायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह कलशप्रतिष्ठायाम् आगच्छ स्वाहा ।” १०

उपरलो एक एक मन गेली पूर्वादि एक एक दिशामां जलचुलुक सुगन्धनो छोटो पुष्प अने नलि निक्षेप कर्बो.

ते पत्नी कलश उपरतुं वस्त्राच्छादन दूर करीने मूरि मंत्र वडे मंत्रीने कलश उपर वासशेष करयो, अथवा
“ ॐ वीरे वीरे जयवीरे सेणवीरे महावीरे जये विजये जयन्ते अपराजिते ॐ ह्री स्वाहा ”

आ प्रतिष्ठा मंत्र ७ वार गणीने वासशेष करी कलशानी प्रतिष्ठा करवी.
जो विभ्र प्रतिष्ठाानी साथे कलश प्रतिष्ठा होय तो विवनी अधिवासना साथे कलशनी अधिवासना अने विम्वना अंजन

विधानना समयमां ज कलशप्रतिष्ठा विधि पण करी लेवी.
कलश प्रतिष्ठा करीने नीचे प्रमाणे चैत्यवंदना करवी, इर्यावही पडिकमीने मूलनायकतुं चैत्यवंदन अथवा ॐ नमः पार्व-
नाथाय” ए चैत्यवंदन कही नमुत्थुणं, अरिहंतचेऽथाणं०, करेमि का०, वंदणवत्तिआण०, अन्नत्थ० ? नो०, नमो०, स्तुति--

अर्हस्तनोतु स श्रेयः, श्रियं यच्छयानतो नरैः । अप्येन्द्री मकलाऽत्रैहि, रंहसा महसौव्यन ॥१॥
लोगस०, सबलोण०, अरिहंत चेऽथाणं०, वंदण०, अन्नत्थ०, ? नो०, स्तुतिः--

ओमितिमन्ता यच्छासनस्य नन्ता सदा यदंघीश्च । आश्रीयते श्रिया ते, भवतो भवतो जिनाः पान्तु ॥२॥
पुवखर०, सुअस्स भ०, वंदणवत्ति०, अन्नत्थ०, ? नो०, स्तुतिः--

नवतत्त्वयुतात्रिपदी-श्रितारुचिज्ञानपुण्यशक्तिमता । वरथर्मकीर्तित्रिक्रानन्दाऽऽस्या जेनगीर्जीयात् ॥३॥
सिद्धाणं बुद्धाणं०, प्रतिष्ठादेवतायै करेमि का०, अन्नत्थ०, ? लो०, तागवसं०, नमोऽर्हत्त०, स्तुतिः--
यदधिष्ठिताः प्रतिष्ठाः, सर्वाः सर्वाःसर्पदेषु नन्दन्ति । जिनकलशं सा विगतु, देवता सुप्रतिष्ठमिदम् ॥४॥

श्रुतदेवतायै करेमि का०, अन्त्य०, १ नो०, नमो०, स्तुतिः—
वद वदति न चाग्वादिनि, भगवति कः श्रुतसरस्वतिगमेच्छु । रंगत्तरगामतिवर-तरणिस्तुभ्यं नम इतीह ॥५॥

शान्तिदेवतायै करेमि का०, अन्त्य०, १ नो नमो०, स्तुतिः—
श्रीचतुर्विधसघस्य, शासनोन्नतिकारिणी । शिवशान्तिकरी भूयाञ्छ्रीमती शान्तिदेवता ॥६॥

क्षेत्रदेवतायै करेमि का०, अन्त्य०, १ नो०, नमो०, स्तुतिः—
यस्याः क्षेत्र समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रिया । सा क्षेत्रदेवता नित्य, भूयान नः सुखदायिनी ॥७॥

शासनदेवतायै करेमि का०, अन्त्य०, १ नो०, नमो०, स्तुतिः—
उपसर्गवलयविलयन-निरता जिनशासनावनैकरता । द्रुतमिह समीहितकृते, स्युः शासनदेवता भवताम् ॥८॥

अनादेव्यै करेमि का०, अन्त्य०, १ नो०, नमो०, स्तुतिः—
अम्बा चालांकितांकाऽसौ, सौख्यख्यातिं ददातु नः । माणिक्यरत्नालकार-चित्रसिंहासनस्थिता ॥९॥

अच्छुभ्रायै करेमि का०, अन्त्य०, १ नो०, नमो०, स्तुतिः—
चतुर्भुजा तडिद्धर्णा, कमलाक्षी वरानना । भद्र करोतु सघस्या-ऽच्छुसा तुरगवाहना ॥१०॥

समस्तवेद्यावच्यग० सति० सम्महि० करेमि का०, अन्त्य०, १ नो०, नमोऽर्द्ध०, स्तुतिः—
सवेऽत्र ये गुरुगुणौघनिवे सुवेया-वृत्त्यादिकृत्यकरणैकनिबद्धरुक्षाः ।

ते शान्तये सह भवन्तु सुराः सुरीभिः, सदृष्टयो निखिलविघ्नविघातदक्षाः ॥११॥

१ नोकार गणी बेसी नमुत्थुणं, जावति चेहं, नमो०, स्तवनः—

ओमिति नमो भगवओ, अरिहंतसिद्धायरियउवज्जाय। वरसन्वसाहुसुणिसंघ-धम्मतिथप्पवयणस्स ॥१॥
सप्पणव नमो तह. भगवईइ सुअदेवयाह सुहयाए। सिवसंतिदेवयाणं, सिवपवयणदेवयाणं च ॥२॥
इंदागणिजमनेरइअ-वरुणवाउकुनेरईसाणा। बंभो नागुत्ति दसण्ह-मवि अ सुदिसाण पालाणं ॥३॥
सोमयमवरुणवेसमण-वासवाणं तहेव पंचण्हं। तह लोगपालयाणं, सुराइगहाण य नवण्हं ॥४॥
साहंतस्स समक्खं, मज्झमिणं चव धम्मणुट्ठाणं। सिद्धिमविग्घं गच्छउ, जिणाइनवकारओ धणिअं ॥५॥

अंते जयवीयराय कहेवा. पछी सकल संघ सहित प्रतिष्ठाचार्य अक्षतोथी अञ्जलि भरी कलश मासे उमा रही निम्नोक्त मंगल गाथाओनो पाठ करे— नमोऽर्हत सिद्धाचार्यो.

जह सिद्धाण पइहा, तिलोक्खूडामणिम्म सिद्धिपए। आचंदस्सरिअं तह, होउ इमा सुप्पइइत्ति ॥१॥
जह सग्गस्स पइहा, समत्थलेयस्स मज्झयारंमि। आचंदस्सरिअं तह, होउ इमा सुप्पइइत्ति ॥२॥
जह मेरुस्स पइहा, दीवससुट्ठाण मज्झयारंमि। आचंदस्सरिअं तह, होउ इमा सुप्पइइत्ति ॥३॥
जह जम्बुस्स पइहा, जम्बुद्वीवस्स मज्झयारंमि। आचंदस्सरिअं तह, होउ इमा सुप्पइइत्ति ॥४॥
जह लवणस्स पइहा, समत्थउददहीण मज्झयारंमि। आचंदस्सरिअं तह, होउ इमा सुप्पइइत्ति ॥५॥

माथाओ भणीने प्रतिष्ठाचार्य तथा सकल संघ अक्षताञ्जलि कलश उपर नाखी कलशने वधावे, श्रावक पण पुष्पांजलि कलश

उपर चढावीने, वधावे, पळी प्रतिष्ठागुहाए कलश प्रतिष्ठा विषयकः धर्मदेशनाः करावी.

सूचना-कलशा प्रतिष्ठा जो विम्व प्रतिष्ठानी साये ज होय तो विम्वना अजन विधाननाः समयमा कलश प्रतिष्ठा. पण करावी, अने विम्व स्थापनाना समयमा कलश पण शिखर उपर पंचरत्न न्यास पूर्वकः स्थापन करावो; अने केवल कलशनी ज, प्रतिष्ठा होय तो अधिवासना अने प्रतिष्ठाना प्रारंभिक कार्यो थया पळी शुभ लक्ष्म्या शिखर उपर पंचरत्न स्थापन पूर्वक कलशः स्थापने प्रतिष्ठा मत्र भणी चामक्षेप करी प्रतिष्ठित करावो. अथवा नीचे प्रतिष्ठाः कर्या पळी बीजा शुभ समये शिखर उपर स्थापन करवामां आवे तो पण, विहित छे

॥११ ध्वजदण्डप्रतिष्ठा-

वंशादिकाष्ठजं ध्वज-दण्डं पूर्वं पवित्रयेत् । स्नानादिविधिना पश्चात्, सुलक्ष्मे संप्ररोपयेत् ॥१७१॥

भा०टी०---वधमय होय अथवा अन्य काष्ठमय ध्वजदंड होय, तेने पहिला विधिपूर्वक अभियेक करावी शुद्ध करावो अने पळी शुभ लक्ष्ममां शिखर उपर आरोपनो जोडये

ध्वज दण्डनी प्रतिष्ठाने माटे पण भूमिशुद्धि करी तेनो सुगन्ध जल पुष्पादि वडे सत्कार करावो, मंडपनी रचना करावी, दण्ड स्थापन योग्य पंचरत्न गर्भित वेदी ननाववी, नगंग वेदी गाथनी जवारा वाग्वा, पवित्र जलाशययी जल लाववुं, अमारी घोषणा कराववी, संघने आमंत्रण करावु, १० दिग्पालोनी स्थापना करावी अने नन्धावर्तनुं आलेखन-पूजन करावुं.

प्रथम पवित्र जलाशयथी मंगवेल जलथी वेदी आगे स्थापित प्रतिमाने स्नात्र करुं, पत्नी त्रलिवाकुलना भाजनमां पुष्प वास मेवो आदि नाखीने-

“ ॐ ह्रीं क्ष्वीं सर्वोपद्रवं रक्ष रक्ष स्वाहा । ”
आ मंत्र बडे ७ वार बलि मंत्री पूर्वादि दिशा संमुख उभा रहीने-

- “ ॐ अग्नये सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह ध्वजारोपणे विधौ आगच्छ आगच्छ स्वाहा । ” १
- “ ॐ यमाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह ध्वजारोपणे विधौ आगच्छ २ स्वाहा । ” २
- “ ॐ निरृक्तये सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह ध्वजारोपणे विधौ आगच्छ २ स्वाहा । ” ३
- “ ॐ वरुणाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह ध्वजारोपणे विधौ आगच्छ २ स्वाहा । ” ४
- “ ॐ वायवे सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह ध्वजारोपणे विधौ आगच्छ २ स्वाहा । ” ५
- “ ॐ कुबेराय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह ध्वजारोपणे विधौ आगच्छ २ स्वाहा । ” ६
- “ ॐ ईशानाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह ध्वजारोपणे विधौ आगच्छ २ स्वाहा । ” ७
- “ ॐ नागाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह ध्वजारोपणे विधौ आगच्छ २ स्वाहा । ” ८
- “ ॐ ब्रह्मणे सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह ध्वजारोपणे विधौ आगच्छ २ स्वाहा । ” ९
- “ ॐ इन्द्राय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह ध्वजारोपणे विधौ आगच्छ २ स्वाहा । ” १०

आ मंत्रो पंकीनो १-१ मत्र गेली पूर्वादि एक एक दिशामा जलचुलुरु १, केसर चंदननो छाटो २, पुष्पलेप ३, अने सप्तधान बलि ४, निक्षेप करवो

ए पछी अखंड बह्वधारी प्रतिष्ठागुह नीचेना मंत्रे पोताना आत्मानुं सकलीकरण करवु-

ॐ नमो अरिहंताण-हृदय उपर, ॐ नमो सिद्धाण-मस्तक उपर, ॐ नमो आयरियाण-शिखा उपर,
ॐ नमो उवज्झायाण-सर्वाङ्गावरण, ॐ नमो लोण सन्धसाहूण-हस्ते आयुध.

सम्लीकरण करी नीचे लखेल-

“ ॐ नमो अरिहंताणं, ॐ नमो सिद्धाण, ॐ नमो आयरियाण, ॐ नमो उवज्झायाण, ॐ नमो लोण
सन्धसाहूण, ॐ नमो सन्धोसहिपत्ताण, ॐ नमो विज्जाहराण, ॐ नमो अंगासगामीणं, ॐ कः क्षः नमः
अशुचिः शुचिर्भवामि स्वाहा ”।

आ शुचिविधा ५ अथवा ७ वार जयी आत्मासां आरोपनी पछी प्रतिष्ठाचार्ये उपयुक्त सकलीकरण विद्या वडे स्नात्रकारो-
ने पण अभिमन्त्रित करी तेमनी अण-रक्षा करनी

ए पछी प्रतिष्ठाचार्ये मंगलार्थे संघ सहित नीचेनी त्रिधिधी देववंदन करवु

इयंविधो प्रतिक्रमण पूर्वक मूलनायकवु. चैत्यवंदन बोलवु, तेना अभावमा “ ॐ नमः पार्थनाथाय ” ए चैत्यवंदन कही
नमुर्युर्ण०, श्रिंहित चेइयाणं०, वंदणवत्ति०, अन्नत्थ०, नोकार०, नमोऽदंत०, स्तुतिः-

अहंस्तनोतु स श्रेयः-श्रियं यद्ब्रह्मानतो नरैः । अप्यैन्द्री सकलाऽत्रैहि, रंहसा सहसौच्यत ॥१॥

लोगस्स०, सव्वलोए अरिहतं, वंदणं, अन्नत्थं, १ नो०, स्तुतिः—

ओमिति मन्ता यच्छासनस्य नन्ता सदा यदंङ्गीश्र । आश्रीयते श्रिया ते, भवतो भवतो जिनाः पान्तु ॥२॥

पुवखवरं, सुअस्सं, वंदणं, अन्नत्थं, १ नो०, स्तुतिः—

नवतत्त्वयुता त्रिपदी-श्रिता रुचिज्ञानपुण्यशक्तिमता । वरधर्मकीर्तिविद्या-नंदाऽऽस्या जैनगीर्जियात् ॥३॥

सिद्धाणं बुद्धाणं, श्रीशान्तिनाथ आराधनार्थं करेमि कां, वंदणं, अन्नत्थं, लोगस्सं सागरवरगं, नमो०, स्तुतिः—

श्रीशान्तिः श्रुतशान्तिः, प्रशान्तिकोऽसावशान्तिसुपशान्तिम् ।

नयतु सदा यस्य पदाः, सुशान्तिदाः संतुषन्ति जने ॥४॥

श्रुतदेवतायै करेमि कां, अन्नत्थं, १ नो०, नमो०, स्तुतिः—

वद् वदति न वाग्वादिनि, भगवति कः श्रुतसरस्वतिगमेच्छुः । रद्गत्तरङ्गमतिवर-तरणिस्तुभ्यं नम इतीह ॥५॥

क्षेत्रदेवतायै करेमि कां, अन्नत्थं, १ नो०, नमो०, स्तुतिः—

यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रिया । सा क्षेत्रदेवता नित्यं, भूयान् नः सुखदायिनी ॥६॥

शासनदेवतायै करेमि कां अन्नत्थं, १ नो०, नमो०, स्तुतिः—

उपसर्गवलयविलयन-निरता जिनशासनावनेकरताः । द्रुतमिह समीहितकृते, सुःशासनदेवता भवताम् ॥७॥

समस्तवेआमन्वराण सति० सम्मद्वि० करेमि का०, अन्त्य०, १ नो, नमो०, स्तुतिः०-

संघेज्ज ये गुण्युणौघनिधे सुवैया-द्वृत्यादिकृत्यकरणेकनिवद्धकक्षाः ।

ते शान्तये सह भवन्तु सुराः सुरोभिः, सद्दृष्टयो निखिलविघ्नविघातदक्षाः ॥८॥

१ नोकार प्रकट रुही नम्रपुण०, स्तनने यदले लघुशान्ति रुही, जयमीयाय कहेवा-

अधिवासना-

पछी श्रावके वन्ने हाथमा पुण्याञ्जलि लेड-

अभिनवसुगन्धचिकसित-पुष्पौघभृता सुगन्धधूपाढया ।

दण्डोपरि निपतन्ती, सुखानि पुष्पाञ्जलिः कुरुताम् ॥१॥

आ काव्य बोली धजदण्ड उपर नाखवी अने चन्दन छाटवुं, आ वखते प्रतिष्ठाचार्ये वे मध्यमा आंगलिओ उंची करी क्रूर दृष्टि करी तर्जनी मुद्रा देखाडमी, श्रावके डागा हाथमा जल लेई दड उपर शोखोटवुं अने दण्डने तिलक करवुं, पुष्पो धूप उखेचवो

प्रतिष्ठागुरुए दण्डने मुद्गर मुद्रा देखाडवी अने-

“ॐ ह्रीं क्ष्मीं सर्वोपद्रवं रक्ष रक्ष स्वाहा ।”

आ मंत्रनो न्यास करी दण्डनी दृष्टिक्षा कस्यी. श्रावके दण्ड उपर सप्त धान्यनो प्रक्षेप करी धान्य स्नान कराववु. ए पछी

दण्डना-१ सुवर्णजल, २ रत्नजल ३ कपायजल ४ मृत्तिका ५ मूलिका ६ अष्टवर्ग ७ सैवीयधि ८ गन्ध ९ वास १० चन्दने
११ कुंकुम (केसर) १२ तीर्थजल १३ कर्पूरजल, आ १३ अभिषेक करवा. तेमां
१-सुवर्णस्नात्र-सोनाना ४ कलशो जले भरीने अथवा जलमां सुवर्ण चूर्ण नाखीने-“नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-
सुपवित्रतीर्थनीरेण, संयुतं गंधपुष्पसंमिश्रम् । पततु जलं दण्डोपरि, सहिरण्यं मंत्रपरिप्लवम् ॥१॥

आ काव्य बोली दण्ड उपर अभिषेक करवो, तिलक करुं, पुष्प चढाववां, धूप उखेववो.
२-पंचरत्नस्नात्र-पंचरत्ननुं चूर्ण अथवा पंचरत्ननी पोदली जलमध्ये नाखी, तेना ४ कलशा भरी नमोऽर्हत् ० कही-
नानारत्नौघयुतं, सुगंधिपुष्पाधियासितं नीरम् । पतताद्विचित्रवर्जं, मन्त्राढ्यं स्थापनादण्डे ॥२॥

३-कषाय छाल जलस्नात्र-कषाय छालनुं चूर्ण जलमां नाखी, तेना ४ कलशा भरी नमोऽर्हत् ० कही-
प्लक्षाश्चतुर्दुग्धैर-शिरीषछल्ल्यादिकल्कसंमिश्रम् । दण्डे कपायनीरं, पततादधियासितं जेने ॥३॥
आ काव्य बोली अभिषेक करवो, तिलक करुं, पुष्पो चढाववां, धूप उखेववो.
४-मृत्तिकास्नात्र-मंगलमाटीनुं चूर्ण जलमां नाखी तेना ४ कलशा भरी नमोऽर्हत् ० कही-
पर्वतसरोनदीसंगमादिमृद्भिश्च मंत्रप्राप्ताभिः । उदरार्थं ध्वजदण्डं, स्नपयाम्यधियासनासमये ॥४॥

आ काव्य बोली अभिषेक करवो, तिलक करुं, पुष्प चढावी धूप उखेववो.

५-मूलिकास्नात्र-मूलिका चूर्णं जलमां नाखी ४ कलशा भरी नमोऽर्हत् ० कही-
सुपचित्रचलिकावर्ग-मदिते तदुदकस्य शुभधारा । दण्डेऽधिवाससमये, यच्छतु सौख्यानि निपतन्ती ॥६॥

आ काव्य बोली अभिषेक करवो, तिलक करवु, पुष्प चढाववा, धूप उखेववो.

६-अष्टवर्गस्नात्र-अष्टवर्गनु चूर्णं जलमा नाखी ४ कलशा भरी नमोऽर्हत् ० कही-

नानाकुश्रावौपधि-सन्मृष्टे तद्युतं पतन्नीरम् । दण्डे कृतसन्मंत्रं, कर्मौघं हन्तु भव्यानाम् ॥६॥

आ काव्य बोली अभिषेक करवो, तिलक करवु, पुष्पो चढाववा, धूप उखेववो.

७-सर्वौपधिस्नात्र-सर्वौपधिवूर्णं जलमा नाखी ४ कलशा भरी नमोऽर्हत् ० कही-

सकलीपधिसंयुतया, सुगन्धया'वर्षित सुगतिहेतोः । स्नपयामि ध्वजदण्डं, मन्त्रिततन्नीरनिबहेन ॥७॥

आ काव्य बोली अभिषेक करवो, तिलक करवु, पुष्पो चढाववा, धूप उखेववो.

८-गन्धस्नात्र-गन्धचूर्णं जलमा नाखी ४ कलशा भरी नमोऽर्हत् ० कही-

गन्धाङ्गस्नानिकया, सन्मृष्टं तदुदकस्य धाराभिः । स्नपयामि ध्वजदण्ड, कर्मौघोच्छित्तये शिवदम् ॥८॥

आ काव्य भणी अभिषेक करवो, तिलक करवु, पुष्पो चढाववा, धूप उखेववो

९-वासस्नात्र-वासचूर्णं जलमा नाखी ४ कलशा भरी नमोऽर्हत् ० कही-

हृद्यैराहादकरैः, स्पृहणीर्यैर्मन्त्रसंस्कृतैर्दण्डम् । स्नपयामि सुगतिहेतो-र्गसैरधिवासितं सार्वम् ॥९॥

- आ काव्य बोली अभिषेक करवो, तिलक करुं, पुष्पो चढाववां, धूप उखेववो,
१०-चन्दनस्नात्र—वसेल चन्दनो वोल जलमां नाखी, ४ कलशा भरी नमोर्हव० कही—
शीतलसरससुगन्धि-र्मनोमतश्चन्दनद्रुमससुत्थः । चन्दनकल्कः सजलो, मंत्रयुतः पततु वरदण्डे ॥१०॥
आ काव्य बोली अभिषेक करे, तिलक करे, पुष्पो चढावे, धूप उखेवे,
११-केसरस्नात्र—वसेल केसरनो वोल जलमां नाखी, ४ कलशा भरी नमोर्हव० कही—
कादमीरजसुचिलिसं. दण्डं तन्नीरधारयाऽभिनवम् । सन्मंत्रयुक्तया शुचिं, जैनं स्नपयामि सिद्धयर्थम् ॥११॥
आ काव्य बोली अभिषेक करवो, तिलक करुं, पुष्पो चढाववां. धूप उखेववो,
१२-तीर्थजलस्नात्र—अभिषेक योग्य जलमां तीर्थजल मेलवी, ४ कलशा भरी नमोर्हव० कही—
जलधि-नदी-हृद-कुण्डेषु, यानि तीर्थोदकानि शुद्धानि । तैर्मन्त्रसंस्कृतैरिह, दण्डं स्नपयामि शुद्धयर्थम् ॥१२॥
आ काव्य बोली अभिषेक करवो, तिलक करुं, पुष्पो चढाववां, धूप उखेववो,
१३-कर्पूरस्नात्र—कण्डुं चूर्ण अभिषेक योग्य जलमां नाखी, ४ कलशा भरी नमोर्हव० कही—
शशिकरतुषारधवला, उज्ज्वलगंधा सुतीर्थजलमिथ्या । कर्पूरोदकधारा सुमन्त्रपूता पततु दण्डे ॥१३॥
आ काव्य भणी दण्डनो अभिषेक करवो, तिलक करुं, पुष्पो चढाववां, धूप उखेववो.
ए पही श्वेत अथवा पीला २७ सर्पवोनी पोटली दंडने डावा हाथे जगणो हाथ पकडी ते वडे दण्डना सर्वाङ्गि

चन्दन-केसरु विलेपन करतु. फूलो चढाववा, काष्ठिवृद्धि सहित मीठल फलतुं कंकण बांधतु. अने चक्रमुद्राए दण्डनो सर्वाङ्ग
सर्पों कारवो. पछी धूप उखेयी ४ खीओ द्वारा दढने पुंलाववो.

प्रतिष्ठाएरए १ सुरभि २ परमेष्ठी ३ गरुड ४ अंजलि ५ प्रवचन, ए पाच मुद्राओ देखाडवी अने लग्न समय आवता सुरि-
मंत्र वडे अथवा “ ॐ श्री ठः ” आ मन्थी ७ गार ष्वजदण्डने अभिमंत्रित करी मासक्षेप करनो, अने लाल वस्त्रे आच्छादित
करवो, घजा उपर पण पूर्वोक्त मंत्रे वासक्षेप करी धूप उखेयी तेने अधिवासित करवी, उपर ह्रीं लखतुं आगल फलावलि ढोकवी
अने जवाराना पात्रो चारे तरफ मूरुवा, उपर सात धान्य नाखवा अने आरति उतारवा. आरति उतारवा नीचेतुं पद्य बोलतुं-

दुष्टसुरासुररचितं, नरैः कृतं दृष्टिदोषज चिह्नम् । तद् गच्छत्वतिदूर, भविककृताराधिकविधानैः ॥१॥

आरति उतार्या गद् प्रतिष्ठापुरए स्नानकारोनी साथे इर्यावही करी मूलनायकतुं अथवा “ ॐ नमः पार्श्वनाथाय ” इत्यादि
चैत्यंदन कही नमृत्युणं० अरिहत चैइशा० करमि० वंदण० अन्त्य०, १ नो०, नमो०, रुहो स्तुतिः-
अहस्तनोतु स श्रेयः श्रियं यद्वृथानतो नरैः । अप्यैन्द्री सकलाऽत्रैहि, रहसा सहसौच्यत ॥१॥

लोगसस०, सव्वलोण० अरिहत०, वदण०, अन्त्य०, १ नो०, स्तुतिः-

ओमिति मन्ता यच्छासनस्य नन्ता सदा यद्दुर्गीश्च । आश्रीयते श्रिया ते, भवता भवतो जिनाः पान्तु ॥२॥

पुष्पस्ववारदी०, सुअस०, वंदण०, अन्त्य०, १ नो०, स्तुतिः-

नवतत्त्वयुता त्रिपदी-श्रिता रचिज्ञानपुण्यशक्तिमता । वरधर्मकीर्तिविद्या-नन्दाऽऽस्या जैनगीर्जायात् ॥३॥

सिद्धाणं बुद्धाणं, अधिवासना देव्यै करेमि का०, अन्त्य०, १ नो०, नमोऽर्हत० स्तुतिः-
पातालमन्तरिक्षं, भवनं वा या समाश्रिता नित्यम् । साञ्चाऽवतरतु जैने, दण्डे ह्यधिवासनादेवी ॥४॥
श्रुतदेवतायै करेमि का०, १ नो०, नमो० स्तुतिः-
वद वदति न वाग्वादिनि, भगवति कः श्रुतसरस्वतिगमेच्छुः । रत्नारङ्गमतिवर-तरणिस्तुभ्यं नम इतीह ॥५॥
शान्तिदेवतायै करेमि का०, अन्त्य०, १ नो०, नमो० स्तुतिः-
श्रीचतुर्विधसंघस्य, शासनोन्नतिकारिणी । शिवशान्तिकरी भूयाच्छ्रीमती शान्तिदेवता ॥६॥
क्षेत्रदेवतायै करेमि का०, अन्त्य०, १ नो०, नमो० स्तुतिः-
यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रिया । सा क्षेत्रदेवता नित्यं, भूयान् नः सुखदायिनी ॥७॥
शासनदेवतायै करेमि का० अन्त्य०, १ नो०, नमो० स्तुतिः-
उपसर्गवलयविलयन-निरता जिनशासनावैकरताः । हुतमिह समीहितकृते, स्युः शासनदेवता नित्यम् ॥८॥
अम्बादेव्यै करेमि का०, अन्त्य०, १ नो०, नमो० स्तुतिः-
अम्बा बालाङ्किताङ्गाऽसौ, सौख्यख्याति ददातु नः । माणिक्यरत्नालङ्कार-चित्रसिंहासनस्थिता ॥९॥
चतुर्भुजा तडिङ्गर्णा, कमलाक्षी वरानना । भद्रं करोतु संघस्याऽष्टुसा तुरगवाहना ॥१०॥

समस्तवेद्यावन्च० सति० सम्म० ऋग्मि-का०, अन्त्य०, १ नो०, नमो० स्तुतिः-

सर्वेऽत्र येः गुरुणुगौघनिधेः सुवैया-दृश्यादिकृत्यकरणैकनिबद्धकक्षाः ।

ते शान्तये सह भवन्तु सुराः सुरीभिः, सद्दृष्टयो निखिलविघ्नविघातदक्षाः ॥१२॥

१ नोकार प्रकृत कही वंसी नमुत्पुण० जावति चैऽआइ० नमोऽर्हत० स्तवन-

ओमिति नमो भगवओ, अरिहृतसिद्धारियउवज्जाय । वरसव्वसाहुसुणिसघ-धम्मत्तित्थप्पवयणस्स ॥१॥

सप्पणव नमो तह भगवईड सुअदेवयाइ सुहयाए । सिवसत्तिदेवयाण, सिवपवयणदेवयाण च ॥२॥

इदागणिजमनेरइअ-वरुणयाउकुवेरईसाणा । वंभो नागुत्ति दसण्ह-मचि अःसुदिसाण पालाण ॥३॥

सोमयमवरुणवेसमण-वासचाण तहेव पंचण्हं । तह लोगपालयाण, सुराइगहाण य नवण्हं ॥४॥

साहतस्स समक्ख, मज्झमिण चैव धम्मणुद्धाण । सिद्धिमविघघ गच्छउ, जिणाइनवकारओ धणिअं ॥५॥

जयभीषाय' कहेया । इति अधिवासना ।

प्रतिष्ठा—लघनो ममय निरुत आवता प्रथम सात वानना वाकुलातु भाजन तैयार करी—

“ ॐ ह्रीं ह्रीं सर्वोपद्रवं रक्ष रक्ष स्वाहा ”

आमत्र ७ वार भणी वल्लिने मंत्री पूर्यदि दिशासमुख उभा रही—

ॐ इन्द्राय सायुधाय सचाहनाय सपरिकराय इह ध्वजारोपणविधौ आगच्छ आगच्छ स्वाहा ॥१॥

ॐ अग्रये सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह ध्वजारोपणविधौ आगच्छ आगच्छ स्वाहा ॥२॥
 ॐ यमाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह ध्वजारोपणविधौ आगच्छ आगच्छ स्वाहा ॥३॥
 ॐ निर्ऋतये सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह ध्वजारोपणविधौ आगच्छ आगच्छ स्वाहा ॥४॥
 ॐ वरुणाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह ध्वजारोपणविधौ आगच्छ आगच्छ स्वाहा ॥५॥
 ॐ वायवे सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह ध्वजारोपणविधौ आगच्छ आगच्छ स्वाहा ॥६॥
 ॐ कुबेराय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह ध्वजारोपणविधौ आगच्छ आगच्छ स्वाहा ॥७॥
 ॐ ईशानाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह ध्वजारोपणविधौ आगच्छ आगच्छ स्वाहा ॥८॥
 ॐ नागाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह ध्वजारोपणविधौ आगच्छ आगच्छ स्वाहा ॥९॥
 ॐ ब्रह्मणे सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह ध्वजारोपणविधौ आगच्छ आगच्छ स्वाहा ॥१०॥

उपर प्रमाणे एक एक ग्रहसुं आह्वान करी पूर्व आदि एक एक दिशामां जलनो चुलुक, सुगन्धनो छंदो, पुष्प अने वलि निक्षेप करवो.

पछी लग्नसमय आवतां दण्ड उपरसुं वस्त्र दूर करी स्मरिमंत्र वडे मंत्रीने अथवा “ ॐ वीरे वीरे जयवीरे सेणवीरे महावीरे जये विजये जयन्ते अपराजिते ॐ ह्रीं स्वाहा ।”

आ प्रतिष्ठा मंत्र ७ वार ऋषीने वामक्षेप करी दण्ड अने ध्वजानी प्रतिष्ठा करवी.

जो निचप्रतिष्ठानी साथे ज ध्वजदण्डनी प्रतिष्ठा होय तो विम्व अधिवासना साथे दण्डनी अधिवासना तथा त्रिचना अंजन विधाननी साथे दहनं प्रतिष्ठाविधान करी लेबु. ध्वजदण्ड उपर प्रतिष्ठानो वासक्षेप कर्यो पछी नीचे प्रमाणे चैत्यदना कवी-
 इयाविही पडिकमीने मूलनायकनुं चैत्यदन अधवा “ ॐ नमः पार्श्वनाथाय ” आ चैत्यदन कही नमुत्थुण० अरिहंत०
 करेमि का० वंदण०, अन्नत्य०, १ नो०, नमो० स्तुतिः--

अहंस्तनोतु स श्रेयः, श्रियं यद्ध्यानतो नरैः । अप्यैन्द्री सकलाऽत्रैहि, रंहसा सहस्रौच्यत ॥१॥

लागसस०, सव्वलोए० अरिहत चेहआण०, वदण०, अन्नत्य०, १ नो०, स्तुतिः--

ओमितिमन्ता यच्छासनस्य नन्ता सदा यद्दधीच्च । आश्रीयते श्रिया ते, भवतो भवतो जिनाः पान्तु ॥२॥

पुखर०, मुखस म०, वंदणवचि०, अन्नत्य०, १ नो०, स्तुतिः--

नवतत्त्वयुतात्रिपदी-श्रितारुचिज्ञानपुण्यशक्तिमता । वरधर्मकीर्तिविद्यानन्दाऽस्या जैनगीर्जीयात् ॥३॥

सिद्धाण बुद्धाण०, प्रतिष्ठादेवतायै करेमि का०, अन्नत्य०, १ लो०, मागस्वरगं०, नमोर्द्धत०, स्तुतिः--

यदधिष्ठिताः प्रतिष्ठाः, सर्वाः सर्वास्पदेषु नन्दन्ति । श्री ध्वजदण्डं मा विशतु, देवता सुप्रतिष्ठमिदम् ॥४॥

श्रुतदेवतायै करेमि का०, अन्नत्य०, १ नो०, नमो०, स्तुतिः--

वद वदति न चाग्वादिनि, भगवति कः श्रुतसरस्वतिगमेच्छु । रंगत्तरगमतिवर-तरणिस्तुभ्यं नम इतीह ॥५॥

शान्तिदेवतायै करेमि का०, अन्नत्य०, १ नो नमो०, स्तुतिः--

श्रीचतुर्विधसंघस्य, शासनोन्नतिकारिणी । शिवशान्तिकरी-भूयाच्छ्रीमती शान्तिदेवता ॥६॥

क्षेत्रदेवतायै करेमि का०, अन्नत्थ०, १ नो०, नमो०, स्तुतिः--

यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रिया । सा क्षेत्रदेवता नित्यं, भूयान् नः सुखदायिनी ॥७॥

शासनदेशतायै करेमि का०, अन्नत्थ०, १ नो०, नमो०, स्तुतिः--

उपसर्गवलयविलयन-निरता जिनशासनान्वनैकरता । द्रुतमिह समीहितकृते, स्युः शासनदेवता भवताम् ॥८॥

अंबादेव्यै करेमि का०, अन्नत्थ०, १ नो०, नमो०, स्तुतिः--

अम्बा बालाङ्किताङ्काऽसौ, सौख्यव्यालिं ददातु नः । स्याणियग्रत्नालंकार-चित्रसिंहासनस्थिता ॥९॥

अञ्जुसायै करेमि का०, अन्नत्थ०, १ नो०, नमो०, स्तुतिः--

चतुर्भुजा तडिद्वर्णा, कमलाक्षी वरानना । भद्रं करोतु संघस्या-ञ्छुषा तुरगवाहना ॥१०॥

समस्तवेआवच्चग० संति० सम्महि० करेमि का०, अन्नत्थ०, १ नो०, नमोऽर्हत्०, स्तुतिः--

संघेऽत्र ये गुरुगुणौघनित्रे सुवैया-वृत्त्यादिकृत्यकरणैकनिचन्द्रकक्षाः ।

ते शान्तये सह भवन्तु सुराः सुरीभिः, सदृष्टश्री-निखिलविघ्नविघातदक्षाः ॥११॥

१ नोकार गणनी वेसी नमुत्थुणं० जावंति० नमोऽर्हत्० स्तवनने ठेकाणे लघुशान्ति कही, जयवीरराय कहेवा, ए पछी

सकल संघनी साथे प्रतिष्ठाचार्य अक्षतांजलि भरी ध्वजदण्ड सामे उभा रही, मंगलगाथाओनो पाठ करी अक्षताञ्जलि दंड उपर नाले;

हने ध्वजेने दण्ड उपर चढानी, देशचारे जो दण्ड अने ध्वजना चढावा जुदा बोलाया होय तो ध्वजा थालीमा जुदी राखवी, चढानानो समय निरुट आवता ध्वजादण्ड उठावीने चैत्यने ३ षट्क्षिणा करी शिखर उपर चढावो

शिखर उपर चढी प्रथम शिखरना कलश उपर—
कुलधर्मजातिलक्ष्मी-जिनगुरुभक्तिप्रमोदितोन्नतिदे । प्रासादे पुष्पाञ्जलि-रयमस्मत्करकृतो भूयात् ॥१॥

आ काव्य बोली पुष्पाञ्जलि नाखनी, अने—

चैत्याग्रता प्रपन्नस्य, कलशस्य विशेषतः । ध्वजारोपविधौ स्नान, भूयाद् भक्तजनैः कृतम् ॥१॥

आ श्लोक बोली शिखरना कलशने न्हवण करावुं, पछी ध्वजदंड जेमा स्थापवानो छे ते ध्वजाधारमा पचरत्ननो न्यास करवो, अने शुभगृहदृष्ट शुभलग्ना शुभनमागमा ध्वजदंड स्थापित करवो, छरिस्मिन् वंडे ते उपर वासक्षेप करवो, आगल फलो दीकवा, गोहुं तल आदिना ५-५ लाडना 'कांकरिया' आदि नलि होयो.

ध्वजदण्ड मूलनायकना जमणा हाथ तरफना पाछलना पडरा उपर सीधो उभो करवो

ध्वजदण्ड रोप्या पछी प्रतिष्ठाचार्ये प्रवचनमुद्राए नीचे प्रमाणे देशना करी.—

देवस्याश्रयतने भक्त्या, ध्वजमारोपयन्ति ये । त्रैलोक्यश्रीस्तनोत्संगे, स्व समारोपयन्ति ते ॥१॥

धत्ते ध्वजोऽत्र धन्यानां, सुरसद्वशिरःस्थितः । तरङ्गिततनुः साक्षात्, स्वर्गनिःश्रेणिरूपताम् ॥२॥

यावन्तः प्राणिनस्तत्र, लग्नाः स्युः प्रदक्षिणाः । तावन्तः प्राप्नुवन्त्यत्र, शिवस्थानमनुत्तमम् ॥३॥

भा०टी०—जे मनुष्यो देवमंदिर उपर भक्तिपूर्वक धजा चढावे छे, तेओ पोताने त्रण लोकनी लक्ष्मीना उरःस्थल उपर आरूढ करे छे, देवमंदिरना मस्तक उपर रक्षीने फरकनी आ धजा आग्रयाली मनुष्योने माटे साक्षान् स्वर्गनी नीमरणी रूप छे. जेटला जीवो भावपूर्वक आ धजादण्डनी प्रदक्षिणा करे छे, ते सर्व उत्तमोत्तम मवा मोक्षप्राप्तने पासे छे, इत्यादि धजा-रोपणतुं फल सांभलीने चढावनार पोताना आत्मानं कृताकृत्य मानवो देव, गुरु, संगनी पूजा करी यथाशक्ति दीन दूलीने अन्न-दानादिकथी संतुष्ट करे.

ध्वजागतितुं श्रुभाशुभफल—

ध्वजदंड आरोपी ध्वजा छोडीने तेनी गति उपरथी निमित्त जीवों. ध्वजा पवनता प्रयोगथी कलशथी ? हाथ उंची चढे, तो चढावनार रोगादिकना भयथी मुक्त रहे, ध्वजा जो २ हाथ उंची जाय तो चढावनारने सन्तानवृद्धि थाय छे, ध्वजा जो ३ हाथ उंची चढे तो चढावनारना बेर धनधान्यनी वृद्धि थाय छे, ध्वजा जो ४ हाथ उंची जाय तो रजाने घरे वृद्धि थाय, ध्वजा जो ५ हाथ उंची उडे तो सुभिक्ष थाय अने राष्ट्रनी वृद्धि थाय छे.

ध्वजा पथम उडीने पूर्व दिशा तरफ जाय तो चढावनारनी सर्व इच्छाओ पूर्णं थाय छे, ध्वजा प्रथम आश्वय क्रौणमां जाय तो ताप संताप करावे, ध्वजा जो दक्षिणमां जाय तो रोगभय उत्पन्न करे, ध्वजा जो तैर्कत क्रौणमां जाय तो आकरा रोगने उपजावे, ध्वजा जो पश्चिम तरफ जाय तो कर्ताने विषे मंत्रीभाव वनारे, ध्वजा वायव्यक्रौणमां जाय तो धान्यनी संपत्ति वयारे. ध्वजा उत्तर तरफ उडे तो धननो लाभ करावे, ध्वजा ईशानमां जाय तो आयुष्यनी वृद्धि करे, ध्वजा जो अशुभ दिशायां गई होय तो ? १००,

एक हजार नमस्कार मन्त्रो जाप करी विशेष पूजा करीने शान्ति करवी.
धजादण्डने गावेली मर्पन पोटली जने मीढलनु करुण आशयक कारणे ते ज दिवसे अन्यथा ३-५-७ दिवसो पैकी जे शुभ होय ते दिवसे जिनप्रतिमाने स्नात्र करी, जिनने नैवेद्य चढानी, भूतमलि क्षेप करीने नीचे प्रमाणे विधि करनी. नमु-

इयावही पडिकमत्रा पूर्वक मूलनायकनुं चैत्यमदन करवु. अथवा " ॐ नमः पार्श्वनाथाय " आ चैत्यमदन कही, नमु-
त्युण०, अरिहत चेऽआण करेमि का०, वदण०, अन्तथ०, ? नो०, नमो०, स्तुतिः—
अर्हस्तनोतु स श्रेयः—अश्रय यद्वधानतो नरैः । अप्येन्द्री सकलाऽत्रैहि, रहसा सहसौब्यत ॥१॥

लोगस्म०, मन्वलोए० अरि० वंदण०, अन्तथ०, ? नो० स्तुति—

ओमिति मन्ता यच्छासनम्य नन्ता सदा यदधीश्च । आश्रीयते श्रिया ते, भवतो भवतो जिनाः पान्तु ॥२॥

पुम्बरन०, सुअस्स०, वदण०, अन्तथ०, ? नो०, स्तुतिः—

नवतत्त्वयुता त्रिपदी-श्रिता रुचिज्ञानपुण्यशक्तिमता । वरधर्मकीर्तिविद्या-नन्दाऽऽस्या जैनगीर्जीयात् ॥३॥

मिद्वाण दुद्वाण० करुण छोटनार्यं प्रतिष्ठा स्थीकरुणार्थं करेमि का० अन्तथ०, ? लोगस्म०, नमो० स्तुतिः—

यदधिष्ठिता प्रतप्राः, सर्वाः सर्वास्पदेषु नन्दन्ति । श्रीध्वजदण्ड मा विशतु, देवता सुप्रतिष्ठमिदम् ॥४॥

श्रुतदत्तार्यं करेमि का०, अन्तथ०, ? नो०, नमो०, स्तुतिः—

वद वदति न वाग्वादिनि, भगवति रुः श्रुतसरस्वतिगमेच्छुः । रगत्तरङ्गमतिवर-तरणिस्तुभ्यं नम इतीह ॥५॥

शान्तिदेवतायै करेमि का० अन्नत्थ०, १ नो०, नमो०, स्तुतिः—

श्रीचतुर्विधसंघस्य, शासनोन्नतिकारिणी । शिवशान्तिकरी भूयाच्छ्रीमती शान्तिदेवता ॥६॥

क्षेत्रदेवतायै करेमि का० अन्नत्थ०, १ नो०, नमो० स्तुतिः—

ग्रस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रिया । सा क्षेत्रदेवता नित्यं, भूयान् नः सुखदायिनी ॥७॥

समस्त वेआच्यवाराणं संति० सम्महि० करे० का०, अन्न०, १ नो० नमो०, स्तुतिः—

संघेऽत्र ये गुरुगुणौघनिधे सुवैद्या-वृत्त्यादिकृत्यकरणैकनिबद्धकक्षाः !

ते शान्तये सह भवन्तु सुराः सुरीभिः, सद्दृष्टयो निखिलविघ्नविघातदक्षाः ॥८॥

१ नो० प्रकट कही, बेसी नमृत्युणं०, जावंति चेइआई०. स्तवन लघुशांति कही, जयवीयराय, पछी सौभाग्य मुद्राए—

ॐ अचतर २ सोमे २ कुरु २ वग्गु २ निवग्गु २ सुमणे सोमणसे महूमहुरे ॐ कविल ॐ कः क्षः स्वाहा ।

आ मंत्रनो न्यास करी दण्ड उपरथी सरसवोनी पीटली, मीढल, कंकण वगेरे उताखां. जो ध्वजादंडने बांधेली होय तो ते पण छोडवी, ए पछी नंदावर्तना पाटलानी पूजा करी “ ॐ विसर विसर स्वस्थानं गच्छ गच्छ स्वाहा । ”

आ मंत्रथी नंदावर्तनुं विसर्जन करुं, संघभक्ति करवी, ८ दिवस सुधी विशेष पूजा करवी. ॥ इति ध्वजदंड प्रतिष्ठा ॥

॥ १२ जिनविम्ब प्रवेशविधि (१)

जिनविम्बप्रवेशो हि, जिनगेहेषु सोत्सवः । सविधानः प्रकर्तव्यः, कल्याणकारको भवेत् ॥१७२॥

भा०टी०—जिनघनेमा जिनमिनो प्रवेश उत्सवपूर्वक विधि माधे करामाथी ज कल्याणकारी थाय छे. पूर्वोक्त शुभ दिनसे शुभग्रहलघुक स्थिर लग्नचल ठात्रीने लग्न यधानी लग्नदायक ज्योतिपीनो श्रीफल द्रव्यादिकधी यथा-शक्ति सत्कार करयो.

लग्ना दिनस थकी १०।७।५ अथवा ३ दिन पहेला प्रतिष्ठा स्थानके-घरे अथवा जिनचैत्ये १०० हाथ सुधी चारे तरफ भूमि शुद्ध करानी, मङ्गपथमि के ज्या स्थापनीय चिम्ब राखमाना होय ते पण एज रीते शुद्ध करानी, कलेजर, हाडकं, आदि दूर करानु, अने सुन्दर चद्रा-चादणी पशुख यधानी अने स्थानके मण्डपनी रचना करानी, अने ठेकाणे माझे प्रभाते साझी देवरावनी, अने प्रभातिया गरामाथा.

सधमा तथा घरमा दय अने निर्माण गरीरघारी १ जण १० दिन सुधी एकाशणा करे. ब्रह्मचर्ये पाले, सचिचनो त्याग करे, भूमिसथारो कर अने आरभगय प्रवृत्तिनो त्याग करी प्रमन्न चिच रहे

जे देनालयमा प्रभु स्थापवा होय तेमा क्रियाकारक ३ टक शुद्ध बल्लो पहेरी ७ स्मरणो नो शुद्धतापूर्वक पाठ करे, पोतपोतानी गन्डपरम्परा प्रमाणे स्मरणगुणे, धूप दीप पासे राखे

पाठने अन्ते १ कडोरी (कचोळें अथवा कलशियो) रूपानी अथवा त्रांतानी होय तेमां अचोट जल भरी सोनावाणी करीने
७ नोकार गणी—

“ ॐ ओ जोराडला पार्श्वनाथ ! रक्षां कुरु कुरु स्वाहा ”
आ मंत्रे ७ वार मंत्रीने ते देहरामां तथा मंडपमां छांटवुं, घरगां पण छांटवुं, अने ग्रंथ उखेववो.
विश्व प्रवेशोत्सवना प्रथम दिवसे अथवा सुहूर्तना दिवसथी ७५ दिवस पहलां शुभ दिवस अने कुंभ चक्र जोई कुंभ-
स्थापना करावी.

दहेरामां ज्यां विश्वस्थापना थवानी छे त्यां विम्बनी जमणी दिशामां प्रथम ब्रह्मचारी अथवा ब्राह्मणना हाथे ४ कोरां
सरावलाओमां जवारा वगराववा अने सधवा स्त्री पासे त्यां १। खेर त्रीहि (भात)नो स्वस्तिक करावी जवारानां ४ सरावलां
स्वस्तिकना ४ खुणाओ तरफ मूकाववां.
माटीनो १ कुंभ न्हानो डाव विनानो अने सारा घाटवालो लेई धोइ धूपी तेने कांठे गेवासून मोंढल तथा मरोडाफलीवालुं
चांधवुं. वडानी अंदर चन्दननो साथियो करी तेमां रूपानाणुं तथा माणिक १ मोती २ प्रवालां ३ सोनुं ४ त्रांबु ५, आ पांच
रत्नीनीं पोटली मूकवी, पछी उत्तम सधवा स्त्री पासे अचोट जलनी अखंड धारा वडे मराववो, पीला अथवा नीलां वखे कुंभ
वांकवो, कंठमां फूलमाला पहारावी, मुख उपर श्रीफल स्थापवुं, अने

“ ॐ ह्रीं ठः ठः ठः स्वाहा ”

जिनविम्ब
प्रवेश
विधिः

“ मंत्रे ७ वार जोलीने किर ग्याने कुंभने स्वस्तिक उपर
कुंभ २ स्थापनीय विम्ब ज्यां होय त्यां मराववो
सरावलाओमां जवारा वगराववा अने सधवा स्त्री पासे त्यां १। खेर त्रीहि (भात)नो स्वस्तिक करावी जवारानां ४ सरावलां
स्वस्तिकना ४ खुणाओ तरफ मूकाववां.
माटीनो १ कुंभ न्हानो डाव विनानो अने सारा घाटवालो लेई धोइ धूपी तेने कांठे गेवासून मोंढल तथा मरोडाफलीवालुं
चांधवुं. वडानी अंदर चन्दननो साथियो करी तेमां रूपानाणुं तथा माणिक १ मोती २ प्रवालां ३ सोनुं ४ त्रांबु ५, आ पांच
रत्नीनीं पोटली मूकवी, पछी उत्तम सधवा स्त्री पासे अचोट जलनी अखंड धारा वडे मराववो, पीला अथवा नीलां वखे कुंभ
वांकवो, कंठमां फूलमाला पहारावी, मुख उपर श्रीफल स्थापवुं, अने
“ ॐ ह्रीं ठः ठः ठः स्वाहा ”

ए मंत्र सांत ७ बार बोलीने स्थिर ध्यासे कुंभने स्वस्तिक उपर स्थापवो
कुंभ १ स्थापनीय चिम्ब ज्या होय त्या मण्डपमा ण्ण एज विधिधी स्थापवो.

कुंभस्थापनाना स्थले अखण्ड दीपो राखवो, त्रिकाल दूप करवो

जगाराणा स्थानके त्रिलाडी आदि हिसक जीन जना देना नहिं, रजस्वला प्रमुल मलिन खीनी दृष्टिपडवा देवी नहिं, कुंभनी
आगल सघना स्त्री पासे गह्वरी करावधी, उभय टंक धवल मगल गीत गत्रराववा, गीत गानारिओने प्रमानना आपसी.

उत्सव दर्मियान मण्डपमा के मंदिरमा नरकादि दु.ख गर्भित आलोचनाना स्तवनो, सज्जायो, राजीमती आदिना त्रिला-
पमय गीतो, जिन तथा मुनिओना उपनर्ग गर्भित स्तवन-सज्जायो, अक्षण अनित्य भावनाना गीतो तथा पदो गाववा नहिं.
स्थापनीय त्रिम्ब ज्या होय ते स्थले १० दिवस पर्यन्त स्नात्रपूजा भणोवमी, स्नात्रिया ४ पुरूप सर्वंकिया मंत्रशुद्ध करीने
स्नात्र भणोवे, ते मत्रो नीचे प्रमाणे छे.

१-स्नानजलाभिमान्त्रण मंत्र—“ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृत स्रावय स्वाहा” ७ ।

२-दातण-अभिमंत्रण मंत्र—ॐ ह्रीं यक्षसेनाधिपतये नमः ७ ।

३-सुवप्रसालन मंत्र—ॐ ह्रीं श्री लक्ष्मी कामदेवाधिपते मम ऽभीष्टिमंतं पूरय पूरय स्वाहा । ७ ।

४-स्नान मंत्र—“ॐ ह्रीं अमले विमले विमलोद्भवे सर्वतीर्थजलोपमे पा पां वां वां अशुचिः शुचिर्भवामि

स्वाहा” ७ ।

५-वस्त्राभिमंत्रण-मंत्र—“ ॐ ह्रीं औं क्लीं अर्हते नमः ” ७ ।

६-तिलक मंत्र—“ ॐ औं ह्रीं क्लीं अर्हते नमः ” ७ ।

७-रक्षासूत्राभिमंत्रण मंत्र—“ ॐ ह्रीं अवतर सोमि सोमि कुरु वग्गु निवग्गु निवग्गु सुमणे सोमणसे महुमहुरे ॐ कविल ॐ कः क्षः स्वाहा ” ७ ।

८-भूमिशोधन मंत्र—“ ॐ ह्रीं अर्हं भूर्भुवः स्वाधाय स्वाहा ” ७ ।

९-स्नपनीय जलाभिमंत्रण-मंत्र—

क्षीरोदधे स्वयंभूश्च, सरः पद्ममहाहृदः । शीते ! जलेऽस्मिन् संनिधिं कुरु ॥१॥

गंगे च यमुने चैव, गोदावरि सरस्वति । कावेरि नर्मदे सिन्धो, जलेऽस्मिन् संनिधिं कुरु ॥२॥

“ ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्थावय स्थाहा ” ७ ।

१ मंत्रे न्हावाहुं जल मंत्रहुं, २ मंत्रे दातण मंत्रहुं, ३ मंत्रे मुख धोहुं, ४ मंत्रे स्नान क रहुं, ५ मंत्रे वस्त्र मंत्रीने पहरेहुं, ६ मंत्रे स्नात्रकारोण ललाटे तिलक कर्तुं, ७ मंत्रे गोवासूत्र मीढल मरोडाफली मंत्रीने बांधणी, ८ मंत्रे पुण्यवास भूमि छोदी भूमिशोधन कारुं, अने ९ मा मंत्रे स्नात्रजल मंत्रीने वापरहुं, दरेक मंत्र ७-७ वार बोलीने ते ते कार्य करहुं.

स्नात्र पछी अष्टप्रकारी पूजा करवी, तेमां ण नीचेमो मंत्र बोलीने प्रत्येक द्रव्य चढावहुं:—

“ ॐ ह्रीं श्रीपरमपरमात्मने अनन्ताऽनन्तज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय जलं यजामहे स्वाहा ”

आ मंत्र बोलीने जलकलशोए अभिषेक करवो, ए ज मंत्रे चन्दनं, पुष्पाणि, अक्षतान्, दीपं, धूप, नैवेद्य, फल, ए शब्दो 'जलं'ना स्थाने जोडीने 'यजामहे स्वाहा' आ प्रमाणे सपूर्ण मंत्र बोली बोलीने ते द्रव्यो चढाववा, १० दिवस सुधी उपरनी विधिए स्नान करवा पूर्वक पूजा करवी दश दिवस क्रोय न करवो, कोई साये लड्डु नहि, अपशब्द बोलवो नहि, वारणे, आवेल याचक, भिशुक आदिने यथाशक्ति सतोपवा, पण निराश करवा नहि

मुहूर्तने ३ दिन रहे त्यारे विशेष धूप करवो, रात्रि जागरण करवु रात्रि १ पहोर जाता देहराना रंगमडपमा नैवेद्य मूरुगा, ग्रसु मेठा पछी पण ३ दिनस सुधी ते ज प्रमाणे नैवेद्य मूरुवा, तेनी विधि नीचे प्रमाणे छे:- प्रथम धान सोनरावी झटकांनीने राखा होय तेमाथी चार मावितरवाली ह्वी स्नान करी शूद्र मख पहरीने राधे, कोरा सरायलाओमा भरीने मूके, प्रतिदिन सरानला नवा लेमा. प्रतिष्ठा पहेला २, पछी ३, त्रिमस एं ५ दिवस नैवेद्य मूरुवु

लापसी १ पुडला २ भात ३ रसगो ४ दहि ५ खीर ६ खाड ७ मडा ८ ककु ९ हलदर १० पानना नीडां ११ सोपारी १२ चमलाना गारुला १३ सुगना गारुला १४ चणाना गारुला १५ आ १५ चीजो तैयार करावीने एरु एक चीज एरु एक कोरा माटीना पात्रमा राखवी, १ कोरा पात्रमा अचोट जल भरतु, आटाना कोडियां करी १-१ पात्रमां १-१ कोडीयु मूरुवु प्रत्येक कोडीयामा ४-४ दीवेट मूकीने घी पूरी दीगा करवा, पछी एक एक पात्र हाथमा लेईने—

“ ॐ ग्रहाश्चन्द्र सूर्यौगारक बुध बृहस्पति शुक शनैश्चराराहुकेतुसहिताः सलोकपालाः सोम यम चरुण कुबेरवासवादित्यस्कन्दविनायकौपिताः, ये चान्येऽपि ग्रामनगरक्षेत्रदेवतादयस्ते सर्वे प्रीयता प्रीयतां स्वाहा ”

ए मंत्र बोलीने पात्र मूकडुं, जमीन उपर जल छांटीने जलपात्र मूकडुं, अने घूप उखेववो, कंकु तथा हलदरसुं पाणी करी सोहागण खी पासे अन्दर तथा बहार छंटावडुं, चारे तरक फूल विखरवां.

पंचवर्णा जेवाखरना २१ तार देवालये वींटवा, उपरथी श्रेत तार वींटवो, द्वारने टोडे अथवा मध्य थांभले वींटीवो.

जो ३ दिन پہेलांथी नैवेद्य मूकवाडुं न बने तो १ दिन پہेलां अने एक दिन पछी मूकडुं, सुहूर्तेने पहेले दिवसे लापसी ? नाकला २ करंवो ३ पाणी ४ ए चार वस्तु पवित्रपणे करी कोरां ४ सरावलांमां भरी वासक्षेप करी घूपीं संख्यासमये घरमां अथवा देहराने आगले पडाले मूकवां, क्रियाकारक पुरुष दरेक पात्र हाथमां लेईने—

“ॐ भवणवह वाणमंतर-जाइसवासी विमाणवासी य । जे केचि दुइदेवा, ते सव्वे उवसमंतु मम स्वाहा ।”

ए गाथा ३ वार कहोने पात्र उपर अगासीमां मूके, अने घूप उखेवीने नीचे उतरे.

जेने घरे अथवा जे स्थाने स्थापनीय विम्ब होय त्यां रात्रिजागरण करवुं.

ते ज रात्रिए पहोर १ रात गया पछी देवगृहमध्ये उभो रही अगर उखेववा पूर्वक उपसर्गहरनी अक्षर बुद्ध १ माला गणे.

मध्यरात्रे निर्धूम अंगारे १ पात्र भरी उपर अगासीमां मूकडुं, तेमां दशांग घूप करी घडी १ सुधी—

“ सर्वक्षित्रदेवता सुजने सानुकूल होजे ”

आ प्रमाणे कहोने नीचे उतरे.

॥ नवग्रह स्थापनविधि ॥

विष्णु प्रवेशने दिवसे प्रभाते एक सेवनना पाटला उपर यक्षकर्मसे करी नवग्रह मंडल आलेखी रक्त वस्त्रे ढाक्यु, प्रतिकडे मंडल उपर पान चढावचां, उपर चोखानी ढगली करीने ते उपर नव खण्डे शानानाणु मूक्यु, धूप उखेवचो. उपर १ श्रीफल ढोयु, नैवेद्य चढायुं, मोदक १ खायु २, इत्यादि नैवेद्य मूक्यु, रक्त वस्त्र ओढाड्युं.

ए पछी फूल वास चोखा पाणीनी अजलि मरीने—

“ॐ आदित्य-सोम-मंगल-बुधगुरुशुक्रा शनैश्चरो राहुः। केतुप्रसुवाः खेदा, जिनपतिपुरतोऽवतिष्ठन्तु स्वाहा ॥”

ए मत्र ३ वार मणी फूल प्रभुसे करी ग्रहमंडलने उधावयु, अने पाटलो जिनपीठथी जमणी गजुमा स्थापन करचो.

॥ दशदिक्पाल स्थापनविधि ॥

वीजे सिमनने पाटले यक्षकर्ममना रसे अघाडानी लेखण वडे दशदिक्पालोना नाम मत्र आलेखना. उपर पीत वस्त्र ढाक्यु, १० मण्डले पान मूकी चोखानी ढगली करी उजली सोपारी अने शानानाणु चढावी धूप करचो, ए पछी फूल, वास, चोखा पाणीनी पसली मरीने—

“ ॐ इन्द्राग्निपम-नैर्ऋतवरुणाः समीरणकुबेराः । ईशानब्रह्मनागा, जिनपतिपुरतोऽवतिष्ठन्तु स्वाहा ॥”
आ पाठ ३ वार गेली दिशापालोने फूलवासादिकथी बघात्रा अने ए पाटलो पीठथी ढावी तरफ स्थापन करचो, पछी ग्रह दिक्पालोनी मध्यमा उभा रही हाथ जोडीने—

“ ॐ इन्द्रादयो दिक्पाला आदित्यादयो ग्रहाश्च स्वस्व दिशि स्थिता चित्रप्रशान्तिकरा भवन्तु स्वाहा ।”

आ प्रसाधे प्रार्थना करवी.—

प्रवेशने दिवसे उपर प्रमाणे प्रथम ग्रह दिक्पालोनी स्थापना करी पछी स्थापनीय जिनविम्बने लेवा जवुं.

॥ स्थापनीय चिम्ब लेवा जवानी विधि ॥

मुहूर्तना दिवसे प्रभात समये चतुर्विध संघ साथे नीचे मुजब तैयारी करी मंडपमां विम्ब लेवा जवुं.

उत्तम ब्रह्मचारी पुरूप संत्र पूर्वक स्नान करी, नवां बह्नाभ्रुपण पहेरी, श्रीजिनचैत्यथी अंग अवयवे अखंडित पंचतीर्थी प्रतिमा आणीने १ थालमां केसर चन्दननो साथियो करी पाली १ सेर २, अखंडित अक्षतनो साथियो करी उपर ७ सोपारी मूकी उपर रूपानाणुं मूकी ते थालमां पंचतीर्थी पधराववी, बीजा १ थालमां अखियाणु (प्राभृत-भेटणुं) ५ सेर अक्षत अने रूपानाणुं मूकी, ते थाली लई एक जण जिनविम्ब आगल उभो रहे, त्रीजा थालमां ४ हांसनो अने ४ बाटनो साणेकदीनो वीए भरी अंदर रूपा-नाणुं मूकीने प्रकटावी राखनो, ते थाल जिनविम्ब आगल जमणी तरफ एक जण लइ उभो रहे, चौथा थालमां अक्षत-चोखा वडे अष्टमंगलिक आलेखी चास पुष्पे पूजी ते थाल लइ एक जण जिनविम्ब संमुख उभो रहे, पांचमा थालमां २ बत्तो केसरनो नन्द्या-वर्त करीने मूकवां. अने ते थाल लेइ एक जण जिनविम्बनी आगल उभो रहे.

न्हाना २ घडा पवित्र लेई तेमां अखंड चोखा सेर १। तथा सोपारी ७ मूकी उपर नीलो तथा पीलो तास्तो अथवा कसंबी-बत्त हांकवुं, कांठे गेवासत्र बांधवुं. फूलमाला पहेराववी, उपर श्रीफल मंत्रकवुं. पछी ते गाडवा सोहागण पुत्रवती वे स्त्रियो सोल

शणगारे शोभती माथे उपाडीने श्रीजिनचिम्बनी डात्री-जमणी तरफ उभी रहे, ते बखते श्रीसंघने तत्रोल आपे, अर्थात् श्रीफल मिठाईना पडा प्रमुखनी प्रभावना यथाशक्ति आपे

पळी पचशब्द वाजिंत्र नगारानोमत वाजते गाजते आगल चतुर्विंश सघ खेला प्रमुख नाचते अनेक हाथी, पोंडा मांसेला चालते, याचक चिन्दावली चोलते, पाछल सुहासण स्त्रियोनो समुदाय अनेक धयलगीत गावते ऋद्धि विस्तार सहित याचक जनने दान देता घेरथी निकली मार्गमा अपशब्द क्रूर शब्द के दुर्भचन न त्रोलता मगल शब्दो चोलता श्री जिनशासननी उन्नति बघारता ज्या स्थापनीय त्रिम्भ होय ते घरना अथवा मंडपना द्वारे आवे

त्या घरघणी मोहासण स्त्री पासे श्रीफल तथा अखिआणा दोनरावे. सोना रूपाना पुथ्योए मोतीए अने अक्षते बघावरावे, जिन चिम्बने लंछणा करी याचकने दान आपे, जिनचिम्बने नमस्कार करे पळी सघमहित घरमा या माडवामां आवे, स्थापनीय त्रिम्ब-याला स्थानना द्वारे कुकुना हाथा दीये, स्थापनीय त्रिम्बने आगे सेर पाच चोखानो माथियो करी उपर सोपारी तथा रूपीयो मुके. पळी सकलसघ त्रण खमामसणा देह प्रभुने वादे अने त्या स्नात्र भणावे, १

त्रिम्ब लेवा आवनार गृहस्थ स्थापनीयचिम्बना वणीने सपरिचार पहेरामणी करे. चिंत्र धणी पण त्रिम्भ लेवा आननार गृहस्थने पाछो विशेष अथवा यथाशक्ति पहेरामणी आपे परस्पर स्मरेली कर, सकल संघने तत्रोल आपे.

ए पळी पूर्व स्थापेल मंगल कुंभने रेशमी वस्त्रे बाके, उपर सुवर्ण पत्रे जडित श्रीफल मूकी सोदासण स्त्री माथे उपाडी आगल चाले.

१ कोई विधिमा स्नात्रने म्थाने ८ स्तुतिओ वडे देववदन करवातु विधान छे

व्रधणी श्वास कुंभक करी वे हाथे थाल घरी उभो रहे, त्यारे प्रतिमानो धणी प्रतिमाजी उपाडीने थालमां पधरावे, जे प्रतिमा लेईने अब्या हुता तेने जोडे राखे, प्रतिमा आशिष आपे, प्रतिमा आपनार—

“ मनोरथ सिद्धफल थजो ” आ प्रमाणे आशिष आपे, प्रतिमा आपनार—

“ ॐ ह्रीं श्री जोराडलि पार्श्वनाथाय नमः ” अने चन्द्रस्वर्मां डावा पानां ४ अने सूर्यस्वर्मां जमणा पानां ३ फगलां भरिने चालवा मांडे.

एमवार ७ कही सात नोकार गणे, अने चन्द्रस्वर्मां डावा पानां ४ थालवाला, तेमनी आगे मंगल कलश उपाडनार, तेनी आगल माणिक्य दीप प्रतिमा घरनी आगल अष्टमंगलिक प्रसुल ४ थालवाला, तेमनी आगे मंगल कलश उपाडनार, ए व्रधानी आगल संव,

अने धूपधारुं, तेमनी आगे आरिसो, वंढ, झालर, जलपात्र, पुष्पचंगेरी अने कोरा वलिंनुं पात्र धरनार, ए कलत्रिस्तार चाले, पाडल सोहासण स्त्रियो तेनी आगल महेन्द्रध्वज अने तेनी आगल पंचशब्द वाजित्र निशानडंको प्रगुल, सर्व कलत्रिस्तार चाले, पाडल सोहासण स्त्रियो

ए शब्द उचरतां अने कोरा वलि वाकुला उछालतां जइये, वलि उछालतां दश दिक्पालने नोलावतां जइये, ते आ प्रमाणे—

“ ॐ इन्द्राय सायुधाय स्वाहनाय सपरिकराय श्रीजिनविचप्रवेशमहेत्सवे आगच्छ आगच्छ स्वाहा । ”

ए ज प्रमाणे— ॐ अग्ने, ॐ यमाय, ॐ निर्ऋतये, ॐ वरुणाय, ॐ वायवे, ॐ कुनेराय, ॐ ईशानाय, ॐ नागाय, ॐ ब्रह्मणे, आ व्रधाने नोलाववा, अने वाकला नांवाला, डेल्ले, श्रीजिनविचप्रवेशमहेत्सवविधौ

आगच्छन्तु २ स्वाहा ।” आम बोलीने कोरो वलि उछाल्यो,

कोरा वलिमा घटं ? चणा २ जुवार ३ मग ४ चवला ५ जव ६ अने अडद अयवा मसम ७ लेना, तेमा द्राघ, अखरोट, टोपराना न्हाना खंड नाखी उछाल्या, पाणीना छांटा देता जडुं, वच्चे वच्चे जिनविम उपर वृछणुं करी याचकने आपवा, एम महामहोत्सव पूर्वक घर नजीक आवे, त्यारे वे अयया चार सक्वा स्त्रियो अयया कुमारिकाओ पूर्ण फलश भरी सामे आवे, त्यारे प्रथान पुरूप आगलथी आवीने कंकुना छाटा नाखे अने द्वारे तोरण वाघे, पछी घरलो स्वामी श्रीफल तथा आखियाणां यालमा लेइ प्रतिमा सधुल आरी आखियाणा ढोइ प्रतिमाने नमस्कार करे, अने मार्गमा आशतना थड होय ते निमित्ते “ मिच्छामि दुक्कं ” देइ शेष रहेला वलि यकुकुल सर्व उछाले

पछी घरघणी “ स्वामी पधारो ” एम कहीने जलनो आभूलो दे, अर्थात् मार्गनी जमीन उपर जलनी धार दे, त्यारे प्रतिमाधर तोरण नजीक आवे, ते वखते मघया खी घाटडी (चुंदडी) ओढीने हंपंभेर रुपाना पुखणा वडे पोंखे, गजोढी ? सरीओ २ ईडीपीडी ३ करडो ४ घुसरी ५ गारु ६ कंकुनी घाटकी ७ मुसल ८ रगडो ९ ए सर्व नवा करानवा जोइये. न होय तो नकरो मरुनयो, पान फूल प्रभुल पुंखणानो सामान लेडने पोंखे, पोखणानो चढायो करी देवद्रव्यनी वृद्धि करवी, पण पोखनार खी निर्दोष होनी जोइये, पोखणानी रीति थया पछी प्रतिमाधर पग नीचे सपुट चापीने घरमा आवे.

जो घुहर्तने वार होय तो ाग्नेने वाजोठ उपर वेसारे, अने घुहर्तनो समय नजीक आवता प्रतिमा लेई मंडपमा उभो रहे त्या वीलव चन्दनना छाटा देा.

जे पीठ स्थानके प्रभु स्थापना होय ते स्थानके फरता चक्रनी माटी, वृषभशृंगथी उखडेल माटी, गजदन्तथी उखडेलमाटी, समूलो
डाभ, श्वेत सर्षप, दुर्वा, जव, अखंड चोखा, तथा व्रीहि ए ८ आठ वानां मूकवा, ते वच्चे चोखंडो रुपियो मूकी उपर त्रांचानो पतरो
मूकनो, पतरा उपर चन्दन, केसर, कस्तुरी, बरारस, अंबर, अगर, मिरच, कंकोल, सुवर्णरज, आ पदार्थोथी वनेल यक्षकदंम सोनाना अथवा
तो रुपाना कचोलामां घाली ते वडे दक्षिणावर्त स्वस्तिक करवो, अने तेनी ४ पांखडीये कूर्ममंत्र लखवो. मंत्र कुंभक श्वास

करवो, पतरा उपर उभा उभा— “ ॐ ह्रीं ह्रूं ते सर्वोपद्रवाद्भिस्त्वं रक्ष रक्ष स्वाहा । ”

ते पही गुरु उभा उभा— “ ॐ ह्रीं ह्रूं ते सर्वोपद्रवाद्भिस्त्वं रक्ष रक्ष दिशामां नाखीने दिग्मन्त्र करे, ”

आ मंत्र बोली कृष्णादि मिश्रित सुगंधी केसर— “ ॐ ह्रीं जीराडलि पार्श्वनाथाय नमः ”

मुहूर्तनो समय निकट आवतां स्वरोदय साधी— “ ॐ ह्रीं पुण्याहं पुण्याहं प्रभुने जमणे पासे थापवो.
आ मंत्र वार ७ अने नमस्कार मंत्र वार ७ गणवो, पही— “ ॐ कूर्मं निजगुष्टे जिनविम्बं धारय धारय मंगलकुंभ प्रभुने जमणे पासे थापवो, अने
ए शब्दो मुखे उच्चरीने नीचेनो मंत्र भणवो, — “ ॐ कूर्मं निजगुष्टे जिनविम्बं धारय धारय मंगलकुंभ प्रभुने जमणे पासे थापवो, अने
उक्त कूर्ममंत्र बोली श्वास कुंभक करीने श्रीजिनविम्बे मूल स्थाने स्थापे, साथे लावेल मंगलकुंभ प्रभुने जमणे पासे थापवो, अने
१०८ तांतगांनी दीवट करी दीपपात्र संपूर्ण गोष्टे श्रीने तेमां चोखंडो रुपियो मूकी ते दीपक माणेक दीवावडे प्रगटाववो, अने
विमनी आगे मूकवा, प्रतिमा आगल अखंड एक लाख चोखानो स्वस्तिक करवो.

कल्याण, सुधार प्रमुखने शिवदान देर संसुट करवा-
मंगलकुंभनी पासो जिनविम्बे आगे थको मूकवो. ए दीवो २४ पहोर
विमनी आगे मूकवा, प्रतिमा आगल अखंड एक लाख चोखानो स्वस्तिक करवो.

पत्नी स्वमासमण देइ प्रणाम करी देहरासना वनावनार कडिया, शिलाट, सुथार प्रमुखने रीझदान देइ सतुष्ट करवा.
उत्तम स्त्रिये पवित्रपण्ये तैयार करेल खीर १, लापसी २, मालपुडा ३, मोलापुडला ४, वडा ५, भात ६, कसो ७, अने गरुला
-चणा मग चोला उडद घउ जुवार जमना सर्व थइने २१ सेर तैयार करावी, एक मोटी रुथरोटमां लेइ तेने आबलिया (माची)
उपर थापे, सर्व एकत्र करी तेमा सवासेर गोधृत रेडबु, मवासेर बुरो खांडनो नाखवो, थेत तथा लाल रुणेरना तथा बीजा पच-
वर्णा पुष्पो तेमा नाखी वामनी सुट्टि भरी ३ गार भूत नलि मंत्रे मत्रीने वासनिक्षेप करवो

॥ भूतबलि मंत्र नीचे प्रमाणे ले ॥

“ ॐ नमो अरिहन्ताण, ॐ नमो सिद्धाण, ॐ नमो आयरियाण, ॐ नमो उवञ्जायाण, ॐ नमो लोए
सव्वसाहूणं, ॐ नमो आगासगामीण, ॐ नमो चारणाडलद्धीणं, जे इमे किनरकिपुरिसमहोरगगरुल-
सिद्धगधव्वजम्वरकवसपिसायमूयपेयसाइणीडाइणीपभिडओ जिणघरनिवासिणो नियनियनिलयिहिया
पवियारिणो, सनिहिआ असनिहिआ य ते सव्वे इम विलेवणधूपुक्कफलपईवसणाह वलि पडिच्छन्ता
तुट्टिकरा भवन्तु, पुट्टिकरा भवतु, सिक्करा भवतु, सतिकरा भवतु, सुत्थं जण कुणंतु, सव्वजिणाण
सन्निहाणप्पभावओ पसन्नभावत्तणेण सव्वत्थ रक्ख कुणतु, सव्वत्थ इरियाणि नासंतु, सव्वासिवसुवसमेंतु,
सत्ति तुट्टि पुट्टि म्भिवसुत्थयण कारिणो भवतु स्वाहा ”

ते वलि वाइलमायी अर्था नीजा भाजनमा लेइ मांची उपर मूकी डाकी राखवा

अर्ध बलि लेइने ते घर अथवा चित्तयेने आगले भागे जिन पीठथी उच्च स्थानके स्नात्रिया १२ दाग रहित लांछन रहित होय ते पैकी वेणिवन्त श्रावक मुक्तकेश करीने बलिवाकुलनी पसली भरी पूर्वदिशा संमुख उभो रहे. बीजो केसर, बीजो फूल, चौथो थाली वेलण, पांचमो धूप, छट्टो दीपक, सातमो आठमो बे चामर, नवमो घंट, दशमो जल कलशियो अने अग्यारमो आरीसो लेइने उभो रहे, बलि भाजनथी आरीसा पर्यन्त सर्व बीजो लेइने प्रत्येक उभा रहे त्यां बलिवाकुलवालो प्रत्येक दिशा-संमुख उभो रही ते ते दिशापालुं आह्वान करे, बीजा तेनी पाछल बोले. प्रथम पूर्वदिशामां इन्द्रेणु आह्वान करे.

“ ॐ नम इन्द्राय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय असुकनगरे श्रीजिनचिम्बकप्रवेशमहोत्सवे आगच्छ आगच्छ स्वाहा ”

आह्वान मंत्र बोली बलिवाकुलानी पसली ते दिशामां उछाले, आह्वाननो पाठ बोलती वेला वाजित्रो बंध कराव्यां हाय ते बलि नाखती नखते बगाडवां, पछी अग्नि खूणा संमुख—

“ ॐ नमोऽग्रे सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय असुकनगरे श्रीजिनचिम्बकप्रवेशमहोत्सवे आगच्छ आगच्छ स्वाहा ”

दक्षिण दिशा सामे—“ ॐ नमो यमाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय असुकनगरे श्रीजिनचिम्बकप्रवेश-महोत्सवे आगच्छ आगच्छ स्वाहा ”

नैर्ऋतकोण संमुख—“ ॐ नमो निर्ऋतये सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय असुकनगरे श्रीजिनचिम्बकप्रवेश-

महोत्सवे आगच्छ स्वाहा ”

पश्चिम संमुख—“ ॐ नमो वरुणाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय असुकनगरे श्रीजिनविम्बप्रवेश-

महोत्सवे आगच्छ स्वाहा ”

वायुकोण समे—“ ॐ नमो वायवे सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय असुकनगरे श्रीजिनविम्बप्रवेश

महोत्सवे आगच्छ स्वाहा ”

उत्तर दिशामा—“ ॐ नमो धनदाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय असुकनगरे श्रीजिनविम्बप्रवेश-

महोत्सवे आगच्छ स्वाहा ”

ईशानकोण संमुख—“ ॐ नम ईशानाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय असुकनगरे श्रीजिनविम्बप्रवेश-

महोत्सवे आगच्छ स्वाहा ”

ऊर्ध्व दिशामा मुख करी—“ ॐ नमो ब्रह्मणे सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय असुकनगरे श्रीजिनविम्ब-

प्रवेशमहोत्सवे आगच्छ स्वाहा ”

पतालदिशा तरफ दृष्टि करी—“ ॐ नमो नागाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय असुकनगरे श्रीजिन-

विम्बप्रवेशमहोत्सवे आगच्छ स्वाहा ”

आ प्रमाणे प्रत्येक दिशामां वलि गकुला नाखवां, जल छाट्टु, पुण्य नाखवा, चन्दनना छाटा नाखवा, धूप उखेववो, घट

वगाडवो, थाली वगाडवी.

कोइ विधिमां दिक्पालोने बलि दीधा पछी प्रभु पभराववाचुं विधान करेल छे.

पछी सुहपत्नी लेइ ८ थोये देव वादे, विध्यन्तरमां संघसहित गुरु देववंदन करे आहुं विधान छे.

पछी आचार्य उपाध्याय अथवा सुविहित गीनार्थ गुरुप्रदत्त वर्यमान विद्यावडे सकलीकरण करी वासनिक्षेप करे. जो तेवो जोग न मले तो नोकार ३ गणी ब्रह्मचारी श्रावक वासक्षेप करे, पछी सुखडी सेर ५ प्रभुनी आगल होवी, ए पछी गुरु उभा भइ “ सन्तिकरं ” तथा “ बृहच्छान्ति ” स्तोत्र बोले, पछी—

“ॐ बिम्बस्थापकाय गृहाधिपतये सौख्यं कुरु कुरु स्वाहा” आ मन्त्रे कुंकु मंत्रीने तेना वधे छांटा नाखे.

बिम्बस्थापक गृहस्थ “ संतिकरं ”नी माला गणे, जो तेटलो समय न होय तो सांजे गणे, अथवा सवारे वहेली गणी होय तो पण चाले.

पछी मुहूर्त पहेलां शुभ दिवसे जलयात्रा विधिपूर्वक लावेल १०८ कुवानां पाणीयुक्त करी पंचाष्टत मेलत्री गंगाजलादि तीर्थजल मेलत्रीने ते बडे स्नात्र करे, विधियुक्त आरति मंगलदीप करीने नैवेद्य मुकुवुं, तेमां ५ जातनी सुखडी तथा लापसी, सोपारी १०८, थीफल नव ९, उत्तम जातिनां फल संख्याए २४ होवां, सिद्धचक्रनी पूजा करथी, श्रीगुरुनी नवे अंगे पूजा करवी, यथाशक्ति संघने पहेसामणी आपवी, ते न बनी शके तो जन्मपणे ४ जणने बलथी पंचांग पसाय अने आभरणमुद्रिका (बींटी) प्रमुख आपीने भक्ति साचवे.

पछी गुरु उज्वस्वरे 'अजित ज्ञानिस्त्व' भणे, ते पछी घणा श्रावक श्राविका न्हाही घोई शुद्ध वस्त्र पहरी जिन पूजे, प्रभु मुख जोई द्रव्य भेट करे, अहोंयां त्रिविध साचता घणी वेला थई जवाने कारणे मुहूर्त वेलाएज स्थापना पछी मुख जोवणा करे हे पछी गुरु मयसहित स्वमासमण देइ इरियावही पडिक्कीने ८ थोये देववदन करे, थोय जे भगवान मूलनायक नवा स्थाप्या होय तेमनी कहेनी, वेसीने नम्रुत्युणयी जयवीरराय पर्यन्त कहे, स्तवनने स्थाने म्होडी शान्ति कहेवी. ते पछी गुरु उमा थ' श्रीक्षेत्रदेवता आराधनार्थ करेमि काउसगग अन्नत्य ऊमसिएणं, लोगस १ नो० मागरगर-गमीरा सुधीनो काउसगग करसो, पारीने नमोऽहं० कही,—

“ यस्याः क्षेत्र समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रिया । सा क्षेत्रदेवता नित्य, भूयान्नः सुखदायिनी ॥१॥

आ स्तुति कही उपर आलो नोकार कहेवो.

पछी भवनदेवयाए करेमि काउसगग अन्नत्य०, लोगस १ नो काउसगग सागरवरगमीरा सुधीनो पारीने नमोऽहं० कही, स्तुतिः—

ज्ञानादिगुणयुताना, नित्य स्वाध्यायसयमरतानाम् । चिदघातु भवनदेवी, शिव सदा सर्वसाधुनाम् ॥२॥

उपर प्रकट नोकार आलो कहेवो

स्वमासमण देइ इच्छाकारेणं सदिसह धुद्रोपद्रव शमावणी काउसगगं करु इच्छं धुद्रोपद्रव शमावणी करेमि काउसगगं अन्नत्य० काउसगग १ नोकारलो-विष्यन्तरमा काउसगगमा उपसगगहर चित्तवो-पारी नमोऽहं० कही स्तुति.—

सर्वे यश्चाश्विकाद्या ये, वैयावृत्तप्रकरा जिने । क्षुद्रोपद्रवसंघातं, ते द्रुतं द्रावयन्तु नः ॥३॥
रुहेवी, उपर प्रकट नोकार रुहेवो, ए पछी-

“उपसर्गाः क्षयं यान्ति, छिद्यन्ते चिन्नवह्यः । मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥४॥

सर्वमंगलप्रांगल्यं, सर्वकल्याणकारणम् । प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥५॥

इम कही नोकार १, उवसगहर १, लोगस १, फूल गुंथणीए वार ७ कहीने बेसी जंबुं, गुरुए विश्व स्थापनानो महिमा तेमज चैत्य करावनार श्रावरु वारसा देयलोकै जाय, इत्यादि उपदेश करवो, अने छेवटे राखेल अर्थ बलिवाकुल वडे देवताओनुं चिरार्जन करुं, ते नीचे प्रमाणे-

(१) ॐ नम इन्द्राय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अमुकनगरे श्रीजिनबिम्बप्रवेशमहोत्सवे बलिं गृहाण गृहाण स्वस्थानं गच्छ गच्छ स्वाहा ।

(२) ॐ नमोऽग्नये सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अमुकनगरे श्रीजिनबिम्बप्रवेशमहोत्सवे बलिं गृहाण गृहाण स्वस्थानं गच्छ गच्छ स्वाहा ।

(३) ॐ नमो यमाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अमुकनगरे श्रीजिनबिम्बप्रवेशमहोत्सवे बलिं गृहाण गृहाण स्वस्थानं गच्छ गच्छ स्वाहा ।

(४) ॐ नमो निर्ऋतये सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अमुकनगरे श्रीजिनबिम्बप्रवेशमहोत्सवे बलिं

गृहाण गृहाण स्वस्थान गच्छ गच्छ स्वाहा ।

(५) ॐ नमो वरुणाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय असुकनगरे श्रीजिनविम्बप्रवेशमहोत्सवे बलि

गृहाण गृहाण स्वस्थान गच्छ गच्छ स्वाहा ।

(६) ॐ नमो वायवे सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय असुकनगरे श्रीजिनविम्बप्रवेशमहोत्सवे बलि

गृहाण गृहाण स्वस्थान गच्छ गच्छ स्वाहा ।

(७) ॐ नमो धनदाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय असुकनगरे श्रीजिनविम्बप्रवेशमहोत्सवे बलि

गृहाण गृहाण स्वस्थान गच्छ गच्छ स्वाहा ।

(८) ॐ नमो ईशानाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय असुकनगरे श्रीजिनविम्बप्रवेशमहोत्सवे बलि

गृहाण गृहाण स्वस्थान गच्छ गच्छ स्वाहा ।

(९) ॐ नमो ब्रह्मणे सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय असुकनगरे श्रीजिनविम्बप्रवेशमहोत्सवे बलि

गृहाण गृहाण स्वस्थान गच्छ गच्छ स्वाहा ।

(१०) ॐ नमो नागाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय असुकनगरे श्रीजिनविम्बप्रवेशमहोत्सवे बलि

गृहाण गृहाण स्वस्थान गच्छ गच्छ स्वाहा ।

उपर प्रमाणे प्रत्येक दिक्पालने नाम पूर्वक बलि आपी विसर्जनी मुद्राए विसर्जन करवु, अने अन्तमा हाथ जोडीने—

इस कहीने नमस्कार करवो ।

देवा देवार्चनार्थं ये, पुराऽऽहूताश्चतुर्विधाः । ते विद्यायार्हतां पूजां, यान्तुसर्वे यथागतम् ॥१॥
पछी प्रभावना करे, संघसहित गुरुने पोताने घरे तेडीने अन्न वस्त्र पडिलाभे. साधर्मिक वात्सल्य करे, केसरनां छांटणां

करे, अने संघने श्रीफल तंत्रोल देइने विदाय करे.
त्रिम्य प्रवेशकारक गृहस्थ संध्या समये अथवा रात्रि समयमां मूलनायकना नामनी नोकारवाली गुणे, दिवस १० पर्यन्त नित्य
सांजे सवारै गीत गान करावहुं, गानाशिओने तंत्रोल देहुं, १० दिवस रात्रि जागरण करहुं, तेम न वने तो ३-५-९ में दिवसे
तो अवश्य करहुं. १० दिवस सुधी १ आंवेल एकाशन प्रणव तप करे, पोतानाथी न वने तो घरमां कोई बीजा पासे करावे, नवमे
दिवसे कुटुम्ब साथे सर्वने आंवेल करावे, दशमे दिवसे शक्ति होय अने अष्टोचरी स्नात्र करावे तो घणुं ज सांरुं, दश दिवस सुधी
नोकार १०८ तथा उवसगाहर १०८ वार फूल गुंथणीए गणीये.

दशमे दिवसे संध्या समये अखंड चोखा पाली १ एटले सेर २, बुरु खांड सेर १, गोष्टत शेर १, वधां उत्तम पात्रमां
भेलां करीने गुरुनो जोण मले तो गुरु आवे त्यारे, गुरुनो योग न होय तो ब्रह्मचर्यधारक दक्ष श्रावक मंडपमां उभा रहीने पात्र-
मांथी घी खांडनी पूरी पसली भरी-“ शुणिमो केवलित्थं ” इत्यादि समप्रमाणस्त, “ संति हरं संति जिणं ” इत्यादि संतिकर
स्तव तथा “ भो भो भव्याः ” इत्यादि बृहच्छान्ति, आ ३ नो पाठ कहीने मंडपमां वरसावे, आम त्रण वार यइने सर्वं वृष्टि करवी.
पछी हाथ जोडीने

या पाति शासन जैनं सद्यः प्रत्यूहनाशिनी । साऽभिप्रेतार्थसिद्धयर्थं, भूयाच्छासनदेवता ॥१॥
 आह्वान नैव जानामि, न जानामि विसर्जनम् । पूजार्चा नैव जानामि, त्व गतिः परमेश्वरः ॥२॥
 आज्ञाहोन क्रियाहीन, मन्त्रहीन च यत्कृतम् । तत्सर्वं क्षम्यता देव !, प्रसीद परमेश्वर ! ॥३॥

इम रुहीने दीवामा घी पूरीने पाडे प्णे नमस्कार कालो मुख मंडपथी व्हार आवीने जिनगृहहु द्वार बंध करीने तालुं साचवे, ते द्वार प्रभात लगे नोइए उघाडुं नहिं, आखी रात जागरण करतु, प्रभाते वरधणी रुपियो अने श्रीफल लेइ देवगृहे जाय अने द्वार उघाडे, श्रीफल तथा रुपयो प्रभुने आगे भेट धरे. वृष्टि करेल चोरया जयणा पूर्वक लेइ उलघाय नहिं तेचे स्थानके परटे, घरे आखी अष्ट प्रकागी पूजा करे अने पोताना कुटुम्बने हर्य जमण आपी मोलावे.

नीचे बर्षे पाछो ए दिवस आवे त्यारे विशेष पूजा, रात्रि जागरण आदि करे, साधर्मिक भक्ति साचवे

॥ इति श्रीगृहचैत्ये तथा देवगृहे निम प्रवेशविधिः सपूर्णः ॥

१ आ 'गृहचैत्ये तथा देवगृहे विवप्रवेश विधि' यति सुद्वानसागर्जीना 'शिय' यति कात्तिसागर्जीए वि स १८१५ती' सालमा उमोइसा व्यवस्थित करेल 'जिन विवप्रवेश विधि' नी सं १९५०मां लेखेल प्रत उपरथी मात्र भाषामा परिवर्तन करीने, अमोए लखी छे वर्तमानमा आ विधिनो विशेष प्रचार छे मास्तर पोपटलाले छपावेल 'विवप्रवेशविधि' यति कात्तिसागर्जी ज सदर्म छे

॥ जिन विम्बप्रवेश विधि ॥ (२) ॥

(१६ मी शताब्दीमां प्रचलित)

शुक, वत्स, योगिनी, काल, पाश प्रमुख संमुख टाली चन्द्रादिवल जोई शुभ मुहूर्ते विम्ब स्थापना करवी.
मुहूर्ते पहेलां दिन ३ पवासण उपर कंकुनो साथिओ करवो, चन्दन केसरना छांटा नाखवा, अने उपर चोरवानो साथिओ करी ५ सोपारी १ नालियेर मुकवुं, अने सात स्मरण गणां, बीजे त्रीजे दिवसे साथियो सोपारी चदलवां, पण नालियेर ते ज राखवुं.
मुहूर्ते पहेलां ३ दिवस चन्दन-केसर-कपूर प्रमुख कचोले पाणीमां नांखी सोनवाणी करी नोकार तथा उवसगगहर वडे ७-७ वार मंत्रीने--

श्री जीराउला पार्श्वनाथ ! रक्षां कुळ कुरु स्वाहा । ए मंत्र बोलतां गभारासां तथा बहार सर्वत्र छांटा नांखवा, अने त्रिकाल धूप उखेववो.

आ वधी क्रिया स्नान पूर्वक शुद्ध वस्त्र पहरीने करवी, शुद्ध धोतियां पहरी जे स्थानके स्थाप्य विंब होय ते स्थानके संघ साथे जवुं, साथे १ थालीमां अख्याणुं नालियेर लेवुं. अने २ बीबी केसर-चन्दननो साथिओ करेली थाली विंब पधराववा सारुं लेवी, ने पूर्ण कलशो साथे लेवा, ते पैकीना एक कलशमां चोखा, सोपारी, अने नोकडतो रुपियो मूकवो, अने बीजामां लोहनी रक्षा-खीलो प्रमुख मूकवां. कलशोना गलामां गेवास्र बांधवुं, अने पुष्पमाला पहारावची, कलशो उपर एक एक नालियेर मूकवुं, आ ग्रमाणे तैयारी करी मंगलगीत अने वाजिंत्रोना शब्दपूर्वक विंब लेया जवुं, विम्ब आगल केसर चन्दननो साथियो करवो,

उपर चोखानो साथियो रूरी नालियेर सोपारी मूरुनी, अने ते पछी त्या सघ सहित देववन्दन करवुं, जेना घरे चिम्ब होय तेने श्रीफल आपी भगवान्ते लइ जवानी आज्ञा मागरी, चिम्बना हारुदानी अथवा चिम्ब जेना तावामा होय तेनी आज्ञा मलता चिम्बने थालीमा पधरावी शुभ स्मरोदय जोड जिनालय तरफ प्रस्थान करवुं. चिम्ब उपर चिम्बनी पडदो राखवो, आगे वाजिन वागते धवल मंगलगीत गवाते श्री सघ सहित चिम्ब लइ जिनभवन तरफ चालवुं, मार्गमा वलि मङ्गल उछाली दश दिक्क पालोने नोलाववा.-

- ॐ नम इन्द्राय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय श्रीजिनचिम्बप्रवेशविधौ आगच्छ आगच्छ स्वाहा ॥१॥
 ॐ नमोऽग्नये सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय श्रीजिनचिम्बप्रवेशविधौ आगच्छ आगच्छ स्वाहा ॥२॥
 ॐ नमो यमाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय श्रीजिनचिम्बप्रवेशविधौ आगच्छ आगच्छ स्वाहा ॥३॥
 ॐ नमो निर्ऋतये सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय श्रीजिनचिम्बप्रवेशविधौ आगच्छ आगच्छ स्वाहा ॥४॥
 ॐ नमो वरुणाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय श्रीजिनचिम्बप्रवेशविधौ आगच्छ आगच्छ स्वाहा ॥५॥
 ॐ नमो वायवे सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय श्रीजिनचिम्बप्रवेशविधौ आगच्छ आगच्छ स्वाहा ॥६॥
 ॐ नमः कुबेराय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय श्रीजिनचिम्बप्रवेशविधौ आगच्छ आगच्छ स्वाहा ॥७॥
 ॐ नम ईशानाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय श्रीजिनचिम्बप्रवेशविधौ आगच्छ आगच्छ स्वाहा ॥८॥
 ॐ नमो नागाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय श्रीजिनचिम्बप्रवेशविधौ आगच्छ आगच्छ स्वाहा ॥९॥

ॐ नमो ब्रह्मणे सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय श्रीजिनचिम्बप्रवेशविधौ आगच्छ आगच्छ स्वाहा ॥१०॥
ॐ नमः सर्वदेवदेवीभ्यः सायुधेभ्यः सवाहनेभ्यः सपरिकरेभ्यः श्रीजिनचिम्बप्रवेशविधौ आगच्छन्तु
आगच्छन्तु स्वाहा ॥

आ प्रमाणे आह्वान करी ते ते दिशां वाकला उछालतां ज्यां विबनो प्रवेश करावचो हे, ते जिनभवननी तरफ चालवुं-
विच लेइने संघ लगभग अर्ध मार्गे आवे त्यारे ४ सधना स्त्रियोए जवारा पात्रयुक्त ४ कलत्रो उपाडीने सभे आवुं, एक
स्त्रिए वधाववानो सामान थालीयां लइने साथे आयुं, मार्गमां भगवाने वधाववा, ते पछी विम्ब लई जिनभवनना द्वारे आवुं,
त्यां पुंखवानी विधि करची, फलादिक आगल धरवां, वलि बाकुला उछालवां, अने ते पछी प्रतिमा सहित द्वासां प्रवेश करचो.
जे स्थानमां विम्ब स्थापन करवाना होय त्यां जह मुहूर्तनी वेला आवे त्यां सुधी उमा उमा “ ॐ पुण्यघाहं पुण्यघाहं ”
बोलतां प्रवाल, १ मोती, २ सोडुं, ३ रुपुं, ४ त्रांडुं, ५ समूलदर्भ, ६ सोपारी, ७ चोरवा, ८ चकनी माटी, ९ ए सर्वनी पोटली
वांधी पवासण उपर खाडासां मूकने “ झौं ” ए मंत्राक्षरे अभिमंत्रित करवां, उपर रूपानो कूर्म स्थापीने चन्दन, केसर, अगर,
कर्पूर-सुवर्णरज आ पदार्थाना रसे करीने—

ॐ कूर्म निजपृष्ठे जिनचिम्बं धारय धारय स्वाहा ।

ए मंत्र लखचो, अने ते उपर प्रतिष्ठायुष्ट वासक्षेप करचो. गुरुना अथावमां तेमणे आपेल वासक्षेप विधिकारे नाखचो.
मुहूर्तना समयमां ७ नोकार गणीने प्रतिमा गादी उपर स्थापित करची, अने

“ ॐ स्थावरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा ”

ए मंत्रનો ७ वार प्रतिमा उपर न्यास करवो—

प्रतिमा स्थापन कार्य पछी पूर्ण कलत्र आगल मूकनो, लाख चोखानो ढगलो करीने उपर श्रीफल मूकनु, अने ते पछी श्री संघे त्या देववंदन करुं,

ए पछी प्रतिष्ठा करानार संघे जयना गृहस्थे यथाशक्ति तन्त्रोल आपीने श्रीसघनी भक्ति करवी ? इति

॥ श्रीजिनविम्बगृहप्रवेश-विधि ॥३॥

प्रथम श्रेष्ठ मुहूर्त जोरारखु, गत्म-शुक्र-योगिनी घरना द्वारने समुल टालीने मुहूर्त लेवु.

जे आलामा, ओगडामा के तैयाग करानेल घरमदिग्मा प्रतिमा पघरावत्री, होय त्यां अवंड कचोलामा सोनवाणी करी—

“ ॐ श्रीजीराजनाथार्थनाथ रक्षां कुरु कुरु स्वाहा ”

आ मंत्रे ७ वार मंत्री मुहूर्तथी ३ दिग्ग पहेत्रथी छाटुं, धूप उवेत्रवो, अने बलमंगलगीत गवराववा

मुहूर्तना दिग्गसे अनेक वाजिजोना शब्दो मांशे महेन्द्रा आडम्बर अने उत्सवपूर्वक जिनत्रिभूषं घरे लावी ४ पुंखणिआओथी पुखावी वरना द्वारमा प्रवेश करामवो, धूप दीवो माये राखवो, तिम्र ज्या पिराजमान करवानुं होय ते स्थाने प्रथम चारुनी माटी तथा समूल डाम मेला करी लीपवा, उपर नेमर चन्दननो स्वस्तिक करी, गुरुए आपेल नामशेष करवो, अने मुहूर्तना समयमा

? वा जिनपियप्रवेश विधि १६मा खेनामा ललेल प्राचीन यानाओ उपरथी भाषा बदलीने करी उ

७ नोकार गणीने जिनविभ पधरावुं.

शिव पधराव्या पछी दूध, १ दहि, २ घी ३ साकर, ४ अने सवौपधि, ५ आ पांच द्रव्योळुं 'पंचामृत' करी स्नात्र करवुं, आगे विशेष नैवेद्यादि होवुं, अने आरति मंगलदीनो करवो.

शक्तिने अनुसारे संघपूजा साधर्मिक-वात्सल्यादि करवां, प्रतिष्ठा पछी १० दिन सुधी सवारे सांजे कपूर कस्तूरी अगर आदिनो सुगन्धी धूप विशेष प्रकारे करवो, केसर-चन्दन पुष्पादि वडे विशेष पूजा करवी, अने १० दिवस पर्यन्त नित्य स्नात्र पूजा भणाववी.

मुहूर्त पहेलाना १० दिवसश्री पछीना १० दिवस पर्यन्त घरथणीए ब्रह्मचर्य पालवुं, भूमिस्थान करवुं, एकाशन करवुं, अने १० दिवस पर्यन्त घरघां एक एक जणे आर्यविल करवुं, १० दिवस सुधी सवारे सांजे १०८ नवकार अने १०८ उवसर्गहर घरथणीए गणवा. अथवा तो नोकार अने भयहर ' नमिऊण ' स्तोत्रनी फूल गुंथणीए साला गणवी, अने जे भगवान पधराव्या होय तेमना नामनो पण १०८ वार जाप करवो. इति शिव गृहप्रवेशविधिः

श्री जिनचिम्ब गृहप्रवेशविधि (४)

पूर्वोक्त विम्ब प्रवेशविधि विवना देवालय प्रवेशनी छे. पण विम्बनो गृहप्रवेशविधि एथी बहु भिन्न नथी. गृहप्रवेशने अंगे

१ सं. १५४२ वर्गे लिखित गुणरत्नसूरिकृत प्रतिष्ठाकल्प अने श्री विशालराजशिष्यकृत प्रतिष्ठाकल्पना आधारे आ (श्री विवगृहप्रवेशविधि) उद्धृत करी छे ।

ए विधिमा जे नाम मात्रनो फरक छे, ते नीचे आपीये छीये, विधिकारोए ए भेदने लक्ष्यमा राखीने विधि कराववी.
 १ जे घरमा जे वषे रप्रवेश थयो होय ते घरमा ते वषे विग्रप्रवेश थई सकतो नथी, ए स्थानमा राखीने प्रवेश सुहूर्त लेबु.
 २-देवालयना विग्रप्रवेशमा प्रतिमाने साहसु करमा. वधाववा, पुखवा, स्थापना आदिना कार्यो चढानो नीलीने संघनो आदेश लेनाराथीना हाये कराय छे ज्यारे गृहविग्रप्रवेशमा ए बघी क्रियाओ घरघणी अथवा तेना परिसरना हाये करावनी होय छे.

३-देवालयना विग्र प्रवेशमा जे आसन उपर प्रतिमा प्रतिष्ठित करवानी होय छे, त्या पचरत्न आदि स्थापन करी उपर कूर्मस्थापवानु विधान कराय छे ज्यारे घरमा प्रतिमा स्थापनी विधिमा पीठनुं (पचासणनु) पूजन नीचे प्रमाणे करवानुं छे -
 सुहूर्तनी वेला आवे त्या सुधी उभा उभा ' ॐ पुण्याहं पुण्याह ' इत्यादि बोलता पचासण उपर ककुनो साथियो करी—
 ॐ कूर्म निजपृष्ठे जिनविम्व धारय धारय स्वाहा ।

आ मत्र ७ वार बोलीने आसनना स्थानने अभिसन्त्रित करवुं ए पछो समूल डाम साथे मेलवेली कुंभकार चक्रनी माटी आसन उपर लिपवी, ते उपर गुरुदत्त वासक्षेप करवो, अने सुहूर्तनी वेला ७ नोकार गणीने ते स्थाने प्रतिमा पचराववी, अने—
 “ ॐ जये श्री ह्रीं सुभद्रे नमः ”

ए मंत्रनो प्रतिमा उपर ७ वार न्याम करवो

४-जिनालय होय के घर देहरासर होय पण प्रतिष्ठा करावनार कोई एक व्यक्ति होय तो तेपे १० दिवस सुधी शीलव्रत

पालवुं, आर्यविल अथवा तो एकाशन करवुं, नवकार-उवस्सग्गहरनी फूल गूंथणीए ? नोकारवाली नित्य गुणवी, अने भूमि शयन करवुं. ?

आसनयंत्र—

आसनयंत्रचुं विधान पंडित आशाधरना प्रतिष्ठासरोद्वारमां अने आचार्य जिनप्रभस्वरिना ' विधिमार्गप्रपा ' ग्रन्थना प्रतिष्ठाधिकारमां दृष्टिगोचर थाय छे.

पं० आशाधरनुं अने आचार्यजिनप्रभनुं आ यंत्र-विधान थोडाक शब्दिक फेरफार सिवाय एक ज छे, छतां विधि-प्रपामां ए विषयना—

तिर्यग्ध्वार्धरेखाभिर्वज्राग्राभिः सभालिखेत् । मण्डलं व्येकपञ्चाशत्कोष्टकं शृङ्गरेखकम् ॥३॥

अकारादिदकारान्तं, कोष्ठेष्वेकैकमक्षरम् । बालकोणस्थितात्कोष्ठात्, प्रादक्षिण्येन संलिखेत् ॥४॥

मध्यमे कोष्ठके तत्र, हंकारं सौर्ध्वरेफकम् । जयादिदेवताधिष्ठ-पत्रपद्मस्य मध्यगम् ॥५॥

वज्राग्रे प्रणवं दद्यात्, कामबीजं तदन्तरे । त्रिर्भयासाम्राज्यवेष्टय, निरुन्ध्यादं कुशेन तु ॥६॥

आ ४ श्लोका या तो रही गया छे अथवा तो जाणीने छोडी देवामां आव्या छे, गप्पे तेम होय एण एट्ठुं तो निश्चित छे के विधिप्रपागतविधान खंडित अवश्य छे.

१ आ गृहविभ्रमप्रवेशविधि लगभग १६ मा सैकाना उत्तरार्द्धमां लखेल एक प्राचीन पत्रना आधारे लक्ष्मी छे.

रेखाओना वज्रो आगे 'ॐ' अने वे ॐ मन्त्रे कामवीज (कली) लखुं, मंडलना मध्यभागे उपर 'ह्रीं' कार लखी तेनी मात्रा (ई) म्हे यत्रने ३ बार वीटुं, अने मात्रा पूरी थाय त्यां 'कौं' लखीने यत्रने सपूर्ण करयु.

उक्त रीतिए यंत्र पत्रा उपर लखीने दूध तथा जल घडे पखालयुं, सुगन्धि द्रव्योए मिश्रित चंदन घडे मिलेपन करयु, उत्तम-पुष्प, अक्षत, नैवेद्य, दीप, धूप, फलोधी तेने पूजयु, अने मालुका वर्णालिङ्ग निम्नोक्त मालामंत्रनो '०८ पुष्पो उपर जाप करीने पुष्पो यत्र उपर चढाववा. मातृकार्णमत्र आ प्रमाणे छे—

“ ॐ नमोऽहं अथा इई उऊ ऋऋ लृऋ एऐ ओऔ अथः कस्वगघड चछजझञ टठडढण तथदधन पफबभम यरलव शपसह ह्रीं क्लींकीं स्वाहा ।”

पत्राना मध्यकोष्ठकमा रुमल छे, तेवो ज रुमल पीठ उपर पण सुगन्धि द्रव्योना रसधी लखवो, उपर कपूर केसर वगेरे छोटवा, पारो तथा पंचरत्न ते उपर स्थापीने पूर्योक्त पंटे त्या स्थापयुं, ते पछी शुभ लग्न नवमासकमा ते आसन उपर प्रतिमा प्रतिष्ठित करवी, अने तेमा पृथ्वी तत्त्वतु चिन्तन करयुं, एवो आम्नाय छे.

आसनयंत्र २

वीक्षुं आसनयंत्रं जिनप्रभतीयं प्रतिष्ठाविधिमां ह्ये. आ यंत्रनी निर्माणरीतिना संबन्धमां आचार्ये कंइ वर्णन के व्यवस्थानो उल्लेख कर्यो नथी, पण एनी स्थापनाना संबन्धमां नीचेना शब्दोमां व्यवस्था आपी ह्ये—

“ इदं यंत्रं तास्रपत्रे उत्कीर्य देवगृहे मूलनायकविभ्रस्याधो निधापयेत् । विभ्रस्य सकलीकरणं शान्तिं पुष्टिं च करोति । यस्याधरतनत्रिभागे मूलनायकस्य क्षिप्यते तस्य नाम मध्ये दीयते, मूलनायकस्य यक्ष-यक्षिण्यौ च लिख्येते । अत्र तु श्रीपार्श्वनाय-तद्वक्षयक्षिणीनां नामन्यासो निदर्शनमात्रमिति ।” अर्थात्—‘ आ यंत्रं त्रांत्राना पत्रामां खोदावीने देवालयां मूलनायक प्रतिमाना आसन नीचे राखुं, आ यंत्रं विभ्रमां कला (अतिशय, प्रभाव) उत्पन्न करे ह्ये, अने शान्ति तथा पुष्टि करे ह्ये.

जे मूलनायक नीचे यंत्र राखुं तेनुं तेना मध्यभागमां नाम लखुं, अने मूलनायकना यक्ष-यक्षिणीनो पण तेमां आलेख करवो अथवा तेमनां नाम लखवां.

आ यंत्रमां पार्श्वनाथ धरणेन्द्र पद्मावतीनां नामो दृष्टान्तरूप समजवानां ह्ये.
आचार्ये जिनप्रभद्वरि कहे ह्ये.

“ ॐ ह्रीं आं श्रीपार्श्वनाथाय स्वाहा ।”

आ मंत्रे प्रथम उपवास पूर्वक १०००० जाइनां पुण्यो जपिने यंत्र उपर चढाववां, पछी यंत्र पीठ उपर स्थापन करुं.
यंत्रमां जेम मूलनायकनुं नाम लखवानुं ह्ये, ते ज प्रमाणे जापमां पण मूलनायकनुं ज नाम बोलवानुं ह्ये, ए वस्तु अर्थतः सिद्ध ह्ये, अहीयां जप्यमंत्रमां लखेल ‘ पार्श्वनाथ ’ ए नाम दृष्टान्त मात्र समजनुं.

विधिप्रपनी अमारी हस्तलिखित प्रतिमा आपेल २ यंत्रको पैकीनु ? छु यत्र आशाधरनी निर्माण विधिथी ननावेल छे, ज्यारे २ छु यत्र स्वतंत्र छे, आनी रचना साथे आशाधरना तेम ज चिनप्रमस्वरिना श्लोकोनो कजो मेल मलतो नथी बीजा यंत्रना संग्रहमा जिनप्रमस्वरिण थोडारु शब्दोमां विवेचन करुं छे, जेनो उल्लेख योग्य स्थाने करवामां आवशे प्रथम अमो उक्त नने ग्रन्थकारोण आपेल श्लोको उतरथी ? ला यंत्रना निर्माणतुं विवेचन करीशु

आसनयत्र ? —

निश्चल रगाने स्थापेल सपूर्ण लाक्षणिक पीठ उपर प्रतिष्ठित करवा माटे प्रतिमाने तेनी पासे लागीने राखी मूको, पीठे स्थापवा माटेसोनातुं, रूपानु, रामानु, अथवा पापाणनु एक चोस पशु वनावो, पशु सुन्दर जाडुं अने चीरुणु वनावी तेमा आदी उभी ८-८ रेखाओ (लीटीओ) खंचागी, रेखाओ अग्रभागे नञ्जाकारे करवी, आम ८-८ रेखाओना सयोगथी पत्रामा ४९ कोष्टरुनु मडल ग्रन्थे (४ यी ५ मी रेखाओ वच्चेनु अतर अपेक्षाकृत यधारे राखबुं के जेथी मध्यकोष्टक ग्होडु वने अने तेमा अष्टल कमल वनावी शक्याय)

आ मडलना बाह्यकोण (ईशानकोण)ना कोष्टरुथी आरभ करी सृष्टिक्रमे १-१ कोष्टरुमा १-१ अक्षर लवी छेछे मध्यकोष्टकमा अष्टग्रकमल वनावबुं, अने तेनी कर्णिकामा रेफ सहित 'द' कार अर्थात् 'ह' लखवो, आने फरता पूर्वादि दिशागत कमलपत्रोमा जया १ जंभा २ विजया ३ मथिनी ४ अजिता ५ मोहा ६ अपराजिता ७ मोहिनी ८ ए आठ देवीओनो आलेख करवो वा नामो लखवा

रेखाओना वज्रो आगे 'ॐ' अने बे ॐ वच्चे कामबीज (कल्ली) लखुं, मंडलना मध्यभागे उपर 'ह्रीं' कार लखी तेनी मात्रा (ई) वडे यंत्रने ३ वार वींटुं, अने मात्रा सूरी थाय त्यां 'कौ' लखीने यंत्रने संपूर्ण करुं.

उक्त रीतिए यंत्र पत्रा उपर लखीने दूध तथा जल वडे पखालुं, सुगन्धि द्रव्योए मिश्रित चंदन वडे विलेपन करुं, उत्तम-पुष्प, अक्षत, नैवेद्य, दीप, धूप, फलोत्थी तेने पूजुं, अने मातृका वर्णात्मक निम्नोक्त मालांमंत्रनो ? ०८ पुष्पो उपर जाप करीने पुष्पो यंत्र उपर चढाववां. मातृकावर्णमंत्र आ प्रमाणे छे—

“ ॐ नमोऽर्हं अआ इई उऊ ऋऌ लृ ऌ ड ण ओऔ अंअः कखगघङ चछजझञ टठडढण तथदधन पफबभम थरलव शषसह ह्रीं कल्लीकौ स्वाहा । ”

पत्राना मध्यक्रीष्टकमां कमल छे, तेवो ज कमल पीठ उपर पण सुगंधि द्रव्योना रसथी लखवो, उपर कपूर केसर वगेरे छांटवां, पावो तथा पंचरत्न ते उपर स्थापीने पूर्वोक्त पंहुं त्यां स्थापुं, ते पछी शुभ लग्न नवमांशकमां ते आसन उपर प्रतिष्ठा करवी, अने तेसां पृथ्वी तत्त्वनुं चिन्तन करुं, एवो आम्नाय छे.

२. दिक्पाल पूजा कीष्टकः-

१० दिक्पाल	इन्द्र	अग्नि	यम	निष्कृति	घरण	वायु	कुन्ड	ईशान	नाग	ब्रह्मा
आलेखन द्रव्य	गोरोच- न	रक्त च न्दन	अगर- कस्तूरी	अगर कस्तूरी	अगर- कस्तूरी	चन्दन केसर कस्तूरी	चन्दन यरास	चन्दन	चन्दन	चन्दन कर्पूर
पूजन द्रव्य	केसर वास	केसर	केसर	अगर चन्दन	अगर चन्दन	वास-चूर्ण	चन्दन-चरास	चन्दन	चन्दन	चन्दन
फूल	सोपन चयो	जाखल	दमणो मकओ	मालती मकओ	दमणो- मकओ	चपक दमणो	जाइ	कुमुद घा जाइ	मोगरो चयो	सेवनी- जाइ
फल	जवीरी	राती सापाती	काली सापाती	दाडिम	दाडिम	नारंगी	विजोह	जेरडी	गाम- उजली	विजोह
चैत्य	पीठ	१ रातु	कालु	दयाम- डवो रंग	३ आरमा नी	३ नीलु	श्वेत	श्वेत	श्वेत	श्वेत
नेवेच	मोतियो लाडु	चूरमानो लाडु	अडदने लाडु	तिलनो लाडु	तिलनो लाडु	मगनो लाडु	धीसीवल मगावनो	धीसी- द्रव्य	पेटा	धेयर
द्रव्यादि	अक्षत- पानादि	अक्षत- पानादि	अक्षत- पानादि	अक्षत- पानादि	अक्षत- पानादि	अक्षत- पानादि	अक्षत- पानादि	अक्षत- पानादि	अक्षत- पानादि	अक्षत- पान

दीपणी- १ प्रन्थातरे नील २ प्रन्थान्तर पीत ३ प्रन्थातरे रक्त

दिकपालो पढी बीजा १ खानावाला शुद्ध पाटला उपर नवग्रहोनी पूजा करवी, सूर्य १, चन्द्र २, मंगल ३, बुध ४, गुरु ५, शुक्र ६, शनि ७, राहु ८, अने केतु ९; ए नव ग्रहोने पोतपोताना दिविभागमां पोतपोताना मंडली सहित वर्षा-नुसारं आलेखवा.

सूर्यादि ग्रहोनी स्वदिशाथो अनुक्रमे मध्या १, आग्नेयी २, दक्षिणा ३, ऐशानी ४, उत्तरा ५, पूर्वा ६, पश्चिमा ७, नैर्ऋति ८, अने वायवी ९ जाणवी.

सूर्यादि ग्रहोना मंडलो अनुक्रमे गोल १, चौरस २, त्रिकोण ३, चाणसमान ४, चौरस ५, पदत्रोण ६, धनुष्याकृति ७, शूर्पसदृश ८, अने ध्वजाकार ९, होय छे. ग्रहोना पूजन पूर्व, पाटला उपर स्वस्वदिशा विभागमां मंडलो आलेखीने पढी पूजानो प्रारंभ करवो.

सूर्यादि ग्रहोना वर्ण अनुक्रमे रक्त १, श्वेत २, लाल ३, नीलो ४, पीलो ५, धोलो ६, कालो ७, क्याम ८, अने भूमवर्ण ९ जाणवो, ग्रहोना वर्ण जेवा वर्णनां बखो, तेसना प्रिय रसवालां फलो अने विचित्र नैवेद्यो वडे पूजायेला ग्रहो शुभ फलदायक थाय छे.

पूजा पूरी थया पढी “ग्रहशान्ति स्तोत्र”नो पाठ करी दिकपालोनी पाटलो जिनप्रतिमाना टाया अंगनी दिशासां अने ग्रहोनी पाटलो जमणा अंगनी दिशासां मुक्वो.

दिकपालपूजाविधि

वर्तुलं चतुरस्रं च, त्रिकोणं चाणसंनिभम् । चतुरस्रं च पट्कोणं, चापाभं शूर्पकाकृति ॥५७॥

ध्वजाभं मण्डलान्ग्राहः, सूर्यादीनामनुक्रमात् । मण्डलानि समालिख्या-ऽऽख्यं खेटपूजनम् ॥५८॥

रक्त. श्वेतो लोहिताभो, हरितः पीतवर्णभाग् । श्वेतः कृष्णौ च धूमाभः, खेटवर्णाः क्रमादिभि ॥५९॥
वर्णसदृशवर्णेण, प्रियरसफलेन च । नैवेद्येन विचित्रेण, पूजितः शुभदो ग्रहः ॥६०॥

पूजान्ते ग्रहशान्त्याह-स्तोत्रपाठं विधाय च । पदकौ द्वौ क्रमात्स्थायौ, जिनाद् वामे च दक्षिणे ॥६१॥

आन्दोऽ-पूर्वा १, आग्नेयी २, दक्षिणा ३, नैऋति ४, पश्चिमा ५, वायवी ६, उत्तरा ७, ऐशानी ८, अथोदिशा ९,
अने ऊर्ध्वदिशा १०, आ १० दिशाओमा अनुक्रमे इन्द्र १, अग्नि २, यम ३, निर्ऋति ४, वरुण ५, वायु ६, कुबेर ७, ईशान
८, नाग ९, अने ब्रह्मा १०, आ दश दिशापालोने स्थापना अने पट्टी पोतपोताना वर्णानुसारि वर्ण-रसे करी युक्त वस्त्रो अने
फलो वडे पूजवा

दश दिशापालोना वर्णो अनुक्रमे पीलो १, रातो २, कालो ३, ख्याम ४, आशानी ५, नीलो ६, श्वेत ७, श्वेत ८, श्वेत
९, श्वेत १० आ प्रमाणे मानेला छे

दिक्पालोने शुभ पाटला उपर शुद्ध द्रव्यो वडे पूजीने अन्ते ते ते दिक्पालनी दिशामा दिक्पालना नाग मन्त्रपूर्वक
बलिर्शेष करयो.

३ तृतीयाह्निकम् ।

द्विपाल-ग्रह-अष्टमंगल-स्थापनपूजनविधि-आह्निकधीजकम् ।

पूर्वे १ दक्षिणपूर्वे २ च, दक्षिणे ३ उपरदक्षिणे ४ । अपरे ५ तथा उपरोत्तर ६, उत्तरोत्तरपूर्वयोः ७-८ ॥४९॥
पाताले १ ब्रह्मलोकं १० च, दिशामीशानिमान्प्रसेत् । इन्द्रमग्नि यमं वैश्व, निर्ऋति वरुणं तथा ॥५०॥
पातुं कुबेरमीशानं, नागं ब्रह्माणमेव च । स्ववर्णरसभायोर्गणैर्वैश्वैः फलैस्ततोऽर्चयेत् ॥५१॥
पोत १ रक्त २ सित ३ श्याम ४-खाभ ५ नीलद्युतः ६ क्रमात् । श्वेताः शेषाश्च ७-८-९-१० चत्वारो,

दिशांपालान् समभ्यर्च्य, शुभैर्द्रव्यैः सुपट्टके । द्विष्टु धलिपरिक्षेपः, कार्यां नान्ना दिगीशितुः ॥५३॥

अन्यस्मिन् पट्टके नन्द-कोष्ठके खेचरान् यजेत् । सूर्यं चन्द्रासं भीमं, बुधं देवगुरुं भृगुम् ॥५४॥

मन्थे^१ दक्षिणपूर्वे^२ च, दक्षिणोत्तरपूर्वयोः^३ च । उत्तरे^४ पूर्व^५ पाच्यां च, रक्षो वायव्यगा^६ गृह्याः ॥५६॥

द्विपाला वर्णतो मताः ॥५२॥
द्विपाला वर्णतो मताः ॥५२॥
द्विपाला वर्णतो मताः ॥५२॥

द्विपाला वर्णतो मताः ॥५२॥
द्विपाला वर्णतो मताः ॥५२॥
द्विपाला वर्णतो मताः ॥५२॥

१ दशदिग्पालनी स्थापना कोष्टक—

८ ॐ ईशानाय नमः	१ ॐ इन्द्राय नमः	२ ॐ अग्ने नमः
७ ॐ कुबेराय नमः	१० ॐ ब्रह्मणे नमः	३ ॐ यमाय नमः
	९ ॐ नागाय नमः	
६ ॐ वायवे नमः	५ ॐ वरुणाय नमः	४ ॐ नैऋतये नमः

उपकरणो—पाटला २, दिक्पाल, नवग्रह, योग्य सेवनना । वस्त्र १९, 'पीलां २, रातां ३, कालां २, श्याम उदारंगी १, आस्मानी २, श्यामसोसनी १, नीला २, धमला ६ ॥ पाटलाओ उपर बाकना सारु पीछु अने रातुं वस्त्र २, हाथ १-१। प्रमाण । बीजा वस्त्रबंदो हाथनी अंदर होय तो बायो नथी. वस्त्रो मले तो रेशमी लेमां. जो न मले अथवा खर्च ओछो करवो होय तो सुत्राड लेमां' नागखेलना पान २९ । श्रंमाना पैसा २९ । सोपारी २७ । चीत्वा ० ॥ शेर आसरे । पतासा अथवा साकरना कटका २७,

नेपथ्य नंग १९, मोतिया मोतीचूना लाइ २, गोलना चूरमाना लाइ २, बेसीदलना (मगदना) ४, मगनी दालना २, गोलना
पीनो १, अडदनी दालना ३, तलना ३, वेपस १, अने पेडो १ । “ फल मेवो ” (सेलडी कटका २, नारंगी २, जंजीरी,
खाटांलीबू २, विजोरां ३, दाडिम ३, नालिये १, द्राक्षा १, राती सोपारी २, काली सोपारी १, बदाम १, बोली खारेक १ ।
“ पुष्पो ”—(लाल कनेर १, मोगरो जाइ-जुही, अथवा कुमुद ४, जाइल, २ दमणो-मरुओ, ५ पीली चमेली या पीतपुष्प १ ।
पीलो चपो, मालती-चमेली १, जाइ पंचवर्ण पुष्प, १ सुचंड, १ पीतकणोर ।
आलेखन, पूजनना द्रव्यो घसी तैयार करेलां । श्वेत चन्दन १, खखड ८ । लाल चन्दन २ । केसर ५ ॥ गोरोचन २ ।
वासचूर्ण वासक्षेप ३ । कंकु ३ । यक्षकर्दम १ । अगर कस्तूरी ५ । चन्दन बरास ३ । चन्दन कपूर १ । चन्दन केसर कस्तूरी
२ । अगर चन्दन २ । अगर वास १ । ग्रहपूजनमां गणवानी मालाओ—(परचालानी, श्वेत स्फटिकनी, कहेरवांनी, अकलवेरनी
अने गोमेद अथवा सिन्दुरिया स्फटिकनी, ए माला, ग्रह पूजनमां गणाय छे. श्वेत स्फटिकने बदले रूपानी अने कहेरवाने बदले
सोनानी माला पण चाली शके छे, ।

सूचना—पूजापो तैयार कर्या पही प्रथम पाटलाने शुद्ध जल वडे थोह घूमीने शुभ घोषडियामां पूजन चालु करवुं. कोष्ट-
कमां आपेल अनुक्रम प्रमाणे प्रथम आलेखन करी, सुगंधि पदार्थो वडे पूजन करवुं.
पूजनविधि—प्रथम नीचें लखेर मंत्र वंड क्षेत्रपालचुं आह्वान करवुं—
ॐ स्कंी व्लीं स्वां लां ह्रीं सुवनपालाय माणिभद्राय क्षेत्रदेवताय यक्षाधिपतये गजवाहनाय

खड्गहस्ताय पाशायुधाय सपरिच्छदाय, अत्र श्रीजम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे अमुकनगरे अमुकगृहे जिन-
त्रिम्बप्रतिष्ठामहोत्सवे आगच्छ आगच्छ, पूजा गृहाण गृहाण, पूजायामवतिष्ठतु स्वाहा ।

ए पृथ्वी पुष्पाक्षतनी अजलिः भरीने—

भोः क्षेत्रपाल ! जिनप्रतिमाङ्कमाल !, दुष्टान्तकाल ! जिनशासनरखपाल !

पुष्पाक्षतप्रवरचन्दनवास धूप—भोगं प्रतीच्छ जिनवराऽभियेककाले ॥ १ ॥

ॐ क्षो क्षो क्षू क्षे क्षे क्षे क्षेत्रपाल पूजयामि ।

आ मंत्र बोलीने क्षेत्रपालने वधाववा अने पुष्पाञ्जलि दक्षिण दिशाणा नावनी. पृथ्वी हाथ जोडीने—

“ तीक्ष्णदंष्ट्र ! महाकाय ! कल्पान्तदहनोपम ! । भैरवाऽस्तु नमस्तुभ्य-मनुज्ञां दतुमर्हसि ॥ १ ॥ ”

आ श्लोक बोली आत्मा मागवी अने हाथमा वासक्षेप लेइ—

ॐ ह्रीं आधारशक्तये नमः । कमलासगाथाय नमः । आ मंत्र बडे नीचे आसन स्थाने वासक्षेप नावनी।

ए पृथ्वी श्रावकं प्रथम त्वां सेतनो पाटलो स्थापीने उर दृश दिक्षालोनु स्थापन-पूजत कांधु एज रीतेः बीजे पाटले नव
ग्रहेषु स्थापन पूजन करीने ग्रहशान्तिनो पाठ करयो.

पूजन—पूजत गरु करता हाथमां पुष्पाञ्जलि रंजने—

“ दिक्पालाः सकला अपि प्रतिदिश स्व स्वं बलं वाहनं, शस्त्र हस्तगत विधाय भगवत्सन्निभे जगद्बुद्धेभ्ये ॥

आनन्दोल्बणमानसा बहुगुणं पूजोपचारोच्चयम् । संघाय प्रगुणं नयन्तु पुरतो देवस्य लब्धासनाः ॥ १ ॥
आ काव्य बोली पुष्पांजलि दिशापालोना पाटला उपर नाखी दिक्पालाने बधावधा, ते पढी प्रत्येक दिक्पालने ते पाटला उपर स्थापी अष्ट द्रव्यो वडे-

इन्द्रमग्निं यमं चैध, निर्ऋतिं वरुणं तथा । वायुं कुबेरमीशानं, नागान् ब्रह्माणमेव च ॥ १ ॥
आ श्लोकोक्त क्रमानुसार १ इन्द्र, २ अग्नि, ३ यम, ४ निर्ऋति, ५ वरुण, ६ वायु, ७ कुबेर, ८ ईशान, ९ नाग अने १० ब्रह्मानी पूजा करवी.

१. इन्द्र-

“ प्राग्दिग्वधूर ! शचीहृदयाधिवास !, भास्वत्किरीट । चिबुधाधिप ! वज्रपाणे ! ॥
एकावतारसमनन्तरसिद्धिशर्मन् !, शक्र ! स्मरन् स्थितिमुपेहि जिनाभिपेके ॥ १ ॥”

ॐ वषट् नमः श्री इन्द्राय वज्रहस्ताय ऐरावणवाहनाय पूर्वदिग्धीशाय सपरिच्छदाय, श्री इन्द्र !
सायुधः सवाहनः सपरिच्छद इह अमुकनगरे अमुकस्थाने श्रीजिनप्रतिष्ठांमहोत्सवे आगच्छ आगच्छ,
जलं गंधं पुष्पमक्षतान् फलानि धूपं दीपं नैवेद्यं सर्वोपचारान् गृहाण, गृहाण, शान्तिं तुष्टिं पुष्टिं ऋचिं वृद्धिं
कुरु कुरु, सर्वसमिहितं देहि देहि स्वाहा ॥ १ ॥

२. अग्नि -

शोभां वहन्तु चरतृर्यपयोदनादै-क्तकम्पिता नलिनयोनिविमानहंसाः ॥ १० ॥”

ॐ नमो ब्रह्मणे ऊर्ध्वलोकाधीश्वराय चतुर्भुजाय श्वेतवस्त्राय पुस्तकमलहस्ताय हंसवाहनाय, श्री ब्रह्मन् । सायुधः सबाहन' सपरिच्छद इह अमुकनगरं अशुरूस्थाने आगच्छ, जल गन्धं पुष्पमक्ष-
तान् फलानि धूप दीप नैवेद्य सर्वोपचारान् गृह्णण गृह्णण, शान्तिं तुष्टिं पुष्टिं क्वचिद्वृद्धिं कुरु कुरु, सर्व-
समीरितं देहि देहि स्वाहा ॥ १० ॥

उपर लखेल प्रत्येक काव्य अने तेनी माथे लखेल मत्र बोलीने ते ते दिशापालने जलं, गध, पुष्प, फल, नैवेद्य आदि जे जेने
योग्य होय ते तेने चढावया, सर्वेनी पूजा पछी पायला उपर पीळुं वल्ल ओढाडी, पायलो नेत्राद्ये वीटवो अने जिनप्रतिमाना डाना
पडवा तरफ स्थापयो, पछी—

“ इति दिग्धिपकीर्तनाभिरक्षा-क्षपितसमस्तविषक्षवीतविघ्नः ।

कुरु सकलसमृद्धिसनिधानात्, विजितजगत्यभिषेकमगलानि ॥ १ ॥’

आ काव्य बोलीने ते उपर विधिकारे पुष्पाजलि चढावमी, अने प्रतिष्ठागुरूप गालक्षेप करयो, पछी दिशामलिक्षेप करवो.

दिशा-बलिक्षेपः—










दिकपालोसु पूजन-स्थापन कर्या पछी मुख्या स्थानमा उई पूर्वादि दिशासमुख उमा रही, ते ते दिशाना पतिनो मत्र
श्लोक बोली ते ते दिशामा मलिक्षेप करयो, जल छाटवुं, चन्दनादि सुगन्ध पदार्थना छाटा नावया, धूप उलेमयो अने वाजिनो

- वगाडवां. मंत्र श्लोको—
 १ इन्द्र—“पेरावतसमारूढः, शक्रः पूर्वदिशि स्थितः । संघस्य शान्तये सोऽस्तु, बलिपूजां प्रतीच्छतु ॥१॥”
 २ अग्नि—“सदा बद्धिदिशो नेता, पावको मेघवाहनः । संघस्य शान्तये सोऽस्तु, बलिपूजां प्रतीच्छतु ॥२॥”
 ३ यम—“दक्षिणस्या दिशः स्वामी, यमो महिषवाहनः । संघस्य शान्तये सोऽस्तु, बलिपूजां प्रतीच्छतु ॥३॥”
 ४ निकृति—“ग्राम्यापरान्तरालेगो, निकृतिः शिववाहनः । संघस्य शान्तये सोऽस्तु, बलिपूजां प्रतीच्छतु ॥४॥”
 ५ वरुण—“घः प्रतीचीदिशो नाथो, वरुणो मकरस्थितः । संघस्य शान्तये सोऽस्तु, बलिपूजां प्रतीच्छतु ॥५॥”
 ६ वायु—“हरिणो वाहनं यस्य, वायव्याधिपतिर्मरुत् । संघस्य शान्तये सोऽस्तु, बलिपूजां प्रतीच्छतु ॥६॥”
 ७ कुबेर—“निधानवकारूढ, उत्तरस्या दिशः प्रभुः । संघस्य शान्तये सोऽस्तु, बलिपूजां प्रतीच्छतु ॥७॥”
 ८ ईशान—“सिते वृषे ऽधिस्थो य, ईशानो विदिशो विभुः । संघस्य शान्तये सोऽस्तु, बलिपूजां प्रतीच्छतु ॥८॥”
 ९ नाग—“पातालान्धिपतिर्याड्स्ति, सर्वदा पद्मवाहनः । संघस्य शान्तये सोऽस्तु, बलिपूजां प्रतीच्छतु ॥९॥”
 १० ब्रह्मा—“ब्रह्मलोकविभुर्गोऽस्ति, राजहंससप्तमाश्रितः । संघस्य शान्तये सोऽस्तु, बलिपूजां प्रतीच्छतु ॥१०॥”

दिकूपालेने प्रक्षेप्य बलि-क्षेप करी पाछा मंडपमां आवधुं अने ते पछी बीजे पाटले ग्रह पूजन करयुं-

इति दिक्पाल पूजा विधिः ॥

अथ ग्रहपूजा विधि ॥

बुध ४ 	शुक्र ६ 	सोम २ 
गुरु ५ 	सूर्य १ 	मंगल ३ 
लक्ष्मण ७ 	शनिश्चर ९ 	राहु ८ 

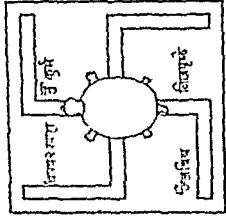
अथ स्थापना —

ग्रह पूजानुं काष्टक—

१ ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	शुभ	बुध	गुरु	शनिधर	राहु	केतु
आलेखन	रक्त च- न्दन	चंद्रन- वरास	केसर	चन्दन-केशर कस्तूरी	चन्दन- वास-चूर्ण	चन्दन	कस्तूरी- अगर	अगर- कस्तूरी	यश-रुद्रम
पूजन	केसर	चन्दन- वरास	केसर	वास-चूर्ण	चन्दन- वास-चूर्ण	चन्दन	कंकु	कंकु	कंकु
फूल	लाल कणेर	जाइ- मोगरो	जागूल	चपो	संयंत्रां	जाइ- मोगरो	मालती- कृष्णो	मनकुंद	चतुर्वर्ण पुष्पो
फल	द्राक्षा	डोलडी	रानी सोपारी	नारंगी	जंघीर	विजोळ	रातरेक	नाळियर	वाटिम
वख	रक्त-लाल	श्वेत	लाल-कीरमजी	नीलुं	पीलु	श्वेत	आम्बानी	कालु	श्याम मोलनी
नैवेद्य	चूरमनो- लाडु	धैमीदल- नो लाडु	गोल घाणीनो लाडु	मगनी दालनो लाडु	भोतियो लाडु	धैमीदल- नो लाडु	अइरनी दा- लनो लाडु	अइरनी दा- लनो लाडु	तिलवटनो लाडु
द्रव्यादि	अभत- पान-शं- वानाणु	अक्षत- पान-शं- वानाणु	चोखा पान नांवा नाणुं	चोखा पान शं- वानाणुं	चोखा पान शं- वानाणुं	चोखा पान शं- वानाणुं	चोखा पान शंवाणाणुं	चोखा पान शंवाणाणुं	चोखापान शंवाणाणुं
माला	प्रवालनी	सफ्टि- कनी	प्रवालनी	करपानी	करपानी	सफ्टिक वाकपानी	अकलरोली	अकलरोली	अकलरोली

उपयुक्त वे आसनयंत्रो उपरान्त एक नीचे आसनयंत्र पण छे के जे ' कूर्मयंत्र'ना नामथी ओलखाय छे. आज काल प्रायः

आसनयंत्र ३



घणा. त्वरा प्रतिष्ठाकारको पीठ उपर राखल खाडामा पंचरत्नादिक मागलिक पदार्थो स्थाप्या पछी ते उपर आ ' कूर्मयंत्र'ने स्थापेछे. कूर्मयंत्र एरु सादामा मादु यंत्र छे, लगभग ३ इंच समचोसम त्रानांनु पट्टु रुगरी ते उपर कूर्मनो आकार कोतराये छे, अने ते उपर सुगन्धी द्रव्यो वडे ' स्वम्तिक' आलेखी तेना ४ पालडियोनी नीचे " ॐ कूर्म-निजगृष्टे -त्रिनिग्न-धाय २ स्वाहा । " आम चारे दिशाओमा मन्त्रबडो लखीने ए यंत्र पीठ (परामण गादी) उपर कूर्मनु मुख द्वार तरफ आवे एरी रीते स्थापे छ अने ते उपर शुभ समय आवे त्वारे मूलनायक प्रतिमाने प्रतिष्ठित करे छे



१३ श्रीशान्तिवादिवेतालीय अहंदाभिषेकविधिः—
अभिषेकविधिः पूर्वं, कथितः शान्तिसूरिभिः । तमाश्रित्याऽभिषेकाणां, विधयो जज्ञिरेऽखिलाः ॥१७३॥

पूर्वमष्टोत्तरशत-घटस्नानमजायत । ‘ चक्रे देवेन्द्रराजेति ’ काव्य घोषेण निर्मितम् ॥१७४॥
तस्यानुकरणज्ज्ञेऽष्टोत्तरस्नात्रमथ्यदः । षोडशे विक्रमाब्दानां, शते केनापि निर्मितम् ॥१७५॥
शान्तिस्नात्रमिदं जज्ञे, सकलचन्द्रदम्भितम् । विक्रमाब्दसप्तदश-शते लोके प्रसिद्धिभाग् ॥१७६॥

भा०टी०—अहंदाभिषेक सर्व प्रथम वादिवेताल शान्तिसूरीजीए कहेल, तेना आधारे ते पछीना आचार्योए भिन्न भिन्न नामथी घणी अभिषेक विधिओ वनावेली जेमां “ चक्रे देवेन्द्रराजैः” आ काव्य बोलीने १०८ अभिषेक करवानी विधि प्राचीन छे. आ अष्टोत्तर शत अभिषेकना अनुकरण रूपे लगभग सोलमा सैकामां कोइए अष्टोत्तरी स्नात्रनी योजना करी, अने ते पछी विक्रमना सत्तरमा सैकामां श्रीसकलचन्द्रगणिए “ शान्तिस्नात्र ” नामथी प्रसिद्ध एक अभिषेक विधिनुं निर्माण कर्युं के जे विशेष प्रसिद्धिमां आव्युं छे.

उपकरण
भद्रासन (प्रणाल युक्त बाजोट),
चंद्रवो भद्रासनोपरि
छत्र त्रय विधोपरि
परिकरयुत जिनचित्र ?
चामर युगल
त्रांवा कुंडी २
घंट १

कासानी धाली १
 वेल्ण १
 गर्जित समूह
 आभूषण जिनत्रियोग्य
 श्वेत वस्त्रधर स्नातकारो-
 (जघन्य ४ उत्कृष्ट २०)
 वस्त्र श्वेत ? नैवेद्यपट्टान्छादन योग्य
 धौतस्त्र अगल्लुष्णा ४
 गेमास्त्र छटाक ?
 धोती जोटा ४ धौत
 द्विरूपालयोग्य तद्वर्णस्त्र १०
 (पीलु १, रातु १, कालु १, उदारगी
 १, श्याम १, आस्मानी १, नीलुं १,
 श्वेत ४, प्रत्येकस्त्र ग्वड हाथ १-१)

चंदन मूठो १
 अगर तोला ५
 कपूर तोला ५
 रक्तचंदन मूठो १
 कस्तूरी चाल ३
 गोरोचन माल १
 श्वेत सस्सन तोलो १
 मरौंपधि पुटी १
 दशाग धूप तोला २०
 अष्ट गंध तोला २
 चामत्सेप तोला १०
 लृण कारुरी तोलो १
 गंगाजल शीशी १
 २५ निमाणोना जल

गुंत १
 झालर १
 थाली ७
 गाटकी ५
 माटली मण १। नी चोली १
 कुंम कोरा ०
 कलशिया ८
 आरति १
 मगलदीवी १
 धूपघाणा २
 दीनी २
 द्विरूपान्त्र योग्य पाटलो १
 नैवेद्य बोमा पाट १
 केसर तोला २

दिकूपालो योग्य नैवेद्य सामान—	शैलडी कटका ६ अथवा मोसंबी ६
मोतिया लाडु २	सफरजन ५
चुरमाना लाडु २	मोसंबी ५
अडदना लाडु २	राती सोपारी २
तिलना लाडु ४	काली सोपारी २
मगना लाडु २	श्वेत बदाम ७
घिसी दलना (मगदलना) २	पान बीडा सोपारी १५
दूधना पेडा २	पान नागरवेलनां १५
घेवर २	पुष्पजात—
	सोवन चंपो वा पीतपुष्प
	जासूद पुष्प
	चमेली-मालती
	जाइ-जूही
	मोगरो
नालियेर ५	
बीजोरां अथवा जंबीरी ३	
दाडिम ७	
नारंगी ६	
फलजात—	

अक्षत शेर २
जिननैवेद्य—

लाडु नं. ५	खंड ५	शेर १
साकर खंड ५	” ५	” ५
खाजा ५	” ५	” ५
घेवर ५	” ५	” ५
दहियारां ५	” ५	” ५
मोहनथाल ५	” ५	” ५
बदाम २५		
सोपारी २५		
पान २५		
द्राक्षा शे. १		
खारेक शे. १		

गुलान

दमणो-मरुओ

दूध सेर ४, दहि सेर ३, घृत सेर २,

ग्रहोपशान्त्यर्थ अभिषेक होय तो गह

योग्य नीचेनो सामान वधु करनो—

यक्षकर्दम तोलो ?

कंकु तोला ?

लाल कणेर पुष्पमाला २

चूरमानो लाडु ?

नेमीदल (मगदल) ना लाडु २

गोलघणीनो लाडु ?

फोतरावाला मगनी लाडु ?

सातियो लाडु ?

अडदिया लाडु २

तलनो लाडु ?

सायुओने आहार दान—

(१) गोलमा राधेल भातनुं दान

(२) घृतयुन दूग्गपाननुं दान

(३) धेपर भोजननु दान

(४) श्रीरु दान

(५) दहिना भरमानुं दान

(६) घृत दान

(७) तिलमट (ऊटेल ना पीलेल तलनुं)

(८) खीचडी (अडदनी दालनी)

अभिषेकनो तात्कालिक तैयारी—

तात्कालिक तैयारीने अगे विधिकारे नीचेनी याततो खाम ध्यानमा राखवानी छे

(९) अनेक र्णना धान्यनुं भोजन
ग्रहोपासकोने दान दक्षिणा—

(१) रक्त र्णनो चन्द्रबो ?

(२) शंख ?

(३) रक्त चदननो मूठो ?

(४) सुर्णदान यथाशक्ति

(५) पीतांबर ?

(६) पगरखानी जोडी ?

(७) घज ?

(८) लोह भाजन ?

(९) काली कामल ?

—+—

अहंदाभिवेक सामान्यपणे ४ स्नात्रकारी अने ४ स्त्रियोनी हाजरीथी पण मारी राते करी शक्याय छे, मात्र ४ स्नात्रकारोमां काओ २० तैयार करवी.

२० पुरुषोमां ? पुरुष जे विधिबाता होय तेने देव-पुरोहित रूपे कल्पवो के जे इन्द्रोने, देव-देवीओने, तेमना कर्तव्योतुं सूचन करतो रहे, ४ पुरुषोने इन्द्रो तरीके कल्पवा, शेष ? ५ पुरुषोनां नामो अनुक्रमे नीचे प्रमाणे कल्पवां-धृतसमुद्राधिपति ? १, क्षीरसुद्राधिपति २, दधिसमुद्राधिपति ३, क्षीरोदसमुद्राधिपति ४, मागधतीर्याधिपति ५, वरदासतीर्याधिपति ६, प्रभासतीर्याधिपति

१२, चन्दनद्रवसमाहारक ८, सौगन्धिक्यसमाहारक ९, स्वच्छजलसमाहारक १०, कुंकुमरससमाहारक ११, कुंकुम-चन्दनरससमाहारक १२, शीतोदा ८, नरकान्ता ९, नारीकान्ता १०, सिंधु ३, रोहिता ३, रोहितांगा ४, हरिता ५, हरिकान्ता ६, शीता

आगल 'देवी' शब्द जोडीने उक्त १४ नदीओनी अधिष्टायिकाओ कल्पवी, शेष ६ स्त्रीओने पत्र ? १, महापत्र २, तिगिच्छि ३, केसरी ४, पुण्डरीक ५, अने महापुण्डरीक ६, आ छ ह्रदोनी निवासिनी अने अधिष्टायिका तरीके अनुक्रमे श्रीदेवी १, द्वीदेवी २, धृतिदेवी ३, कीर्तिदेवी ४, बुद्धिदेवी ५, अने लक्ष्मीदेवी ६, तरीके कल्पवी.

देव देवीओए पोतपोताना अधिकार नीचेना जलादि द्रव्योना अभिवेक के उपयोग प्रमाणे इन्द्रो आदिग धतां ते ते पदार्थ लेइ

उपस्थित ब्रह्मण्डे परिलाना ६ अभिषेकोमा एक एक स्थानीय धृतादि द्रव्य लेड एक एक देवे अथवा देवीए उपस्थित थवाहुं छे ७ थी १० मा अभिषेकोमा वे वे नदीना जल लेइ ने वे नदी देवीओ उपस्थित थयो, ए पछीना तथा अभिषेकोमा अने अन्य कार्योमा एक एक देवी अने देवनी उपस्थिति छे, मात्र १९ मा अभिषेक ग्रंथे माग १, वरदाम, प्रभास आ त्रणेना अधिपति देवोने माये उपस्थित ब्रह्मण्डे छे

२४ निमणोना जलने छाणी एक महोटी माटलीमा एकत्र करु, तेमा गराम, रुद्रं, ऋतुरी वीलीने नाखी तेने सुगधी ननावीने २४ न्दाना न्दाना धातु अथवा माटीना गडाओमा आ भरी, ४ देवो अने २० देवीओने हजले करु, क्षीर समुद्रना जलमा दूध नाखी जलने संफेड बनावहु, शेष २३ बडाओहुं जल जलरूपे ज राखहु, घृत, क्षीर, दधि, समुद्रोना अधिष्ठायकोने घृत, दहिना कलशो भरीने आपना, सर्वोपधि समाहारक देवोए पोतपोताना अधिकार नीचेना द्रव्यो अभिषेकने योग्य बनानीने तैयार राखना अने इन्द्रो आदेश मलता ज हाजर करवां.

जो अभिषेक भक्तिरूपे ज करानो होय तो ग्रह निमित्ते जणांजेल मलि, पुष्प, भोजन, अने दक्षिणा निपयक पदार्थोनी तैयारीनी जरूरत नथी, मात्र दिक्पालो योग्य पदार्थो ज तैयार गरावना पण कोड भय के व्यक्ति जिनभक्ति उपरान्त ग्रह पीडो-पशान्तिनो पण इच्छुक होय तो उपररणीमा ग्रहाधिकारोक्त उपकरणो पण मेलनी राखवा, तार्कालिक तैयारीमा आवश्यक पदार्थोनी तैयारी कराववी अने जिनाभिषेक, ग्रहाभिषेक अने ग्रहभूजनादि ग्रान्ति इच्छुकना हाथे करावहु.

स्नान पूर्व दिक्पालोने एक एक राव्यद्वारा आह्वान करी पाटला उपर पोतपोताना आलेखित स्थाने पुष्पाञ्जलि चडे गथानीने

वेसाहवानुं कार्यं करवानुं छे, पूजन, बलि, वस्त्रादि द्वारा तेमनो सत्कार अभिषेक पूर्ण थया पछी तेमना विसर्जन पूर्वें ज करवानो छे, अने ते पण बाहुला नाखीने नहि पण तत्प्रिय पुष्प, फल, पत्र, नैवेद्य, अर्पण करीने.

अर्हदभिक्षेक—

वत्र मंडपमां अथवा चैत्यमां ज्यां अभिषेक करावा होय त्यां सभास्थान छोडी सामेना मध्यभागे स्नात्र-पीठ बनावबुं, पीठ उंचुं २७ इंचुं, समचोरस २५ इंचुं करबुं, पीठुं विधिपूर्वक पूजन करी ते उपर भद्रासन (प्रणालिओ बाजोठ, २५ चोरस अने ९ इंच उंचुं होय ते स्थापबुं, भद्रासन उपर चंदननो स्वस्तिक करी तेनी पुष्पादिवडे पूजा करबी.

ए पछी भद्रासन उपर विराजमान करावा लावेल जिनप्रतिमा सामे उभा रही हाथमां पुष्पांजलि लेइ—

श्रीमत्पुण्यं पवित्रं कृतचिपुलफलमङ्गलं लक्ष्यलक्ष्याः, क्षुण्णारिष्टोपसर्गग्रहगतिविकृतिस्वप्नसुत्पापघाति ।
सङ्केतः कौतुकानां सकलसुरासुरावं पर्वसर्वोत्सवानां, स्नात्रंपात्रं गुणानां गुरुगरिभगुरोर्वञ्चिता येन दृष्टम् ॥१॥
रूपं वयः परिकरः प्रभुता पदुत्वं, पाण्डित्यमत्यतिशयश्च कलाकलापे ।
तज्जन्म ते च विभवा भवमर्दनस्य, स्नात्रे व्रजन्ति विनियोगमिहार्हतो ये ॥२॥

छत्रं चामरसुज्वलाः सुमनसो गन्धाः सतीर्थोदका, नानालक्ष्कृतयो बलिर्दधिपयः सर्षीषि भद्रासनम् ।
नान्दी मङ्गलगीतन्त्रविधयः सस्तोत्रमन्त्रध्वनिः, पकाद्यानि फलानि पूर्णकलशाः स्नात्रङ्गमित्यादि सत् ॥३॥

सुरासुरनरोगत्रिदशवर्त्मचारिप्रसु-प्रभूतसुखसम्पदः समनुभूय भूयो जनाः ।

जितम्बरपराक्रमाः रुमकृताभिषेका विभो-र्विलह्य यमशासन शिवमनन्तमध्यासते ॥४॥

अशेषसुवनान्तराश्रितसमाजखेदक्षमो, न चापि रमणीयतामतिशयीत तस्याऽपरः ।

प्रदेश उट मानतो निखिललोकमाधारण, सुमेरुरिति ताघिनः स्नपनपोठभावं गतः ॥५॥

आ ऋग्यो योली इमृमाञ्जलि भद्रपीठ उपर नाखी, ते उपर प्रतिमा स्थापनी, वली पुष्पाञ्जलि हाथमा लेड—

प्रोद्भूतभक्तिभरनिर्भरमानसत्व, प्राज्यप्रशृद्धपरितोषरसातिरेकम् ।

कुर्युः कुतूहलचलितकलिकाकुलत्व, देवा सुहृतामपि सोढुमपारयन्तः ॥६॥

रक्षार्थमाहितविरोधानरोधहेतो-र्लोकरूपपाधिकविसुत्वविभाचनाय ।

कल्याणपत्रकनिन्दसुरावतार, -संचित्ये च जिनजन्मदिनाभिषेकम् ॥७॥

यो जन्मकाले कनकाद्रिशृङ्गे, यश्चादिदेवस्य दृषाधिराज्ये ।

भूमण्डले भक्तिभरावनद्वै, सुरासुरेन्द्रैर्विहितोऽभिषेकः ॥८॥

ततः प्रभृत्येव कृतानुकार, प्रत्याहृतैः पुण्यफलप्रयुक्तैः ।

श्रितो मनुष्यैरपि बुद्धिमद्भि-र्महाजनो येन गतः स पन्था. ॥९॥

अद्यापि जनसमाजो, जनयति बुद्धि विशुद्धयुद्दीनाम् । जन्माभिषेकसम्भ्रम-पिशुनसुनामीरनासीरे ॥१०॥

आ काव्यो बोली पुष्पांजलि प्रतिमा तरु क्षेपणी, पक्षी प्रतिमा उपस्थी पुष्पादि निर्मात्य उतारी पखाल करी पूजा करणी,
जो पूर्व स्थापित प्रतिमा उपर ज अभिषेक करावा होय ता ते ज्यां वेढेल होय त्यां ज ने उपर आ वधी विधि करणी । इतिप्रथमं पर्व ॥१॥

प्रतिमानी पूजा कर्यां पक्षी पुष्पांजलि लेखने—

सडेव्यां भद्रपीठे कृतसकलसहकौतुकालिकाक्षिप्तलोकं, दत्त्वोद्योचं समन्ताद्वरवसनगृहालम्बिपुष्पाचचूलम् ।
चादित्र-स्तोत्र-अन्नध्वनिमुग्धराजराश्वेडितोत्कृष्टिनादैः, सालङ्कारं स्वरूपं जननयनसुखं न्यस्य निम्बं जिनस्य ॥१॥

पूर्वं स्नात्रेषु नित्यं भुतगगनघनप्रोह्यसद्घोषघण्टा, दङ्काराकारितारास्त्रिथतजननिचहं घोषयेत् पूर्णघोषः ॥२॥
आ काव्यो बोली पुष्पक्षेप प्रतिमा साधे करनी, अने दश दिक्पालोनो पाटलो जे प्रथमथी शुद्ध करी तैयार राखेल होय
ते प्रतिमा तंमुख स्थापी हाथसां पुष्पांजलि लेखे—

ओ ओः सुरासुरनरोरगणिद्वसृष्टाः, सङ्घातमेत्य जगदेकचिभूषणस्य ।
निःश्रेयसाभ्युदयसत्फलपूर्णपात्रे, स्नात्रे समं भवत सन्निहिता जिनस्य ॥३॥

एवस्याघोषणां कृत्वा, पुष्पाणिः पवित्रवाक् । सर्वानवावाहयेत् लस्य-ग्निदक्षपालैस्तत्सुखो भवन् ॥४॥
आ ने पद्यो बोलीने पुष्पांजलि दिशापालोना पाटला उपर नाखणी, अने—
इन्द्रमग्निं यमं चैव, निर्कृतिं वरुणं तथा । वायुं कुवेरमीशानं, नागान् ब्रह्माणसेव च ॥५॥

आ श्लाक गौली श्लोकोक्त क्रमधी पाटला उपर यास्थान दिशापालोना मंडलो आलेखी दिक्पालो याग्य पुष्पोवडे वधा-
नीने स्थापनीय मुद्राए नीचेना क्रमधी स्थापन करा, इन्द्रादि प्रत्येकनु काव्य गौलीने प्रत्येकनी स्थापना करवी

इन्द्र-आग्निदग्धवधूवर ! शचोहृदयाधिवास !, भास्वत्किरीट ! विबुधाधिप ! वज्रपाणे !
॥६॥

एकाचतारसमनंतरसिद्धिशर्मन् !, शक्र ! स्मरन् स्थितिमुपैरि जिनाभिपेके ॥६॥

आ काव्य गौली पूर्वभागमा इन्द्रना पद उपर पुष्पो चढानवा.
अग्नि-त्रयीकान्तास्त्यन्तक्षतततमोरशिचिशद, जगज्जातालोक जनयसि जगद्नेत्रहुतसुरु ।

प्रसीदत्येतेन त्ययि मम मनो वाक् च सकला, भवत्येवाभ्यर्णीभवति भवति स्नात्र समये ॥७॥

आ काव्य गणीने अग्निगोणमा अग्निपदे पुष्पो चढानवा.

यम-प्रत्युहसमूहापोहशक्तिरहृत्प्रभावसिद्धैव । समवर्तिनिह रक्षा-कर्मणि विनियोग एव तव ॥८॥

आ काव्य गौली दक्षिण भागमा यमपदे पुष्पो चढानवा.

निर्ऋति-मा मस्था. सस्याता, युष्मदधिष्ठित दिगेच वितपा ।

निर्ऋते निर्वृत्तिकारी, जगतोऽपि जिनाभिपेकोऽयम् ॥९॥

आ काव्य गौली नैऋत रोगे निर्ऋति पदे पुष्पो चढानवा.

घरुण-उदाररसनागुणवर्णितकिङ्किणीजालक प्रबुद्धजनस्थलस्थिरनिविष्टचेतोसुवः ।

ससम्प्रसमागता धनदराजहंसैः समानयन्तु मणिनूपुरान् वरुण ! वारनार्यस्तव ॥१०॥
आ काव्य बोली पश्चिम विभागे वरुणपदे पुष्पो चढाववां।
वायु—जाते जिनाभियेके, विसृजन्तो विविधविटपि कुसुमानि ।

आ काव्य बोली वायु कोणमां वायुपदे पुष्पो क्षेपवां।
कुवेर-अहो विविधविस्मयाश्रुदयभृतिसद्भाजनं, भवन्ति भवभेदिनो भगवतोऽभियेकोत्सवाः ।
यत्स्वमपि गृह्यकेश्वर ! समेत्य तत्कारिणः, करोषि परभेश्वरान् प्रकटकोकटत्वानपि ॥१२॥

आ काव्य पढीने उत्तरदिशापाल कुवेरना स्थाने पुष्पो चढाववां।
ईशान-पतत्पदपरिचक्रमक्रमविधृणितहमाधरं, कटाक्षकपिलीभवनदुखवनभागमीशान ! ते ।
समस्तु करवर्सानाचिचलित-ग्रहर्क्ष-क्षमा, निवेरिह सहोत्सवे सकलभावभाक् ताण्डवम् ॥१३॥

आ काव्य बोली ऐशानी विदिशासां ईशान पदे पुष्पक्षेप करवो।
नाग-नागाः फणायणिसमयूखशिवान्नावनहशका-युधप्रकरविच्छुरितान्तरिक्षम् ।
सद्यः कुरुध्वमभियेकदिनं समन्ताद्, भूत्वा भवोद्धवभिदो भवने प्रदीपाः ॥१४॥

आ काव्य भणीने नागपदे (के जे वरुण पदना उपरि भागे होय छे), पुष्प क्षेप करवो।

ब्रह्मेन्द्र-अद्याभियेकसमये स्मरसूदनस्य, भक्त्यानता विकटपञ्चमकल्पतुल्याः ।

शोभां वहन्तु वरतृपयोदनादै-रुत्कम्पिता नलिनयोनिविमानहंसाः ॥१५॥

आ काव्य बोली नागपदनी उपर अने इन्द्रनी नीचे आवेल ब्रह्मपदे ब्रह्मेन्द्र उपर पुण्य क्षेप करचो ए पछी हाथमा पुण्याजलि लेइ-

इति दिग्धिपकीर्त्तनाभिरक्षा-क्षपितसमस्तविपक्षवीतविभ्रः ।

कुरु सकलसमृद्धिसन्निधानात्, विजितजगत्यभिवेकमङ्गलानि ॥१६॥

आ काव्य बोली दिशापालोना पाटला उपर पुण्याजलि नाखवी, पछी चैत्यवदन अने साधुवंदन करबुं ॥ इति द्वितीय पर्व ॥

चैत्यवदनादि करीने-

मुक्तालङ्कारविकार-सारसौम्यत्वकान्तिकमनायम् । सहजनिजरूपनिर्जित-जगत्त्रयं पातु जिनविषयम् ॥१॥

आ काव्य बोली प्रतिमा उपरथी पुण्य अलंकारादि उतारा अने-

भव्यानां भवसागरप्रतरणद्रोणीप्रसूतिः त्रियां, शश्वत्सत्कलरूपपादपलतानिर्वाणरथ्या परा ।

सौरभ्यातिशयाद्वाप्तमहिमास्वामिन्प्रभावेन ते, प्रासादोपसुखा सुखास्तकलिकाध्यामापि घुमावली ॥२॥

आ काव्य बोलता धूप उलेयचो, पछी पुण्यो लडने-

किं लोकनाथ! भवतोऽतिमहार्धतेषा, किं वा स्वकार्यकुशलत्वमिदं जनानाम् ।
किं वाद्भुतः सुमनसां गुण एष कश्चिदुष्णीष देशमधिकृत्य विभाति येन ॥३॥
आ काव्य भणीने जिनप्रतिमाना मस्तके पुष्प चढाववां, अने
आस्नात्रपरिसमाप्ते-रशून्यमुष्णीषदेशमीशस्य । सान्तर्धानावधारा-पातं पुष्पोत्तमैः कुर्यात् ॥४॥
आ श्लोकोक्त विधान प्रमाणे प्रत्येक अभिषेकना अन्तमां “ किं लोकनाथ ! ” आ पद्य बोलीने प्रतिमाना मस्तक उपर
पुष्पो चढाववां, पछी—

पुण्यं पवित्रमपविद्धरजोविकार-मारम्भसम्भ्रमवतासुपकारिहारि ।
आद्यं भवाधिदवथूनभिषेकचारि, वाक्यं च वाक्यपरमार्थविदो विहन्यात् ॥५॥
शिवाय शिवचिस्तरज्जयजयस्वनमोल्लसत्, पयोजकलकाहला कलितककलीकोमलैः ।
रदत्पदहपादवप्रकदञ्छरीञ्जात्कृतैः, पतत्पथममस्तु वो भगवतोऽभिषेकोदकम् ॥६॥

आ भावना काव्यो बोलवां, अने एक स्नात्रकारं हाथमां धूपघाणुं लेइने दशांग धूप मूकी —
मीनकुरङ्गमदागुरुसारं, सारसुगन्धिनिशाकरतारम् ।
तारमिलन्मलयोत्थचिकारं, लोकगुरोर्देह धूपमुदारम् ॥७॥

आ काव्य बोलतां प्रतिमाने धूप उखेववो, पछीना पण प्रत्येक अभिषेकने अन्ते एज काव्य बोलवुं अने धूप उखेववो, बादित्र

नाद करानवो, पछी—

सर्वौषध्यः सर्वतीर्थोदकानि, प्रायो गव्य हव्य हव्य-दुग्धं दधीति ।

सर्वे गन्धाः सर्वे सौगन्धिकानि, स्नात्राण्येषामन्तरालेषु धूपः ॥८॥

आ काव्यमा वतावेत् सर्व औषधिओ, सर्व तीर्थजलो, परिगल गायत्रु घी, दूध, अने दहि, सर्व प्रकारना गन्धो, सर्व प्रकारना सुगंधि द्रव्यो जे तैयार करेल होय तेओमडे स्नात्रो कस्वा, अने आतरे धूप उखेववो, प्रत्येक अभियेकना प्रारंभमा “ नमोऽर्हत्, ” कहीने काव्य बोलवु,

१ घृताभियेक—

पायात् स्निग्धमपीक्षित-भवदवमूलाग्निशमनसामर्थ्यम् । उपहृतमिवामरेन्द्रैरभियेकघृतं घृताम्भेधिः ॥९॥

आ काव्य बोली घृतनो अभियेक करवो.

२ दुग्धाभियेक—

उचितमभियेककाले, सुनिगात्रपवित्रचित्रचारुफलम् । क्षीर क्षीरोदोदक-लक्ष्मी लक्ष्मी दधद् दधात् ॥१०॥

आ काव्य बोली दूधनो अभियेक करवो

३ दध्यभियेक—

मज्ञस्यमिन्दुकुन्दा-वदातममरेश्वरोपनीतानाम् । दधिदधिजलधिजलाना-स्मरणाय विविक्तचित्तानाम् ॥११॥

आ काव्य बोली दहिनी अभियेक करवो।
घृतादिना अभियेको कर्ता प्रतिमा उपर दवतो हाथ फेरवो, प्रत्येक अभियेककुं काव्य बोलाई गया पछी—
अभियेकपयोधारा, धारेष ध्यानमण्डलाग्रस्य। भवभवनभित्तिभागान्, भूयोऽपि भिनत्तु भागवती ॥१२॥

आ काव्य बोलुं, ए पछी पण प्रत्येक अभियेकना अंते ए काव्य बोलुं, अने त्रणे स्नानो थया पछी प्रतिमा उपरथी
स्निग्धता दूर करवा माटे चंदन-केसर आदि कपूरनो चुरो घसी ळंछणाथी लूंछीने प्रतिमाने चिकास रक्षित करवी, प्रतिमानुं
अंगलूँछण थइ गया पछी—

नानावर्णैर्वर्णकैर्गन्धलुब्ध-आम्यदृष्टज्ञीसार्थसङ्गीतरस्यैः।
दृष्टोन्मृष्टं चारुचीनांशुकान्तैः, कान्तं पातुः पातु विम्बं जिनस्य ॥१३॥

आ काव्य बोलुं, घृतादिना अभियेक पछी क्षीरोद समुद्र १, गंगा २, सिन्धु ३, रोहिता-रोहितांशा ४, हरिता-हरिकान्ता
५, शीता-शीतोदा ६, नरकान्ता-नारीकान्ता ७, रूप्यकूला-सुवर्णकूला ८, रक्ता-रक्तोदा नदीओ ९, पत्र १०, महापत्र ११,
तेगिच्छि १२, केसरी १३, पुंडरीक १४, महापुंडरिक ह्रदो १५ अने मागध-चरदाम-प्रभास तीर्थो १६ ना जलोवडे अनुक्रमे
१६ अभियेको करवा, आ तीर्थजलो पैकी एक गंगाजल सिवाय बीजां जलो प्रायः लभ्य नथी, तेथी यथा संनिहित २४ पवित्र
मीठा पाणीना कुवाओथी जलो मंगावी तेमने कपूर कस्तूरी आदिथी सुवासित करी एक मोटा माटीना घडामां अथवा घातुना
मण्डिलां वर्तनमां भरवां, भरल वर्तन उपर स्वच्छ सफेद वस्त्र दांकुं, अने विधिकारे तेना उपर जम्णो हाथ राखी नीचेना श्लोको

बोलीने तेभा सर्व जलोलु संनिधान करतु, श्लोको आ प्रमाणे छे:-
 क्षीरोद ! जाह्वि ! सिन्धो !, रोहिते ! रोहितांशिके ! । जिनचन्द्राभियेकार्थे, जलेऽस्मिन् सनिधि कुरु ॥१॥
 हरिते ! हरिकान्ते ! त्व, शीते ! शीतोदके ! तथा । जिनचन्द्राभियेकार्थे, जलेऽस्मिन् सनिधि कुरु ॥२॥
 नरकान्ते ! तथा नारी-कान्ते ! रूप्ये ! सुवर्णके ! । जिनचन्द्राभियेकार्थे, जलेऽस्मिन् सनिधि कुरु ॥३॥
 रक्ते ! रक्तोदके ! पथ ! महापद्माह्वयद्द ! । जिनचन्द्राभियेकार्थे, जलेऽस्मिन् सनिधि कुरु ॥४॥
 तेगिच्छे ! केसरिन् ! पुण्डरीक ! त्व हि महायुत ! । जिनचन्द्राभियेकार्थे, जलेऽस्मिन् संनिधि कुरु ॥५॥
 मागधादिप्रमासान्त-लोकतीर्थाधिपा • सुराः । जिनचन्द्राभियेकार्थे, जलेऽस्मिन् कुरुत त्रियः ॥६॥

तीर्थजल तैयार करी अनुक्रमे एक पछी एक काव्य बोलीने अभियेको करवा, प्रत्येक अभियेकनी आदिमां “ नमोऽर्हत् ० ”
 अने अन्तमा “ अभियेकतोयधारा, ” ए काव्य बोलुं, अने “ मीनकुरगमदागुरु, ” आ काव्यपी पृष उखेनो “ कि लोकनाथ !
 मयतो ” ए काव्य बोली मस्तक उपर पुष्प चढाववा

७ क्षीरोदमसुद्रजलाभियेक-

मन्दारपुष्पमरुन्दहतान्द्रिदृन्द-दृन्दारकप्रचयमेचक्रितानि लक्ष्म्या ।

लीलाकटाक्षघबलानि जलानि दुग्ध-मिन्धो पतन्तु मुनिगात्रपवित्रितानि ॥१४॥

आ काव्य बोली क्षीरोदजलनो अभियेक रग्गो

६ गंगा जलनो अभिषेक—

हेमाद्रिशृङ्गान्तरसम्पद्म-महाहृदोद्भूतजलप्रवाहा । समुद्रवचुङ्गतर्ङ्ग-भङ्गा, करोतु गंगा भवतोऽभिषेकम् ॥१५॥
आ काव्य भणी गंगाजलनो अभिषेक करवो.

७ सिन्धु जलनो अभिषेक—

गगनगामि गणेशविलासिनी, जनकदाक्षवलक्षमहाप्लवा ।

जितजगन्नय ! सिन्धु धुनी ध्रुवा-ण्युपनयंत्वभिषेकजलानि ते ॥१६॥
आ काव्य बोलीने सिन्धुजलनो अभिषेक करवो.

८ रोहिता-रोहितांगानां जलनो अभिषेक—

प्राकृपाश्चात्याम्भोधि वेलातमाला-नासिञ्चन्त्यो लोलकल्लोलपातैः ।
युक्तं कर्तुं लोकनाथाभिषेकं, प्राप्ते पातां रोहिता-रोहितांशे ॥१७॥

आ काव्य बोली रोहिता रोहितांशा नदीओनां जलनो अभिषेक करवो.

९ हरिता-हरिकान्ताना जलनो अभिषेक—

कल्पताकलिकासुरभीणि, क्षान्तिनिधेस्तरसोपनघेताम् ।
सिक्तहरिद्धरिर्वपंचनान्तो, स्नात्रजलानि हरिद्धरिकान्ते ॥१८॥

आ काव्य भणीने हस्तिता-हृगिकान्ताना जलोनो अभिषेक करुनो.

१० शीता-शीतोदाना जलोनो अभिषेक—

मन्दरकन्दोत्तरकुम्भेव-कुरुचिद्वहविजयविक्रान्तम् । शीताशीतोदोदक-महत्स्नात्रोद्यतं पायात् ॥१९॥

आ काव्य गेलीने शीता शीतोदाना जलोनो अभिषेक करुवो

११ नरकान्ता-नारीकान्ताना जलोनो अभिषेक—

कुम्भता कल्पमहीरुहकुसुमरजःपटलपाटलैः सलिलैः । नरनारीकान्ते तव-मञ्जनकमहोत्सवारम्भम् ॥२०॥

आ काव्य भणी नर-नारीकान्ता नदीओना जलोनो अभिषेक करुनो,

१२ रूप्यकूला-सुवर्णकूलाना जलोनो अभिषेक—

प्रासे पुनीता प्रविहाद्यन्त्यौ, ललामहैरण्यवतावकाशम् ।
लोकेकमर्तुर्भवतोऽभिषेक, प्रत्याहते रूप्यसुवर्णकूले ॥२१॥

आ काव्यवडे रूप्यकूला-सुवर्णकूलाना जलोधी अभिषेक करुवो

१३ रक्ता-रक्तादाना जलोनो अभिषेक—

अहंद्भिषेकपूतः, दूरीकृतदुःखसम्भवाऽऽकृतम् । हरतु कलिकालकलिल, रक्तारक्तोदयोः सलिलम् ॥२२॥

आ काव्य भणी रक्ता रक्तोदाना जलोए-करी अभिषेक करुवो

१४ पद्महृदना जलनो अभियेक—

अभियेकवारिहारिप्रभृतकिञ्चलकल्कपटवासैः । उपनयतु हेमपद्मैः, पद्मा पद्मालया देवी ॥२३॥
आ काव्य बोली पद्महृदना जलवडे अभियेक करवो.

१५ महापद्महृदना जलनो अभियेक—

स्नपयन्ती जिनं जात-सम्भ्रमासम्भ्रमच्छिदम् । करोतु प्रतमात्मानं, महापद्मनिवासिनी ॥२४॥
आ श्लोक बोली महापद्महृदना जले करी अभियेक करवो.

१६ तेगिच्छि हृदना जलनो अभियेक—

देवी तवोपनयता-मभियेक-जलं दलं चिभ्रूतीनाम् । पद्मपरागपिशंगं, तेगिच्छि निवासदुल्ललिता ॥२५॥
आ काव्य बोली तेगिच्छि हृदना जल वडे अभियेक करवो.

१७ केसरी हृदना जलनो अभियेक—

स्फुटकेसरेण कम्पित-कमलेन जिनाभियेचने देव्याः । माति भवच्छिपभङ्गः, केसरिणा केसरिलयायाः ॥२६॥
आ काव्य यणी केसरी हृदना जलनो अभियेक करवो.

१८ पुण्डरीकहृदना जलनो अभियेक—

माति भवतोऽभियेके, यवणदलिकुलकिङ्किणीकलापेन । ऋचिरोज्ज्वलेन जिन वीण्डरीकिणी पुण्डरीकेण ॥२७॥

आ काव्य गौली पुण्डरीकहृदना जलनो अभिषेक करवो

१९ महापुण्डरीक हृदना जलनो अभिषेक—

रिपुसेनाम्लेशकुरङ्ग-सहतिं स्वापतेयशस्यानाम् । स्नपयन्ती जगदीश, जयति महापौण्डरीकस्या ॥२८॥

आ काव्य गौली महापुण्डरीकहृदना जलनो अभिषेक करवो

२० मागध-वरदाम-प्रभास नामक तीर्थोना जलनो अभिषेक—

कुर्वन्तु तेऽभिषेकं, प्रभासवरदाममागधदीनाम् । तीर्थोनामधिपतय, तत्सलिलैः सारसन्मतयः ॥२९॥

आ काव्य गौली मागध, वरदाम, प्रभाम तीर्थोना जलनो अभिषेक करवो पछी स्नात्रकारे हाथमां पुष्पाजलि लेइ—
इति शस्तसमस्तसरित्-समुद्रतीर्थोदकादिघोषणया । स्मरयन्त्यागभिषेक, श्रेकश्लेकं विधि कुर्यात् ॥३०॥

आ काव्य गौली पुष्पाजलि नावनी.

॥ इति तृतीयं पर्व ॥॥

सर्वोपधि-अभिषेक—

सर्वजितः सर्वविदः सर्वगुरोः सर्ववृजनीयस्य । सर्वसुखसिद्धिहेतोर्न्याय्य सर्वोपधिस्नानम् ॥१॥

आ काव्य गौलीने सर्वोपधि मिश्रित जलनो अभिषेक करवो.

सौगन्धिक-अभियेक—

स्वाचिद्विष्यं निर्वर्ण्यलीकस्य तस्यन्, श्रद्धाभाजां प्रतिदेहासुषुम् ।
जन्मारम्भोच्छेदकृतसोपयोगे, योगः स्नात्रे गन्धसौगन्धिकैस्ते ॥२॥

आ काव्य बोली सौगधिक (अष्टगंध) जलनो अभियेक करवो.

स्वच्छजलाभियेक—

स्वच्छतया मुनिगात्रपवित्री-भावमुपेत्य जनस्य शिरस्सु ।
प्रासंपदानि जलान्यपि भूयो, भूरिफलानि जयन्ति जगन्ति ॥३॥

आ काव्य भणी स्वच्छ जलना कलशोवडे अभियेक करवो.

कुंकुमजल-अभियेक—

कथय कथं प्रशमनिधे-रन्तरलब्धावकाशविषयोऽपि । यद्विराविरसित रोगः, कुंकुमपङ्कजलान्नचतः ॥४॥
आ काव्य भणी कुंकुम (केसर)नो अभियेक करवो.

कुंकुम-चन्दनद्रव-अभियेक—

भवति लघोरपि महिमा, महति यतः कुंकुमद्रवः सहसा । हरिचन्दनानुकारं, विभस्ति भवतोऽन्नसद्रत्या ॥५॥
आ काव्य बोली कुंकुम-चन्दन जलनो अभियेक करवो.

उपरोक्त पाँच अभिषेको क्रिया पछी घसेल चंदनद्रवनी घांटकी लेहे—
कुङ्कुमहृथा यामिव, सन्ध्याशरदत्रविभ्रमप्राजम् । चन्दनचर्चाऽम्बर्चा—मर्चांमर्चन्ति ते कृत्तिनः ॥६॥
आ काव्य बोली प्रतिमाना सवींगे चंदनहुं विलेपन करुं.

उपनयतु भवान्त शान्तमत्यन्तकान्ति, सरमसुरभिगेन्धालीढलीनद्विरेफम् ।
सकलमुर्वनवन्धोर्वेन्धविध्वसहेतो—रुगमदमयर्षद्वेद्भासिषक्शरचिन्दम् ॥७॥

आ काव्य बोली प्रतिमाने कस्तूरीना जाडा रस वडे पत्र रचना ऋषी
माति भवतो ललाटे, राक्ताचन्द्रार्धविभ्रमे भगवन् । प्राप्तलयो मलयोद्भ—वसिद्धार्थकरोचनातिलकः ॥८॥

आ काव्य बोली प्रतिमाने चन्दन गोरोचनना द्रवथी तिलक करुं, अने उपर मसम चोटाडवा अने—
तवेश निर्गन्धगणाग्रगामिनो, न युज्यतेऽपास्तरतेरलङ्कृतिः ।

तथापि तस्यां कृत्तिन कृतादराः, तरन्ति भव्या भवदुःखसागरम् ॥९॥

अन्यदपाकृतपङ्क—प्रस्वेदामयपविभ्रगात्रस्य । स्नात्ररूपापि विरुद्धा, विशेषतो वीतरागस्य ॥१०॥
तिष्ठतु तावदलङ्कृति—रभिषेको गन्धधूपमाल्यादि । भवनमपि नाथ माभून्ननु भवतस्स्यक्तसङ्गस्य ॥११॥

तद्यदि कृतानुकारं, श्रद्धातिशयविशिष्टवसुविनियोगम् ।

आगममधिसवादे निरपायमहाफलोपलंमान्युदयम् ॥१२॥

भवतः पूर्वावस्था-मास्थाय गुरोर्गुरुपदेशं च । कुर्वन्त्यभिषेकादीन्, प्रवेषः को विभूषायाम् ॥१३॥ शुग्मम् ॥
जिनभवनविम्बपूजा-यात्रास्नानात्रादिविभ्रमे भङ्गम् । मिथ्याप्ररूपणाकृत्-कुर्यादपवर्गमार्गस्य ॥१४॥
चैत्यालयेन केचित्, केचिद्धिम्बादपास्तारागादेः । केचित्पूजातिशयाद्-बुध्यन्ते गुणविशेषविदः ॥१५॥
भवतो भवने विम्बे, पूजातिशये यथार्थमुपदेशे । यतमानस्तीर्थकरत्वनामगोत्रं समारभते ॥१६॥
इति धनरत्नसुवर्ण-स्रग्वस्त्रविलेपनाद्यलङ्कारैः । जनितादरो विजयते, जगद्गुरोर्जन्मसन्तानम् ॥१७॥
आ काव्यो बोलीने प्रतिमाने यथोपलब्ध आभूषणो पहारावां । ॥॥ इति चतुर्थं पर्वं ॥॥

॥॥ इति चतुर्थं पर्वं ॥॥

बलिद्वौकन—

एवं स्नातविलिसालङ्कृतजिनविम्बजातपरितोषः । कुर्वीत बलिविधानं, निधानमत्यन्तसौख्यानाम् ॥१॥
सर्वैर्धान्यैः सर्वपुण्यैः समस्तैः, पाकैः शार्कैः कन्दमूलैः फलैश्च ।
शुभ्रैर्दधनः पिण्डखण्डैः समृद्धं, कुर्याद्दश्याम्भमारम्भवृत्ताः ॥२॥

शक्तित्रितयाध्यासित-रूपत्रयवत्त्रिविष्टपाग्रस्य । क्षतकलिबलपुञ्जत्रय-मुचितं सुवनत्रयाधिपतेः ॥३॥
आ काव्यो बोलीने प्रतिमाने आगे सर्वं धान्यो, पक्वान्णो, फल फूलो, शाको, दधिखंडो विगरे यथाप्राप्त बलि बोली,

वलिना त्रण पुंज रुखा धान्यो पक्वान्नो एरु पुंजमा, शाको दधिखंडो एरु पुंजमा, अने फलो पुष्यो एक पुंजमा दोवा ए पछी मंगलदीवो तैयार करी—

सुवनत्रयैकदीपस्य, चारु कुर्वीत दीतचिक्षेप । मङ्गलगीतसनाथ, निर्वर्धनकं प्रदीपेन ॥४॥

आ काव्य बोली वाजित्री अने मंगलगीतो पूर्वक मंगलदीवो उतारवो मल्लास्फोटनवल्ग-अन्दीजयघोषधूर्णितदिगन्तम् । आरात्रिकावतरण-कमस्तु वः श्रेयसे जैनम् ॥५॥

आ काव्य बोली पूर्ववत् वाजित्रीना घोष साथे आरती उतारवी

शृङ्गारनालनिर्झर-श्वात्कारैरार्हती हतातापम् । आरात्रिस्तनुमार्गं-प्रवर्तिनी वारिधारा वः ॥६॥

आ काव्य बोली नालवाला कलशखंडे आरतीनी जेम त्रिणिणार्त फरती त्रणवार जलधारा देवी, अने तैयार राखेल अग्निपात्रमा जराक जल रेडवुं.

इदं जिनजगत्त्रयतिशयरूपसपद्मवत्, प्रभृततरविस्मयाकुलितमानसैर्दशितम् ।

पुरन्दरपुरस्सरैः सुरपुराधिराजैः पुरा, जिनेन्द्रलवणावतारणकमस्तु वः श्रेयसे ॥७॥

आ काव्य बोलीने प्रतिमाने लवण उतारवुं, अने लवण अग्निमा नाखवु

दिकपालोने धलिप्रक्षेप—

यहुवर्णपिष्टजातक-परस्परक्षेपपूरिताकाशम् । शृङ्गच्छटाभिराम, दिक्पालेभ्यो बलि दद्यात् ॥८॥

पुनराघोषयेच्छान्तिं, सर्वदिक्षु क्षिपन् बलिम् । समाहितात्मा कुर्वाण-
आ काव्यो बोली दिक्पालोना वर्णासुसारी पिष्ट (लोट)ना वनावेल अनेकविध नैवेद्यनो दिक्पालोने वीतपोतानी दिशा
तरफ बलिक्षेप करवो, ग्रथम दिक्पालने नाम निर्देश करीने बलि क्षेपवो, अन्तर-
आ काव्य बोली प्रत्येक दिशायां नीचे प्रमाणे शांतिघोषणापूर्वक बलिक्षेप करवो, अन्तर-
श्रीसंघजगज्जनपद-राज्याधिपराज्यसन्निवेशानाम् । गोष्ठीकपुरसुख्याणां, व्याहरणैर्न्याहरेच्छान्तिम् ॥१०॥

श्रीभ्रमणसंघस्य शान्तिर्भवतु । श्रीजनपदानां शान्तिर्भवतु । श्रीगोष्ठीसुख्यानां शान्तिर्भवतु । श्रीराज्याधिपानां शान्तिर्भवतु ।
श्रीपौरजनस्य शान्तिर्भवतु । ॐ स्वाहा ॐ स्वाहा ॐ स्वाहा ॐ श्रीपार्श्वनाथाय स्वाहा ॥
प्रत्येक शान्तिपदने अन्ते नवेद्य प्रक्षेप करवो, जो जिनचैत्य महोदं होय तो तेनी भमतीमां प्रदक्षिणा कस्तां पूर्वादि १०
दिशाओमां बलिदान करुं, पुष्पोत्क्षेप करवो, धूप उखेववो, जलाचमन आपवुं, ॐ स्वाहा ॐ स्वाहा ॐ स्वाहा ॐ श्रीपार्श्वनाथाय स्वाहा ॥

पछी चैत्यवंदन माटे सर्वने सावधान करवा.
घण्टाशंखनिनादाद्यनुगतसुद्घोषयेच्च गम्भीरम् । चैत्याभिवन्दनेऽति-प्रसूर्जत्सपट्टरोमाञ्चः ॥११॥
आ काव्य बोली सूचना रूपे वंट तथा शंख वगडाववा, अने ते वंघ करावी—

आयातकिञ्चरनरामरसिद्धसाध्य-गन्धर्वपन्नग निशादनभश्चराद्याः ।
भूत्वा प्रसन्नमनसो मुनिपादपद्मं, बन्धध्वमायतभर्वाणवयानपात्रम् ॥१२॥

आ काव्य भणी सर्वने चैत्यमन्दनार्थे गोलगी अभिषिक्त प्रतिमा आगे विधिपूर्वक चैत्यवन्दन करुं, वर्धमान स्तुतिओ कहेयी अने स्तन रुही जयगीयराय रुहेवा पछी—

विहिताभियेकमभिये—कवृत्तवृत्तप्रवृद्धसस्तुतिभिः । सुरवृन्दवन्दिताद्ये-र्वन्दित्वा भगवतो चिवम् ॥१३॥
पुनराघोपणापूर्वं, सममेव समाहितः । चित्तिर्वन्देत बन्धाना, देवकोष्ठप्रतिष्ठिताः ॥१४॥

आ काव्यो गोलिने प्रसादमा प्रतिष्ठित मूलनायक आदि प्रतिमाओने सर्व जणे साथे वन्दन करुं, अने दिक्पालादि आमंत्रित देवोनु निसर्जन करु.

विसर्जन-विधि—निसर्जन विधिमा अधिक तैयारीनी आवश्यकता नथी.

चेलोत्क्षेपैः पुष्पघृष्यादिदानैः, सन्मानादीन् दिक्पतीना विसर्गम् ।

कृत्वाऽशेषान् शेषदिग्ध्यावतारा नारात्प्रासान् प्रययेत्स्वाधिवासान् ॥१५॥

आ काव्य भणी दिक्पालोनुं नैवेद्य तेमना वर्णानुसारवस्त्रो (बस्त्रखडो), पुष्पो (शमय होयतो पुष्पमालाओ) अने धूप तैयार करी अर्हदभियेरुद्धरित-सानिध्यनिरस्तकल्मषोद्धाघा. । गच्छन्तु यथास्थानं, ये केचिदुपागता दिव्याः ॥१६॥

आ काव्य भणी प्रत्येक दिक्पालनी दिशामा तेनो प्रिय ग्ली, प्रिय गर्णनो वस्त्र खड, पुष्प अथवा पुष्पमाला फेंकवी, तथा धूप उखेवबो अने नमस्कार करवो, प्रत्येक दिशामा एज काव्य बोली ते ते दिशापालनो प्रिय बलि, तेना वर्णनुं वस्त्र अने पुष्पमाला फेंकी, रूप उखेवी, नमस्कार मुद्रा देखाडी, विसर्जन करुं

ए वधुं कर्पा पछी तरत ज " नमोऽर्हत्० " कही " भो भो भव्याः " इत्यादि वृहच्छांति कहेवी.

ग्रहपीडोपशान्तौ तु, प्रतिमां स्नपयेद् बुधः । नवग्रहपरिवारां, प्रभामण्डलमण्डिताम् ॥१७॥

कृतपूजाबलीयांसः, सातिरेकचलाग्रहाः । भवन्ति दुर्बलाः सौम्या, मध्यस्था बलशालिनः ॥१८॥

ततो यथा स्वचारेषु, यथाशक्ति समाहितः । ग्रहाभिषेकं कुर्यात्, वीनव्यामोहविप्लवः ॥१९॥

भा०टी०—ग्रहपीडानी शांति निमित्ते अभियेक करावो होय तो विद्वाने नवग्रहना परिवास्वाली अने भामण्डल भूषित एवी

प्रतिमा अभियेक माटे लेवी, केमके जिनाभियेकमां पूजावायी बलवान् ग्रहो अधिक बलिष्ठ वने छे, वीनवली सौम्य वने छे, अने

मध्यवली बलवान् वने छे, तेथी जे ग्रहने बलवान् वनावी शांति करवी होय तेना चारना दिवसे (राहु केतुनी पूजा

शनिवारे करवी.) शक्ति अनुसार सामग्री मेलवीने मानसिक स्थिरतापूर्वक अविपर्यासपणे ग्रहोनो अभियेक करवो.

कृत्वाऽर्हतः स्नात्रविधिं चिदानादनन्तकल्याणजुषो यथोक्तम् ।

ततः प्रभामण्डलमण्डितानां, कुर्याद् ग्रहाणां क्रमशोऽभियेकम् ॥२०॥

भा०टी०—अनन्त कल्याणना भागी अर्हदनुं ग्रथम पूर्वोक्त विधिपूर्वक स्नात्र विधान करीने ते पछी तेज-शक्तिवडे दीप

ग्रहोना अनुक्रमे अभियेक करावा.

यथावर्णबलिसग्नि-यथावर्णविलेपनैः । यथोक्तदक्षिणादानैः, कृत्वा सानुग्रहान् ग्रहान् ॥२१॥

ततश्च सद्य गच्छ वा, यथासम्भवमेव वा । वस्त्रपत्रान्नपानाद्यैः, पूजयेत् प्रयतो यतीन् ॥२२॥

भा०टी—ग्रहना वर्ण प्रमाणे नैवेद्यो, तथा मालाओ, वर्णप्रमाणे विलेपनो, अने शस्त्रोक्त दक्षिणादानो बडे ग्रहोने अनुकूल कर्मा पछी यथाशक्ति संघ, गच्छ अथवा तो यथासभव साधुओनी वस्त्र, पात्र, खाद्य, पेयादि पदार्थो बडे प्रयत्न पूर्वक पूजा-भक्ति करवी

सूर्यनो वर्ण हिंगलोरु समान छे, तेनो वली रक्तशालिनो करवो, गोल वीमा राधेल भातनु साधुओने भोजन आपवु, चंद्रवो दक्षिणादानसा आपनो. १

सोम श्वेत वर्णनो छे, नलि पण उज्ज्वल पष्टि वान्यनो रुवो, पुष्पो कुंड मोगरादिनां चढाववा, घृत दूधपाकनु साधुओने भोजन बहोराववुं अने शखनु दान आपवु २

मंगल जाम्बुदना फूल जेवो रक्त होइ ते वर्णना धान्योनो वलि करवो, लाल कणेर आदिना पुष्पो चढाववा, साधुओने घृत-प्रधान घेनर आदिनुं भोजन बहोराववु अने रक्त चदननु दान आपनुं ३

बुध पीतवर्ण (हरितवर्ण) होइ नलि अने पुष्पमाला पण तेवा ज वर्णनी चढाववी, साधुओने धीरनु भोजन बहोराववु अने सुवर्णनी दक्षिणा आपवी. ४

बृहस्पति पण पीतवर्णनो छे, नलि धने पुष्पमाला पीतवर्णनी ननाववी, भोजन दहि भातनुं आपवुं अने दक्षिणामां पीतवस्त्रो आपवा. ५

शुक्र श्वेतवर्णो छे, चलि अने पुष्पमाला सोमना जेवी करवी, भोजन सायुओने द्रुतनुं आपवुं, दक्षिणामां पगरखांनी जोडी आपवी. ६
शनी कइंक कृष्णवर्णो होइ चलि अने पुष्पमाला पण एवा ज वर्णनी चनाववी, भोजन तिल पियदुं (पीलेल तिलेने) आपवुं,
दक्षिणामां भज आपवो. ७

राहु अतिशय कालो छे, चलि पण काला वर्णो करवो, अने पुष्पमाला पण तेवा ज कृष्णवर्णनी चनाववी, भोजन खीचडी
(काला तल नाखेल खीचडी)नुं आपवुं, दक्षिणामां लोहनुं पात्र आपवुं. ८
केतु धूम्राडाना जेवा रंगनो छे, चलि अने पुष्पमाला पण एवा ज वर्णनी चनाववी, भोजन खीचडी
अने दक्षिणामां कालो कांवलो आपवो. ९

ग्रहोनी शान्ति इच्छनार साणसे उपरोक्त प्रकारे नवग्रहमंडित जिन गतिमा उपर अभिषेक विधि करी ग्रहोना अभिषेक पूर्वक
चलि विधान, पुष्परोपण, भोजन, दान दक्षिणा करी ग्रहोनी शान्ति करवी, अने पछी संघने जमाडवो, तेवी शक्ति अथवा
सगवडना अभावे अपवादे पोतानो गच्छ जमाडवो, ए पण न वने तो त्यां जे कोइ सायुओ हाजर होय तेमनी ज वर, पात्र, अन्न,
पानादिवडे आदरपूर्वक पूजा भक्ति करवी.

अभिषेक गुणगर्भित धर्मकथा—
प्रशस्यमायुष्मथो यशस्यं, जयास्पदं संपदमाचहन्तम् ।
हेतुं सदा सौख्यपरम्पराणां, करोत्यपुण्यो न जिनाभिषेकम् ॥२३॥

भा०टी०—प्रशसनीय, आयुष्यदायक, यशोवर्धक, जयप्रद, संपत्तिदाता अने निरन्तर सुख परपरानो हेतु आ जिनाभिपेक पुण्यहीनधी करी शकतो नथी.

इति विहृतविपत्पराक्रम, स्वप्नविधि विधिमहंतोऽर्हतः ।

प्रतिसमयमनुस्मरन्ति ये, सकलसुखास्पदां व्रजन्ति ते ॥२४॥

भा०टी०—आ प्रमाणे विधि योग्य श्रीअर्हन्तनी स्नात्रविधि के जे विपत्तिना तलने दृढाग्रगरी छे, अने जेओ तेने हर समय याद करे छे, तेओ सर्व सुखोनु प्रस्थान मने छे

इति पंचम पर्व.

इति श्री शान्तिवादिवेतालीय अर्हदभिरु विधिः सपूर्णः ।

१४ अष्टोत्तरी शतस्नान विधिः-
[ओगणीसमा सैकाना पुर्वार्धमां चालती]

- | | |
|-------------------------|------------------------------|
| (११) त्रांवाकुंडी ? | (२३) वदाम १०८ |
| (१२) अगारवती सेर ? | (२४) एलची डोडा १०८ |
| (१३) श्रीफल पाणीचा ९ | (२५) द्राक्ष १०८ |
| (१४) कमल वरणुं गज ?। | (२६) खारेक १०८ |
| (१५) केसर टांक २ तथा ४ | (२७) पान १०८ |
| (१६) चरास टांक ४ | (२८) बीजां कल यथाशक्ति आणवां |
| (१७) दीयनां नालियेर १०८ | (२९) दोकडा [अधेळा] २७ |
| (१८) साकरना गांगडा १०८ | (३०) खाजां १०८ |
| (१९) सोपारी १०८ | (३१) सुवद ' चंदन ' |
| (२०) लवंग १०८ | (३२) चौखा शेग २० |
| (२१) सींचोडा १०८ | (३३) अंबड पैमा ४ |
| (२२) श्रीफल १०८ | (३४) डाम समुले |

उपकरण

- (१) प्रतिमा ४ पंचतीर्थी-आदिनाथ-
अजितनाथ-शान्तिनाथ-पार्श्वनाथनी
- (२) १०८ निवाणनां जल
- (३) सेवंतरा पुष्प ४३२
- (४) पंचवर्णा फूल सेर ५
- (५) सेवनना पाटला २
- (६) रूपादिकना कलश ४
- (७) बीजा पाटला १२
- (८) माटली मण १। नी चौरवी,
- (९) धोयेल अंगलूहणां ४
- (१०) कुंभ कौरा २

- (३५) गलियाकूल-जगर चणा-गेहू सेर ५ (४६) रुनी दीवेट १०८
 (३६) लापसी पुडला नैवेद्य (४७) घृत सेर २
 (३७) पकान्न-धान-शाक राधेल (४८) रुपा नाणा २
 (३८) वास टांक २ (४९) लाडना १०८
 (३९) पंचामृत दूध, दही, घृत, साकर, गोल (५०) गेयामन्न ०॥ सेर
 (४०) आरती ? (५१) घोतिया जोडा १२ अथवा २०
 (४१) मगलदीवो ? (५२) पडघोतिया २ अथवा ४
 (४२) धूपधाणा २ (५३) चीणीयु कपूर टांक १
 (४३) पीतलनी वाढी २ (५४) कंभावटी १
 (४४) दीवी २ (५५) ककु
 (४५) सरावला २ (५६) मीडु

पूर्वकृत्य-मंत्रसंग्रह

मण्डप प्रतिष्ठामन्न—ॐ भूरसि भूतघात्रि विम्बाधारे नमः ॥

१ आ सामान्ती सुची स १८८७मा लखावेल प्रति उपरथी उतारी छे

(५७) माटी

(५८) चमर २

(५९) घंट ?

(६०) यथाशक्ति थाली ७

(६१) वाटकी ५

(६२) मुहपत्ती १२ अथवा २०

(६३) पछेडी धोवेली २

(६४) गोलपापडी सेर ५१ घंटाकर्णना

मंत्रे १०८ वार गाळी चालकोने वहेची

देवी.१

—❀—

पीठ स्थापनमंत्र—ॐ अर्हत्पीठाय नमः ।

पीठे प्रतिमा स्थापन मंत्र—“ ॐ नमोऽर्हत्परमेश्वराय चतुर्भुखाय परमेष्ठिने दिक्कुमारीपरिपूजिताय देवाधिदेवाय त्रैलोक्यमहिताय अत्र पीठे तिष्ठ २ स्वाहा ।”

घृतप्रदीप प्रतिष्ठा मंत्र—ॐ घृतमायुर्वृद्धिकरं, भवति परं जैनदृष्टिसंपर्कितं, तत्संयुतः प्रदीपः, पातु सदा भावदुःखेभ्यः स्वाहा ॥

पंचामृत भरणयोग्य माटलीलेखन मंत्रः—“ ॐ ह्रीं श्रीं सर्वोपद्रवांस्तान्नाशाय २ स्वाहा ।”

माटली स्थापन मंत्रः—ॐ ह्रीं ठः ठः ठः स्वाहा ।

माटलीमध्ये पंचामृत क्षेपमंत्रः—ॐ ह्रीं भः ३ ।

पंचरत्न प्रतिष्ठांमंत्र—

ॐ नाना रत्नौघयुतं, सुगंधिपुष्पाधिवासितं नीरम् । पतताद् विचित्रवर्णं, मंत्राढयं स्थापनाविम्बे स्वाहा ॥

पंचामृत प्रतिष्ठांमंत्रः—

जिनबिम्बोपरि निपतद् घृतदधिदुग्धादिभिः सुपरिपूताः । गंधोदकसंमिश्रा, पंचसुधा हरतु दुरितानि ॥

सर्वोषधि प्रतिष्ठांमंत्रः—

ॐ ह्रीं सर्वोषधि संयुतया, सुगंधया चर्चितं सुगतिहेतोः । स्नपयामि जैनबिंबं, मंत्रिततन्नीरनिवहेन स्वाहा ॥

तीर्थजल प्रतिष्ठामंत्रः—

ॐ ह्रीं भः जलधिनिदीहृदकुडेषु, यानि तीर्थोदकानि शुद्धानि । तेषंत्रसस्तूतैरिह, विस्वं स्तपयामि
शुद्धव्यर्थम् स्वाहा ॥

चदनमंत्रः—

ॐ नमो भगवते चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय शशांकहरगोक्षीरघवलाय अनन्तगुणाय भव्यजनप्रबोधाय
अमृतत्वावण कुरु २ स्वाहा ।

जलमन्त्रः—

ॐ आपोऽप्काया एकेन्द्रियजीवा निरचथाऽहंतूजायां निर्व्यथा निरपायाः सन्तु सद्गतय सन्तु न
मेऽस्तु सघटनहिसापापमहद्वंचने स्यात् ।

वासमंत्रः— 'ॐ नमो यः सर्वशरीरावस्थिते पृथु पृथु गन्धान् गृहाण गृहाण स्वाहा ॥'
पुष्पमंत्रः— 'ॐ नमो यः सर्वतो मेदिनी पुष्पवती पुष्पं गृहाण २ स्वाहा ॥'

तारकालिक पूर्वक्रिया—

शुभदिनसुहूर्ते स्नात्र करावनारने चन्द्रजल होय ते दिक्से स्नात्र करवाने स्थाने भूमिशुद्धि करीने सधना स्त्री पासे गुंहली
करावकी, ने उपर श्रीफल १ मूकंडुं. ते उपर परनालियो बाजोट घोइ धूपावीने पूर्वे अथवा उत्तर दिशा समुख मांडवो, पछी स्नात्र-

कारो शुद्ध वस्त्रो पहेंरी, हाथे कंकण बांधीने ४ प्रतिमाओ आदिनाथ, अजितनाथ, शान्तिनाथ, पार्थनाथनी पूजीने परनालिआ बाजोट उपर अलुक्रमे जोडे स्थापन करे, आगल चोखा सेर २५ श्रीफल १ नी भेट धरवी, चारे जणे एक जण केसर-चंदन घसावीने वाटकी २ मां भरावे, १ देवपूजा माटे अने २ जी ग्रह आलेखवा साहं. पछी अप्रेसर श्रावक हाथे कंकण बांधी, तिलक करीने ४ प्रतिमाओनी पूजा करे, पछी पाटले पंचाष्टानी माटली धोइ धूरीने तैयार करे, तेमां केपर-चंदनो साथियो करी ते उपर “ ॐ ह्रीं श्री सर्वोपद्रवान् नाशय २ स्वाहा ” आ मंत्र लखीने तेमां रुपानाणुं मुके, तेने कांठे मिठल मरोडाफली ने जड सहित डाम बांधे, पछी माटली इंडाणी उपर मुके, १ जण सामे माटलीने झाली ने उभो रहे, “ ॐ ह्रीं भः ” आ मंत्र माटलीने कांठे हाथ देइने ३ वार चोली १०८ निमाणनुं पाणी माटलीमां भरे, गोली (माटली) थापीने तेमां चन्दन केसर कपूर पुष्प नांखवां, पंचामृत पण तेमां नाखीने ते उपर तासलो (रंगीन वस्त्र) डांकचो, अने ते उपर १ जण हाथ राखीने सात स्मरण गणे, १ जण धूप करे.

नवग्रह पूजा विधि—
सूर्यने सांजणी (रक्त चन्दन)नो आलेख, अने एकला केशानी पूजा, परचालानी मालाचे मंत्र गणवो, गोल घाणीनो लाडवो मुकवो.

सूर्यनो मंत्र—ॐ ह्रीं सांशकक्षर्याय सहस्रकिरणाय नमो नमः ।

प्रार्थना—

पद्मप्रभजिनेन्द्रस्य, नामोच्चारणेण भास्कर ! ! शान्ति तुष्टिं च पुष्टिं च, रक्षा कुरु जयश्रियम् ॥१॥

इति स्वर्णपूजा ।

चन्द्रमाने एकला चन्द्रननो आलेख तथा पूजा, स्फटिकनी मालाये मंत्र गणवो, मरुगरानो लाडनो दोवो,
चन्द्रनो मंत्र—ॐ रोहिणी पतये चन्द्राय ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं चन्द्राय नमः ।

प्रार्थना—

चन्द्रप्रभजिनेन्द्रस्य, नाम्ना तारागणाधिप ! ! प्रसन्नो भव शान्ति च, रक्षां कुरु जयश्रियम् ॥२॥

इति चन्द्र पूजा ।

मंगलने केसरनो आलेख, केसरनी पूजा, प्रगालानी मालाये मंत्र गणतो, गोल धाणीनो लाडवो मूकवो, लाडयो तलना
पण मूकाय

मंगलनो मंत्रः—ॐ नमो भूमिपुत्राय सुभ्रुकुटिलेन्राय चक्रवदनाय ह्रः सः संगलाय स्वाहा ।

प्रार्थना

सर्वदा वासुपूज्यस्य, नाम्ना शान्ति जयश्रियम् । रक्षा कुरु धरास्तनो !, अशुभोऽपि शुभो भव ॥३॥

इति मंगलपूजा—

बुधने चन्दन केसरनो आलेख, अने तेनीज पूजा, केरवानी मालाए मंत्र गणवो, चणानी दालनो लाडवो सूकवो.
बुधनो मंत्र—ॐ नमो बुधाय ॐ श्री श्री ॥ दः स्वाहा ॥४॥

विमलानन्तधर्मारा; शान्तिः कुंथुर्नमिस्तथा । महवीरश्च तन्नाम्ना, शुभो भव सदा बुध ! ॥४॥

वृहस्पतिने गोरिचननो आलेख, गोरिननी ज पूजा. चणानी दालनो लाडवो सूकवो, केरवानी मालाए मंत्र गणवो ।
वृहस्पतिनो मंत्रः—ॐ श्री श्री ह्रीं श्रीं ह्रीं इति बुध पूजा ।

ऋषभाजितसुपार्था-श्रामिनन्दनशीतलौ । सुमतिः संभवः स्वामी श्रेयांसश्च जिनात्तमः ॥५॥
एतत्तीर्थकृतां नाम्ना, पूज्योऽशुभः शुभोभव । शान्तिं तुष्टिं च पुष्टिं च, कुरु देवगणार्चित ! ॥६॥

वृहस्पतये सुरपूज्याय नमः ॥५॥

शुक्रने एकला चन्दनो आलेख अने पूजा, स्फटिकनी मालाए मंत्र गणवो, मरमरानो लाडवो सूकवो.
शुक्रनो मंत्र—ॐ यः अमृताय अमृतवर्षणाय दैत्यगुरवे नमः स्वाहा ॥

प्रार्थना—

पुष्पदन्तजिनेन्द्रस्य, नाम्ना दैत्यगणार्चित !। प्रसन्नो भव शान्ति च, रक्षा कुरु जयश्रियम् ॥७॥

इति शुक्रपूजा ॥६॥

शनैश्वरने चुआरुस्तूरीनो आलेख, तथा पूजा, अकलवेरनी मालाए मंत्र गणयो, अडदनी दालनो लाडवो मूकवो
शनिनो मंत्र—ॐ शनैश्वराय ओं क्लीं ह्रीं क्रोडाय नमः ॥७॥

प्रार्थना—

श्री सुभ्रतजिनेन्द्रस्य, नाम्ना सूर्यो गसभव !। प्रसन्नो भव शान्ति च, रक्षां कुरु जयश्रियम् ॥८॥

इति शनि पूजा ।

राहुने चथा रुस्तूरीनो आलेख, अने पूजन, अकलवेरनी मालाए मंत्र गणयो, अडदनो लाडवो मूकवो
राहुनो मंत्र—ॐ वाँ श्रीं व्रः व्रः व्रः विंगलनेत्राय कृष्णरूपाय राष्ट्रवे नमः स्वाहा ।८।

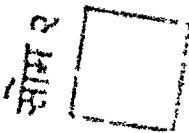
प्रार्थना—

अनेमिनाथतीर्थेश-नाम्ना त्व सिद्धिकासुत !। प्रसन्नो भव शान्ति च, रक्षां कुरु जयश्रियम् ॥९॥

इति राहुपूजा ।८।

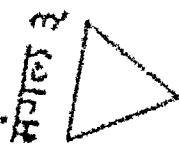
केवुने यक्षरुद्रमनो आलेख अने तेनीज पूजा, सिद्धिरिया स्फुटिकनी मालाए मंत्र गणयो, मगनी दालनो लाडवो मूकवो

नवग्रह मंत्रालोक्य—
ॐ चंद्राय नमः



शुक्र २

ॐ शौमाय नमः



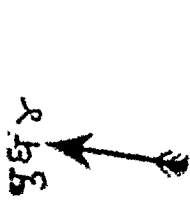
मंगल ३

ॐ राहवे नमः



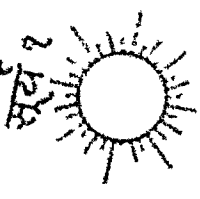
शुक्र ६

ॐ बुधाय नमः



शुक्र ६

ॐ सूर्याय नमः



सूर्य १

ॐ शनिेश्वराय नमः



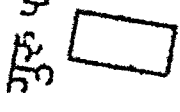
शनिेश्वर ७

ॐ बुधाय नमः



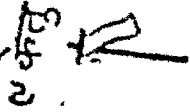
शुक्र ४

ॐ शुक्रे नमः



शुक्र ५

ॐ केतवे नमः



केतु ८

शंभुना भव—ॐ कौ की कं डः डः डः छत्रव्याप्य
राहुजनने केतवे नमः श्वाहा ॥१॥
शार्पिना—

गालोः सप्तमराशिस्थः, कारणे दृश्यतेऽम्बरे ।
श्रीमद्विष्णवे गोनान्ना, केतो जालि विप्रे ।

शुक्र ॥१॥

इति केतुपूजा ।

ने एव पीडाताक योगे तेन एवा तेमज नमसि-
कृद विनयी एव कर्तव्ये, अने शार्पिनातो श्लोक
बोधीने तेमना जालिपाने शर्पिनी सुपांजलि
नशायी, एत नाथे एया कथो पीडाताक होय भयत
सर्व शरी एव नाभे पीडाताक होय गो था लोचन
विधिवी कदाहन कर्तव्ये.

मुल्य श्रावके शेवनो ? पाटलो घूपवास पुण्ये वासित करी, ते उपर अघाडानी अथवा शरीडानी लेखणे चन्दन केसर ९ ग्रह आलेखवा, ग्रह उपर त्राधानाणुं प्रत्येके मूकडुं, उपर गते वखे टाकिये. ते उपर अणियाला पान. चोखा दगली, राती सोपारी, नाणुं प्रत्येके एक एक मूकीये, पछी पंचवर्णा फूल नालियेर पसलीमा लेइने—

जिनेन्द्रभक्त्या जिनभक्तिभाजां, जुपन्तु पूजावलिपुष्पधूपान् ।

ग्रहा गता ये प्रतिकूलभावं, ते सानुकूला वरदा भवन्तु ॥

आ पद्य भणी उपर मूकीये,

इति नवग्रह पूजा विधि ।

दिक्षपाल पूजाविधि —

त्यार पछी वीचो शेवनो पाटलो घूपवाम पुण्योधी गसित करीने, चन्दन केसरयी ते उपर दश दिरुपालो आलेखवा, अने पूजवा, उपर पीत वख टाकी प्रतिमा आगल पाटलो मूकडो, उपर पान १० फूल, सोपारी, चोखा, नाणु मूकवा, ते उपर श्रीफल ? मुकडुं

अष्टमंगल पाटली स्थापन विधि

वली पाटली ? अष्टमंगलनी आलेखवी. नाणुं, पान, सोपारी मूकवी, अने ते पछी—
नामजिणा जिणनामा, ठवणजिणा पुण जिणिदपडिमाओ । इन्द्रजिणा जिणजीवा, भावजिणा समवसरणत्या ॥१॥

ए गाथा बोली पाटली प्रनिमानी सामे सूकवी.

ते पछी अग्रेसर श्रावक शुद्ध वस्त्र पहरी, हाथे कंकण बांधी, तिलक करी ४ प्रतिमाओने पूजे, अने ते पछी दवा दिक्पालोनुं आह्वान करे, त्यां प्रथम बलिवाकुल सर्व एक थाळीमां राखीने वास बडे भूतबलि मंत्रथी मंत्रे.

भूतबलिमंत्रः—

ॐ नमो अरिहंताणं, ॐ नमो सिद्धाणं, ॐ नमो आयरिआणं, ॐ नमो उवडझायाणं, ॐ नमो लोए
सब्वसाहूणं, ॐ नमो चारणाइलत्तीणं, जे इमे किंनरकिंपुरिसमहोरगगज्जलसिद्धगंधव्वजान्जव्वकस्वसपि-
सायभूयेयसाइणीडाइणी पभिईओ जिणघरनिवासिणो नियनिय निलयइिआ पचिआरिणो संनिहि-
या असंनिहिया ते सब्बे इमं विलेवण भूवपुष्पफलपईवसणाहं बलिं पडिच्छन्ता तुट्टिकरा भवन्तु, पुट्टिकरा
भवन्तु संतिकरा भवंतु, सिवंकरा भवंतु, सुत्थं जणं कुणंतु सब्वजिणाणं संनिहाणस्पभावओ पसन्नभावत्त-
तेणं सब्वत्थ रक्खं कुणंतु सब्वत्थ इरियाणि नांसंतु सब्बाडसिब्वसुवसंमेतु संतिउट्टिउट्टि सिब्वसुत्थयण
कारिणो भवंतु स्वाहा ।

आ मंत्रे करीने भूतबलि मंत्रीने तेगांधी अर्थ बलि जुदी राखीने दिक्पालोनुं आह्वान करनुं, ते आ प्रमाणे—

दिकूपाल स्थापना—

ॐ नम ईशानाय	ॐ नम इन्द्राय	ॐ नमोऽग्रये
ॐ नम कुबेराय	ॐ नमो ब्रह्मणे	ॐ नमो यमाय
ॐ नमो वायवे	ॐ नमो नाभाय	ॐ नमो निर्ऋतये

ॐ इंद्राय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अस्मिन्नगरे
अस्मिन् गृहे अष्टोत्तरीपूजासमये आगच्छ २ वलि

गृहाण २ स्वाहा ॥ १ ॥

ॐ अग्नये सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अस्मि-
न्नगरे अस्मिन् गृहे अष्टोत्तरीपूजासमये आगच्छ २
वलि गृहाण २ स्वाहा ॥ २ ॥

ॐ यमाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अस्मिन्नगरे अस्मिन् गृहे अष्टोत्तरीपूजासमये आगच्छ २
वलि गृहाण २ स्वाहा ॥ ३ ॥

ॐ निर्ऋतये सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अस्मिन्नगरे अस्मिन् गृहे अष्टोत्तरीपूजासमये आगच्छ
२ वलि गृहाण २ स्वाहा ॥ ४ ॥

ॐ वरुणाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अस्मिन्नगरे अस्मिन् गृहे अष्टोत्तरीपूजासमये आगच्छ
२ वलि गृहाण २ स्वाहा ॥ ५ ॥

ॐ वायवे सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अस्मिन्नगरे अस्मिन् गृहे अष्टोत्तरीपूजासमये आगच्छ २
वलि गृहाण २ स्वाहा ॥ ६ ॥

ॐ कुबेराय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अस्मिन्नगरे अस्मिन् गृहे अष्टोत्तरीपूजासमये आगच्छ
२ बलिं गृहाण २ स्वाहा ॥७॥

ॐ ईशानाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अस्मिन्नगरे अस्मिन् गृहे अष्टोत्तरीपूजासमये आगच्छ
२ बलिं गृहाण २ स्वाहा ॥८॥

ॐ ब्रह्मणे सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अस्मिन्नगरे अस्मिन् गृहे अष्टोत्तरीपूजासमये आगच्छ २
बलिं गृहाण २ स्वाहा ॥९॥

ॐ नागाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अस्मिन्नगरे अस्मिन् गृहे अष्टोत्तरीपूजासमये आगच्छ २
बलिं गृहाण २ स्वाहा ॥१०॥

ए मंत्रोमांनो एक एक मंत्र पूर्वादि एक एक दिशा संमुख उभा रही बोलवो, अने ते ते दिशामां बलिक्षेप करवो, पूर्वा
आग्नेय, दक्षिण, नैऋत, पश्चिम, वायव्य, उत्तर, ईशान, ऊर्ध्व अने अधोदिशामां अनुक्रमे आह्वान करीने बलि नाखवी, १ जण
पाणी छांटे, १ जण धूप उखेवे, १ जण चंदन छांटा नाखे, १ जण फल ढोवे, आ प्रमाणे बलिक्षेप प्रसंगे आह्वान करना, बलि
फेंकनार अने बीजा ४ उपर जणावेल मलीने ६ माणसो जघन्यपणे जोड्ये.

त्यार पछी मुहपत्ति लेई इरियावही पडिकमी ४ थुइए देववंदन करुं, स्तवनने स्थाने लघु शान्तिस्तव कहीये, १०८ तारनी
दीवेटना दीवा २ करवा, १ दीवो प्रतिमाने जमणे पासे मूकवो, अने बीजो डावे पासे. पछी वे जणा वी सिंचता रहे, २ जणा

चामर वीजे, १ त्रणे वाजोट उपर रक्त वस्त्र पाथरी प्रति पूजाए १-१ पान मूकी ते उपर चोरवानी ढगली करी उपर सोपारी मूकी, फल पक्वान्न दोवा, १ जण माटली माहिथी भरी भरीने पाणीना कलशा आपे, ४ जण गाथा भणानाना हाथमां कंकण सहितकलशा ४ आपे, परनालिया वाजोट आगे त्रिवाकुडी मांडनी, तेमां श्रीफल १ मूकडु, स्नात्रकनारने अभूषण पहाराववां, न होय तो चंदनना आमरण करवा, फूलनो हार पहारात्रो, अने तेने जघन्यथी पण ८ दिवसनु ब्रह्मचर्य उच्चरावडु, पछी ते ४ गाथा भणाने, तेनो अनुक्रम—

ॐ नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः—

ॐ चरकणय सखविद्दुम-मरगयधणसनिह विगयमोह । सत्तरिसयं जिणाण, सन्वामरपूडअं वन्दे स्वाहा ॥१॥
 ॐ त सति सतिकर सतिण्य सब्व भया । सति युणामि जिण, सति विहेड मे स्वाहा ॥२॥
 ॐ रोगजलजलणविसहर-चोरारिमहदगघरणभयाइ । पासजिणनामसकि त्तणेण पसमंति सन्वाडं स्वाहा ॥३॥
 ॐ भवणवडवाणमतार-जोइसवासी विमाणवासी अ । जे केचि दुडुदेवा, ते सन्वे उवसमंतु मम स्वाहा ॥४॥

ए गाथा ४ भणीने ४ कलशा ४ प्रतिमाओ उपर साथे ढालया, १ जण प्रतिमाना अंग लेंछे, चन्दन पुणे पूजे, एज प्रमाणे १०८ वार करी स्नात्रपूजा पूरी करवी, जो पाणी वडुं होय तो वीजा पासे पखाल करवी ते कामे लगाडु, पठी खाड अने उन्हा पाणीथी प्रतिमाओ उपरथी चक्राय उतारी प्रतिमाओ साफ करीने पूजे. पछी कलश ४ उगटी धोई धूयीने चोखा पाणीए भरे, माहि फूल, चन्दन, नाखी उपर अगलहणा ढांकी, स्नात्र करी, चैत्यवंदन करे, स्तनने नदले अजितशान्ति करे. जयवीरराय

पर्यन्त कहीने कुसुमांजलि भणावची. स्नात्र विधि ४ कलश ढालवा, पछी पूजा करीने नैवेद्य होवुं, आरती मंगलदीवी करवो, पछी धूप उखेवीने चैत्यवंदन करवुं, अने स्तवनेने ठेकाणे तिजयपहुत्त करेवुं.

पछी अष्टोत्तरी स्नात्र करावनारने उभो राखी तेना वे हाथोमां कुंभ मूकवो, तेमां रूपानाणुं मूकवुं, कुंभने कांठे गोवाह्वत्र बांधी, फूलमाला पहेरावची, पछी १ जण मोटी शान्ति कहे, अने २ जण न्दवणना पाणीथी अवंड धाराए ते कुंभ भरे, घरमां सर्वात्र ते जलने छांटे, जे मांगे तेने पण ते जल आपे.

बलिवाकुल जे राख्या छे ते वडे दिक्पालोने विवर्जन करे, संघ भक्ति करवी, स्नात्रकारोने यथाशक्ति श्रीफलादिक आपे. शान्तिकरूप स्नात्रमां ४ गाथाओ भणीने अभिषेक करवो पण जो स्नात्र पौष्टिक होय तो ४ गाथा पछी—
“ ॐ नमोऽर्हते परमेश्वराय चतुर्भुजाय परमेश्चिने दिग्विभागकुमारीपरिपूजिताय देवाधिदेवाय दिव्य-
शरीराय त्रैलोक्यमहिताय अस्मिन् गृहे पूजाप्रस्तावे शान्तिकविधौ पूजकस्य शान्तिं कर्द्धि वृद्धिं कल्याणं-
कुरु कुरु स्वाहा ।”

आ मंत्र बोलीने अभिषेक करवो अने अन्तमां-
सर्वमंगलमांगल्यं, सर्व कल्याणकारणम् । प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥१॥
आ मंगल श्लोक बोलीने समाप्ति करवी.

इति अष्टोत्तरी स्नात्रविधिः संपूर्णः १

१. संवत् १८४८ फाल्गुण वदि ५ भौमवारे । शुभ भवतु । आदर्श पुस्तक अंतिम लेख पुष्टिका॥

॥ अथ अष्टोत्तरशतस्नात्रविधिः ॥
(सत्तरमा सैकाना पूर्वधिमा चालतीर)

उपकरणो

- (१) प्रतिमा ४ "आदिनाथ १ अजितनाथ
- २ शान्तिनाथ ३ अने पार्श्वनाथ ४ नी
- पंचतीर्थी अथवा चौवीशी "
- (२) ' प्रणालियो ' वाजोट १
- (३) कलश ८
- (४) कुंडी ? ' पत्वालना पाणी माटे '
- (५) कोरो कुम ?
- (६) कुंडी ? " कलश भरवाने "
- (७) धूपघाणुं ?
- (८) दियाढयुक्त वस्त्र २ " एक फला-

- दि होवा, घीशुं कुंम हेठ मुरूवाने "
- (९) श्रीफल ४ प्रतिमा आगल होवा,
- श्रीफल ३ बीजा कुंम उपर ग्रह उपर
- अने दिक्पालो उपर मुरूवा, कुल ७.
- (१०) कुंम उपर दारुवा ' रातुवस्त्र गज १
- (११) नव ग्रहोने माटे वस्त्र गज ९
- घोलुं गज २ रातुं गज २ पीलु गज १
- छोट गज १ काळु गज ३ (पाठान्तरे नीलुं
- गज ३ काळुं गज १)
- (१२) दोकडा ९ (त्रामाना पैसाना

- अडधिया)
- (१३) सोपारी ९
- (१४) पान ९
- (१५) चोरवानी दगली नव ९
- (१६) दिक्पालोना पाटला उपर १।
- सना गज रातुं वस्त्र, सोपारी १०
- पान १० दोकडा १०
- (१७) १०८ कूपतुं पाणी
- (१८) गधोदक
- (१९) सेवतीना फूल ४३२

१ सवत् १६३९ ना वर्षमां लखेली प्रति उपरपी लीपी छे।

- (२०) पांच १०८
- (२१) परदेशी नालियेर १०८
- (२२) कमल काकडी १०८
- (२३) सोपारी १०८
- (२४) सींधोडा १०८
- (२५) खारेक १०८
- (२६) द्राक्ष १०८
- (२७) दोपराना ककडा १०८
- (२८) साकरना ककडा १०८
- (२९) निसाणी (रायण) १०८
- (३०) लविण १०८
- (३१) एलची डोडा १०८
- (३२) लाडूडी (न्हाना लाडवा) १०८
- (३३) खाजली (न्हानी पुडी जेवढां

खाजा १०८)

- (३४) चौला शेर ८ तथा १० (चावल पका ३ तथा ३॥ शेर) ना ढगला १०८ कव्वाणे
- (३५) 'क्रोरोवलि गोहूँ जवचणा, सरमन, मलीने आसरे एक सेर, ए आह्वाननी वलि,'
- (३६) ' विसर्जननी वलि भात, लापसी मालपुडा, (पुडला) चोलाना चाकला, जवाराना चाकला, खीचडी, अने चणाना चाकला, घी, चंदन, केसर सहित,'
- (३७) अगर टांक ७ तथा ०
- (३८) बरस कपूर गांगडा ४
- (३९) चीणीयुं कपूर मंगलदावामां मूक-वाने वाल ४ नो काकडो ?

- (४०) केसर टांक ३
- (४१) सुखड वाटकी २ एक पूजाने माटे, बीजी तिलकने माटे.
- (४२) रूपामहोर ' चोखंडा रुपैया ' २ स्नात्रजल (पंचामृत) कलशामां नाखवाने माटे एक अने बीजी पखाल जलनी कुंडीमां मूकवा माटे '
- (४३) नैवेद्य सेर ४ तथा ५ ने आसरे,
- (४४) सरावला २ मोटा,
- (४५) १०८ तांतणनी दीयेट २
- (४६) गेवाध्वज टांक ९ ने आसरे,
- (४७) घी दीवा साह सेर ३ आसरे- (लगभग ८६ तोला)
- (४८) श्रावक ८ ब्रह्मचारी मले तो तेवा

त मले तो ८ अने जवन्यथी ३ दिवसनो
गुरु घुत्ते नियम करानी आरुण माधीने
तैयार करवा' (४९) फलापली जे मले ते दोया माटे

लेवी.

(५०) सर्वौषधि ' स्नात्रजलमा नाखवाने
सर्वौषधि—डोस, हलदर, वरिहाली,
गलो, नागरमोथ, पीपरासूल, लविंग,

अष्टोत्तरो स्नात्रना पूर्वकृत्यो—

प्रथम अंबोट पाणी छटावी, भूमि शुद्ध करानी, शुद्ध मधवा म्ही पासे कुंकुमनी गोहली देवरावची, उपर चोखानो साधियो
पूरानी, सोपारी मूठीये, पन्नालियो गजोट माडी ते उपर चटुओ गधयो, वज्रा २ आरोपीने ते पछी पूर्व सन्मुख अथवा उत्तरा-
भिमुख प्रतिमा ४ म्यापन करवी अने पडी ग्रह, विष्णुपालोनी स्थापना करवी

ग्रह स्थापन विधि

पछी एक पाटले खलड केसरथी नमग्रह आलेवीये, यंत्रेने अनुसार ग्रहोनो आलेख करवो
ॐ आदित्याय नवाहनाय सपरिकराय सायुधाथ आगच्छ २ बलि गृहाण २ अमुकग्रहे अष्टोत्तरीस्ना-
त्रोत्सवे पूजा गृहाण २ शान्ति कुरु २ ॥

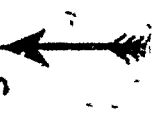
ॐ चन्द्राय सवाहनाय सपरिकराय सायुधाय आगच्छ २ बलि गृहाण २ अमुकग्रहे अष्टोत्तरीस्ना-
त्रोत्सवे पूजा गृहाण २ शान्ति कुरु २ ॥

कंफोल, जायफल, जावंतरी, नखला,
खग्द (चंदन) अने शिलासस, आ १ ३
चीजोनु चूर्ण ते सर्वौषधि

—

ॐ भौमाय सवाहनाय सपरिकराय सायुधाय आगच्छ २ वलिं गृहाण २ अमुकगृहे अष्टोत्तरीस्नात्रो
त्सवे पूजां गृहाण २ शान्तिं कुरु २ ॥

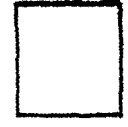
बुध ४



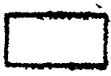
शुक्र ६



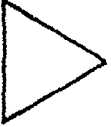
सोम २



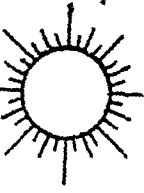
गुरु ५



मंगल ३



सूर्य १



केतु ७



शनि ९



राहु ८



ॐ बुधाय सवाहनाय सपरिकराय सायुधाय
आगच्छ २ वलिं गृहाण २ अमुकगृहे अष्टो-
त्तरीस्नात्र महोत्सवे पूजां गृहाण २ शान्तिं
कुरु २ ॥

ॐ बृहस्पतये सवाहनाय सपरिकराय सायु-
धाय आगच्छ २ वलिं गृहाण २ अमुकगृहे
अष्टोत्तरीस्नात्रोत्सवे पूजां गृहाण २ शान्तिं
कुरु २ ॥

ॐ शुक्राय सवाहनाय सपरिकराय सायुधाय
आगच्छ २ वलिं गृहाण २ अमुकगृहे अष्टो-
त्तरीस्नात्रोत्सवे पूजां गृहाण २ शान्तिं कुरु २ ॥

ॐ शनिाय सवाहनाय सपरिकराय सायुधाय आगच्छ २ वलिं गृहाण २ अमुकगृहे अष्टो-

तरीस्नात्रोत्सवे पूजा गृहाण २ शान्ति कुरु २ ॥

ॐ राहवे सवाहनाय सपरिकराय सायुधाय आगच्छ २ बलि गृहाण २ अमुकगृहे अष्टोत्तरीस्नात्रोत्सवे पूजा गृहाण २ शान्ति कुरु २ ॥

ॐ केतवे सवाहनाय सपरिकराय सायुधाय आगच्छ २ बलि गृहाण २ अमुकगृहे अष्टोत्तरीस्नात्रोत्सवे पूजां गृहाण २ शान्ति कुरु २ ॥

आ प्रमाणे नव ग्रहनां मंत्र बोली मूखडनी पूजा तथा चाखानी ९ ढगली करवी, रविने द्राक्ष, चन्द्रने सेलडी, मंगलने सोपारी, बुधने नारंगी, गुरुने जम्बेरी, शुक्रने नीजोर, शनिने खारेक, राहुने नालियेर, केतुने दाडिम, ए फल ग्रहोने मूकवा, नहीतर आठ सोपारी एक एक नालियेर मूकीये.

शुक्र अने चन्द्रने श्रीखण्ड (चन्दन), मंगल अने सूर्यने रक्तचन्दन, बुध अने गुरुने वाव 'पीतद्रव्य-गोरोचन' अने शनि-राहु-केतुने कुकुम (आ द्रव्योधी जनुकमे ९ ग्रहोने पूजा)

रविने रुणे, चन्द्रने मुचकुन्द, मंगलने जाखल, बुधने चंपक, बृहस्पतिने शतपत्र (कमल अने ए न मले तो चंपकादि पीत पुष्पो) शुक्रने जाइ, शनिने मालती, राहुने कुन्द अंन केतुने विविध वर्णना पुष्पो चढावनां. पक्वान्न लाइ प्रमुख ढोवां,

रविने रातु कापड गज १ चन्द्रने श्वेत कापड गज १ मंगलने रातु कापड गज १ बुधने छोट्टुं कापड गज १ (नीली-छोट्टु) बृहस्पतिने पीळु कापड गज १ शुक्रने श्वेत कापड गज १ शनिने काळु कापड गज १ राहुने काळु गज १ केतुने

काळें गज ? , एम गंज गज काण्ड प्रत्येक उपर मूकडें, अने श्रीफल ? उपर मूकडें.
पढी अक्षत वास पुष्प अने जल लेइने—

“ॐआदित्य-सोम-मंगल, बुध-गुरु-शुक्राः-शनैश्वरो-राहुः । केतुप्रमुखाः खेदा, जिनपतिपुरतोऽवन्तिष्ठन्तु ॥१॥

आ श्लोक बोलीने पुष्पवास जलवडे अर्घ आपवो,

॥ इति ग्रह स्थापन विधिः ॥

दिकूपाल स्थापना विधि—

ॐ अग्निमूर्तये शक्तिहस्ताय मेषवाहनाय सायुधाय सवाहनाय सपरिजनाय इह अमुकगृहे अश्रोत्तरी-
स्नात्रमहोत्सवे आगच्छ २ पूजां गृहाण २ पूजां यावत्तिष्ठ २ ।

ॐ यमाय दक्षिणदिग्धिष्टायकाय महिषवाहनाय दण्डायुधाय कृष्णमूर्तये सायुधाय सवाहनाय सप-
रिजनाय इह अमुकगृहे अश्रोत्तरीस्नात्रमहात्सवे आगच्छ २ पूजां गृहाण २ पूजां यावत्तिष्ठ २ ।

ॐ नैर्ऋतये खड्गहस्ताय सायुधाय सवाहनाय सपरिजनाय इह अमुकगृहे अश्रोत्तरी-
स्नात्रमहोत्सवे आगच्छ २ पूजां गृहाण २ पूजां यावत्तिष्ठ २ ।

ॐ वरुणाय पश्चिमदिग्धिष्टायकाय मकरवाहनाय परशुहस्ताय सायुधाय सवाहनाय सपरिजनाय इह

अश्रोत्तरी-
स्नात्रमहोत्सवे आगच्छ २ पूजां गृहाण २ पूजां यावत्तिष्ठ २ ।

ॐ अश्रोत्तरी-
स्नात्रमहोत्सवे आगच्छ २ पूजां गृहाण २ पूजां यावत्तिष्ठ २ ।

ॐ अश्रोत्तरी-
स्नात्रमहोत्सवे आगच्छ २ पूजां गृहाण २ पूजां यावत्तिष्ठ २ ।

अमुकगृहे अष्टोत्तरीस्नात्रमहोत्सवे आगच्छ २ पूजा गृहाण २ पूजां यावत्तिष्ठ २ ।

ॐ वायव्ये वायव्याधिपतये ध्वजहस्ताय हरिणचाहनाय सायुधाय सवाहनाय सपरिजनाय इह अमुक-
गृहे अष्टोत्तरी स्नात्रमहोत्सवे आगच्छ २ पूजा गृहाण २ पूजां यावत्तिष्ठ २ ।

ॐ धनदाय उत्तरदिगितिष्ठायकाय गदाहस्ताय धननिधानाऽऽख्ढाय सायुधाय सवाहनाय सपरिजनाय
इह अमुकगृहे अष्टोत्तरीस्नात्रमहोत्सवे आगच्छ २ पूजां गृहाण २ पूजा यावत्तिष्ठ ।

ॐ ईशानाय ऐशान्यधिपतये शूलहस्ताय त्रिपाथिरूढाय सायुधाय सवाहनाय सपरिजनाय इह अमुकगृहे
अष्टोत्तरीस्नात्रमहोत्सवे आगच्छ २ पूजां गृहाण २ पूजा यावत्तिष्ठ २ ।

ॐ नमो ब्रह्मणे राजहसवाहनाय ऊर्ध्वलोकाधिष्ठायकाय सायुधाय सवाहनाय सपरिजनाय इह अमुक-
गृहे अष्टोत्तरीस्नात्रमहोत्सवे आगच्छ २ पूजां गृहाण २ पूजां यावत्तिष्ठ २ ।

ॐ पातालनिवासेभ्यो नागेभ्यः पद्मवाहनेभ्यः सायुधसवाहनसपरिजनेभ्यः इह अमुकगृहे अष्टोत्तरी
स्नात्रमहोत्सवे आगच्छत आगच्छत पूजा गृह्णीत २ पूजा गावत्तिष्ठत २ ।

८ मन्त्रो गौरी प्रत्येक दिक्पाल आगे चोखानी ढगली करवी, पान १०, मोषारी १०, श्रीफल १, दोकडा १० अने रासु
कापट सत्रा गज मूकडुं, सुखड केमर फूले पूजी अर्धे आपवो, अने—

“ ॐ इन्द्राग्निप्रयमा नैर्ऋतवरुणौ समीरणकुबेरौ । ईशानब्रह्मनागा जिनपतिपुरतोऽवतिष्ठन्तु ॥१॥

ए गाथा बोली हाथमां जल लेइ फूल सहित धारा देवी अने—
“ ओ ओ इन्द्रादयो दिक्पालाः स्वस्वदिशि विघ्नप्रशान्तिकरा भगवदाज्ञायां सावधानास्तिष्ठन्तु ।”

ए बोलतां हाथ जोडीने दिक्पालोतुं संनिधापन करतुं,
दिक्पाल स्थापना कर्या पछी बहार जइने दिक्पालोने बलिक्षेप करवो. इति दिक्पालस्थापनाविधिः ।

प्रथम कोरी बलि-गेहुं, जव, सरसव अने चणा ए चार धान अणारांध्यां, धूप, फूल, घसेल झखडनी वाटकी आ सर्व पदार्थो लइने बहार जंयुं, अने दश दिशाना दिक्पालोतुं आह्वान करवा पूर्वक ते ते दिशामां नाखुं, पूर्व सामे रहीने—

बलिक्षेप विधि—

ॐ इन्द्राय पूर्वदिग्धिष्ठायकाय ऐरावणवाहनाय सहस्रनेत्राय वज्रायुधाय सवाहनाय सपरिजनाय इह असुकगृहे अष्टोत्तरीस्नात्रमहोत्सवे आगच्छ २ बलिं गृहाण २ स्वाहा ।

ॐ यमाय दक्षिणदिग्धिष्ठायकाय महिषवाहनाय दण्डायुधाय कृष्णमूर्तये सायुधाय सवाहनाय सपरिजनाय इह असुकगृहे अष्टोत्तरीस्नात्रमहोत्सवे आगच्छ २ बलिं गृहाण २ स्वाहा ।

ॐ नैर्ऋतये खड्गहस्ताय सायुधाय सवाहनाय सपरिजनाय असुकगृहे अष्टोत्तरीस्नात्रमहोत्सवे आगच्छ २ बलिं गृहाण २ स्वाहा ।

अष्टोत्तरीस्नात्रमहोत्सवे आगच्छ

२ बलिं गृहाण २ स्वाहा ।

ॐ वरुणाय पश्चिमदिग्धिष्ठायकाय मकरवाहनाय परशुहस्ताय सायुधाय सवाहनाय सपरिजनाय
अमुकगृहे अष्टोत्तरीस्नात्रमहोत्सवे आगच्छ २ बलिं गृहाण २ स्वाहा ।

ॐ वायवे वायव्याधिपतये, ध्वजहस्ताय हरिणवाहनाय सायुधाय सवाहनाय सपरिजनाय इह अमुक-
गृहे अष्टोत्तरीस्नात्रमहोत्सवे आगच्छ २ बलिं गृहाण २ स्वाहा ।

ॐ घनदाय उत्तरदिग्धिष्ठायकाय गदाहस्ताय घननिधानाऽऽरूढाय सायुधाय सवाहनाय सपरिजनाय
इह अमुकगृहे अष्टोत्तरीस्नात्रमहोत्सवे आगच्छ २ बलिं गृहाण २ स्वाहा ।

ॐ ईशानाय ऐशान्यधिपतये शूलहस्ताय वृषाधिरूढाय सायुधाय सवाहनाय सपरिजनाय इह अमुकगृहे
अष्टोत्तरीस्नात्रमहोत्सवे आगच्छ २ बलिं गृहाण २ स्वाहा ।

ॐ ब्रह्मणे राजहंसवाहनाय ऊर्ध्वलोकाधिष्ठायकाय सायुधाय सवाहनाय सपरिजनाय इह अमुकगृहे
अष्टोत्तरीस्नात्रमहोत्सवे आगच्छ २ बलिं गृहाण २ स्वाहा ।

ॐ पातालनिवासेभ्यो नागेभ्यः पद्मवाहनेभ्यः सायुध-सवाहन-सपरिजनेभ्यः, इह अमुकगृहे अष्टोत्तरी-
स्नात्रमहोत्सवे आगच्छत आगच्छत बलिं गृहीत २ स्वाहा ।

इति दिग्निदिग्धिष्ठाकपालाह्वान विधि ।

तात्कालिक पूर्वक्रिया—पछी १०८ त्रागनी दीवेट करी वने वाञ्छु दीया उपर कुण्डी २ आणी ते मांहे एके कुंडिए सधवा हीने घाटडी ओढाडी पंचामृत करावीये, शुद्ध जल, दहि, दूध, घी, सेलडीस एटलां पंचामृत एकठा कीजे. नीजी कुंडी स्नात्रजल झीलवा सारु मांडवी, पछी देव पूजी गेवाश्रयानो करूण बांधंछुं, ते पछी चार म्नुतिए देववांदवा, चैत्यवंदन करंछुं, सप्तवने ठेकाणे लघुशान्ति कहेवी, ते पछी जयवीयाय कहेवा,

पछी सधवा ही पासे कोशे कुंभ जलथी भरावी, उपर नालेर भेली, लाल वस्त्रे हांकी, देव आगे मृकूची; अने पूजा शरु करवी, जणा चार ४ पूजवा वेसे, जणा ४ उभा रही कलश ढाले, वने तरफ जणां २ दीनासां नी सोंचे, एक अंगरवची नो घुप करे, एक जण कलश ४ भरीने आपे. जणा ४ दशियावड वल उपर फलावलि बोवे. वे जण चामर नीजे. तिहां गुरु गाथा ४ भणे, पाठान्तरे जण १ गाथा ४ भणे, काली नेलीथी अथवा पश्चालानी मालापी १०८ पूजाओ गणवी, पूजाने अन्ते जण १ वंट वगाडे.

स्नात्रनो प्रारंभ—

नमोऽर्हतसिद्धाचार्योपाध्यायस्वस्यधुम्यः ।

“ ॐ तं संतिं संतिकरं, संतिणं सबधभवा । संतिं शुणामि जिणं, संतिं विहेउ से स्वाहा ॥१॥

ॐ रोगजलजलणचिसहर-चोरारिसइदंगरणभयाइं । पासजिणनामसंकि-त्तणेण परासंति सब्वाइं स्वाहा ॥२॥

ॐ वरकणयंसंखचिद्रुम-सरगयघणसंनिभं विगयमोहं । सुत्तरिसुगं जिणणं, सब्वाऽसरपूइयं वन्दे स्वाहा ॥३॥

ॐ भवणवडवाणमतर-जोइसवासीविमाणवासी अ । जेकेवि इड्डेवेवा, ते सव्ये उवसमत्रु मम स्वाहा ॥४॥

ए गाथा मणीने कलश ढालना, सेनती आदिना पुष्पोमांथी १-१ पुष्प प्रत्येक प्रतिमाने चढावे, पूजा करे, एज रीते १०८ चार गाथाओ बोली बोलीने कलश ढालना, अने चदन पुष्पादिबडे प्रतिमाओनी पूजा करची, पछी देवनी वैयावच करची. एटले के उष्ण जल वडे प्रतिमा उपर लागेल चीकाश उतारे, शुद्ध जलथी पखालीने विलेपन पूर्वक नैवेद्य चढावे, ४ प्रतिमाओनी आगल ४ नालियेर बोधे, ९ ग्रह अने १० दिक्पालोनी पूजा करे.

पछी सर्वे जण हरियावहो पढिकमीने आठे धुइए देववदन करे अने स्तवनने ठेरुणे अलितशान्ति करे, पछी कुसुमाजलि आदि देईने विधिपूर्वक स्नान करां, अने सर्वे कोइए पूजा कर्या वाद आरती मंगलदीवो मकटावनो

शान्ति कलश भरवानी विधि--

पवालनी कुंडीमांथी पाणीनो कलश भरवो, अने पछी ते जल बीजी कुडीमां मोटी शान्तिना पाठ गोलना पूर्वक अंबड धाराए लेवु, शान्ति करे त्या सुधी धारा चालू राखची, कुडी मध्ये प्रथम " ॐ ह्रीं नमः " ए मंत्र लखनो, तेने नीचे दशियावाड-अंबड नख मांडवु, कुडीमा रुपामहोर अर्घति चोखंडो रूपैयो अथवा रुपानाणु मूकवु, कुंडीने गले गेनाखत वाधवु, उपरथी मध्यभाग पर्यन्त चारे वावु लटकती एक पुष्पमाला पहारावची. शान्ति पूरी थया पछी ए स्नानजल, पुष्प अने रूपैया सहित कुंडी माहिथी कलशमा भरवु, कलशना मुख उपर चार वावु ४ पान मुकी उपर नालियेर मुकी गेवाखते वोटवो अने ते कुम घरघणीने माथे उपढाववो, पण कुंम भूमि उपर न मूकवो, पछी राधेल बलि चाकुला वडे देवताओनुं विसर्जन करावु.

आह्वान करतां जे प्रमाणे पाठ बोल्यो हतो तेज प्रमाणे " बलि गृहाण २ " अर्हो सुधी बोलवो अने ते उपरान्त " स्वस्थानं गच्छ २ स्वाहा " एटलो वधारे बोलवो.

पछी चतुर्विध संघनी पूजा करे अने स्नात्रकारोने नालेरनी प्रभावना आपे, इति अष्टोत्तरीशतस्नात्रविधि समाप्तः १

१ आदर्श पुस्तक १ नो लेखन कालादि सूचक अंतिम लेख-संघत् १६३९ वर्षे फागुण शुदि ११ दिने लिखतं अहम्मवा-
चादात् गणिश्री पुण्यसागर शीश गणिश्री देवसागर वाचनार्थे, श्री । २ आदर्श पुस्तक नं. २ नो लेखन कालादि सूचक
अंतिम लेख-सं. १६८० वर्षे कार्तिक वदि ५ रवौ वीरसग्रामे पं. विमलसी लिखितं ॥ कल्याणमस्तु ॥ अथाग्रं १५० ॥



। अथ श्रीशान्तिस्नानविधिः ।

प्रतिष्ठामां अथवा यात्रामा सुद्रोषद्रव शान्त्यर्थं अद्वाही उत्सवनी आदिमा शान्तिधारा करवी.
 शुभ दिवसे विधिपूर्वक जलयात्रा करवी, जलयात्रानी विधि प्रतिष्ठाविधिथी जाणी लेवा.
 मुहूर्तने दिवसे मभाते दाम प्रमुख लछनरहित एवा जघन्यथी चार स्नात्रिया विधिपूर्वक स्नान करे, ते आ रीते—
 “ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृत स्नाचय स्नाचय स्वाहा” । आ मंत्रयी ७ वार मंत्री जल शुद्धि करवी.
 ॐ ह्रीं यक्षाधिपतये नमः । आ मंत्रे ७ वार दातण मंत्रे.
 मन्त्रित जलनी अजलि भरी—“ ॐ ह्रीं श्री क्लीं श्री क्लीं कामदेवाधिपते ! ममेप्सित पूरय २ स्वाहा ” आ मंत्र ७ वार
 बोलीने मुख घोडुं.

पूर्व संमुख वेसी तेल मर्दन करीने—“ ॐ ह्रीं अमले विमले विमलोद्भवे संवतीर्थजलोपमे पां पां वां वां अशुचिः
 शुचिर्भवामि स्वाहा । ”

आ मंत्र ३ वार बोलीने हाथथी सर्वाङ्ग स्पृशं करे.

नवां घोयेल शुद्ध वस्त्र हाथमा लेइ—“ ॐ ह्रीं ओं क्रौं नमः ” आ मंत्रे ३ वार मंत्रीने पहेरवा,
 तिलफस्तु केसर हाथमा लेइ—“ ॐ आ ह्रीं क्लीं अर्हते नमः । आ मंत्रे ७ वार मंत्रीने ते केसरे तिलक करे.
 गेवाक्षतनो दडो लेइ—ॐ ह्रीं अवतर २ सोमे २ कुरु २ वग्नु निवग्नु सुमणे सोमणसे महुमहुरे ॐ कवलिकः

क्षः स्वाहा ” आ मंत्रे मंत्री सर्व स्नात्रियाने हाथे बांधे, एज मंत्रथी मिढल मरडासिंगी पण मंत्रबी.

पष्ठी मंत्रपूर्वक अष्टप्रकारी पूजा करवी, पूजामंत्र “ ॐ ह्रीं श्री परमपरमात्मने अनन्तानन्तज्ञानशक्तये जन्म-
जरामृत्युनिवारणाय श्रीभते जिनेन्द्राय जलं, चंदनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं ताम्बूलं यजामहे स्वाहा । ”
हवे वृद्ध श्रावक सोनवाणी करीने-ॐ ह्रीं श्री जीराउलापार्थ्वनाथाय रक्षां कुरु २ स्वाहा ” आ मंत्रे ७ वार मंत्रे,
पष्ठी ७ नोकार गणीने ते जल सर्वत्र छांटे ।

पष्ठी वास अक्षत अने फूल ले:- “ ॐ भूर्भुवः स्वधाय स्वाहा ” आ मंत्र बोली ते वडे भूमि शुद्ध करे.

भूमि शुद्ध करी त्यां पूर्व अथवा उत्तर मुख पीठ मांडी तेनी “ ॐ ह्रीं अहंत्पीठाय नमः । आ मंत्र ७ वार बोली
वासाक्षते पूजा करे.

पष्ठी- “ ॐ नमोऽहंत्परमेश्वराय चतुर्मुखाय परमेष्ठिने दिक्कुमारीपरिपूजिताय देवाधिदेवाय त्रैलोक्य-
महिताय अत्र पीठे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा । ” आ मंत्र वार ३ बोलीने शान्तिनाथनी मूर्ति थापवी, एज प्रमाणे एकेकी
प्रतिमा पंचतीर्थीनी स्थापवी, विहित प्रतिमा न होय तो वीजी जिनप्रतिमा नीचेना मंत्रवडे विहितकल्पवी, मंत्र आ प्रमाणे छे.

“ ॐ नमोऽहंद्द्वयस्तीर्थकरेभ्यो जिनेभ्योऽनाद्यनन्तेभ्यः समबलेभ्यः समकृतेभ्यः समप्रभावेभ्यः समकेवले-
भ्यः समतत्त्वोपदेशेभ्यः समभूजनेभ्यः समजल्पनेभ्यः सममत्वत्रतीर्थकर नाम पंचदशकर्मभूमिभवस्तीर्थकरो
योऽन्नाराध्यते, सोऽत्र प्रतिमायां सन्निहितोऽस्तु ”

आ मंत्रदे जे तीर्थरुनी प्रतिमा आवश्यक होय तेनी कल्पना करवी, पछी कोरा सप्तवलासां सधवा स्त्रीनां दोधे गाघृत पूरणुं, नीचेतो मंत्र ३ गार गौलीने दीपस्थापन करावा

“ॐ घृणमायुर्द्विकारं, भवति पर जेनदृष्टिसपक्तात् । तत्सयुत. प्रदीपः, पातु सदा भावदुःखेभ्यः स्वाहा ॥”

पछी त्रांगानी माटली घोः धूपीने तेमा साथियो करवो तेना उपर

ॐ ह्रीं श्री सर्वोपद्रवान् नाशाय ३ स्वाहा ।”

ए मंत्र चन्दन केसरथी अथवा अष्टगंधथी लवचो तेना हाठे मिठल, मारडासिंगी, समूलाडाभ सहित गोवासुत्र गंधबुं अने अन्दरूपानाणु अथवा पचरत्ननी पोटली मूकवी. पचरत्न मूकती रखते नीचेतो मंत्र गोलवो

“ ॐ नानारत्नौघयुत, सुगन्धपुष्पाधियासित नीरम् । पतताद् विचित्रवर्णं, मंत्राढय स्थापनाचिम्बे स्वाहा ”

“ ॐ ह्रीं ङं ङं ङं ३ साकार ४ पाणी ५ आ पाच पदार्थोस्तु पचासृत तैयार करुं, पछी घो, १ दूध २ दहि ३ साकार ४ पाणी ५ आ पाच पदार्थोस्तु पचासृत तैयार करुं.

“ ॐ जिनविम्बोपरि निपतद्, घृतदधिदुग्धादिभिः सुपरिपूता ।

गगोदकममित्रा, पंचसुधा हरतु दुरितानि स्वाहा ॥”

आ मंत्रे ३ गार मंत्रीने पचासृत माटलीमां रेडुं, गगादि तीर्थजल रूपादिना पाणी जे लान्या होय ते पण

“ ॐ ह्रीं भः जलधिनदीद्वदकुडेपु, यानि तीर्थोदकानि शुद्धानि ।

तेमंत्रसकृत्तेरिह विम्बं स्नपयामि शुद्धयर्थं स्वाहा ॥”

आ मंत्रे ७ बार मंत्रिने पंचामृतनी गोलीमां रेडवा, चन्दननां छांटा नांखवां, पुष्प नाखवां, गोली उपर रेशमी अथवा सूत्राउ, पीछे अथवा रांठे वस्त्र ढांकीने दक्ष श्रावक धूप दीप सहित माटली उपर हाथ राखी, नवकार १ उवसगहर २ संतिकर ३ तिजयपहुच ४ नमिऊण ५ अजितशान्तिस्तव ६ भक्तामर ७ ए सात स्मरण गणे. कलश घोइ धूपी, पंचामृत भरी, श्री शान्तिनाथ तथा ऋषभदेवनी पंचतीर्थी सिद्धचक्र संयुक्त थापी ते आगल स्वर्ण रूप्य पत्थी ३ कुमार तथा कुमारिका पवित्र वस्त्राभरणादिक पहेरी अष्टप्रकारी पूजा भणावे.

“ स्नात्र करतां जगतयुरु शरीरे, सकल देवे विमल कलश नीरे।
आपणा कर्ममल दूर कीधा, तेणे ते विबुधा ग्रंथे प्रसिद्धा ॥१॥
हर्ष धरी अप्सरावंद आवे, स्नात्र करी इम आसीस भणावे ।
जिहां लगे सुरगिरि जंबुदीवो, अमतणा नाथ जीवाण जीवो ॥२॥

श्रीमन्मन्दरमस्तके शुचिजलैर्घृते सदभक्षते, पीठे सुक्तिवरं निधाय रुचिरे तत्पादपुष्पलजा ।

इन्द्रोऽहं निजभूषणार्थममलं यज्ञोपवीतं दधे, सुद्राकंकणशेखराण्यपि तथा जैनाभिषेकोत्सवे ॥१॥
विश्वैश्वर्यैकवर्यास्त्रिदशपतिशिरःशेखरस्पृष्टपादाः, प्रक्षीणाऽशेषदोषाः सकलगुणगणग्रामधामान एव ।
जायन्ते जन्तवो यच्चरणसरसिजदंष्ट्रपूजान्विताश्री-अर्हन्तः स्नात्रकाले कलशजलभरैरेभिराण्णवावयेत्तान् ॥२॥

ॐ ह्रीं श्री परमपुरुषाय ॐ हां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रूं अहंते तीर्थोदकेन अष्टोत्तरशतौषधिभिः सहितेन

षष्टिलक्षकोट्यैकप्रमाणकलशैः स्नापयामि शान्तिं तुष्टिं पुष्टिं कुरु कुरु २ ।

श्रा प्रमाणे मंत्र मोलीने स्नात्र रुद्र, इति जल पूजा ॥१॥
जिनतनु चरचता सकल नाकी, कहे कुग्रह उष्णता आज थाकी ।
सकल अनिमेषता आज माकी, भव्यता अमत्तणी आज पाकी ॥३॥ इति चन्दन पूजा ॥२॥

जगधणी पूजता विविध फूले, सुरवरा ते गणे खिण अमूले ।
मत् धरी मानत्रा जिनप पूजे, तसतणा पापसताप घूजे ॥४॥ इति फल पूजा ॥३॥

जिनगृहे चामतो घूपपूरे, मिच्छच्च दुर्गन्धता जाय दूरे ।
यूप जिम सहज उरध गति स्वभावे, कारका उच गति भाव पावे ॥५॥ इति घूप पूजा ॥४॥

जे जना दीपमाला प्रकाशे, तेहथी तिमिर अज्ञान नाशे ।
निज घट ज्ञान ज्योति विकाशे, जेहथी जगतना भाव भासे ॥६॥ इति दीप पूजा ॥५॥

स्वस्तिक पूरता जिनप आगे, स्वचेतसि भद्र कल्याण जागे ।
जन्म जरा मरणथी अशुभ भागे, नियत शिव इम रहे तास आगे ॥७॥ इति अक्षत पूजा ॥६॥

दौकता भोग परभाव त्यागे, भविजना निज गुण भोग मागे ।
इम भणी हमतणु सरूप सुजे, आपज्यो तातजी जगत पूजे ॥८॥ इति नैवेद्य पूजा ॥७॥

फल भरे पूजतां जगतस्वामी, मनुज गनि वेल होईं सफल पामी ।

सकल सुनि ध्येय गति भेद रंगे, ध्यावतां फल समापत्ति संगे ॥९॥ इति फल पूजा ॥८॥

अष्टप्रकारी पूजा करी पछी प्रभुने जमणे पासे श्रीशान्तिदेवीनो कुंभ-कुंभथापनानी परे थापयो, पछी त्यां ग्रहस्थापना, दिक्पालस्थापना अने नन्दावर्त साथिया प्रमुख अष्टमंगलनी स्थापना करवी.

दश दिक्पाल अने नवग्रहने पवित्र बलिवाकुल देवा, खीर ? लापसी २ वडां ३ भात ४ करंबी, ५ पुडला ६ मोठी मोली सात धाननो खीचडो ७ (चणा ? गहुं, २ जव ३ जवार ४ लीला मग ५ चोला ६ अडद ७ ए सात धान्य) गोघृत सेर ? बुरो खांड सेर सवा, ए सर्व एकठां करीने नामशेपनी मुड्डी भरी—

“ ॐ नमो अरिहन्ताणं, ॐ नमो सिद्धाणं, ॐ नमो आयरिआणं, ॐ नमो उवञ्जायाणं, ॐ नमो लोए सबवसाहूणं, ॐ नमो आगासगामीणं, ॐ नमो चारणाइलद्धीणं, जे इमे किन्नरकिंपुरिसमहोरग, गकलसिद्धगंधवजद्वारकवत्सपिसायभूयपेयसाइणीडाइणीपभिईओ जिणघरनिवासिणो नियनियनिलयठिआ पविआरिणो संनिहिआ असंनिहिआ ते सब्वे इमं विलेक्खधूवपुष्पफलपईवसणाहं वल्लिं पडिच्छन्ता तुट्टिकरा भवंतु, पुट्टि-सिचंकरा भवंतु, संतिकरा भवंतु, सुत्थं जणं कुणंतु, मच्चजिणाणं संनिहाणप्पहावओ पसनभावत्तणेणं सब्वत्थरत्तलं कुणंतु सब्वत्थ इरिआणि नासेन्तु सब्वासिबसुवसंमंतु संतितुट्टिपुट्टि-सिबसुत्थयणकारिणो भवंतु स्वाहा ॥”

ए भूत त्रि मंत्र दार ३ भणी नासशुद्धि त्रि उपर वेरवी पंचमर्णा फूल वेरवा, ते पळी कलश ? चदन २ फूल ३ धूप ४ दीप ५ वास चोखा ६ आरीगो ७ चामर ८ घण्ट ९ धालीवेलण १० त्रिभाजनधर ११ ? अने पाठ गोलनार १२ ए १० जण शुद्ध आह्वान करे —

ॐ नम इन्द्राय पूर्वदिग्धिष्ठायकाय ऐरावणवाहनाय सहस्रनेत्राय वज्रायुधाय सपरिकराय अमुकग्रामे अमुकग्रहे शान्तिस्नात्रमहोत्सवे आगच्छ बलि गृहाण गृहाण शान्तिकरो भव, तुष्टिकरो भव, पुष्टिकरो भव, शिवंकरो भव, स्वाहा ॥१॥

ॐ नमोऽग्निमूर्तये शक्तिहस्ताय सैषदाहनाय सपरिकराय अमुकग्रामे अमुकग्रहे शान्तिस्नात्रमहोत्सवे आगच्छ आगच्छ बलि गृहाण गृहाण, शान्तिकरो भव, तुष्टिकरो भव, पुष्टिकरो भव, शिवंकरो भव स्वाहा ॥२॥

ॐ नमो यमाय दक्षिणदिग्धिष्ठायकाय महिषवाहनाय दण्डायुधाय कृष्णमूर्तये सपरिकराय अमुकग्रामे अमुकग्रहे शान्तिस्नात्रमहोत्सवे आगच्छ २ बलि गृहाण २ शान्तिकरो भव, तुष्टिकरो भव, पुष्टिकरो भव, शिवंकरो भव स्वाहा ॥३॥

ॐ नमो निर्ऋतये स्वहस्ताय शिवदाहनाय सपरिकराय अमुकग्रामे अमुकग्रहे शान्तिस्नात्रमहोत्सवे आगच्छ ० बलि गृहाण २ शान्तिकरो भव, तुष्टिकरो भव, पुष्टिकरो भव, शिवंकरो भव स्वाहा ॥४॥

ॐ नमो वरुणाय पश्चिमदिग्धिष्ठायकाय मकरवाहनाय पाशहस्ताय सपरिकराय अमुकग्रामे अमुकग्रहे

शान्तिस्नात्रमहोत्सवे आगच्छ २ वलिं गृह्णाण २ शान्तिकरो भव, तुष्टिकरो भव, पुष्टिकरो भव, शिवंकरो भव स्वाहा ॥५॥

ॐ नमो वायवे वायवीपतये ध्वजहस्ताय हरिणवाहनाय सपरिकराय असुकग्रामे असुकग्रहे शान्तिस्नात्रमहोत्सवे आगच्छ २ वलिं गृह्णाण २ शान्तिकरो भव, तुष्टिकरो भव, पुष्टिकरो भव, शिवंकरो भव स्वाहा ॥६॥

“ ॐ नमो धनदाय उत्तरदिगभिष्टायकाय गदाहस्ताय नरवाहनाय सपरिकराय असुकग्रामे असुकग्रहे शान्तिस्नात्रमहोत्सवे आगच्छ २ वलिं गृह्णाण २ शान्तिकरो भव, तुष्टिकरो भव, पुष्टिकरो भव, शिवंकरो भव स्वाहा ” ॥७॥

“ ॐ नम ईशानाय ऐशान्यधिपतये त्रिशूलहस्ताय वृषभवाहनाय सपरिकराय असुकग्रामे असुकग्रहे शान्तिस्नात्रमहोत्सवे आगच्छ २ वलिं गृह्णाण २ शान्तिकरो भव, तुष्टिकरो भव, पुष्टिकरो भव, शिवंकरो भव स्वाहा ” ॥८॥

“ ॐ नमो ब्रह्मणे उर्ध्वलोकभिष्टायकाय राजहंसवाहनाय सपरिकराय सायुधाय असुकग्रामे असुकग्रहे शान्तिस्नात्रमहोत्सवे आगच्छ २ वलिं गृह्णाण २ शान्तिकरो भव, तुष्टिकरो भव, पुष्टिकरो भव, शिवंकरो भव स्वाहा ” ॥९॥

“ ॐ नमो नागाय पातालाधिष्टायकाय पद्मवाहनाय सपरिकराय सायुधाय असुकग्रामे असुकग्रहे शान्ति-

स्नात्रमहोत्सवे आगच्छ २ बलिं गृहाण २ शातिकरो भव, तुष्टिकरो भव पुष्टिकरो भव, शिवंकरो भव, शिवंकरो भव
स्वाहा" ॥१०॥

" ॐ नम आदित्यसोममगल-बुधगुरुशुक्राःशनैश्चरो राहुः, केतुप्रमुखा. खेटा, जिनपतिपुरतोऽवतिष्ठतु ॥
ये केऽपि देवदेव्यो, जिनपतिपुरतोऽवतिष्ठतु ॥ अमुकग्रामे अमुकग्रहे, शान्तिस्नात्रमहोत्सवे आगच्छत आग-
च्छत बलिं गृहीत गृहीत शान्तिकरा भवंतु, तुष्टिकरा भवंतु, पुष्टिकरा भवतु, शिवंकरा भवन्तु स्वाहा ॥"

निसर्जना पाठमां " पूजानलि गृहाण २ स्वस्थान गच्छ गच्छ स्वाहा " आ प्रमाणे बोलुं
पछी मोनावाणी १ हूल २ कतु ३ चदन ४ हाथमां राखी वाजित्र पूर्वक—
" ॐ क्ष्मा क्षेत्रपालाय नम " पूर्वमां, " ॐ ह्रीं दिक्पालेभ्यो नम" दक्षिणमां, " ॐ ह्रीं ग्रहेभ्यो नमः" ऊर्ध्व
दिशामा, " ॐ ह्रीं पोडशमहादेवीभ्यो नम." पश्चिममां, " ॐ ह्रीं श्री जिनशासनदेवीदेव्यो नमः" उत्तरमां,

उपर ग्रमाणे बोली आगे जणावेल दिशाओमा जल छाटु, हूल, कुंडुम, चन्दननी अजलि भरी नाखी—
गळी च्यार कळश सुवर्ण पाणीए तथा धीरीदक पंचामृत मरीने शान्ति घोषणा पूर्वक उच्चते स्नात्र करीये—
यथा—"रोगशोकादिभिर्द्वेषै-रजिताय जितारये । नमः श्रीशान्तये तस्मै, विहितानन्तशान्तये ॥१॥
श्रीशान्तिजिनभक्ताय, भव्याय सुखसंपदः । श्रीशान्तिदेवता देया-दशान्तिमपनीयताम् ॥२॥
अम्बा निहतडिम्बा मे, सिद्धबुद्धममन्विता । सिते सिंहे स्थिता गौरी, वितनोतु समीहितम् ॥३॥

धराधिपतिपत्नी या, देवी पद्मावती सदा । शुद्धोपद्रवतः सा मां, पातु फुल्लत्फणावली ॥४॥

चंचच्चक्रधरा चारु-प्रवालदलदीधिनिः । चिरं चक्रेश्वरी देवी, नन्दतादवताच्च माम् ॥५॥

खड्गखेटककोदण्ड-त्राणपाणी तडिद्भ्रुतिः । तुरंगगमनाऽछुसा, कल्याणानि करोतु मे ॥६॥

मथुरापुरीसुपार्थ-सुपार्थस्तू परशिका । श्रीकुबेरा नरारूढा, सुताङ्गाऽवतु वो भयात् ॥७॥

ब्रह्मशान्तिः स मां पाया-दपायाद्वीरसेवकः । श्रीमद्वीरपुरे सत्या, येन कीर्तिः कृता निजा ॥८॥

श्रीशक्रप्रभुत्वा यक्षा, जिनशासनसंस्थिताः । देवीदेवास्तदन्धेऽपि, संघं रक्षन्त्वपायतः ॥९॥

श्रीसिद्धिमानमारूढा, यक्षसतंगसंगता । सा मां सिद्धायिका पातु, चक्रचापेषुधुधारिणी ॥१०॥”

त्यार पढी गेवायन्नो एकवीस तारनो दोरो करी, तेने फूल गुंथणीये नवकार १ उवत्सगहर २ लोगस ३ ए त्रणयी सातवार

मंत्रीने देहरा उपर तथा घर उपर वींटवो, तथा गाम कोटे वींटवो.

पढी वज्रपंजर करी अष्टप्रकारी पूजानो सामान मेलवी, एकसो आठ नालनो कलश क्षीरोदक-पंचामृते भरी ४ तथा ८ कलशे करी शुभथावक स्नात्र करे. “ ॐ नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः” ए पाठ प्रत्येक अभिषेक आदिमां बोलीने पढी गाथाओ बोली स्नात्र (अभिषेक) करे.

स्नात्रनो प्रारंभ—

ॐ नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

ॐ नमो जिणाणं सरणाणं मंगलाणं लोगुत्तमाणं हौं ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रूं ह्रौं ह्रूं असिआउसा त्रैलोक्यललामभूताय धुद्रोपद्रवशम-
नाय अहंते नमः स्वाहा ।

ॐ ते संति संतिकरं, संतिणं सब्वभया । संतिं थुणामि जिणं, संतिं विहेउ मे, रासानंदियं स्वाहा ॥१॥

ॐ रोग जलजलणविसहर-चोरारिमिइंदगयणभयाइं । पासजिणनामसंकि-त्तणेण पसमंति सब्वाइं स्वाहा ॥२॥

ॐ वरकणयसंखविद्धुम-मरगयणसंनिभं विगयमोहं । सत्तरिसयं जिणाणं सब्वाऽमरपूइयं वंदे स्वाहा ॥३॥

ॐ भवणवइवाणमंतर-जोइसवासी विमाणवासी य । जे केवि दुद्धेवा, ते सब्बे उवसमंतु मम स्वाहा ॥४॥

एम भणीने (बीजो) अभिषेक करवो । २ ।

३ नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

ॐ सकलातिशेषकसहा-संपत्तिसमन्विताय शश्याय । त्रैलोक्यपूजिताय च, नमो नमः शांतिदेवाय ह्रीं स्वाहा ॥३॥

ॐ नमो जिणाणं सरणाणं मंगलाणं लोगुत्तमाणं हौं ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रूं ह्रौं ह्रूं असिआउसा त्रैलोक्यललामभूताय धुद्रोपद्रव-
शमनाय अहंते नमः स्वाहा ।

ॐ ते संति संतिकरं, संतिणं सब्वभया । संतिं थुणामि जिणं, संतिं विहेउ मे रासानंदियं स्वाहा ॥१॥

ॐ रोगजलजलणविसहर-चोरारिमिइंदगयणभयाइं । पासजिणनामसंकि-त्तणेण पसमंति सब्वाइं स्वाहा ॥२॥

ॐ वरकणयसंखविद्धुम-मरगयणसंनिभं विगयमोहं । सत्तरिसयं जिणाणं, सब्वाऽमरपूइयं वंदे स्वाहा ॥३॥

ॐ तं संति संतिकरं संतिष्णं स्वभया । संतिं थुणामि जिणं, संतिं विहेउ मे रासानंदियं स्वाहा ॥१॥
 ॐ रोगजलजलणविसहर-चोरारिमिहंदगरणभयाइं । पासजिणनामसंक्रित्तणेण पसमंति सव्वाइं स्वाहा ॥२॥
 ॐ वरकणय संखविद्धुम-मरगयवणसंनिभं विगययोहं । सत्तरिसयं जिणाणं, सव्वाअरपूइयं वन्दे स्वाहा ॥३॥
 ॐ भवणवइवाणंमंतर-जोइसवासी विमाणवासी य । जे केवि दुइदेवा, ते सव्वे उवसंभंतु मम स्वाहा ॥४॥
 आ बोलीने अग्यारमो अभिषेक करवो ॥१॥
 ॐ नमोऽहंत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।
 ॐ सल्लिआनलविपविपधर-दुय्यहराजरोगरणभयतः । राक्षसरिपुणगमारी-चौरेतिथापदादिभ्यः ॥१२॥ ह्रीं स्वाहा

नाय अर्हते नमः स्वाहा ।

ॐ तं संति संतिकरं, संतिष्णं स्वभया । संतिं थुणामि जिणं, संतिं विहेउ मे रासानंदियं स्वाहा ॥१॥
 ॐ रोगजलजलणविसहर-चोरारिमिहंदगरणभयाइं । पासजिणनामसंक्रित्तणेण पसमंति सव्वाइं स्वाहा ॥२॥
 ॐ वरकणयसंखविद्धुम-मरगयवणसंनिभं विगययोहं । सत्तरिसयं जिणाणं, राव्वाअरपूइयं वन्दे स्वाहा ॥३॥
 ॐ भवणवइवाणंमंतर-जोइसवासी विमाणवासी य । जे केवि दुइदेवा, ते सव्वे उवसंभंतु मम स्वाहा ॥४॥
 आ बोलीने चारमो अभिषेक करवो ॥१२॥

ॐ रोगजलजलणविसहर-चौरारिमिहंद गयरणभयाइं । पासजिणनामसंकित्तणेण पसमंति सन्वाइं स्वाहा ॥२॥

ॐ वरकणयंसखविद्धुम-सरगयवणसंनिभं विगयमोहं । सत्तरिसयं जिणाणं, सन्वामरपूइयं वन्दे स्वाहा ॥३॥

ॐ भवणवइवाणमंतर-जोइसवासी विसाणवासी य । जे केवि दुद्धदेवा, ते सन्वे उवसमंतु मम स्वाहा ॥४॥

आ बोलीने वीसमो अभिषेक करवो ॥२०॥

२१-नमोऽहंत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

ॐ वीसा पणयालाविय, वीसा पन्नचरी जिणवरिदा । गहभूरवरवसाइणी-घोस्वरणं पणासंतु ॥२१॥ हा स्वाहा ॥

ॐ नमो जिणाणं सरणाणं मंगलाणं लोगुत्तमाणं हा ही है है ही हू हू असिआउसा त्रैलोक्यललामभूताय क्षुद्रोपद्रवशमनाय

अहंते नमः स्वाहा ।

ॐ ते संति संतिकरं, संतिणं सन्वभया । संति थुणासि जिणं, संति विहेउ अे रासानंदियं स्वाहा ॥१॥

ॐ रोग जंजलणविसहर-चौरारिमिहंदगयरणभयाइं । पासजिणनामसंकित्तणेण, पसमंति सन्वाइं स्वाहा ॥२॥

ॐ वरकणयंसखविद्धुम-सरगयवणसंनिभं विगयमोहं । सत्तरिसयं जिणाणं सन्वामरपूइयं वन्दे स्वाहा ॥३॥

ॐ भवणवइवाणमंतर-जोइसवासी विमाणवासी य । जे केवि दुद्धदेवा, ते सन्वे उवसमंतु मम स्वाहा ॥४॥

ए एकवीसमो अभिषेक ॥२१॥

२२-नमोऽहंत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

ॐ सित्तरि पणतीमा विअ, मङ्गी पचेय जिणगणो एमो । वाहिजलजलणहरिकरि-चोरारिमहाभयं हरउ ॥२२॥ ह्रीं स्वाहा ॥
ॐ नमो जिणण सरणण मगलाणं लोगुत्तमाणं हौं ह्रीं हूं ह्रौं ह्रूं असिआउसा त्रैलोक्यललामभूताय धुद्रोपद्रवशमनाय
अर्हते नमः स्वाहा ।

ॐ तं सति संतिकरं , सतिष्ण सच्चभया । सति युणामि जिणं, सति विहेउ मे, रासानदिअ स्वाहा ॥१॥

ॐ रोगजलजलणविसहर-चोरारिमिइंदगयरणभयाइं । पासजिणनामसक्कित्तेण पसमंति सब्वाइ स्वाहा ॥२॥

ॐ वरकणयसत्विद्धुम-मरगयवणसनिभ विगयमोहं । सत्तरिसयं जिणायं, सब्बामरपूह्य चन्दे स्वाहा ॥३॥

ॐ भयणवइवाणमंतर-जोइसवासी विमाणवासी य । जे केवि दुइदेवा, ते सब्बे उवसमत्तु मम स्वाहा ॥४॥

इति चावीसमो अभिपेक ॥२२॥

२३-नमोऽर्हत्तिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

ॐ पणपन्ना य दसेय य, पन्नट्टि तह य चेव चालीसा । खलन्तु मे सरोरं, देवासुरपणमिया मिद्धा ॥२३॥ ह्रीं स्वाहाः

ॐ नमो जिणायं सरणण मगलाणं लोगुत्तमाणं हौं ह्रीं हूं ह्रौं ह्रूं असिआउसा त्रैलोक्यललामभूताय धुद्रोपद्रवशमनाय
अर्हते नमः स्वाहा ।

ॐ तं सति सतिकर, संतिष्ण सच्चभया । सति युणामि जिणं, सति विहेउ मे, रामानंदियं स्वाहा ॥१॥

ॐ रोगजलजलणविसहर-चोरारिमिइंदगयरणभयाइं । पासजिणनामसक्कित्तेण पममति सब्बाइं स्वाहा ॥२॥

॥३॥

सत्तरिसयं जिणाणं, सव्यामरपूइयं वन्दे स्वाहा ॥३॥
ते सव्वे उवसंभंतु मम स्वाहा ॥४॥

॥४॥

ॐ वरकणायसखा ॥२०॥ म-मरणयघणसंनिभं विणयमोहं । सत्तरिसयं जिणाणं, सव्यामरपूइयं वन्दे स्वाहा ॥३॥
ॐ भवणवइत्ताणंभंतर-जोइसवासी विमाणवासी य । जे केवि दुइदेवा, ते सव्वे उवसंभंतु मम स्वाहा ॥४॥
आ तेवीसमो अभिषेक ॥२३॥ त्रैलोक्यस्यामराधीश-मुकुटास्थचिंताम्रये २४ ह्रीं स्वाहा ॥
२४-नमोऽहंत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः । त्रैलोक्यस्यामराधीश-मुकुटास्थचिंताम्रये २४ ह्रीं स्वाहा ॥
ॐ श्रीमते शान्तिनाथाय नमः शान्तिविधात्रिणे । त्रैलोक्यस्यामराधीश-मुकुटास्थचिंताम्रये २४ ह्रीं स्वाहा ॥
ॐ नमो जिणाणं रणणाणं मंगलाणं लेगुत्तमाणं ह्रीं ॥१॥ त्रैलोक्यललामभूताय धुद्रापद्रवशमानाय

अहंते नमः स्वाहा ।

ॐ तं संति संतिकरं, संतिणं रावभया । संति शुणामि जिणं, संति विहेउ मे, रासानंदियं स्वाहा ॥२॥
ॐ रोगजलजाणविसहर-चोरारिभिहंद्गयरणभयाई । पाणजिणनामसंकिचोणेण पसंभति सव्वाइ स्वाहा ॥३॥
ॐ वरगणयसंखविद्धुम-मरणयणलंनिभं विणयमोहं । सत्तरिसयं जिणाणं, सव्यामरपूइयं वन्दे स्वाहा ॥४॥
ॐ भवणवइत्ताणंभंतर-जोइसवासी विमाणवासी य । जे केवि दुइदेवा, ते सव्वे उवसंभंतु मम स्वाहा ॥४॥
ॐ भवणवइत्ताणंभंतर-जोइसवासी विमाणवासी य । जे केवि दुइदेवा, ते सव्वे उवसंभंतु मम स्वाहा ॥४॥

ए चोचीसमो अभिषेक ॥२४॥ ॐ शान्तिः शान्तिकरः श्रीमच्च शान्तिर्दिशतु मे गुरुः । शान्तरेव सदा तेषां, तेषां शान्तिर्गृहे गृहे ॥२५॥ ह्रीं स्वाहा ॥

अहंते नमः स्वाहा ।

ॐ त सति सतिकर, सतिष्ण सब्बमया । सति युष्मि जिण, विहेउ मे रासानदियं स्वाहा ॥१॥

ॐ रोगजलजलणविसहर-चोरारिमिडगयरणभयाइं । पासजिणनामसक्तिणेण पम्ममति सब्बाइं स्वाहा ॥२॥

ॐ वररुणयसखविद्दुम-मरगयघणसनिभं विगयमोह । सत्तरिसय जिणाणं सब्बामरपूइयं वन्दे स्वाहा ॥३॥

ॐ भवणवइवाणमतरजोइसवासी विमाणवासी य । जे केचि दुडुदेवा, ते सब्बे उवसमतु मम स्वाहा ॥४॥

ॐ नमोऽहंते परमेश्वराय चतुर्मुखाय परमेश्चिने दिक्कुमारीपरिपूजिताय देवाधिदेवाय दिव्यशरीराय त्रैलोक्यमहिताय अस्मिन् जन्तुद्वीपे, दक्षिण भरते, मध्यवण्डे, अमुकदेशे, अमुकनगरे, अमुकगृहे बृहत्स्नात्रे स्नात्रस्य कर्तुः कारयितुश्च कद्धि वृद्धि कल्याण कुरु कुरु स्वाहा ॥

ए मत्र भणीने सत्तावीससो अभियेक रसो ।

पछी स्नात्र करी अए प्ररुारी विशेष पूजा करवी, अने आरती मगलद्रीवो रुरीने नैवेद्य दोरुवु, पछी मुहपत्ति लेइने देव वादवा, ।

इरियावही पडिक्की काउमग रुगी उपर लोगसस कहे खमासमण देइ इच्छाकारेण सदिसह भगवन्-चैत्यवदन करं इच्छं कही " ॐ नमः पार्थनाथाय विश्वचिन्तामणीयते " इत्यादि चैत्यवदन कही, नमुत्तुण अरिहन्ताणचेइयाण० १ नोकरानो काउसग रुवो,

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

अर्हस्तनोतु सः श्रेयः श्रियं यद्धयानतो नरैः । अच्येन्द्री सकलाऽत्रैहि रंहसा सहसोच्यत ॥१॥

लोगस्स० सबलोए० १ नोकारनो काउसग ।

ॐ मिति मन्ता यच्छासनस्य नन्ता सदा यदंहिंश्च । आश्रीयते श्रिया ते भवतो भवतो जिनाः पान्तु ॥२॥

पुक्खवरवदी० वंदण० १ नोकारनो काउसग ।

नवतत्त्वयुता त्रिपदी-श्रिता रुचिज्ञानपुण्यशक्तिमता । वरधर्मकीर्तिविद्या-नन्दास्याजैनगीर्जीयात् ॥३॥

सिद्धाणं बु० श्री शान्तिनाथ आराधना० वंदणवक्षिया० १ लोगस्सतो काउसग० नमोऽर्हत्सिद्धा०—

श्रीशान्तिः श्रुतशान्तिः, प्रशान्तिकोऽसावशांतिमुपशान्तिम् ।

नयतु सदा यस्य पदाः, सुशान्तिदाः संतुषन्ति जने ॥४॥

श्रीद्वादशांगी आराध० वंदण० १ नोकारनो का० नमोऽर्हत्सिद्धा०—

सकलार्थसिद्धिसाधन-बीजोपांगा सदा स्फुरदुपांगा । भवतादनुपहृतमहा-तमोपहा द्वादशाङ्गी वः ॥५॥

श्रुतदेवता आराधना० अन्नत्थ० १ नोकारनो० का० नमोऽर्हत्सि०,

वद वदति न वाग्वादिनि, भगवनि कः श्रुतसरस्वति गर्भेच्छुः । रंगत्तरङ्गमतिवर-तरणि-स्तुभ्यं नम इतीह ॥६॥

शासनदेवता आ० अन्नत्थ० नमोऽर्हत्०—

उपसर्गवलयचिलयन-निरता जिनशासनावनैकरताः। द्रुतमिह समीहितकृते, स्युः शासनदेवता भवताम् ॥७॥
समस्तवैयात्रच्च० संतिग० समदिष्टिसमा० अन्तथ० ? नोकारनो का० नमोऽर्हंत०—

सर्वेऽत्र ये गुरुगुणौघनिधे सुवैयात्रुत्पादिकृत्यकरणैकनिबद्धकक्षाः ।

ते शान्तये सह भवन्तु-सुराः-सुरिभिः, सदृष्टयो-निखिलविघ्नविघानदक्षाः ॥८॥

नम्रुत्थुणं जावति चेऽया० जावंतकेवि० स्तवनना स्थाने अजितशान्तिस्तव कहेतु, अन्ते जयवीरराय कहेवा, अने छेछा
जे बलि बाहुला गण्वा छे ते उडालना

पछी पूरला कुम आगल बीजा ४ कुम दाग रहित अने सारा घाटमाला लेइने तेमा चोखा सेर ५, रूपानाणा ४, सोपारी ४,
श्रीफल ४ उपर सूकी नीला पीला मखो ढाकी, गेमाखेरे गधीये, फूलमालाओ पहेरायी, शुद्ध श्रावक कुमारिकाओ पासे उपढावी
जाजने गान्ते श्रीशान्तिपीठे आयी शान्ति कलज पासे थापे, शान्तिदेवीने योग्य नैवेद्य धरीये, क्षीर १, करंवी २, घाट-लापसी ३,
सुहाली ४, २? बडा, ५ पचधारी लापसी ६, लाडवा मगदलना ९, ७ दधिपात्र ? ए सर्वबलि नैवेद्यना पात्रो आगे ढोइये

पछी आरती मगलदीजो करी शान्ति उद्घोषणा पूर्वक देवी देवता क्षेत्रदेवता पूजीने देवदहन करवु, इरियावही पढिकमी
? लोगस्सनो का० चैत्यवदन, नम्रुत्थुण० स्तवनने स्थाने सत्तकर कहेतु, जयवीरराय० ? नोकारनो का० नमोर्हंतु स्तुति,
कल्याणकन्द, इच्छाकारेण सदिसह भगवन क्षेत्रदेवता आराधनार्थ करेमि-का० ? लोगस्सनो-का० नमोर्हंतु

यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रिया । सा क्षेत्रदेवता नित्यं, भूयान्नः सुखदायिनी ॥१॥

भवनदेवयाए करेमि काउसगं अत्रथ, १ लोगस्सनो काउसगं नमोर्द्धव० स्तुति—
विदधातु भवनदेवी, शिवं सदा सर्वसाधुनाम् ॥२॥

ज्ञानादिगुणयुतानां, नित्यं स्वाध्यायसंयमरतानाम् । विदधातु भवनदेवी, शिवं सदा सर्वसाधुनाम् ॥२॥
संतिदेवयाए करेमि का० १ नोकारनो का० नमो० स्तुतिः—
श्रीचतुर्विधसंघस्य, शासनोन्नतिकारिणी । शिवशान्तिकरी भूयात्, श्रीमती शान्तिदेवता ॥३॥

शुद्धोपद्रव उपशमात्रणि करेमि का० अन्नथ० १ नोकार, १ उपसर्गहर, १ लोगस्स पूरो एत्रणनो काउ० नमोर्द्धव० स्तुतिः—
सर्वे यक्षाग्निक्वाद्या ये, वैयावृत्यकरा जिने । क्षुद्रोपद्रवसंघातं, ते द्रुतं द्रावयन्तु नः ॥१॥

उपर प्रकट पूरो नोकार कहेवो.
पछी ग्होटी शान्तिनो पाठ वोळतां न्हवण जले करी अखंड धाराथी शांतिकलश भरी, ते उपर नालियेर मूकी, तास्तो (नीळं
या पीळं वस्त्र) वींटी सोहासण स्त्री उपाडे, वाजते गाजते गृहस्थने घेर पधरावीये, ते पछी विसर्जन करे. पछी नवण पाणी मंत्री
ते कलश लेइ घरमां घरनी बाहिर वाजा वाजते धारा देवी.

इति श्रीसकलचंद्रगणिकृतः श्रीशान्तिस्नात्रविधिः संपूर्णः ॥

१६-तीर्थयात्रा शान्तिकम्

तीर्थयात्रा प्रयागद्य-दिवसे यो विधीयते । जिनस्नात्रविधिस्तीर्थ-यात्रा शान्तिकमुच्यते ॥१७७॥

भा०टी०—तीर्थयात्राए निरुलवाना दिवसे जे प्रयाण पूर्व जिनस्नात्र विधि करवामा आवे छे ते ' तीर्थयात्राशान्तिक कहेवाय छे

संघ तीर्थयात्रा निमित्ते प्रयाण करे ते दिवसे प्रथम शुद्ध जल मगामी, देहरासराभा भूमि शुद्ध करी, सिद्धासन उपर श्रीशान्ति-जिननी पचत्तोर्यी अथवा चोरीती स्यापी आगे श्रीसिद्धचक्रनी स्थापना करवी, अने पछी कुमारिका अने ४ स्नात्रकारोए मली कुसुमाञ्जलि चढावना पूर्वक शान्तिकरुलग भणवा पूर्वक स्नात्र पूजा भणामवी.

ते पछी स्नात्रकारोए हाथमा कुंकुम, चदन, पुष्प, लेइने पूर्व समुख उभा रहीने—

“ॐ क्षौं क्षेत्रपालाय नमः । ॐ ह्रीं दिस्पालेभ्यो नमः । ॐ ह्रीं प्रहेभ्यो नमः । ॐ ह्रीं षोडशमहादेवीभ्यो नमः । ॐ ह्रीं जिनशासनदेवीदेवभ्यो नमः । ”

आ पाठ बोली पुष्पाञ्जलि नाखवी, एज प्रमाणे दक्षिण, पश्चिम, उत्तर दिशा संमुख उभा रहीने उपरनो पाठ बोली बोलीने पुष्पाञ्जलिओ नाखवी, केमर चदनना न्यारे दिशाओमा छाटा नाखवा, धूप उखेवयो.

ते पछी च्यार कलशिया सोनाना रकं अने दूध युक्त पचायते मरीने निर्दग अने अखंड शरीरवाला स्नात्रकारो हाथमा लेइ उभा रहे, त्रिधिकार नीचे प्रमाणे शान्ति घोषणा करे—

ॐ त सति मनिकर मतिष्ण मन्वभया । सति शुणामि जिणं सति विहेउ से स्वाहा ॥१॥

ॐ रोग जलजलणविसहर-चौरारिसइद्गयरणभयाइ ।

पासजिणानामसकित्तणेण पसमति मन्वाइ स्वाहा ॥ २ ॥

ॐ वररुणपसखविद्धुम-मरकयधणसंनिभं विगयमोह । सत्तरिसय जिणाणं सवामरपूइअं वन्दे स्वाहा ॥३॥

ॐ भवणवडवाणमन्तर-जोइसवासी विमाणवासो अ । जे केवि डुइदेवा, ते सव्वे डवसंमंतु मम स्वाहा ॥४॥

श्रीमन्मन्दरमस्तके शुचिजलैयति सदर्भाक्षते । पीठे मुक्तिवर वित्राय रुचितत्पादपुष्पस्रजा ॥

इन्द्रोऽह निजभूषणार्थममलं यज्ञोपवीतं दधे । सुद्राकरुणशोचराण्यपि तथा जैनाभियेकोत्सवे ॥१॥

विश्वेश्वर्यैरुवर्यान्निदशपतिशिर.शेखरसृष्टपादा', प्रक्षीणाऽशेषदोषा' सकलगुणगग्राम धामान एव ।

जायन्ते जन्तवो यचरणसरसिजठ्ठद्रूपजान्विताश्री-अहंन्त स्नात्र काले कलशजलभृतरैभिराग्लावयेत्सम् ॥२॥

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं अहंते तीर्यादकेन अष्टोत्तरशतौपथिसहितेन षष्टिलक्षाधिकैककोटिप्रमाण-

कलशैः स्नपयामि शान्तिं तुष्टिं पुष्टिं कुरु र स्वाहा ।”

आ पाठ गौली स्नानाभिषेक करुओ, वांजितनादपूर्वक अभिषेक करी अष्टात्र पूजा करी आत्ती मंगलदीवो करवो,

आगे नैवेद्य दोवु,

ए पछी इर्यावही प्रतिक्रमण पूर्वक नीचे प्रमाणे ८ युए देववंदन करे

ॐ नमः पार्थनाथाय विश्वचिन्तामणीयते । ॐ धरणेन्द्रचैरोष्ठ्या पद्मादेवीयुताय ते ॥१॥
 शान्तिस्तुष्टिमहापुष्टि-धृति कीर्तिविधायिने । ॐ ह्रीं द्विड् व्यालवेताल-सर्वाधिब्याधिनाशिने ॥२॥
 जयाऽजिताऽऽख्या विजयाख्यापराजितयाऽन्यतः । दिशांपालेश्रैह्वयक्षैर्विद्यादेवीभिरन्वितः ॥३॥
 ॐ असिआउसाय नमस्तत्र त्रैलोक्यनाथताम् । चतुःपष्टिः सुरेन्द्रास्ते भासन्ते छत्रचामरैः ॥५॥
 श्रीशंखेश्वरमण्डन-पाद्वर्जिन ! प्रणतकल्पतरुकल्प चूरय दुष्टघातं, पूरय मे वाञ्छितं नाथ ॥५॥
 जंक्रिचि० नष्टरुणं० अरिहतं चैइआणं० करेमि का० वंदणवचि० ? नोका० नमोऽ० स्तुति-
 अहस्तनोतु स श्रेयः-श्रियं यद्व्यानतो नरैः । अप्येन्द्री सकलाऽज्ञेहि रंहसा सहसौच्यत ॥१॥
 लोगस्र सव्वलोए० अरिहत० वंदण० अन्नत्थ० ? नो० स्तुति-
 ॐ भिमिति मन्ता यच्छासनस्य नन्ता सदा यदंदीश्च । आश्रीयते श्रिया ते भवतो भवता जिनाः पान्तु ॥२॥
 पुकखरवदी० वंदण० अन्नत्थ० ? नो० स्तुति-
 नवतत्त्वयुता त्रिपदी-श्रिता ऋचिज्ञानपुण्यशक्तिमता । वर्यमकीर्तनविद्या-नन्दाऽऽस्या जैनगीर्जीयात् ॥३॥
 सिद्धानं० बुद्धाणं० श्रीशान्तिनाथ आराधनार्थं करेमि का० वंदण० ? लोगस्र० नयोऽह्व० स्तुति०-
 श्रीशान्तिः श्रुतशान्तिः अज्ञान्तोसावशान्तिसुप्रशान्ति ।
 नयतु सदा यस्य पदाः सुशान्तिदाः संतुपन्ति जने ॥ ४ ॥

श्रीद्वादशाङ्गी आराधनार्थं करेमि का० वदण० १ नो० नमो० स्तुति—
मन्त्रकार्थमिद्विसाधनधीजोपाङ्गा सदा स्फुरदुपाङ्गा । भवतादनुपहतमहातमोपहा द्वादशाङ्गी वः ॥५॥

श्रुतदेवताये करेमि का० अन्नत्य० १ नो० नमो० स्तुति—

वद वदति न वाग्वादिनि भगवति कः श्रुतसरस्वतिगमेच्छुः । रङ्गतरङ्गमतिवर तरणिस्तुम्य नम इतीह ॥६॥

शासनदेवतायै करेमि का० अन्नत्य० १ नो० नमो० स्तुति—

उपसर्गचलयविलयन-निरताजिनशासनाचनैकरताः । द्रुतमिहसमीहितकृते स्युः शासनदेवता भवताम् ॥७॥

समस्तवैआचचारण० सन्ति० सम्म० अन्नत्य० १ नो० नमो० स्तुति—

सधेऽत्र ये गुरुगुणौघनिधे सुवैयावृत्त्यादिकृत्यकरणैकानिबद्धकक्षाः ।

ते शान्तये सह भवन्तु सुराः सुरीभिः, सद्दृष्टो निखिलविघ्नविघातदक्षाः ॥८॥

नोकार पूर्ण कही वेसीने नह्नुत्थुणं, जावति, अजितशान्ति स्तवन कही जयवीरराय कहेवा,

ते पछी इर्यान्ही पडिकमी काउसण १ लोगससो करी उपर लोगस प्रकट कही खमासमण देह क्षेत्रदेवतायै करेमि का०

१ लोग० नमो० स्तुति—

यस्याः क्षेत्र समाश्रित्य साधुभिः साध्यते क्रिया । सा क्षेत्रदेवता नित्यं भूयान्नः सुखदायिनी ॥१॥

भयनदेवतायै करेमि० का० अन्नत्य, १ नो० नमो० स्तुति—

॥२॥

विद्यातु भुवनदेवी, शिवं सदा सर्वसाधुनाम् ॥२॥
 ज्ञानादिगुणयुतानां, नित्यं स्वाध्यायसंयमस्तानाम् । विद्यातु भुवनदेवी, शिवं सदा सर्वसाधुनाम् ॥२॥
 शान्तिदेवतायै करेमि का० अन्नस्थ० १ लो० नमो० स्तुति—
 शान्तिदेवतायै करेमि का० अन्नस्थ० १ लो० नमो० स्तुति—
 उन्मृष्टरिष्टदुष्ट-ग्रहगतिदुःखप्रदुर्निमित्तादि । संपादितहितसंपन्नामग्रहणं जयति शान्तेः ॥३॥
 उन्मृष्टरिष्टदुष्ट-ग्रहगतिदुःखप्रदुर्निमित्तादि । संपादितहितसंपन्नामग्रहणं जयति शान्तेः ॥३॥
 शुद्धोपद्रवशमावणी करेमि का० अन्नस्थ० १ लो० १ उवसण० ए व्रणनो काउसग करी नमोऽहं कही स्तुति—
 शुद्धोपद्रवशमावणी करेमि का० अन्नस्थ० १ लो० १ उवसण० ए व्रणनो काउसग करी नमोऽहं कही स्तुति—
 सर्वे यक्षांस्त्रिकाद्या वै वैद्याद्युत्पकरा जिने । शुद्धोपद्रवसंघातं, ते द्रुतं द्राचयन्तु नः ॥४॥
 सर्वे यक्षांस्त्रिकाद्या वै वैद्याद्युत्पकरा जिने । शुद्धोपद्रवसंघातं, ते द्रुतं द्राचयन्तु नः ॥४॥
 उपर १ नोकार पूर्ण कहेनो.
 ए पछी स्नात्रजलं कलशोमां भरी, म्हेंटी त्रांवाकुंडीमां स्वस्तिक करी, बुद्धछान्तिनो अखलित पाठ बोलतां वे कलशोवडे
 ए पछी स्नात्रजलं कलशोमां भरी, म्हेंटी त्रांवाकुंडीमां स्वस्तिक करी, बुद्धछान्तिनो अखलित पाठ बोलतां वे कलशोवडे
 अखण्ड धाराथी त्रांवाकुंडीमां लेतुं. शान्ति पूर्ण बोलहं हे त्यां सुधी धारा चालु राखवी. शान्तिपाठमां 'श्रीब्रह्मलोकस्य शान्ति-
 भंगु' ए पछी श्री संघनायक अमुक (संघपति) नाम होय तो बोलुं' स्व शान्तिभंगु, श्रीसंघजनस्य 'शान्तिभंगु
 आटलो' पाठ वधारे बोलवो.
 आटलो' पाठ वधारे बोलवो.
 शान्ति पाठ बोलिने कुंडीमां लीवेल जलं मस्तके लगाडुं. ए पछी क्षीर, कांडो, वाट, पंचधारी लापसी, वडा, सुंहाली २१
 मगदना लाडु २०, देहि पाव ए सर्व एक थालमां मूकी प्रभु आंगल होवा, पछी संघ मलीने संघवीने तिलक करे. संघपति पण
 संघर्ष संमान-सार्थिक वास्तव्यादिक करे.
 शुभ लग्नसमयमां चन्द्रनाडीमां स्वर वहेतो होय ते वखते शुभ शकुने पोताना घरथी प्रयाण मुहूर्त करुं. नगरनी वधार

कल्याण-
कलिका
खं० २ ॥

॥२२२॥

ડેરાદિ ત્યાં નિત્ય શુદ્ધ વેપ પહેરી, સાધુ અથવા શ્રાવકે વન્ને ટક જિનમંદિસ્સા સાત સ્મરણનો પાઠ રુવો. વહી જે દિવસે પ્રસ્થાન કરે તે દિવસે સયવી પોતે અથવા પોતાના પરિવારમાં જે માણસ પઠિત અને ચતુર હોય તેણે ૧ નોકાર ૨ લોગસ્સ, ૩ ઉવસગઘર ૬ ત્રણની ફૂલ ગુથળી ૧ નોકારવાલી ગણતરી

॥ इति तीर्थयात्रा शान्तिक विधिः ॥

૧૭-ગ્રહશાન્તિકમ્

ગ્રહશાન્તિમાઘં સ્યાદ્, ગ્રહશાન્તિકરં પરમ્ । દ્વિતીયં ગોચરગ્રહ-પીઢાયાઃ પરિહારકમ્ ॥૧૭૮॥

આંટી૦—વે પ્રકારના ગ્રહશાન્તિકોમાં પહેલું સામાન્ય રીતે ગ્રહચાતિ કરનાર છે, બ્યારે ઘીજું ગોચરથી પીઢતા ગ્રહોની પીઢા શાંતિ કરનાર ગ્રહશાન્તિક છે

પ્રથમ પૂર્વ પ્રતિષ્ઠિત જિન પ્રતિમા સિંહાસન ઉપર સ્થાપન કરી તેની પૂજા કરવી. તે પછી તેની આગલ શુદ્ધ ભૂમિમાં ચન્દનનો, અથવા સેવનનો પાટલો સ્થાપીને તેને ચન્દનના રસનું વિલેપન કરવું, અને સૂકયા પછી તે ઉપર ગ્રહો આલેખવા, અને પૂજવા.

ગ્રહો-કેમર ચન્દન ૧ ચંદન ૨ કેસર ૩ ગોરોચન ૪ કેસર ૫ ચંદન ૬ કસ્તૂરી ૭ કસ્તૂરી ૮ કુંકુમ ૯ આ દ્રવ્યો વહે અનુક્રમે આલેખવા અને પૂજવા

ગ્રહોને રક્ત કળોર, ૧ કુમુદ ૨ જાદુલ ૩ ચંપક ૪ સેવંતી ૫ જાદ ૬ વકુલ ૭ યા દમનક ૭ કુન્દ ૮ પાચ વર્ણોના પુષ્પો અનુક્રમે ચઢાવનાં.

ग्रहोने-गुड भात १ क्षीर २ कंसार अथवा लापसी ३ घेवर ४ दहिनी कसमो ५ घी भात ६ खीचडी ७ उडदनी लाह
८ उडद या तलनी लाह ९ आ नैवेद्य अनुक्रमे चढाववां.

ग्रहोने द्राक्षा १ सेलडी २ सोपारी ३ नारंगी ४ जंबेरी ५ बीजोरं ६ खजूर ७ नालियेर ८ दाडिम ९ आ फलो अनुक्रमे
चढाववां.

ग्रहोने-कमलवर्ण-गुलाबी १ श्वेत २ रक्त ३ नीला ४ पीत ५ श्वेत ६ कृष्ण ७ कृष्ण ८ कृष्ण ९ आ वर्णना १-१ हाथना
वस्त्रखण्डो ओढाडवां.

प्रत्येक ग्रहोने मंत्र बोली उपर्युक्त द्रव्यो चढाववां, अने पछी स्तोत्रवडे ते ते ग्रहनी श्रार्थना करवी,

ग्रह मंडलनां स्थान—

मध्ये तु भास्करं विद्याच्छशिनं पूर्वदक्षिणे । दक्षिणे लोहितं विद्याद्, बुधं पूर्वोत्तरेण तु ॥१॥
उत्तरेण गुरुं विद्यात्, पूर्वैणव तु भार्गवम् । पश्चिमेन शनिं विद्यात्, राहुं दक्षिणपश्चिमे ॥२॥
पश्चिमोत्तरतः केतुः, स्थाप्यश्च किल तंदुलैः । मार्तण्डे मण्डलं वृत्तं, चतुरस्रं निशाकरे ॥३॥

ग्रह मण्डलोना आकार—

महीपुत्रे त्रिकोणं स्याद्, बुधे वै चाणसन्निभम् । गुरौ तु पट्टिकाकारं, पंचकोणं तु भार्गवे ॥४॥
धनुराकृति मन्दे तु, शूर्पाकारं तु राहवे । केतवे तु ध्वजाकारं, मण्डलानि नचैव तु ॥५॥

श्रहोना मुख—

शुक्राको प्राइसुवौ जेयी, गुरुसौम्याचुदइसुवौ । प्रत्यइसुवः शनिः सोमः, शेपाथ दक्षिणामुखाः ॥६॥

भा०टी०—मध्यमा सूर्य, अत्रिकोणमां चन्द्र, दक्षिणमा मंगल, ईशानमा बुध, उत्तरमा गुरु, पूर्वमा शुक्र, पश्चिमा शनि, नैऋत्यमां राहु अने वायव्यमा केतुनी स्थापना तादुलो ' चावलो ' गडे करवी

सूर्यतुं मडल गोलकार, चन्द्रतुं चोरम, मंगलतु त्रिकोण, बुधतु गणाकार, गुरुतु पट्टिना आकारतुं, शुक्रतुं पचक्रोण, शनितुं वतुपाकार, राहुतु सूर्याकार, अने केतुतुं मंडल घजाकार होय छे.

सूर्य शुक्र पूर्वमुख, बुध गुरु उत्तरमुख, चन्द्र शनि पश्चिममुख अने शेष मंगल, राहु, केतु, आ ग्रहो दक्षिणामुखवाला होय छे. प्रतिष्ठा अट्टाहि महोत्सव आदिमा उपरोक्त दिशाओमा ग्रहोनी पाटला उपर मण्डलो आलेखनी, पछी हाथमा पुष्पाञ्जलि लेइ-

जगद्गुरुं नमस्कृत्य, श्रुत्वा मद्गुरुभक्तिम् । ग्रहशान्ति प्रवक्ष्यामि, लोकाना सुखहेतवे ॥१॥

जिनेन्द्रः खेचरा ज्ञेया, पूजनोया विधिक्रमात् । पुष्पैर्विलेपनैर्धूपैर्नैवेद्यैस्तुष्टिहेतवे ॥२॥

पद्मप्रभस्य मार्तण्ड-श्चन्द्रश्चन्द्रप्रभस्य च । वासुपूज्यो महीपुत्रो, बुधस्याऽष्टौ जिनेश्वरा ॥३॥

विमलानन्तधर्माः, शान्ति कुन्धुर्नमिस्तथा । बद्धमानो जिनेन्द्राणां, पादपद्मे बुधं न्यसेत् ॥४॥

ऋषभाजितसुपाशर्वा, अभिनन्दनशीतलौ । सुमतिः सभवः स्वामी, श्रेयांसश्च बृहस्पतिः ॥५॥

सुविधः ऋथितः शुक्रः, सुत्रतस्य शनैश्चरः । नेमिनाथो भवेद्दराहुः, केतुः श्रीमद्विषाश्वयोः ॥६॥

॥७॥

जन्मलग्ने च राशौ च पीडयन्ति तदा ग्रहाः । तदा संपूजयेद् धीमान्, खेचरैः सहितान् जिमान् ॥७॥

वर्णसदृशदानैश्च, वांसोभिर्दक्षिणान्वितैः ॥८॥

गंधपुष्पादिभिर्घृषैर्नैवेद्यैः फलसंयुतैः । वर्षसदृशदानैश्च, वांसोभिर्दक्षिणान्वितैः ॥९॥

गंधपुष्पादिभिर्घृषैर्नैवेद्यैः फलसंयुतैः । वर्षसदृशदानैश्च, वांसोभिर्दक्षिणान्वितैः ॥१०॥

आदित्यसोममंगल-बुधगुरुशुक्राः शनैश्चरो राहुः । केलुप्रसुखाः खेटा, जिनपतिपुरतोऽवतिष्ठन्तु ॥११॥

अदित्यसोममंगल-बुधगुरुशुक्राः शनैश्चरो राहुः । केलुप्रसुखाः खेटा, जिनपतिपुरतोऽवतिष्ठन्तु ॥११॥

जिजानामग्रतः स्थित्वा, ग्रहाणां तुष्टिहेतवे । नमस्कारस्तवं भक्त्या, जपेद्योत्तरं शतम् ॥१२॥

भद्रबाहुर्बुवाचैर्मं, पंचमः श्रुतकेवली । विद्याप्रवातः पूर्वार्धे, ग्रहशान्तिविधिरतवम् ॥१३॥

भद्रबाहुर्बुवाचैर्मं, पंचमः श्रुतकेवली । विद्याप्रवातः पूर्वार्धे, ग्रहशान्तिविधिरतवम् ॥१३॥

आ ग्रहशान्तिस्तत्रतो पाठ बोलीने, पुष्पांजलि ग्रहोना पाडला उपर नाखवी, ते पळी म्योदिक एक एक ग्रहनी नीचेनी

आ ग्रहशान्तिस्तत्रतो पाठ बोलीने, पुष्पांजलि ग्रहोना पाडला उपर नाखवी, ते पळी म्योदिक एक एक ग्रहनी नीचेनी

विधिथी पूजा करवी.

१ म्योपूजा—ॐ वृणि वृणि नमः श्रीसूर्योय सहस्रकिरणाय रत्नादेवीकान्ताय वेदगर्भाय यमयमुनाजन-

काय जगत्कर्मसाक्षिणे पुण्यकर्मप्रभावकाय पूर्वदिग्धीशाय रुद्रिकोज्वलाय रक्तवस्त्राय कमलहस्ताय सप्ताश्व-

रथवाहनाय श्रीसूर्यं सायुधः सवाहनः सपरिच्छदः इह ग्रहशान्तिके आगच्छ आगच्छ इदमर्घ्यं पाचं वलि

आचमनीयं गृहाण गृहाण संनिहितो भव भव स्वाहा । जलं गृहाण गृहाण, गंधं, पुष्पं, अक्षतान्, फलानि, सुद्रां,

धूपं दीपं, नैवेद्यं गृहाण गृहाण, सर्वोपचारान् गृहाण गृहाण, शान्तिं कुरु २ तुष्टिं कुरु २ पुष्टिं कुरु २ रुद्रिं

वृद्धिं सर्वसमीहितं देहि २ स्वाहा ।

आ मंत्र बोलीने म्योना मंडल उपर जल, गंध, पुष्प, अक्षत, फल, सुद्रा, धूप दीप, नैवेद्य, आदि द्रव्यो चढावतां. अने

अन्तर्मा नीचेना स्तोत्रवडे प्रार्थना करवा

सूर्यस्तोत्र—

अदितेः कुक्षिसम्भूतो, भरण्या विश्वपावनः । काश्यपस्य कुलोत्संसः, कलिङ्गविपयोद्भवः ॥१॥

रक्तवर्णः पद्मपाणि मन्त्रमूर्तिखयीमयः । रत्नादेवीजीवितेशः, ससाध्वोरुणसारथिः ॥२॥

एकचक्रथारूढः, सहस्रांशुस्तमोपहः । ग्रहनाथ उर्ध्वसुवः, सिंहराशौ कृतस्थितिः ॥३॥

लोकपालोऽनन्तमूर्तिः, कर्मसाक्षीत्नान्तनः । सस्तुतो बालग्विल्यैश्च, विभ्रहर्ता दरिद्रहा ॥४॥

तत्सुता यमुनावापी-भद्रा-यमशनैश्चराः । अश्विनीकुमारी पुत्रौ, निगाहा दैत्यसुदनः ॥५॥

पुन्नागकुक्षुमैलेपै, रक्तपुष्पैश्च धूपनैः । द्राक्षाफलैर्गुंडान्नेन, प्रीणितो दुरितापहः ॥६॥

पद्मप्रभजिनेन्द्रस्य, नामोच्चारण भास्कर । शान्तिं तुष्टिं च पुष्टिं च, रक्षा कुरु कुरु द्रुतम् ॥७॥

सूर्यो द्वादशरूपेण, माठराविभिरावृतः । अशुभोऽपि शुभस्तेषा, सर्वदा भास्करोग्रहः ॥८॥

२ चन्द्रपूजा—ॐ चच नमश्चन्द्राय शंभुशेखराय षोडशकलापरिपूर्णाय तारागणाधीशाय आग्नेयदिग्धीशाय

अमृतमयाय सर्वजगत्पोषणाय श्वेतशरीराय श्वेतवस्त्राय श्वेतदशवाजिवाहनाय सुधाकुम्भहस्ताय श्रीचन्द्र

सायुधः सवाहनः सपरिच्छदः इह ग्रहशान्तिके आगच्छ आगच्छ इदमर्घ्यं पाप बलिं आचमनीयं गृहाण गृहाण

सनिहितो भव २ स्वाहा । जलं गृहाण २ गंधं पुष्पं, अक्षतान्, फलानि, मुद्रा, धूपं दीप, नैवेद्यं गृहाण २

”

सर्वोपचारान् गृहाण २ शान्तिं कुरु २ तुष्टिं कुरु २ पुष्टिं कुरु २ ऋद्धिं वृद्धिं सर्वसमीहितं देहि २ स्वाहा २

आ मंत्र भणी चन्द्र मंडल उपर चंद्रयोग्य द्रव्यो चढावां. पछो नीचेनो स्तोत्रपाठ करी चन्द्रनी प्रार्थना करवी.

चन्द्रस्तोत्र—

आ मंत्र भणी चन्द्र मंडल उपर चंद्रयोग्य द्रव्यो चढावां. पछो नीचेनो स्तोत्रपाठ करी चन्द्रनी प्रार्थना करवी.

क्षीरसागरसंभवः । जातो यवनदेशे च, चित्रायां समदृष्टिकः ॥१॥

अत्रिनेत्रसमुद्भूतः, क्षीरसागरसंभवः । जातो यवनदेशे च, चित्रायां समदृष्टिकः ॥१॥

श्रेतवर्णः सदाशीतो, रोहिणीप्राणवल्लभः । नक्षत्र औपधिनाथ, तिथिवृद्धिक्षयंकरः ॥२॥

श्रेतवर्णः सदाशीतो, रोहिणीप्राणवल्लभः । नक्षत्र औपधिनाथ, तिथिवृद्धिक्षयंकरः ॥२॥

मृगाङ्घ्रोऽमृतकिरणः, शान्तो वासुकिरूपभृत् । संसुशीर्षकृतावासो, जनको बुधरेवयोः ॥३॥

मृगाङ्घ्रोऽमृतकिरणः, शान्तो वासुकिरूपभृत् । संसुशीर्षकृतावासो, जनको बुधरेवयोः ॥३॥

अचितश्चन्दनैः श्वेतैः, पुष्पैर्धूपवरेशुभिः । नैवेद्यपरमाद्येन, प्रीतोऽमृतकलामयः ॥४॥

अचितश्चन्दनैः श्वेतैः, पुष्पैर्धूपवरेशुभिः । नैवेद्यपरमाद्येन, प्रीतोऽमृतकलामयः ॥४॥

चन्द्रप्रभञ्जिनाधीश-नाम्ना त्वं भगणाधिप । प्रसन्नो भव शान्तिं च, कुरु रक्षां जयश्रियम् ॥५॥

चन्द्रप्रभञ्जिनाधीश-नाम्ना त्वं भगणाधिप । प्रसन्नो भव शान्तिं च, कुरु रक्षां जयश्रियम् ॥५॥

२ मंगलज्ञा—ॐ ह्रीं हूं हंसः नमः श्रीमंगलाय दक्षिणदिग्धीशाय विदुस्रवर्णाय रत्नाम्बराय भूमिस्थिताय

२ मंगलज्ञा—ॐ ह्रीं हूं हंसः नमः श्रीमंगलाय दक्षिणदिग्धीशाय विदुस्रवर्णाय रत्नाम्बराय भूमिस्थिताय

अचितश्चन्दनैः श्वेतैः, पुष्पैर्धूपवरेशुभिः । नैवेद्यपरमाद्येन, प्रीतोऽमृतकलामयः ॥४॥

मगलस्तोत्र—

भौमो हि मालवे जातः, आपाढायां धरासुतः । रक्तवर्णो उर्ध्वदृष्टिर्नर्वाचिस्साक्षको बली ॥१॥

प्रीतः कुङ्कुमलेपेन विद्रुमैश्च विभूषणैः । पूगैर्नैवेद्यकासारैः, रक्तपुष्पैः सुषुजितः ॥२॥

सर्वदा वासुपूज्यस्य, नाम्नासौ शान्तिकारकः । रक्षां कुरु धरापुत्र !, अशुभोऽपिशुभो भव ॥३॥

४ बुधपूजा—ॐ ऐं नमः श्रीबुधाय उत्तरदिग्धीशाय हरितवर्णाय कलहसवाहनाय पुस्तकहस्ताय श्रीबुध ।

सायुधः सवाहनः सपरिच्छद इह ग्रहशान्तिके आगच्छ २ इदमर्घ्यं पाद्यं बलि आचमनीय गृहाण २ सनि-
हितो भव भव स्वाहा । जल गृहाण गंध, पुष्पं, अक्षतान्, फलानि, सुद्रा, धूप दीपं, नैवेद्य गृहाण गृहाण
सर्वोपचारान् गृहाण २ शान्ति कुरु २ तुष्टि कुरु २ ऋद्धि वृद्धि सर्वसमीहितं देहि देहि स्वाहा ।

आ मंत्र गेली बुधना मडल उपर चपक पुष्य नारगी, घेनर आदि बुधोपभोग्य द्रव्यो चढावीने नीचेना स्तोत्रयी बुधनी
प्रार्थना करयी

बुधस्तोत्र—

मगधेषु घनिष्ठया, पंचाचि. पीतवर्णभृत् । कदाक्षदृष्टिकः श्यामः, सोमजो रोहिणीभवः ॥१॥

कर्कोटरूपो रूपाढयो, धूपयुष्प्यानुलेपनैः । दुग्धाक्षैर्वरनारिङ्गैस्तपितः सोमनन्दनः ॥२॥

विमलानन्तघर्माराः, शान्तिः कुयुर्नमिस्तथा । महावीरादिनामस्थः, शुभो भूयात् सदा बुधः ॥६॥

नैवेद्य गृहाण २ सर्वोपचारान् गृहाण २ शान्तिं कुरु २ तुष्टिं कुरु २ पुष्टिं कुरु २ ऋद्धिं वृद्धिं सर्वसमीहितं
देहि देहि स्वाहा ।

आ मंत्र बोलवा पूर्वक शुकना मण्डलने उपयुक्त द्रव्योवडे आलेखवु, पूजवुं अने पुष्प फलादि द्रव्यो चढाववा, अन्तमा
शुकस्तोत्रवडे प्रार्थना करवी.

शुकस्तोत्र—

शुकः श्वेतो महायज्ञः, षोडशर्षिः कटाक्षदृक् । महाराष्ट्रेषु उषेष्ठायाऽमथाऽभूत् भृगुनन्दनः ॥१॥

दानवाच्यो दैत्यगुरुर्विद्यासजीवनीनिधिः । सुगन्धचन्दनाल्पैः, सिनपुष्पैः सुपूजितः ॥२॥

वृत्तनैवेद्यजम्बीरैस्तर्पितो भार्गवो ब्रह्मः । नाम्ना सुविधिनाथस्य, हृष्टोऽरिष्टनिवारकः ॥३॥

शनिपूजा—ॐ शः नमः शनैश्चराय पश्चिमदिग्धीशाय नीलदेहाय नीलाम्बराय परशुहस्ताय कमठवाहनाय
श्रीशनैश्चर ! सायुधः सवाहनः सपरिच्छद. इह ब्रह्मशान्तिके आगच्छ आगच्छ, इदमर्घ्यं पात्रं बलिं आचमनीयं
गृहाण गृहाण सन्निहितो भव भव स्वाहा । जल गृहाण गृहाण गध, पुष्पं, अक्षतान्, फलानि, सुब्रां, घृप दीप,
नैवेद्य गृहाण गृहाण सर्वोपचारान् गृहाण २ शान्तिं कुरु २ तुष्टिं कुरु २ पुष्टिं कुरु २ ऋद्धिं वृद्धिं सर्वसमी-
हितं देहि २ स्वाहा ।

आ मंत्र भणी शनिना मंडल उपर शनियोग्य द्रव्यो चढाववा अने शनिस्तोत्र भणवा शनिनी प्रार्थना करवी.

ज्ञानिस्तोत्र—

शंखः पिङ्गलकेशकः ॥१॥

नीलवर्णः सुराष्ट्रायां, शंखः पिङ्गलकेशकः ॥१॥

रविपुत्रो मन्दगतिः, पिप्पलादनसंस्कृतः । रौद्रवृत्तिरथोद्वष्टिः, स्तुतो दशरथेन च ॥२॥

नीलपत्रिकया प्रीत-स्तैलेनकुनलेपनः । उत्पत्तिः काचकासारे, तिलदानेन तर्पितः ॥३॥

शुनिसुव्रतनाथस्य, आख्यया पूजितः सदा । अशुभोऽपि नु श्यात्, सप्तविंशः सर्वकासदः ॥४॥

शुनिसुव्रतनाथस्य, आख्यया पूजितः सदा । अशुभोऽपि नु श्यात्, सप्तविंशः सर्वकासदः ॥४॥

शुनिसुव्रतनाथस्य, आख्यया पूजितः सदा । अशुभोऽपि नु श्यात्, सप्तविंशः सर्वकासदः ॥४॥

शुनिसुव्रतनाथस्य, आख्यया पूजितः सदा । अशुभोऽपि नु श्यात्, सप्तविंशः सर्वकासदः ॥४॥

शुनिसुव्रतनाथस्य, आख्यया पूजितः सदा । अशुभोऽपि नु श्यात्, सप्तविंशः सर्वकासदः ॥४॥

शुनिसुव्रतनाथस्य, आख्यया पूजितः सदा । अशुभोऽपि नु श्यात्, सप्तविंशः सर्वकासदः ॥४॥

शुनिसुव्रतनाथस्य, आख्यया पूजितः सदा । अशुभोऽपि नु श्यात्, सप्तविंशः सर्वकासदः ॥४॥

राहुः श्रीनेमिनाथस्य, पादपद्मेऽतिभक्तिमान् । पूजितो ग्रहकल्लोलः, सर्वकाले सुखावहः ॥३॥

नेत्रपूजा—ॐ नम श्रीकेतवे राहुप्रतिच्छन्दाय उपामाङ्गाय श्यामवस्त्राय पद्मगवाटनाय पद्मगहस्ताय श्रीकितो ! सायुधः सवाहन. सपरिच्छद इह ग्रहशान्तिके आगच्छ २ इदमध्यं पाद्यं बलिं आचमनीयं गृहाण २ सनिहितो भव भव स्वाहा । जल गृहाण, गध, पुष्प, अक्षतान्, फलानि, सुद्रां, घृपं, दीप, नवेद्य गृहाण गृहाण सर्वोपचारान् गृहाण गृहाण शान्तिं कुरु २ तुष्टिं कुरु २ पुष्टिं कुरु २ सद्धिं वृद्धिं सर्वसमीहितं देहि २ स्वाहा ।
आ मंत्र गौलीने केतुना मंडल उपर केतुभोग्य द्रव्यो चढावना अने नीचे लखेल स्तोत्र द्वारा प्रार्थना करवी.

केतुस्तोत्र—

पुलिन्दचिपये जातो, ज्ञेकवर्णोऽहिरूपभृत् । आश्लेषाया सदा दूरः, शिखी भौमतनुः कणी ॥१॥

पुण्डरीककन्यश्च, कपालतोरणः खलः । कीलकस्तामसो धूमो, नाना नामोपलक्षित. ॥२॥

मल्लेः श्रीपार्श्वनाथस्य, नामधेयेन राक्षसी । दाडिमैश्च विचित्रानैस्तर्प्यते चित्रपूजया ॥३॥

राहोः सप्तमराशिस्थः, कारणे दृश्यतेऽम्बरे । अशुभोऽपि शुभो नित्य, केतुर्लोक महाग्रह. ॥४॥

उपर श्राणे नग्रहोनी पृथक् पृथक् पूजा प्रार्थना करी उपर स्तु नख ओढाडतु अने नेवाश्रत्रे पाटले, चोटवो, प्रत्येक गहने जुदा वख लडो ने नदले एक ज दशियागड अखड ९ द्वाध परिमित नख नषे य ग्रहोनुं पूजन थया पडी पाटला उपर जोढाडिये तो पण चाले, प्रत्येकनी पूजा प्रार्थना थया पछी नीचेना स्तोत्र द्वारा सामुदायिक प्रार्थना करना

ग्रहस्तोत्र—

जिननामकृतोरुचारा, देशनक्षत्रवर्णकैः । सुताश्च पूजिता भक्त्या, ग्रहाः सन्तु सुखावहाः ॥१॥
जिनानामग्रतः स्थित्वा, ग्रहाणां सुख हेतवे । नमस्कारशतं भक्त्या जपेद्वष्टोत्तरं नरः ॥२॥

एवं यथा नामकृताऽभियेकाः, आलेपनेर्धूपनपूजनेश्च ।

फलैश्च नैवेद्यवरैर्जिनानां, नाम्ना ग्रहेन्द्राः शुभदा भवन्तु ॥३॥

साधुभ्यो दीयते दानं, महोत्साहो जिनालये । चतुर्विधस्य संघस्य, बहुमानेन पूजनम् ॥४॥

भद्रबाहुरुचावेदं, पंचमः श्रुतकेवली । विद्याप्रवादतः पूर्वात्, ग्रहशान्तिविधिं शुभम् ॥५॥

उक्त ग्रहशान्तिक्र प्रत्तिष्ठाना प्रारंभमां के एवा ज कोइ महत्वपूर्ण कार्य प्रसंगे करवामां आवे तो पूजीने ग्रहोनी स्थापना जिनविश्वना जमणा हाथनी दिशामां राखी मूकची. प्रत्तिष्ठादि कार्य थइ गया पछी ज्यारे वीजा देवोतुं विसर्जन कराय त्यारे एतुं पण विसर्जन करवुं, पण संघ प्रयाणानवसरे के वीजा एवा शुभ प्रसंगे शान्तिक करुं होय तो सर्वनी पूजा प्रार्थना यथा पछी ग्रहोतुं विसर्जन करी देवुं.

उक्त ग्रहशान्तिक्र प्रायः शुभ कार्य प्रसंगे करवानुं छे. आमां कार्य प्रसंगनी निर्विघ्न समाप्ति माटे सर्वं ग्रहोनी पूजा प्रार्थना करवामां आवे छे.

ग्रह विशेषपनी पीडाशान्ति निमित्ते शान्तिक करवुं होय तो तेनी विधि कइक भिन्न छे. जे विधि जुदी आपेली छे.

॥ इति ग्रहशान्तिक ॥

૧૭ ગોચરગ્રહપીડા શાન્તિકવિધિ: (૨)

આ ગ્રહશાન્તિક્રમા પળ ગ્રહની પૂજા શ્રર્થના તો ઉપરના શાન્તિક્રમાં કલા પ્રમાણે જ કરવાની હોય છે. માત્ર મત્ર પાઠમાં “શ્દમર્થ્ય પાઘ ત્લિં ચરુ” આમ ‘ત્લિં’ પછી ‘ચરુ’ આ શ્દ્ વધારીને મત્ર પાઠ ચોલવાનો હોય છે. આ શાન્તિક્રમાં વિશેષતા ‘હોમ’ ની છે કોઈ પળ ગ્રહનુ શાન્તિક હોય તેની પૂજા શ્રર્થના કર્યા પછી ૧૦૮ વાર હોમ ઋચો પઢે છે, અને સ્થાપના શાન્તિનાથજીની પ્રતિમા આગલ જ નહિં પણ તે તે ગ્રહ પ્રતિચ્દ જિન પ્રતિમા આગે તેના જ વારના દિવસે તેનું શાન્તિક કરતુ પઢે છે. રાહુ કેતુનું શાન્તિક શનિવારે કરાય છે

જે ગ્રહનુ શાન્તિક હોય તેના હોમના દ્રવ્યો અને દાનના પદાર્થો પ્રથમથી મગારીને પાસે રાખવા, દરેક ગ્રહના હોમમાં કુંદ ત્રિકોણ અને હોમના સમિધ (ઋષ્ટ) વહપીપલ અને પીપલીના લેવા

ઋર્થના શાન્તિક્રમા હોમ દ્રવ્ય-દૂત, મધુ, કમલઠાકડી, દાન-ઉજ્વલચત્ર, તાદલા અને ઘોડાનુ, ચન્દ્ર શાન્તિક્રમા હોમદ્રવ્ય-દૂત, સર્વૌપધિ, દાન-તાદલા, શ્વેતવત્ર, મોતીનુ ।

મગલ શાન્તિક્રમા ઘૃતમધુનો હોમ, દાન-સ્કતચત્ર, રક્ત ઘોડાનુ ।

તુષ શાન્તિક્રમા હોમ-દૂતમધુ, પ્રિયદૂગુનો, દાન-મરુતમણિ, ઘેતુનુ ।

શુક્ર શાન્તિક્રમા હોમ-દૂત, મધુ, જવ, તિલનો, દાન-સુવર્ણ, પીત વત્રનું ।

શુક્ર શાન્તિક્રમાં હોમ-પંચગવ્યનો, દાન-શ્વેતસ્ત્ર, ઘેતુનુ, કૃષ્ણ ગાય-દૂપમ, નીલમણિનું ।

शनि शान्तिकर्मां होम-तिलघृतनो, दान-ऊन अने लोहचुं देवुं जोइये ।

राहु शान्तिकर्मां होम-तिलघृतनुं, दान-वकरानुं अने शङ्खनुं ।

केतु शान्तिकर्मां होम-तिलघृत, दान-कृष्ण गाय-दृपम, नीलमणिनुं

सूर्यनुं शान्तिक पद्मप्रभजिननी प्रतिमाने पूजीने तेनी आगे सूर्यने स्थापीने करवुं.

चन्द्रनुं शान्तिक-चन्द्रप्रभजिनना विंघने पूजीने ते आगल चन्द्रनी स्थापना करीने करवुं.

मंगलनुं शान्तिक-वासुपूज्यजिनने पूजी तेनी आगल मंगलने स्थापन करीने करवुं.

बुधनुं शान्तिक-विमल, अनन्त, धर्म, शान्ति, कुंशु, अर, नमि, महावीर, आ पैकीना काइ पण जिननी मूर्तिने पूजीने तेनी

आगल बुधने स्थापीने करवुं.

गुरुनुं शान्तिक-ऋषम, अजित, संभव, अभिन्दन, सुमति, सुपार्थ, शीतल, श्रेयांस, आ पैकीना कोइ पण एक तीर्थकरनी प्रतिमाने पूजी, तेनी आगल करवुं.

शुक्रनुं शान्तिक-सुविधिनाथने पूजी तेमनी आगल शुक्रने स्थापीने करवुं.

शनिनुं शान्तिक-शुनिसुव्रतने पूजी तेमनी प्रतिमा आगल शनिने स्थापीने करवुं.

राहुनुं शान्तिक-नेमिनाथनी पूजा करी तेमनी आगल राहुने स्थापीने करवुं.

केतुनुं शान्तिक-मह्विनाथ अथवा पार्थनाथने पूजीने तेमनी आगल केतुनी स्थापना करीने करवुं.

॥ इति गोचर ग्रहपीडा शान्तिक ॥

१८ जीर्णोद्धारविधिः—

जीर्णोद्धारविधौ भ्रम-खण्डितार्चा विसर्जने । यद् विधेयं विधानं तत्, पादलिप्तोक्तमुच्यते ॥१७९॥

भा०टी०—जीर्णोद्धार विधिमा भागेली अने खण्डित थयेली प्रतिमाना विसर्जनमा जे विधान कराय छे, ते पादलिप्ताचार्ये निर्माण कलिक्रामा रुढा प्रमाणे जहिया रुढेराय छे

खण्डित थयेल, फाटेल, भागेल, बाकीवलेल, जीर्णशीर्ण थयेल, वलेल, सगर्भ, धा लागेल, प्रमाणहीन, प्रमाणाधिक, नाकी, विकराल आकारवाली, भयकर आकारवाली, मंत्रना अभावथी पिचाश आदिवी अधिष्ठित थयेली, प्रतिमाने उठाडीने तेना स्थाने नयी प्रतिमा प्रतिष्ठित करनी.

प्रतिष्ठाचार्य प्रभातना उठीने नित्य नियम करीने सकलीकरण करे, पछी खंडित स्पुटित भग्नादि कारणे त्रिमान्तर स्थापन करवानी इच्छायाला प्रतिष्ठाचार्य शान्ति निमित्ते दिक्पालोने वलिदान आपे ते आ प्रमाणे—

ॐ इन्द्राय प्रतिगृह स्वाहा । ॐ अग्नये प्रतिगृह स्वाहा । ॐ यमाय प्रतिगृह स्वाहा । ॐ निर्ऋतये प्रतिगृह स्वाहा । ॐ चरुणाय प्रतिगृह स्वाहा । ॐ वायवे प्रतिगृह स्वाहा । ॐ कुबेराय प्रतिगृह स्वाहा । ॐ ईशानाय प्रतिगृह स्वाहा । ॐ ब्रह्मणे प्रतिगृह स्वाहा । ॐ नागाय प्रतिगृह स्वाहा ।

आ प्रमाणे गेलीने पोतपोतानी दिशामा अनुक्रमे न्हार पलि फेंकूने वायव्य कोणमा—“ ॐ क्षा क्षेत्रपालाय स्वाहा ।”

आम बोलीने शेषपालने वलिदान आपी—“ ॐ सर्वभूतेभ्यो वषट् स्वाहा ”

ए मंत्र बोलीने भूत आदिचुं संतर्पण करुं, ए पछी चैत्यवंदन करुं.

चैत्यवंदन करीने मण्डल पासे आवी ॐकार वडे आसन पूजीने बेसीने भूतशुद्धि अने सकलीकरण करी विशेष अर्घपात्रनी द्रव्यशुद्धि करवी. पछी आसनपूजादि कृत्य करी अर्घपाद्य आचमनीयादि देइने नित्यविधिथी सांग भगवन्तनी पूजा करवी, पछी आयुध सहित लोकपालोनी पूजा करवी.

पूर्व दिशामां ॐ इन्द्राय स्वाहा, ॐ वज्राय स्वाहा । आग्नेय दिशामां ॐ अग्नये स्वाहा, ॐ शक्तये स्वाहा । दक्षिण दिशामां ॐ यमाय स्वाहा, ॐ दण्डाय स्वाहा । नैर्ऋत दिशामां ॐ निर्ऋतये स्वाहा, ॐ खड्गाय स्वाहा । पश्चिम दिशामां ॐ वरुणाय स्वाहा, ॐ पाशाय स्वाहा । वायव्य दिशामां ॐ वायवे स्वाहा, ॐ ध्वजाय स्वाहा । उत्तर दिशामां ॐ कुबेराय स्वाहा, ॐ गदायै स्वाहा । ईशान दिशामां ॐ ईशानाय स्वाहा, ॐ शूलाय स्वाहा । ईशानमां ज-ॐ ब्रह्मणे स्वाहा, ॐ पद्माय स्वाहा । नैर्ऋत दिशामां-ॐ नागाय स्वाहा, ॐ उत्तराय स्वाहा ।

उपर प्रमाणे आयुध सहित लोकपालोचुं पूजन करी तेमने पोतानां कर्तव्य विषे सावधान करवा ते आ प्रमाणे—

- १ भो भो शक्त ! त्वया स्वस्यां दिशि विघ्नप्रशान्तये, सावधानेन शान्तिकर्मान्तं यावद् भगवदाज्ञया स्थातव्यम् ।
- २ भो भो अग्ने ! त्वया स्वस्यां दिशि विघ्नप्रशान्तये, सावधानेन शान्तिकर्मान्तं यावद् भगवदाज्ञया स्थातव्यम् ।
- ३ भो भो यम ! त्वया स्वस्यां दिशि विघ्नप्रशान्तये, सावधानेन शान्तिकर्मान्तं यावद् भगवदाज्ञया स्थातव्यम् ।

- ४ भो भो निर्ऋते ! त्वया स्वस्थां दिशि विघ्नप्रशान्तये सावधानेन शान्तिकर्मान्त यावद् भगवदाज्ञया स्यातव्यम् ।
 ५ भो भो वरुण ! त्वया स्वस्थां दिशि विघ्नप्रशान्तये सावधानेन शान्तिकर्मान्त यावद् भगवदाज्ञया स्यातव्यम् ।
 ६ भो भो वायो ! त्वया स्वस्थां दिशि विघ्नप्रशान्तये सावधानेन शान्तिकर्मान्त यावद् भगवदाज्ञया स्यातव्यम् ।
 ७ भो भो कुवेर ! त्वया स्वस्थां दिशि विघ्नप्रशान्तये सावधानेन शान्तिकर्मान्त यावद् भगवदाज्ञया स्यातव्यम् ।
 ८ भो भो ईशान ! त्वया स्वस्थां दिशि विघ्नप्रशान्तये सावधानेन शान्तिकर्मान्त यावद् भगवदाज्ञया स्यातव्यम् ।
 ९ भो भो ब्रह्मन् ! त्वया स्वस्थां दिशि विघ्नप्रशान्तये सावधानेन शान्तिकर्मान्त यावद् भगवदाज्ञया स्यातव्यम् ।
 १० भो भो नाग ! त्वया स्वस्थां दिशि विघ्नप्रशान्तये सावधानेन शान्तिकर्मान्त यावद् भगवदाज्ञया स्यातव्यम् ।

सर्वलोकपालीने भगवान्नी आज्ञा समलावी, अस्त्रमंत्र अने मुद्रा वडे पोताना शरीर फरती किल्लेवन्दी कर्या पछी मंडपमां सर्वत्र अर्घजल छांटवा द्वारा विघ्न निवारण करी, देवनी पासे जइ देवनी पिपरीत रुमथी पूजा करवी. ते पछी विसर्जन निमित्ते देवने अर्घ आपीने भगवानने विज्ञप्ति करे—

भगवन् ! विघ्नमिदमशेषदोषावहमस्य चोद्धारं सति शान्तिः स्यादिति भगवतोरुक्तमतीऽस्य ससुद्धाराय ससुच्यतं मामातिष्ठ ।” “ एवं कुरु. ”

आ श्रमाणे विज्ञप्ति करी आज्ञा मेलवीने सुवर्णादिनो एक कलश गलेल जलथी भरिने, तेने चन्दन, पुष्प, अक्षतो वडे पूजी मूल मत्र वडे, अभिमर्तित करी, मुद्रा देखाडीने ते जलकलशे देवनो अभिषेक करवो.

ते पछी विम्बने स्थानथी दूर करवा निमित्ते मूल मंत्रनो एक हजार जाप करवो अने १०८ सुवर्णना पुष्पो वडे विम्बनी पूजा करवी, ए बंधुं कर्पा पछी प्रतिमानी पासे आवीने प्रतिमाना शरीरमां र्हेल सत्त्वे नीचे प्रमाणे संभलावे—
“ प्रतिमारूपमास्थाय, येनादौ समधिष्ठिता । स शीघ्रं प्रतिमां त्यक्त्वा, यातु स्थानं समीहितम् ॥ १ ॥

आ प्रमाणे कहीने—“ ॐ विसर विसर स्वस्थानं गच्छ गच्छ ”

आ मंत्र बोली अर्घ देइने, प्रतिमाधिष्ठायक देवविशेषनुं विसर्जन करुं.

ते पछी सुवर्णनां ओजारने अभिमंत्रित करी, ते वडे उत्थापन करी, सुवर्णना पाशवाली दोरी वडे शिखामां बांधीने हाथी आदिनी सवारी करावीने सर्व लोकोनी साथे—“ क्षान्तिर्भवतु ”

आ प्रमाणे बोलतां देवने बहार लइ जइ, जो विंन पाषाणनुं होय तो अगाध जलमां अथवा तो म्होटा पर्वतमां भण्डारुं, जो प्रतिमा माटीनी होय अथवा स्तनमयी होत्रा छतां अग्नि विगरेमां दाह्यवाथी तेजहीन अने स्थानच्युत थइ गइ होय तो तेने पण पूर्वनी जेम परठवी देवी.

सुवर्णादि धातुमय विम्बने सुधारीने पाहुं त्यां स्थापन करी देवुं.

एज विधिथी चूलक, ध्वज, प्रासादादिक जे दोषयुक्त होय तेनुं विसर्जन करुं.

प्रासादना विसर्जनमां नीचे प्रमाणे विशेषता छै—प्रासादना जीर्णोद्धारमां मंत्रो अंगमां जोडी विवने राखी प्रासाद नवो तैयार थाय त्यां सुधी पडङ्गनुं पूजन करुं.

प्रासाद ज्यारे तैयार थइ जाय त्यारे पडंगयोजित मत्री त्याथी सहरी पाछा प्रासादना अंगोमा यथास्थान ते मंत्रोनो न्यास करवो, ए प्रमाणे जीर्णने दूर करी प्रायश्चित्त निमित्ते जाप करवो.

ते पछी आचार्यने दक्षिणा आपी, खमावी, विदाय करवा, उक्त रीते जीर्ण विम्बादिकने हटावी ते ज प्रकार अने परिमाण-चाला नीजा विभ्र आदिकने विधिपूर्वक प्रतिष्ठित करावा.

॥ इति जीर्णोद्धार विधिः ॥

१९ देवी प्रतिष्ठा—

विधिदेवीप्रतिष्ठाया, आचारार्कगतः खलु । इहाऽखिलोऽपि संद्वन्द्वो, विधिकारहितेच्छ्या ॥१८०॥

भा०टी०—देवीप्रतिष्ठानी जे विधि आचारदिनकरमा वतावेल छे, ते संपूर्णनो विधिकारोना हितार्थे अहिया संग्रह कर्यो डे. देवीओ त्रण प्रकारनी होय छे. १ प्रासाददेवीओ २ संप्रदायदेवीओ ३ कुलदेवीओ.

त्या प्रासाददेवीओ पीठ, उपपीठ, क्षेत्र अने उपक्षेत्रने, विषे चनावेली गुफामां रहेली, लिंगरूप. स्वयंभूतरूप अथवा मनुष्ये चनावेली रूपवाली होय छे

संप्रदायदेवीओ—अंधा, सरस्वती, त्रिपुरा अने तारा प्रमुख गुरुए उपदेशेल मंत्रोपासनावाली होय छे.

कुलदेवीओ—चंडी, चामुण्डा, कठेश्वरी, सत्यमा, सुशयना, अने व्याघ्रराजी चंगेरे जाणवी.

ए बधी देवीओनी प्रतिष्ठा सरखीज होय छे. देवी प्रतिष्ठा प्रसंगे प्रतिष्ठा करावनासना घरे प्रथम ग्रह शान्तिक अने पौष्टिक कर्म करबुं, त्यार बाद प्रासाद अथवा घरमां बृहत् स्नात्रविधि वडे स्नात्र करबुं.

देवीना प्रासादे ग्रहपतिमाने लइ जइने त्यां ग्रहशान्तिक स्नात्र करबुं.

त्यार पछी पूर्वे कहेल रीति वडे भूमि शुद्ध करीने, तेमां पंचरत्न सूक्रीने, तेना उपर कदम्बना काष्ठुनो पाटलो मूक्री तेना उपर देवीनी प्रतिमा स्थापन करवी, स्थिर प्रासाददेवीप्रतिमाने कुलपीठ उपर पंचरत्न न्यासपूर्वक स्थापन करे.

त्यार बाद दरेक कुडव प्रमाण मेलवेला सर्वप्रकारना धान्य वडे देवीनी प्रतिमाने नीचेनो मन्त्र बोली वधाववी.

मंत्र—“ ॐ श्री सर्वान्नपूर्णै सर्वांन्ने स्वाहा ”

त्यार बाद पूर्वे कहेला लक्षणवाला चार स्नात्र करनारा तैयार करावा, आचार्य पोते तथा स्नात्र करनारा वींटी, कंकण, अने दशा सहित वस्त्र धारण करी पोताना अने ते स्नात्र करनारावा अंगनी रक्षानो न्यास व्रण वार आ प्रमाणे करे—

ॐ ह्रीं नमो ब्रह्माणि-हृदये । ॐ ह्रीं नमो वैष्णवि-भुजयोः । ॐ ह्रीं नमः सरस्वति-कण्ठे । ॐ ह्रीं नमः परमभूषणे-मुखे । ॐ ह्रीं नमः सुगन्धे-नासिकयोः । ॐ ह्रीं नमः श्रवणे-कर्णयोः । ॐ ह्रीं नमः सुदर्शने-नेत्रयोः । ॐ ह्रीं नमो भ्रामरि-भ्रुवोः । ॐ ह्रीं नमो महालक्ष्मि-भाले । ॐ ह्रीं नमः प्रियकारिणि-शिरसि । ॐ ह्रीं नमो सुवनस्वामिनि-शिखायाम् । ॐ ह्रीं नमो विश्वरूपे-उदरे । ॐ ह्रीं नमः पद्मवासे-नाभौ । ॐ ह्रीं नमः कामेश्वरि-गुह्ये । ॐ ह्रीं नमो विश्वोत्तमे-उर्वोः । ॐ ह्रीं नमः स्तम्भिनि-जान्घोः । ॐ ह्रीं नमः सग-

मने-जघयोः । ॐ ह्रीं नमः परमपूज्ये-पादयोः । ॐ ह्रीं नमः सर्वगामिनि-कवचम् । ॐ ह्रीं नमः परम-रोद्रि-आयुधम् ।

ए प्रमाणे गुरु पोतानो अने स्नान करनाराओनी अगक्षा करे ।

त्यार नाद पचगव्यवडे नीचेनो श्लोक गोली देवीनु स्नान करे
विश्वस्यापि पवित्रतां भगवती प्रौढानुभावेनैजि; सघत्ते कुशलानुबन्धकलिता मर्त्यामरोपसिता ।
तस्या. स्नात्रमिहाधिवासनविधौ सत्पंचगव्यैः कृत, नो दोषाय महाजनागमकृतः पन्थाः प्रमाण परम् ॥१॥

त्यार वाद पुष्पाञ्जलि ग्रहण करीने.
सर्वाशापरिपूरिणि, निजप्रभावर्यंशोभिरपि देवि ! । आराधनकर्तृष्ण, कर्तय सर्वाणि दुःखानि ॥

आ श्लोक गोली पुष्पाञ्जलि नाखी ॥१॥ फरीथी पुष्पाञ्जलि ग्रहण करीने—
यस्याः प्रौढदृढप्रभावविभवैर्वाचयमाः संयमं, निर्दोष परिपालयन्ति कलयन्त्यन्यत्कलाकौशलं ।
तस्यै नम्रसुरासुरेश्वरशिर.कोटीरतेजश्छटा-कोटिसृष्टशुभाद्ग्रये त्रिजगतां मात्रे नमः सर्वदा ॥२॥

आ श्लोक गोली पुष्पाञ्जलिनो प्रक्षेप कर्तव्यो. ॥२॥ फरी पुष्पाञ्जलि ग्रहण करीने—

न व्याधयो न विपदो न महान्तराया, नैवायशांसि न वियोगविचेष्टितानि ।
यस्याः प्रसादवशतो बहुभक्तिभाजा-माविर्भवन्ति हि कदाचन साऽस्तु लक्ष्ये ॥३॥

आ श्लोक बोली पुष्पाञ्जलि नांखे ॥३॥ फरीथी पुष्पाञ्जलि लेइने—
दैत्यच्छेदोद्यतायां परमपरमतक्रोधबोधप्रबोध-क्रीडानिर्वीडपीडाकरणमशरणं वेगतो धारयन्त्या ।
लीलाकर्पूरकीलाजनितनिजजुष्टिपपासाविनाशः, कन्यादामास यस्यां विजयमचिरतं सेश्वरा वस्तुनोतु ॥४॥

आ श्लोक बोली पुष्पाञ्जलि नांखी. ॥४॥ फरी पुष्पाञ्जलि ग्रहण करीने—
लुलायद्वन्द्वजक्षयं क्षितितले विधातुं सुखं, चकार रभसेन या सुरगणैरतिप्रार्थिता ।
चकार रभसेन या सुरगणैरति प्रार्थिता, तनोतु शुभमुत्तमं भगवती प्रसादेन सा ॥५॥

आ श्लोक बोली पुष्पाञ्जलि चढाववी. ॥५॥ फरीथी पुष्पाञ्जलि लेइने—
सा करोतु सुखं माता, बलिजित्तापवारिणी । प्राप्यते यत्प्रसादेन, बलिजित्तापवारिणी ॥ ६ ॥

आ श्लोक बोली पुष्पाञ्जलि नांखी. ॥६॥ फरीथी पुष्पाञ्जलि लेइने—
जयन्ति देव्याः प्रभुतामतानि, निरस्तनिःसंचरतामतानि ।
निराकृताः शत्रुगणाः सदैव, संप्राप्य यां मंथु यजे सदैव ॥ ७ ॥

आ श्लोक बोली पुष्पाञ्जलि चढाववी. ॥७॥ फरीथी पुष्पाञ्जलि ग्रहण करी—
सा जयति यमनिरोधन-कर्त्री संपत्करी सुभक्तानाम् । सिद्धिर्यत्सेवायामत्यागेऽपि हि सुभक्तानाम् ॥८॥
आ श्लोक बोली पुष्पाञ्जलि चढाववी ॥८॥

एष आठ पुष्पाञ्जलि चढान्या पछी देवीनी आगे भगवतीनुं मण्डल स्थापन करवुं, तेनी विधि आ प्रमाणे छे—
 प्रथम छ खुणावालुं चक्र लखवुं, तेनी मध्यमा हजार हाथवाली अनेक प्रकारना शस्त्रने धारण करनारी, श्रंत वैखधारी अने
 सिंह बाहनवाली भगवती देवीने चीवरी स्थापन करनी अथवा कल्पनी,

त्यार बाद छ खुणामा प्रारंभयी प्रदक्षिणाना क्रमयी आ प्रमाणे लखवुं—
 ॐ ह्रीं जम्भे नमः १ । ॐ ह्रीं जम्भिन्यै नमः २ । ॐ ह्रीं स्तम्भे नमः ३ । ॐ ह्रीं स्तम्भिन्यै नमः ४ ।
 ॐ ह्रीं मोहे नमः ५ । ॐ ह्रीं मोहिन्यै नमः ६ ।

त्यार बाद तेनी रहारना वलयमा आठ दलवालु चक्र करवुं, अने तेमां प्रदक्षिणाना क्रमे आ प्रमाणे लखवुं—
 ह्रीं श्री ब्रह्माण्ये नमः १ । ह्रीं श्री माहेश्वर्यै नमः २ । ह्रीं श्री कौमार्यै नमः ३ । ह्रीं श्री वैष्णव्यै नमः
 ४ । ह्रीं श्री वाराह्यै नमः ५ । ह्रीं श्री इन्द्रायै नमः ६ । ह्रीं श्री चामुण्डायै नमः ७ । ह्रीं श्री कालिकायै
 नमः ८ ॥

त्यार बाद तेनी रहारना भागमां त्रीजुं वलय करी, सोळ दळवालुं चक्र करीने प्रदक्षिणाना क्रमयी आ प्रमाणे लखवुं—
 ह्रीं श्री रोहिण्यै नमः १ । ह्रीं श्री प्रज्ञप्त्यै नमः २ । ह्रीं श्री वज्रशृङ्खलायै नमः ३ । ह्रीं श्री चक्राङ्कुर्यै
 नमः ४ । ह्रीं श्री अप्रतिचक्रायै नमः ५ । ह्रीं श्री पुरुषवर्षायै नमः ६ । ह्रीं श्री काल्यै नमः ७ । ह्रीं श्री
 महाकाल्यै नमः ८ । ह्रीं श्री गौर्यै नमः ९ । ह्रीं श्री गान्धार्यै नमः १० । ह्रीं श्री महाज्ज्वाल्यै नमः ११ ।

ह्रीं श्री मानव्यै नमः १२ । ह्रीं श्री चैरोद्यायै नमः १३ । ह्रीं श्री अच्छुसायै नमः १४ । ह्रीं श्री मानस्यै नमः १५ । ह्रीं श्री महामानस्यै नमः १६ ।

फरीथी वलय करीने तेनी बहार चौसठ दल करीने, तेमां जमणी बाजुमा अनुक्रमे आ प्रमाणे देवीओ लखी।
 ॐ ब्रह्माण्यै नमः १ । ॐ कौमार्यै नमः २ । ॐ वाराण्यै नमः ३ । ॐ शाङ्कर्यै नमः ४ । ॐ इन्द्राण्यै नमः ५ ।
 ॐ कंकाल्यै नमः ६ । ॐ कराल्यै नमः ७ । ॐ काल्यै नमः ८ । ॐ महाकाल्यै नमः ९ । ॐ चासुण्ड्यै नमः १० । ॐ ज्वालामुख्यै नमः ११ । ॐ कामाख्यायै नमः १२ । ॐ कापालिन्यै नमः १३ । ॐ भद्रकाल्यै नमः १४ । ॐ दुर्गायै नमः १५ । ॐ अंबिकायै नमः १६ । ॐ ललितायै नमः १७ । ॐ गौर्धै नमः १८ ।
 ॐ सुभंगलायै नमः १९ । ॐ रोहिण्यै नमः २० । ॐ कपिलायै नमः २१ । ॐ शूलकटायै नमः २२ । ॐ कुण्डलिन्यै नमः २३ । ॐ त्रिपुरायै नमः २४ । ॐ कुरुकुल्लायै नमः २५ । ॐ भैरव्यै नमः २६ । ॐ भद्रायै नमः २७ । ॐ चन्द्रावत्यै नमः २८ । ॐ नारसिंहे नमः २९ । ॐ निरञ्जनायै नमः ३० । ॐ हेमकान्त्यै नमः ३१ । ॐ प्रेतासन्यै नमः ३२ । ॐ ईश्वर्यै नमः ३३ । ॐ माहेश्वर्यै नमः ३४ । ॐ वैष्णव्यै नमः ३५ । ॐ वैनाचक्यै नमः ३६ । ॐ यमघण्टायै नमः ३७ । ॐ हरसिद्धयै नमः ३८ । ॐ सरस्वत्यै नमः ३९ । ॐ तातलायै नमः ४० । ॐ चण्ड्यै नमः ४१ । ॐ शङ्खिन्यै नमः ४२ । ॐ पद्मिन्यै नमः ४३ । ॐ चित्रिण्यै नमः ४४ । ॐ शाकिन्यै नमः ४५ । ॐ नारायण्यै नमः ४६ । ॐ पलादिन्यै नमः ४७ । ॐ यमभगिन्यै नमः ४८ । ॐ

सूर्यपुत्र्यै नमः ४९ । ॐ शितलायै नमः ५० । ॐ कृष्णपाशायै नमः ५१ । ॐ रक्ताक्ष्यै नमः ५२ । ॐ काल-
रात्र्यै नमः ५३ । ॐ आकाश्यै नमः ५४ । ॐ सृष्टिन्यै नमः ५५ । ॐ जय्यै नमः ५६ । ॐ विजयायै नमः
५७ । ॐ धूम्रवर्ण्यै नमः ५८ । ॐ वेगेश्वर्यै नमः ५९ । ॐ कात्यायन्यै नमः ६० । ॐ अग्निहोत्र्यै नमः ६१ ।

ॐ चक्रेश्वर्यै नमः ६२ । ॐ महाम्बिकायै नमः ६३ । ॐ ईश्वरायै नमः ६४ ।

फलीथी तेनी फलु वलय करीने वाचन दल करीने तेमा अनुक्रमे जमणी बाजुथी आरभीने आ प्रमाणे देवो स्थापवा—
ॐ क्रौं क्षेत्रपालाय नमः १ । ॐ क्रौं कपिलाय नमः २ । ॐ क्रौं चटुकाय नमः ३ । ॐ क्रौं नारसिंहाय नमः
४ । ॐ क्रौं गोपालाय नमः ५ । ॐ क्रौं भैरवाय नमः ६ । ॐ क्रौं गरुडाय नमः ७ । ॐ क्रौं रक्तसुवर्णाय नमः
८ । ॐ क्रौं देवसेनाय नमः ९ । ॐ क्रौं रुद्राय नमः १० । ॐ क्रौं चरुणाय नमः ११ । ॐ क्रौं भद्राय नमः १२ ।
१३ । ॐ क्रौं वज्राय नमः १४ । ॐ क्रौं चक्रजंघाय नमः १५ । ॐ क्रौं रक्तुदाय नमः १६ । ॐ क्रौं कुरुवे नमः १७ ।
१८ । ॐ क्रौं प्रियकराय नमः १९ । ॐ क्रौं प्रियमित्राय नमः २० । ॐ क्रौं कंदर्पाय नमः २१ । ॐ क्रौं दजकाय नमः २२ ।
२३ । ॐ क्रौं एकजंघाय नमः २४ । ॐ क्रौं घंटापथाय नमः २५ । ॐ क्रौं भीमाय नमः
२६ । ॐ क्रौं हंसाय नमः २७ । ॐ क्रौं महाकालाय नमः २८ । ॐ क्रौं मेघनादाय नमः २९ । ॐ क्रौं विद्याधराय नमः ३० । ॐ क्रौं वसुमि-
त्राय नमः ३१ । ॐ क्रौं विश्वसेनाय नमः ३२ । ॐ क्रौं नागाय नमः ३३ । ॐ क्रौं नागहस्ताय नमः ३४ । ॐ क्रौं नागहस्ताय नमः ३५ ।

ॐ क्रौं प्रद्युम्नाय नमः ३६। ॐ क्रौं कंपिष्ठाय नमः ३७। ॐ क्रौं नडुलाय नमः ३८। ॐ क्रौं आह्लादाय नमः ३९।
 ॐ क्रौं त्रिमुखाय नमः ४०। ॐ क्रौं पिशाचाय नमः ४१। ॐ क्रौं भूतभैरवाय नमः ४२। ॐ क्रौं महापिताचा-
 य नमः ४३। ॐ क्रौं कालमुखाय नमः ४४। ॐ क्रौं शुनकाय नमः ४५। ॐ क्रौं अस्थिसुखाय नमः ४६। ॐ क्रौं
 रेतोवेधाय नमः ४७। ॐ क्रौं समानचाराय नमः ४८। ॐ क्रौं केलिकलाय नमः ४९। ॐ क्रौं अंगाय नमः ५०।
 ॐ क्रौं कंटकाय नमः ५१। ॐ क्रौं विभीषणाय नमः ५२।

फरीथी वलय करी तेमां अष्टदलो करवां, अने जमणी वाजुना क्रसे करीने त्यां आ प्रमाणे देवो स्थापवाः—

ह्रीं श्रीं भैरवाय नमः १। ह्रीं श्रीं महाभैरवाय नमः २। ह्रीं श्रीं चण्डभैरवाय नमः ३। ह्रीं श्रीं रुद्रभै-
 रवाय नमः ४। ह्रीं श्रीं कपालभैरवाय नमः ५। ह्रीं श्रीं आनन्दभैरवाय नमः ६। ह्रीं श्रीं कंकालभैरवाय
 नमः ७। ह्रीं श्रीं भैरवभैरवाय नमः ८।

फरीथी तेना उपर वलय करीने—

“ॐ ह्रीं श्रीं सर्वाभ्यो देवीभ्यः सर्वस्थाननिवासिनीभ्यः सर्वविघ्नविनाशिनीभ्यः सर्वदिव्यधारिणीभ्यः
 सर्वशास्त्रकरीभ्यः सर्ववर्णाभ्यः सर्वमंत्रमयीभ्यः सर्वतेजोमयीभ्यः सर्वविद्यामयीभ्यः सर्वमंत्राक्षरमयीभ्यः
 सर्वद्विदाभ्यः सर्वसिद्धिदाभ्यो भगवत्यः पूजां प्रतिच्छन्दु स्वाहा।”

आ प्रमाणे उपरना मंत्राक्षरो वलय आकारे लखवा, तेनी उपर फरीथी वलय करी दश दल करी जमणी वाजुना क्रमे आ

प्रमाणे दश दिक्पाल स्थापन करना,—

ॐ इन्द्राय नमः १ । ॐ अश्रये नमः २ । ॐ यमाय नमः ३ । ॐ निर्ऋतये नमः ४ । ॐ वरुणाय नमः ५ । ॐ वायवे नमः ६ । ॐ कुबेराय नमः ७ । ॐ ईशानाय नमः ८ । ॐ ब्रह्मणे नमः ९ । ॐ नागेश्यो नमः १० ।

फरीधी गलय करीने दश दल करीने तेमा जमणी यजुना क्रमे आ प्रमाणे ग्रहादिक स्थापना—

ॐ आदित्याय नमः १ । ॐ चन्द्राय नमः २ । ॐ मंगलाय नमः ३ । ॐ बुधाय नमः ४ । ॐ शुरवे नमः ५ । ॐ शुक्राय नमः ६ । ॐ शनैश्चराय नमः ७ । ॐ राहवे नमः ८ । ॐ केतवे नमः ९ । ॐ क्षेत्रपालाय नमः १० ।

त्यार पठी तेनी बहाराता भागमा चार खुणावालु भूमिपर करु, तेना ईशान खुणामा गणपति, पूर्ब दिशामा अम्बा, अग्नि खुणामा कार्तिकेय, दक्षिण दिशामा यजुना, नैर्ऋत्य खुणामा क्षेत्रपाल, पश्चिम दिशामा महाभैरव, गायत्र खुणामा गुरु, अने उत्तर दिशामा गंगानुं स्थापन करुं, ए प्रमाणे भगवती महलनुं स्थापन करी पूजन करुं,

ॐ ह्रीं नमः अमुरुदेव्यै, अमुकभैरवाय, अमुकवीराय, अमुकयोगिन्यै, अमुकदिवपालाय, अमुकग्रहाय, एव भगवन् ! अमुक ! अमुके ! आगच्छ आगच्छ, इदमर्घ्यं पाच, बलि, चरुं, चरुं, आचमनीय, गृहाण गृहाण सनिहिता भव भव स्वाहा, जल गृहाण गृहाण, गध पुष्प, अक्षतान्, फल, मुद्रां, धूपं, दीपं, नैवेद्यं, गृहाण गृहाण सर्वोपचारान् गृहाण गृहाण, शान्तिं कुरु कुरु तुष्टिं तुष्टिं ऋद्धिं वृद्धिं सर्वसमिहित कुरु कुरु स्वाहा ।

आ मत्र गडे प्रत्येक देवदेवीनी अनुक्रमे सर्व वस्तुओ तथा सर्व उपचारो वडे पूजा करनी, अने त्रण खुणावाला कुंडने

विषे वी, मध, अने गूगल वडे तेटली संख्यामां होम करवो, होमनो मंत्र आ प्रमाणे छे—

ॐ रौ असुको देवः देवी वा संतर्पितास्तु स्वाहा ।

ए प्रमाणे विधि करीने देवी प्रतिमाने दशियाचड वस्त्र वडे आच्छादन करे, अने उपर चंदन, अक्षत, अने फूल वडे पूजन करे, जिनमतमां देवी प्रतिष्ठांमां वेदी कराती नथी. ते पछी लग्नवेला प्राप्त थाय त्यारे गुरु एकान्ते प्रतिष्ठा करे.

देवी प्रतिष्ठांमां . १ चंदन, २ केशर, ३ कंकाल, ४ कपूर, ५ विष्णुकान्ता, ६ शतावरी, ७ वालो, ८ दूर्वा (ध्रो), ९ प्रियंगु (घडंला), १० उशीर (सुगंधीवालो), ११ तगर, १२ सहदेवी, १३ कुष्ठ (कूठ), १४ कचूरो, १५ जटागांसी, १६ शैलेय (शिलारस), १७ कसुंबो, १८ लोघ्र, १९ बला, २० तज, २१ कदंब, २२ उदुंबर, २३ पीपलो, २४ बड, अने २५ आम्र ए पचीस वस्तुमय वासक्षेप तैयार करवो.

सौभाग्य मुद्रावडे प्रस्तुत देवीना मंत्रथी वासक्षेप मंत्रित करवो, त्यार बाद वासक्षेप करवो, प्रथम देवीना मंत्रपाठ पूर्वक तेना सर्व अंगोमां माया वीजनुं स्थापन करबुं, पछी वस्त्र दूर करी सर्वजन समक्ष गन्ध अने अक्षतादि वडे पूजा करवी, त्यार बाद भगवतीने स्नात्र करबुं.

प्रथम दूधनो कलश ग्रहण करीने—

“ क्षीराम्बुधेः क्षुराधीशे-रानीतं क्षीरसुत्तमम् । अस्मिन् भगवतीस्नात्रे, दुरितानि निकृन्ततु ॥१॥

दहीनो कलश ग्रहण करीने—

घन घनबलाचार, स्नेहपीवरसुज्वलम् । सद्घातु वधिश्रेष्ठ, देवीस्नात्रे सतां सुखम् ॥२॥

फरी धीनो क्लेश ग्रहण करीने--

स्नेहेषु सुख्यमायुष्य, पवित्र पापतापहृत् । घृत भगवतीस्नात्रे, भूयादमृतमञ्जसा ॥३॥

फरी मधनो क्लेश ग्रहण करीने--

सर्वोपधिरस सर्व-रोगहृत्सर्वरञ्जनम् । क्षौद्रं क्षुद्रोपद्रवाणां, हन्तु देव्याभियेचनात् ॥४॥

त्यार पछी सर्गोपधि मिश्रित जलनो क्लेश ग्रहण करीने--

सर्वोपधिमय नीर, नीर सदृशुणसंयुतम् । भगवत्यभियेकेऽस्मिन्दुपयुक्तं त्रियेऽस्तु नः ॥५॥

आ श्लोक गोलीने अभियेक करे, त्यार वाद जटाभासीतु चूर्ण लेइने--

सुगन्ध रोगशमन, सौभाग्यगुणकारणम् । इट प्रशस्त मांस्यास्तु, मार्जन हन्तु दृष्टकृतम् ॥६॥

आ श्लोक गोलीने मार्जन करे, पछी चन्दन्तु चूर्ण लेइने--

शीतल शृङ्गममल, वृतातापरजोहरम् । नहन्तु सर्वप्रत्ग्रहं, चन्दनेनाङ्गमार्जनम् ॥७॥

आ श्लोक गोली अगे मार्जन करे, पछी केमरुं चूर्ण लेइने--

काश्मीरजन्मजैश्रूणः, स्वभावेन सुगन्धिभिः । प्रमार्जयाम्यह देव्याः, प्रतिमां चित्रहानये ॥८॥

आ प्रमाणे पाच म्नात्र अने त्रण मार्जन करीने देवीनी पासे - स्त्रीओने उचित सर्व वस्त्र, श्रृणण, गध, माला अने मडल

करनार वस्तुओं तथा नैवेद्य पण बहु प्रकारनां सूके. त्यार वाद् प्रतिष्ठा पूर्ण थाय त्यारे मंडलनुं विसर्जन नंघावर्तना विसर्जननी जेम करे. त्यार पंछी कन्यानुं पूजनं, गुरुओने दान, महोत्सव अने संघ-पूजा महाप्रतिष्ठानी पेटे करे.

आं प्रतिष्ठा प्रासाद देवी, संप्रदाय देवी अने कुलदेवी त्रणेनी जाणवी. तेनुं पूजन, गुरु, आगम के कुलाचारथी जाणनुं, ग्रन्थ विस्तारना भयथी-अने आगम प्रकट करवा योग्य नहि होवाथी अहों वतावुं नथी.

ए संबन्धे कहेवामां आवुं छे के-आ आगमनुं रहस्य छे, अने ते प्रयत्नथी गुप्त राखनुं. कारण के गुप्त राखवाथी सिद्धि थाय छे, अने प्रकट करवाथी सिद्धिनो संशय छे.

तथा सर्व देवीनी प्रतिष्ठा ते ते कल्पमां कहेला अथवा गुरुंए उपदेशोला ते ते देवीना मंत्र वडे करवी. वाकीनुं वधुं कार्य सर्व देवीनी प्रतिष्ठामां संखुं जाणनुं. जे देवीओ अग्रिद्ध होवाथी तेनो कल्प जणाती न होय अथवा गुरुना उपदेशना अमा-वथी तेना नामने मंत्र न कहेलो होय त्यां ते देवीओनी प्रतिष्ठा अल्पा देवी के चण्डी देवी के त्रिपुरा देवीना मंत्र वडे करवी. अहीं देवी प्रतिष्ठामां शासनदेवी, गच्छदेवी, कुलदेवी, नगरदेवी, क्षेत्रदेवी, अने दुर्गा देवी, ए वधी देवीओनो प्रतिष्ठामविधि एक ज छे,

॥ इति देवीप्रतिष्ठाविधिः ॥



२०. विविधवस्त्वधिवासना—

नानावस्तुगणस्याधिवासनाविधिरल्पकः । उद्धृत्याचारसूर्याख्य-ग्रन्थादत्र निवेशितः ॥१८१॥
 भा०टी०—अनेक पदार्थोंनीं योडीक अधिवासना विधिं आचारंदिनकरथी उद्धरीनें पच्छिद्येदमा दाखल करेल छे
 मोइ पण सजीव अजीव वस्तुनो स्वीकार करता, असुक मंत्र पूर्वक वासक्षेप द्वारा, अधिपेक द्वारा अथवा हस्तन्यास द्वारा
 तेने पवित्र करवी तेंनु नाम अधिवासना छे
 जे जे पदार्थनीं प्रतिष्ठा विहित छे, ते सर्वनी अधिवासना अस्य विहित छे ज, पण जे पदार्थोंनी प्रतिष्ठा यती नथी
 तेमनी पण अधिगामना थाय छे विधिमारोनी ज्ञानवृद्धि निमित्ते अमो नीचे फेलाक एवा पदार्थोंनी अधिवासना विधि
 आपीये छीये के जेमनी प्रतिष्ठा विहित नथी छता अधिवासना विधेय छे

१ पूजाभूमिनी अधिवासना—

ॐ लल, पवित्रताया मंत्रैक-भूमौ सर्वसुरासुरा. । आयान्तु पूजा गृहन्तु, यच्छन्तु च समीहितम् ॥१॥

२ शयन भूमिनी अधिगामना—

ॐ लल, ममाधि सप्तिकरी, सर्वविघ्नापहारिणी । सर्वेशदेवताऽत्रैव, भूमौ तिष्ठतु निश्चला ॥२॥

३ वेसमानी भूमिनी अधिवासना—

ॐ लल, शेषमस्तकसदिष्टा, स्थिरा सुस्थिरमगला । निवेशभूमाववाऽस्तु, देवतास्थिरसस्थितिः ॥३॥

- ४ विहारभूमिनी अधिवासना—
ॐ लल, पदे पदे निधानानां, त्वनीनामपि दर्शनम् । करोतु प्रीतहृदया, देवी विश्वंभरा मम ॥४॥
- ५ क्षेत्रभूमिनी अधिवासना—
ॐ लल, समस्तरम्यदृक्षाणां, धान्यानां सबसपदाम् । निदालमस्तु मे क्षेत्र-भूमिः संप्रीतमानसा ॥५॥
- ६ सर्व कार्योपयोगि सर्वं भूमिनी अधिवासना—
ॐ लल, यत्कार्यं यत्सर्वैक-भूमी संपादयामि च । तच्छीघ्रं सिद्धिमायातु, सुप्रसन्नाऽस्तु मे क्षितिः ॥६॥
- ७ जलनी अधिवासना—
ॐ यव, जलं निजोपकाराय, परोपकृतवेऽथवा । पूजार्थीयाऽथ गृह्णामि, भद्रमस्तु न पानक्तम् ॥७॥
- ८ अग्निनी अधिवासना—
ॐ रं । धर्मार्थिष्ठाणोऽहोमाय, भवद्वैतार्थीय वाऽनलम् । संतुश्यामि न पापं, फलमस्तु ममेहितम् ॥८॥
- ९ चूलानी अधिवासना—
ॐ रं । अग्न्यगारमिदं जालं, भूयस्त्रिघ्नविनाशनम् । तद्युक्तिगणैकनाऽन्वेन, पूजिताः सन्तु साधवः ॥९॥
- १० सिधडीनी अधिवासना—
ॐ रं । सर्वदेवेषु प्रदानस्य, सर्वतेजोमयस्य च । आधारभूता शकटी, वरैरस्तु समाहिता ॥१०॥

- ११ वस्त्राधिवारणा—
ॐ श्री । चतुर्विधमिद वस्त्रं, स्त्रीनिवाससुखाकरम् । वस्त्रं देवघृत भूयात्, सर्वसंपत्तिदायकम् ॥११॥
- १२ युषोनी अधिवारणा—
ॐ श्री । मुकुटाङ्गद्वारार्थ-दाराः रुद्रकनपुरे । सर्वभूषणसघातः, त्रियेऽस्तु वपुषा धृतः ॥१२॥
- १३ पुष्पमालानी अधिवारणा—
ॐ श्री । सर्वदेवस्य सत्वसि-हेतुर्माल्य सुगन्धि च । पूजाशेषं धारयामि, स्वदेहेन त्वदर्चना ॥१३॥
- १४ सुगन्धाधिवारणा—
ॐ श्री । रुद्ररागुरुकस्तुरी-श्रीगण्डशशिसंयुत । गन्धपूजादिशेषो मे, मङ्गलाय सुखाय च ॥१४॥
- १५ तन्मालानी अधिवारणा—
ॐ श्री । नागवरलादलः पूग-कस्तुरी वर्णमिश्रितैः । ताम्बूलं मे समस्तानि, दुरितानि निवृन्ततु ॥१५॥
- १६ चन्द्रानी अने ह्यनी अधिवारणा—
ॐ श्री ह्री । मुक्ताजालसमापार्णं, तत्र राज्यश्रियः समम् । उवेत चिचिचवर्णं वा, दद्याद् राज्यश्रियं स्थिराम् ॥१६॥
- १७ ग्रयनासन-मिहासन आदिनी अधिवारणा—
ॐ ह्री लल । इदं शय्यासन सर्वं, रचितकनकादिभिः । वस्त्रादिभिर्वा काष्ठार्थं, सर्वसौख्यं करोतु मे ॥१७॥

- १८ हाथी घोडाना पलाणनी अधिवासना—
ॐ स्या स्थी । सर्वावष्टम्भजननं, सर्वासनसुखप्रदम् । पर्याणं वर्यमत्रास्तु, शरीरस्य सुखावहम् ॥१८॥
- १९ पगरखानी अधिवासना—
ॐ सः । काष्ठचर्ममयं पाद-त्राणं सर्वाङ्गिरक्षणम् । नयताद् मां पूर्णकाम-कारिणीं भूमिसुत्तमाम् ॥१९॥
- २० सर्व वासण वर्तनी अधिवासना—
ॐ कौ । स्वर्णरूप्यताम्रकांस्य-काष्ठमृत्चर्मभाजनम् । पानाबहेतुः सर्वाणि, वाञ्छितानि प्रयच्छतु ॥२०॥
- २१ सर्व औपशोनी अधिवासना—
ॐ सुधा सुधा । धन्वन्तरिश्च नासत्यौ मुनयोऽत्रिपुरःसराः । अत्रौषधस्य ग्रहणे निघ्नन्तु सकला रुजः ॥२१॥
- २२ मणिरत्नोनी अधिवासना—
ॐ वं हंसः । मणयो वारिधिभवा, भूषिभागसमुद्भवाः । देहि देहभवाः संतु, प्रभावाद्वाञ्छितप्रदाः ॥२२॥
- २३ दीपकनी अधिवासना—
ॐ जय जय । मूर्यचन्द्रश्रेणिगतः सर्वपापतमोपहः । दीपो मे विघ्नसंघातं, निहन्यान्नित्यपार्वणः ॥२३॥
- २४ भोजननी अधिवासना—
ॐ हन्तु हन्तु । पूजादेवकलेः शेषं, शेषं च गुरुदानतः । भोजनं मम तृप्त्यर्थं तुष्टिं पुष्टिं करोतु च ॥२४॥

- २५ भाण्डागाराधिवासना--ॐ श्री महालक्ष्म्यै नमः । कोष्ठागाराधिवासना-ॐ अन्नपूर्णायै नमः ॥२५॥
- २६ पुस्तरुनी अधिवासना--
ॐ ऐं । सारस्वतमहाकोष-निलयं चक्षुरुत्तमम् । श्रुताधारं पुस्तक मे, मोहध्वान्त निकृन्ततु ॥२६॥
- २७ जपमालानी अधिवासना--
ॐ ह्रीं । रत्नैः सुवर्णैर्बज्रैर्वा, रचिता जपमालिका । सर्वजापेषु सर्वाणि, वाञ्छितानि प्रयच्छतु ॥२७॥
- २८ वाहननी अधिवासना--
ॐ यां यां । तुरङ्गहस्तिशकट-रथमर्त्योद्वाहनम् । गमने सर्वदुःखानि, हत्वा सौख्यं प्रयच्छतु ॥२८॥
- २९ सर्वं शस्त्रोनी अधिवासना--
ॐ द्रो द्रीं ह्रीं । अमुक्तं चैव मुक्तं च, सर्वं शस्त्रं सुतेजितम् । हस्तस्थं शत्रुघाताय, भूयान्मे रक्षणाय च ॥२९॥
- ३० कवचनी अधिवासना--
ॐ रक्ष रक्ष । लोहचर्ममयो दंशो, वज्रमन्त्रेण निर्मितः । पततोऽपि हि वज्रान्मे, सदा रक्षां प्रयच्छतु ॥३०॥
- ३१ पात्रानी अधिवासना--
ॐ रक्ष रक्ष । तुरङ्गस्यास्परक्षार्थं प्रक्षरं धातिं सदा । कुर्यात् पोष स्वपक्षीये, परपक्षे च खंडनम् ॥३१॥
- ३२ ढालनी अधिवासना--

- ॐ रक्ष रक्ष । सर्वोपनाहसहितः, सर्वशस्त्राऽपधारणः । स्फुरः स्फुरतु मे युद्धे, शत्रुवर्गक्षयंकरः ॥३२॥
- ३३ गाय भंग वलदनी अधिवासना—
ॐ घन घन । गावो नानाविधैर्वनैः, श्यामला महिषीगणाः । वृषभाः सर्वसंपत्तिं, कुर्वन्तु मम सर्वदा ॥३३॥
- ३४ धरना उपकरणोनी अधिवासना—
ॐ श्री । गृहोपकरणं सर्वं, स्थाली घट उद्(ल)खलम् । स्थिरं चरं वा सर्वत्र, सौख्यानि कुरुतात् गृहे ॥३४॥
- ३५ खरीदधानी वस्तुनी अधिवासना—
ॐ श्री । गृह्यमाणं मया सर्वं, क्रेयवस्तु निरन्तरम् । सदैव लाभदं भूयात्, स्थिरं सुखदमेव च ॥३५॥
- ३६ वैचधानी वस्तुनी अधिवासना—
ॐ श्री । एतद्वस्तु च विक्रेयं, विक्रीणामि यदक्षसा । तत्सर्वं सर्वसम्पत्तिं, भाविकाले प्रयच्छतु ॥३६॥
- ३७ रात्रि भोग्य उपकरणनी अधिवासना—
ॐ खं खं । सर्वभोग्योपकरणं, सजीवं जीववर्जितम् । तत्सर्वं सुखदं भूयाद्, माभूयापं तदाश्रयम् ॥३७॥
- ३८ चामरोनी अधिवासना—
ॐ चं चं । गोपुच्छसंभवं हृद्यं, पवित्रं चामरद्वयम् । राज्यार्थयं स्थिरीकृत्य, वाञ्छितानि प्रयच्छतु ॥३८॥
- ३९ सर्व राजाओनी अधिवासना—

ॐ वदवद । सुपिर च तथाऽऽनद्धं, तत घनममन्त्रितम् । वाय प्रौढेन शब्देन, रिपुचक्रं निकृन्ततु ॥३९॥

४० उपर ज्जात्रेण सिनायती मयं वस्तुओनी अधिवासना—

ॐ श्री आत्मा । सर्वाणि यानि वस्तूनि, मम यान्त्युपयोगिताम् ।

तानि सर्वाणि सौभाग्य, यच्छन्तु विपुलां त्रियम् ॥ ४० ॥

जे जे वस्तुओनी अधिवासना पूरोक्त मंत्रोधी नथी धनी ते सर्वनी उपशुंक्त मंत्रवडे करी शक्याय छे,

अधिवासना माटे सामान्य प्रकारे शुभ दिस अने चन्द्रमल जोषु, ण सिनाय विशेष त्रिधिनी अनुकूलता अथवा

अवकाश न होय तो नीचेनुं पद्य भणीने मयं देव, देवी, कश्य, धजादिनी स्थापना करी देवी

भद्रं कुरुष्व परिपालय सर्ववश, विघ्न हरस्व विपुलां कमला प्रयच्छ ।

जैवातुकार्कसुरसिद्धजलानि यावत्, स्वैर्य मजस्व वित्तुष्व समीहितानि ॥४१॥

स्थापनीय वस्तुनी स्थापना करी उपरु पद्य भणी वासक्षेप करतो अने स्थापितने प्रणाम करमा

इति विविधस्त्वधियासनाविधिः



प्रकीर्णक प्रतिष्ठा-
संग्रहेऽत्र निवेशितः ॥१८२॥

गृह-तडाग-देवादि-प्रतिष्ठानां समुच्चयः । आचारार्कगत समुद्भूत्य, संग्रह आचारदिनकरना आधारे आ पञ्चिन्द्रमां
प्रकीर्णक प्रतिष्ठा-
संग्रहेऽत्र निवेशितः ॥१८२॥

(१) गृहप्रतिष्ठा विधिः—
भा०टी०—घर, तलाव, चतुर्निकायना देवो आदिनी प्रतिष्ठाविधियोनो संग्रह आचारदिनकरना आधारे आ पञ्चिन्द्रमां
दाखल करीं हे.

सूत्रधारे शास्त्रानुसारे वनाथेल घर, राजमंहेल, सामान्य घर आ वधानी प्रतिष्ठा विधि सरखीज होय छे.
प्रथम ते प्रतिष्ठाप्य घरमां अिनविश्व लानी वृहस्पतिविधियी स्वाज्ञ भणानी, ते जल घरमां वधे छांटंछे, ते पछी बहाला
मुख्य दरवाजाना उंचरने अने उचरंगने निर्मल जले घोड उचरा उपर ॐ कार अने उचरंग उपर “ह्रीं” कार हखवां, ते पछी
“ ॐ ह्रीं देहृत्ये नमः । ॐ ह्रीं द्वारश्रिये नमः । आ मंत्रोवडे व्रण व्रण नार वासक्षेप करीने वनेनी प्रतिष्ठा करवी.
वहाथी डावा हाथ तरफनी बाला उपर ॐ गंगायै नमः । जमणा हाथनी बाला उपर ॐ मसुनाये नमः ” आ
मंत्रो बोलीने जल, गंध, अक्षत, पुष्प, धूप, दीपक, चैद्य चढानवा पूँक ३ ३ नार नासक्षेप करीने प्रत्येक द्वारांगनी
प्रतिष्ठा करवी.
ते पछी बालाओना द्वाराणी उर्णयुक्त द्वार प्रतिष्ठा विधियी प्रतिष्ठा करवी.
ते पछी बालाओना द्वाराणी उर्णयुक्त द्वार प्रतिष्ठा विधियी प्रतिष्ठा करवी.

प्रत्येक थाभलाने पचामृत डाटी “ ॐ श्रीं श्रेपाय नमः ।” आ मंत्रे वासक्षेप करी प्रतिष्ठा करवी.
 पछी मध्यनी शालाओना द्वारो, गहारना स्तंभो अने भोंतोनी पूर्वोक्त विधिथी प्रतिष्ठा करीने तेमना मध्यमा नीचेनी भूमिनी
 ‘ ॐ ह्रीं ’ मध्यदेवतायै नमः । आ मंत्रवडे ३ गार वासक्षेप करीने प्रतिष्ठा करवी.

ते पछी ओरडाओमा “ ॐ ओं श्रीं गर्भेश्रियै नमः । आ मंत्रद्वारा ३ ३ वार वासक्षेप करी ते प्रतिष्ठित करचा. ओर-
 डाओना द्वारो, भोंतो, स्तभोनी प्रतिष्ठा पूर्वें कक्षा प्रमाणे करवी.

ते पछी स्मोहानी “ ॐ श्रीं अन्नपूर्णायै नमः ।

भण्डारधरमा—“ ॐ श्रीं महालक्ष्म्यै नमः ।

गयन घरमा— ॐ ओं संवेदान्यै नमः ।

उपरनी मयं भूमिओमा—ॐ ओं क्रो” किरीटिन्यै नमः ।”

अश्वशालामा—ॐ रे रं वताय नमः ।

गाय मयं रकरी इषम वाधयाना स्थानमा— ॐ ह्रीं अडनडि किलिकिलि स्वाहा ।”

मभास्थानमा—ॐ मुखमण्डन्यै नमः ।”

आ गधा स्थानोमा जणावेल मंत्रोवडे पच्चीस वस्तुओनो वनेलो वासक्षेप नाखीने वयानी प्रतिष्ठा करवी आ वधाना द्वारोनी
 द्वारविधिथी, स्तभोनी स्तभविधिथी अने भोंतोनी भित्तिविधिथी प्रतिष्ठा करवी. अने पछी आगणामा आनी कलश

कोठारमा—ॐ श्रीं अन्नपूर्णायै नमः ।

जलधरमा—ॐ व वरुणाय नमः ।

देव पूजा घरमा—ॐ ह्रीं नमः ।

हस्तिशालामा— ॐ ओं श्रियै नमः ।

प्रतिष्ठा प्रसंगे जणावेल विधिथी दिक्पालोलुं आह्वान करी शान्ति बलि देवी, अने त्यां शान्तिक षौष्टिक करलुं. पोताना गुरुनो अन बह्व वडे अने पोतानी ज्ञातिनो भोजन ताम्बूल वडे सत्कार करवो.

हाटनी प्रतिष्ठायां—ॐ श्रीं वाञ्छितदायिन्यै नमः । मठनी प्रतिष्ठायां—ॐ ऐं वाग्वादिन्यै नमः ।

तापसोना झुंषडाओनी प्रतिष्ठायां—ॐ ह्रीं वल्लुं सर्वायै नमः । धातु घडवानी शालायां,—ॐ भूतघान्यै नमः ।

धासचाराना मकानमां ॐ शों ज्ञान्तायै नमः । भोजनशालाना मकानयां “ॐ श्रीं अन्नपूर्णायै नमः ।

जलप्रपाणा मकानमां “ ॐ वं चरुणाय नमः । होम शालायां—“ ॐ रं अग्रये नमः ।

आ सामे लखेल मंत्र वडे ३ ३ वार वासक्षेप करीने प्रतिष्ठा करवी अने आ वधा स्थानोना द्दारी, छातो, स्तंभो, भंतिनी प्रतिष्ठा द्वार आदिनी उक्त प्रतिष्ठा विधि प्रमाणे करवी.

नीच जातिना घरोनी प्रतिष्ठा विधि अर्द्धी जणावी नथी, होम के नेओनुं प्रतिष्ठा निधान ब्राह्मणादि विधिकारो करावता नथी,

(२) जिनचिम्ब-परिस्कर प्रनिष्ठाविधि:—

परिस्कर जो जिनचिम्बनी साथे होयतो चिम्बप्रतिष्ठायां तेनी वासक्षेप मात्रथीज प्रतिष्ठा थइ जाय छे, पण परिस्कर जो जुहु होय तो तेनी प्रतिष्ठा पण जुदी कराय छे. परिस्करानो आकार नीचे लखेल प्रकासनो होय छे.

चिम्बने नीचे हाथी सिंह अने कीचना रूपकोथी युक्त सिंहासन होय छे, जोजा मत प्रमाणे सिंहासनना मध्यभागे वे हरिणोना तोरणकारणे नीचे धर्मचक्र होय छे. अने तेनी चंने बाजुना भागोमां ग्रहोनी मूर्तियो होय छे. जिन चिम्बना चंने पडखे

चमरधरो, तेमनी वहार ते अजलि हस्त मनुष्यो, विम्बना मस्तक उपर त्रण छत्रो, तेनी वने वाजुना भागोमा जेसणे शुडोमा सुवर्णना कलशो पकडेला छे एवा वे श्वेत हाथी, हाथीओ उपर श्राङ्ग वगाडता पुरुषो, तेमनी उपर मालाधरो तेमनी उपर शंख वगाडनारा अने तेनी उपर ऋलग

उपर लख्या प्रमाणे परिकर तैयार थाय त्यारे विग्रप्रतिष्ठोचित मुहूर्त जोवरावी, भूमिशोधन, अमारी बोषणा, संघ आमंत्रण पूर्वक प्रतिष्ठा विधि प्रमाणे परिकरनी प्रतिष्ठा विधि ऋगी

परिकर प्रतिष्ठा लगभग ऋलग प्रतिष्ठाने मळती छे. परिकरना अम्पेको जिनविघना स्नात्रजल वडे करवा अम्पेक करी परिकरने कलगनी जेम सुगन्धी पदार्था नडे पूजने, मात धान्योमडे वधानो, वे आंगलिओ उची करी तर्जनी मुद्राए अने तूर दृष्टिए डावा हाथमा जल चुलुक मरी परिकर उपर जल आडोटवुं, अने अक्षतभृत पात्र भेट करवु, ते पळी—

“ ॐ ह्रीं श्रीं जयन्तु जिनोपासकाः सकला भवन्तु स्वाहा ।”

आ मत्र त्रण वार मणी गध, अक्षत, पुष्प, घृष, दीप, नैवेद्य वडे परिकरने अधिनासित करी दशियावड वस्त्र ओढाडवु. ए पळी जे जिननु परिकर होय ते जिननु चेत्यमदन करी ४ स्तुतिथी देववंदन करवु त्रोजी म्बुति ऋवा पळी सिद्धाण बुद्धाण कही श्रीशान्तिनाथ आराधनार्थ करेमि काउस० उदण० अन्तथ० १ लो० नमो० स्तुति—

श्रीमते शान्तिनाथाय, नमः शान्तिविधाग्निने । त्रैलोक्यस्यामराधीश-सुकुटाभ्यर्चिताय ॥४॥

श्रुत देवतायै करेमि ऋ० अन्तथ० १ नो० नमो० स्तुति—

चद चदति न वाग्वादिनि । भगवति ! कः श्रुतसरस्वति गमेच्छुः । रङ्गचारङ्गमतिवर-तरणिस्तुभ्यं नम इतीह ॥५॥

शान्तिदेवतायै करेमि का० अन्नत्थ० १ नो० नमो० स्तुति—

उन्मृष्टरिष्टदुष्ट-ग्रहगतिदुःस्वगडुर्निमित्तादि । संपादितहितसंपन्नामग्रहणं जयति शान्तेः ॥६॥

क्षेत्रदेवतायै करेमि काउ० अन्नत्थ० १ नो० नमो० स्तुति—

यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रिया । सा क्षेत्रदेवता नित्यं, भूयान्नः सुखदायिनी ॥७॥

भवनदेवतायै करेमि काउ० अन्नत्थ० १ नो० नमो० स्तुति—

ज्ञानादिगुणयुतानां, नित्यं स्वाध्यायसंयमरतानाम् । विदधातु भवनदेवी, शिवं सदा सर्वसाधूनाम् ॥८॥

शासनदेवतायै करेमि का० अन्नत्थ० १ नो० नमो० स्तुति—

या पति शासनं जैनं, सचः प्रत्यूहनाशिनी । साऽभिप्रेतसमृद्धर्थै, भूयाच्छासनदेवता ॥९॥

श्रीअम्नादेव्यै करेमि काउ० अन्नत्थ० १ नो० नमो० स्तुति—

अम्बा वालांकितांकासौ, सौख्यख्यातिं ददातु नः । माणिक्यरत्नालङ्कार-चित्रसिंहासनस्थिता ॥१०॥

समस्तवेआत्रचरणं संति० सम्मदिङ्कि० अन्नत्थ० १ नो० नमोऽर्हत् स्तुति—

सर्वे यक्षाम्बिकाद्या ये, वैयावृत्यकराः सुराः । क्षुद्रोपद्रवसंघातं, ते द्रुतं द्रावयन्तु नः ॥११॥

प्रतिष्ठादेवतायै करेमि का० अन्नत्थ० १ लो० नमो० स्तुति—

यदधिष्ठिता' प्रतिष्ठाः, सर्वा' सर्वास्पर्देषु नन्दन्ति । जिनपरिवार सा विशतु, देवता सुप्रतिष्ठामिदम् ॥१२॥

१ नोकार गणी त्रेसी नसुत्थुणं० जावति चेद्आइ० नमो० स्तवन-
ओमितिनमो भगवओ, अरिहंतसिद्धायरिय उवज्झाय । वरसव्वसाहुसुणिसघ-धम्मत्तित्यप्पवयणस्स ॥१॥
सप्पणवं नमो तह, भगवईड सुअदेवयाए सुहयाए । सिवसत्तिदेवयाण सिवपवयणदेवयाणं च ॥२॥
इदागणिजमनेरइअ-वरुणवाउकुवेर ईसाणा । वभो नागुत्ति दसणह-मविअ सुदिसाण पालाणाम् ॥३॥
सोमयमवरुणवेसमण-वासवाण तहेव पंचणह । तह लोगपालयाणं, खूराइगहाणय णवणहं ॥४॥
साहत्तस्ससमक्ख मज्झमिण चैव' धम्मणुट्टाण । सिद्धिमविग्घं गच्छउ, जिणाइ नवकारओ घणिअ ॥५॥

ए पत्री परिकरने आडो पडदो नाथी जदरथी सर्वज्ञने दूर करी लग्नो शुभ ममय आवता नीचेना मंत्रो बोली
परिकरना ते ते अगो उपर त्रण वार छारिमंत्राभिमंत्रित वासक्षेप करवो-

ॐ ह्रीं श्रीं अप्रतिचक्रे धर्मचक्राय नमः । आ मंत्रथी धर्मचक्र उपर

ॐ ह्रीं श्रीं चन्द्रा ऐं क्षीं ठं ठः क्षीं सर्वग्रहेभ्यो नमः । आ मंत्रथी ग्रहो उपर

ॐ ह्रीं श्रीं आधारशक्तिकमलासनाय नमः । आ मंत्रथी सिंहासन उपर.

ॐ ह्रीं श्रीं अहंइत्तेभ्यो नमः । आ मंत्रथी हाथ जोडेल उभेला मनुष्यो उपर

ॐ ह्रीं श्रीं च चामरकरेभ्यो नमः । आ मंत्रद्वारा चमरथो उपर

ॐ ह्रीं विमलवाहनाय नमः । आ मंत्रवडे वे हाथीओ उपर.

ॐ ह्रीं पुष्पकरेभ्यो नमः । आ मंत्रथी वे मालाधरो उपर.

ॐ श्रीं शंखधराय नमः । आ मंत्रथी शंखधरो उपर. अने—

ॐ पूर्णं कलशाय नमः । आ मंत्रथी कलश उपर

प्रत्येकने ३-३ वार वासक्षेप करवो, परिकरनी प्रतिष्ठा करी आगे अनेक फल नैवेद्य होवां धूप करवो.

ते पछी शुभ समयमां परिकर यथास्थान जोडी ते दिवसे अथवा त्रीजे पांचमे अथवा सातमे दिवसे पंचामृत स्नात्र भगवावी चैत्यवंदनां करि कंकण छोटनार्थ प्रतिष्ठादेवता स्थिरीकरणार्थं १ लोगस्सनो का० करवो, उपर प्रगट लोगस्स कहेवो, पछी सौभाग्य मुद्राए सौभाग्य मंत्रनो न्यास करी सर्पपंथी अने कांकण छोडवां.

(३) चतुर्निकाय देवमूर्ति प्रतिष्ठा विधि ॥

दश प्रकारना भवनपति देवो, वीस भवनपतिओना इन्द्रो, सोल प्रकारना व्यन्तर देवो, त्रीस व्यन्तरोना इन्द्रो, वार देवलोक, नव प्रौद्येयक, पांच अनुचर विमानना देवो अने वार देवलोकना दश इन्द्रो आ यधानी ते ते वर्णनी काष्ठमयी, वातु-मयी अने रत्नघटित मूर्तिओनी प्रतिष्ठानो विधि आ प्रमाणे छे.-

देहरामां अथवा घरमां प्रथम बृहत्स्नात्र विधिथी जिनस्नात्र भगवावी, एकत्र थयेल पंचामृतवद्धे प्रतिष्ठाप्य देव प्रतिमाने स्नान करावहुं, शुद्ध जले पखाली, कुंडीने यक्षकर्ममुं विलेपन करवुं, धूप उखेववो, अने प्रतिष्ठामंत्र भणी पच्चीस वस्तुनो बनावेल

शामक्षेप करी, तेनी प्रतिष्ठा करी, प्रतिष्ठा मंत्र नीचे प्रमाणे छे,—

“ ॐ ह्रीं श्रीं प्लैं कुरु कुरु तुरु तुल कुल कुल चुरु चुरु चिरि चिरि चिलि चिलि किरि किरि किलि किलि
हर हर सर सर हूं सूर्यदेवेभ्यो नमः, *१ अमुकनिराज्यमध्यगत, २ अमुकजातीय, ३ अमुकपद, ४
अमुक व्यापार, ५ अमुक देव, इह मूर्तिस्थापनायां अवतर अवतर तिष्ठ तिष्ठ चिरं पूजकदत्तां पूजां गृह्याण
गृह्याण स्वाहा ।”

था मन्त्रडे ३ वार वासक्षेप करी सोइएण देवमूर्तिनी प्रतिष्ठा करी एज प्रमाणे ब्यारे निकायनी देवीओनो एण प्रतिष्ठा करी
गणिपिटक, शासनयद, शासनयधिणी, ब्रह्मशान्ति निरुक्ति आदि व्यन्तर्सां, सोम यम आदि लोकरूपांलो भवनपति निरु-
यमा इन्द्र आदि वैमानिक निरुजायमा गणवा

(४) ब्रह्मप्रतिष्ठाविधि—

प्रथम प्रतिष्ठित प्रामादमा अपवा धरमा बृहद्वस्त्राप्रविधिथी जिन मूर्तिनु स्तपन करबु
पछी एक वै तण ब्यार पाच ते जेटली मूर्तिओनी आवश्यकता होय तेटली मूर्तिओ अथवा नवग्रह खोदेल के चित्रेल

*१ प्रतिष्ठाप्य देव भवन्तरि अन्तर वैमानिक के ज्योतिषी जे निकायनो होय तेनु नाम अमुक स्थाने लखबु २ भवन-
पतिओमा असुर कुमारदि, अन्तरोमा भूतपिशाच आदि, वैमानिकोमा सौर्यमन्त्र आदि शब्द लखवो ३ पदनी पूर्वोमा
इन्द्रसामानिक शाखाभ्यन्तरदि पार्षध आयरिअ, अग्रथान लोकपालदि शब्द लखवो ४ तत्सद् कर्तव्य-गुणकीर्तनादि यथा
संभव विद्वेषण लखवुं, ५ देवबुं नाम लखवु ।

पाटलो जे होय ते सर्व जिन मूर्तिने आगे स्थापन करावा अने जिन स्नात्रजलथी मिश्रित पंचामृतथी ते पखालवा, शुद्धजले पखाली, लूळीने कोरा करावा. पळी धूप उखेवी नीचेना संत्रो वडे एक एक ग्रहनो मंत्र त्रण चण वार भणीने उपर त्रण वार वासक्षेप करी ते ते ग्रहती प्रतिष्ठा करवी.

जे जे ग्रहनी मूर्तिनी प्रतिष्ठा करावी होय ते ते ग्रहनो प्रतिष्ठा मंत्र भणीने तेनी मूर्ति उपर वासक्षेप करावो.

१ सूर्य प्रतिष्ठा मंत्र—

“ ॐ ह्रीं श्रीं शृणि २ नमः सूर्याय सुवमप्रदीपाय जगच्चक्षुषे जगत्साक्षिणे भगवन् श्रीसूर्य इह मूर्तौ स्थापनायां अचतर अवतर तिष्ठ २ प्रत्यहं पूजकदत्तां पूजां गृहाण २ स्वाहा ।” १

२ चन्द्र प्रतिष्ठा मंत्र—

ॐ चं चं चं चुरं २ नमश्चन्द्राय औषधीशाय ऋषाकराय जगजीवनाय सर्वजीवितविश्वंभराय भगवन् श्रीचन्द्र इह मूर्तौ स्थापनायां अचतर २ तिष्ठ २ प्रत्यहं पूजकदत्तां पूजां गृहाण २ स्वाहा ।” २

३ मंगल प्रतिष्ठा मंत्र—

“ ॐ ह्रीं श्रीं नमो मंगलाय भृगिपुत्राय वक्राय लोहितवर्णाय भगवन् मंगल इह मूर्तौ स्थापनायां अचतर २ तिष्ठ २ प्रत्यहं पूजकदत्तां पूजां गृहाण २ स्वाहा ।” ३

४ बुध प्रतिष्ठा मंत्र—

ॐ क्रौं प्रौ नमः श्रीसोम्याय सोमपुत्राय प्रहर्षुलाय हरितवर्णाय भगवन् बुध इह मूर्त्तौ स्थापनायां अव-
तर २ तिष्ठ २ प्रत्यहं पूजकदत्तां पूजा गृहाण २ स्वाहा ।” ४

५ नृदसति प्रतिष्ठा मंत्र—

“ ॐ जीव जीव नमः गुरवे सुरेन्द्रमन्त्रिणे सोमाकाराय सर्ववस्तुदाय सर्वशिवकराय भगवन् श्रीबृहस्पते
इह मूर्त्तौ स्थापनायां अवतर २ तिष्ठ २ प्रत्यह पूजकदत्तां पूजां गृहाण २ स्वाहा ।” ५

६ शुक्र प्रतिष्ठा मंत्र—

“ ॐ श्री श्री नमः श्रीशुक्राय काव्याय दैत्यगुरवे सजीवनीविगर्भाय भगवन् श्रीशुक इह मूर्त्तौ स्था-
पनाया अवतर २ तिष्ठ २ प्रत्यह पूजकदत्तां पूजां गृहाण २ स्वाहा ।” ६

७ शनि प्रतिष्ठा मंत्र—

“ ॐ शम शम नमः शनैश्वराय पङ्कवे महाग्रहाय श्यामवर्णाय नीलवासाय भगवन् श्रीशनैश्चर इह मूर्त्तौ
स्थापनायां अवतर २ तिष्ठ २ प्रत्यहं पूजकदत्तां पूजा गृहाण २ स्वाहा ।” ७

८ राहु प्रतिष्ठा मंत्र—

“ ॐ र र नमः श्री राहवे सिहिकापुत्राय अतुल्यलपराक्रमाय कृष्णवर्णाय भगवन् श्रीराहो इह मूर्त्तौ
स्थापनायां अवतर २ तिष्ठ २ प्रत्यहं पूजकदत्ता पूजा गृहाण २ स्वाहा ।” ८

९ केतु प्रतिष्ठा मंत्र—“ ॐ धूम धूम नमः श्रीकेतवे शिखाधराय उत्पातदाय राहुप्रतिच्छन्दाय भगवन् श्रीकेतो इह मूर्तौ स्थापनायां अचतर २ तिष्ठ २ प्रत्यहं पूजाकदत्तां पूजां गृहाण २ स्वाहा ।” ९
जो नव ग्रहना पाटलानी प्रतिष्ठा करवी होय तो पण एज विधिथी प्रक्षालन करी एक एक ग्रहनी प्रतिष्ठा मंत्र बोली एक एक ग्रहमंडलमां तेनी मूर्ति उपर वासक्षेप करीने पाटलो प्रतिष्ठित करवो.

एकली ग्रहमूर्तिनी ज प्रतिष्ठा होय तो “ इह मूर्तौ ” आटलुं ज बोलुं. मूर्ति अने स्थापनीय ग्रह नंग वंन्नेनी प्रतिष्ठा होय तो मंत्रमां “ इह मूर्तौ स्थापनायां ” आम बोलुं, अने एकला स्थापनीय ग्रह नंगनीज प्रतिष्ठा होय तो—“ इह स्थापनायां ” एत-
ला शब्दो बोलवा.

ग्रह प्रतिष्ठा करीने जिन ग्रतिया आगल वर्द्धमान स्तुतिओथी चैत्यवंदन करुं, स्तवनने वदले शान्तिपाठ कहेवो.

(९) सिद्धमूर्ति प्रतिष्ठा विधि

जिनशासनमां पंदर भेदे सिद्ध मानेला छे, त्यां जे लिख वेपमां जे सिद्ध थया होय ते वेपमां तेमनी मूर्ति भराववी, ते सिद्धमूर्ति कहेवाय छे, चथा प्रकारनी सिद्धमूर्तिओनी प्रतिष्ठाविधि समान छे.

प्रतिष्ठा करावनार गृहस्थ होय तो प्रथम तेना घरे शान्तिक तथा पौष्टिक करुं, ते पछी चूहत्स्नान विधिथी स्नात्र करीने प्रतिष्ठा करवी, मूलमंत्र द्वारा सिद्धमूर्तिं पंचामृत स्नात्र करी मूल मंत्र द्वारा ज मूर्तिना सर्व अंगोमां ३-३ वार वासक्षेप करीने तेनी प्रतिष्ठा करवी.

सिद्धमूर्तिनी प्रतिष्ठानो मूल मंत्र नीचे प्रमाणे छे —

ॐ अ आ ह्रीं नमो सिद्धाण बुद्धाण सब्वसिद्धाणं श्रीआदिनाथाय नमः ।

जे लिंगमा मिद्ध ब्येल सिद्धनी मूर्तिनी प्रतिष्ठा होय ते ते लिंगधारीओनी भक्ति करवी, उपयुक्त वस्तु, पात्र, भोजनादिनु दान देवें

प्रतिष्ठा कराननार साधु होय तो मूलमंत्रे मंत्रित करीने मिद्धमूर्ति उपर ७ण वार वाससेप नासे. आथी सिद्धमूर्तिनी प्रतिष्ठा थइ जाय छे, वहु विधि करवानी जरत नथी.

(६) मंत्र-पट्टप्रतिष्ठा विधि ॥

मंत्रपट्टो सुवर्णमय, रस्यमय, ताम्रमय, स्फटिकमय, काष्ठमय, वस्त्रमय, आदि अनेक प्रकारना होय छे. वस्त्रमय पट्ट सिवायना वधा पट्टोतो प्रथम जिनस्तान ममिलित-जल पचासृत वडे पखाल करवो, पछी सुगंव जल वडे तेनो पखाल करवो, छेवटे थुद्ध जले पवाली तेना उपर यक्षकर्मणु विलेपन करवु पछी २५ वस्तुना गेला वाससेपथी तेनी प्रतिष्ठा करवी. मंत्रपट्टनो प्रतिष्ठा मंत्र पट्टमा खोदेल के लखेल मंत्र ज जाणनी, ते मंत्र ७ वार वाचनी अने ७ वार वाससेप नाखवो, एदले पतिष्ठा थइ

पट्ट वस्त्रमय होय अर्थात् वस्त्र उपर मंत्र यत्र के मूर्ति लखेल होय तो तेनु आदर्शमा प्रतिविम्ब पाडी ते उपर पूर्वोक्त रीते प्रथम अभिषेक-श्रक्षालन करवु, पछी तेमा लखेल मंत्र वडे वाससेप करी प्रतिष्ठा करवी मखमल आदि उपर जरी आदिथी भरेल मूर्तिओनी प्रतिष्ठा पण एज विधिथी करवी

षट्पदां कोह देवनी मूर्ति खोदली होय अथवा चित्रित होय तो पूर्वोक्त प्रकारे प्रथम तेनो अभिषेक करी—ॐ ह्रीं अशुक्-
देवाय नमः । ॐ ह्रीं अशुक्देव्यै नमः । आ प्रकारे जे देव या देवीनी मूर्ति होय तेना नासमंत्रवडे वासक्षेप करी तेनी
प्रतिष्ठा करवी.

सूरिमंत्र, वर्द्धमान विद्या, चिन्तामणि पार्थनाथ आदिना पड्डोनी पण उपरनी विधिथी ज प्रतिष्ठा कराय छे.

(७) साधुसूति-स्तूप प्रतिष्ठा विधि—

आचार्य, उपाध्याय के साधुनी मूर्ति चैत्यसां के पौषय शालामां स्थापवी होय अथवा तेमना पादुकास्तूपनी प्रतिष्ठा करवी
होय तो तेनी विधि नीचे प्रमाणे छे.—

मूर्ति अने चरण पादुकाने प्रथम पंचासुत वडे पखाली शुद्ध जले घोईः छुडीने तेने धूप उखेववो अने लग्नो समय आवतां
आचार्यनी मूर्ति अथवा स्तूप उपर—

ॐ नमो आचरियाणं भगवंताणं पाणीणं पंचविहायारसुडिआणं इह आचरिया भगवंतो अवयरंतु
साहुसाहुणीसावयसावियकयं पूअं पडिच्छन्तु सच्चसिद्धिं दिसन्तु स्वाहा ।

आ मंत्रवडे ३ वार वासक्षेप करीने प्रतिष्ठा करवी.

उपाध्यायनी मूर्ति अथवा स्तूप उपर—

ॐ नमो उवज्झायाणं भगवंताणं बारसंगपढगपाढगाणं सुअहराणं सज्झायज्झाणसत्ताणं इह उव-

जज्ञाया भगवंतो अययंरंतु साटुसाहुणीसावयसावियाकय पूअ पडिच्छन्तु सव्वसिद्धिं दिसन्तु स्वाहा ।”

आ मंत्र वडे ३ वार वासक्षेप करीने प्रतिष्ठा करवी

माधुनी मूर्ति जयमा स्तूप उपर—

ॐ नमो मन्वसाहुण भगनतारुणं पचमहव्वयधरणं, पचसभियाणं तिगुताण तवनिगमनाणदसण-
जुत्ताण सुम्बलसाहगाण इह साहुणो भगवंतो अययंरंतु साटुसाहुणीसावयसावियाकय पूअ पडिच्छन्तु
सव्वसिद्धिं दिसन्तु स्वाहा ।” आ मंत्र वडे ३ वार वासक्षेप करी प्रतिष्ठा करवी.

२ (८) पितृमूर्ति प्रतिष्ठा विधि:

गृहस्थोना पूर्वजोनी पाषाणमयी मूर्तिओ घणे भागे शासादोमा स्थापित कराय ठे, ज्यारे धातुमय मूर्ति-पाटलिओ उपर
खोदेली के लखेली पूर्वजोनी मूर्तिओ यरोमा पूजाय छे. गलामा पहेरवानी फूल आदिना रूपमा नामाकित पितृमूर्तिओ पण होय
छे. आ यथी पितृमूर्तिओनी प्रतिष्ठाविधि एरू सरखीज होय छे

प्रथम इहत्स्नात्रनी विधिवी पूर्व प्रतिष्ठित जिनविम्बनु स्नात्र करी ते स्नात्रजल मिश्रित पंचामृत वडे व्रणे प्रकारनी पितृ
मूर्तिओनो पखाल करवो, छेवडे शुद्ध जले पखाली लूँछीने पछी तेनीचे लखेल प्रतिष्ठा मंत्रवडे वासक्षेप करीने प्रतिष्ठित करवी.-

“ॐ नमो भगवओ अरहओ जिणास्स महाबलस्स महाणुभावस्स सिवगइगयस्स सिद्धस्स बुद्धस्स अक्ख-
लिअपभावस्स तद्भक्तोऽसुरुवणं; असुकजातीय; असुकगोत्र; असुकपौत्र; असुकपुत्र; असुकजनक; इह मूर्ती

अचतरतु अचतरतु संनिहितः तिष्ठतु तिष्ठतु निजकुल्यानां पुत्रभातुच्यपौत्रादीनां जिनभक्ति पूर्वकं दस्तनाहारं
वस्त्रं पुण्यकर्म प्रतीच्छतु शान्तिं तुष्टिं पुष्टिं कृद्धिं समीहितं करोतु स्वाहा ।”
आ मंत्र भणीने पितृश्रुतिओने ३-३ वार वासक्षेप करीने प्रतिष्ठित करवी आम पितृमूर्ति प्रतिष्ठिन करीने गृहस्थे यथा-
शक्ति साधर्मिक वात्सल्य करतुं अने संवपूजा पण करवी.

(९) तोरण प्रतिष्ठाविधिः—

तोरण प्रतिष्ठामां बृहत्स्नात्रविधिथी जिनस्नात्र करी मुकुटमंत्रे करी तोरण उपर वासक्षेप करवो, मुकुटमंत्र नीचे प्रमाणे छे—
ॐ अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ लृ ए ऐ ओ औ अं अः कखगघङ्ग चछजझञ्ज टठडढण तथदधन पफवभभम
यरलव शषसह नमो जिनाय सुरपतिमुकुटकोटिमंघहितपदाय इति तोरणे समालोक्य समालोक्य स्वाहा ।

(१०) जलाशय प्रतिष्ठाविधिः—

जलाशयो अनेक प्रकारनां होय छे. तलाव, सरोवर, टांकां, वाव, आदि. आ पैकीना कोइ पण जातना जलाशयनी प्रतिष्ठा
करवी होय त्यारे जलाशय वनावनारने चन्द्रवल पहोचतुं होय अने दिवस पण शुभ होय तेतुं मुहूर्त लेतुं. जलाशय प्रतिष्ठामां
पूर्वापाहा, शतभिषा, रोहिणी, शनिष्ठा, आ पैकीतुं कोइ नक्षत्र आवतुं हाय तो वधारे सारुं.

प्रतिष्ठाना दिवसे जलाशय करावनारना घरे प्रथम शान्तिक अने पीठिक कातुं, ते पत्नी सर्व उपकरणोलेइ जलाशय उपर जतुं.

जलाशयने फरतां २४ घ्नततुओ वींटीने प्रथम तेनी रक्षा करवी, ते पळी त्या जिन प्रतिमा स्थापन करी वृहत् स्नात्र-
विधिवी स्नात्र करतु. तदनन्तर जलाशयमां पंचगव्य नावी जिनस्नात्र जल नाखंडुं, ते पळी जलाशयना आगला भागमा
लघु नद्यावर्तनी स्थापना करवी नद्यावर्तना स्थाने मध्यभागमा रखणी स्थापना करीने ते सर्वनी पूर्वनी जेम पूजा करवी,
वरुणनी विशेष प्रकारे त्रण चार पूजा करवी

ते पळी त्रिकोणाकार त्रिकुडमा अमृत, मधु पायस अने विविध फलोवहे नन्द्यावर्तमा, स्थापित देवताथोना नाम मंत्रो ' प्र-
णवादि स्वाहान्त नामो यडे होम करवो, वरुणना नाम मत्र वडे ण सिवाय १०८ आहुतिओ वधारो देवी आहुति आपता
वयेल सर्वे जलाशयमां नाखतु,

ते पळी प्रतिष्ठाचार्य पंचामृतनो कलश ताथमां लेइ जलाशयमा तेनी धारा देता—

“ ॐ चं व च वं च वलपु वलिपु नमो वरुणाग्र समुद्रनिलयाय मत्स्यवाहनाय नीलाम्बरधराय अत्र जले
जलाशये वा अवतर २ सर्व दोषान् हर हर स्थिरी भव स्थिरी भव ॐ अमृतनाथाय नमः ।”

आ मंत्र ७ वाग भणो, एज मत्र भणीने तेमा पचस्त स्थापन करे अने ए मत्रपाठ पूर्वक नासक्षेप करी, जलाशयनी
प्रतिष्ठा करे

ते पळी जलाशयना द्वाराना उतरा, स्तम्भ, भित्ति, द्वारानी ज्त, आगणादिकनी प्रतिष्ठा ग्रह प्रतिष्ठाया कहेल ते ते मत्रो
वडे करवी

प्रतिष्ठा करतां पहेलां जलाशयनी पासे प्रतिष्ठा सूचक यूप ' यज्ञस्तंभ ' ना " ॐ स्थिराथै नमः " आ मंत्र वडे
स्थापना करवी.
वावडी, कुवा, तलाव, वहेळा-नहेर-झरणा-तलावडी, स्रोत धर्मादा जलाशय-कारणिक जलाशय, आदि कोइ पण जलाश-
यनी प्रतिष्ठा उक्तविधिशी कराववी.

॥ इति जलाशय प्रतिष्ठा विधि ॥

इतिकल्याणकलिका-प्रतिष्ठा पद्धतावयव । विधानाख्योऽग्रमत् खण्डो, द्वितयः परिपूर्णताम् ॥

भा०टी०—आ ग्रमाणे कल्याणकलिका प्रतिष्ठा पद्धतिमां आ विधि खंड नामक वीजो खंड समाप्त थयो.

इति तयागच्छाचार्य-श्रीविजयसिद्धिसूरिनिगदानुसारि-संचित्रश्रमणाचतंसश्री-
केसरविजयशिष्यपं०कल्याणविजयगणि-चिरचितायां कल्याण-

कलिकाप्रतिष्ठापद्धतौ चिधिनामा द्वितीयखण्डः समाप्तः ।



॥ कल्याण-कलिकायां, साधनखण्डः ३ ॥

परिच्छेद सूची—

चैत्यवन्दनसंदोहः १, स्तुतयो निखिलेशिनाम् २, पाठयोग्यस्तावा ३, स्तद्वत्स्मरण-मंत्रसंचयः ४ ॥१॥
प्रतिष्ठोपस्करा नाना-विधाः ५ खण्डे तृतीयके ॥

भा०टी०—चैत्यवन्दन सप्तुदाय १, चोवीश तीर्थंश्रोनी स्तुतिओ २, पाठ करवा लायक स्तोत्रो ३, सात स्मरणो तथा उप-
योगी मत्र संग्रह ४, अने अनेक प्रकारनी प्रतिष्ठानी सामग्रीनी वृचिओ ५ एम आ त्रीजा खंडमा ५ परिच्छेदोनो समा-
वेश कर्यो छे.

परिच्छेद १ चैत्यवन्दन संदोह—

प्रतिष्ठाय जिनस्याग्रे, देववन्दनहेतवे । चैत्यवन्दनसंदोहो, न्यस्तोऽयं निजनिर्मितः ॥२॥

भा०टी०—जे जिननी प्रतिष्ठा थइ होय तेमनी आगे देववन्दन करता ते जिननु चैत्यवन्दन करवानी विधि होइ प्रत्येक
जिन प्रतिष्ठा प्रसंगे देववन्दनमा काम लागे एटला माटे आ परिच्छेदमां अमोए स्मरचित चैत्यवन्दन चोवीसी लखी दीधी छे.

चैत्य वन्दन संदोहः—अपर नाम चैत्यवन्दन चतुर्विंशतिका ।

। १ श्रीऋषभ जिन चैत्यवन्दनम् (वसन्ततिलकापरनामकम् उद्दरिणी वृत्तम्) ।

श्रीनाभिराजकुलनन्दनकल्पवृक्षः, संग्राससर्वसुरपूल्यतमत्वपक्षः ।
 उच्छासयन् रविरिवाङ्घ्रिसरोजखण्डं, दिव्यात्स शर्मं वृषभो भवतामखंडम् ॥१॥
 त्रैलोक्यलोकचलनेत्रवक्रोर चन्द्रं, वैराग्यरङ्गरसमङ्गभयास्ततन्द्रम् ।
 संसारसिन्धुतरणायसुयानपात्रं, देवं नमामि ऋषभं प्रपवित्रगात्रम् ॥२॥
 येन श्रद्धितमशेषकलाकलायं, दुर्वोधजातदुस्तिौघकृतापलापम् ।
 स्मृत्याऽधुनापि जनता निजकार्यजन्मा-दुद्धर्षणीतिहरणोऽस्तु स नाभिजन्मा ॥३॥

। २ श्रीअजितनाथ चैत्यवंदनम् ॥ (जोडक वृत्तम्) ।

अजितं विदिताखिलवस्तुगणं, सगुणं वरशुक्तिचधूरमणम् । रमणीरजनीचरिकावियुतं, श्रणुतं श्रणताखिलसिद्धिकृतम् ॥१॥
 श्रपतन्तमवित्तिमरे मनुज-मनुजमकरन्तमहदुरुजम् । जनमानसमानसहंससमं, सषट्छित्तमं श्रणभाम्यसमम् ॥२॥
 विहितामरदानक्सेवनकं, कचक्रोज्वलनिर्मलविग्रहकम् । भक्तोदक ! तोटय मे दुस्तिं, समयोदितकर्करजो मिलितम् ॥३॥

। ३ श्रीसंभवजिन चैत्यवंदनम् । (उपजाति वृत्तम्)

श्रीसंभवो निर्दलितारिंभवो, विसंभवः शास्तविकारसंभवः ॥
 सशंभवश्रीद्वजितारि संभवः, शिणोतु तं योऽस्ति गदोऽरिसंभवः ॥१॥
 वृथैव मन्ये विदुषां नु भारती, यया न ते प्रक्रियते बुधैः स्तुतिः ।
 किं कल्पवृक्षोऽपि फलादिवर्जितः, फलैषिभिर्नो विबुधैर्वितर्जितः ॥२॥

न स्रग्धरा दृत्वसुखैरपि स्वय, सर्वैव सावयविवर्णकः रुचिः ।

लभेत सत्कीर्तिभरं यथा स्तुतम्, भवन्तमल्पैरुपजातिदृत्तकैः ॥३॥

। ४ श्रीअभिनन्दनजिन चैत्यवन्दनम् । (रथोद्धताष्टुत्तम्)

संभराख्य नराजनन्दन, देवराजविहिताभिनन्दनम् । धर्मदानजनताभिनन्दन, भक्तितोऽस्मि चिनतोऽभिनन्दनम् ॥१॥

भो जना । विषयलभचेतनै-भोजनादिसुखमिष्यते जनैः । तद्देव भवतापपीडितै-ज्ञानसाधनमसौ निषेव्यते ॥२॥

सेवनेन सतत जिनेशितु मोंहराजमदनौ प्रणेशु । सन्ध्या भयतु वोऽपि तद्गता, तद्गताल्लिखुगैरयोद्धता ॥३॥

। ५ श्रीसुमतिजिन चैत्यवन्दनम् । (हुतचिलम्बितष्टुत्तम् ।)

सुकृत-ल्लरिर्वर्धनवारिदि-प्रभमनल्यगुगस्य तवारिदि । वचनमर्तिहरं भित्तिारक, भवतु मेऽघहरं विगतारकम् ॥१॥

सुमतिमेघनरेन्द्रसमुद्भव ! विहितमर्वसुरासुसुद्भव ! । अय भवेद्धि भवान् मम तारणः, सजति चेद्भगवन् मम तारणः ॥२॥

दुतचिलचित्तससरणक्रम-मविरतं विदये सगुणक्रम ! । यदि रतिर्हि भवेद्भवदाश्रये, ध्रुवगति भगवन् ! नु तदाश्रये ॥३॥

। ६ श्रीपद्मप्रभजिन-चैत्यवन्दनम् (इन्द्रवज्रा दृत्तम् ।)

पद्मप्रमेऽभोजविशालनेत्रे, पद्मप्रभे भो दधता सुभक्तिम् । ये न प्रकृष्टत्वमुचः कदापि, येन प्रणष्टा ननु तेऽपि दोषाः ॥१॥

नाथ ! त्वया चेत्क्रियते जनोऽन्यो, धर्मोपदेशैर्ननु सुक्तरागः । त्वं रागयुक्तोऽसि कथं नु यद्वा, महात्म्यमेतत्त्वत्तु सर्ववित्त्वे ॥२॥

एकाकिनपि प्रहतास्त्वयोद्धा, मोहादय. कर्मबलियुयोद्धाः । स्यादिन्द्रवज्रा हतिरेकिकापि, नाशाय मौलेः कुलपर्ववादेः ॥३॥

१७ श्रीसुपाद्वर्चजिन-चैत्यवन्दनम् । (प्रहर्षिणी वृत्ताम्)
 पृथ्वीजं शिवपुरसार्थवाहनायं, चक्राणं प्रवलमनोभवप्रमाथम् ।
 कुर्वाणः स्तुतिलवगोचरे सुनाथं, कुर्वे स्वं निजगुणलालसासनाथम् ॥१॥
 देवेन्द्रैः प्रकटितभक्तिरागसारैः, संसारे पुरुषवरं हि मन्यमानैः ।
 यो मेमे विरतगणैश्च बद्धरागै-योनेमैऽविरतगतं स संरुणजू ॥२॥
 संप्राप्ते पुरमपुनर्भवाख्यमीशे, निर्नाथा विश्व विपादिता प्रकासम् ।
 नो चेत्संमृतसमदर्शनं प्रविश्वं, नो नूनं शुवि जनता प्रहर्षिणीयम् ॥३॥

१८ श्रीचन्द्रप्रभजिन-चैत्यवन्दनम् । (ललिता वृत्ताम् ।)
 चन्द्रग्रभं जनिविप्लुतसञ्जनं, चन्द्रग्रभं जनितहृष्टिमञ्जनम् । देवाधिदेवधिनतं स्वशक्तितो, देवाधिदेवमभिर्नामि भक्तितः ॥१॥
 तेजःप्रपन्नरविरूपरोचन-श्रेतःसरोजदलने विरोचनः । देयान्मति जिनपतिः सतामरं, यस्या जसुर्विभवानिर्जितामरम् ॥२॥
 लोको जहर्षे तथ दर्शनागमाञ्जानप्रकर्षललिताजिनागमात् । किं वा द्युजातमहसेननन्दन-शीघ्र ! क्षभेशमहसेननन्दनं ! ॥३॥

१९ श्रीसुचिधिजिनचैत्यवन्दनम् । (सुसुखीवृत्ताम्) ।
 कुतुकमिदं ननु पश्यत भो ! शुवि जनचित्तसाराजमिदम् । सुविधिजिनस्य मुखेन्दुरयं, कुवलयवद् विशदीकुरुते ॥१॥
 भवति न यस्य मनो रमते, भवति नरस्य न तस्य रतिः । किमु सुसुपादपपादभिदि, शशुदयमेति कदाऽप्यविदि ॥२॥

तव चरणंबुजवदरति-रीणधरन्मनुजः सुमतिः । भुवि जनतासु-शुद्धीभवति, भगवन्मया जनाभवति ॥३॥

। १० श्रीश्रीतलजिन चैत्यवन्दनम् । (चन्द्रवर्त्मवृत्तम्) ।

श्रीतलं जिनपति नम जन्ते । सगृहाण वरपुण्यमजन्तेः । एतदर्थममरा अपि सततं, पूजन विदधते दिवि सततम् ॥१॥

पूजयन्ति जिनदेवचरणा-नार्यलोकपथनिर्मितचरणाः । प्राणिना विधिवदादासंहितं, मन्त्रे च भुवि तत्त्वबु सद्धितम् ॥२॥

चन्द्रकान्तसमशीतवज्रजिन-चन्द्र ! वर्त्म सुगतेर्देददमलम् । मामनल्पमन्तिरहितमशरण, नाथ ! रक्ष दुरितादर्निशरणम् ॥३॥

। ११ श्रीश्रेयांसजिन चैत्यवन्दनम् । (शालिनी वृत्तम्)

स्फूर्जत्कान्तिचक्षस्तसारातान्ति-शञ्चच्छीलः श्रोच्चिताऽशस्तलीलः ।

श्रीश्रेयासः संचितान्तश्रमायः, कुर्यात्सोख्यं देवबन्धोऽस्तमायः ॥ १ ॥

विद्यावल्लीवर्धने चोरिवाहः, कैमल्याच्चप्रापणे शस्तवाहः । स श्रेयासः श्रेयसा यः सुखानि, सश्रेयान्, सश्रेयान्, संविधर्चा सुखानि ॥२॥

प्रत्यादर्शे श्रेयसो देवतस्य, बद्ध चित्तं येन पापं न तस्य । प्रत्याघातं संविधर्ते नरस्य, यस्मात् श्रेयः शालिनी भक्तिस्य ॥३॥

। १२ श्रीवासुपूज्यजिन चैत्यवन्दनम् । (स्वागता वृत्तम्) ।

वासुपूज्य कृतपुण्यकृतान्त !, हेलया विजितरागकृतान्त ! । योगिनोऽपि विनमन्ति भगवन्तं, के त्यजेयुरथवाशुभन्तम् ॥१॥

या चबाल निजनिधलमात्रात्, योगिनाथतिस्यविभावात् । यद्वशाविजयिन हरिसुनु, त जवान वसुपूज्यसुसुनुः ॥२॥

स्वागताप्रभृतिमद्वनिबन्धै-स्त्याः स्तुवन्ति कर्मयः शुचिबन्धैः । नो तथापि गुणवर्णनकृत्ये, पारस्यन्ति तव वर्णनकृत्ये ॥३॥

। १३ श्रीचिमलजिन चैत्यवन्दनम् । (मन्दाक्रान्ता वृत्तम् ।)

श्यामासुतो ! तववचः श्रेणिपीयूषधारा, वृसात्मानः प्रकृतिसुभगा मानवा मानधाराः ।

उत्पद्यन्ते विबुधभवनेपूत्तमेवूत्तमास्ते, यत्रानन्दप्रगलद्वरीप्रोच्छ्रमसौख्यमास्ते ॥ १ ॥

हेयाहियप्रकृतनविधौ वद्वलक्ष्यो नितान्तं, ज्ञानोद्योतेभुवि भवजिनं बोधयन् यो नितान्तम् ।

निश्चुक्तात्मा शिवसुखरतिः कर्मयोगैरपीडयः, सर्वज्ञोऽसौ जयतु विमलः सर्वेश्वरपीडयः ॥२॥ ।

संसाराम्भोनिधिनवतरी दुष्टमीनैरयक्ष्या, मन्दाक्रान्ता शमरा भैरुमतागैरलक्ष्या ।

दत्तानन्दा भुवि जययशो विस्फुरद्वैजयन्ती, सौख्यं सृतिः गुभग ! भवतो यच्छताद्वै जयन्ती ॥३॥

। १४ श्रीअनन्तजिन चैत्यवन्दनम् । (शुजङ्गप्रयात छन्दः)

अनन्तं जिनं पुण्यवन्तं सप्तन्तं, क्षिपन्तं कुकभौघमतिं हस्तम् । जनात् रजयन्तं रिपून् संजयन्तं, नर्माभीश्वरं तं वरं मुक्तिक्रन्तम् ॥१॥

सदा सिद्धिसौख्यप्रियधेयरूप, जितानङ्गरूपं श्रिया जातलभम् । मुनित्रातभृपं शमापास्रूपं, नमस्याम्यनन्तं जिनं योगिरूपम् ॥२॥

शुजङ्गप्रयाताऽध्वमुक्तं सुसूक्तं, जराजन्महीनं महानन्दलीनम् । हतप्रीतिनाथं कृताघप्रमाथं, श्रयेऽनन्तदेवं सुपुण्याप्यसेवम् ॥३॥

। १५ श्रीधर्मनाथजिन चैत्यवन्दनम् । (सज्जिणी वृत्तम् ।)

धर्मनाथं स्तुतप्रौढबुद्धान्वित-देवराजचितं यस्य पादद्वयम् । भव्यहंसैः श्रितं पुण्यगन्थाश्रितं, राजते पद्मशोभां परिह्रासयत् ॥१॥

धर्मनाथ ! त्वयोद्दिष्टधर्मं कृत-वर्तनाः कर्तनायोक्तद्वेषिणाम् ।

स्युर्जनाः सेव्यसे त्वं ततः स्वार्थिभिर्-देवराजासुरैःकेवलस्वार्थिभिः ॥२॥

सुग्विणी मक्तचेतस्तमश्चूरिका, पूरिका स्वर्गनि श्रेयसा संपदाम् । मूर्तिरेवविधा ते यशःसाधिका, दीयतां भद्रमानन्द वासाधिका ॥३॥

। १६ श्रीशान्तिजिन चैत्यवदनम् । (मालिनी वृत्तम्)

शिवपदमुखकारी कर्मविद्वेपिवारी, मदनमदविमेदी विश्वनस्त्वेकवेदी ।

भवजलधिचिशोपी पापवारप्रमोषी, दिशतु कुशलमीशः शान्तिनाथो सुनीशः ॥१॥

स्वहृदि धृतभवन्तः प्रास्तरागा भवतः । तव नतिशुभवन्तस्ते नराः पुण्यवन्तः ।

अतिशयसुखमार केमलालोरुमारं, परमपदमुदार यान्ति भग्या मुदाऽम् ॥२॥

प्रशमरसविषुष्टा नाशिताशेषदृष्टाः, जगति जनितन्त्रिवा पुण्यपेपैः पवित्रा ।

महिमजितममुद्रा मालिनी यस्य मुद्रा, स जयति जिनशान्तिर्निर्जित स्पर्णकान्तिः ॥३॥

। १७ श्रीकुन्धुनाथजिन चैत्यवन्दनम् । (कामक्रीडा वृत्तम्)

ससृत्तार विघ्नस्तारं श्रीदातार धातार, चंचच्छोभारम्य गम्यं योगीशानामीशानाम् ।

ससाराम्भोगिजि तीर्णं सौख्यार्कीर्णं विस्तीर्णं, वन्दे देव कृत्यासेवं कुन्धुं सार्वं सर्वज्ञम् ॥१॥

त्यक्तासार नानोदारं विश्वोद्धार विद्यार, स्फूर्जद्योगं मुक्तोद्द्योग भासा चन्द्रं निस्तद्वम् ।

संख्यायतं पुण्योदन्त कीर्त्या कान्तं सशान्तं, वन्दे देवं कृत्यासेवं सौधर्मेशं धर्मेशम् ॥२॥

आयुर्विद्युद्द्योताभं स-लीलांकीलाभामन्ते, चिन्ना विज्ञायाशु त्रीडा कामक्रीडा संप्रोद्ध्य ।

दुःखोद्रेकच्छेदच्छेकं भक्त्युद्रेकं विभ्राणा, देवाः सेवा यस्याऽर्चुर्न कुन्धुः कुर्यात्कल्याणं ॥३॥

। १८ श्रीअरुनाथजिन चैत्यवन्दनम् (हरिणी वृत्तम्)
जनितजनतानन्दं कन्दं महोदयत्रीरुथा-मविगतिगतिप्रीतिप्रौढिप्रयुक्तमगुर्वृथाः ।
यममशरणा लब्धोत्कर्षाः क्षण्यमनिन्दितं, म दिशतु शिवं वेनीयसुर्भवान्तमनिन्दितम् ॥१॥
अतुलजवना चद्रस्पद्मीः पुरापुरसायका, यद्भिगमनेन लब्धोत्कर्षाः भग्न्यविनायकाः ।
अरजिनपतेः पादद्वन्द्वं सगेजविक्रवर्गं, दलयतुतरं पाण्डुरं प्रभाजितभाचरम् ॥२॥
शुभमनिजनस्थानध्वान्तप्रणाजमभासरं, विदलितदरद्रेषाञ्जानं विगगगमादरम् ।
हृदयहरणैर्हो वैः शुब्धेतरं हरिणीदृशां, हृदयगमलं देवीकनोस्तनोत् सुनं विनाम् ॥३॥

१९ श्रीमल्लिनाथजिन चैत्यवन्दनम् । (वग्लुत्तम् ।)

अयि हितकारक ! मल्लिनाथ ! ते, चरणयुगं सुरपौर्जपि नायते । भवजलनाशायशक्तिमत्तरं, द्रुतमभितारय मामतः परम् ॥१॥
अयि नतवत्सल ! नापदां पदं, भवतिजनो भवतां श्रियः पदम् । किमु कृतकन्यमपीकृद्दर्शनः, समजनि दुर्गतकः कृद्दर्शन ॥२॥
भगदभिधाजपवद्रमानसे, ननु भुवि भव्यजनं यमानसे । नर ! तनुगादरमर्तिनाशनं, पदयिनरञ्च निर्वतनायनम् ॥३॥

२० श्रीसुनिसुव्रतजिन चैत्यवन्दनम् । (कनकप्रभा वृत्तम् ।)

सुनिमुव्रतस्य भवगार्थिधेः परं, तटमागतस्य तग्मा विधेः परम् ।
स्तवनां करोतु जनता शुभाशया, शिवगायनाभिरमिका शुभाशया ॥ १ ॥

प्रवश्यतापरमानभावित, भक्तिं करोति परभावभाषितम् । विमल यदीयचरणद्वयं सता विमला ददातु परमा रसा सताम् ॥२॥
कनकरुमभाव ! मधुदागमागम, मुक्तुतोदयेन भवदागमागम । ममपद्यतात्महितकारण मम भवनाशन भवतु तेन निर्मम ! ॥३॥

२१ श्रीनेमिजिन चैत्यवन्दनम् । (प्रमाणिका वृत्तम्)

सकर्णकर्णतोपिणी, हिताऽऽहिताऽधिसंस्कृतिः । सदा सदानैः सुरैः-सुता नु ताकिनी नृणाम् ॥१॥
नयानयादिराजिता-ऽगमैर्गमैर्गनीयसी । प्रमाप्रमाणपरिता, महर्षिर्हर्षिणी सदा ॥२॥
दयोदयोज्ज्वला मदाऽश्वयाऽश्यामिनी विशाम् । धियोऽधियोगकारिणी, भियोऽभियोगनाशिनी ॥३॥
यदीदृशीसरस्वती न रोचते सरस्वती । जनाय ते सुवर्णिका, जगदशा सुवर्णिका ॥४॥
नमे न मे प्रमाणिका, नरस्य वीस्तदीदृशः । मत मत विपर्यय-प्रसाधन तु धीदृशः ॥५॥ पवभिः कुलरुम् ।

। २२ श्रीनेमिजिन चैत्यवन्दनम् । (पचचामर वृत्तम्)

क्षण निरीक्ष्य वीक्षणैः प्रतिक्षण क्षयान्निभं, क्षण यदप्रतीक्षितं क्षमेशमण्डलं । धितौ ।
असारसंसृदुद्भ्रनातिभीतिभागजनो यमा-श्रयेद्विताय भक्तिस्तमानतोऽस्मि नेमिनम् ॥१॥
कुरङ्गरङ्गभङ्गभीरुताभावभारित ! निर्दर्शनी भवन् दयालुताञ्जुषा त्रिशा धुरि ।
विनाहवाहवाहनवरुद्रराज्यहायक ! । भन्तमीदृश दयालुमाश्रितोऽस्मि रक्ष माम् ॥२॥
जयाभिलाषि वाजिराजिराजिराजराजिता, ऽयंच ! चामरालिशोभिपार्थ ! पार्थगावन ।
यदुल्लान्वयानुराञ्चिभागनाऽञ्जभासुर !, विधेहि मा भवान्गुधेस्तटानुयायिन विभो ! ॥३॥

। २३ श्रीपाह्वर्जिन चैत्यवन्दनम् । (शिवरिणी वृत्तम्)

सदा शुद्धामूर्तिर्मदनमदमोहादिविकला, कलाऽपूर्वा वाक्ये सतत्सुमदविद्यान्तकरणे ।

रणे रंगो नित्यं विततभवभावारिनिधने, धने मूर्छित्यागः वसतरसुवर्णादिनिकरे ॥१॥

करे शस्त्राभावो जनितजनसंतापशमनो, मनोऽर्ष्वेध्यानस्थगितनिखिलाऽज्यद्यविवरम् ।

वरं धर्मस्थैर्यं भुवनविदिता काऽपि समता, मता मत्वां मैत्री तनुसदधिवात्सल्यसहिता ॥२॥

हिताधाना एतेऽतुलस्रुद्धतसंभारजनितां, नितान्तं राजन्ते भवति सुगुणा पात्रं ! सुतपः ।

तपस्त्रस्यच्छैत्यं किरणविसराऽस्ताऽज्यधतमसं, मसं मोघीकुर्वन् नवरचिरिव प्राक्शिवरिणि ॥३॥

। २४ श्रीवीरजिन चैत्यवन्दनम् । (शार्दूलविक्रीडित वृत्तम् ।)

वीरः सर्वहितः सदोदितसुखं, वीरं जनान्निः श्रिता, वीरेण ग्रचिताडितारिपुततिर्वीराय धत्ते नत्तिम् ।

वीराद्विश्वमहोदयो धृतजयो वीरस्य वीर्यं महत्, वीरे विस्वततां गता गुणलता वीर ! प्रदेयाः शिवम् ॥१॥

योमुषित श्रियमातनोति गुह्यशं यं स्वर्गनाथा नताः, येनाग्नेद्यविशेषधर्मनिकरो यस्मै जनः श्लाघते ।

यस्माद्दुगुणसंततिर्गतवती यस्य प्रपूतं वचो, यस्मिन्पद्मज्जकोमलेजनमनो भृङ्गोपमं लीयते ॥२॥

स श्रीवीरविभुर्भवत्वसुखदृचं देवतं संश्रये, तेनास्मि प्रभुणा सनाथगणनस्तस्मै नति संदधे ।

तस्मान्नास्ति परः प्रभादिनकरस्तस्यांघ्रियुगं स्तुवे, तस्मिन्नेव च कर्मदन्तिदलने शार्दूलविक्रीडितम् ॥३॥ युग्मम् ॥

अङ्गर्पिनवभूर्वर्षे, पादलिप्रपूरे वरे । कल्याणविजयेनेयं, चतुर्विंशतिका कृता ॥

॥ २ परिच्छेदः—चतुर्विंशतिजिनस्तुतयः ॥

वेद्युगमजिनस्तुति—चतुर्विंशतिकाद्वयम् । पूर्वार्चार्थप्रणीतं यद्; वन्दनार्थं निवेशितम् ॥३॥

भा०टी०—बोधीस जिननी स्तुतिभोनी पूर्वाचार्यप्रणीत वे स्तुतिचोवीशीओ देववन्दनमा उपयोगी थाय ए अभिप्राययी आ परिच्छेदमा लीधी छे

॥ अज्ञातकर्तृक-प्राकृतचतुर्विंशतिजिनस्तुतयः ॥

- (१) जा चामीयरकतिक्रायकलिओ जो सोमसोमाणणो, जो नीलुप्लपन्नवन्नयणो जो लोयणाणदणो । जो ससारममुदुत्तराणतरी जो तारहारुञ्जलो, सो नाभेयजिणो जगुत्तमजसो दिज्जा सुहं सासय ॥१॥
- (२) उक्खित्तामलकुमभासुररुग्गा दिप्पतंदहप्पहा, सेले हेममयमि भत्तिभरिया वत्तीसदेवेसरा । नाणात्तूरखोहपूरियनहा न्हाविसु जं सो जिणो, अद्दहाण जियमतुरायत्तणओ दिज्जाडजिओ मगल ॥२॥
- (३) जे चक्कुसपरुयंक्रियतला जे सोणपीणगुली, जे आयनहप्पहापरिगया जे कुम्भजभुन्नया । जे मावेण य पाणिरुप्पत्तणो जे पूयपवोदया, ते पाया जिणसंभस्सम सरण मे हुत्तडसंताभया ॥३॥
- (४) जो संकंदणविन्दियपओ मवंगचगप्पहो, सिद्धत्थामणमोयणो मुणिजणासेविज्जमाणकमो । लोयालोयविलोयणोवममहानाणो चउत्थो जिणो, हुज्जा मे अभिनदणो पडदिणं कल्लाणमालाकरो ॥४॥

- (५) गव्मे जग्मि गयमि निग्मलगुणे नाणं धरंते तहा, लोयालोयपहाकरे दसदिसोज्जोयं कुणंते खणा । जाया पुव्वदिमव्व इत्ति जणणी अंतोवहि चुज्जला, सो देवो सुमई विहेउ सुमई भव्वाण भव्वाणणो ॥५॥
- (६) जो त्थंवेरमहत्थसुत्थिययुओ भासंतभासंडलो, रचासोयपवालकोमलकरो विच्छिन्नवच्छत्थलो । लच्छीक्किच्चिकरो नरोरागथुओ देवीसुसीमासुओ, हुज्जा मे परिपक्कविदुमवणच्छाओ सु छट्ठो जिणो ॥६॥
- (७) उग्मीलंतमहंतकांतिकविसा सिज्जंतवोसंगणा, सीसे जस्स सहंति फारमणिणो पंचप्पमाणा फणा । सोऽभिकंदि यभीसणाऽसमसरो रोसग्गिनिग्गाहगो, अग्घाणं सुमणोरहो फलकरो होज्जा सुपासो जिणो ॥७॥
- (८) निच्चं चंदपहापहासुरतणू, कप्परूरोवमं, पचो किच्चिमपारभीसणभवाक्खुपारपारं गओ । चंदको नवचंदनिग्मलगुणो चंदप्पहो सो जिणो, भंदं देउ भचारिसाण भयवं निहंतथंतोदओ ॥८॥
- (९) जो पुप्फुज्जलदंतपत्तिकलिओ जो चंदकुंडुज्जलो, जो लोहनवंबाडवग्गिसरिसो जो वारिवाहारवो । जो सोवंनियंपकयंकियकमो जो मोहमेहानिलो, अग्घाणं सुविही विहेउ नवमो तित्थंकरो सो सुइं ॥९॥
- (१०) नीहारोदगचंददणसुहा सीयंति गव्वभट्टिए, दाहो देहगओ खणेण पिउणो जत्थोवत्थंति गओ । नंबाणंदकरा जिणो स दसमो संसुद्धमकंदकीलणकरो हुज्जा स मे सीयलो ॥१०॥
- (११) भव्वंभोरुहवोहणे दिणमणी तेल्लक्कचूडामणी, जो जाओ नियवंसमत्थयमणी सोहग्गसोयामणी । कंदरुप्पुव्वभडसपनागदमणी थोयारचित्तमणी, सिज्जसो स जिणो महोदयगुणो सेयं समप्पेउ मे ॥११॥

- (१२) पापुक्कामलोयसेभवमुहा संभूय भदो, (दो) जिणो, भंदारामलमालियाहि तइया पूएह जं वासवो ।
जो निच्चाणनिवासवासवसमो मोहंधयारे स्वी, भइ देउ दुवालसो गयसलो सो वासुपुंजो जिणो ॥१२॥
- (१३) जो संसारमल्लयलमि चिसमे कपुदुमो पाणिणं, जो दुक्खोदहिमज्झमज्जिरजुत्तारंमि पोओ दिढो ।
जो मोहवज्जणंजणोमममहासिद्धतससाहगो, मालिन्नं विमलोऽवणेउ स जिणो मे तेसो निम्मलो ॥१३॥
- (१४) जोऽणताण दुहदुमाण दहणो दिपंपतदावानलो, गाढाणगपयंगमगरणे जो तीचन्दीवोवमो ।
जो ऽणतेण सुहेणंणंतयजिणो जुत्तो जंशुओयणो, पाणेण च जणेउ तुम्ह विउलं सुक्खाण सो संचयं ॥१४॥
- (१५) समं कम्ममहामहोहरसिहासहारदमोलिणा, धम्मो जेण महीयले पयडिओ निच्चाणसुवक्खणी ।
मज्जंताण भवज्जकूपकुहरे जंतूण रज्जूममो, मो धम्मो जिणपुगओ भयहरो मे होउ पन्दासो ॥१५॥
- (१६) देवीए अडाइ कुच्छिक्कमले हंसंमि जमि ट्टिए, सच्चडाउ चुए गयासिवभयं सब्वपि जायं जयं ।
चचालीसणूंमिओ मियजसो तित्थकरो सोलसो, सो मे मोहमलं दलेउ सयलं सती पंमंतासुहो ॥१६॥
- (१७) कुयू हत्थिपसत्थमंधरगई कुयू पसत्थोवमो, कुयू दुत्थियसत्थसुत्थियकरो कुयू थिरत्थागमो ।
कुयू यथ (धत्थ) समत्थमोदपडलो कुयू महत्थत्युई, कुयू घोरमडो जए य विजए सत्तासो सो जिणो ॥१७॥
- (१८) मोहच्छेयंकरो जरामरहरो संसुत्थिकिच्चीभरो, भग्गाणंगसरो विमुक्कंसमरो विच्चाणनाणागरो ।
तेलुक्किक्किदिवाकरो गुणंकरो जो पक्कंविवाहरो, नाणावुज्झ(वुज्ज)करो अरो जिणवरो मे होउं अट्टारसो ॥१८॥

- (१९) जो उदंडसिंहडमंडलगणच्छायाणुरुवच्छवी, निचुल्ला धवलेइ जस्स सयलं किच्चीधरिच्चीतलं ।
हेलं मूलिय (वज्ज) वह्निवलओ निग्मुल्लसोहाभरो, निन्नासेउ सकम्मजल्लससंमं मल्ली महल्लोदओ ॥१९॥
- (२०) जो मोहंजणुंजरेहिरतणू लावन्ननीलागरो, कुम्मंको नवंपंकोओवममहासोह्वगसीमामही ।
अग्हाणं मुणिसुवधओ थिरवओ निस्सीमहेमचओ, सो सामी हरिवंसमत्ययमणी हुज्जा पसन्नो सया ॥२०॥
- (२१) दिट्ठे जंमि सिमुत्तणंमि पिउणो सामंतमंताइणो, पच्चंता पणमंतसीसक्रमला पत्ता विणीयत्तणं ।
सा अच्चवधुअभावरंजिअओ नीलुपल्लंओ नमी, निग्धाएउ वणं मणे समलिंगं मे इक्कीसो जिणो ॥२१॥
- (२२) जेणेरावणकुंभविबभमथणी संसारसुवखक्खणी, नीलिंदीवख्लोयणी पइदिणं वट्टंति संयोइणी ।
मुक्का राइमई मणोभवमई सा उगसेणंगया, सो नेमि मम माणसागलसरे होज्जा मरालोवमो ॥२२॥
- (२३) देहो वत्तविन्नपन्नफणाच्छेण छन्नंवरो, सामासागसरीरओ रयतमोयुको रायुक्कोसओ ।
वग्ग्माए विसुओ सुयामरनईनीहारसेलोवमो, सो पासो भवपा(वा)मपासयसमं सज्जो पसाहिज्ज मे ॥२३॥
- (२४) वामंगुट्टलेण जेण चलिए मेरुंमि जाया गही, हल्लंताचलसंचया ससिहरा इल्लंज्जलंतोदहि ।
तेलुक्किक्कपरिक्कमं महिहरासीरं गहीरं जणा ! तं वीरं णमेह मोहपमं दुक्खविगउल्लहावणे ॥२४॥

॥ सत्तरीसय जिन्स्तुतिः ॥

जे रिट्टंजणसंनिगासतणुणो जे कीरकायप्पहा, जे चालारुणासोणचारुइणो जे कंचणुक्केभा ।
जे कंबुजलकंतिणो समहिआ ते सत्तरीए सयं, सब्बविखत्तधिवत्तिणो जिणवरा मे हुंतु खेमंकरा ॥२५॥

॥ सर्वजिनस्तुतिः ॥

किञ्चिद्दीप्तमश्छपछपचओ पुष्पाण बुद्धीकरा, महो महकरो निसाकराकाराण्णहा चामरा ।
सीदालंरियमासण तणुपहापूरो तथा दृढुद्दी, रमं छत्तियं च जेसि सुहया ते संतु तित्येसरा ॥२६॥

॥ तीर्थस्तुतिः ॥

नीसेसुत्तमपुन्नपुजकलिया पानति ज जतुणो, मत्तो जमसद्युग्भवे प क्रमसो सव्या सुहासंपया ।
कक्षाणागलिवह्निंकंदसरिम समोहसेलासणी, तित्य तित्यकराण दुय्यदलणं सिंगं भवेजा मम ॥२७॥
॥ वैयावृत्यकरस्तुतिः ॥

जे तित्यंकरमंदिरेसु महया तोसेण क्रिञ्चे स्या, सथे मव्यगुणापरंमि सहिय दावंति मत्त च जे ।
जक्खंमासुयखिचंदेविपग्गहा सञ्जे हि सव्यापरा, वेयाक्कचका सुरा भयहरा ते हृत्तु मे निच्छय ॥२८॥

॥ श्रीचर्मघोषहृरिविरचिताः श्रीचतुर्विंशतिजिन स्तुतयः ॥

- (१) जय द्रुपथ जिनाधिपृथसे निम्ननाभि-जडिमरमिसनाभियै सुपर्वाङ्गनाभिः ।
तम इह किल नामिसोणिभृत्यनुनाऽभित्तुभुवनमनाभि धान्तिसपत्कुनाभिः ॥१॥
- (२) प्रकटितट्टारूप ! त्यक्तनिःशेषरूप-प्रभृतिनिययरूप ! चात विश्वस्वरूप ! ।
जय चिरमरूप ! पापपद्माम्बुरूप ! त्वमजित ! निजरूपमास्तसज्रातरूप ! ॥२॥

- (३) जय मदगजवारिः संभवान्तर्भवारि, व्रजभिदिह तवारिश्रीर्न केनाप्यवारि ।
यदधिकृतभवारिस्त्रिसनः श्रीभवारिः, प्रशमशिखरिवारि प्राणमद्दानवारिः ॥३॥
- (४) अकृतशुभनिवारं योऽत्र रागादिवारं, सुविनतमघवारं संवरोद्भुः सुवारम् ।
मदनदहनवारं दोलितान्तर्भवारं, नमत सपरिवारं तं जिनं सर्ववारम् ॥४॥
- (५) तव जिन सुभते न प्रत्यहं तन्यते न, स्तुतिरिति सुभतेन कृतमोनिष्कृतेन ।
यदिह जगति तेन द्राग् मया संभतेन, शुभमितदुरितेन श्रीश भाव्यं हितेन ॥५॥
- (६) परिहृतनृपपद्म ! श्रीजिनाधीश ! पद्मप्रभ ! सदरुणपद्म द्युत्तपोहंसपद्म ! ।
त्वदखिलभविष्यन्नत्रातसंनोधपद्म ! स्वजन ! गतत्रिपद्मय्येदु शर्माङ्कपद्म ! ॥६॥
- (७) दुरितमिभगमोऽहं-पूर्विकाचर्यक्रमोऽहं-र्यसमतमशमोऽहंकारजिघ्रः समोहम् ।
कृतकरणदम्भो हन्तास्तलोभं सुमोऽहं-मतिहृतमसमोहं तं सुपाशै तमोहम् ॥७॥
- (८) समयवृणसणिभात्र ! ज्ञातनिःशेषभावा ! ग्रहतसकलभावप्रत्यनीकप्रभावा ! ।
कृतसदपरिभावा ! श्रीश ! चन्द्रप्रभावा ! द्विजपतितनुभावा ! त्यक्तकामस्वभावा ! ॥८॥
- (९) जिनपति सुविधे ! यः स्याच्चदाज्ञाविधेय-प्रवण इह विधेयः प्रस्तुरद्भागधेय ! ।
त्रिजगदनपिधेय श्लाघ ! सन्नामधेयः, श्रयति शुभविधेयस्तं लसद्गूधेय ! ॥९॥

- (१०) य इह निहतकाम मुक्तराज्यादिकामं, प्रणतसुर ! निकाम त्यक्तसद्भोग ! कामम् ।
नमति स निजकाम शीतल ! त्वा प्रकामं, श्रयतकि तमकामं सार्विका श्रीः स्वकामम् ॥१०॥
- (११) विषमविशिलदोषा चारि चारप्रदोषा, प्रतिविधति सदोषाप्यस्य किं कालदोषा ।
य इह वदनदोषापचिपाश्यालिदोषा-उत्तुकमलमदोषा श्रेयसा शस्तदोषा ॥११॥
- (१२) कृतकृतचिधान सत्वरक्षावधान, विहितदमविधान सर्वलोकप्रधानम् ।
असमशमनिधान श जिनं संदधान, नमत सदुपधान वासुपूज्याभिधानम् ॥१२॥
- (१३) भवदचजलनाह कर्मकुम्भाघवाहः, शिषपुरपथनाहस्त्यक्तलोक प्रवाहः ।
विमल ! जय सुवाहः सिद्धिकान्ताविवाहः, शमितकरणवाहः शान्तवृद्धव्यवाहः ॥१३॥
- (१४) जिनवर ! विनयेन श्रीश ! शुद्धाशयेन ! प्रवरतरनयेन त्वं नतोऽन्त ! येन ।
भविकमलचयेन स्पृजैर्दुर्जस्वयेन, द्विरदगतिनयेन त्येन भाव्यं सयेन ॥१४॥
- (१५) जडिपरविसधर्मन्नुक्तदानादिधर्म !, त्रुटितमदनधर्म ! न्यक्तताऽप्राज्ञधर्म ! !
जय जिनवर धर्म ! त्यक्तसंसारिधर्म ! प्रतिनिगदितधर्मद्रव्य मृल्यार्थधर्म ! ॥१५॥
- (१६) यदि नियतमशान्ति नेतुमिच्छोपशान्ति, समभिलषत शान्ति तद्विघाप्याप्तशान्तिम् ।
प्रहतजगदशान्ति जन्मतोऽप्याचशान्ति, नमत विन्तशान्ति हे जना ! देवशान्तिम् ॥१६॥

- (१७) ननु सुखरनाथत्वं न नाथे नृनाथ-त्वमपि विगतनाथः किं त्वहं कुन्धुनाथ ! ।
प्रकुरु जिनसनाथः स्यां यथाऽघोपनाथ, प्रणतविबुधनाथ ! प्राज्यसच्छीसनाथ ! ॥१७॥
- (१८) अवगमसवितारं विश्वविश्वेजितारं, तत्तुरुचि जिततारं सद्यसासन्द्रतारम् ।
जिनमभिनमतारं भव्यलोका ! अतारं, यदि पुनरवतारं संसृती नेच्छताऽस्य ॥१८॥
- (१९) अनिशमिह निशान्तं प्राप्य यः सन्निशान्तं, नमति शिवनिशान्तं मल्लिनाथं प्रशान्तम् ।
अधिपमिह विशां तं श्रीगता चावशाऽन्तं, श्रयति दुरितशान्तं प्रोज्झ्य नित्यं वशान्तम् ॥१९॥
- (२०) न्यदधत ममवा सत्प्रोच्छसच्छुद्धवासः, परिहृतगृहवासस्यास्रके यस्य वासः ।
विहितशिवनिवासः प्रत्तमोहप्रवासः, स मन इह भवासः सुव्रतो मेऽध्यवास ॥२०॥
- (२१) समनमयत बालः शात्रवान् योऽप्यबाल-प्रकृतिरभितवालः सस्तरुकचक्रवालः ।
जयतु नमिरबालः सोऽधरास्तप्रवालः, श्रसित्तविजितवालः पुण्यवल्लयालवालः ॥२१॥
- (२२) जितमदन सुनेमे नाऽतिशं नाथ नेगे, निरुपशमिनेमे येन तुभ्यं विनेमे ।
निकृतिजलधि नेमेः सीरमोहदु नेमे, प्रणिदधति न नेमे तं परा अप्यनेमे ॥२२॥
- (२३) अहिपतिवृत्तपार्थं छिन्नसंमोहपार्थं, दुरितहरणपार्थं संनमद्यपार्थम् ।
अशुभतम उपार्थं न्यत्कृताभं सुपार्थं, बुजिनविपिनपार्थं श्रीजिनं नौमि पार्थम् ॥२३॥

(२४) निदशत्रिद्विमान मत्तद्दस्ताङ्गमान, डलितमदनमान संदुग्णैर्बर्धमानम् ।
अनवरतममान क्रोधमत्स्यस्य मान, जिनवरमममान सस्तुवे वर्धमानम् ॥२४॥
जिन ! तत्र गुणकीर्ते विश्वनिघ्नस्तकीर्ते, त्रिगलदपरकीर्तियद्गिरा धर्मकीर्ते ।
सितकरसितकीर्तेः शुद्धधर्मककीर्ते, स्तुतिमहमचिकीर्ते ता कृतानङ्गकीर्तेः ॥२५॥

॥ सर्वजिनस्तुतिः ॥

त्रिगलितवृजिनाना नौमि राजीं जिनाना, सरसिजिनयनाना पूर्णचन्द्राननानाम् ।
गजवरगमनाना गरिगाहस्वनाना, हतमदमदनानां मुक्तजीनासनानाम् ॥२६॥

॥ श्रुतस्तुतिः ॥

अविकलकलतारा प्राणनाथांशुतारा, भजलनिधितारा सर्वदाडविप्रतारा ।
सुतरपिनता रात्नाहंतो गीर्ततारा-दनेवस्तमितारा ज्ञानलक्ष्मीं सुतारा ॥२७॥

॥ देवीस्तुतिः ॥

नयनजितकुक्षीका सुधरोचिरज्ञी, मिह क्रिल मुहुङ्गी कृत्य चितान्तरज्ञी ।
स्मरति हि सुचिर गीर्देन्तां यस्तज्ञी, कुरुत इममं गीत्यादिकृद्वन्धुरगीः ॥२८॥

३-परिच्छेदः (स्तुति-स्तव-संत्राः)

प्रतिष्ठाविधिसंवेन्धाः, स्तुति-स्तवाः त्समन्त्रकाः । अम्मासार्थं विधिभृतां, परिच्छेदऽत्रवर्णिताः ॥४॥

भा०टी०—जे प्रतिष्ठा विधिमां उपयोगी छे अथवा तो जेमनो प्रतिष्ठा विधि साथे संबंध छे, एवी स्तुतिओ सवो अने मंत्रो विधिकारोना अभ्यासार्थं आ परिच्छेदमां दाखल करेल छे,

(१) विधिमां कराता देववन्दननी स्तुतिओ—

१-श्रीशान्तिः श्रुतशान्तिः प्रशान्तिकोऽसावशान्तिसुपशान्तिम् ।

नयतु सदायस्य पदाः सुशान्तिदाः सन्तुषन्ति जनै ॥

२-सकलार्थसिद्धिसाधन-बीजोपाङ्गा सदास्फुरद्गुपाङ्गा । भवतादनुपहृतमहा-तमोपहा द्वादशाङ्गी वः ॥

३-श्रीचतुर्विधसंधस्य, शासनोन्नतिकारिणी । शिवशान्तिकरी भूयाच्छ्रीमती शान्तिदेवता ॥

४-या पातिशासनं जैनं, सद्यः प्रत्यूहनाशिनी । साभिप्रेतमसृद्धयर्थं, भूयाच्छासनदेवता ॥

५-यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रिया । सा क्षेत्रदेवता नित्यं, भूयान्नः सुखदायिनी ॥

६-चतुर्भुजा तडिङ्गर्णा, कमलाक्षी वरानना । भद्रं करोतु संघस्याऽच्छुषा तुरगवाहना ॥

७-संधेऽत्र ये गुरुगुणौघनिधे सुवैया-वृत्यादिकृत्यकरणैकनिबद्धकक्षाः ।

ते शान्तये सह भवन्तु सुराः सुरीभिः, सद्दृष्टयो निखिलविघ्नविघातदक्षाः ॥

८ मकरासनमामीनः, कुलिशांकुशपाणि-चक्रपाशशयः । आशामाशापालो, विक्किरतु दुरितानि वरुणी वः ॥

९-रुरेतु शान्ति जलदेयताऽमौ, मम प्रतिष्ठाविधिमाचरिष्यतः ।

आत्रास्यतो वा मम चारि तल्लते, प्रसन्नचिन्ता प्रदिशन्त्वनुजाम् ॥

१०-यदधिष्ठितजलविमलाः, मरुलाः सकला जिनेश्वरप्रतिमा । सा जलदेवी पुरसद्य-भूसुजां मंगल देयात् ॥

११-उपमर्गवलयविलयन-निरता जिनशासनायनैकरताः ।

दुतमित्त्व समीहितकृते, म्युः शामनदेवता भवताम् ॥

१२-ज्ञानादिगुणयुनानां, नित्य स्वाध्यायसयमरताना । विदगतु भवनदेवी, शिव मदा सर्वसाधूनाम् ॥

१३-अम्पा बालाङ्गिताङ्गाऽसौ, सौख्यलयाति दधातु नः । माणिमयरत्नालकार-चित्रसिद्धासनस्थिता ॥

१४-उन्मृष्टरिष्टदृष्ट-ग्रहगतिद्वृ-रज्जुनिमित्तादि । संपादितहितसपन्नामग्रहणं जयति शान्तेः ॥

१५-अहस्तनोतु मश्रेयः, श्रिय, यद्ग्रहानतो नरैः । अप्यैन्द्री सकलाऽह्नि, रहसा महमौल्यत ॥

१६-ओमिति मन्ता यन्नामनस्यनन्ता सदा यद्विश्च । आश्रीयते श्रीयते ते, भवतो भवतो जिनाः पान्तु ॥

१७-नवतत्त्वयुता त्रिपदी-श्रिता रुचिज्ञानपुण्यशक्तिमता । वरयमंकीर्तिविद्या-नन्दाऽऽस्या जैनगीर्जयिता ॥

१८-पालमन्तरिक्ष, भवन वा या ममाश्रिता नित्यम् । माऽत्रावतरतु जैनीं, प्रतिमामधिचामना देवी ॥

१९-विन्धाशेषसुवस्तुपु, मन्त्रैर्याजन्त्रमधिवमति वमतौ । सेमामवतरतु श्री-जिनतनुमरिवासना देवी ॥

२०-प्रोत्फुल्लकमलहस्ता, जिनेन्द्रचर भवनसंस्थिता देवी । कुन्देन्दुशुक्लवर्णा, देवी अधिवासना जयति ॥
 २१-यदधिष्ठिताः प्रतिष्ठाः, सर्वाः सर्वास्यदेसु नन्दन्ति । श्रीजिनचिम्बं' सा विशतु, देवता सुप्रतिष्ठामिदम् ॥
 २२-जइ सगणे पायले, अहवा खीरोदहिम्मि कमलबणे । भयवह करेहि सत्तिं, सन्नज्झं सयलसंघस्स ॥
 २३-अट्टविहकम्मरहियं, जा चंदइ जिणवरं पयत्तेण । संघरूप हरउ डुरियं, सिद्धा सिद्धाहया देवी ॥
 २४-सर्वे यक्षाग्बिकाद्या ये, वैयावृत्यकराः सुराः । क्षुद्रोपद्रवसंघातं, ते द्रुतं द्रावयन्तु नः ॥
 सूचना—प्रत्येक विधान प्रसंगे कराता देवन्दनमां प्रतिष्ठाप्य जिनस्तुति अने ते पत्नीनी वे एम ३ स्तुतिओ कहेगाइ गंगा पत्नी सिद्धाणं बुद्धाणं बुद्धाणा कायोत्सर्गान्ते शान्तिनाथ आदिनी स्तुतिओ कहेवाय छे. कदापि अधिकृतजिनस्तुति याद न होय तो “ अहस्तनोतु स० ” इत्यादि स्तुतिओ कहेवी.

(२) स्तवोः—

१-पंचपरमेष्ठि-सहास्रनवः । (नञ्रपंजरस्तोत्रम्)

परमेष्ठिनमस्कारं, सारं नवपदात्मकम् । आत्मरक्षाकरं वज्र-पञ्जराभं स्मराम्यहम् ॥१॥
 ॐ नमो अरिहंताणं, शिरस्कं शिरसि स्थितम् । ॐ नमो खव्व सिद्धाणं, सुखे सुखपुटं वरम् ॥२॥
 ॐ नमो आयरियाणं, अंगरक्षातिशायिनी । ॐ नमो उवज्जायाणं, आयुधं हस्तयोर्दडम् ॥३॥

१ “ जेतं चिम्बं ” इत्यपि पाठान्तरम् ।

ॐ नमो लोए सव्वसाहूण, मोचके पादयोः शुभे । एसो पंचनमुक्कारो, शिला वज्रमयी तले ॥४॥
 सव्वपावप्पणासणो, वप्पो वज्रमयो वहिः । मगलाण न सव्वेसि, खादिरांगारखातिका ॥५॥
 स्वाहान्त च पदं ज्ञेय, पढम हवड भगल । वप्पोपरि वज्रमयं, पिधान देहरक्षणे ॥६॥
 महाप्रभावा रक्षेय, धुद्रोपद्रवनाशिनी । परमेष्ठिपदोद्भूता कथिता पूर्वसूरिभिः ॥७॥
 यश्चैव कुरुते रक्षा, परमेष्ठिपदैः सदा । तस्य न स्याद् भयं व्याधि-राधिश्चापि कदाचन ॥८॥

२-श्रीपार्श्वनाथस्तवः-

ॐ नमः पार्श्वनाथाय, विश्वचिन्तामणीयते । ह्रीं धरणेन्द्रवैरोटया-पद्मादेवीयुताय ते ॥१॥
 शान्ति-तुष्टि-महापुष्टि-वृत्तिकीर्तिविधायिने । ॐ ह्रीं द्विद्व्यालकेसाल,-सर्वाधिग्याधिनशिने ॥२॥
 जयाऽजिताख्या विजया-ख्यापराजितयान्वितः । दिशापालैर्ग्रहैर्हयक्षै-विद्यादेवीभिरन्वितः ॥३॥
 ॐ असिआउसाय नम-स्तत्र त्रिलोस्यनाथताम् । चतुःपष्टिसुरेन्द्रास्ते, भापन्ते छत्रचामरैः ॥४॥
 श्रीशशेश्वरमण्डन-पार्श्वजिन । प्रणतकल्पतरुकल्प ! । चूरय दुष्टघात, पूरय मे वञ्छित नाथ ! ॥५॥

३-श्रीपार्श्वनाथस्तोत्रम्-

तं नमह पासनाह, धरणिदनमस्तिअं दुहचिणास । जम्स पभावेण सया, नासंति उवद्धवा बहवे ॥१॥
 पदं समरताण मणे, न होड वाही न तं महादुक्ख । नाम चिअ मतसम, पयड नत्थित्थ संदेहो ॥२॥

जलजलणवाहिसम्प-सोहचोरारिसंभवे त्विष्यं । जो सरह् पालनाहं, पदवह न कथा भयं तस्स ॥३॥
इहलोग्दी परलोग्दी जो सरह् पालनाहं तु । तं तह भिज्जह त्विष्यं, इय नाहं सरह् भगवंतं ॥४॥

५ परसेष्टिसनदः

ओमितिनमो भगवओ, अरिहत-सिद्धायसिय-उवज्जाय । वरसव्यसाहु सुणिसंघ-धम्मसित्थप्पवरणस्स ॥१॥
सप्पणवनमो तह भगवह्-सुवदेवयाह् सुहयाए । भिचसंनिदेवयाणं, भिचपवयणदेवयाणं च ॥२॥
इंदागणिज्जनेरइय-वरुणवाउ कुवेरईसाणा । दंभो नाशुत्ति दसण्ह-भवि च सुदिसाण पालाणं ॥३॥
सोम-यम-वरुण-वेसमण-वासवाणं तहेव पंचण्हं । तह लोणपालयाणं, खुराइगहाण य नचण्हं ॥४॥
साहंतरस्स समकखं, मज्जमिणं चैव धम्मणुहाणं । सिद्धिसविग्धं गच्छउ, जिणाह्नवकारओ धणीयं ॥५॥

५—श्रीनक्षत्ररिचितं-सप्ततिशतयंत्रमन्त्रः

“ पणमिय सिसंतिजिणं, धुगामि अंकेहि अरिहसत्तमियं । परमिहीकुंडुं आगमविहिसव्वशोभं ॥१॥

तेयाला चउवीसा, तीसच्छतीस सचतीसा य । कम्मवणदहणनिउणा. जिणवपदा दितु म्हा सिद्धि ॥२॥

पणतीसा इगुयाला, वायाल तिथीस इगुणतीसा य । कल्लणपंचक्रिया, संचस्स कुणंतु कल्लणं ॥३॥

वावीसा अडवीसा, चउतीसा दुगुणवीस छायाला । सिह्अहियाहियहिअ अहिय, दुद्धुट्टियमोहजोहसा ॥४॥

इगुणयाला पणयाला, छव्वीसा सत्तवीस तिचीसा । जसमणेगेगरहिया, रणरहिया मंगले दितु ॥५॥

इगतीसा वत्तीसा-द्वृतीस चउच्च पन्नमीसा य । वंतरभूयपिमाया, रखलसगहरखलगा हुतु ॥६॥
 इय विहिणा सत्तसियं, पडलिहियं जो थुणेह अब्बेइ । तत्स न पहवइ त्रियं, सिग्घ सिद्धि समज्जिण्ड ॥७॥
 सिरिन्धररिपणयं, मत्तरिसय जिणवराण भत्ताण । भवियाण कुणउ संति, पुट्टि तुट्टि धिंइ किच्चि ॥८॥

६-शाश्वताश्वाश्वतजिनस्तवः

पश्चानुत्तरशरणा, ग्रैवेयककल्पतल्पगतसदना । ज्योतिष्कव्यन्तरभवन-चासिनी जयति जिनराजी ॥१॥
 वैताढयकुलाचलनाग-दन्तभक्षारक्षुटशिवरेणु । हृदयपङ्कडसागर-नदीषु जयताञ्जिनराली ॥२॥
 इषुकारमानुषोत्तर-नन्दीश्वररुचककुण्डलनगेषु । सिद्धालयेषु जियाञ्जिनपद्मतिरिद्धतत्त्वासि ॥३॥
 यत्र नहुक्कोटिसन्ध्याः, सिद्धिमगु पुण्डरीरुमुल्लयजिना । तीर्थानामाद्रिपटं, स जयति शृङ्गुजयगिरीशः ॥४॥
 अथापदाद्रिशिवरे निजनिजसंस्थानमानवर्णधराः । भस्मेश्वरनृपरचिता, सद्रत्नमया जयन्तु जिनाः ॥५॥
 ऋषमजिनपदस्थाने, गान्धुवलिचिनिर्मित महत्सारम् । रत्नमयर्षमचक्र, तत्रशिलापुखरे जयति ॥६॥
 त्रिशत्या तीर्थकरै-रजितार्धैर्यत्र शिवपद प्राप्तम् । देवकृतस्तूपगणः म, जयति संमैतगिरिराज ॥७॥
 मथुरापुरीप्रतिष्ठ; सुपार्श्वजिनकालसंभवो जयति । अद्यापि सुराम्यर्च्यं, श्रीदेवत्रिनिर्मितः स्तूपः ॥८॥
 श्रीब्रह्मेन्द्रदशानन रामचन्द्रमुख्यै प्रपूजिते जयत । अगादियातारस्थे, जिनचिन्धे दिव्यरत्नमये ॥९॥
 यस्तिष्ठति वरेशमनि, माद्वर्षाभिर्द्रविणकोटितिसृषिः । निर्मापितोम्मराज्ञा, गोपगिरी जयति जिनवीरः ॥१०॥

नेमेः कल्याणत्रिक-मभवन् निष्क्रमणसुख्यसगरकृतम् । यस्मिन्नसौ महात्मा, रैवतकमहागिरिर्जयति ॥११॥
 सोढेरपुरनिवासी, ब्रह्मोपपदेन शान्तिना रचितः । स्वयमेव सप्तहस्तः, श्रीवीरजिनेश्वरो जयति ॥१२॥
 जयति सदतिशययुक्तः, स्तंभनकनिकेतनो जिनः पार्थः । पायात् प्रतिकृतिपूज्यो, मुण्डस्थलसंस्थितो वीरः ॥१३॥
 नमिबिनमिकुलान्वयिभिर्विद्याधरनाथकालकाचार्यैः । कासहदराख्ये नगरे, प्रतिष्ठितो जयति जिनवृषभः ॥१४॥
 नागेन्द्रचन्द्रनिर्वृति-विद्याधरसुख्यसकलसंघेन । अर्बुदकृतप्रतिष्ठो, युगादिजिनपुंगवो जयति ॥१५॥
 विमलनरेन्द्रकृतस्तुति-वृषभोर्बुदनगविशेषको जयति । जयतीह जगति शान्तिः, श्रीगोकुलत्रासकृतपूजः ॥१६॥
 पांडवमात्रा कुन्त्या, संजाते श्रीयुधिष्ठिरे पुत्रे । श्रीचन्द्रग्रभनाथः, प्रतिष्ठितो जयति नाशिक्ये ॥१७॥
 कलिकुण्डकुर्कुटेश्वर-चम्पाश्रावस्तगजपुरायोध्या । वैभारगिरिरिषपाणा, जयन्ति पुण्यानि तीर्थानि ॥१८॥
 अकारनगरवायडजालंधरत्रिकूटसत्यपुरे । ब्रह्माणपष्टिकादिषु, रूपमादिजिना जयन्त्वनघाः ॥१९॥

७—श्रीचन्द्रप्रभविद्यास्तवनम् ।

ॐ चन्द्रप्रभ ! प्रभाधीश !, चन्द्रशेखरचन्द्रभूः । चन्द्रलक्ष्माङ्क ! चन्द्राङ्ग !, चन्द्रजीज ! नमोऽस्तु ते ॥१॥
 ॐ ह्री श्री ह्री चन्द्रप्रभ, ह्री श्री कुरु कुरु स्वाहा । प्रभा सिद्धिमहासिद्धि-तुष्टिषुष्टिकरो भव ॥२॥
 दादशसहस्रजसो, वाञ्छितार्थफलप्रदः । महितस्त्रिसंध्यं जप्तः, सर्वाधिव्याधिनाशकः ॥३॥
 सुरासुरेन्द्रमहितः, श्रीपाण्डवतृपार्चितः । श्रीचन्द्रप्रभतीर्थेश !, श्रियं चन्द्रोज्ज्वलां कुरु ॥४॥

श्रीचन्द्रप्रभविद्येय, स्मृता सद्यः फला मता । भयाधिव्याधिविध्वंस-दायिनी मे वरप्रदा ॥५॥

८-श्रीअम्बिकास्तव.

देवि गन्धर्वविद्यार्धेर्वन्दिते !, जयजयाऽमित्रवित्रासनि विशुते ! । नूपुरारावसुद्धभुवनोदरे !, मुखरसर्वाकिकिणीतारस्वरे ! ॥१॥

ॐ ह्रीं मन्त्ररूपे शिखकरे !, अम्बिके देवि जय जन्तुरक्षाकरे !

तारहारावलीराजितोरः स्थले !, कर्णताडङ्कचिआजिगह्लस्थले ! ॥२॥

ॐ ह्रीं स्तम्भिनी मोहनीदुष्टुच्चाटनी, क्षुद्रचिद्रावणी दोपनिर्नाशिनी ।

जम्भिनी आत्तिभूतग्रहस्फेदिनी, शान्तिघृत्तिकीर्त्तिमत्तिसिद्धिससाधिनी ॥३॥

ॐ ह्रीं मन्त्रनिधेन विधे स्वयं, ह्रीं आगच्छ २ त्वं कुरु २ दुरितक्षयम् ।

ॐ प्रचण्डे २ प्रसीद प्रसन्नेक्षणे, ह्रीं सदानन्दरूपे मुखे विशालेक्षणे ॥४॥

ह्रीं नमो देवि सलुत्रिशुभ भैरवे ! (वि !), जये अपराजिते तप्तहेमच्छवे (वि !) ।

ॐ ह्रीं जगज्जन्ममंहारसंसर्जने !, ह्रीं कूर्माण्डि भयव्याधिविध्वंसने ! ॥५॥

सिंहयानस्थिते भीमरूपस्तुवे, नाममन्त्रेण विद्राणितोपद्रवे ।

अवतावतरैवतगिरिवासिनी, अम्बिके देवि जय जगत्स्वामिनी ॥६॥

ह्रीं महाविघ्नसघातनिर्नाशिनी, दुष्टपरमन्त्रविद्यावलच्छेदिनी ।

हस्तविद्यस्तसहकारफललुम्बिका, हस्त दुरितानि देवी जगत्यम्बिका ॥७॥
इति जिनेश्वरहरिभिरम्बिका, भगवती शुभमन्त्रपदैः स्तुता । प्रवरपत्रगता शुभासंपदं, वितरतु प्रणिहन्त्यशुभं मम ॥८॥

९. — कुरुकुल्लादेवीस्तुतिः—

प्रणवहृदि यदीयं नाम मायासविद्धं, वहसि पडरलीनामातृकोपान्तरौद्रे ।
भगवति ! कुरुकुले ! तं गलद्रोगराजं, (शुवि) निरुदयश्रुता नैव लुम्पन्ति लृताः ॥१॥
कमलति कषिकच्छूर्मालयति व्यालपाली, तुहिनति दववह्निर्माघति ग्रीष्मकालः ।
शिशिरकरति ह्यः क्षीरति क्षारनीरं, विषममृतति मातस्त्वत्प्रभावेण पुंसाम् ॥२॥
ज्वरभरपरितापोद्रक्तापिचातिवात-क्षतश्रुततनुनिर्यद्बुद्बुदच्छरीद्राः ।
अपि घनरससृत्तिह्निन्नभिन्नास्थिमांसा-स्त्वदभिद्युखमुपेता नावसीदन्ति सन्तः ॥३॥
श्रुतिपथगतमुच्चैर्नाम यस्याः पवित्रं, विषमतमविषत्तिं नाशयत्येव सद्यः ।
त्रिश्रुवनचिन्ता सा संकुलीभूय देवी, वितरतु कुरुकुला संपदं मे विशालाम् ॥४॥
ज्वलनजलमृगेन्द्रोद्घाससंश्रामशत्रु-प्रभृतिरुमपयाति त्वद्गतध्यानमात्रात् ।
धृततनयशरीरारोग्यसौभाग्यभाग्धा-दिकक्षुपचयमेत्यभ्यर्थनाचावकीनात् ॥५॥
क्रियति महति दूरे त्वन्मतानां श्रुतश्रीः, कथमिव दुरवाणा तैर्जगज्जितलक्ष्मीः ।

अमुलभमिह किं वा वस्तु तेषां समस्तं, त्रिभुवनजननि ! त्व वीक्षसे यान् प्रमन्ना ॥६॥

सुमदकरतले त्वं शस्त्ररूपसि शक्ति-स्त्वमवनिपतिपूज्वैर्देविमन्त्रादिशक्तिः ।

किमपरमनिलादौ त्वं महाप्राणशक्तिः, सकलभुवनपूज्या त्व च जैनेन्द्रशक्तिः ॥७॥

प्रतिविषयमजस्र स्वेच्छयागच्छददत्त, पवनविजययोगात् सनिरुह्य स्वचित्तम् ।

यदिह किमपि सन्तः सततं ध्याम पश्यन्त्यनितयमयमुच्चैर्देवि युष्मत्प्रसादः ॥८॥

सकलरुणरो गार्ह ध्यानलीनस्य पुसः, स्फुरसि मनसि यस्य त्व महोद्योतरूपाः ।

सपदि विदलयन्ती तस्य जाडयान्यकार, समुदयति समन्तात् केवलज्ञानलक्ष्मीः ॥९॥

॥ इति श्रीवादिचक्रवर्ति श्रीदेवाचार्यनिरचिता कुरुकुल्लेदेवीस्तुतिः ।

ॐ ह्रीं कुरुकुल्ले २ सर्पयोगसम्पूजकान् वृश्चिकान् उचोदय २ ह्रीं कुरुकुल्ले स्वाहा । मसवारान् शयनकाले स्मर्यते ।

१०-ससतिशत-यन्त्रालिखनविधिः-

कसयसुभायणमि, तिमृष्टिपरिमाणमंकुमदम्बेण, । ऋषुरागुल्वदण-विमीसिय लिहह सतसय ॥१॥

अट्टुत्तरं महस्म, जावो एयस्स जाइकुसुमेहि । ऋयव्वो मत्त य सत्तयामरा (४९) मुगल्लगहम्मि ॥२॥

सामन्नमुगगला जे, उव्वम जंति मत्तयदियहेहि । इट्ठापि मुगला जे, त्वलु नामंति य पुन्नजोएण ॥३॥

एगुणवासटिणावि हु, भोग्गपगहियं जतमोहलिउं । पाइअइ अइट्टव्वमि, मुगले कुणह होममिणं ॥४॥

राईसरिसत्रगुल-कसिणुबावेडिससस समिहीओ, । काउं तिकोणकुंडं, चचरे नयरमज्जे व ॥५॥
होभेह मूलमंतेणं, शुगुलं मूलजावकुसुमेहिं । काउं दंसंसुलियं, अट्टुत्तरसयपमाणं च ॥६॥
दिसिंधव अप्परक्खा, दसदिसिबलिखेवपुब्बयं विहिणा । होमंताणं दुट्ठावि, वंतरा पायडा हुंति ॥७॥
कयघोरुवसग्गावि ह्, दूरं नासंति सुथिरचिचाणं । सत्तरिसयप्पभावा, जह करिणो सिहपोयसस ॥८॥
एवं शुग्गल आगास-चारिणी खित्तवालगिहदेवी । सत्तरिसयप्पसाया, दोसा नासंति पाणीणं ॥९॥
जो कुणह लक्खजावं, सत्तरिसयमंतकोडिजावं वा । सो कीलह वंतरदेवयाहिं समयं सुसामिब्ब ॥१०॥
एयं च रुपथाले, लिहियं वंज्ञाण धारए गवभं, । दिणसत्तसत्तजाई-कुसुमसहस्सेहिं परिजवियं ॥११॥
रक्खाकयकडिबद्धा, हणियवाहाइदोससयजालं । दुद्धेण मज्झ पीयं, धारइ गवभं न संदेहो ॥१२॥
नासिं गवभविणासो, जायइ जुवईण गालमरणाइ । दोसकयं निन्नासई, रक्खा दससहसपरिजवियं ॥१३॥
कुंङ्कगोरोयणरत्त-चंदणं काउं एगओ लिहियं । नीलंवरेसुं जंतं, सत्तरिसयं सिद्धणयपयं ॥१४॥
कणवीरसेयआरत्त-कुसुमदससहससपरिजवियं, । नारीणं कुणह वसे, भचारं दीवए तवियं ॥१५॥
दूराओ चिय आणह, जुवईए हूँकारगब्धिभय जंतं । ज्ञाणेणारत्तेणं रत्तुप्पलसहसजावेणं ॥१६॥
कसिणचउदसिमंगल, रविधारे मडयकण्वरे पवरे । विक्कोइलराईविस, कणयससथनाडिरत्तेणं ॥१७॥
उववासिएण लिहियं, अइकसिणसुपुप्फसहसपरिजवियं । इसरथयानिबद्धं, सत्तुं देसाउ नासेई ॥१८॥

सारइ महीमंडल-पक्वत्त कसिणचत्तकुमुमेहि । परिजविय सत्तसियं, पीयं थमेउ रिउवयण ॥१९॥
 विदिओ कुम्भणदोसो, नासइ दिट्ठेण परमजतेण । सुहकज्जे सियज्जाण, सियकुलुमसहस्सदसजावो ॥२०॥

॥ इति सत्तसियविधिः सपूर्णः ॥

॥ क्षिप ओं स्वाहा ॥ हास्वा ओं पक्षि ॥ रथा चार ३ स्मरणीया
 आसन्नदूरतिमिरं, मालमलविंदुं च कठसरभग । सिचवनासो नासइ, मदग्गीरायमद वा ॥१॥
 ओं पद्मावति देवि मम सर्वोपप्रवान् रक्ष रक्ष स्वाहा ॥ इति श्री सपूर्णं ॥ श्री शुभं भवतु ॥

११-ससत्तिशत-यंत्रस्तुतिः ।

आनदोल्लासनमत्रिदशपतिशिरः प्रथमपूज्यपदम् । जिनसप्ततिशतमानग्य वच्मि तस्यैव सस्तवनम् ॥१॥
 जंबूद्वीपे भरतैरावतयोरेकमेकमभिनीमि तद्वात्रिशद्विजयेथैकैकं जिनवरं वंदे ॥२॥
 घातकित्त्वद्वीपे द्वियुगे भरतद्विके जिनद्वितयम् । एरावते च जिनयुगलमलमभिनीमि मद्भक्त्या ॥३॥
 वंदे महाविदेहे, जिनाशतुःषष्टिविजयसंभविनः । केवलकिरणोद्योतितजगत्प्रयानस्तसंतमसः ॥४॥
 श्रीयुष्कार्द्वनामि च, तावत् एव प्रमाणतः प्रयतः । परमेष्ठिनः समथिद्योमि, नष्टकर्माष्टिविद्विष्टान् ॥५॥
 वरकनकशंखचिद्रुम-मरकतघनसन्निभं विगतमोहम् । सप्तविंशतं जिनानां, सर्वासम्पूजितं वन्दे ॥६॥
 दयं दहनभृश्रुदभस्तस्करविद्युत्स्फुरिभनिस्फोटम् । हरि-मारि-त्रयनभयं, तत्कालसंस्मृतं हरति ॥७॥

। तिजयपहुत्तति सत्तरिसयजिन यंत्रकम् । १

। ध्वजदण्डमर्कटधासुल्कीर्य

३४ यन्त्रकम्—

१	१६	२	७
६	३	१३	१२
१५	१०	८	१
४	५	११	१४

२५ ह ॐ रोहिण्यै नमः	८० र ॐ प्रज्ञायै नमः	क्षि	१५ हुं ॐ वज्रशूल- लायै नमः	५० हः ॐ उजा- कुशायै नमः
२० स ॐ अप्रति- चक्रायै नमः	४५ र ॐ पुरुषद- त्तायै नमः	प	३० सुं ॐ काल्यै नमः	७५ सः ॐ महा- काल्यै नमः
क्षि	प	ॐ	स्वा	हा
७० ह ॐ गौर्यै नमः	३५ र गन्धार्यै नमः	स्वा	६० हुं ॐ सर्वास्त्रा महा- ज्वाल्यै नमः	५ हः ॐ मानव्यै नमः
५५ स ॐ वैश्यायै नमः	१० र ॐ अल्लुप्त्यै नमः	हा	६५ सु ॐ मानस्यै नमः	४० मः ॐ महामान- स्यै नमः

श्रीसप्ततिशतयन्त्रं २ श्रीनक्षत्ररिस्तवात्रुसारि

परिच्छेद
३ ॥

॥२६६॥

ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं
४३ ह ॐ रोहिण्यै नमः	२४ र ॐ प्रसृत्यै नमः	३० क्षि ॐ वज्रशंखलयै नमः	३६ हुं ॐ वज्रांकुर्यै नमः	३७ हः ॐ अप्रतिचक्रायै नमः	
३५ स ॐ महामानस्यै नमः	४१ र ॐ मोहिन्यै नमः	४२ प ॐ जययै नमः	२३ सुं ॐ जंभायै नमः	२९ सः ॐ पुरुषदत्तायै नमः	
२२ क्षि ॐ मानस्यै नमः	२८ प ॐ अपराजितायै नमः	३१ ॐ ॐ अजितायै नमः	४० स्वा ॐ विजययै नमः	४६ हा ॐ कार्त्यै नमः	
३९ ह ॐ अहस्तायै नमः	४५ र ॐ मोहायै नमः	२६ स्वा ॐ अजितायै नमः	२७ हुं ॐ जंभिन्यै नमः	३३ हः ॐ महाकार्त्यै नमः	
३१ स ॐ वैरुथ्यायै नमः	३२ र ॐ मानव्यै नमः	३८ क्ष ॐ सर्वासामहाज्वाल्यै नमः	४४ सुं ॐ गन्धार्थै नमः	२५ सः ॐ गौर्धै नमः	

कस्याण-
कलिका
सं० ३ ॥
॥२६६॥

॥ सप्ततिशतजिनयन्त्रकम् ३ सस्कृतस्तोत्रावुसारि ॥

सूचनाः—स्तत्रो पैकीना नं० १ ना स्तन्नो उपयोग सकलीकरण (आत्मशा) माटे कराय छे, न० २-३ ना स्तत्रो विधिना देववन्दना चैत्यवन्दन तरीके गोलाय छे, न० ४ थी ६ नं० ना स्तत्रो विधिगिधानना देववन्दनां स्तन्नने ठेकाणे बोलाय छे. ज्यारे ७ थी ११ नं० सुधीना स्तत्रो तथा सप्ततिशत यत्रकल्प तेमज तेना ३ यत्रो विशेष कार्यमां उप-योगी थवा माटे आपेल छे

प्रतिष्ठोपयोगी-अभ्यसनीय-मन्त्रा.—

१—सकलीकरणमन्त्र, ॐ नमो अरिहताण हृदय रक्ष २ ।
ॐ नमो सिद्धाण ललाटं रक्ष २ । ॐ नमो आयरियाणं शिखां रक्ष २ । ॐ नमो उवज्झायाणकवचम् । ॐ नमो लोए सव्व

संस्कृत धनसनिभ विगतमोहम् ।			
२ ह	७ र	७७ हु	८४ हः
८१ स	८० र	६ सुं	३ सः
८ ह	१ र	८३ हु	७८ हः
७९ स	८२ र	४ सु	५ सः

ॐ वरकनकशखविट्टम-

मर्षतिशत जित्वाता-

साह्रणं अन्नम् । (७ वारान्)

३—धुचिचिवा-ॐ नमो अरिहताण । ॐ नमो सिद्धाण । ॐ नमो आयरिआणं । ॐ नमो उवज्झायाणं ।

ॐ नमो लोए संबवसाहूणं । ॐ नमो आगासगामीणं । ॐ नमो चारणलक्ष्मीं । ॐ हः क्षः नमः । अशुचिः
शुचिर्भवाभि स्वाहा । (५-७ वारान्)

पादलिषीया शुचिविद्या—ॐ नमो अरिहंताणं नमो सिद्धाणं नमो आयरिआणं नमो उवउल्लायाणं नमो
लोए संबवसाहूणं ॐ नमो सबवोसहिपत्ताणं ॐ नमो विज्झाहराणं ॐ नमो आगासगामीणं ॐ कं क्षं नमः
अशुचिः शुचिर्भवाभि स्वाहा । (सुरभिसुद्रया ५-७ वारान्न्यसेत्)

३—बलिमंत्र—ॐ ह्रीं क्ष्वीं सर्वोपद्रवं चिम्बस्य रक्ष रक्ष स्वाहा । (७ वारान् बलिमंत्राणं कवचो दिग्बन्धश्च)
पादलिषीय बलिमन्त्रः—

ॐ नमो अरिहंताणं नमो सिद्धाणं नमो आयरिआणं नमो आगासगामीणं नमो चारणाहलक्ष्मीं जे इमे
किंनरकिंपुरिसमहोरगगरुलसिद्धगंधवजकलरकवसभूयपिसायडाइविभिई जिणवरणिवासिणो निय-
नियनिलयठिया पवियारिणो संनिहिया य असंनिहिया य ते सन्वे विलेवणपुफधूवपईवसणाहं बलिं
पडिच्छन्तु तुडिकरा भवन्तु सिंवकरा भवन्तु संतिकरा भवन्तु सत्थयणं कुणंतु सत्त्वजिणाणं संनिहाणभा-
वओ पसन्नभावेण सवत्थ रक्खं कुणंतु सत्त्वदुरियणि नांसंतु सत्त्वासिंब उवसमेंतु संतिपुडितुट्टिसिय-
सत्थयणकारिणो भवंतु स्वाहा ।

पादलिषीयदिग्बन्धमंत्रः—ॐ हूं क्षूं फुरं किरिटि किरिटि घातय घातय परवित्रा नास्फोययाऽऽस्फोटय

सद्व्रतवण्डान् कुरु कुरु परशुद्रां छिन्द छिन्द परमन्त्रान् भिन्द क्षःफद् स्वाहा । (अनेन श्वेतसर्पपान-
भिन्नान्य दिग्बन्धाय पूर्वादिदिक्षु देव्या)

४—जलादिमंत्र—१ ॐ नमो यः सर्वशरीरावस्थिते महामूर्ते आगच्छ २ जल गृह्ण २ स्वाहा । जलकल-
शाभिमंत्रण ॥ २ ॐ नमो यः शरीरावस्थिते पृथु २ विष्ट्यु २ गन्धान् गृह्ण २ स्वाहा । अथ गन्धाधिवासनम् ॥
३ ॐ नमो यः सर्वतो मे मेदिनी पुण्यवती पुण्य गृह्ण २ स्वाहा । पुण्याभिमन्त्रणं ॥ ४ ॐ नमो यः सर्वतो बलि
दह २ महामूर्ते तेजोधियते धू धू धूपं गृह्ण २ स्वाहा । धूपाभिमंत्रणं ॥

पादलिप्तीयजलादिमंत्रो—ॐ नमो यः सर्वशरीरावस्थिते महामूर्ते आपो जलं गृह्ण २ स्वाहा, (प्रथम-
स्नानपटकमंत्रः) ॥ ॐ नमो यः सर्वशरीरावस्थिते पृथु विष्ट्यु पृथु विष्ट्यु गन्धं गृह्ण २ स्वाहा, (अष्टवर्गादि-
स्नान समूहमंत्रः) ॥ ॐ नमो यः सर्वशरीरावस्थिते मेदिनि पुं पुं पुण्यवति पुण्य गृह्ण २ स्वाहा (सर्वस्नान
पुण्य मंत्र) ॥ ॐ नमो यः सर्वशरीरावस्थिते दह दह महामूर्ते तेजोयिपते धू धू धूपं गृह्ण २ स्वाहा । (सम-
स्तस्नान धूप मंत्र.) ॥

५ जिनाह्वानमंत्र—ॐ नमोऽहंते परमेश्वराय चतुर्भुवपरमेष्ठिने त्रैलोक्यधनाय अष्टदिक्कुमारोपरिपूजिताय
देवाधिदेवाय दिव्यशरीराय त्रैलोक्यमहिताय आगच्छ आगच्छ स्वाहा ।

६ जिनविज्रसि मंत्र—ॐ इह आगच्छन्तु जिना. सिद्धा भगवन्तः स्वसमयेनेरानुग्रहाय भव्यानां भः

स्वाहा । ॐ क्षौ क्ष्वी ह्री क्षी भः स्वाहा (इत्ययं वा) ।

७—जिनस्वागतमंत्र—स्वागता जिनाः सिद्धाः प्रसाददाः सन्तु प्रसादं धिया कुर्वन्तु अनुग्रहपरा भवन्तु भव्यानां स्वागतमनुस्वागतम् ।

८—अर्धनिवेदनमंत्र—ॐ भः अर्धं प्रतीच्छन्तु पूजां गृह्णन्तु गृह्णन्तु जिनेन्द्राः स्वाहा ।

९—शुद्धजलस्नात्रकाव्य-चक्रे देवेन्द्रराजैः सुरगिरिशिखरे गोऽभिषेकः पयोभि-नृत्यन्तीभिः सुरीभिः ललितपदगमं तूर्यनादैः सुदीप्तैः । कर्तुं तस्यानुकारं शिवसुखजनकं मन्त्रपूतैः सुकुम्भै-र्ध्रिबं जैनं प्रतिष्ठाविधिव-चनपरः स्नापयाम्यत्र काले ॥१॥

१०—अधिवासनामंत्रद्वय—ॐ नमो खीरासवलद्वीणं ॐ नमो महुआसवलद्वीणं । ॐ नमो संभिन्नसो-आतां ॐ नमो पयाणुसारीणं ॐ नमो कुट्टद्वीणं जमिअं विल्लं पउंजामि सा मे विल्ला पसिञ्च, ॐ अवतर २ सोमे २ कुरु २ वगु २ निवगु २ सुमिणे सोमणसे महुमहुरे ॐ कविल ॐ कः क्षः स्वाहा (अथवा) ॐ नमः शान्तये हूं हूं हूं हूं सः ।

पादलिप्पीये अधिवासना विद्ये-ॐ नमो भगवओ उसभसामिस्स पढमत्तिथयरस्स सिञ्चउ मे भगवई महाविज्जा जेण सन्वेण इंदेण सन्वदेवससुदयेण मेरुमि सन्वोसहीहिं सन्वे जिणा अभिसित्ता तेण सन्वेण अहिवासयामि सुन्वयं दढव्वयं सिद्धं बुद्धं सम्मंसणमणुपत्तं हिरि हिरि सिरि

सिरि मिरि गुरु गुरु अमले अमले विमले सुविमले सुविमले मोत्रवमगमणुपत्ते स्वाहा
(अथवा) ॐ नमो खीरासचलद्वीण ॐ नमो महुआसचलद्वीण ॐ नमो सभिन्नसोईण ॐ नमो पया-
णुसारीण ॐ नमो कुट्टुबुद्रीण जमिय विज्ज पउजामि सा मे विज्जा पसिञ्जउ ॐ क क्षः स्याहा ।

१—जिने सहजगुणस्थापनमंत्र-ॐ नमो विन्धरूपाय अहंते केवलज्ञानदर्शनधराय हूं हूं सः सहजगु-
णान् जिनेशे स्थापयामि स्वाहा ।

१२—प्रतिष्ठामत्र-ॐ वीरे वीरे जयवीरे सेणवीरे महावीरे जये विजये जयन्ते अपराजिए ॐ हूं स्वाहा ।

१३—घातिकर्मक्षयोत्पन्नगुणस्थापनमंत्रः-ॐ नमो भगवते अहंते घातिक्षयकारिणे घातिक्षयोत्पन्नगु-
णान् जिने स्थापयामि स्वाहा ।

१४—पादलिंसीयप्रतिष्ठामंत्रः-ॐ नमो अरिहताण ॐ नमो सिद्धाणं ॐ नमो आयरियाणं ॐ नमो
उवञ्जायाण ॐ नमो लोण सञ्चसाहूण ॐ नमो ओहिजिणाणं ॐ नमो परमोहिजिणाण ॐ नमो सञ्चोहि-
जिणाण ॐ नमो अणंतोहिजिणाण ॐ नमो केवलजिणाण ॐ नमो भवत्थकेवलजिणाण ॐ नमो भग-
वओ अरहओ महइ महावीरवद्धमाणसामिस्स सिञ्जउ मे भगवई महइ महाविज्जा वीरे २ महावीरे
जयवीरे सेणवीरे कद्धमाणवीरे जये विजये जयंते अपराजिए अणिहए मा चल २ वृद्धिदे २ हूं २ हूं २
सः २ ओहिणि मोहिणी स्वाहा ।

१५—सौभाग्यमंत्र—ॐ अवतर अवतर सोमे २ कुरु २ निवगु २ सुमिणे सोमणसे महुमहुरे ॐ ऋचिल
ॐ कः क्षः स्वाहा ।

पादलिषीयसौभाग्यमंत्रः—ॐ नमो वगु २ निवगु २ सुमिणे सोमणसे महुमहुरे जयते अपराजिण स्वाहा
१६—जिनमूर्तिप्रतिबोधमंत्रः—ॐ ह्रीं अर्हन्मूर्तये नमः (प्रवचनसुद्रा पूर्वक प्रतिबोधः) ॥

१७—अचलमूर्तिस्थिरीकरणमंत्रः—ॐ स्थावरे तिष्ठ तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा ।

१८—सिंहासनस्थापनमंत्रः—इदं रत्नमयसासनमलंकुर्वन्तु इहोपविष्टा भव्यानवलोकयन्तु हृष्टदृष्टया
जिनाः स्वाहा ।

१९—चलप्रतिमायां न्यसननीयमंत्रः—ॐ जये श्रीं ह्रीं सुभद्रे नमः ।

२०—सुरकृततिशयस्थापनमंत्र—ॐ नमो भगवते अर्हते सुरकृतानिशयान् जिनस्य शरारे स्थाप-
यामि स्वाहा ।

२१—जिने प्रातिहार्यस्थापनमंत्रः—ॐ नमो भगवते अर्हते असिअडसा जिनस्य प्रातिहार्यीष्टकं स्थाप-
यामि स्वाहा । ॐ यक्षेश्वराय स्वाहा । ॐ ह्रीं ह्रीं शासनदेव्यै स्वाहा । ॐ धर्मचक्राय स्वाहा । ॐ मृग-
कन्द्याय स्वाहा । ॐ रत्नध्वजाय स्वाहा । ॐ नमो भगवते अर्हते जिने प्राकारदित्रयं स्थापयामि स्वाहा ।

२२—प्रतिष्ठादेवताविसर्जनमंत्रः—ॐ विसर विसर प्रतिष्ठादेवते स्वाहा ।

२३—नन्द्यावर्तं विसर्जनमंत्रः—ॐ विसर विसर स्वस्थान गच्छ गच्छ नन्द्यावर्त ! पुनरागमनाय स्वाहा ।
(मन्त्रभणनपूर्वक वासुक्षेपेण विसर्जनम् ।)

२४—सामान्यदेवविसर्जनमन्त्र—

यान्तु देवगणाः सर्वे, पूजामादाय मामकीम् । सिद्धिं दत्त्वा च महती, पुनरागमनाय च ॥१॥

४ परिच्छेदः—स्मरण-स्तोत्राणि ।

विधिकार्यसमारम्भ-दिनादारभ्य सर्वदा । त्रिकालपाठयोग्यानि, स्तोत्राणीह निबोधत ॥५॥

भा०टी०—विधिकार्यना आरभ्यो समाप्ति पर्यन्त नित्य त्रिकाल पाठ कृत्वा योग्य स्मरण-स्तोत्रोक्तौ सप्रद आ चोथा परिच्छेदमा जाणतो.

नमो अरिंताण । नमो सिद्धाण । नमो आयरियाण । नमो उवञ्छायाणं । नमो लोए सव्वसाहुणं ।
णसो पंच नमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो । मगलाण च सव्वेसिं, पढम हवइ मगलं ॥

१—उपसर्गहरस्तोत्रम्

उवसगगहर पास, पास वंदांमि कम्मघणमुक्क । विसहरविसनित्रास, मंगलकल्लाणआवास ॥१॥

विसहरफुलिंगमंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ । तस्स गहरोगमारी,-डुडुजरा जंति उवसामं ॥२॥
चिह्व दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ । नरतिरिण्णु वि जीवा, पावंति न दुक्खदोगचं ॥३॥
तुह सम्मत्ते लंछे, चिंतामणि-कप्पपायवब्भहिण् । पावंति अधिग्घेणं, जीवा अयरारं ठाणं ॥४॥
इअ संथुओ महायस ! भत्तिभरनिब्भरेण हिअणण । ता देव ! दिज बोहिं भवे भवे पास ! जिणचंद ॥५॥

२ श्रीशान्तिनाथ स्तवनम् (संतिकरं)

संतिकरं संतिजिणं, जगसणं जयसिरीइ दाधारं । ससरामि भत्तपालग-निब्वाणीगरुडकयसेचं ॥१॥
ॐ सनमो विप्पोसहि-पत्ताणं संतिसामिपायाणं । ॐ स्वाहा मंतेणं, सब्वासिचट्टुरिअहरणाणं ॥२॥
ॐ संतिनसुक्कारो, खेलोसहिमाह्लद्धिपत्ताणं । ॐ ह्रीं नमो सब्बोसहि-पत्ताणं च देह सिरिं ॥३॥
वाणी तिहुअणसामिणी सिरिदेवी जक्खराय गणिपिडगा । गहदिसिपालसुरिंदा, सयावि रक्खंतु जिणभत्ते ॥४॥
रक्खंतु मम रोहिणि-पन्नत्ती वज्जसिखला य सया । वज्जकुंसि चक्केसरि-नरदत्ता कालि महकाली ॥५॥
गोरी तह गंधारी, महजाला माणवीय वइरुद्धा । अच्चुत्ता माणसिआ, महामाणसिआउ देवीओ ॥६॥
जक्खा गोसुहमहजक्खा, तिसुह जक्खेस तुंचह कुसुमा । मायंगविजयअजिआ, वंभो मणुएसर कुमारा ॥७॥
छम्मूह पयाल किन्नर,-गरुडो गंधव्व तहय जक्खिखदो । क्वर वरुणो भिउडी, गोसेहो पासमार्यंगा ॥८॥
देवीओ चक्केसरि, अजिआ डुरिआरि कालिमहाकाली । अच्चुअ संता जाला, सुतारय असोयसिरिवच्छा ॥९॥

चडा धिजपकुसि,-पन्नडत्ति निव्वाणि अचुआ धरणी । वहरुद दत्त गंधारि, अब पडमावई सिद्धा ॥१०॥
 इय तित्थरक्खणराया, अन्ने वि सुरा सुरीउ चउहावि । वतर जोइणिपमुहा, कुणंतु रक्ख सया अम्ह ॥११॥
 एव सुदिट्ठिसुरगण-सहिओ सघस्स सत्तिजिणचदो । मज्झ वि करेउ रक्ख, सुणिखुंदरखरियुअमहिमा ॥१२॥
 इय सत्तिनाह सम्म-धिठिअरक्ख सरह तिकाल जो । सन्वोवह्वरहिओ, स लहइ सुरसपयं परम ॥१३॥

॥ इति श्रीश्यातिनाथस्तवनं महात्म्यमय भट्टारकप्रभु-श्री मुनिखुंदरखारकृत मरकोपशमकरम् ॥

सत्तरिसयजिनस्तवनम् । (तिजयपहुत्त)

तिजयपहुत्तपयासिअ-अट्टमहापाडिहेरजुत्ताण । समयखित्तिठियाणं, सेरेमि चकं जिणिदाण ॥१॥
 पणवीसा य असीआ, पनरस पन्नास जिणवरसमूहो । नासेउ सयलदुरिअ, भविआण भत्तिजुत्ताणं ॥२॥
 वीसा पणयाला चि, तीसा पन्नत्तरी जिणवरिंदा । गहभूअरक्खसाइणि-घोरुवसगं पणासंतु ॥३॥
 सत्तरि पणतीसा विअ, सट्ठी पंचेव जिणगणो एसो । वाहि-जल-जलण-हरि करि चोरारि-महाभय हरउ ॥४॥
 पणपन्ना य दसेयय पन्नठी तहय चेव चालीसा । रक्खतु मे सरीर, देवासुरपणमिआ सिद्धा ॥५॥
 हररुट्टः सरसुं मः, हरहुंहः तहय चेव सरसु सः । आ लिहिअन्नामगब्भ, चकं किर सव्वओभइं ॥६॥
 रोहिणिपन्नत्ती वज्ज सिखला तहय वज्जअंकुसिआ । चक्केसरिनदत्ता, कालिमहाकालि तह गोरी ॥७॥
 गंधारिमहाजाला. माणवियइरुदतहय अचुत्ता । माणसि महामाणसिआ, विज्जावेधीउ रक्खतु ॥८॥

पंचदस कम्मभूमोसु, उपपन्नं सत्तरिंजिणाणं सयं । विविहरयणाहवन्नो वसोहिअं हरउ दुरिआइं ॥१॥
 चउतीसअइसयजुआ । अट्टमहापाण्डिहेरकयसोहा । तित्थयथा गयमोहा, द्वाएयव्वा पयत्तेणं ॥१०॥
 ॐ वरकणयसंखविट्ठुस-मरगयघणसंनिभं विगययोहं । सत्तरिसयंजिणाणं, सव्वाअरएहअं वंदेस्वाहा ॥११॥
 ॐ भवणवहवाणअंतर-जोहसवासी विमाणवासी अ । जे केह दुइदेवा, ते सव्वे उयसअंतु सअ स्वाहा ॥१२॥
 वंदणकप्पूरेणं, फलहे लिहिज्जण खालिअं पीअं । एगंतराहणहअ-साहणीजुगलपणसं ॥१३॥
 इय सत्तरिसयं जंतं, सअं मंतं दुवारिपडिल्लिहिअं । दुरिआरिक्खियवंतं, निवभंतं निचअवेह ॥१४॥

४-अथहरस्तवः (गभिऊग)

नमिऊग पणयखुरगण-चूडामणिक्खिरणरंजिअं सुणिणो । चलपजुअलं अदाअय-वजासणं संधवं कुच्छं ॥१॥
 सडियकरचरणगहसुह-निवुनुवासा विवअलायन्ना । कुहअहरोगानल-फुलिंगनिद इहअव्वंगं ॥२॥
 ते तुह चलणाराहण-सलिलंजल्लिसेयवुइडियकंठ्याया । वगदपदइहागिरिपायव वव फत्ता पुणो लच्छिं ॥३॥
 दुव्वायजुभियजलनिहि-उअअडकहोलभीसणाराधे । संभंतअयविसंतुल-निज्जासयसुअवावारे ॥४॥
 अविदलिअजाणवत्ता, अणेण पावंति इच्छिअं कूलं । पासजिणचलणजुअलं, निअं चिअ जे नर्माति नरा ॥५॥
 खरपवणुहुअवणदवजालावलिमित्तिसयलदुसगएणे । डज्जंतं सुहअमयवहु-भीतणरदभीसणम्मिअवणे ॥६॥
 जगगुरुणो कअजुअलं, निववाचिअसघलतिहुअणाभोअं । जे संभरंति सणुआ, न कुणद जलणो भयं तेसिं ॥७॥
 विलसंतभोगभीसण-फुरिआरुणतयणतरलजीहालं । उगजुअंगं नचजलय-सअहं भीसणायारं ॥८॥

मन्ति कीडसरिस दूरपरिच्छेदविसमविसवेगा । तुह नामक्खरकुटसिद्धमतयुफुआ नरा लोए ॥१॥
 अडवीसु भिल्लतकार-पुलिदसद्दूलसद्दभीमासु । भयविट्टरुवुत्तकायर-उल्लरिअपहिअसत्थासु ॥१०॥
 अविच्छेत्ताविहवसारा, तुह नाह ! पणम्मसत्तावारा । ववगयविग्वा सिग्गं, पत्ताहियडच्छिअं ठाणं ॥११॥
 पज्जलिआनलनयण, दूरवियारियसुहं महाकाय । नदकुलिसघायविअलिअ-गइदुंअत्थलाभोअ ॥१२॥
 पणयससभमपत्थियनहमणिक्कपडिअ पडिमस्स । तुह वयण पहरणधरा, सीहं कुद्धपि न गणंति ॥१३॥
 ससिधवलदत्तसुसलं, दीहकरुल्लाललुइडिउच्छाहं । महुपिगनयणजुअल, ससलिलनवजलहराऽऽरावं ॥१४॥
 भीमं महागइदं अवासन्नपि ते न वि गणंति । जे तुम्ह चलणजुअलं सुणिवइ तुगसमलीणा ॥१५॥
 समरम्मि तिअखलगा भिधाय पविड उद्धुयकवधे । कुत विणिभिन्न करिकलदसुक्कसिक्कारपवरमि ॥१६॥
 निज्जियदपुद्धुरिउनरिदनिवहा भडा जस घवलं । पावंति पावपसमिण पासजिण तुहप्पभावेण ॥१७॥
 रोगजलजलणविसहरचोरारिमइदगयरणभयाइं । पासजिणनामसकित्तणेण पसमति सव्वाह ॥१८॥
 एवं महाभयहर पासजिणिदस्स सधवसुआरं । भवियजणणंदयर कल्लणपरंपरनिहाण ॥१९॥
 रायमयजक्खरक्खसकुसुमिणदुस्सउणरिक्खपीडासु । संआसु दोसु पथे उवसग्गे तह य रयणीसु ॥२०॥
 जो पढइ जो अ निसुणइ ताण कइणो य माणतुंगस्स । पासो पावं पसमेउ सयलसुवणधिअचलणो ॥२१॥
 उवसग्गते कमठासुरम्मि ज्ञाणाउ जो न सचलिओ । सुरनरकिन्नर जुवईहं संधुओ जयउ पासजिणो ॥२२॥
 एअस्स मज्झयारे अट्टारसअक्खरेहिं जो मतो । जो जाणइ सो ज्ञायइ परमपपत्तं कुड पास ॥२३॥

५-अजितशान्तिस्तवः

अजिअं जिअसव्वभयं, संतिं च पसंतसव्वगयपावं ।

जयगुरु संतिगुणकरे, दो वि जिणवरे पणिवयाप्ति ॥१॥ गाहा ।

ववगयमंगुलभावे, तेऽहं विउलतवनिम्मलसहावे । निरुवममहप्पभावे, थोसामि सुदिट्ठसव्भावे ॥२॥ गाहा ।
सव्वदुक्खप्पसंतीणं, सव्वपावप्पसंतिणं । सया अजियसंतीणं, नमो अजिअसंतिणं ॥३॥ सिलोगो ।

अजियजिण ! सुहप्पवत्तणं, तव पुरिसुत्तम ! नामकित्तणं ।

तह य धिइमहप्पवत्तणं, तव य जिणुत्तम संति ! कित्तणं ॥४॥ मागहिआ ।

क्किरिआविहिसंचिअकम्मकिलेसचिसुक्खवरं, अजिअं निचिअं च गुणेहिं महामुणिसिद्धिगयं ।

अजिअस्स य संतिमहामुणिणो विअ संतिकरं, सययं मम निव्वुइकारणयं च नमंसणयं ॥५॥ आलिङ्गणयं ।

पुरिसा ! जइ दुक्खवारणं, जइ अ विमग्गह सुक्खकारणं ।

अजिअं संतिं च भावओ, अभयकरे सरणं पवज्जहा ॥६॥ मागहिआ ।

अरइरइतिमिरविरहिअमुवरयजरमरणं, सुरअसुरगरुल्लसुयगवइपययपणिवइअं ।

अजिअमहमवि अ सुनयनयनिउणमभयकरं, सरणमुवसरिअ मुचि दिविज्जमहिअं सययमु-

वणमे ॥७॥ संगययं ।

त च जिणुत्तममुत्तमनित्तमसत्तधरं, अञ्जवमद्भवतिविमुत्तिसमाहिनिहिं ।
 सत्तिकर पणमामि दमुत्तमतित्थयर, सत्तिमुणी मम सत्ति-समाहिवरं दिसव ॥८॥ सोचाणयं ।
 सावत्थियुव्वपत्थिव च वरहत्थिमत्थयपसत्थिवित्थिन्नसत्थिअ थिरसरिच्छवच्छ,
 मयगललीलायमाणवरगघहत्थिपत्थाणपत्थिय सथवारिहं ।
 हत्थिहत्थबाहु धंतकणगरुअगनिरुवत्थयपिजर पवरलखणोवचिअ सोमचारुव्वं,
 सुइसुहमणाभिरामपरमरमणिञ्जवरदेवदुहुहिनियायमहुरयरसुहगिरं ॥९॥ वेइहओ ।
 अजिअं जिआरिण, जिअसव्वभयं भवोहरिउ ।

पणमामि अहं पयओ, पाच पत्तमेव मे भयय ॥१०॥ रासाळुद्धओ ।

कुरुजणवयहत्थिणाउरनरीसरो पढमं तओ महाचक्खट्ठिभोए महप्पभावो,
 जो थाचत्तरि पुरवरसहस्सवरनगरनिगमजणवयवई, वत्तीसारायवरसहस्साणुणायमगो ।

चउदसवररयणनवमहानिहिचउसट्ठिसहस्सपवरजुवईण सुदरवई,

चुलसीहयगयरहसयसहस्ससामी छन्नवहगामकोडिसामी आसिज्जो भारहम्मि भयवं ॥११॥ वेहुओ ।

तं सत्ति सत्तिकर, सत्तिण सव्वभया । संतिं थुणामि जिण, संतिं विहेउ मे ॥१२॥ रासानंदिअयं ।

इक्खागविदेहनरीसर ! नर-वसहा ! मुणिवसहा ! नवसारयससिसकलाणण ! विगतमा ! विहुअरया ! !

अजित्तमतेअगुणेहि महाबुणि अमिअबला ! विडलकुला ! पणमामि ते भवभयभूरण जगसरणा सम
सरणं ॥१३॥ चित्तलेहा ॥

देवदाणव्विंदचंद सरचंद ! हइ तुइ जिइ परम, लइरुव ! धंतरुण्यपइसेअसुइनिइयवल, ।
दंतपंति ! संति ! सत्तिकित्तिसुत्तिबुत्तिगुत्तिपवर !,

दित्ततेअ वंद ! धेअ ! सव्वलोअभाविअपपभावणे अ पइस मे समाहि ॥१४ नारायओ ॥

विमलससिकलाइरेअसोमं, धितिमिरसूरकराइरेअतेअं ।

तिअसवइगगाइरेअरुवं, धरणिधरप्पवराइरेअसारं ॥१५॥ कुसुमलया ।

सत्ते अ सया अजिअं, सारीरे अ बले अजियं ।

तव संजमे अ अजिअं, एस थुणामि जिणं अजिअं ॥१६॥ सुअगपरिदिजिअं ॥

सोमगुणेहि पावइ न तं नवसरयससी, तेअगुणेहि पावइ न तं नवसरयरवी ।

रुवगुणेहि पावइ न तं तिअसगणयई, सासुणेहि पावइ न तं धरणिअरवई ॥१७॥ सिडिअयं ।

तित्थवरपवत्तयं तमरयरहिअं, धीरजणयुअच्चिअं चुअकलिकलुसं ।

संत्तिसुहप्पवत्तयं तिगरणपयओ, संत्तिमहं महासुणिं सरणसुवणमे ॥१८॥ ललिअयं ।

विणओणयसिरहअंजलिरिसिगणसंथुअं थिमिअं, विउहाहिवयणवइनरवइयुअमहिअच्चिअं बहुसो ।

अहंरुगयसरयदिवापरसमहिअसप्पभं। तवसा । गयणंगगविपरणससुडअचारणवंदिअ सिरसा ॥ १९ ॥

किसलयमाला ।

असुरगरुलपरिवंदिअ, किन्नरोरग नमसिअ । देवकोडिसयसथुअ; समणसंधपरिधदिअ ॥२०॥ सुसुह ।

अभय अणह अरय अरुय । अजिअं अजिअं पयओ पणमे ॥२१॥ विज्जुविलसिअ ।

आगया वरविमाण दिव्व रुगगरहतुरयपहकरसएहिं डुलिअं ।

ससभमोअरणखुभिअलुलिअचलकुडलगपतिरीडसोहतमडलिमाला ॥२२॥ वेडुढओ ।

जं सुरसंघा सासुरसघा वेरविउत्ता भत्तिसुजुत्ता, आयरभूसिअ संभनपिडिअ सुदुदु सुविह्निअसव्ववलोघा ।
उत्तमकंचणरयणपरुविअभासुरभूसणभासुरिअंगा । गायसमोगयभत्तिवसागयपंजलिपेसियसीसपणामा

॥२३॥ रयणमाला ।

वंदिऊण थोऊण तां जिण, तियुणमेव य पुणो पयाहिणं ।

पणमिऊण य जिण सुरासुरा, पसुइआ समवणाई तो गया ॥२४॥ वित्तय ।

त महासुणिमहंपि पंजली, रागदोसभयमोहवज्जिअ ।

देवदाणववरिदवदिअ, संतिसुत्तामं महातव नमे ॥२५॥ वित्तयं ।

अवरतरविआरणिआहिं, ललिअहसवदुगामिणिआहिं ।

पीणसोणिथणसालिणिआहिं, सकलकमलदललोअणिआहिं ॥२६॥ दीवयं ।
पीणनिरंतरथणभरविणमियगायलयाहिं, मणिकंचणपसिखिलमेहलसोहिअसोणितडाहिं ।
वरखिबिणिनेउरसतिलयचलयविभूसणिआहिं, रइकरचउरमणोहरसुंदरदंसणिआहिं ॥२७॥ चित्तक्खरा ।

देवसुंदरीहिं पायवंदिआहिं-वंदिआ य जस्स ते सुविक्रमा कमा,

अप्पणो निडालएहिं मंडणोड्डुण प्पगारएहिं केहिं केहिं वि ।

अवंगतिलयपत्तलेहनामएहिं चिह्लएहिं संगयं गयाहिं,

भत्तिसन्निविट्ठवंदणागयाहिं हुंति ते वंदिआ पुणो ॥२८॥ नारायओ ।

तमहं जिणचंदं, अजिअं जिअमोहं । धुयसव्वकिलेसं, पयओ पणमामि ॥२९॥ नंदिअयं ।

धुअवंदिअयस्सा रिसिगणदेवगणेहिं, तो देववहुहिं पयओ पणमिअस्सा, जस्स जगुत्तमसासणअस्सा ।

भत्तिवसागयपिंडिअयाहिं, देववरच्छरसा बहुआहिं, सुरवरइगुणपंडिअयाहिं ॥३०॥ भासुरयं ।

वंस-सद्-तंति-ताल-मेलिए-तिलक्खराभिरामसद्दमीसए कए अ, सुइसमाणणे अ सुद्धसज्जगीयपाय-

जालघंटिआहिं, बलयमेहलाकलावेउराभिरामसद्दमीसए कए अ । देवनट्टिआहिं हावभावविब्भमप्पगार-

एहिं नच्चिज्जण अंगहारएहिं, वंदिआ य जस्स ते सुविक्रमा कमा तयं तिलोयसव्वसत्तसंतिकारयं, पसंतस-

द्वपावदोसमेसहं नमामि संतिमुत्तमं जिणं ॥३१॥ नारायओ ।

छत्राचामरपडागजूअजवमडिआ, झयवरमगरतुरयसिरिवच्छसुलछणा ।
दीवससुद्धमंदरदिसागयसोहिआ, सत्थिअवसहसीहरहचक्करकिआ ॥३२॥ ललिअयं ।

सहायलद्धा समप्पड्ढा, अदोसडुद्धा गुणेहिं जिद्धा ।
पसायसिद्धा तवेणपुद्धा, सिरीहिं इद्धा रितीहिं जुद्धा ॥३३॥ वाणवासिआ ।
ते नवेण धुअसव्वपावया, सव्वलोअहिअमूलपावया ।
संयुआ अजिअसंतिपायया, इंतु मे सिवसुहाण दायया ॥३४॥ अपरांतिका ।
एव तववलविउलं, युअ मए अजिअसतिजिणजुअल ।
ववगयकम्मरयमल, गइ गय सासयं चिउलं ॥३५॥ गाहा ।
त बहुगुणप्पसायं, सुक्खसुहेण परमेण अविसाय ।

नासेउ मे विसायं, कुणउ अ परिसाविअप्पसाय ॥३६॥ गाहा ।
त मोएउ अ नदि, पावेउ अ नदिसेणमभिनदिं । परिसाविअ सुरनदिं, मम य दिसउ संजमे नदिं ॥३७॥ गाहा ।
पक्खिअ-चोउम्मासिअ, सवच्छरिए अवस्स भणिअव्वो । सोअव्वो सव्वेहिं, उवसग्गनिवारणो एसो ॥३८॥
जो पढइ जो अ निसुणइ, उभओ कालपि अजिअसत्थिय । न इहुति तस्स रोगा, पुब्बुप्पन्ना विणासति ॥३९॥
जह इच्छह परमपय, अहवा कित्ति सुचित्थइ भुवणे । ता तेलुक्कुद्धरणे, जिणवयणे आयर कुणह ॥४०॥

६—वृहच्छान्तिः

ओ भो भव्याः । शृणुन वचनं प्रस्तुतं सर्वमेतद्, ये यंत्रायां त्रिसुवनगुरोरारंभिता भक्तिभाजः ।
तेषां शान्तिर्भवतु भवता सर्वदादिप्रभावादारोग्यश्रीधृति-सति-करी क्लेशविध्वंसहेतुः ॥१॥
ओ भो भव्यलोका इह हि भरतैरावतविदेह-संभवानां समस्ततीर्थकृतां जन्मन्यासनप्रकल्पान्तरसच-
धिना विज्ञाय सौधर्माधिपतिः सुघोषायद्यद्याचालनानन्तरं सकलसुरासुरेन्द्रैः सह समागत्य सविनयमर्हद्-
भट्टारकं गृहीत्वा कनकाद्रिशृङ्गे विहितजन्माभियेकः शान्तिसुद्वेषयति यथा ततोऽहं कृतानुकारमिति
कृत्वा “महाजनो येन गतः, स पन्थाः” इति भव्यजनैः सह समेत्य स्नात्रपीठे स्नात्रं विधाय, शान्तिसुद्व-
घोषयामि तत्पूजायास्नात्रादिमहोत्सवानन्तरमिति कृत्वा कर्णं दत्त्वा निशम्यतां निशम्यतां स्वाहा ।

ॐ पुण्याहं पुण्याहं प्रीयन्तां प्रीयन्तां भगवन्तोऽर्हन्तः सर्वज्ञाः सर्वदर्शिनस्त्रिलोकनाथास्त्रिलोकमहिता-
स्त्रिलोकपूज्यास्त्रिलोकेश्वरास्त्रिलोकेशोत्कराः ।

ॐ ऋषभ-अजित-संभव-अभिनन्दन-सुमति-पद्मप्रभ-सुपार्श्व-चन्द्रप्रभ-सुविधि-शीतल-श्रेयांस-वासु-
पूज्य-विमल-अनन्त-धर्म-शान्ति-कुन्थु-अर-महि-सुनिसुव्रत-नमि-नेमि-पार्श्व-वर्धमानान्ता जिनाः शान्ताः
शान्तिकरा भवन्तु स्वाहा ।

ॐ सुनयो सुनिप्रवरा रिपुविजयहृभिक्षकान्तारेषु दुर्गमार्गेषु वो रक्षन्तु वो नित्यं स्वाहा ।

ओ ह्रीं-श्री-धृति-मति-कीर्ति-क्रान्ति-वृद्धि-लक्ष्मी-मेधा-विद्यासाधनप्रवेशनिवेशनेषु सुगृहीतनामाना जयन्तु ते जिनेन्द्राः ।

ओ रोहिणी-प्रज्ञसि-वज्रशृङ्खला-वज्राइकुशी अप्रतिचक्रा पुरुषदत्ता काली महाकाली गौरी गान्धारी सर्वास्त्रा महाज्वाला मानवी वैरोद्या अन्धुसा मानसो महामानसो पीडश विद्यादेव्यो रक्षन्तु वो नित्यं स्वाहा ।

ओ आचार्योपाध्यायप्रभृतिचातुर्वर्ण्यस्य श्रीश्रमणसघस्य शान्तिर्भवतु तुष्टिर्भवतु पुष्टिर्भवतु ।

ओ ब्रह्मश्चन्द्रसूर्याङ्गारकपुधृहस्पतिशुक्रशनिश्चरारट्टकेतुसहिताः सलोकपालाः सोम-यम-वरुण-कुबेर-वासवादित्य-स्कन्द-चिनायकोपेताः, ये चान्येऽपि ग्रामनगरक्षेत्रदेवताऽऽद्यस्ते सर्वे प्रीयन्ता प्रीयन्तां अक्षी-णकोशकोष्ठागारा नरपतयश्च भवन्तु स्वाहा ।

ओ पुत्रमित्रभ्रातृ-मूलत्रसुहृत्स्वजनसवन्धिमनुवर्गसहिता नित्य चामोक्षप्रमोदकारिणः । अस्मिंश्च भूमण्डला-यतने निवासिसाधुसाध्वीश्रावकश्राविकाणा रोगोपसर्गव्याधिदुःशुब्धभिक्षदौर्मनस्योपशमनाय शान्तिर्भवतु ।

ओ तुष्टिषुष्टिऋद्धिवृद्धिमाङ्गल्योत्सवाः सदा प्रादुर्भूतानि पापानि शाम्यन्तु दुरितानि, शत्रवः पराङ्मुखा भवन्तु स्वाहा ।

श्रीमते शान्तिनाथाय, नमः शान्तिविधायिने । त्रैलोक्यस्यामराधीश-सुकुटाभ्यर्चिताद्रव्ये ॥१॥

शान्तिः शान्तिकारः श्रीमान्, शान्तिदिशतु मे गुरुः । शान्तिरेव सदा तेषां, तेषां शान्तिर्गृहे गृहे ॥२॥

उन्मृष्टरिष्टदुष्ट, ग्रहगतिदुःस्वप्नदुर्निमित्तादि । संपादित-हितसंपन्नामग्रहणं जयति शान्तेः ॥३॥
श्रीसङ्घ-जगज्जनपद-राज्याधिपराज्यसन्निवेशानाम् । गोप्टिकपुरसुख्याणां, व्याहरणैव्यर्हाहरेच्छान्तिम् ॥४॥

श्रीश्रमणसङ्घस्य शान्तिर्भवतु, श्रीजनपदानां शान्तिर्भवतु, श्रीराज्याधिपानां शान्तिर्भवतु, श्रीराज्य-
सन्निवेशानां शान्तिर्भवतु, श्रीगोप्टिकानां शान्तिर्भवतु, श्रीपुरसुख्याणां शान्तिर्भवतु, श्रीपौरजनस्य शान्ति-
र्भवतु, श्रीब्रह्मलोकस्य शान्तिर्भवतु ॐ स्वाहा ॐ श्रीपार्श्वनाथाय स्वाहा ।

एषा शान्तिः प्रलिङ्घ्यायात्रास्नात्रात्यवसन्निषु, शान्तिकलयो गृहीत्वा कुङ्कुमचन्दनकर्पूरागुरुधूपवासंक्रुसु-
माञ्जलिसमेतः स्नात्रचतुष्किकायां श्रीसंघसमेतः शुचि शुचि वपुः पुष्पवस्त्रचन्दनाभरणालङ्कृतः पुष्पमालां
कण्ठे कृत्वा, शान्तिसुदुघोषधित्वा शान्तिपानीयं मस्तके दातव्यमिति ।

नृत्यन्ति नित्यं मणिपुष्पवर्षं, सृजन्ति गायन्ति च मङ्गलानि ।

स्तोत्राणि गोत्राणि पठन्ति मन्त्रान्, कल्याणभाजो हि जिनाभिषेके ॥१॥

शिवमस्तु सर्वजगतः, परहितनिरता भवन्तु श्रूतगणाः । दोषाः प्रयान्तु नाशं, सर्वत्र सुखीभवतु लोकः ॥२॥

अहं गोवालयमाया, सिवादेवी तुम्ह नयरनिवासिनी ।

अम्ह सिवं तुम्ह सिवं, असिवोवसमं सिवं भवतु स्याहा ॥३॥

उपसर्गाः क्षयं यान्ति, छिद्यन्ते विभ्रवल्लयः । मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥४॥

सर्वमङ्गलमाङ्गल्य, सर्वकल्याणकारणम् । प्रधान सर्वधर्माणा, जेनं जयति शासनम् ॥५॥

७-लघुशान्ति स्तवः

शान्ति शान्तिनिशान्त, शान्त शान्ताऽशिव नमस्कृत्य । स्तोतु. शान्तिनिमित्त, मन्त्रपदैः शान्तये स्तौमि ॥१॥

ओमिति निश्चितवचसे, नमो नमो भगवते ऽर्हते पूजाम् । शान्तिजिनाय जयवते, यशस्विने स्वामिने दमिनाम् ॥२॥

सकलातिशेषकमहा-सपत्ति समन्विताय शश्याय । त्रैलोक्यपूजिताय च नमो नमः शान्तिदेवाय ॥३॥

सर्वाभिरसुसमूह-स्वामिकमपूजिताय न जिताय । श्रुवनजन पालनीयत-तमाय सकतं नमस्तस्मै ॥४॥

सर्वदुरितौघनाशन-कराय सर्वाशिवप्रशमनाय । दुष्टग्रहभूतपिशाच-शाकिनीना प्रमथनाय ॥५॥

यस्येति नाममन्त्र-प्रधानवाक्योपयोगकृततोषा । विजया कुरुते जनहित-मिति च नुता नमत त शान्तिम् ॥६॥

भवतु नमस्ते भगवति ! विजये ! सुजये ! परापरैरजिते ! । जगत्यां जयतीति जयावहे भवति ॥७॥

सर्वस्यापि च सह्यस्य, भद्रकल्याणमङ्गलप्रददे ! । साधूनां च सदा शिव-सुतुष्टिपुष्टिप्रदे ! जीयाः ॥८॥

भव्यानां कृतसिद्धे ! निवृत्तिनिर्वाणजननि ! सत्त्वानाम् ।

अभयप्रदाननिरते ! नमोऽस्तु स्वस्तिप्रदे तुभ्यम् ॥ ९ ॥

भक्ताना जन्तूना, शुभावहे ! नित्यसुच्यते देवि ! । सम्यग्दृष्टीना धृति-रति-मति-बुद्धि-प्रदानाय ॥१०॥

जिनशासननिरतानां, शान्तिनतानां च जगति जनतानाम् ।

श्री-संपत्कीर्ति-यशो-वर्द्धनि ! जयदेवि ! विजयस्व ॥१॥

श्री-संपत्कीर्ति-यशो-वर्द्धनि ! जयदेवि ! विजयस्व ॥१॥

श्री-संपत्कीर्ति-यशो-वर्द्धनि ! जयदेवि ! विजयस्व ॥१॥

श्री-संपत्कीर्ति-यशो-वर्द्धनि ! जयदेवि ! विजयस्व ॥१॥

श्री-संपत्कीर्ति-यशो-वर्द्धनि ! जयदेवि ! विजयस्व ॥१॥

श्री-संपत्कीर्ति-यशो-वर्द्धनि ! जयदेवि ! विजयस्व ॥१॥

श्री-संपत्कीर्ति-यशो-वर्द्धनि ! जयदेवि ! विजयस्व ॥१॥

श्री-संपत्कीर्ति-यशो-वर्द्धनि ! जयदेवि ! विजयस्व ॥१॥

श्री-संपत्कीर्ति-यशो-वर्द्धनि ! जयदेवि ! विजयस्व ॥१॥

श्री-संपत्कीर्ति-यशो-वर्द्धनि ! जयदेवि ! विजयस्व ॥१॥

श्री-संपत्कीर्ति-यशो-वर्द्धनि ! जयदेवि ! विजयस्व ॥१॥

श्री समवसरणस्तवः ।

धुणिमो केवलिवत्थं, वरविज्जाणदधम्मकित्तिऽत्थं । देविन्दनयपयत्थ, तित्थयर समवसरणत्थं ॥१॥
पयडिअसमत्थभावो, केवलिभावो जिणाय जत्थ भवे । सोहत्ति सव्वओ तहिं, महिमाजोयणमनिलकुमरा ॥२॥
वरिसत्तिमेरुकुमारा, सुरहिजल उडसुरा कुसुमपमर । विरयंति वणा मणिकणग रयणचित्तं महिअल तो ॥३॥
अभिन्तर मज्झवट्ठि, तिवप्पमणिरयणकणयकविसीसा । रयणज्जुणप्पमया, वेमाणिअजोइभवणकया ॥४॥
वट्ठम्मि दुतीसगुल-तित्तीस घणुपिट्ठल पणसय धणुच्चा । उथणुसय उगकोस-तरा य रयणमयचउदारा ॥५॥
चउरसे इगधणुसय-पिट्ठवप्पा सट्ठकोसअतरिआ । पढमधिआ विअ तडआ, कोसतर पुव्वमिव सेसं ॥६॥
सोवाणसहसदसकर-पिट्ठुच्च गंतुं सुवो पढमवप्पो । तो पन्ना धणुपयरो, तओ अ सोवाण पण सहसा ॥७॥
तो वियवप्पोपन्ना-धणुपयर सोवाण सहसपण तत्तो । तडओ वप्पो छरसय-यणु इगकोसेहितो पीढं ॥८॥
चउदार तिसोवाण, मज्जेमाणिपीढय जिणतणुच्चं । दो धणुसय पिट्ठदिह, सड्ढट्ठकोसेहिं धरणिअला ॥९॥
जिणतणुवारणुवो, समहिअजोअणपिट्ठ असोगतत्त । तयहो य देवच्छन्दो, चउसीहारासण सपयपीढा ॥१०॥
तडुवरि चउ छत्ततिआ, पडिख्वतिग तहट्ठ चमरधरा । पुरओ कणयकुत्तेसय-ट्ठिअफालिअधम्मचक्कचउ ॥११॥
झयछत्तमयरमंगल-पंचालीदामवेडवरकलसे । पडदार मणितोरण तिय धूवघडी कुणत्ति वणा ॥१२॥
जोयणसहस्सदडा, चउज्झया धम्ममाणगयमीहा । ककुभाइजुया सव्व, माणमिण निअनिअकरेण ॥१३॥

पविसिअ पुब्वाइ प्हू, पयाहिणं पुब्बआसणनिविट्ठो । पयपीढ्ठविद्यपाओ पणमिअतित्थो कहइ धम्मं ॥१४॥
 सुणिवेमाणिसमणी, सभवणजोइवणदेवीदेवतियं । कप्पसुरनरित्थित्थिअं, ठंतिऽग्गेयाइविदिसासु ॥१५॥
 चउदेवीसमणी उद्धट्ठिआ निविट्ठा नरनरित्थिसुरसमणा । इय पणसगपरिस सुणंति, देसणं पढमवप्पंता ॥१६॥
 इय आधरसयवित्ति-वुत्तं चुन्नीइ पुण सुणि निविट्ठा । वेमाणिणि समणी दो, उट्ठा सेसा ट्ठिआ उ नव ॥१७॥
 बीअन्तो त्तिरि ईसाणि, देवच्छन्दो अ जाण तइअन्तो । तह चउरंसे डुडु वाची, कोणओ वट्ठि इक्किका ॥१८॥
 पीअसिअरत्तसामा, सुरवणजोइभवणा रयणवप्पे । धणुदंडपासगयहत्थ, सोमयमवरुणधणयक्खा ॥१९॥
 जयविजयाजिअ अपराजिअत्ति सिअअरुणपीअनीलाभा । बीए देवीजुअला, अभयंकुसपासमगरकरा ॥२०॥
 तइअ बहि सुरा तुंवरु-खट्ठंगिकवालजडमउडधारी । पुब्वाइदारवाला, तुंवरुदेवो अ पडिहारो ॥२१॥
 सामन्नसमोसरणे, एस विहीएइ जइ महिट्ठिसुरो । सब्वमिणं एगोऽवि डु, स कुणइ भयणेयरसुरेसु ॥२२॥
 पुब्बमजायं जत्थ उ, जत्थेइ सुरोमहिइड्ढिमघवाई । तत्थोसरणं नियमा, सययं पुण पाडिहेराइं ॥२३॥
 डुत्थिअसमत्थअत्थिअ-जणपत्थिअअत्थसत्थसुसमत्थो । इत्थं थुओ लहु जणं, तित्थयरो कुणउ सुपयत्थं ॥२४॥

॥ शान्तिनाथजीनो कलश ॥

श्रीशान्तिजिनवर सयल सुखकर, कलश भणीई तास, जिम भविक जीवने सयल संपति, वडोत्त लील विलास ।
 कुरुनामि जनपद तिलकसमवड हत्थिणावर सार, जिणनयरीकंचण रयण धन धण सुगुण जन आधार ॥१॥

तिहां राय राजे बहुदिवाजे विश्वसेन नरिन्द, निज प्रकृति सोमह तेज तपनट् भानु चन्द दिणद ।
 तस पणत् खाणि पट्टराणी नामे अचिरा नारी, सुह सेज सुती चडद पेदे सुपन सार दु-चार ॥३॥
 मन्वड्डुसिद्ध विमाणथी तव चविओ उर उपन्न, बहु भद्र भद्रव कसिण सत्तमि दिवम गुण सपुन्न ।
 तव रोग मोग वियोग चिड्ढवर मारि ईति समत, वर सयल मगल केलि कमला घर घर विलसत ॥३॥
 यरचद योगे जेष्ठ तेरसी वदि दिने थयो जन्म, तव मज्झ रयणीहं दिसा कुमारी करे सुईरुम्म ।
 तव चलिअ आसण सुणिअ सवि हरि घटानादे मेलि, सुरवृद साथड मेरुमथइ रचे मगलकेलि ॥४॥

ढाल भापानी । नाभिराया घर नन्दन जनमीयाण-ए देशी
 विद्वसेन नृप घरे नदन जनमीयाण तिहुंअण -भविण प्रमस्यु प्रणमीयाण,
 गुरु-हार प्रणमीया चउसट्टि इद लेइ ठवे मेरुगिरीद, सुरनदि नीर समीर तिहा खीर जलनिधि नीर ॥५॥
 सिंहासणे सुरराज जिहा मिल्या देवसमाज, ओपयिनी जाति सर्वे सरस कमल विख्यात ॥६॥

ढाल-विख्यात विविध परे कर्मनाए तिहां हर्ष भरि सुरभि वरदामनाए,
 ब्रटक-हारे वरदामने मागधनामे जेह तीरथ उत्तम ठाम, तेहतणी माटि सर्व करे ग्रहण सर्व सुपर्व ॥७॥
 यावना चदन सार अभिओगिक सुर अधिकार, मनी धरी अधिक आणद अचलोकना जिनचद ॥८॥
 ढाल-श्रीजिनचदने सुरपति नवरावताए निज निज जन्म सुकृतारथ भावताए

ब्रह्मक-हारे भावता जनम प्रमाण । अभिषेक कलश मंडाण । साठि लान्न ने एक कोडि, सय दोय पंचास जोडि ।
 आठ वाना जेह होइ, चोसट्ठ सहसा जोइ । इणि परे भक्ति उदार, करे पूजा विविध प्रकार ॥१०॥
 ढाल-विविध प्रकारना करिय सिणगार इथुए भरीय जल विमलना विपुल भुंगार रुड्डाए ।
 ब्रह्मक-हारे भुंगार थाल चंगेरी, सुप्रतिठ प्रसुवसुं भेरी । सवीकलश परिमंडाण, ते विविधवस्तु परीमाण ॥११॥
 आरति मंगलदीप, जिनराजने समीप । भगवती चूरणिसाहे, अधिकार एह उछाहे ॥१२॥
 ढाल-अधिकार उछाहसुं हरष भरजल भीजताए, नवनव भक्तिभर कीजताए ।
 ब्रह्मक-कीजता नाटिक रंग गाजतां गुहिर रुदंग, किट किटति तिहां कडताल चउताल ताल कंसाल ॥१३॥
 सख पगत्र भुंगल भेरी झलरी वीणा नफेरी एक करे ह्यपार, एक करे गजगुलकार ॥१४॥
 ढाल-गुलकार गरज नीरव करेए पाय डूर २ धूर सुर धरेए ।
 ब्रह्मक-सुर धरे अतिबहुमान । तिहां करे नव नव तान, वर विविध जाते छंद जन भक्त सुरतकंद ॥१५॥
 बलि करे मंगल आठ, ए जम्बूपन्नति पाठ । थय धूरय मंगल एइ, मन धरी अति बहु प्रेम ॥१६॥
 ढाल-प्रेमसुं घोथणा पुन्यनी नीसुणे सुर सहूए समकित पोषणा सिष्ट संतोषणा इम बहूए ।
 ब्रह्मक-बहू प्रेमसुं सुख खेम धरि आणिया निधी जिम, बत्रीस कोडि सुवन्न करे वृष्टि रयणनिभान ॥१७॥
 जिन जननी पासे मेहेला, करे अहाइनी केलि । नंदिसरें जिनगेहे, करे महेच्छव समनेहे ॥१८॥

ढाल-हवे राय महोच्छव करे रंग भरि थयो जव परभाति, सुर पूजीओ सुतनयननिरखी हरविथो तब तात ।
 वर धवल मगल गीत गाता गर्ध्व गावइ रास, बहु मान दान सुखिया कीधा, सकल पूगी आन ॥१९॥
 तिहां पचवरणी कुलुमवासित भूमिका सलित्त, तव अगर कुदरु धूप धूपणा ढाल्या कुकुंमलित्त ।
 सिर मुकट मडण काने कुडल हिइ नवसर हारि, इम सयल भूपण भूषितांर जगत जन परिवार ॥२०॥
 जिन जन्म कल्याण महोच्छवे चउद सुवन उद्योत, नारकि थावर प्रमुख सुखिया सकल मगल होत ।
 दुब दुरित ईति शमित सघलां जिनराजने परताप, तिणहेत्ते शातिकुमार ठवीउं नाम अति आल्हाद ॥२१॥
 कलश-श्रीशान्तिजिननो कलश भणता हुइ मंगलमाल, ऋल्याणकमला केलि करतां लहे लील विलास ।
 जिन स्नात्र करीड सहेज तरीइ भवसमुद्द अपार, श्रीज्ञानविमलसूरिद जेने श्रीशान्तिजिन जयकार ।

॥ श्रीशान्तिनाथजीनो कलश सपूर्ण ॥

५ परिच्छेदः-प्रतिष्ठापस्करः ।

प्रतिष्ठा विविधाङ्गैः-पयोगी यो नियोगत । उपस्करणः सोऽत्र, समासेनोपवर्णितः ॥६॥

भा०टी०-प्रतिष्ठाना जगभूत एवा भिन्न भिन्न अनुष्ठान कार्योभा जे ने मामाननी अनियार्थ उपयोगिता होय छे तेवा
 सामाननी आ परिच्छेदमां सुचिओ आपेली छे.

१—अंजनशलाकाना सामाननी सूची—

श्रीफल (नालियेर) नं० ३० ?	किसमिस द्राख से. २	लालचंदन मूठो १
नालियेर गोला ३१	एलची तोला १०	अगर तो० १०
सोपारी राती २१	लविंग तो० १०	तगर तो० ५
सोपारी काली ५१	जावंत्री तो० ५	कंकोल तो० ५
सोपारी धोली से. २	जायफल तोला १०	वालाहुंची ४
बदाम गोटा से. २	कंकु तोला १०	अगरवची से० २
बदाम कागदी से. १	केसर तो० १०	दशांगधूप से. २
बदाम गोला से. १	करतूरी वाल ५	वासक्षेप से. २
पिस्ता से. ०॥	गोरोचन वाल ८	किंदूप धूप से० १०
कमलकाकडी से. ०॥	कपूर तो० १०	प्रियंगु तोला १०
सिंधोडां सुकां से. २	हिंगलोक डलीचदू तो० ५	गहुंला तो० १०
खारेक से. २	बरास तो० १०	मंगलमाटी ८ जातनी
काजू से. २	चंदन मूठा ४	अष्टवर्ग १ लो

अष्टमर्ग २ जो
 सत्रौपधि पडिकु १
 सद्दौपधी पडिकु १
 सुगधौयधी पडिकुं १
 मूलिकाचूणं पडिकुं १
 कपाय छाल पडिकुं १
 ३६० क्रियाणोनो पुढो १
 कालो सुरमो काचोडली तो० २
 पाकां मोती तो. ०।
 मवालनी शाखा तो ३
 गुलाल तो० १०
 अरीर तो० ५
 पंचरत्ननी पोडली १ २५
 आरोगं से० ११

गेवा (गोली) छत्र से० १
 भात (डांगर) से० ५
 चोखानी फूली से० १
 शण्णरीज से० १
 बाल से० १
 कुलत्थ से० १
 तिल से० २
 सरसव से० १
 गड्डुं से० ५
 जव से० ७
 चणा से० ६
 चोला से० ५
 मग से० ६
 जुवार से० १

अडद से० ६
 सोनाना वर्क थोकडी ५
 रूपाना वर्क थोकडी १०
 सोनाना पुष्प १०८
 रूपाना पुष्प १०८
 चांदीनी रत्नानी १
 चादीनो कच्चोलो १
 चांदीना कलशिया ८
 सोनानी या चांदीनी थाली १
 सोनानी शलाई १
 सोनानी कलम १
 जर्मन शिल्वरानी वाटकी १५
 आरीसो १ (इंच ७-८ लंबो)
 आरीमा ८ (४-५ इंच लंबा)

धवली ६
अबोटियां जोटा ८
उत्तरासणियां जोटा ८
मोटा पनानी मलमल ताको १
छोटा पनानी मलमल ताको १
जगनाती वारनो पनो ताको १
लांगछोथ ताको ०॥
चोल ताको १ पनो हाथ २ नो
चोल ताको १ पनो वारनो
नीलुं स्याउ ताको १ पनो १ हाथ
पीलुं स्याउ ताको १ पनो १ हाथनो
घंट १
घंटडी १
धूपधाणुं ? लाकडीना हाथाणुं

तेल चंदननुं तो० १०
गुलावजल शीशा २
आंवलं तो० १०
कंफोडी तो० ५
वखो-रेशमी रातुं हा० ७
रेशमी पीलुं हा० ५
रेशमी नीलुं हा० ७
रेशमी थोलुं हा० ११
रेशमी कांलुं वल्ल हा० २॥
पंचपटो (मशरु) हा० १।
रेशमी आशमानि हा० १।
रेशमी जांबुई हा० १।
कटासनां उनी ८
चरवला ४

अंघाडीनी पूंजणी ८
चामर ८
पंवा (वींजणां) ८
मींदल १६०
मराडाफली १५०
काचनां न्हानां फाणस २
समाई २ छोटी
समाई मोटी २ फूट २॥।।
अत्तर गुलाब तो० १
अत्तर केवडा तो० १
अत्तर मोगरा तो० १
अत्तर स्वश तो० ?
अत्तर चमेली तो० १
तेल चमेली तो० १०

धूपघाणु ? सेंसवाल

आरती ?

मगलदीनो ?

छा ?

कमलकाग ?

त्राचा-पीतलनी रुडी ? मोडी

गंगाजलनी शीशी ?

रमीन पेचो-पाषडी दंड माटे

गोल सेर ?

खडी साकर सेर ?

आवा नागल सेर ?

गायनु घी सेर ?

भंगनुं घी सेर ?

जवारिया वास ?

७-७ छाषडी बांशनी छात्र,

बांश नया उजला ? ६ लावा हाथ ?-५

बाजोठ ? गज समचोरस नास्तुनो

पाटलो ? नंधारतनो

पाटलो ? दिरूपालेनो

पाटलो ? नवग्रहोना

पाटलो ? अष्टमगलनो

प्रणालिओ गजोठ ?

कटामणां जेवी चटाइयो ? २

नवा पाटला ?

अखड दीपक योग्य मोटा फाणस ?

मोटा कोट्टिया फणागालां ?

कामानी थाली ?

रामाना गटका ?

कन्याकात्या घुमनी कोकडी ?

त्राघानो लोदो ?

त्रागानो फलशियो ?

हलडरना गाठीया ?

समूलो डाम मूलिया ?

अथेडानी रुलम ?

कोरा डामनी पूली ?

१०८ नालनो कलश ?

चोरुडता रुपया ?

त्रात्राना पैसा ? ३००

त्रे आनी पावली आठ आनी रु. ५०नी

रोरुडा रुपया

मागरु दीवो ?

माला ? स्फुटिकनी

चहरी माटे वेहिनां वर्तन ३६
 प्रासाद पुरुष सोनानो ?
 प्रतिमाओने आभरण माटे सोनानो तार
 चांदीनो तार
 सोना चांदीना वास्तुपत्रा
 शिल्पसन्मानार्थं चांदीनो गज, हथोडो,
 टांकणो, भरणको, चूनलोडो वगैरे.
 तोरण बांधवाने सोनानी छडी ?
 मंडपनो सोमान
 वेदीनो सामान
 आंगीनो सामान

चांदीनो मूलनायक नीचे राखवानो कूर्म ?
 ध्वजा ? दंड मापनी
 ध्वजा २ न्हानी.
 माटीना म्होटा कलश २
 घडा (मटकी) ८
 मोटा गाडवा (मोरिया) १२
 न्हाना गाडवा (पुंखणिया) १२
 माटीना कलशिया (कुलका) १०८
 कोडियां ८ न्हाना
 कुंडां ४ म्होटां
 कुंडां ८ कंइक न्हानां
 कुंडिओ न्हानी ? २
 सरावलां ६ ?

माला ? गोमेद वा सिंदुरिया स्फटिकनी
 माला ? नीलमणिनी
 माला ? केरवानी
 माला ? अकलवेरनी
 माला ? प्रवालनी
 चोरस चंद्रवो न्हानो ?
 जवनी माला प्रतिमा दीठ
 आरेठानी माला प्रतिमा दीठ
 माणकस्तंभ (मोभण) ?
 तोरण ? सागनी लकडीनुं
 तोरण ? चांदीनुं
 चांदीनां पुंखणां (जुंसरो ? मूसल २
 रवइओ ३ त्राक ४)

સૂચના—

ઉપરની હસ્તીમાં જળાવેલ સામાન અજનપ્રતિષ્ઠાસ્થાપના અને શાંતિસ્નાત્ર અથવા અટોચરી સ્નાત્રનો સયુક્ત છે, હલેલ પ્રમાણમાં સ્થિતિવશાત્ સાધારણ વધારો ઘટાડો પણ થઈ શકે છે.

મારવાહમા અજનશલાકામાં જ નહિ સ્થાપનાપ્રતિષ્ઠામાં પણ તેમજ ચાંધવાની સિવાજ છે અને એના ચઢાવાના હજારો રૂપૈયા થાય છે, વહી ત્યાં દેરાસર ગનાગનાર શિલ્પીના નમ્નાનાર્યે ગજ આદિ ઉપકરણો ચાદીના કરામીને અપાય છે, વાસ્તુજ્ઞા પ્રસંગે તેનાનુ અથવા ચાદીનુ વાસ્તુ (ચોસ પટું) કરામીને તેને અપાય છે, તેથી આ ચાનતનો હસ્તીમાં નિર્દેશ કર્યો છે, તેલ સરયુ નથી, પરિસ્થિતિને અનુસારે પ્રતિષ્ઠાપ્રસંગે તેલો વે તેલા તેનુ તથા ૪૦-૫૦ તેલા ચાંદી તો હસ્તધાર શિલ્પીના હાથમાં જાય એવી ઉદારતા પ્રતિષ્ઠા કરામનારે અવશ્ય કરવી જોઈયે.

પૂર્વે અજનશલાકા મહાપૂજાદિમાં નાણાનો વ્યવહાર ન હતો, પણ વર્તમાન સમયમાં વિધિકારો પગલે પગલે નાણા મૂકાવે છે, અધુરુ વિધિકારો તો ઉત્સવ દર્મિયાન ૪૦૦-૫૦૦ રૂ.ની પોતાના હાથે ગતિ કરે છે, એ વિધિકારોની પ્રતિષ્ઠાની સત્તિ કરનાર છે, પ્રતિષ્ઠા કરાવનારે યથોચિત યાચકાદિદાન પોતાને હસ્તે આપવુ જોઈયે.

૨—પાદલિસ—પ્રતિષ્ઠાપદ્ધતિ પ્રતિષ્ઠા કારક જાત સૂચી ।

અધિગત્સનામંડપ કરણ

સુવર્ણાટિ કલશ ૮

સ્નાનમંડપ કરણ

આઘ કલશ ૪

નારક (માટીના કલચિયા) ૧૦૮

ચતુરગ વેદી ૧

शंखपुष्पी-मला-अतिवला-हेमपुष्पी-वि-
शाला-नाकुली-गंधनाकुली-सहा-वा-
राही-गतावरी-भेदा-मद्यमेदा-काकोली
-क्षीरकाकोली-कुमारी-गौरी-नाना
-गौरी-भोटी-चक्रांका-सयूरशिला-
लक्ष्मणा-रुवा-दुर्भे-पतञ्जारी-गौरभा-
सूत्रजटा-लज्जालु-भेषङ्गी-महद्वि-शुद्धि-
आदि)
अष्टकर्मगं- (प्रियंशु-वना-लोध-यष्टिमयु
-दुष्ट-भेषदा-उशीर-कद्वि-द्वि-शता-
वरी.)
सर्वोपभिवर्गं- (प्रियंगु-वीलक-आमल-
क-जातिपत्रिका-शुग्नि-अंधिपर्णक-मुस्ता
-शुद्धादि)

-उगोक-कंद-आम्र-जम्बु-चकुल-अ-
जुन-पाडल-वैतर-पलाशादि)
मृत्तिकावर्गं- (राफडानी, पर्वतशिव-
रनी, नदीना चने तटनी महानदीसंग-
मनी, डाममूलनी, निम्बवृक्षमूलनी,
चैत्यनी, हाथीदांतनी, द्रुम शृंगनी,
राजद्वारनी, पयसरोतस्नी, एक वृक्ष-
आदिनी)
पानीयवर्गं- (गंगा-यमुना-मही-नर्म-
दा-सरस्वती-तापी-गोदावरी-समुद्र-
पयसर-ताम्रपर्णी नदीसंगम आदिनां
वाणी)
औषधीवर्गं- (सहदेवी-जया-निजया
-जयन्ती-अपराजिता-त्रिणुक्ता-)

शरावलां ५०
जवारिया वांस ४
शरावलासां जवारा
स्थपति (शिल्पि) कलाश ?
धान्यवर्गं- (जव-शालि-गहू-तल-
अडद-भग-चाल-वणा-मसूर-चुअर-
(वा) शणवीज-कांग-शामकादि)
रतनवर्गं- (हीरक-सूर्यकान्त-चन्द्रकान्त
-नील-महानील-मोती-पुलराज-
पन्नाराग- (माणिक, वैडूर्य (अफीक)
आदि)
लोहवर्गं (सोलुं-रुं-चांनु-कांतलोह-
जसद-पीतल-कांसुं-सीसुं आदि)
कषायवर्गं- (धड-अंबर-पीपल-चंपक

गन्धवर्ग-(सिल्वक-कुमुद-मांसी-मुरमां-
 सी-श्रीखण्ड-अगुरु-रूपूर-नल-भूतिके-
 शादि)
 वास-(श्रीखंड-कुकुम कर्पूरमय)
 मुद्रिका
 कंकण-मदनफल
 रक्तचूर
 जर्णस्थिर
 लोहमुद्रिका
 ऋद्धि-वृद्धियुत ककण ?
 यवमालिका
 तर्कुका (शाको)
 थिला (मिनथिल)
 गोरोचन

श्वेत सरसवा
 श्वेत वल्लद्वय
 पट्टाञ्जदन
 प्रतिमाञ्जदन
 पटलको
 यटो
 घृष्याणाओ
 रूपानी वाटकी
 सोनानी शलाई
 कासीनी वाटकिको
 आरीसो ?
 नालिण्रो
 बीजोरां
 कैलां

नारंगीओ
 आवा
 जावू
 कोला
 घृन्ताक
 आमला
 चोर आदि शुभ मूलवर्ग ।
 सोपारी
 नागवेल्ना पान
 माठपुटिका ?०८
 अखंड चोखा सेई ?
 सेलडीओ
 विविध पुष्पो

३—गुणरत्नसूरिप्रतिष्ठाकल्पोक्त सामग्री सूची—

नवांगवेहि (वेदी) ४	माई साडी (कुसुमी वस्त्र)
वांसे जवारा ४ (गोहू व्रीहि जव)	मीढल (ऋद्धि वृद्धि सहित)
शरावले जवारा ८	आरीठा सालाओ, जवमालाओ
न्हवणयोग्य कलश ४ (सोना रूपा चांवा वा माटीना)	श्वेतसर्पप (लोहाऽच्छेदितनीरक्षापोटली)
पाणी घालवा कोरा घडा	अर्धभाजन (सरसन-दहि-अक्षतघृत-डाम- मय)
घडी योग्य कुडी २	गेवाखत्र वेष्टित पूर्ण चाक
नंदावर्तयोग्य वरगडुआ ८	पुंखणोपकरण (धूसर-सुसल-खाइओ)
शराव ६४	पुंखणारी स्त्री ४ (स कांकणी)
कुंडां माटीनां ८	आंमणां शराव, गंगाजल
आचार्ययोग्य वस्त्रो	समूल दर्भ, गंगावेळु
सूत्रधारयोग्य वस्त्र	कृवा नदीनां १०८ पाणी, ३६० क्रिया- णानी पडो घसी खखडनो वास धवलो
अक्षतपात्र १	

नास (किमर-कश-कस्तूरी)

मोगपुडी

धूपपुडी

घणा फूल

अखड तंदुल सेर २

घट

धूपघाणा

छत्र

चामर

पचशब्द घाजिन

नैवेद्य-(घारी, सुंढाली लाइ माडी)

१-सुवर्णचूर्ण वा ४ सुवर्ण कलश अथवा
सुवर्णपुक्त जलस्नात्र.

काकरिआ २५ (मगना ५, तिलना
५, चणाना ५, गहूना ५, घाणीना ५,
शुलीना ५, एवं २५,)

बलिशाराव ७ (वाट, खीर, करंजो,
सातधाननी खीचडी, कूर, सिद्धवडी,
धुरडा एव ७)

सातधान (घणवीज १, मधर २, जत्र
३, काग ४, अडद ५, सरसव ६,
वाल ७,)

सात घान (प्रसारान्तरे-शालि १, जत्र
२, गहु ३, मग ४, वाल ५, चणा ६,
४ गुणरन्नीयाभिधिकोपरूण सूची

२-पचरत्नस्नात्र (प्रनाल १, मौक्तिक
२, स्वर्ण ३, हय ४, ताम्र ५.)

चोला ७.) नालिएर
सोपागी (पूरफल)

खजूर

द्राख

चरमोला

साकर

फलहुलि (दाडिम, जवीर, नारगी,
वीजोरा, सेलडी, आना)

घृत वाटको

दहि वाटको

चाकुला वानी ३

३-कपायडालस्नात्र (पीपली, पीपल,
शिरीष, उंवर, वड, चंपो, अशोक,

कथाण-
कल्का
खं० ३॥

॥२८५॥

आंबी, जांढू, बकुल, अंडुन, पाडल,
पलाश आ बंधांनी अंतरछाल्छुं)
४-मृत्तिकास्नात्र (गजदंत-द्वयभृंग
उखेडी, पर्वतशिखर, उदेहीवर, महा-
राजद्वार, नदीसंगम, नदी उभयतट-पत्र-
सरोवरानी)
५-पंचगव्यस्नात्र (छाण १, गोमूत्र
२, धी ३, दही ४, दूध ५ पंचांगडाभ
अने पाणी)
६-सदौषधिस्नात्र (सहदेवी, बला,
शतावरि, कुंआरि, पीठवन, मालवण,
उभी, रीगणी, भूर्रीगणी.)
७-मूत्तिकास्नात्र (मयूरशिखा, विरहक,
अंकोल, लक्ष्मणा, शंखपुष्पी, शरपुंखा,

गंधतोली, महानोली)

मूत्तिका स्नात्रमां उक्त ८ मूत्तिकाता
चूर्णथी स्नात्र थइ शक्रे छे, पण जो
१०० औपधिओ ज मेलवीने तेना मूलना
चूर्ण वडे स्नात्र करंछुं होय तो नीचे
जणावेल १०० वृक्षोनां मूल मंगवीने
तेना चूर्णवडे आ सातसो अभिषेक करवो,
वर्तमानगां अमुक पेढी अथवा सामाननी
दुकाचमांथी अभिषेकनी औपधियोनी
न्हानी पडीकीओ लेइने काम चलावाय
छे, पण खरी रीते औपधिओ ताजी
मंगवीने सारा प्रमाणमां ते वापरवी
जोहये, स्नाय पदार्थनुं ते स्नात्रनी औ-
पधिओना चूर्णना कल्क वडे प्रथम उद-

र्तन करीने पछी तेना जलनो अभिषेक
करवो जोहये.

शतमूलनी नामावली-नंदिवृक्ष १, सह-
देवी २, बला ३, अतिबला ४, विष्णु-
क्रान्ता ५, चक्रांका ६, अशोक ७, पुंनाग
८, बकुल ९, राजचंपक १०, विचकिल
११, राजशामी १२, शमी १३, जाति १४,
दूर्वा १५, दर्भ १६, काश १७, बीजोसी
१८, बदरी १९, इंडुदी २०, कंधेरि
२१, थोर २२, कुंआरि २३, शतावरी
२४, गिरणी २५, अघाडो २६, कालो
अघाडो २७, अर्क २८, अलाण २९,
शंखपुष्पी ३०, अंधाहुली (अधःपुष्पी)
३१, बट ३२, पीपल ३३, उंवर ३४,

परिच्छेद
५ ॥

॥२८५॥

तगर ३५, मयूरशिखा ३६, लंगली
 ३७, पाठ (कालीपहाड) ३८, पतजारी
 ३९, र(धन्व)तरी ४०, मृसलि ४१,
 गली ४२, रुंदती ४३, पुनर्नवा ४४,
 तुलसी ४५, घायची ४६, आसंद्रो' ४७,
 ऋाणी ४८, रिंगणि ४९, यालो ५०,
 ताड' ५१, तमाल ५२, करंज ५३, आंव-
 ली ५४, कपित्थी ५५, मुद्गापर्णी' ५६,
 मापपर्णी ५७, श्रीपर्णी ५८, खदिर ५९,
 पलाश ६०, टिन्नप्ररोधी ६१, लब्जाळ
 ६२, नागवेल ६३, वेकू ६४, कुडो ६५,
 दाडिम ६६, क्षीर दाडिम ६७, कर्मदो
 ६८, करंजी ६९, फंटासेलिआ ७०, वज
 ७१, आमच ७२, निर्गुंडी ७३, भांगसे

७४, नोडिथेरी ७५, हृस्वपत्रा-स्तुही ७६,
 घमासो ७७, जगामो ७८, अरहसो ७९,
 दूधेली ८०, इंद्रवारुणी ८१, कासंदो ८२,
 गोरंसा ८३, फीच ८४, अगथिओ ८५,
 केतकी ८६, पारवि ८७, नवमल्लिका (नी-
 माली) ८८, कणवीर ८९, आवो ९०,
 कुंद ९१, मुचकुद ९२, किरमालो ९३,
 पिप्पली ९४, करणी ९५, नारगी ९६,
 अतिमुक्तक ९७, पाटला ९८, काचनार
 ९९, त्रांगवेल १००, वेतम १०१,
 शतपत्रिका १०२, (सेवंती) आ पण
 मूलशत कहेवाय छे. मातसुं मूलिका
 स्तान आ शतमूलनु पण कराय-छे.
 ८-प्रथमाष्टवर्गस्नात्र-(उपलोट १, वज

२, लोत्र ३, वीरणिमूल ४, देवदारु ५,
 दूर्वा ६, जेठीमयु ७, ऋद्धिद्वि ८,
 ९-द्वितीयाष्टकवर्ग (मिदा १, महामेदा
 २, ऋकोली ३, क्षीरऋकोली ४, जीवक
 ५, ऋपभक ६, नखी ७, महानसी ८,
 ए दिछी नाजुधी आवे छे.
 १०-सर्वापचिस्नात्र (हलद्र वज सुआ
 वालो माथ गोठिनणो त्रियंगु सुरमासी'
 ऋचूरो उपलोट तज तमालपत्र एलची
 नामकेसर लवंग ऋकील जायफल जावंत्री
 नसी चदन सिद्धाखल आदि सर्वापधि
 चूर्ण)
 ११-मेवत्रादि कुसुमस्नात्र
 १२-गयस्नात्र (सिद्धाखल, उपलोट,

दुरमांसी, चंदन, अगर, केसर, कर्पूरमय, वडे)
 १५-कुंकुमस्नात्र-(चंदनमूठा वडे जाडुं
 केसर घसीने जलमां नाखीने)
 १६-तीर्थजलस्नात्र (गंगा आदिनां
 तीर्थजलो जलमां नाखीने)
 ५-बिम्बस्थापना-प्रतिष्ठोपकरणसूची

१७-कर्पूरस्नात्र (कर्पूर घसीने अभि-
 षेक जलमां नाखीने)
 १८-पुष्पांजलिस्नात्र

वर्तमानकालीन अज्ञनप्रतिष्ठोत्सव जेम दश अगर दिवस लंबाय छे तेम बिम्बस्थापना-प्रतिष्ठोत्सव पण ८-९ दिवस तो लंबाय ज छे, आ समय दर्भियान नित्य भिन्न भिन्न पूजाओ भणावाय छे अने प्रतिष्ठा संघन्धी विधानो तो थाय ज छे, अन्ते अष्टोत्तरी अथवा शांतिस्नात्र भणावाय छे. आ वधां कार्येनि पहेंची शके ए हिसाबे नीचेनी सामान सूची छे, अष्टोत्तरीमां मात्र ८० नालीएर अने नैवेद्य तथा फलोमां कंडक वृद्धि थाय छे, बीजो फेर पडतो नथी. आ सूचीमां जणावेल सामानमां परिस्थितिने अनुसारे कमती ज्यादा पण करी सकाय छे, विधिकारोए देश कालने अनुसरीने काम लेवुं.

केसर तोला ५
 कस्तूरी बाल ३
 कर्पूर तोला ७
 वरास तो० ५
 चंदनना मूठा २
 रक्तचंदन तो० ५
 गोरोचन तो० ०।
 अगर तो० ५
 तगर तो० ५

द्विग्लोकहली तो० ५
कंकोल तो० ५
सोनाना वर्क थोकडी ४
चादीना वर्क थोकडी ८
ककु पैसा १० भर
गुलाल तोला ५
अनीर तोला ५
वासक्षेप रतल २
दशागधूप रतल २
अगरसची रतल ४
किंदरूप धूप रतल १४
मालाकुची नग ४
सोपारी राती रतल १
सोपारी काली रतल ०॥

सोपारी घोली रतल ३
बदाम गोटा रतल ४
बदाम कागदी रतल १
खारेक रतल ४
द्राख किसमिस रतल ४
पिस्ता-लीलवा रतल १
बदामना गोला (मगज) रतल २
सोंधोडा वुका रतल ३
काजू रतल ३
कमलकाकडी रतल १
नालीएर नग १५१
अखरोट रतल २
चारोली-नेभाली रतल १
एलची तो० ५

लविंग तोला ५
जावंत्री तोला ५
जायफल तोला ५
तज तो० ५
ककोडी तो० १०
आवला तोला १०
मीढल नग ३५
मरडासींगी तो० ५
पंचरतननी पोटली २१
मंगलमाटी ८ जातनी
प्रथम अष्टवर्ग पडिकुं ?
द्वितीय अष्टवर्ग पडिकुं ?
सवौंपधी पडिकुं ?
सदौपधि पडिकुं ?

चंद्रनक्षं तेल तो० ५
गुलाबजल शीशो १ मोटो.
रेवमी वख रातुं गज ४
पीलुं गज ४
नीलुं गज ५
घोलुं गज ६
काळुं गज २
किरमजी गज १
पंचपटो गज १
आस्मानी गज १
आसन (कटामणां) ४
अवोष्टियां (श्रैतियां) ८
उत्तरासर्णियां (खेश) ८
धावली ४

गोल से० ५
साकर से० ५
सुवर्ण पुष्प १०८
रूप्य पुष्प १०८
चांदी अथवा जर्मनसिल्वरना कलशिया ८
जर्मनसिल्वरनी नानी वाटकी १५
काचना नानां फानस २
समाई मोटी २
अत्तर गुलाब तो० ०॥
अत्तर फ्लेवडा तो० ०॥
अत्तर मोगरा तो० ०॥
अत्तर खश तो० ०॥
अत्तर चमेली तो० ०॥
तेल चमेली तो० १०

मूलिकाचूर्ण पडिकुं १
कपायछाल पडिकुं १
मेवा (मोली) सूत्र रतल १
भात (डांगर) रतल ६
चोचानी फूली (करमरा) रतल १
तल से० १
सरसव रतल १
घहुं से० २
जव से० ४
चणा से० ३
चोला से० २
मग से० ३
अड्ड से० ३
जुन्नार से० २

अगोन्धा ४

मलमल पनो ५६ ईचनो तानो ?

मूलमल पनो ३६ इ० तानो ०॥

जगन्नाथी पनो ३६ इ० तानो ०॥

जगन्नाथी पनो ह्राथनो तानो ०॥

चोल पनो ३६ इम ह्रा० ७

चोल पनो २८ इ० ह्राथ २०

सुत्राडु नीलु हाथ १०

सुत्राडु भीलु हाथ १०

घट ?

घट्टी ?

धूपघाणा २

आरती ?

मंगलदीनो ?

छन्न (सेवाडनर) ?

क्रलम काठ २

गगाजुल

दंड योग्य रंगीत पेन्नो ?

त्रावा पीचलनी कुंडी २ मोटी

आखा त्वावल सेर ३१

गायतुं घी से० ७

सेसुतुं घी से० ८

ज्वारिसा वाघ ४

वाजोट ? गन समचोरस ननो

पाटलो दश दिरूपालोनो ?

पाटलो तवग्रहणो ?

पाटलो अष्ट मंगलनो ?

प्रणालिओ राजोठ ?

अखडदीपक योग्य मोटां फानस २

अखडदीपक योग्य फणनाला कोडिया २

कन्यानात्या सुखी कोरुडी ५

त्राननो होदो ?

त्राननो कलजियो ?

दलदरना गाठिया ५

समुलो टाअ मुलिया ३

अधेडानी कलम ?

कोरा डाम्बनी कुली २

१०८ नालनो कलम ?

चोखटा रुपैया ४

त्रानाना पैमा २००

५० रु०नी रेआनी पायली आठआनी

साणेस्दीनो ?

स्फटिकनी माला १
गोमेद वा सिंदुरिया स्फटिकनी माला १
केरवानी माला १
अकलवेरनी माला १
नीलमणिनी माला १
प्रवालनी माला १
चारस न्हानो चंद्रवो १
माणेकस्तंभ (भोभण) १
तोरण एक लाकडानुं
तोरण १ चांदीनुं
चांदीनां पुंखणां (हंसर सुसल-स्वइओ-
त्राक)

प्रतिमा ४ पंचतीर्थी, श्रीआदिनाथ १

चांदीनो कूर्म १ मूलनायक नीचे
ध्वजा १ दंडना मापनी
ध्वजाओ २ न्हानी
माटीना मोटां माटां २
माटीना घडा ८
माटीना मोरिया (वेडिया) १२
माटीना गाडुआ १२
माटीनां कोडियां बहु न्हानां ८
माटीनां कोडियां मोटां ८
माटीनां मोटां कुडां २
माटीनां कुंडां ८ मध्यम
माटीनी न्हानी कुंडिओ १२

६—शान्तिस्नात्रना सामाननी सूची

अजितनाथ २ शान्तिनाथ ३ पार्श्वनाथ ४ अथवा चोवीस वटो १.

माटीनां शरावलां ६१
सोनानो प्रासाद पुरुष १
सोनानो तार सुवर्ण कलश योग्य
चांदीनो तार प्रासादादि योग्य
चांदीनो वास्तु १
शिल्पिसन्मानार्थ चांदीनां उपकरणो.
ए उपरांत मंडपयोग्य सामान, वेदीयो-
ग्य सामान, भगवाननी आंगी विगेरेनो
सामान पण साथे मंगवावो योग्य गणाय
छे अने ए सामान उक्त प्रतिष्ठाना सामा-
नथी जुदो लेखवो जोइये.

—०—

परनालिनी चाजोठ न० १

मिवात्मन ०

छम ३

मोदी माटली ०

कुम फोग राता निर्दिग ४

त्रावाईदी न० २

राता हुंडा न० २

रूपाना मन्त्र न० ८

म्हाना लोत्रा न० ४

१०८ नाहुशानो कंठ्य १

गंगानी गोली १

हृदरना गाठिया २

पचपल्लव १ (आम्र, १, वट २, पीपल ३,

जांपू ४, अशोक ५.)

त्रांचानु वीपक पात्र १

मोडुं फानम १

सेवनना पाटला न० ३

(विरूपाल-ग्रह-अष्टमंगलना)

म्हाना पाटला १२

स्मात्रिया १३

भोगद्यत से० ०॥

वीवट न० २

दीवा माटे मोटां सावला २

आरती १

मंगलदीचो १

सीगडी १

चीपिओ १

धूपघाणां २

कोयला खेना, नावला वा रायणना.

वाढी पीतलनी २

दीवी न० २ (समाई मोटी)

जवारिया वांश न० ४

शशमला न० ११

डाम समूळी मूलिया २

मीठल मरडासींगी न० २५

रूपानाणां न० ५१

त्रांयानाणां न० १०१

नागखेलनां पात १००

चोखंडा रूपिया ४

मात (डागर) से० ४

पंचरतननी पोटली १५

अघाडा तथा शरीयानी लेखण १

वाटका नं० ८	सुगंधी तेल तो० १०	गोरोचन तो० ०।
छावडी १	उवटणुं कंकोडी आंबलां आदिनुं	बरास तो० ५
कंकावटी १	पछेडी दसियावड २	कर्पूर तो० ५
वाटका मोटा २	दरियाइ तास्तो गज २	हिग्लोक तो० २
न्हानी वाटकी पूजानी १६	कमलवर्णुं कापड गज २॥	सोनाना वर्क थोकडी १
थाल नं० ४	पीलुं कापड गज २॥	चांदीना वर्क थोकडी ५
गायलुं घी से० ७	नीलुं कापड गज २।	रक्तचंदन (स्तांजणी) तो० २
भेंसलुं घी से० ८	सातुं कापड गज २॥	कंकु तो० १०
चंद्रवा नं० २	पंचपटो गज १।	वासखेप रतल १
ध्वजा न्हानी नं० २	१०८ निवाणनां पाणी	अगर तो० १
अंगद्वेष्टणां १२	गंगाजल	अगरवत्ती रतल १
घोतियां नं० ५	श्रीफल नं० १२५	दशांगधूप से० १
उत्तरासण्यां नं० ५	कस्तुरी वाल २	चालाकुंची ४
धाबली नं० ४	केशर तो० ५	वीजणां २

चोखा से० ११
चंदनना मूठा २
सर्पपिचि चूर्ण तो० १
मंगलमाटी तो० १
सोपारी राती शे० ०॥
मोपारी घोली से० १
मोपारी काली से० ०॥
बदाम सेर २॥
खारेक से० २
द्राख से० १
मीयोडां से० १
पीस्तां से० ०॥
कमलकारुबी से० ०॥
मारुर से० ३

गोल से० २
टोपकं से० १।
दाडिम ३०
सेलडी ३०
केला ३०
नारगी ३०
जमीरा ६
नीजोरां ३
मोसंजी ३०
कमरग्व ३०
सेवीया लाह ३०
ग्वानां नं० ३०
सुहाली ३०
मोतीया लाह ३०

घेवर नं० ३०
दीठा न० ३०
पतामा न० ३०
सर्व जातना पुण्य
तिल से० १।
गहु से० ३
जम से० ३
चणा से० ३
चोला से० २
अडद से० २
जुवार से० १।
मग से० ३
मलमलतुं घान ०॥
जगन्नाथी घोएल घान ०॥

घण्टी ?
बाजोठ ३

सुतरनी दोरी लोथी ?

राहुं चोल थान ०॥

थाली वेलण १-१

काची इंट ने० २००

७-पूर्वतन प्रतिष्ठाकल्पोक्त-सामग्री कोश.

केची

अमोए जे ग्रन्थोतुं अवगाहन करीने ' नव्यप्रतिष्ठापद्धति'नुं निर्माण कयुं छे ते आधार ग्रन्थोमां कालक्रमे सामग्रीनो केची

राते वधारो थयो छे ए वस्तु आ कोश उपरथी स्पष्ट समजी शकासे.

अमारा अनुशीलनमां आवेल ? श्रीपादलितप्रतिष्ठापद्धति, २ श्रीचन्द्रप्रतिष्ठापद्धति, ३ जिनप्रभप्रतिष्ठापद्धति, ४ वर्धमान

प्रतिष्ठापद्धति, ५ गुणरत्नप्रतिष्ठाकल्प, ६ विशालराजशिव्यप्रतिष्ठाकल्प, ७ जिनप्रभानुयायिप्रतिष्ठाविधि अने ८ सकलचन्द्रप्रति-

ष्ठाकल्प, ए आठ प्रतिष्ठाकल्पो छे. आ वधानो रचना समय क्रमिक होयाथी अमोए वधाने ? थी ८ सुधीनां नंतरो लगाडेल छे.

अश्वतपात्र कृताऽभग्नतंदुल ग्रन्थ (४)
अक्षोटक (३१४)
अश्वत पात्र (३१५७)

अश्वतपात्र कृताऽभग्नतंदुल ग्रन्थ (४)
अक्षोटक (३१४)
अश्वत पात्र (३१५७)

अश्वतपात्र कृताऽभग्नतंदुल ग्रन्थ (४)
अक्षोटक (३१४)
अश्वत पात्र (३१५७)

अश्वतपात्र कृताऽभग्नतंदुल ग्रन्थ (४)
अक्षोटक (३१४)
अश्वत पात्र (३१५७)

अश्वतपात्र कृताऽभग्नतंदुल ग्रन्थ (४)
अक्षोटक (३१४)
अश्वत पात्र (३१५७)

कस्याण-
कल्का
खं० ३ ॥

॥२९०॥

अश्वत मृतस्थाल (२१३)

अश्वतांजलि (५)

भरत चोपा थाल २ (३।८)

अवड चोसा सेड (६)

अवड तदुल सेड २ (५)

अवड तदुल सेती १ (१)

अवडअवाजलि (२।३)

अवोड ?०० (७)

अवोड (८)

अगल (४)

अगरनी (८)

अगर सेर २ (७)

अगुल (कृष्ण) (१।४)

अन्नक (१)

अनुलकल (४)

अंगदहणां (६।८)

अजन (मधु) (१)

अंजन (कालो) सुरमो घी मधु साकर

(२।३।४।५।६)

अजन (गोघृत टा० १८, साकर टा० ९,

कालो सुरमो टाक १२ (७)

अजन (रातो सुरमो, साकर, बरास,

कस्तुरी, मोती, सुगीओ, चुनी, सोनो,

रूपो, गानो घी, प्रत्यन्तरे मधु, प्रत्यन्तरे

कालो सुरमो) (८)

अर्घ (सिद्धार्थ, दधि, अक्षत, घृत, दर्भ)

(२।३।५।६।७।८)

अर्घ (सिद्धार्थ, -दधि, घृत, अक्षत, तंदुल,

दूर्वा, चंदन, जप) (४)

अलफार पूजा (२।३।५)

अनमिणनोपरुण (३)

अनमिनन (३)

अटमगलक (यववारक वेदिकादि) (१)

अटगघ (८)

अटरु वर्ग १ (प्रियंगु वचा रोध्र यदि-

मधु रुष्ट देवदारु उशीर ऋद्धि धृद्धि

शतापी आदि) (१)

अटमर्ग १ (कुष्ट प्रियंगु मवा लोद्र उशीर

देवदारुदूर्वा मधुमष्टि ऋद्धि धृद्धि (२।३)

कुष्टादिप्रथमाटमर्ग (४)

अटमर्ग १ (उपलोट वज्र लोध्र वीरणि-

मूल देवदारु ध्रो जेठीमधु ऋद्धि धृद्धि

(५।६)

अटमर्ग १ (उपलोट मज लोत्र हीरगणी

मूल देवदारु जेठीमधु दूर्वा ऋद्धि वृद्धि) (८)	खीरकंद मुसली बेई) (८)	आच्छादन वस्त्र ४ (अर्ध फालां वेदि योग्य) (७)
अष्टवर्ग १ (कुष्ठ प्रियंगु वचा लोद्र उशीर सतावरी बोडावज देवदारु द्रोई जेठीमधु ऋद्धि वृद्धि प्रमूला) (७)	आचार्य योग्य वस्त्र मडि २ (७) आचार्य योग्य सदश वस्त्र (५) आच्छादन पदस्त्र (१)	आच्छादन वस्त्र ४ (नंदावर्त योग्य, प्रतिमा योग्य, गुरुयोग्य, नंदावर्त लेखक योग्य) (८)
अष्टवर्ग २ (मेदा महामेदा कंकोल खीर- कंकोल जीवक ऋषभक नखी महानखी (२।३)	आच्छादन वस्त्र ६ (वेदि योग्य ४ प्रतिमा योग्य २ नंदावर्त योग्य १ (२।३।) आच्छादन पट ६ (द्वादशहस्तमित) (४)	आदर्श (१) आदर्शक दर्शन (६।२।३।४।५)
अष्टवर्ग २ (मेदादि) (४)	आच्छादन वस्त्र २ (नंदावर्त योग्य १, प्रतिमा योग्य १) (५।६)	आदर्श १ (६) आरीसो ? (त्रिम्बयोग्य) (८)
अष्टवर्ग २ (मेदा महामेदा काकोली खीर काकोली जीवक ऋषभक नखी महानखी) (५।६।७)	आच्छादन वस्त्र १ (नंदावर्त योग्य रादश हाथ) २ (७)	आरीसा ८ (८) आरीसो देवयोग्य (७) आय कुंभ ४ (१)
अष्टवर्ग २ (पतंजारी वा कुष्ठ विदारी कंद-कचूरो काचरी नखला कंकोडी	आच्छादन वस्त्र १ (हाथ २४ कुसुमरी- गित प्रतिमा योग्य) (७)	आय कर्पूर (३) आमलक (१)

आम्र (१।२।३।४)
 आग्रा (५।६।७।८)
 आरती (१।२।३।६।८)
 आरीठा माल (५।८)
 आरीठानी माला (प्रत्येक विम्बे) (६)
 आरीठा सहस्र ७ (७)
 इक्षु (१।४)
 इन्द्र (१।८)
 उत्तर वेदिका (१)
 उत्पलसारिक (१)
 उदक (२।३)
 उदार (४)
 उत्तरी (२)
 ऊतती (२)

कर्णाक्षत्र (१)
 ऋद्धि वृद्धि समेत ककण १ (१)
 ऋद्धि वृद्धि (१।२।३।४)
 ऋद्धि वृद्धि समेत मदन फल (३)
 ऋद्धि वृद्धि समेत मदन फल कंक्रण ८ (४)
 ऋद्धि वृद्धि समेत मदन फलरोपण
 कठे (३)
 ऋद्धि वृद्धि सहस्र २ (७)
 औपधिर्ग (सहदेवी जया विजया
 जयती अपराजिता विष्णुकान्ता श-
 खपुष्पी बला अतिबला हेमपुष्पी
 विशाला नाकुली गंधनाकुली सहा
 वाराही
 शतावरी मेदा महामेदा

काफोली क्षीरकाकोली
 कुमारी वृहती द्वय चक्राका मयूर शिखा
 लक्ष्मणा दूर्वा दर्भ पतंजारी गोरमा
 रुद्रजटा लज्जालिका मेपशृंगी ऋद्धि
 वृद्धि आदि (१)
 कणयर प्रमुख पुष्प (७)
 कदलक (१)
 कदली फल (४।७।८)
 कदली फल शुष्क (७)
 कपर्दक (१।२)
 करणी (७)
 करंन (४)
 करुणा (४)
 कर्पूर (१।२।३।४।५।६।७।८)

कषायवर्ण (१।२।३।४।५।६।७।८) स्नात्र
कस्तुरी (१।२।३।४।५।६।७।८)
कंकण (२।५)
कंकण हस्तस्त्रि (२)
कंकण ३ (३)
कंकण कौसुंभ २० (३।४)
कंकण (मदनफलाख्य) (२)
कंकण सोचन (२।३)
कंकण (मीढल ऋद्धि वृद्धि सहित) (५।६)
कंकण (सुवर्ण) (५) (८।६)
कंकण ४ (सुवर्ण) (५)
कंकण १ (सुवर्ण) (७)
कंकण ऋद्धि वृद्धि समेत मिढल सर्व
चिम्बेषु (६)

कंकण गेवासूत्रमय वृद्ध प्रतिमा योग्य १
(७)
कंकण मिढल मरोडाफली स० ८ (८)
कंकण कौसुंभमय ८ (उभय योग्य) (७)
कंकणिका ५ (रक्तसूत्र वेष्टित) (२।४)
कंकणिकारोप (३)
कंकणिका ५ (३)
कांकणी (६)
कांस्य (१)
कांस्य वर्तिका (१)
कंचुलि ४ (२।३।४।६।७।८)
कांकणी सेर. १ (७)
कंचुलिका १ (कौशेयमयी) (४)
कंदमूल (२)
कंदमूल नाना (१)

काकडी (६)
कुमारी १ (नेत्राभववर्तिनी) (३)
कूप-नदी जल १०८ (५।६)
कट (४)
कूप-नदी-सरोवरादिनां १०८ जल (८)
कूप १०८ जल (७)
कुष्मान्द (१)
कुन्द (७)
कुंडी २ (घटी योग्य) (५।६।७।८)
कुंडी २ (स्नात्रयोग्य) (७)
कुंडां ८ (धान चलियोग्य) (८।५)
कुंडां ८ (सातधान बलियोग्य) (६)
कुंकुम (१।२।३।४।५।६।७।८)
कूर (४)

कृष्ण लोह (१)

कृमरा (४)

क्रेमर (३।५।८)

क्रेमर सेर ? (७)

कौसुम वन रंजन (४)

कौसुम यत्र रंजन (४)

कौसुम रक्त मद्य घ्न (३)

क्षेरेपी (४)

कलश ८ (सुवर्णादि) (१)

कलश ४ (प्रतिमा निकट) (३)

कलश ४ (सुवर्ण) (प्रतिमा पार्श्वे) (२।६)

कलश ४ (श्वेत) प्रतिमा ४ दिशायां

यनारा सहित (१)

कलश ४ (कुम्भ) प्रतिमाना कोणोर्मां (१)

कलश ४ (स्वस्तिक पट्टनी ४ दिशा-
ज्योमा) (३)

कलश ४ (जलयात्रानीतगर्भगृहादिर्मां) (६)

कलश ४ (स्नात्र योग्य) (६।८)

कलशला ४ (हृष्यमय स्नानयोग्य) (७)

कलश ४ (सुवर्ण) (प्रतिमा निकटे) (८)

कलश ? (सुवर्ण) (८)

कलश ४ (वास मंडप ४ खुणे) (७)

कलश ५ (हृष्य) (४)

कलश ८ (सु० रु० ता० मृ०) (५।६।८)

कलश ८ (जल कार्ये) (७)

कलशला ? २० (२)

कलश ? ३२ (मृन्मय) (३)

कलशला ? ३६ (मृ०) (४)

कलशला ? ०८ (न्हवणयो०) (७)

कलश (हृष्य) (८)

कुंभ स्थपति ? (१)

३६० क्रयाणक पुटिका दान (२)

३६० क्रयाणक पुटिका ? शरावर्मां

रासीने (३)

३६० क्रयाणक पुटिका पृथक् पृथक् (४)

३६० क्रयाणा संयुट ? (५।६।७।८)

क्रमुक (४)

खजूर (२।३।४।५।६)

खाजा (३।६)

खारेक (६।७।८)

खीर (८)

गहुआ ४ श्वेतवर (५)

गाहुआ १२ (श्चितवर) (६)

गाहुआ ४ चा ८ (७)

गाहुआ ४ (६)

गाहुआ ८ (सं. व) (५)

गंगाजल (८)

गंगानी वेल्ड (३५५८)

गंगोदक (४५५६।७।८)

गन्ध (१।२।३)

गंध (४)

गंधक (१)

गंधवर्ष (१)

गंधोदक (२।३।८)

गंधवर्ग (१) (विशेष स्नात्रमां)

गाहुआ ४ श्रेत (कर्पदं मुवर्ण-जलधान्य

सहित संदावर्ष पार्श्व) (६)

गाहुआ ४ श्रेत १२ (४ दिशांसें)

गाहुआ ४ नंदावर्षे (८)

गाहुआ ४ चा ८ (पुंजग याल्य) (८)

गाहुआ ८ (पुंजना योर्य) (६)

गुड (१)

गुडपिंड (१)

गेषायन सेर ५

गेषागत्र (६)

गोसेचन (१।७)

ग्रहपूजन (६)

ग्रहस्थापना (दिगनी पट्टे) (६)

नडा कोरा जलार्थ (५।६।८)

नंट (१।५।६)

नंट २ (८)

वाटडी (६)

वाटडी (५)

भी (८)

भीमो वाटको (६।८)

बुन वाटडुं (५)

बुन वाटडी ? (सुरभि) (७)

बुनवर्णिका (२।३)

बुन (?)

बुगभाजन (२।३।४।५।६।७।८)

भेता ग्रस (८)

चपुसिका (१)

नवनीना नामन ३६ (८)

नगा (?)

चदन (१।२।३।४।५।६।७।८)

चदन रक्त (१)

चम्पक पुष्प (७)

चामर (५।६)

चामर ८ (८)

चारु कलिका (४)

चीमडा (७)

छत्र (५।६)

छत्र ३ (८)

जमलि (५)

जलयाना (कीरा बहेडा २४) (७)

जलयाना (प्रतिष्ठापूर्वदिवसे) (७)

जलसमापि (मोदक सुहाली मोचन) (६)

जलानयन (२।३।४।५।६।७।८)

जवाली (५।८)

जवाली जूझई (६)

जन (१)

जनारक (वशि) (१)

जवाररु ४ वशेषु (२।५।७।८।६)

जवनारक (२) (गोधूम, व्रीहिये).

जवनारक (शरावे) (१)

जनारक शराव १० (४।२।३)

जवनारक शराव १२ (७)

जवनारक ८ शराव (४।५।८)

जवनारकस्थापन (३)

जवाररु महित वेडा (६।८)

जवाररु ४ (५)

जवमालिका १ (१)

जम (यम) लिअव्यंग २ (२)

जवीर (२।३।४।५।६।७।८)

जंबू (१)

जाति (७)

जाति लेखिनी (३)

जिनवलि (२।३)

जिनमातृ (शाकृते बलि.) (५)

टोपरा (७।८)

ठोठडी (६)

तकुकादि (१)

तन्तुवेष्टन (चतुः) (२)

तन्दुल (३)

तन्दुल चूर्ण-मंडन (४)

तापूल (६)

तंबोल (७)	त्राक (गेवामृतत्र वेष्टित पूर्ण) (५)	द्राक्ष (२।३।४।५।६।७।८)
ताम्र (१)	थाल सुवर्ण (८)	द्वात्रिंशदंग (धूप) (४)
तिल (१)	दधि (१)	द्वादश्यांग (धूप) (४)
१०८ तीर्थजल (८)	दधि वाटलुं (५।६)	दीप मंगल (दृ.गु.समेत०)(३।४।२।६।५)
तीर्थजल (समुद्र नदी इत कुंड जल) (२)	दधि योग्य चाटली ४ (७)	दीप (८) (१)
तीर्थोदक (१)	दधि-भाजन-दर्शन (६)	दीपमंगल (१।३।८)
तीर्थोदक (स० न० द्र० कुंड जल) (३)	दहि भरा चाटली १ (७)	दीप्ती ४ (८)
तीर्थोदक (गंगा प्रसृति) (५)	दहिनो चाटको १ (८)	दीपमंगल ४ (गो. चू. कौ. रुत. व.) (४)
तीर्थोदक (गंगा सिन्धु प्रमुख १०८	दधि भांड दर्शन (२)	दूधनो चाटको १ (८)
तीर्थजल) (६)	दर्पण (१।४)	दूर्वा (१)
तुवरी (१)	दर्भ (१)	दिकृपाल स्थान (३।४।६)
तूलिका (कांचन) (१)	दर्भ सशिरस्क (२।३)	दिकृपालार्थ (अर्घ्यज) (६)
तौरिका (१)	दर्भ समूल (५।६।७।८)	दिशावलि (३ ७)
त्रपु (१)	दाडिम (२।३।४।५।६।७।८)	घन (इन्द्रघन) (८)

घञ (महाघञ) २ (८)
 घञ २४ (लघुघञ) (८)
 धान्य र्ग (यम त्रीहि गोधूम तिल माप-
 मुद्ग वल्ल चणक मसूर तुवरीव (शण-
 वीज नीवार श्यामाकादि (१)
 धान्य ७ प्रक्षेप (सात) (१।२)
 धान्य (शण लाजा कुलथ यम र्गु उडद
 र्मर्षप ७ (क्षेपः) (२।३)
 धान्य (मणनीज कुलथ मसूर वल्ल चणक
 त्रीहि चमलादि (२।३)
 धान्य नलि (शणनीज कुलथ मसूर जव
 काग उडद सरसव) (८)
 धान्य ७ स्नपन शालि यम गोधूम मुद्ग
 वल्ल चणक चपलक (२।८)

धान्य स्नपन ७ (गध पुष्प युक्त) (३)
 धान्य ७ (अभियेक रक्तफल मिश्रित) (१)
 धान्य ७ (शालि यव गोधूम मुद्ग वल्ल
 चणक चमला (३)
 धान्य ७ (सण कुलथ मसूर वल्ल चणक
 त्रीहि चवलक) (४)
 धान्य ७ (क्षेप) शण लाजा कुलथ यव
 काग उडद र्मर्षप] (६)
 धान्य ७ (शालि जन गोहु सुग वाल
 चिणा चमला) (६।५)
 धान्य ७ (सणवीन कुलथ मसूर जव
 काग उडद सरसिच) (६)
 धान्य ७ (शणनीज कुलथ मसूर वल्ल
 जन त्रीहि चमला) (७)

धान्य ७ (सणवीज लाज कुलथ यव
 कर्गु माप र्मर्षप) (४)
 धान्य ७ (धान्य मुद्ग माप चणक यव
 गोधूम तिल) (४)
 धान्य ७ (परितः क्षेपः नदावर्ते) ५
 धूप (१। २। ३। ४। ५। ६। ७। ८)
 धूप कुदुरक प्रसृति (४)
 धूप दशांग (४)
 धूप दशाग सेर-॥ (८)
 धूप पंचांग (४)
 धूप द्वादशाग (४)
 धूप द्वात्रिंशदग (४)
 धूपधाणा (१। ५। ६। ८)
 धूप पुडी (५। ६)

नील (१)
नेजा (८)
नैवेद्य २५ कांकरिया (मुंग यव गोधूम
चिणा तिल प्रत्येक ५-५) (३।५।६)
नैवेद्य कांकरिया (मुंग चिणा जव गोहं-
तिल जुआर तुआर, चपल शालि
प्रत्येक ना. ५-५ कांकरिया) (७)
नैवेद्य (दशाहि) कूर खांड घृत घेवर
दधि करंज लापसी-गुल गोहुआ-
गुल वाट-पक्वान् सीथवडिनो दह
फलानि (६)
नैवेद्य लाह २५ (मु० ५ तिल, ५ चि०-
५, फूली ५, गोधूमघाणी ५ (८)
नैवेद्य-नवग्रह योग्य (गुलवाट खीरकंसार

नारी ४ (जीवत, पितृ मातृ श्वश्रुद्यस्तुरा) (३)
नारी ४ कांकरणी पुंखणावे) (५)
नारी ४ (जीवत मा० पि० श्व० श्व० प-
तिका) (५।६)
नारी मूल शतवर्तिनी ४ (३)
नालिकेर (१।२।३।४।५।६।७।८)
नालिकेर २५ (७)
नालिकेर ४ वा ८ (जलेक्षपः) (६)
नांदहफल (५।६)
नालिकेर ९ (जलया.) (८)
नालिअर (१)
निमज्जक (४)
निमजां १०० (७)
नीवार (१)

धोतियां जोडां ४ (६)
धोती जोडां ४ स्थाप
नंदावर्त मंडल (श्रीपर्णा पट्टे) (१)
नंदावर्त पाटलो १ (२।३।४।५।६।७।८)
नंदावर्त पाटलो १ चतुरस्र हा, १ (८)
नंदावर्त स्थापन (६)
नंदावर्त उपर (नालियेर २७ अथवा ८ (६)
नंदावर्त लेखन (लग्नथी १ ४।७।५।३
दिनपूर्वे) (७)
नागवाह्मिदल (१)
नारंग (१।२।३)
नारिंग (७)
नारंगी (८)
नारी ४ (२।४) संकंरणा

घेनर दधि रुंय, कूर घृत कीसरि
 तट्टदरी ए ९ बानां ९ सराये ग्रह
 आगे दौकना (७)
 नैवेद्य ०, (चलानो म्बीच, चणाना
 मडुला, गोधूमपुडली, म्बीर, कमार,
 गुलरगट, करवो, कीसरि, कूर, ९
 नैवेद्ये ७ अराव भरी देव आगे
 ट्वाये) (७)
 नैवेद्य ९ (लापमी कूर दही कांच पुरी
 पुडला खीर वडां लाइ) (८)
 नैवेद्य (पन्नाच) ९ खाना, सुहाली, मडि,
 मुरकी, साटे, साकुची, सेविआलाइ
 मोतिआलाइ मीठालाइ (७)
 नैवेद्य २५ कारुआ (मुग ५ तिल ५

चिणा ५ फुला ५ गोहंघाणी ५) (४)
 पद्मराग (१)
 पनस (२)
 पटलको (१)
 पट्टाच्छादन (१)
 पस्ता १०० (७)
 पचगव्य (च्छाण मूत्र घृत दुग्ध दधि-
 दर्मोदक (२।३।५।६)
 पच गव्य (दूध दहि माखण घृत तक्र
 मिश्री चदन (८)
 पत्र २४ (३)
 पंचधातुक (२।३)
 पंचवर्ण पुष्प (४)
 पंचरत्न (प्रमाल, मौक्तिक सुवर्ण रजत

नात्र (२।३।५।६।७।८)
 पचरत्न रुपायत्री (प्र० मो० सु० २०
 ता० (३)
 पंचरत्नाटक ८ (सु. रू. ता. मौ राजा
 वर्त) (४)
 पंचरत्न गाठडी (त्रेवासूत्रे पीत वत्त्रे
 बाधी निम्बनी आंगलिये बाधवी)(६।८)
 पचरत्न ग्रंथी (प्रत्येक विंन दक्षिण रुं-
 गुलीए बांधमी) (६)
 पंचरत्न पोटली १००० (श्वेत वत्त्रे
 गेवाम्ब्रे बांधीये) (६।७)
 पंचशब्द वाजिंत्र (५।६।८)
 पंचामृत (१)
 पाटलो पवित्र (५।६।८)

पाटलो १ नंदावर्त योग्य शिवंतनो (८)	प्रतिमा (स्थिरा) लेपादि (प्रथमथी	पुष्पचय (१)
पान १०० (७)	अथो वामभागे वी वाटकी श्रीखंड	पुष्प) सेवंत्रां चंपेली मोगरो गुलाब
पान (८)	तंदुल कुंभकार चक्र माटी सह सोतुं	जुई (८)
पारद (१)	रुपुं त्रांतुं मुक्ताफल लोह ए पंचधातुक	पुष्प प्रकर (२।७)
पानीय वर्ग (गंगा यमुना मही नर्मदा	स्थापवां (६।५)	पुष्प निक्षेप (८)
सरस्वती तापी गोदावरी समुद्र पत्रसर	प्रतिष्ठान्ते मंगलगथा (५।६)	पुष्पराग (१)
नदा संगमादि (१)	प्रतिष्ठा गुरु (४)	पुष्पमाला (८)
प्रतिनिधि (जे देशमां औषधी न मले ते	प्रतिष्ठा मंडप (८)	पुष्पाजलि क्षेम (१८ अभिषेकान्तर्गत)(८)
देशमां तेना स्थाने उत्तम चीज लेवी)(७)	प्रशस्तफल (२)	पुंखणहारी (४, २।६।८)
प्रतिमा (पा. शां० जलयात्रायां) (६)	पिशंग (४)	पुंखण (६।८)
प्रतिष्ठाप्या जिनप्रतिमा चिन्त्या स्था-	पीठिका (१)	प्रोक्षण (३)
प्यावा नंदावर्त (५)	पूग २४ (३)	पुंखणोपकरण (धूंसर मुसल खाइओ (५)
प्रतिमा (चला) वामांगे समूलदर्भं वालुका	पूगीफल (१)	पुंखणो पकरण (त्राक धूंसर मूसल र-
स्थां (५।६)	पुष्प (२।३।१।४।५।६।७।८)	वाईओ (६)

पुरलणोपकरण (नाक धूसर घुसल खाइयो-
 तीर (८)
 पुजाणी ८ (८)
 पृषिका (४)
 पोलिका (घृत खाइ मिथ) (४)
 पूजा ३ वा ८ दिन (३)
 फल (८।६)
 फलहलि (६।५।८)
 फलोहलि (२।३)
 फाला ४ (७)
 फूल (५।६।८)
 फूल रूपानां (८)
 फुन सोनानां (८)
 फोफल (२।३।५।७)

नदर (१।४)
 बकुल (७)
 बलवाकुल (८।६)
 बलि (लड्डुकादि) (३।२)
 बलि विचित्र (जवीर बीजपूरक पनस
 आम्र दाडिम इशु) (३।२)
 बलि (मोदक घाट खीरि करवो कीसर
 दूर मिद्वबडि पूपली ७) (२)
 बलि नव्य (भाकरिआ सुकुमारिका प्रभृ-
 ति) (५)
 बलि (भूत) (२।३।४।१)
 बहेडा ४ मयवारक (८)
 बाकुलावानी ३ (५)
 बाकुलावानी ३ (गोहू चणा जारी) (६।८)

बाट (४)
 बाजवट १ (६)
 बेउल (७)
 ब्राह्मणयोग्य ७
 बीजपूरक (१।२।३।४।५।६।८)
 भक्त (४)
 भद्रपीठ (१)
 भामंडां सराव (६)
 भूतगलि (२।३।४।१)
 भूतगलिदान (निवाग्रे) (४)
 भोग पुडी (५।६)
 मदनफल करुण (पार्श्वतः ऋद्धि वृद्धि
 समेत विद्व मदनफलाख्य कंकण) (३)
 मदनफल (१।२)

मदनफलोत्तरण (३)
मधु (१)
मनःशिला (१)
मरुओ (७)
मखर (१)
महानील (१)
मंडपद्वय (१)
मंडपनिर्माण (७)
मंगलग्वाथा ७ पाठ (५।६)
मंगलग्वाथा (३)
माई साडी १ (प्रतिष्ठानंतर योग्य) (२)
माई साडी २ (अधिवासना प्रतिष्ठा-
योग्य) (३)
माई साडी (कुसुंभी) (५।६।८)

माई साडी (३)
माइ साडी (विंम माथे देवी) (६)
मातृशाटिका १ (पार्श्ववेष्टने) (४)
मातृशाटिका १ (दशहस्तमित) (४)
मातृपुटी १०८ (१)
माटी (६)
माटी गंगानी (८)
माष (१)
मांडी (२।३।५।८)
मांसी (४)
मिश्री (८)
मीढलसहस्र १ (७)
मुद्रिका (१)
मुद्रिका ४ (सुवर्ण) (५।६।७)

सरलमुद्रिका (५)
मुद्रिका ५ (सुवर्ण) (८)
मुद्रिकाहस्तसूत्रि (२)
सुर्भ (१)
सुवाच्छादन (कंकण बंधनान्तरसदश
बन्धेण सर्वविंम सुवाच्छादन (६)
सुखोद्घाटन (विंमना) (१।२।३।४।६)
सुरकी (३)
सूत्रवेदिका (१)
सूलिका (मयूरशिखा विरहक कंकोल-
लक्ष्मणा शंखपुष्पी शरपुंखा विष्णुक्रांता
चक्रांका सर्पाक्षी महानीली) (२।३।४।७)
सूलिका स्नात्र (मयूरशिखा विरहक-
अंकोल लक्ष्मणा शंखाहलि खुरसाणि-

ओ (शरपुखा) गंधनोती महानोली (५)
मृत्तिका (१)

मृत्तिका वर्ग (बल्मीक १ पर्वताग्र २-

नद्युभयतट ३ महानदी संगम ४ कुश

मूल ५ निल्वमूल ६ चतुष्पथ ७ दंति-

दत्त ८ गोशृंग ९ राजद्वार १० पद्मसर

११ एक वृक्षादि (१)

मृत्तिका (राजदत्त वृषभविषाण पर्वत-

बल्मीक महाराजद्वार नद्युभयतट नदी-

संगम पद्मतटागोद्वार) (२।३।४।५।६।७।८)

मृत्तिका-कुम्भकार चक्र (१।२।३।४।५।६।७।८)

मृत्तिका मांगल्य (२)

मृगमद (१)

मोदक (२।४)

मोदक सनालिकर ५ सेरो (६।८)

मोरेंडा (५ मुंग ५ जव ५ गोहं ५ चि-

णा ५ तिलना लाडु) (२)

मौक्तिक (१)

यक्षकर्म (८)

युगाद्वय (सित) (१)

रेकवी १ (सुवर्ण) (८)

रक्तचूरा (१)

तर्कुर (१)

रत्न-वर्ग (१) (अत्र सूर्यकान्त नील महा-

नील मौक्तिक पुष्पराग पद्मराग-बेह-

र्यादि) (१)

राहण (६।८)

राजादन (४)

रीति (१)

रुप्यकच्चोलिका (१।४)

रुप्य मुद्रा ४ (रुलशला योग्य) ७

रुप्य मुद्रा १ (घडी योग्य) (७)

रुप्य मुद्रा १ स्रग्धर योग्य (७)

लवण (१)

लयणानीय विधि (५।४)

लवणारात्रिकावतारण (४)

लवणावतारण (२।३)

लूण उतारुं (६)

लूण पाणी विधि (पूर्वक आरती मंगलेनो

कपूर घी साकरे करी करवो) (६)

लोकपाल पूजन (कक्कण मोचने) (१)

लोह-मुद्रिका १ (१)

लोहवर्ग (हेमरजत ताम्र कृष्ण लोह

त्रपु रीति कांस्य सीसकादि) (१)

लाह (३।५।६।८)

लापसी (८)

वदना छादन (२।३)

वरसोलां (२।३।५।६)

वरसोलां १०० (७)

वपेपिलक (२।४)

वसु (१)

वज्र (१)

वल्लपरिधान (२)

वल्ल (सदश) (२।३)

वल्ल पाट १ हाथ २४ (७)

वल्ल(सदश श्वेत विवाञ्छादन हाथ) २४ (४)

वल्ल सूत्र धार योग्य (५)

वल्ल १ सूत्र धार योग्य (७)

वल्ल कौसुंभ खंड सहस्र (७)

वल्ल श्वेत (प्रतिमाञ्छादन) (१)

वल्ल २ अखंड सदश कोरा (नंदावर्त-

योग्य १ प्रतिमा योग्य १) (६)

वल्ल २ सदशकोरक (१ गुरु १ नंदावर्त

योग्य) (६।५)

वल्ल पूजा (२।३।५)

वल्ल कोरां सदश ४ (नंदावर्त प्रतिमा-

गुरु नंदावर्त लेखक योग्य) (८)

वाटकी १ (रथ) (३।५।६।७)

वाटकी (रथ) (२)

वाटकी २ (रथ) (८)

वाही १ (२)

वादित्रानयन (४)

वादित्रवादन (६)

वाताम्र (४)

वायम्ब (३)

वाइम १० (७)

१०८ वारक स्नान (२)

वारक १०८ (१)

वारा १० (२)

वारा (माटी) १० (३)

वारक श्वेत ४ (२।५)

वारक ४ स्थापन (स्वस्तिक पट्ट पार्श्वे ४

दिशि सकपर्द १ सहिरण्य २ सजल ३

सधान्य ४) (२)

वालिका (३)

वालुका (२)

वाल (१)

वेद (७) पवित्र स्थानीय

वास घोला पीला (८)

वास (१।२।३।६।८)

वास-घरल (५।६)

वास-पीला ज्ञाना केसर (६)

वास (गंध ही अति धवल वास) (६)

वास (रूपूर कस्तुरिका पुष्प वासित) (४)

वास (वदन केसर रूपूर) (८)

वास सेर १० (मुकडिया) (७)

वास सेर १ (केसर कपूर सहित) (७)

विटुम शय्या (१)

विलेपन (१)

विज्ञाना ८ (८)

विरटक (४)

त्रीहि (१)

टुताक (१)

वैज्ञानिक (२।३)

वेदिका (१।२।८)

वेदिका रचना (२।३)

वेदिका रचना (मंडप मध्ये) (४)

वेदिका रचना (रुल्ले) (४)

वेदिका ४ (५।७।४)

वेदि ४ मंडप कोण चतुष्टये (३)

वेदि ४ (२)

वेदि ४ ननाग (५।६।७)

वैज्ञानिक (२।३)

वैदूर्य (१)

शण बीज (१)

शतमूलिका (१०० वनस्पति नामानि) (६)

शंकरा (४)

शंख दर्शन (३)

शाखाशत (७)

शांतिक (७)

शांतिक (स्नात्र पूर्वक) (७)

शांतिमलि (१।२।४।५।६)

श्यामक (१)

श्रीखड (१।२।३।४)

श्रीपर्णी फलक (१)

समुद्र कीण (६।८)

सर्प (लोहाऽस्पष्ट श्वेतसिद्धार्थ-पोट्ट-
लिका) (२)
सर्प (श्वेत रक्षापोटली) ८ (३)
सर्प (लोहाऽस्पष्ट श्वेतसिद्धार्थ-पोट्ट-
लिका) (३)
सर्प (श्वेत पोट्टली ८) (४)
सर्प (लोहाच्छेदित श्वेत) रक्षा
पोट्टली (५)
सर्प (तंदुल निर्माल्यादि द्रव्य सहित
कणपट्टकुले गेवायुत्र चद्र) रक्षा
पोट्टली सहस्र ? (७)
सर्प (लोहाच्छेदिग श्वेत) २७ तथा
रक्षापोटली (६)
सर्प (श्वेत लोहाच्छेदित पोट्टली) ८
साकर (५१६) साकरिआं १०० (७)

सराव ७ (मातृ सराव वडां) (७)
सराव ? (गंडा) (३)
सराव ? (चूरिमा पूषडी) (३)
सराव (भांमंडां) (६)
सराव (भांमणां) (५)
सराव (आमडा) (८)
सराव ५ (वल्लमय पूषक) (४)
सर्जरस (४) सहकार (७)
संधदान (२)
संधतंगोल (अंतर पडदेइ) (६)
संध मडिदान (वेपदान)
स्वतन (प्रतिष्ठान्ते अजित शांति दृढ
शांति वा) (८)
सर्प (श्वेत) (११४)

सराव ५० (११६)
सराव (२)
सराव ६४ (५१७)
सराव (३२'५० वा ६४) (८)
सराव १० दीप गर्भ (४)
सराव ७ वलि (वाट खीर करंजो कीसर
कूर सिद्धवडि पूषली) (२१३)
सराव (वाट खीर कूर कीसरि करंजो
लापसी पुडा पुडी) (६)
सराव ७ (वाट खीर करंजो सात धाननी
खीचडी) (८)
सराव ७ (नंदावर्त आगल ढो०) (६)
सराव ७ दहिभरियां (नंदावर्त पट्ट पार्श्व
द्वये मूकवां) (६)

स्नात्र (खत्रधार कृत) (१)
 स्नात्र (४ स्नात्रकार कृत) (३)
 मालमर्णा वडां रीगणी लहुडी रीगणी
 (५।६)
 (सहदेवी सतावरी कुआरी वालो म्होटी-
 रीगणी न्हानीरीगणी मयूरशिखा
 अक्रोल शंखाहोली लक्षमणा आजो
 काजो थोहर तुलमी मरुजो कुंभा
 गुली सर पवो राजहंसी मीठवणी
 शालमणी गंधनोली महानीली) (८)
 ७. स्नात्र मूलिका-(मूलिका शब्द
 देखवो)
 ८. स्नात्र प्रथमाष्टवर्गं (छष्ट त्रिपंगु वज

स्नात्रकार उपवासी (७)
 स्नान-(धृतदधिदुग्धादिना) (३)
 स्नात्र-भेदाः—
 अशोक आम्र जावू वडल अर्जुन वील
 किसुक दाडिम नारिंग) (६।८)
 (छ्म अश्वत्थ सिसीप उदुवर वट) (७।४)
 ४. मृत्तिका स्नात्र (मृत्तिका शब्दमां
 भेदवर्णन)
 ५ स्नात्र पचगव्य दर्भोदक (छगण-
 मूत्र-दूध-दहि-घृत) (२।३।४।५।६।७)
 ६. सदैपधि स्नात्र (सहदेवी वला शत
 मूली शतावरी कुमारी गुहा सिंही
 व्याघ्री (२।३।४।७)
 (सहदेवी नला कुआरी गतावरी पीठवनी

साकरलिंगा (७)
 स्नात्रकार ४ (२।३।४।५।६।७)
 १ स्नात्र सुवर्णजल (२।३।४।५।६।७।८)
 २ स्नात्र पचस्तजल (२।३।४।५।६।७।८)
 ३ स्नात्र कपाय डाल (न्यग्रोध उदुम्बर
 अश्वत्थ चम्पक अशोक रुद्रय आम्र
 जावू वकुल अर्जुन पाटला वेतस किशु-
 काद्रि) (१)
 (लक्ष अश्वत्थ शिरीष उदुवर वट)(२।३)
 (पीपली पीपल सिसीप उवर वड चंपो
 अशोक आम्रो जातु वडल अर्जुन पाडल
 वील किसुक) (५)
 (पीपरि पीपल सरीस उवर वड चंपक

लोद्र उशीर देवदारु दूर्वा मधुयष्टिका
ऋद्धि वृद्धि) (२।३।४।७)
(उपलोट वज लोत्र वीरणिमूल देवदारु
श्रो जेष्ठिमधु ऋद्धि वृद्धि) (५।६।८)
(वीरणी मूलस्थाने हीरवणी मूल ग्रामा-
दिका)

९. स्नात्र द्वितीयाष्टवर्ग (मेदा महामेदा
कंकोल खीर कंकोल जीवक ऋषभक
नखी महानखी (२।३।४।७)
(मेदा महामेदा काकोली खीरकाकोली
जीवक ऋषभक नखी महानखी (५।६)
(पंतजारिकाकुष्ठ विदारीकंद कचूरो कपूर
काचरी नखला कंकोडी खीरकंद
मुसली वेई (८)

१०. स्नात्र सवौषधि (हरिद्रा वचा
शोफ वालक मोथ ग्रन्थिपर्णक प्रियंगु
मुखास कर्चूर कुष्ठ एलातज तमाल-
पत्र नाग केसर लवंग ककाल जईफल
जातिपत्रिका नख चंदन सिल्हक
प्रभृति) (२।३।४।५।६।७)

(प्रियंगु हलद्र वज सुआ वालो मोथ
अतिविसकली पुरमांसी जटामांसी
उपलोट एलची लविंग तज तमालपत्र
नागकेसर जायफल जावंत्री कंकोल
सिलास (रस) चंदन अगर पत्रज
छड नखला गंडुला कचूरो विरिहाली
छडीलो कंकोल मिरची कंद वरधारो
आसंधि वडी औषधि सहस्रमूली (८)

११. स्नात्र कुसुमजल (२।३।४।५।६।
७।८) (सेवंत्रा दिपु० जलेष्टि.)

१२. स्नात्र गंध स्नानिका (सिल्हक
कुष्ठ मांसी चंदनाङ्गुरु कर्पूरादियुक्त
गंधस्नानिका)(२।३।४।५।६।७) (केसर
कर्पूर कस्तुरी अगर चंदन) (८)

१३. स्नात्रवास (गंधा एव शुक्लवर्णा
वासाः) (२।३।४।५।६)

घनसार मिश्र श्रीखंड वास) (७)
(चंदन केसर कपूर एतद्द्रव्यवास) (८)
१४. स्नात्र चंदन (सजल चंदन कल्क)
(२।३।४।५।६।७)

(चंदन दुग्ध स्नात्र) (८)
१५. स्नात्र कुंकुम (केसरापरनामक

कुंभ (२।३।४।५।६।७)	सिद्ध विडि पुडी (५)	मंत्रधार (१)
(केसर माकर स्नात्र) (८)	सिल्दरु (४)	सूर्यकान्त (१)
१६. स्नात्र तीर्थोदक (जलधि-नदी- द्रव कुण्डतीर्थजल (२।३।४।७)	सिद्दामन (८)	सेलंडी (५।६)
(गंगा प्रमृति तीर्थोदक) (५)	मीसकादि (१)	सेलही खड (७)
(गंगा सिन्धु प्रमुख १०८ तीर्थोदक)(६)	सुवर्ण वर्तिका (५)	सोनानो कच्चोलो (८)
(गंगादिरु १०८ तीर्थ) (८)	सुखडी सर्प जातनी (८)	सोपारी (६।८)
१७. स्नात्र-कंपूर (कंपूरजल) (२।३।४। ५।६।७।८)	सुकडी घसी (६)	सुकुमालिका कंकण (३)
१८. स्नात्र-पुष्याञ्जलि (३।५।६)	सुकडी वास (५)	सुवर्ण शलाका (१।२।३।४।५।६।७।८)
(रुस्तूरी जल) (२)	सुकडी घसिवा सेर १० (७)	सुवर्णचूर्ण (५)
(शुद्ध जल १०८ स्ना) (७)	सुकडी जाही घसी वाटुं १ (६)	सुवर्णमाक्षिक (१)
(केसर चंदन पुष्प स्नात्र ततः पुष्पांजलि) (८)	सुकडी घसिमालोडा २ (६)	सुवर्णमाजन (२।३।५)
	सुकडी घसी जाडी लोडा २ (८)	सुहाली-सोहाली (२।३)
	घत्र (कुमारी कर्तित) (४)	सुहाली दर्भ (३)
	घत्र (कुसुम) (३)	सुहाली गुडयुत ४ दान (३)

सुहाली (५)
सुंहाली (८)
हरिताली (१)
हरिप्रोदक (४)

मदनफल=मीठल,
मधुयष्टि=जेठीमधनी लाकडी
तुम्बी=तुंबडीनो वेलो
निम्ब=लींबडाचुं झाड
विम्बी=गिलोडानो वेलो
इन्द्रवारुणी=इंद्रवरणांनो वेलो-तरसुडा-
नी वेल
स्थुलेन्द्रवारुणी=मोटां इंद्रवरणांनो वेलो
मोटी तरुणी.

हस्तलेप (प्रियंशु कर्पूर गारोचन (२।३।-
४।५।६।८)
हिरण्य (१।२)
हिरण्य दान (२।३)

८-करयाणकसूची

उत्तरवारुणी=दूधेलीनो वेलो-याड दूधेली
लघूत्तरवारुणी=भोयदूधेली
कर्कटी=काकडीनो वेलो
कुटज=कडायानुं झाड
इंद्रजव=कुटज वृक्षनां बीज, कडवा इंद्रजव,
मूर्वा=मोरवेल
देवदाली=कुंकडवेल
विडंगफल=वावडिंग
धेतस=नेतरनुं झाड

हेम (१)
हेम गैरिक (१)

दन्ती=अजैपालानुं झाड-नेपालानुं झाड
चित्रकू=चित्रकनुं झाड-कालो चित्तरो.
चित्रकरक्त=राती छालनो चित्रक
उन्दरकर्णी=उंदरकनी-गरणी
कोपातकी=तोरी-तोरीना शाकनो वेलो.
राजकोपातकी=गलकानो वेलो
करंज=करंजनुं वृक्ष
भूतिकरंज=लताकरंज, करकचियानो वेलो
पिपली=पीपर-लींडी पीपर

विपलीमूत्र=पीपलामूल, गंठोडां
 संधव=पंजागथी आवतु सौंधालूण
 सौर्नं=सचल लूण, लाल मीठुं
 कृष्णमौर्वल=रालु सचर लूण
 निडलण=प्यनाम रयात
 पावयलवण=रच लगणमानो एक क्षार
 समुद्रलगण=समुद्र खार
 रोमकलगण=चिलायती मीठुं
 पयक्षार=जचखार
 सर्जिका=साजीखारो
 वचा=वज-वोडा वज उग्रगंधा
 वचा सुरासानी=सुरासानी वज.
 धुद्रैला=न्हानी एलची.
 एला=एलची-मध्यम एलची

बृहदेला=मोटी एलची.
 सर्पप=सरसन पीला
 कृष्ण सर्पप=राला सरसन-रायलो
 आसुरी=राई
 त्रिनीज=रवणना बीज.
 मालविनी=सोततनु झाड
 हरीतकी=हरडे-मोटी हरडे
 विभीतरु=वहेडा-विभीतरक वृक्षनुं फल
 आमलक=आमलानुं फल
 त्रिफला=हरडे वहेडा आमलां संयुक्त
 सुहो=थोर-हाथाली थोर.
 शखणुपी=शखानली लता
 नीलिनी=नील-गलीनुं झाड
 रोध्र=लोधरा

बृहदलोध्र=पठानी लोधरा
 कृतमाल=गरमालो-गरमालानी फली.
 कम्पिहकरु=कपिलो-कपीलो
 स्वर्णक्षीरी=सत्यानाशी.
 कृष्ट=सुगंधीद्रव्य कृष्ट
 चिल्व=चिछीनुं झाड वा चिल्वफल
 अपामार्ग=अघाडो-आगी झाडो.
 अरणी=मोटा अरणानु झाड
 अरणिफा=न्हानी अरणी
 पाटला=याडलनु झाड
 कंटकारिका=उभी रींगणी, मोटी रींगणी
 शुद्रफंटकारिका=न्हानी रींगणी-मोय-
 रींगणी
 गोक्षुरु=गोखरु काटी.

देवदारु=देवदारुनुं वृक्ष
रासना=स्वनाम ख्यात वात व्याधिनासक
औषधि
यव=जव
शतपुष्पा=वरिहाली
कुलरथ=कलथिया-ए नामनुं धान्य
माक्षिक=मक्षिकाकृत मधु-मध
पौक्षिक=पूतिका-लघु मक्षिका कृत मधु-
श्वेत मधु
क्षौद्र=भमरा माखीओनुं मधु-पीतमधु
सित्तुक=मीण
शर्करा=साकर
विश्वभैषज=सुंठ
कृष्णमरिच=कालां मरी

त्रिकटु=सुंठ-कृष्ण मरिच-पापर संभिलित
नागकेशर=स्वनाम ख्यात
हरिद्रा=हलदर
दारुहरिद्रा=दारुहलदर
अंबुष्ठा=आंवा हलदर.
राल=स्वनामख्यात
श्रीखण्ड=सूखड-पांङ्गु चंदन
शोभाञ्जन=सरगवानुं झाड
रक्तशोभाञ्जन=लाल सरगवी
मधुशोभाञ्जन=मीठो सरगवी.
मधूक=महुडो, महुडांनुं झाड अथवा फल
रसाञ्जन=रसौत
तगर=स्वनाम ख्यात
बला=वलवीजनो क्षुप

अतिबला=न्हानी कांकसी (न्दानी
पीठाडी)
नागबला=गंगेरुकी-गांगडीनुं झाड
दूर्वा=धो दूव
श्वेतदूर्वा=धोली धो, श्वेत दूव
गण्डदूर्वा=गांठाली धो-तांतिया दूव
जवासक=जत्रासो
दुरालभा=धमासो
वासा=अरडुसी-माली अरडुसो
कपिकच्छू=कौंचनी फली वा बीज.
शतावरी=सतावरी नाम ख्यात
गुञ्जा=चणोठी-लालचणोठी चरमी
श्वेतगुञ्जा=धोली चणोठी-धोली चरमी
प्रियंगु=रायणनुं झाड

वीजप्रियगु=गहूला-बहुला
 पद्म=लाल कमल, पोषणा
 पुष्कर=श्वेत कमल
 नीलोत्पल=नील कमल-नीलोत्तर
 सुसुद=रात्रिविक्रामी कमल
 शान्दक=कमलनी जड-कमलतन्तु
 वितुम्बक=नागरमोथ
 जीवन्ती=हरडेनुं झाड-हरीतकी वृक्ष
 कारोली=स्वनाम प्रसिद्ध कंद
 क्षीरकाकोली=स्वनाम ख्यात कंद
 मेद=स्वनाम ख्यात कंद
 महामेद=स्वनाम ख्यात कंद
 सुदृगपर्णी=रानीमग-कोटहिओ
 मापपर्णी=रानी अडद

ऋषभक=स्वनाम ख्यात कंद
 जीमक=स्वनाम ख्यात कंद
 विदारी=स्वनाम ख्यात कंद
 क्षीरनिदारी=दूधियानिदारी कंद
 एरण्ड=एरण्डो रक्तैरण्ड=रातो एरंडो
 शृथिहाली=विच्छुडो घास
 पुनर्नना=राती साटोडी
 श्वेतपुनर्नना=श्वेत माटोडी
 सहदेनी=स्वनाम प्रसिद्ध औषधी
 कृष्णसारिगा=स्वनाम प्रसिद्ध रक्तशोधक
 औषधी
 उशीर=सुगंधी वालो
 चंदन=मलयगिरि चन्दन

रक्तचंदन=रत्नानु लकडुं-लाल चंदन
 कालेयक=अगरनो नियसि-अगरमांथी-
 निकलतो रस
 परुपक=कालमा नामनी औषधी
 पद्मक=पद्मख-कमलबीज-कमल काकडी
 पुण्डरीक=श्वेतकमल
 तुकाक्षीरी=वज्र लोचन
 कर्कटशृंगी=कानडा शींगी.
 गुडुची=गलो
 द्राक्षा=द्राख-किसमिस द्राख
 कटुकल=कायफल
 कतक=कतक वृक्षुं फल-निर्मली
 राजादन=रायणनु फल-गयण
 शाक=सागनु झाड

दाडिम=दाडिमीतुं फल-अनार.
अंजन=ए नामतुं वृक्ष-काला लाकडानुं
झाड.
सौवीर=कालो सुरमो
मांसी=जटामांसी
गंधमांसी=घुरमांसी
कडका=लवण-कांकरीवालुं मीडुं
पाण=पाड -काली पहाड.
धान्यक=धाणा-कोथभीर
काकमाची=साजी कांणीनो क्षुप
किराततिक्त=करियातुं-चिरायतो.
शैलेय=शिलापुण्य-छडीलो-छडछडीलो.
चक्रांका=कांकसी-मोटो पीठाडी.
कंथेरी=कांथेरनुं झाड

अलाण=झाउडीतुं झाड
मयूर शिखा=मोरशिखा नामनी बूटी
काली सुसली=स्वनाम ख्यात
श्वेतसुसली=स्वनामख्यात.
ताम्रवल्ली=त्रांवावेल.
ह्रस्वपत्रा स्नुही=हाना पत्रो वाली दूधा-
ली थोर
कारेवेल्ली=कारेली-कारेलाना वेला
चदरी=चोरडीतुं झाड-चोरडी.
चीयक=चीओ-चीयानुं झाड.
तिनस=तिनसतुं झाड-धामण
भूर्ज=भोजपत्रतुं झाड अथवा भोजपत्र.
अर्जुन=अर्जुन वृक्ष-साडो
खदिर=खेरतुं झाड.

कदर=कगहनुं झाड.
मेपशुंगी=मोढीआवल-सोनासुखी.
धव=धवतुं झाड
शिशपा=शीशमनुं झाड-सीसम.
ताल=तारुतुं वृक्ष.
अगुरु=अगरतुं झाड.
पलाश=खाखरानुं झाड-केशुडानुं वृक्ष.
क्रमुक=मोपारीतुं वृक्ष
अजशुंगी=मरडासींगी-मरोडाफली
अरुब्कर=भीलामुं-भीलामानुं फल.
रूपक=अरडूसो-जंगली अरडूसो
कदंब=कदंबतुं वृक्ष
कंथैलक=कंथाशेलीओ
नागदमनी=नागदोन-नागदमनी औषधी

ब्रह्मदण्ड=उटकटालो

कर्पास=वणी-हीरवणी-कपासनु झाड

कल्हार=कलालिओ,

रद्रजटा=स्वनाम ख्यात

वचदन्ती=एरु पहाडी औषधी-दन्तौषधी.

रुदन्ती=रुद्रवती नामे ओलखाती औषधी

श्रीपर्णी=सेवननु वृक्ष.

तुल्य=थूथु-मोरथूथु

हरिताल=हरताल

द्विगु=द्वीग

कासीस=हीराकमी

शिलाजतु=शिलाजीत-शिलानिर्यास.

पुष्पकासीस=हीराकसीनां फूल,

पापाणभेद=स्वनामल्या औषधी,

काश=दर्भजातीय वृण-कासबा-काह

इक्षु=शेलडी

नल=काशजातीय वृण

दर्भ=डाभ-कुश

अर्क=आकडो

पिप्ली=पीपली

सुवर्चला=द्राही-विद्यावाह्यी

साला=धीयु देवदारु

कदली=कंल-केलानुं झाड

अशोक=आसोपालन

एलवालुकु=एलिओ

अलर्क=धोली आकडो

मन्दार=मदार-आकडाने मलतुं झाड

भारगी=भाडंगी नामनी औषधी

सल्लकी=सालखुं झाड

ज्योतिष्मती=स्तनज्योत

कटमी=मालकागर्षी

श्वेतकटभी=धोली मालकागर्षी

इंगुदी=द्विगोटी-द्विगोटानुं झाड

सुरमा=तुलसी

सोमराजी=मनतुलसी-वाकुची

श्वेतसुरसा=धोली तुलसी

कुवेर=अजमो-गोही अजमो

कृष्ण कुवेर=कालो अजमो

फणिञ्जक=नीजोरी-बीजोराखुं झाड

निर्गुडी=नगोडनुं झाड

सृष्कक=लताकस्तुरी

अतिविपा=अतीस-अतिविषनी कली.

जीरक=घोलुं जीरं
कृष्णजीरक=कालुं जीरं-स्याहजीरं
अजमोद=एज नामे प्रसिद्ध
चव्यक=म्यनाम ख्यात
पुष्करपत्री=विछीनुं झाड
संजिष्ठा=मजीठ
शाल्मलि=सेमलनुं झाड
मोचरस=सेमलनो गुंदर
धातकी=धातकीवृक्ष
नन्दी=ए नामनुं वृक्ष
मह्यातक=भीलामानुं झाड
वट=वडनुं झाड-वड
पिपल=पीपलो-पारस पीपलो
उदुम्वर=उंवरौ-गूलर

जंघू=जांघुनुं झाड
राजजंघू=मोटा जांघुनुं झाड
कारुजंघू=न्हानां जांघुफलनुं झाड-जंग-
ली जांघु
करमर्दक=करमदौ-करमदानु झाड
कपीतन=जासूरीनुं झाड
आम्र=आंघो
पियाल=चारीली-नेपाली चारीली
तिन्दुक=तिदुआंघुं झाड
बुरुक=शिलाराम
वालक=तुगंधी वालो
अधःपुष्पी=उंधा फूलीनो छुप
त्वचा=तज-दालचीनी
तमालपत्र=स्यनाम ख्यात

नख=नखला
श्रीवेष्ट=सर्जवृक्षनो निर्यास-चंद्ररस
कुन्दरुक=कंदरूप धूप
कुंडुम=केसर
गुगुलु=गुगलनुं झाड-गुगल धूप
पीलु=पीलुडीनुं फल-पीलुं
खटी=खडी-धोली माटीनो घेद
हरमजी=राती माटी-रजमी
तुवरी=पीली माटी-भेद-मुलतानी माटी
पुवर्णमाथिक=ए नामथी प्रसिद्ध खनिज
द्रव्य
रूप्यमाथिक=स्वनाम ख्यात खनिज द्रव्य
शमी=खिजडी-न्हानी खिजडी
राजशमी=खीजडो-मोटो खीजडो

हरपा=रोपनीनीनुं झाड
काकनारा=लीआडीपी
काकनारा

एषुपा=चोपचीनीनु झाड

काकनासा=कोआठोडी

कारुंघा=स्वनाम ख्यात वृटी

पर्यटक=पापडो- पित्तपापडो

राजहम=स्वनाम ख्यात

पुष्कम्बूल=योरुसमूल

काञ्चनार=रुचनार इल

रोहितक=रोहिडानु झाड

चर=यास-यांसडानु झाड

अकोछ=अकोलनु झाड

कौडिन्य=लोमाननु झाड-कोडिओ लोवान

अलेभान्वरु=गुदीनु झाड-गुंदी

तिनिडीक=आंबली-आंबलीनु फल

अम्लवेतस=म्वनाम म्व्यात

कपिस्य=कोठ-कोठनु फल

नालिकेर=नालीएर

खजूर=खजूर-छुबारा

बीजपूरक=रीजोकं

नारंग=नारंगी

जंभोर=जंभेरी

निवूरु=लींनु

अद्याट=अखरोट

चागेरी=खाटी लूणी

अम्लका=गामलीनु झाड

करीर=करंडानु झाड

वास्तुरु=वधुओ-एरु वातनी साजी.

कुंभ=रुसुमो-कुंसंमीनां फूल-

लासा=आव

जतुका=गोरडीनी लाख-कणवज

लागली=एरु जावनो डेरी वेलो-दहलिनी

मिश्रया=सुवा

मूलक=मूले

तन्दुलीयक=तादलिओ-पंदलेवो

द्रोणपुष्पी=द्वयंगुखी-चपोरियानु झाड,

आमली=आमल-भूग्यामलकी आमलकी

नाम्बी=स्वनामख्यात.

अरिष्ट=आरेठानु झाड

पुत्रजीना=धोला फूलनी भोंयरीगणी.

कृष्माण्डक=कोलु

महातुनी=मोटीतुनीनो वेलो,

त्रिभंटी=त्रिभंटीनो वेलो-चिमडियानी

वेल्

कटुचिभंटी=कडवी चीमडीनो धोलो
विष्णुक्रान्ता=अपराजिता
क्षीरिणी=रायणनुं झाड
सर्पाक्षी=खरसणिओ-जरफोका
कर्दमपुष्पो=अगनो क्षुप
करवीर=कणेर धोलो
रक्तकरवीर=कणेररातो-लालकणेर,
धतूर=धतूरो
यवानी=अजवायन-अजमो.
चाराही=चाराही कंद-खीलोडा
मांसरोहिणी=कडु-कुटकी
बृद्धदारु=वर्धारो.
बन्ध्याकर्कोटिका=वांझकंकोडी.
त्रिपत्रिका=तरवणनुं. झाड

पिंडीतक्र=लोबान घूप
सिंदुवार=संदिसरातुं झाड-सिंदोडी
अश्वगन्धा=आसगन्ध.
मदन्यन्ती=मोगरानो वेलो
भंगराज=भांगरो-जलभांगरो.
शिरीष=सरसडो-सरडो.
अगस्ति=अगथिओ
विटिका=विटी-पीतचंदन
स्वर्णपुष्पी=पीलाफूलनी केतकी
लक्ष्मणा=ए नामनो कंद
पलंकपा=रक्तपलाश.
दधिपुष्पी=धेता अपराजिता
गोजिह्वा=गांजवा
कस्तूरी=स्वनामख्यात.

कपूर=कपूर
जातिपत्री=जावत्री
जातिफल=जायफल
ककोलक=सुगंधी कोकला
लवंग=लविंग
दमनक==दमरो-मरुओ
कचूर=कचूरो
मालती=चमेलीनो वेलो
जाति=जाईनो वेलो.
युथिका=जुहीनो वेलो.
शतपत्रिका=सेवंत्री-गुलाब
चंपक=चम्पो सोवनचंपो
बहुल=बोलसिरि नामनुं झाड
तिलक=तिलकवृक्ष-तलकडो.

अतिमुक्तु=मोतीओ-चटमोगरो.

कुन्द=कुदइधनु श्राड

कुमारी=कुआरी-धीग्वार

अतसी=अलसी-अलसीनो क्षुप

हिगुल=हिगलोरु-शिगरफ,

हरिताल=हरताल

मनःशिला=मनशील,

गंधरु=गंधकनामथी प्रसिद्ध छे.

पारद=पारो

गैरिक=सोनागेरु

सौराष्ट्री=एक जातनी माटी-गोपीचंदन

गोरोचना=गोरोचन

अम्रक=अमरल,

वाताम=वदाम-वादाम,

मुंडी=मुंडापाती बूटी

महामुंडी=गोरखमुंडी. बूटी

सूचना—

अमोए जे क्रयाणकोनी सूची आपेली छे ते घधां आपणा गुजरात तथा मारवाड देशमां उपलब्ध थईं शके एवां छे अने तेम छ्तां अमृक चीज न मली शके तो आमां त्रणसोएकोतेर उपसंगृहित छे ते पैकीनुं कोइण लेंबुं अने ३६० नी संख्या पूरी करुनी. कदापि ११ यी वधु चीजो न मले अगर न ओलबाय तो तेना बदलामां बीजा क्रयाणको पण लेइ शकाय छे, मात्र तेमां क्रयाणकनु लक्षण घटवुं जाइये, क्रयाणकनु लक्षण आ प्रमाणे छे.

“अप्रसिद्धं रोगहरं, भेषजं यन्महीतले । तत्क्रयाणकमुषिष्टं, शेषं वस्तु प्रकीर्तितम् ॥”

प्रपुन्नाट=पमाडिओ-चक्रमर्द.

बोल=दीराबोल

सिंदूर=स्वनामल्यात.

शंखप्रस्तरी=संगेजर-शखजीरं,

शृंगाटक=सीघोडां-सूकां सीघोडां,

धुनीरा=धूनरो एक जातनुं घास.

अर्थात्—उत्कृतिरिक्त पण जे वस्तु रोगनाशक होइ दवा रूपे वपराती होय तेने क्रयाणकमां परिगणित करवी अने जेमां क्रयाणकनु उक्त लक्षण न होय तेने सामान्य वस्तु रूपे गणवी।---

सुवर्णादि धातुओ, खाद्य धान्यो अने वस्त्रोने क्रयाणक न गणतां एत तरेके गणवां, शेष गांधी—पंसारीनी दूकाने मलती वधी वनस्पतिओ तथा मुहारीगींग आदि खनिज द्रव्योने क्रयाणको गणी उपयोगमां लेवां।

इति कल्याणकलिका-प्रतिष्ठापद्धतावयम् । साधनख्योऽगमत् खण्ड-स्तुतीयः परिपूर्णताम् ॥

भा०टी०—आ प्रमाणे कल्याणकलिका प्रतिष्ठापद्धतिमां आ साधन नामक त्रीजो खंड समाप्त थयो.

इति तपगच्छाचार्यश्रीविजयसिद्धिसूरिनिगदानुसारि—संविग्नअमणावतंस-

श्रीकेशरविजयशिष्यपं०कल्याणविजयगणिविचिचितायां

कल्याणकलिकाप्रतिष्ठापद्धतौ साधननामा

तृतीयः खण्डः समाप्तः ।

एतत्समाप्तौ च

समाप्त्यं कल्याणकलिकाप्रतिष्ठापद्धतिः ॥



परिच्छेद	विषयाः	पत्रांक पृ	परिच्छेद	विषयाः	पत्रांक पृ
२१—	(१) गृहप्रतिष्ठाविधि	२४१-२	३	स्तुति-स्त्व-मंत्राः	२५९-१
"	(२) जिनपरिकरप्रतिष्ठाविधि	२४२-२	"	प्रतिष्ठोपयोगी मंत्रसंग्रहः	२६७-१
"	(३) चतुर्निकायदेवमूर्तिप्रतिष्ठाविधि	२४४-२	४	स्मरण-स्तोत्राः पठयोग्याः	२७०-१
"	(४) ग्रहप्रतिष्ठाविधि—	२४५-१	५	प्रतिष्ठोपस्कर सूचीओ	२८०-१
"	(५) सिद्धमूर्तिप्रतिष्ठाविधि	२४६-२	"	(१) अंजनशलाकाना सामाननी सूची	२८०-२
"	(६) मन्त्रपट्ट-प्रतिष्ठाविधि	२४७-१	"	(२) पादलिप्तप्रतिष्ठापद्धतिनो कारकजात	२८३-१
"	(७) साधुमूर्ति-स्वप्नप्रतिष्ठाविधि	२४७-२	"	(३) गुणरत्नद्वरिग्रतिष्ठाकल्पोक्तसामग्री	२८४-२
"	(८) पित्रमूर्तिप्रतिष्ठाविधि	२४८-१	"	(४) गुणरत्नीयामियेकोपकरणसूची	२८५-१
"	(९) तोरणप्रतिष्ठाविधि	२४८-२	"	(५) विम्बस्थापना-प्रतिष्ठोपकरणसूची	२८६-२
"	(१०) जलाशयप्रतिष्ठाविधि	२४८-२	"	(६) शान्तिस्नात्रना सामाननी सूची	२८८-२
१	तृतीयखण्डनी विषयानुक्रमणिका— चैत्यवदनसंदोह	२५०-१	"	(७) पूर्वतनप्रतिष्ठाकल्पोक्तसामग्रीकोश	२९०-२
२	चतुर्विंशतिजिनस्तुतयः-प्रथम चोवीशी धर्मघोषद्वरिया द्वितीय चोवीशी	२५५-१	"	" स्नात्रभेदाः	३००-१
"		२५७-१	"	(८) क्रयाणकसूची	३०१-२

शुद्धिपत्रक

पत्र पृष्ठ पंक्ति अशुद्ध शुद्ध	पत्र पृष्ठ पंक्ति अशुद्ध शुद्ध	पत्र पृष्ठ पंक्ति अशुद्ध शुद्ध	पत्र पृष्ठ पंक्ति अशुद्ध शुद्ध
१ १ ७ दद्योत्तर-दद्योत्तर	२४ २ ११ तत्व-तत्त्व	३२ २ १४ नमोः-नमः	३२ २ १४ नमोः-नमः
३ १ ५ तद्दूध-तद्दूर्ध्वे	२५ १ २ °स्वति-°स्वति	३३ १ ६ वज्रकुर्यै-वज्राकुर्व्यै	३३ १ ६ वज्रकुर्यै-वज्राकुर्व्यै
११ २ ५ पद्य-पद्य	" १ ४ नौचि-नोन्नति	" " ८ मानच्यै-मानन्त्यै	" " ८ मानच्यै-मानन्त्यै
११ " १३ आयुदा-आयुर्दा	" " १२ दधातु-ददातु	" २ २ चरणधे-चरणायो	" २ २ चरणधे-चरणायो
१२ १ ७ निधेय-निधये	२७ २ १ मंत्रे०-मंत्रे	" " ३ त्रहस्य-त्रहरप	" " ३ त्रहस्य-त्रहरप
१२ २ ८ भद्र-भद्रा	२८ १ १४ मुंलखतुं-लखतुं	" " ७ त्रिकाम-त्रिकाय	" " ७ त्रिकाम-त्रिकाय
" " १० शंखे !-शंख !	२९ १ ३ करवी-कर्वो	" " ८ द्वारा-द्वारो	" " ८ द्वारा-द्वारो
१८ १ १३ अश्विनी-अश्वि	३० १ ४ स्वाह-स्वाहा	३४ १ ५ नमा-नमो	३४ १ ५ नमा-नमो
" २ ६ स्याय-रूपाय	" २ ९ इशानमा-ईशानमां	" २ १० दृढ-दृढ	" २ १० दृढ-दृढ
" " १० पुण्याये-पुणायै	" " १३ देव-देव	" " १२ पत्नै-पत्ने	" " १२ पत्नै-पत्ने
" " " शंखिन्य-शंखिन्यै	३२ १ ७ नमा-नमो	" " १३ चयाणु-पयाणु	" " १३ चयाणु-पयाणु
" " ११ जिह्वाय-जिह्वायै	" " १२ दात्रे-दात्रे	" " १४ कुठ-कुट्ट	" " १४ कुठ-कुट्ट

पत्र पृष्ठ पंक्ति अशुद्ध शुद्ध
 ६३ १ ११ स्वप्न-स्वप्न
 " " " पद-पद
 ६६ २ ७ दीन्य-दीन्य
 " " ९ इशाने-ईशाने
 " " ११ सुष्टिक्रमे-सृष्टिक्रमे
 " " १३ नम-नमो
 " " " नम-नमो
 ६७ १ ५ चइए-चईए
 " " ६ वइए-वईए
 " " १२ गौरीए-ॐ गौरीए
 " " ९ न्द्रादिभ्य-न्द्रादिभ्यो
 ६९ १ ६ रक्त २-रक्ता २९
 " " १० मण्डलो-मण्डलो
 " " ११ पूर्वया-पूर्वयो

पत्र पृष्ठ पंक्ति अशुद्ध शुद्ध
 ४५ २ १० सन्नचि-जन्नचि
 ४६ १ ५ पुरह-पूरह
 ५५ १ ३ मण्टप-मण्डप
 " " " भूमि-भूमि
 ५७ १ ७ ११ जल-जल
 ५८ २ १ ह्रींश्च-ह्रींश्च
 " " ११ करिणीम्-करिणी
 ५९ १ ११ चिवा-चिवा
 " " " नुशा-नुशा
 ५९ २ १ नमा-नमो
 " " ४ गुठाण-गुठाण
 " " ७ शीताद-शीतिद
 ५९ २ १३ अथकु-(१) अथकुं
 ६३ १ ४ लेस्वा-लेस्वा

पत्र पृष्ठ पंक्ति अशुद्ध शुद्ध
 ३५ २ ५ विकल्प-विकल्प
 ३५ २ ६ कुरु २-कुरु २
 ३८ २ १२ माहिणि-मोहिणि
 ३९ २ २ यदधिष्टि-यदधिष्टि
 ४० १ २ यइया-इया
 ४१ १ ७ संपक्की-सपत्की
 " " " राग-रोग
 " २ १३ अगुठ-अगुठ
 ४२ १ ७ नमाका-नमोका
 " " १० नमाका-नमोका
 ४४ २ ८ उस्मगा-उस्मगा
 " २ १० संति-संति
 ४५ १ १० गोद्विठए-गोद्विठए
 " " १२ सिद्धचि-सिद्धचि

पत्र	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
६९	२	५	पदकौ-पट्टकौ	
७१	२	१४	स्को-कौ	
७३	२	१	निर्धुचि-निर्धुवि	
"	"	२	शव-शिव	
७५	१	३	आगच्छ-श्रीजिनप्रतिष्ठा महो- त्सवे आगच्छ	
७५	२	१०	योऽस्ति-योऽस्ति	
७८	२	१०	सवदा-सर्वदा	
७९	१	३	लक्ष्मी-लक्ष्मी	
८०	१	१०	धर्मार्थ-धर्मार्थ	
"	२	६	निर्मयः-निर्मायः	
८१	१	५	मातम्-मानः	
"	"	६	दाय-द्वय	
"	२	७	मंत्रा-मन्त्र	

पत्र	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
८२	१	१३	पहव-पर्वव	
८३	२	१३	पूज्याम-पूजयामि	
८४	२	३	हितार्च-हितानर्च	
८५	२	५	पन्ता-पन्तो	
८८	१	५	मूला-मूलो	
"	"	१२	पापं-पोपं	
"	२	"	यामि-गामि	
९१	१	१०	हसः-हंसः	
९३	१	७	मुदरा-मुद्गराः	
९५	१	३	तायथा-तोयथा	
९५	१	५	बुध्न-बुध्न	
"	२	७	उद्योतं-उदद्योतं	
९६	२	५	अहज्जन्मा-अहज्जन्मा	
९७	१	२	कायाथ-कायथ	

पत्र	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
९७	१	१२	घोते-घोते	
"	"	"	सदमो-सदर्मा	
"	२	१०	क्षीर-क्षीरे	
९८	२	९	रुध-रुध	
१०२	२	१३	करवा-करवो	
१०३	३	३	तायम्-तोयम् ।	
१०५	१	५	वस्तु-बन्धु	
"	२	५	यामिति-यामीति	
"	"	८	स्निधोषो-स्निग्धांषो	
"	"	"	दयान्-दयान्	
१०६	१	७	कुङ्कु-कुङ्कु	
"	"	८	काया-कायो	
"	"	"	कदम्बके-कदम्बकैः	
१०७	२	८	नमा-नमो	

पत्र षष्ठ पंक्ति अशुद्ध शुद्ध
 १३९ १ ५ द्विआ-द्विओ
 " २ २ छट्ट-छुड
 १३९ " ११ छट्ट-छुड
 १४० ? ३ मतेण-मतेण
 १४२ १ १ चैत्य-९ चैत्य
 " " २ स्थपन-स्थापना
 १४३ २ १ क्षी-क्ष्वी
 " २ १२ प्रातथा-प्रतिष्ठा
 १४५ १ ३ सुरिभि-सुरीभि
 " १ १० द्रव-द्रव
 " २ ८ मर्दिन-मर्दिते
 १४६ १ १२ तार्य-तीर्य
 " २ १२ द्रौश्च-मिश्च
 १४७ १ ९ क्रिया-क्रिया

पत्र षष्ठ पंक्ति अशुद्ध शुद्ध
 १२७ २ ११ वर्यनादै-तूर्यनादै
 १२८ २ १५ जमिष-जमिष
 " " ११ °मेच्छानि-°मेच्छिने
 १२९ १ १० °मची-मती
 " २ ६ जिनवि-श्रीजिनवि
 १३० २ ५ जिनवि-श्रीजिनवि
 १३५ २ ९ यान्विते-यान्वित
 १३६ १ १ यद्दुग्धी-यद्दुग्धि
 " " ६ नन्दनि-नन्दन्ति
 " " " जिनवि-श्रीजिनवि
 " २ ११ प्पणव-प्पणव
 १३७ २ ४ त्राजी-त्रोनी
 १३८ २ १४ जा अल्प-जा अल्प
 १३९ १ ४ नियस-णियस

पत्र षष्ठ पंक्ति अशुद्ध शुद्ध
 १२३ १ ५ जिन-श्रीजिन
 " २ ११ प्रनि-प्राति
 १२५ १ १ महत-महित
 " २ ४ मुम्बच-मुम्बल
 १२५ २ ६ ताधि-तामि
 " " १० प्रकार-न्यकार
 १२० २ ५ म्यनमो-भ्यो नम
 १२१ १ ७ परिणि०-परवि०
 १२५ " ९ जिननि-जिननि
 " २ १ मर्दिते-मर्दिते
 १२६ २ ३ प्रजाद-प्रमद
 " " " प्रजाद-प्रमाद
 " " ११ कारवा-करवो
 १२७ १ ११ नदीदुद-नदीदुद

कल्याण-
कलिका
सं० २॥

॥४५॥

पत्र	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१४७	२	३	संश्लेष-संधेऽत्र	
"	"	११	वियराय-वीयराय	
१४८	२	१०	व्रीश्च-घिश्च	
"	"	१४	जिनक-श्रीजिनक	
१४९	१	८	स्ता-स्तः	
१५०	२	५	पणे वि-पणवि	
१५१	२	३	व्रीश्च-घिश्च	
१५२	१	३	सदृष्टयो-सदृष्टयो	
१५३	१	११	कमौधौ-कर्मौधौ	
"	२	९	हृद-हृद	
१५४	१	१२	व्रीश्च-घिश्च	
"	"	"	भवता-भवतो	
"	२	१०	नित्यम्-भवताम्	
१५६	१	७	व्रीश्च-घिश्च	

पत्र	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१५६	२	५	स्ता-स्तः	
१५७	१	१४	स्युः-कुसुः	
१५८	१	८	व्रीश्च-घिश्च	
१६०	१	१२	क्की-क्की	
"	२	७	हृदः-हृदः	
१६१	"	७	जाइस-जोइस	
१६९	१	२	परमेश्वरः-परमेश्वरः	
१७२	२	८	गुर्ध-मूर्ध	
१७८	"	"	फल-फलं	
१७८	"	"	लक्ष्य-लक्ष्य	
"	"	१३	स्नात्रङ्-स्नात्राङ्	
१७९	१	८	घान्मोध-घ निरोध	
"	"	१४	समाजोः-समाजो	
१८०	१	१	श्लोक-श्लोक	

पत्र	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१८०	१	१	याम्य-योम्य	
"	"	११	स्थाता-स्थातो	
"	"	"	वितापा-वीतापा	
१८१	१	१०	कमनायम्-कमनीयम्	
"	"	१३	कलिका-कल्लि	
"	२	२	भाति-भान्ति	
१८३	२	९	सिञ्चन्त्यो-सिञ्चन्त्यौ	
"	"	१३	वनान्ता-वनान्ते	
१८४	१	१०	भवताड-भवतोऽ	
१८६	१	५	बन्धा-बन्धो	
"	"	९	निर्ग्रम्य-निर्ग्रम्य	
"	२	१२	द्वभ्या-द्वद्वा	
१८७	१	७	तापम्-चापम्	
"	२	४	गोष्ठीक-गोष्ठी	

पत्र पृष्ठ पंक्ति अशुद्ध शुद्ध

१८७	२	७	धीमुखगाय-टिक्कन
"	"	९	नेनेच-नेवेच
१९१	१	१४	सुची-सूची
१९२	१	१०	गन्धान्-गन्कत्
१९३	२	९	गळ्म-नोचम
१९४	२	१०	चतेण-उमेग
१९७	२	१५	पुष्टिका-पुष्टिका
१९८	"	१४	काकडो-ककडो
२००	१	८	एकएत-एक
"	२	९	पणी-अ इन्द्राय
			वज्रायुधाय ए-
			एवणगाइ प्रय
			सायुत्राय सवा
			हनाय सपरिज-

पत्र पृष्ठ पंक्ति अशुद्ध शुद्ध

			नाय इह अनुकगृ-
			हेअद्योत्तीस्नात्रम
			होस्से आगच्छ २
			पूजा गृहाण २ पूजा
			यावत् तिष्ठ २
२००	२	११	महासये-महोत्सवे
२०१	१	५	तिष्ठ-तिष्ठ २
"	"	७	अद्य-अद्ये
२०२	२	१२	सतिग-सतिज्जं
"	"	१३	स्वाह-स्वाहा
२०५	२	११	धति-धति
२०६	१	५	सकल-सकल
"	८	४	सुपार्थ-सपार्थ
"	९	५	सति-मति

पत्र पृष्ठ पंक्ति अशुद्ध शुद्ध

२०९	१	५	सति-सति
"	"	८	वासो-वासो
"	"	"	महे-भवु
"	"	१५	आमिति-ओमिति
"	२	१	ई-ई
"	"	१०	ई-ई
२१०	१	१	ने-ते
"	२	२	सति-सति
"	"	११	सतिसंति-सति-सति
"	"	"	सति-सति
"	"	१४	विमान-विमा
२११	१	१४	सति-भति
"	२	११	सतिसति-सति सति
२१२	१	२	मुघते-मुदयते

पत्र पृष्ठ पंक्ति अशुद्ध शुद्ध	२१२ १	५ संति-संति
" "	२ १०	संति-संति
२१३ १	८ सत्र्यामपर-सव्यामर	
" १ १२	है हौं-०	
" २ ११	संति-संति	
२१४ २ १०	संति-संति	
२१५ २ ६	वीसा-तीसा	
२१६ १ ४	संति-संति	
" १ १०	खाहा:-खाहा	
२१६ २ २	काणं-त्राण	
" १ १४	शानिदि-शांति दि	
८ १ २	संति-संति	
" १ १	विहेउ-संति विहेउ	
" २ २	सोच्यत-सौच्यत	

पत्र पृष्ठ पंक्ति अशुद्ध शुद्ध	२१८ २	४ आमिति-आमिति
" "	" "	हिंश-हिंश्च
" १०	द्वाष्ट-द्वाद	
२१९ ४	सुरभिः-सुरीभिः	
" "	सदष्ट-सदृष्ट	
" १२	स्तवनेस्थाने-संतिकरकहेवुं	
२१९ २ ७	कहेवो-नमुयुणं स्तवने स्थाने	
" २ २	संतिकर, जयवीथराय	
२२० १ २	प्रयागा-प्रयाणा	
" १ १३	निर्दगा-निर्दाग	
" २ २	दर्शनम्-संपदम्	
" ७	सुपार्थ-सपार्थ	
" १ १	श्रीसुपा-सुपा	
" ९	स्थिता-स्थिताः	
पत्र पृष्ठ पंक्ति अशुद्ध शुद्ध	२२१ १	६ रचि-रचिते
" "	" १०	तीथां-तीर्थो
" २ ९	आमिति-ओमिति	
" "	" "	भवता-भवतो
" "	" "	हंीश्च-हिंश्च
२२२ २ १	मुचन-भजन	
२२३ १ ६	शान्तिमा-शान्तिकमा	
" २ ११	मार्तण्डे-ग्रहमंडलेना आ- कार-मार्तण्डे	
२२४ १ ११	पूज्यो-पूजो	
" १ १४	सुविधः-सुविधेः	
" "	" "	नाथो-नाथे
२२४ २ ४	स्तवं-शतं	
" "	" "	शतं-नरः

पत्र पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध शब्द
२२४	२	११ निहिता-निहितो
"	५	१ कर्बो-कर्बो
"	"	७ वापी-तापी
"	६	१ नृदस्प-५ इहाय
"	"	४ समा-सर्वो
२२६	"	४ शान्ति-शान्ति
"	"	१२ वसाय-वसाय
"	"	" वाञ्-वञ्
"	१	" शुक-इशुक
"	"	१३ नाम-नाय
२२७	१	६ राष्ट्र-राष्ट्रेषु
"	"	९ शानि-७ शानि
२२८	"	८ शिखो-शिखी
२२९	२	२ घृतनु-घृतनो

पत्र पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध शब्द
२३०	२	७ सज्ञा-खड्गा
२३१	१	१२ मुद्यतं मुद्यत
२३३	३	३ स्तुनोतु-स्तुनेतु
२३४	"	१० सिहने-सिह्ने
"	"	१२ वक्ये-अक्ये
"	"	" तातर-तोतरा
२३५	१	१ शितला-शीतला
"	२	४ समान-स्मशान
२३६	१	७ पर-पुर
"	२	५ ककाल-ककोल
"	३	९ देवोना-देवीना
२३७	१	१ धार-धार
"	७	४ सवस-सर्वसं
२३८	२	८ फराय-फराय

पत्र पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध शब्द
२३९	१	१० वझा-वझी
"	"	" कस्तुरी-स्तुरी
"	"	१२ कर्ण-कीर्ण
"	"	१४ करातु-करोतु
२४०	२	३ वणे-वण्णे
२४१	"	१ प्रकीर्ण-२१ प्रकी
२४४	१	४ णव-णव
२४५	१	२ श्री क्लृ-श्री क्लृ
"	"	१० नृहृत्-वृहृत्
२४६	"	१ सोम्या-सौम्या
२४७	२	१० पाष्णी-पाणी
"	"	११ विय-विया
२४८	"	५ तारण-तोरण
२४९	"	६ तय-तीय

पत्र	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२६१	२	९	चित्त-चित्तः	
"	"	११	सिद्धि-सिद्धि	
"	"	१३	यद्विय-वाहिय	
"	"	"	अहियदु-दु	
२६२	१	७	जिया-जीया	
"	"	११	विशत्या-विशत्या	
"	"	"	तीर्थ-तीर्थ	
"	"	१३	श्रीब्रह्मे-ब्रह्मे	
"	"	१४	दितित्सृ-दिभिस्तिरु	
"	१	४	चायेः-चायैः	
"	२	८	शोष्या-शोष्याः	
"	"	९	रुषगा-रुषमा	
"	"	१२	प्रभा-प्रभो	
२६३	१	६	मोहनी-मोहिनी	

पत्र	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२५५	२	६	विच्छिन्न-विस्थिन्न	
"	"	११	वर्धति-वर्धति	
२५६	"	८	नेमि-नेमी	
२५७	१	५	मत्तो-वत्तो	
"	"	११	भियैः-भियः	
२५९	२	२	संबन्धाः-संबन्धाः	
"	"	"	त्स-स	
"	"	"	अग्ना-अभ्या	
२६०	१	३	चिन्ता-चिन्ता	
"	"	८	दषातु-ददातु	
"	"	११	श्रीया-श्रिया	
"	२	१	धस्य-धस्स	
२६०	२	१३	द्वंदं-द्वंदं	
२६१	"	८	घणी-घणि	

पत्र	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२५०	२	८	प्रणुतं-प्रणुत	
२५१	१	८	प्रम-प्रम	
"	"	१३	महालय-महालय	
"	"	१४	योद्वा-येद्वा	
"	२	११	नन्दनं-नन्दन ?	
२५२	१	९	सुखानि-सुखानिः	
"	२	६	दुम-दुमं	
"	"	१०	रुप-रूपं	
"	"	११	सुजु-सुज	
२५३	१	१	श्रुवू-श्रू	
"	"	५	भवतः-भवन्तः	
"	"	७	चित्रा-चित्रा	
२५४	२	३	त्यागः-त्यागो	
२५५	१	६	जा-जो	

पत्र पृष्ठ पंक्ति अशुद्ध शुद्ध
 २७० २ १२ कुसुमा-कुसुमो
 २७१ १ ९ वि-विभ
 " " १३ नदता-नरदत्त
 " " " सखला-सखला
 " २ १ सत्तर-सत्तरि
 २७३ १ ५ पिजग-पिजग
 " " " रुव-रुव
 " " १२ आसिजो-आसि जो
 २७४ " १० ता-तो
 २७५ " १४ जह-जह
 " २ १० लोकोद्यो-लोकोद्यो
 " " १४ वोरक्ष०-रक्ष०
 २७६ १ १ ह्री श्री-ही श्री
 " " " नामाना-नामानो

पत्र पृष्ठ पंक्ति अशुद्ध शुद्ध
 २६५ २ १० विजा-बीजा
 " " ११ पट्टे-पत्रे
 " " " निय-नीय
 " " १२ कस्तुरि-कस्तूरि
 " " " रिल्य-विलिल्य
 २६६ १ ५ २-२
 " " १० गन्यार्थे-अगन्यार्थे
 २६७ २ ९ भिई-पभिई
 २६८ १ २ क्षेप्या-क्षेप्या
 " " ४ अथगन्या-गन्या
 " " ५ भि ललि-भिर्लि
 " " ६ सोआनं-सोआण
 " " " सिज्ज-मिज्जउ
 " " १३ सच्चे-सच्चे

पत्र पृष्ठ पंक्ति अशुद्ध शुद्ध
 २६३ १ १० सलुत्रि-सलुत्रि
 " " १३ अवताव-अवतावाव
 " २ हत्त्य-हन्त्व
 २६४ १ ६ रुपा-रूपा
 " २ १ गुगुल-गुगुल
 " " १३ कण्वरे-कण्वरे
 " " १४ इसर-ईसर
 २६५ १ ८ नमात्रि-नमात्रि
 " " ११ णोद्यो-णोद्यो
 " " १४ तत्काल-तत्काल
 " २ सप्त-सप्तसप्तति
 " " " चत्त्र-च त्र
 " " ५ कुर्यात्-कुर्याद्
 " " ६ योत्र-यो यन्त्र

पत्र पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध शुद्ध
२७६	१	९ सबन्धि-संनन्धि
"	"	१० दुःदुख-दुःख
"	२	२ गोष्ठिक-गोष्ठी
"	"	६ वासं-वास
२७७	१	" सकतं-सततं
२७८	"	५ अभिन्तर-अविमत्तर
"	"	७ सट्ट-सट्ट
"	"	९ वप्पा-वप्पो
"	"	१० दिहं-दीहं
"	"	माणि-मणि
२७९	१	१ मांनु-मानुं

कस्याण-
कलिका
खं० २॥

॥४८॥

पत्र पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध शुद्ध
२८४	१	१ सना-सन्नो
"	"	७ स्र-स्र
२८५	१	१२ रली-रली
"	२	१ गंधतोली-गंधनोली
"	"	१२ उमो,री-उमीरी
२८६	१	१ येरी-योरी
"	"	८ माय-मोय
"	"	१३ सेलिया-सेल्लियो
२८७	२	५ चोना गोसा
२८८	"	७ चारस-चौरस
२९०	"	९ सेर १-सेई १

पत्र पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध शुद्ध
२८०	१	१ योगन-योगतः
"	"	१२ जेने-जेने
२८१	१	१४ आरोगं-आरोगं
"	२	५ मराडा-मरोडा
"	"	८ हाथ २-हाथ १
२८२	१	५ कमलकांगर-०
"	"	१ ७७ छत्रडीवांसनी-०
"	"	६ प्रहोना-प्रहोनी
"	"	१४ वांस ४-वांस ४ छात्रडी-
"	"	७-७
"	२	८ नांवा-वांवा

प्रस्तावना—उपोद्घातमां—शुद्धिपत्रक

पत्र	शुद्धि	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पत्र	शुद्धि	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध		
१	२	१३	एकलो-एकदूठे	१३	२	२	प्रतिष्ठाकरूपेणा-प्रतिष्ठाकरणना	३०	१	३	जाचद्र-जगच्चद्र
२	"	१३	कार्यो-करो	"	"	८	पकृत-प्रकृत	३०	१	१४	सौचाने-सौचीने
३	२	८	अलेखे-ओलखे	१४	"	१३	तत्रवाहकानु-तत्रवाहकोनु	३१	२	१३	स्थापन-स्थापना
५	"	७	पृडिओ-पुडिओ	१५	"	२	पञ्चणु-पञ्चाणु	३१	"	११	युई-युइ
७	"	२	सूची-शुचि	"	"	१२	प्रविणो-प्रवीणो	३२	२	७	ते-ते
"	"	७	स्थापन-स्थान्	१७	"	१	निशुद्धा-विशुद्धा	३३	१	२	चिताराना-चिताराना
८	१	२	करता-करता	१८	१	१०	कात्या-कात्य	३४	"	१४	घणु छे-घणु छे पण
"	२	७	प्रक्षिप्त-सक्षिप्त	१९	२	१३	वधा-वधो	३५	"	९	आ शान्ति-श्री शान्ति
१२	१	१	आ सकल-श्री सकल	२०	१	३	लयमूश्वा-स्वयमूश्वा	"	"	"	दर्हमिपेक-दर्हदमिपेक
"	"	१३	ना-नो	२०	२	"	ग्रन्थना-ग्रन्थ	३५	१	१२	नेताखिये-वेतालीये
१३	"	२	दियसनो-दिवसना	२०	"	१०	मूर्त्तविधि विधिनां-मूलविधिना	३५	२	१४	ओगणासमा-ओगणीसमा
"	"	३	ए-ये	२२	१	०	समान-सामान	३६	२	१२	कराने-करीने
"	"	१२	श्वेताम्बर-श्वेताम्बर	२८	२	४	बोजो-त्रोजो				
"	२	२	इयामाचर्यादि-इयामाचर्यादि	२९	१	१	स्वतन्त्रणो-स्वतन्त्रपण				

